

DUE DATE SLIP**GOVT. COLLEGE, LIBRARY**

KOTA (Raj)

Students can retain library books only for two weeks at the most

BORROWER S No	DUE DTATE	SIGNATURE

उद्योग-व्यापार पत्रिका



सत्यमेव जयते

॥
व्य तथा उद्योग मन्त्रालय, भारत सरकार,
नई दिल्ली

विज्ञान प्रगति

बोल और द्रोटे उद्योगों के लिये मासिक अनुसंधान-समाचार-सेवा

उद्योगों पर देख—

- गरीबपणा-संस्थाओं का परिचय
- वैज्ञानिक साहित्य का विमर्श
- आविष्कार सम्बन्धी सूचनाएँ
- पेटेन्ट विधियों के वर्णन
- अनुसंधान-कर्मियों द्वारा प्रदत्त के उत्तर

देश के औद्योगिक विकास में रुचि रखने वाले व्यक्तियों के लिये आवश्यक । रेडिओ तथा दूरदर्शन संस्थाओं, स्कूलों और वाचनालयों के लिये अनिवार्य

पब्लिकेशन-स डिवीजन

वी सी ल डॉ क साइंटिफिक  एच ड इ ड रिट य ल रि स र्थ

श्रीलाल मिल रोड, नई दिल्ली—२

वार्षिक मूल्य ५ रुपये

एक प्रति का आठ आना

★ राष्ट्रभारती ★

ॐ सम्पादक ॐ

: मोहनलाल भट्ट :

: हृषीकेश शर्मा :

(१) यह हिन्दी पत्रिकाओं में सबसे अधिक मन्ती, श्रेष्ठ सुन्दर साहित्यिक और सांस्कृतिक मासिक पत्रिका है ।
(२) अिसमें ज्ञानपोषक और मनोरंजन श्रेष्ठ रचिताओं, कहानियाँ, श्लोक, नाटक, रेखाचित्र, और शब्द चित्र रहते हैं । (३) बंगला, मराठी, गुजराती पञ्जाबी, राजस्थानी उर्दू, तमिल तेलंगु कन्नड, मलयालम आदि भारतीय भाषाओं के सुन्दर हिन्दी अनुवाद भी अिनमें रहते हैं । (४) यह प्रतिमाम १ ली तारीख को प्रकाशित होती है । (५) वार्षिक चन्दा ६ रु० छमाही ३।। रु०, नमूने की प्रति दस आना मात्र । आन ही प्राहक बन जाओये । (६) प्राहक बना देने वाला ना विशेष मुद्रिया की चायगी । (७) पत्र त्रिकी [अेजन्सी] तथा विहापन दर के लिये आन ही लिखिये ।

पता:—अ्यत्रस्थापक, “राष्ट्रभारती”

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पो०—हिन्दीनगर (वर्धा, म० प्र०)

उद्योग व्यापार पत्रिका

ग्राहकों से निवेदन

वार्षिक चन्दा रु० ६०, एक प्रति रु० आने।

मनीआर्डर, क्रास किये बैंक अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा कृपया नीचे लिखे पते पर भेजकर आप किसी भी शर्क से ग्राहक बन सकते हैं।

एजेन्टों को सूचना

जो सञ्जन पत्रिका की एजेन्सी सेना चाहें वे कमीशन आदि के लिये शीघ्र पत्र व्यवहार करें। एजेन्ट केवल सीमित सख्या में ही बनाने का निश्चय हुआ है। अतः इस के लिये शीघ्रता बरनी चाहिए।

सम्पादक,

उद्योग व्यापार पत्रिका,
वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय,
भारत सरकार, नई दिल्ली।

कैम्प एराड कम्पनी लिमिटेड

प्रसिद्ध औपधि-निर्माता और विक्रेता

[१८६८ में स्थापित]

भारत सरकार की पेनिसिलीन और बम्बई सरकार के शान्क लीवर तेल उत्पादन के अधिकार प्राप्त वितरक।

लिली. फुल्लफोर्ड और अन्य कम्पनियों के एजेण्ट

प्रधान कार्यालय

८८ सी, पुरानी परभा देवी रोड, बम्बई-२८

शाखाएँ

दिल्ली : कलकत्ता : मद्रास

हिन्दी और मराठी भाषा
में प्रकाशित होता है।

उद्यम

सर्वोपयोगी हिन्दी उद्यम
प्रतिमाह १५ तारीख को पढ़िये

धर्मपेठ, नागपुर

उद्यम में निम्न विषयों पर लेख प्रकाशित होते हैं *

★ लाभदायक उद्योगधन्धों की व्यवहारोपयोगी जानकारी, अनाज की खेती, साग-सब्जी की बागवानी और रोगों का निवारण। पशुपालन, दुग्धव्यवसाय और प्रामाण्योद्योग सम्बन्धी लेख। आरोग्य, घरेलू औपधियों सम्बन्धी जानकारी।

उद्यम के स्थायी स्तम्भ

★ महिलाओं तथा विद्यार्थियों के लिये उपयुक्त विभिन्न रुचिकर साधपदार्थ बनाने की विधियाँ। घरेलू मितव्ययता। जिज्ञासु जगत्। कृषि, औद्योगिक क्षेत्रों में काम करने वाले व्यक्तियों की मुलाकात और परिचय। नित्योपयोगी वस्तुएं घर ही तैयार कीजिये।

आज ही उद्यम का वार्षिक चन्दा रु० ७ भेजकर, उद्यम मासिक मंगवाइये।

विषय सूची

विशेष लेख

- | | |
|---|-----|
| १. काबू उद्योग को और भाँगा जाय | २५३ |
| २. दुग्ध में भारतीय माल की खपत घटी | २५६ |
| ४. १९५३-५४ में मासिक अर्थ-व्यवस्था | २५६ |
| ४. तम्बाकू का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार | २६२ |
| ५. दश औद्योगिक और आर्थिक दृष्टि से शक्तिशाली बन | २७० |

हमारे व्यापार प्रतिनिधियों द्वारा —

स्वान्त, अमेरिका, नेपाल और माराशत्र

जानकारी विभाग

- | | |
|----------------------|-----|
| १. औद्योगिक विषय | २७७ |
| २. शूट उद्योग | २८० |
| ३. व्यापार की उन्नति | २८१ |
| ४. व्यापार अनुभव | २८२ |
| ५. अन्वयन और विकास | २८३ |
| ६. वैज्ञानिक विषय | २८४ |
| ७. वित्त | २८५ |
| ८. खाद्य व रक्षा | २८६ |

...

पृष्ठ

- | | |
|-------------------|-----|
| ६. धर्म | २८६ |
| १०. फसल का अनुमान | २८६ |
| ११. विविध | २८७ |

ग्राफ विभाग

- | | |
|--------------------------|-----|
| १. भारत का विदेश व्यापार | २८८ |
| २. अन्तर्देशीय परिवहन | २९० |

सांख्यिकी विभाग

- | | | |
|---------------------------|---|-----|
| १. औद्योगिक उत्पादन | — | २९१ |
| २. भारत का विदेश व्यापार | — | ३०० |
| ३. देश में वस्तुओं के भाव | — | ३१० |

व्यापारिक और औद्योगिक शब्दावली परिशिष्ट

- | | |
|--|-----|
| १. विदेशों में भारत सरकार के व्यापार प्रतिनिधि | ३२६ |
| २. भारत में विदेश सरकार के व्यापार प्रतिनिधि | ३२६ |

भारत सरकार के व्यापार और उद्योग मन्त्रालय के प्रकाशन-मण्डलक द्वारा प्रकाशित ।

सूचना :—

इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का सम्बन्ध जब तक विरापत स्वयं न लिखा जाय, भारत सरकार अथवा उसके किसी भी मन्त्रालय से नहीं होगा ।


हरगोविन्द धरमसी

३१, मीरझा स्ट्रीट, बम्बई ३.

CABLE PLATEGLASS

PHONE 27318

सन तरहकी चीडाई
और रंगम प्लेट, शीट, गायर,
रिग्ड फीगर ग्लास हमेश
स्टाक रखते हैं ।



हिन्दुस्तानी ग्लास वर्क्स

उद्योग-व्यापार पत्रिका

खण्ड ३]

नई दिल्ली, अक्टूबर १९५४

[अंक ४]

★★★ काजू उद्योग में भारत को एकाधिकार प्राप्त है। विदेशी विनिमय, विशेषतः डालर प्राप्त करने का यह अच्छा साधन है

काजू उद्योग को और भी बढ़ाया जाय

मसाला जांच समिति की महत्वपूर्ण सिफारिशें

काजू उद्योग इधर युद्ध के पश्चात् विशेषतः बढ़ा है। अमेरिका, यूरोप, आस्ट्रेलिया आदि में काजू की मांग बराबर बढ़ती जा रही है।

इस समय मुख्यतः भारत से ही ससार भर को काजू भेजे जाते हैं। अफ्रीका के काजू भी पहले भारत आते हैं और यहाँ से तैयार होकर अन्य देशों को जाते हैं।

मसाला जांच समिति ने देश में काजू उद्योग को बढ़ाने की जहा सिफारिश की है वहा उसके विकास के लिये भी अनेक सिफारिशें की हैं। समिति ने इसके लिये एक विकास कीय स्थापित करने का भी सुझाव दिया है।

विगत १५ वर्षों में खपत तेजी से बढ़ी

ससार के समस्त देश काजू को मुख्यतः भारत से ही मगाते हैं। ससार भर की ६० प्रतिशत मांग भारत ही पूरी करता है। भारत के अतिरिक्त पूर्वी अफ्रीका और ब्राजील में भी काजू का व्यापार होता है। ब्राजील में काजू अपेक्षाकृत कम उपजता है। पूर्वी अफ्रीका का प्रायः समस्त कच्चा काजू भारत भेज दिया जाता है और यहा उसकी गिरी निकाली जाती है।

ससार भर में काजू की गिरी की मांग बढ़ती जा रही है। पिछले २५ वर्षों में यह विशेषतः बढ़ी है। अमेरिका में काजू की खपत बढ़ी तेजी से बढ़ी है। १९२५ में जहा यह ५० टन से भी कम थी वहा अब वह बढ़कर २०,००० टन हो गई है। इसी प्रकार आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ्रीका और यूरोप के अधिकांश देशों में भी यह बढ़ी है।

पश्चिमी और पूर्वी तटों पर काजू की खेती

काजू वास्तव में भारत का मूल पौधा नहीं है। प्रायः ४०० वर्ष पूर्व इसे पुर्तगाली ब्राजील से भारत लाये थे। पहले यह मिट्टी की कटान रोकने के लिये लगाया गया था परन्तु फिर धीरे धीरे इसकी गिरी के कारण भारत में इसकी खेती होने लगी। इस समय इसका तेल और गिरी दो वस्तुएँ हो उपयोग में आती है।

काजू की अधिकांश खेती दक्षिण भारत के पूर्वी तथा पश्चिमी तटों पर होती है। यह सबसे अधिक मद्रास राज्य, मल्लार और दक्षिणी कर्नाट जिलों में होती है। पूर्वी तट के विजयापट्टम, दक्षिणी आरकाट, तिरुचिप-पल्ली, तानोर और पूर्वी गोंदावर जिलों में भी यह होती है परन्तु कुछ कम

परिमाण में। मद्रास और आन्ध्र के विंगलेट और थुन्दूर आदि जिलों में भी कानू के पेड़ पाये जाते हैं। त्रवनकोर-कोच्चिन राज्य में प्रायः सर्वत्र कानू उपजता है। दम्बर्द राज्य के रत्नागिरी और उतरी कल्लाडी जिला में तथा मैसूर और कर्ना के कुछ भागों में भी कानू पैदा होता है।

रही और पयरोली भूमि

साधारणतः कानू का पेड़ २० से २५ फीट तक ऊंचा होता है। पत्तु नुहा नहीं यह बहुत ऊंचा होता है। इसकी बड़े बड़ी दूर दूर तक फैली हैं। इसलिये यह उत्तर, दक्ष, रहीं आधवा पयरोली भूमि में भी पैदा हो जाता है। यह १२० इंच से अधिक भारी बगों वाले क्षेत्र में और २५ इंच से कम बगों वाले क्षेत्र में भी उपजता है। आधियों से इनके हानि नहीं पहुँचती पत्तु पाले में यह मर जाता है। इसकी गन्ती के लिये मौसमी बगों आवश्यक होती हैं।

परिचयों तट पर प्रत्येक पेड़ से औसतन २० पाउंड कानू प्राप्त होने हैं। पूर्वी जिला में यह औसत कुछ अधिक रहता है। पूर्वी तट पर खेती बिकरी हुई है और नये नये क्षेत्रों में इनका विस्तार होना जा रहा है। इसी कारण उपज का औसत अधिक है।

खेती का क्षेत्र

१९५१-५२ में कानू की खेती कुल २,२३,१२८ एकड़ में हुई जो राज्य के अनुसार इस प्रकार की थी:—

मद्रास	१,२५,०३६ एकड़
त्रवनकोर कोच्चिन	५२,६२५ ,,
दम्बर्द	४,५०६ ,,
उर्ग	१५५ ,,
मैसूर	५०० ,,

योग २,२३,०२८ ,,

१९५१-५२ में ६०-१०० टन कच्चा कानू उत्पन्न हुआ जो राज्यों के अनुसार इस प्रकार रहा —

मद्रास	३३,००० टन
त्रवनकोर कोच्चिन	२०,००० ,,
दम्बर्द	४,५०० ,,
अन्य	२,६०० ,,
योग	६०,१०० टन

कानू की कुल उपज का आधे से अधिक भाग मद्रास राज्य के मन्नावार और दक्षिणी कनाडा जिलों में पैदा होता है। कच्चे कानू की केन्द्रित के उत्तरी का काम अधिकांश में त्रवनकोर राज्य के किन्नल नगर के कारखाना में होता है। वहाँ इस प्रकार के प्रायः १५० कारखाने हैं। कानू का तीन चौथाई निर्यात व्यापार भी इसी राज्य से होना है।

देश में खपत

भारत के विभिन्न राज्यों में १९५१-५२ में ६०,००० टन से अधिक कानू की खपत हुई। १९३८-३९ से १९५०-५१ तक इस खपत का अनुमान ४५,४०० टन रहा है। इसमें प्रकृत होता है कि मत दशक में देश में कानू की खपत ३२ प्रतिशत अधिक हो गई। हाल के वर्षों में कानू के क्षेत्र और उत्पादन दोनों में ही वृद्धि के लक्षण प्रकट हो रहे हैं। कानू उपज बढ़ाने की और भी सुलाभ्य है। मन्नावार को अधिकांश और त्रवनकोर कोच्चिन को प्रायः समस्त उपज को किन्नल के कारखाने खरीद लेते हैं। उपज का केवल थोड़ा सा भाग ही कलौम्पट और मंगलौर को जा पाता है।

पूर्वी अफ्रीका से अधिक आयात

यद्यपि सब में अधिक कानू भारत में पैदा होता है तथापि विदेशों से भी बहुत सा कच्चा कानू भारत मगाना जा रहा है। १९५१-५२ में विदेशों से कुल ४२,२५३ टन (३-० करोड़ ६०) विना डिग्ला कानू मगाना गया। १९५२-५३ में यह परिमाण बढ़कर ५१,६८० टन (४-६६ करोड़ ६०) हो गया। १९५३-५४ में परिमाण बढ़कर ६४,२०० टन हो गया पत्तु मूल्य थोड़ा गिरकर ४.०३ करोड़ ६० रह गया। मूल्य में यह कमी मुख्यतः का स्तर गिर जाने के कारण हुई है। देश में हीनबाली उपज और विदेशों से आने वाली भागों के अनुपात ही विदेशों में भारत में कानू का आयात किया जाता है। भारत में कच्चा कानू ब्रिटीश और पुर्तगाली पूर्वी अफ्रीका से आता है। पूर्वी अफ्रीका के ब्रिटीश प्रदेश में कानू के व्यापारिक महत्व को अनुभव कि जाने लगा है और कानू डीलरों के कारणने चालू किने जाने की योजनाएँ बनाई जा रही हैं।

उपज बढ़ाने की आवश्यकता

अफ्रीकी कानू के आयात और वितरण का कार्य दम्बर्द की कुछ मसुल फर्मों के हाथ में है। इन फर्मों की पूर्वी अफ्रीका के बन्दरगाहों में शाखाएँ हैं और उन्होंने वहाँ के कानू के व्यापारिक छांट के साथ अच्छे सम्बन्ध बना रखे हैं। इस कारण इनके हाथ में कानू के आयात व्यापार का एक प्रकार से एकाधिकार आ गया है। इसीलिये कानू डीलरों वाले कारखानों को अपने लिये मात्र प्राप्त करने की इन पर निर्भर रहना पड़ता है। भारतीय कारखाने साधारणतः नदमर में मात्र तक विदेशी कानू काम में लाते हैं। मार्च के बाद देशी कानू की फसल आने लगती है और फिर वे कारखाने उनकी डिग्लाई आरम्भ कर देते हैं। विदेशी से आने वाला तैय चौथार कानू किन्नल के कारखाने ले जाते हैं, शेष एक चौथाई मंगलौर कानौकट के कारखानों को मिलता है। विदेशी और देशी दोनों प्रकार के ही कानू से कारखानों की मांग पूरी नहीं होती। इस समय उन्हें केवल ६-१० महौने के काम लायक कानू ही मिल पाता है। अतः साल में २-३ महौने के बन्दे पड़ते रहते हैं। इसीमें प्रकृत होता है कि देश में कानू का लेना बनाने की बिलगी आवश्यकता है। कच्चे कानू में से सिर्फ

निकलने का औसत देशी काजू में २५ प्रतिशत और अफ्रीकी काजू में २६ प्रतिशत रहता है।

कच्चे काजू को छीलने का काम बड़ा नाजुक और कठिन होता है। यदि इसे ठीक ढंग से नहा किया जाता तो गिरी कम निकलती है और वह खराब भी हो जाती है। काजूओं को साधारणतः चार प्रकार से भूना जाता है (१) खुली कढ़ाई में, (२) मिट्टी के बर्तनों में, (३) घूमने वाले बोलो में और (४) तेल में तलकर।

खाने के लिये देशी काजू की गिरी ही स्वादिष्ट होती है। इसके छिलके से तेल भी अच्छा निकलता है। कच्चे काजू में ७०-७२ प्रतिशत तक छिलका निबलता है और इस छिलके में से २४-२५ प्रतिशत तक तेल निकलता है। अनेक कारखानों में केवल १०-१२ प्रतिशत तक तेल निबलता है। तेल का अधिक अंश प्राप्त करने के लिए छिलका उतारने की विधियों में सुधार करने की आवश्यकता है।

डालर प्राप्त करने का साधन

काजू की अधिकारश गिरी विदेशों को भेज दी जाती है। पैकिंग में सुधार होते जाने से इसका निर्यात भी बढ़ रहा है। प्रायः २५ वर्ष पूर्व यह निर्यात १,००० टन से भी कम था। परन्तु युद्ध से पूर्व यह बढ़कर १४,००० टन हो गया और १९५२-५३ में तो बढ़कर २७,४१७ टन हो गया। इस निर्यात का मुख्य भी बड़ा युद्ध से पूर्व १२६ करोड़ रु० था वहा १९५२-५३ में बढ़कर १२७६ करोड़ रु० हो गया। अमेरिका को सबसे अधिक—तीन चौथाई से भी अधिक काजू भेजा जाता है। १९५३-५४ में निर्यात का परिमाण और मुख्य दोनों ही कुल घटकर क्रमशः २६,५३० टन और २०६३ करोड़ रु० रह गये। अमेरिका के बाद ब्रिटेन और कनाडा का स्थान है। परन्तु वे अपेक्षाकृत कम मात्रा लेते हैं। भारतीय काजू इन सभी देशों में अधिकधिक लोकप्रिय होते जा रहे हैं। बहा लोग इसे बड़े चाव से खाते हैं। अतः इसका निर्यात बढ़ाया जा सकता है और इसके द्वारा विदेशी मुद्रा विरोधत डालर अधिक संख्या में प्राप्त किये जा सकते हैं।

देश में खपत का रुख

भारत में काजू की गिरी का अनेक कार्यों में प्रयोग होता है। गिरी को या तो मेवा के रूप में खाया जाता है अथवा मिष्ठानों के साथ में मिलाया जाता है। नमकीन काजू की मांग भी इतनी बहुत बढ़ी है। बादाम मिले आदि अन्य मेवा की अपेक्षा काजू को अनेक स्थलों पर इसके स्वाद के कारण अधिक परसू किया जाता है। अतः इसकी खपत बढ़ती जा रही है। परन्तु इसके लिये यह आवश्यक है कि इसके मुख्य उच्चत रहे। प्रति वर्ष देश में इस समय ३,००० टन काजू की उपज का अनुमान है।

गवेषणा का महत्व

भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद ने अप्रैल १९५१ से पाच वर्षों के लिये गवेषणा की तीन योजनाएँ स्वीकार की हैं। यह गवेषणा मद्रास,

बम्बई और त्रिचिनकोर कोचीन राज्यों के काजू उत्पादक क्षेत्रों में की जायगी। धन की कमी के कारण अभी यह कार्य सक्रिय रूप में आरम्भ नहीं हुआ है। अब तक काजू उद्योग में त्रिपोय यल्लू यहाँ किया जाता रहा है कि छीलने में कम से कम गिरी दूटने पाये।

काजू के छिलके के तेल का उपयोग अधिक होने लगने के कारण उसका भी व्यापारिक महत्व बढ़ गया है। अनुमान है कि भारतीय कारखानों में प्रतिवर्ष ७,००० से ६,००० टन तक छिलके का तेल तैयार होता है। ४०-४५ सैलन के पीपा में इसका निर्यात होता है। इसके निर्यात का योग ६० लाख रु० से अधिक होता है। १९४२-४३ में इस तेल का मुख्य निर्यात से १२० रु० प्राप्त टन था। अब यह बढ़कर १,२०० रु० हो चुका है।

काजू के छिलके का तेल गाढा और गहरा भूरे रंग का होता है। यह अनेक प्रकार के उद्योगों में काम आता है। तेजाबों के मिलाने से यह खड जैसा लालीला रूप धारण कर लेता है कुछ अन्य रासायनिक पदार्थ मिलाने से इससे अनेक प्रकार की क्लोरुड बनाई जा सकती हैं। यह सल भी शोध जाता है और बहुत से प्रायोगिक पदार्थों में यह सफलता से धुल जाता है।

क्लोरुओ पर यह तेल लगा देने से वे पानी से खराब नहा होती। नौषाओं, मछली पकड़ने के जालों और लकड़ी की हलकी चीजों को सुरक्षित रखने के लिये भी इसे काम में लाया जाता है। इसके अतिरिक्त वारिश, टाइपराइटर, चिपकाने के पदार्थ, रंगोले, ल्याही, मोमिया कपडा आदि के उद्योगों में इसे कच्चे पदार्थ के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

काजू का फल भी बड़ा विचित्र होता है। वह यों तो सेव के बराबर बड़ा होता है परन्तु जो काजू बाजारों में बिकने आता है वह इस सेव के नीचे एक घुन्डी के रूप में निकला होता है। इस पर एक छिलका होता है और छिलके सहित ही इसे सेव से तोड़ कर अलग कर लेते हैं। कपर बताया जा चुका है कि किस प्रकार काजू की गिरी और उसके छिलके का उपयोग किया जाता है परन्तु सेना का अब तक कोई उपयोग नहीं होता। इसके विषय में गवेषणा करने की आवश्यकता है।

मसाला जांच समिति की सिफारिशें

भारतीय मसाला जांच समिति ने काजू उद्योग पर विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार किया है और उसकी उन्नति के लिये अनेक सिफारिशों की हैं। समिति के अध्यक्ष मद्रास के पूरु तट, बम्बई के रत्नागिरी और उत्तरी कनाडा त्रिलो तथा कुर्ग और मैसूर की बहुत सी बेवार पट्टी भूमि में विशाल परिमाण पर काजू के बाग लगाने जा सकते हैं। इन राक्या के वन विभागों को भी चाहिए कि वे जगला में काजू के पेड़ लगाये और जिन प्रकार अन्य वन्य उत्पादक एकदित किये जाते हैं उसी प्रकार काजू भी एकदित किये जाने चाहिए। जहा कहीं भी संभव हो सार्वजनिक निर्माण विभागों को भी अपने क्षेत्रों में काजू के पेड़ लगाने चाहिए। काजू के बाग (शेप घुड २५८ पर)

सूडान में भारतीय माल का आयात

★ १९५३..... . . ३६.७ लाख मित्नी पौंड

★ १९५० ७८.१ लाख मित्नी पौंड

सूडान में भारतीय माल की खपत घटी

जापानी प्रतिस्पर्धा से सावधान रहने की आवश्यकता

सूडान भारतीय माल की खपत का बड़ा अच्छा क्षेत्र है। वह अपनी कपड़े, चाय और जूट सम्बन्धी समस्त आवश्यकताएँ अधिकांशतः भारत से ही पूरी करता है।

१९५३ में सूडान में भारत से काफी कम माल मंगाया गया। साथ ही भारत को सूडान से अधिक माल भेजा जाने के कारण व्यापार का सन्तुलन भारत के बहुत अधिक प्रतिकूल रहा।

इस समय सूडान में भारत को जापान, रूस, इन्डोनेशिया आदि देशों से प्रतिस्पर्धा होने का खतरा उत्पन्न होता जा रहा है जिसके कारण भारतीय निर्यातकों को सावधान रहने की आवश्यकता है।

भारत को कच्ची रूई देने में सूडान प्रसुर

विकम्परिया स्थित भारत के कचरा उपराल की सूडान सम्बन्धी १९५२-५३ की रिपोर्ट के अनुसार सूडान में अब तक सब प्रकार के सूता माल, चाय व जूट के माल की भेजने वालों में भारत ही प्रमुख रहा है। लेकिन अब इनमें से कुछ कच्चा रूई के सम्बन्ध में उसे विकट प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। सूडान भारत को मुख्यतः कच्ची रूई भेजता है।

उपर्युक्त रिपोर्ट के महत्वपूर्ण अंशों पर प्रमुख लेख में प्रकाश डाला गया है।

१९५३ में सूडान में भारत से काफी कम माल मंगाया गया जबकि इस वर्ष भारत को सूडान से इतना अधिक माल भेजा गया कि व्यापार का सन्तुलन भारत के बहुत अधिक प्रतिकूल रहा। आलोच्य वर्ष में सूडान ने भारत से केवल ३६.७ लाख मि० पौण्ड का माल आयात किया जबकि १९५२ में ७८.१ लाख मि० पौण्ड का किया था। इससे विपरीत उसने १९५३ में भारत को ५६.५ लाख मि० पौण्ड का माल भेजा जबकि गत वर्ष (१९५२) केवल ३१.२ लाख का भेजा था। सारांश में आलोच्य वर्ष में सूडान का निर्यात २५.२ लाख मि० पौण्ड बना जबकि भारत का ३८.५ लाख मि० पौण्ड घटा।

१९५३ में सूडान में भारत से जिन २ वस्तुओं का आयात किया गया उनके आकड़े नीचे तालिका में दिये गये हैं। साथ ही १९५२ के परिकल्पना तथा मूल्य सम्बन्धी तुलनात्मक आकड़े भी दे दिये गये हैं :

वस्तु	इकाई	परिमाण		मूल्य	
		१९५०	१९५३	१९५२	१९५३
चाय	टन	३,६११	२,६२६	७१६	६२५
उत्पन्नोत्त तेल	किलोग्राम	६५,६६२	५७,१४६	१५६	१०३
खन	"	३,६५५	८२,६७५	२	३०
सिलार्ड का सूती धागा	"	१०,१५०	५३६	१०	०.५५
नर्करी रेशम के बगड़े	"	१,३०,७८६	६८,७०६	१६६	३१
सूती कपड़ा (नैरा)	टन	५,७६२	३,२६७	२,५६५	१,१६५
सूती कपड़ा (धुला हुआ)	"	७०५	८२५	६५१	६००
सूती कपड़ा (डुकाई में रंगा हुआ)	"	२३५	१८०	३३५	१६५
सूती कपड़ा (छपा)	"	६६	१३	६६	६
सूती कपड़ा (सूत में रंगा हुआ)	"	३५६	३०६	३५५	२१६
जूते (पमडे के)	जोड़े	६१,६६५	७१,६७०	१००	५२
जूते (खड के)	"	५,५७,१३३	८,५६,०५५	१००	१७७
जूट की धोरिया	टन	६,६५२	२,६६०	२,७६	३२८
धोपना	टन	५,५७७	५०	३५	०.३

तालिका से स्पष्ट है कि भारत ने आलोच्य वर्ष में १९५२ की अपेक्षा वृत्तों के वितारिक प्रायः सभी वस्तुओं का परिमाण में घटी। यह अब तक सूडान को सब प्रकार के सुभी माल, चाय तथा जूट के सामान का प्रमुख निर्यातक रहा है। लेकिन अब इनमें से कुछ वस्तुओं के सम्बन्ध में उसे विकट प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है।

चाय में कमी

सूडान में भारतीय चाय काफी लोकप्रिय है। वस्तु वह महंगा होती है। इस क्षेत्र में इण्डोनेशिया की स्थिति सुदृष्ट बनती जा रही है, क्योंकि यह भारत की अपेक्षा अधिक सस्ती किस्मों की चाय बेजत रहा है। नीचे की तालिका में देशों के अनुसूचित आयात देिये गये हैं जिनसे स्पष्ट होगा कि इण्डोनेशिया भारत का कितावा बड़ा प्रतिस्पर्धी है।

देश	परिमाणु (टन)		मूल्य (मि० पौड)	
	१९५२	१९५३	१९५२	१९५३
लंबा	३०१	१४६	१,२०,१२२	१,२४,६३६
केनिया	५०६	४८७	१,३७,५७४	१,०३,६५०
सुगाण्डा	२२४	२१०	६०,५७६	५०,८६०
इण्डोनेशिया	३,१००	१,१६१	७,३६,०५४	२,७८,५४६
भारत	३,९११	२,६३६	७,१५,६६२	६,५१,६१०
योग	७,६४२	४,६६१	१८,०३,६६३	१२,४०,२१०

(अन्य देशों सहित)

तालिका से विदित होता है कि सूडान ने आलोच्य वर्ष में गत वर्ष की अपेक्षा कम परिमाण में चाय आयात की। उतने इस वर्ष भारत से भी कम चाय मंगाई। क्यापि भारत से मंगाई गई चाय में यह कमी अन्य देशों के अनुपात में कम रही, फिर भी हमें इससे निश्चित नहीं हो जाना चाहिये। इण्डोनेशिया की सस्ती किस्मों की चाय हमारे लिये तुलनी है। भारतीय निर्यातकों को इस बात की ओर ध्यान रखना उचित होगा।

भारत सूती कपड़ों का प्रमुख निर्यातक

सूडान में भारत से मंगाने जाने वाले मालों में सूती कपड़े का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। लेकिन आलोच्य वर्ष में भारत ने सूत को छोड़कर, इस वर्ष की प्रायः सभी वस्तुएं कम परिमाण में मंगाई गईं।

भारत सूडान को सबसे अधिक सूती माल भेजता है। इसकी यह सर्वोपरि स्थिति पिछले महायुद्ध से बनी हुई है, जबकि सूडान में जापानी माल का आना बन्द हो गया था। आलोच्य वर्ष में भी इसकी स्थिति पूर्ववत् रही जिसकी पुष्टि नीचे के आंकड़ों से होती है :

	वर्ष	परिमाणु		मूल्य (मि० पौड)	
		१९५२	१९५३	१९५२	१९५३
भारत	टन	६,१५७	४,५६०	३६,६२,०६५	२१,८७,६६५
अन्य	टन	६,५३०	२,७७६	५५,५१,६८६	२४,५६,७०६
योग	टन	१२,४७७	७,३३६	९२,१३,७५१	४६,४४,३७१

सूडान की कपड़े सम्बन्धी स्थिति में पहले से काफी सुधार हुआ है। यद्यपि उसके पात मोटे कोरे कपड़े का स्वाक कम है, फिर भी हल्के कपड़े (जिसे विलाया कहते हैं) का भारी स्वाक चिन्ता का विषय बना हुआ है। इस स्वाक को निकालने की नीति से सूडान सरकार ने यह आशय दिया है कि मोटे कोरे चादरो के कपड़े की तीन गायें मंगाने के आयात लाइसेन्स पर, आयातकों को सरकारों स्वाक से विलाया की एक गाठ लसीदना आवश्यक होगा।

इस सम्बन्ध में भारतीय निर्यातकों को निश्चित नहीं हो जाना चाहिये। इस समय कम से होने वाली प्रतिस्पर्धा (विशेषतः अपने कपड़ों में) तथा धामे जापान से भी होने की सम्भावना को देखते हुए भारतीय निर्यातकों के लिये अधिक जागरूक रहना तथा सूडान में भारतीय कपड़ों को प्रपत समुचित बनाये रखना आवश्यक है।

जूट के माल में कमी

सूडान एक कृषि प्रधान देश है। वह कच्ची सूई और अनाज का एक महत्वपूर्ण निर्यातक है। इन वस्तुओं की बाहर भेजने के लिये उसे सामान्यतः प्रतिवर्ष लगभग १० हजार टन ट्रेड, कोरियो खादी की आयात-शुल्का पडती है। यह आयात-शुल्का फसलों के परिमाण तथा निर्यात के लिये श्रेय कर्षी उपयुक्त के अनुसार बदलती रहती है।

आलोच्य वर्ष में सूडान ने भारत से जूट का माल कम मंगाया, जिसके मुख्यतः दो कारण थे : (१) १९५० में कोरियाई युद्ध के कारण बहुत सा माल पहले ही खरीद लिया गया था, जिससे सूडान ने माल का स्वाक काफी कम रहा, (२) मिस्र ने जूट के माल के आयात पर कोई प्रतिबन्ध न होने के कारण, वहा से पर्याप्त परिमाण में माल मंगा लिया गया। अन्त में सूडान सरकारने मिस्र से आयात करने पर प्रतिबन्ध लगाया। उपर्युक्त कारणों का नाश से आनेवाले माल पर दुरा प्रभाव पडा, जिससे वह काफी कम हो गया। परिमाण की अपेक्षा मूल्य पर और भी बुरा प्रभाव पडा।

आलोच्य वर्ष में भारतीय जूट के माल के भाव १९५२ की अपेक्षा काफी कम रहे। इसका परिणाम यह हुआ कि विदेशी सूत्रों के रूप में इस माल के भावों का स्तर और भी अधिक गिर गया। नीचे की तालिका से यह स्पष्ट है :

देश	परिमाणु (टन)		मूल्य (मि० पौड)	
	१९५२	१९५३	१९५२	१९५३
मिस्र	१८०	२,८०२	२१,३८७	४,२३,५५१
भारत	६,६५२	२,६६०	२१,७८,६१४	३,२८,१०६
ब्रिटेन	७१२	१४३	१,४२,१६७	१३,७७६
	११,६३३	५,६३५	२६,५९,१६५	७,६५,४२१

१९५३ के मध्य तक सूडान में तत्पित जूट के माल के समाप्त हो जाने का अनुमान लगाया गया था।

सुरद बैंक व्यवस्था देश के
आधिक जीवन की जान होती है

१९५३-५४ में भारतीय अर्थ-व्यवस्था

रिजर्व बैंक का वार्षिक प्रतिवेदन प्रकाशित

रिजर्व बैंक के केन्द्रीय निर्देशक मडल ने, ३० जून १९५४ को समाप्त होने वाले वर्ष में बैंक के काम-काज का वार्षिक प्रतिवेदन प्रकाशित कर दिया है। इसमें कहा गया है कि १९५३-५४ में भारतीय अर्थ-व्यवस्था में स्थिरता रही।

इस वर्ष जो आर्थिक नीति धरती गयी, उससे स्थिरता लाने वाली शक्तियों को बल मिला। इसके फलस्वरूप, बिना मुद्रा बाहुल्य उत्पन्न किये विकास कार्य पर खर्च करना सम्भव हो सका।

वैकों की स्थिति सम्बन्धी मुख्य बातें

आलोच्य वर्ष में देश की अर्थ व्यवस्था और बैंकों की स्थिति सम्बन्धी मुख्य बातों का उल्लेख, प्रतिवेदन में इस प्रकार किया गया है —

(१) कृषि और उद्योग, दोनों ही का उत्पादन बढ़ा। इससे विकास पर खर्च बढ़ना और निजी व्यापार व उद्योग को प्रोत्साहन देना सम्भव हुआ।

(२) देश में आर्थिक क्रिया कलाप को तीव्र करने के लिये कई उपाय किये गये। कई जिलों पर उत्पादन तथा निर्यात शुल्कों को घटाया और सशोधित किया गया, निजी क्षेत्र को वित्त व्यवस्था की जाच के लिये शाफ-समिति नियुक्त की गयी और विरव बैंक की सहायता से एक निजी निगम (कारपोरेशन) की स्थापना का समर्थन किया गया और एक सरकारी औद्योगिक विकास निगम की स्थापना के लिये उद्योग किया गया।

(३) आलोच्य वर्ष में मुद्रा की उपलब्धि अच्छी रही। १९५३-५४ में मुद्रा पूर्ति १९५२-५३ से दूने से अधिक रही। जून १९५४ के अंत में जून १९५३ से मुद्रा की उपलब्धि ६६ करोड़ रु० अधिक थी।

(४) वनरू के घाटे और धुगतान तुला में वृद्धि के अज्ञाता रिजर्व बैंक का उधार का कारोबार बढ़ने से भी मुद्रा की उपलब्धि मरल हुई। जनवरी से जून १९५४ को अवधि में, रिजर्व बैंक ने (बिल मार्केट योजना के अर्थात्) कुल ६२२ करोड़ रु० उधार दिया, जबकि १९५३ की इन्हीं अवधि में केवल ६११ करोड़ रु० दिये गये थे।

(५) वस्तुओं और मुद्रा दोनों ही में, कुल पूर्ति और कुल मांग के बीच अच्छा सतुलन रहा, जिससे मूल्यों के स्थिर रहने में सहायता मिली।

१९५४ के अग्रैल के मध्य से मूल्यों के गिरने के विषय में प्रतिवेदन में कहा गया है कि इगमें आगामी वर्षों में विकास बाणों को बढ़ाने में सहायता मिलेगी।

ऐतिहासिक पक्ष

प्रतिवेदन में बताया गया है कि द्वितीय महायुद्ध के बाद भारतीय अर्थ-व्यवस्था में मुद्रा बाहुल्य की समस्या उठ खड़ी हुई। इसके निवारण के लिये उपयुक्त नीति अपनानी गयी। ऐसी योजनाओं पर सरकारी खर्च कम कर दिया गया, जिनसे जरूरी वस्तुओं के उत्पादन में शीघ्र वृद्धि नहीं होती थी। व्यापार सम्बन्धी नीतियां में भी आवश्यक परिवर्तन करने पड़े। किन्तु देश में मूल्य अधिक होने और अमेरिका में मूल्यों में गिरावट की प्रवृत्ति के कारण, दुर्लभ मुद्रा वाले देशों को वस्तु निर्यात करने में बाधा पड़ी और फलन व्यापार संतुलन काफी प्रतिवृत्त रहा। १९४८-४९ में विदेशी मुद्रा में २२७ करोड़ रु० की रकम देनी पड़ी। विदेशी मुद्रा बचाने के लिये दुर्लभ मुद्रा देशों से आयात में कमी की गयी। निश्चय हुआ कि १९४८ में इन देशों से आयात के केवल ७५ प्र० श० आयात की अनुमति दी जाय। सितम्बर, १९४९ में रुपये की विनिमय दर घटायी गयी।

मुद्रा-बाहुल्य की रोकथाम

इस अवमूल्यन से मुद्रा बाहुल्य की प्रवृत्ति को बल मिला, जिसकी रोकथाम कई उपायों से की गयी। १९५० के मध्य में ऐसा जान पड़ा कि मुद्रा बाहुल्य की प्रवृत्ति को अवमूल्यन से जो बल मिला था वह खत्म हो

चला है। पर इन १९५० में ही कोरिया की लड़ाई छिड़ जाने से स्थिति फिर बिगड़ गयी और मुद्रा-बाहुल्यने फिर जोर पकड़ा। इसकी रोशनी में लिये देश के भीतर चीजों की सप्लाई बढ़ाने और कय शक्ति का बिलार रोकने के उपाय किये गये।

मुद्रा नीति में परिवर्तन

मुद्रा क्षेत्र में भी एक नयी नीति जारी की गयी। नवम्बर, १९५१ में बैंक दर नीति से बचकर सारे तौर प्र० श० कर दा गया और रिजर्व बैंक ने निर्देशन दिया कि विशेष स्थितियों को छोड़कर, मासिकतः वह अनुमोचित बैंकों को सामान्य ढररे पर पूरी करने के लिये सरकारी सिफेरीरिडिया नहीं खरीदेगा। जनवरी १९५२ में बैंक ने बिल मारनेट स्वीम जारी की।

इन सब उपायों के फलस्वरूप और अन्तरराष्ट्रीय मामलों में कमी होने से १९५२ के शुरू में मूल्य गिन्ने लगे। मार्च १९५२ से योफ मूल्य का सूचक अंक ३६५ हो गया, जो कोरिया युद्ध से पहले के अंक से ८८ प्र० श० नीचे था। अब स्थिति उलटनी हो गयी और मरी को गैरकन के प्रयत्न करने पड़े।

मुद्रा-बाहुल्य का लोप

जुलाई, १९५२ तक मुद्रा बाहुल्य प्रायः खतम हो चुका था, इस लिये विकास कार्य को लीज करने पर पूरा ध्यान लगाना सम्भव हुआ। एक और लीगा की भय-शक्ति कम हा गयी थी और दूसरी और धरेलु उत्पादन तथा धायाना को बृद्धि में देश में वस्तुओं की मात्रा काफी बढ चुकी थी। इनलिये ज्वायों के नियन्त्रण को डीला करना और विकास पर अधिक रुपये खर्च करना सम्भव हुआ। फिर भी जुलाई १९५३ के प्रारम्भ में स्थिति कुछ अनिश्चित तो ही थी।

१९५३-५४ की घटनाएं

अनुवृत्त समीक्षा के बाद प्रतिवेदन में १९५३-५४ की मुख्य घटनाओं का उल्लेख किया गया है और बताया गया है कि इस वर्ष स्थिति में काफी सुधार हुआ। कृषि और उद्योग की वस्तुओं का उत्पादन पहले से काफी बढ गया। दून १९५२ में औद्योगिक उत्पादन का सूचक अंक १३२२ था, जो दिसम्बर १९५३ में १४४७ हो गया। दायिप वाढ में यह फिर गिर गया, किन्तु औसतन १३७.६ पर ही (जनवरी मार्च १९५४ में) कम प रहा। १९५२-५३ में खाद्यान्न का भी उत्पादन बढ गया और १९५३-५४ में और भी बढने का आशा है। उत्पादन का इस बृद्धि में विकास कार्य पर जल्द बनाने और निजी उद्योग व व्यापार को बढ़ावा देने के उपाय किये गये। अक्टूबर १९५३ में प्रथम पंच-वर्षीय योजना के कुल लागत खर्च से १०५ करोड़ ६० की बृद्धि की गयी। आगे चलकर मूल्यों और वस्तुओं के वितरण पर अधिकार नियंत्रण ढटा लिये गये और विभा व्यापार के लिय क्षेत्र कम गया। विकास दाय ने बन्ने और निजाम व आनात शुल्कों में सशोधन करने उद्योगों को हियामें देने में केन्द्र-उप राज्य सरकारों के बढना में, धारा ५५५२ की १४५ करोड़ ६० हा गया, जो १९५३-५३ में कचन ६७ करोड़ ६० था। हालांकि आंकन से पता चलता है कि वस्तुतः धाते की रकम काफी कम बैठेगा। १९५४-५४ में केन्द्र व राज्यों का ०.६ करोड़ ६० के लगभग धारा पठने का अनुमान है।

धरेलु अर्थ-व्यवस्था को बल

घाटे की वित्त व्यवस्था के अलावा, देश में आर्थिक गति-विधि बढ़ाने के कई उपाय किये गये। अति महीन कपड़े के उत्पादन शुल्क में कमी दी गयी। औद्योगिक वित्तार के लिये भी कई कदम उठाये गये। उद्योग के निजी क्षेत्र के लिये रिजर्व बैंक ने एक वित्त समिति नियुक्त की, विश्व-बैंक की सहायता से एक निजी निगम (कारपोरेशन) स्थापित करने की योजना का समर्थन किया गया और सरकार के स्वामित्व में एक औद्योगिक विकास निगम की स्थापना की योजना बनी। साथ ही निर्यात को बढ़ावा दिया गया। निर्यात की माग भी बढ़ी, और इन सब कार्यों से १९५३ की अंतिम तिमाही में निर्यात की आय में काफी वृद्धि हुई।

उपर देश में उदात्त बनने से आयात कम हा गया। फलतः, १९५३ की अंतिम तिमाही में भुगतान समुतलन में ८८ करोड़ ६० की बचत हुई। पूरे वर्ष के भुगतान में भी बचत की आशा है, दरमिप वह १९५२-५३ की बचत (६१ करोड़ ६०) से कुछ कम ही होगी।

बैंक सम्बन्धी कानून और नीति

रिपोर्ट में बैंक सम्बन्धी कानूनी और नीति के बारे में विस्तार में वर्णन किया गया है। बैंक सम्बन्धी नीति का यह उद्देश्य था कि बैंकों के काम पर नियन्त्रण किया जाय और दायन उधार देने की व्यवस्था अधिक विस्तृत क्षेत्र में सुचारु रूप से चल सके। *Impulsion*
रिपोर्ट में कहा गया है कि बैंकों के निरीक्षण का काम मार्च १९५० से नियमित रूप से प्रारम्भ हुआ। जून १९५४ तक ५२० बैंकों का निरीक्षण किया गया, जिसमें ११३ बैंकों में एक से अधिक बार निरीक्षण किया गया। १९५३-५४ में १६ अनुसूचित और १६६ गैर अनुसूचित बैंकों का निरीक्षण किया गया, जिनमें से ६४ बैंकों का निरीक्षण बैंकिंग कम्पनी एक्ट १९४६ के २० वें विभाग के अनुसार कारका की अनुमति देने के लिये किया गया और बाकी की स्थिति और कारका का ढग देवने के लिये इनमें दो बैंकों का निरीक्षण लेन देन स्थान (मॉर्टगिजियन) के सम्बन्ध में किया गया। २० अनुसूचित बैंकों और १ गैर अनुसूचित बैंक को भारत में कामका करने की स्वीकृति दी गई और ६ बैंकों का नाम शुरू करने की अनुमति दी गई। निम्न क्षेत्रों में बैंक नहीं हैं, वहा बैंकों को शाखा खोलने की उधान देने की नोंत नहीं है। शाखा खोलने के लिये सन् १९४६ में ७४८ अर्धिया प्राप्त हुए थीं, जिनमें ६०३ मगूर की गई। भारत के बाहर आराम खोलने के लिये ३३ अर्धिया आया, इनमें से २८ आराम खोलने की स्वीकृति टा गयी।

बैंकों की साख नीति

निर्बन्धक न बैंक के लेनदेन की आधिक नीति के अनुसूचित रखने के लिये प्रयत्न किया है। अनुसूचित बैंक में गोपना एक लाभ और उसके ऊपर का रकम के उधार का विवरण लिखा जाता रहा। कतबना के बैंकों ने जो दायन करने पन्तन के खर्चों के लिये उधार किया था, उसे निर्बन्ध

अवधि में वापिस लेने की सजाह दी गयी। विशेष कामों के लिये बैंकों से रुपया दिलाने में भी रिजर्व बैंक ने सहायता दी। उदाहरण के लिये भारतीय तथा विदेशी कपाल खरीदने के लिये व्यापारियों को उधार दिलाने की मन्त्रा की गयी थी। इसी प्रकार १९५३-५४ में चाय के व्यापार को भी विचीय सहायता दिलायी गयी। सन् ५४ में साथ पर बट्टी लहटने के बाद कुछ बैंकों को कहा गया कि अन्न पर दिये गये ऋणों का हफ्तवारी ब्योरा दें।

रिपोर्ट में बताया गया है कि विलों की खरीद विक्री की 'एकीय बाफो' सफल रही है और अब यह सात व्यवस्था का स्थायी अंग बन गयी है।

बैंकों का विस्तार

रिपोर्ट में इस बात पर विचार किया गया है कि जिन क्षेत्रों में बैंक कम हैं, वहां बैंकों का विस्तार कैसे किया जाए। गत वर्षों में इसमें जो प्रगति हो गयी है, उस पर भी प्रकाश डाला गया है। 'एल' राज्यों की बैंकिंग और ट्रेजरी व्यवस्था के 'क' राज्यों के साथ एकीकरण के बारे में कार्यवाई की गयी और अब ७ में से ५ 'एल' राज्यों ने रिजर्व बैंक को अपना काम सौंप दिया है। रिजर्व बैंक का एक कार्यालय १ जुलाई, १९५३ को बंगलौर में खोला गया। १ जुलाई १९५३ से लेकर तीन वर्ष में रिजर्व बैंक ने २० शाखाओं खोला स्वीकार कर लिया है। इसके अलावा रुपया भेजने की व्यवस्था को सुधारने, खजाने का कार्य अच्छे ढंग पर चलाने और डाकघरों में बचत खातों में रुपया जमा करने की व्यवस्था को पुनर्संगठित करने का भी प्रयत्न किया गया।

रिपोर्ट में उन उपायों का उल्लेख किया गया है जिससे कोपरेटिव बैंक कृषि तथा कृषि से सम्बन्धित अनेक आवीजनों के लिये रुपया की व्यवस्था सुचारु रूप से कर सकें। ग्राम्य श्रम व्यवस्था सम्मेलन की सिफारिशों के अनुसार इनकी कार्य प्रणाली में भी सुधार किये गये हैं।

१९५३-५४ में सहकारी बैंकों का लगभग ७ लाख ६० अरु के रूप

में दिया गया था, जबकि १९५३-५४ में १६ करोड़ ३२ लाख रुपये के ऋणों की स्वीकृति दी गयी। सन् १९५१ और ५३ में रिजर्व बैंक अधिनियम में संशोधन करके ग्राम्य क्षेत्रों में रिजर्व बैंक द्वारा ऋण देने के कार्य में वृद्धि की गयी है। अल्पकालीन ऋण की अवधि बढ़ाकर १५ महीने कर दी गयी है और बैंक को ५ साल तक की अवधि के ऋण देने का अधिकार प्राप्त है। सन् १९५३ में रिजर्व बैंक और भारत सरकार ने मिलकर भूमि पक्क बैंकों के ऋणपूर्वों (डिपेंचरों) को ४० प्र० श० तक लेना स्वीकार किया। रिजर्व बैंक द्वारा सहकारी बैंकों के स्वेच्छा निरोद्धण की प्रणाली भी चालू की गयी। सन् १९५२-५४ के दो वर्षों में १६ सहकारी बैंकों का इस प्रकार निरोद्धण किया गया।

रिपोर्ट में निजी उद्योगों के सम्बन्ध में वित्त समिति की सिफारिशों की भी संक्षेप में समीक्षा की गयी है और उनको कार्यान्वित करने के लिये प्रयुक्त उपायों पर भी प्रकाश डाला गया है। अतः रिपोर्ट में व्यापारिक तथा सहकारी बैंकों के कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिये रिजर्व बैंक द्वारा किये गये कार्यों की चर्चा की गयी है। इस वर्ष पूना में सहकारी बैंकों के ४० से ४५ कर्मचारियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गयी। जुलाई १९५४ में मद्रास में भी एक प्रादेशिक प्रशिक्षण केन्द्र खोला गया। व्यापारिक बैंकों के कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिये बम्बई में कालिज खोलने की व्यवस्था लगभग पूरी हो चुकी है।

लाभ

अतः रिपोर्ट में रिजर्व बैंक का वार्षिक हिसाब किताब दिया गया है जून १९५४ में समाप्त वर्ष में बैंक की आमदनी २१ करोड़ ६४ लाख रुपये हुई और खर्च ४ करोड़ ४३ लाख रुपये हुआ। रिजर्व बैंक के अधिनियम के अनुसार खर्च काटकर लाभ से केंद्रों पर सरकार को देने के लिये १७ करोड़ ५० लाख ६० रुपये, जबकि पिछले वर्ष १२ करोड़ ५० लाख और १९५१-५२ में ७ करोड़ ५० लाख रुपये दिये गये थे।

भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय का अंग्रेजी मासिक पत्र दी जर्नल आफ इण्डस्ट्री एण्ड ट्रेड

पाहक बनने, विज्ञापन देने अथवा एजेंसी लेने के लिये लिखिये :-

प्रकाशन सम्पादक, वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

✽✽✽ तम्बाकू की खेती युद्ध से पहले की अपेक्षा अब ६ लाख एकड़ अधिक भूमि में होती है।

तम्बाकू का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार

१९५२ में विश्व-भर के निर्यात का परिमारा घटा

संसार में शायद ही ऐसा कोई देश होगा जहाँ तम्बाकू का प्रयोग न होता हो। धूम्रपान और सुंधुधनी इसके उपयोग के दो प्रमुख रूप हैं। अधिकांश उत्पादक देश अपनी उपज का बहुत बड़ा भाग स्वयं ही काम में ले आते हैं। परन्तु सिगारेट, सिगार आदि के निर्माण के लिये अनेक देश इसे दूसरे देशों से मगाते हैं।

१९५२ में विश्व-भर में तम्बाकू का व्यापार घट गया। ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल की आर्थिक समिति ने यमीचों की फर्मलों के विषय में १९५३ की जो रिपोर्ट प्रकाशित की है उसके अनुसार अमेरिका तथा भारत से १९५२ में तम्बाकू का कम निर्यात होने के कारण विश्व में तम्बाकू का कम व्यापार हुआ।

रूसिणी रोडेक्षिया और अमेरिकन तम्बाकू के भाव ऊँच रहे परन्तु पूर्वी देशों की तम्बाकू के भाव कम रहे।



स्पेनी नाविकों का तम्बाकू के प्रचार में भाग

तम्बाकू की पूर्वी गोलार्द्ध में स्पेनी नाविक १६ वीं शताब्दी में लाये और लाते ही इसका चलन इतनी तेजी से बढ़ा कि शीम ही सर्वत्र फैल गया। तम्बाकू अनेक प्रकार की होती है परन्तु नित्य प्रति के उपयोग में एक किस्म की तम्बाकू ही अधिक आती है जिसे अगरेजी में निकोटिआना टैबैकम (Nicotiana Tabacum) कहते हैं। यह अनेक प्रकार की भूमि और जलवायु में उपज सकती है, यद्यपि उसकी किस्म पर कुछ सीमा तक भूमि और जलवायु दोनों का ही प्रभाव पड़ जाता है। इसे तैयार करने की विधियों से भी इसकी किस्मों में अन्तर पड़ जाता है। बाजार में बिकने वाली तम्बाकू इसी कारण अनेक प्रकार की होती है। फिलिपीन क्षेत्र में जिस प्रकार की तम्बाकू खेती इसका पता उस क्षेत्र के निवासियों की रूचि में ही लगता है। शर्करा उद्योग के कारण भी कुछ क्षेत्रों में किसी विरोध विरम की तम्बाकू उपजने लगती है।

उदाहरण के लिये ब्रिटेन में सिगारेटों और पाइपों के लिये हक्के रंग की, कम तीखी, धूपतापी बर्जीनिया किस्म की पत्ती पसन्द की जाती है। ब्रिटिश साम्राज्य के जो देश हस्त प्रकार की तम्बाकू ब्रिटेन से मगाते हैं वे भी इसी प्रकार की पत्ती पसन्द करते हैं। अतः वे इसीके उत्पादन पर जोर देते हैं।

तम्बाकू की खेती का क्षेत्र

यद्यपि तम्बाकू पैदा करने वाले कई देशों के विषय में ठीक ठीक आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं तथापि अनुमान है कि इस समय संसार में ८० लाख एकड़ भूमि में तम्बाकू उपजती है। युद्ध से पहले की अपेक्षा यह क्षेत्र ६,००,००० एकड़ अधिक है। ८० लाख एकड़ के आयेते अधिक का क्षेत्र अमेरिका, चीन और भारत में है। अमेरिका में मुख्य किस्म की तम्बाकू के लिये युद्धसे पहलेसे ही क्षेत्र निर्धारित किया जाता रहा है। वहाँ १६५१ में तम्बाकू के क्षेत्र में वृद्धि हा गई है। वह वृद्धि गिरोसत, धूपतापी तम्बाकू के क्षेत्र में हुई है। १६५२ में भी मुख्य किस्मों के क्षेत्र में वृद्धि हुई परन्तु थोड़ी सी। धूपतापी तथा बर्ली किस्मों की तम्बाकू के रेटाक इकट्टे हो जाने के कारण १६५३ में इनकी उपज के क्षेत्र में कमी पर दी गई। इसके फलस्वरूप तम्बाकू के कुल क्षेत्र में ७ प्रतिशत की कमी हो गई।

इण्डोनेशिया के विषय में हाल के वर्षों के सरकारी आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं, परन्तु आशा है कि खाद्यान्नों के उत्पादन पर वहाँ बल देने जाने के कारण तम्बाकू उपजने का क्षेत्र युद्ध से पूर्व की अपेक्षा बन्दर बन्दोटा हो गया है और कृषि ही जा रहा है। दूसरी ओर फिलिपाइन में युद्ध के बाद सबसे अधिक तम्बाकू १६५१ में पैदा हुई जो युद्ध से पहले की अपेक्षा केवल दो तिहाई थी। १६५२ में इसमें और भी कमी हा गई।

तुर्की में तम्बाकू का क्षेत्र १९५१ में गतवर्ष की अपेक्षा कम हो गया। परन्तु युद्ध से पहले की अपेक्षा यह अब भी बहुत अधिक है। १९५२ के आकड़ों का अनुसार स्थिति अब फिर सुधरने लगी है। १९५० में यूनायन में जितने क्षेत्र में तम्बाकू बोर्ड गईं वह युद्ध से पहले की अपेक्षा अधिक था। परन्तु बाद के दो वर्षों तक भाव गिर रहे और बिक्री सम्बन्धी कठिनाइयां बनीं रहीं। इस कारण बाद के वर्षों में क्षेत्र में तेजी से कमी हो गई। १९५३ में बाजार की स्थिति सुधरने पर क्षेत्र फिर बढ़ना आरम्भ हुआ। इटली में तम्बाकू का क्षेत्र युद्ध से पूर्व की अपेक्षा बढकर दुगुना हो गया है। फ्रांस और स्पेन के क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। ब्राजील, मेक्सिको और अर्जेंटीना के क्षेत्रों में भी वृद्धि हो गई है। परन्तु १९६१-५२ में अर्जेंटीना का क्षेत्र घट गया।

ब्रिटिश राष्ट्र मण्डल के देशों में तम्बाकू का सबसे अधिक क्षेत्र भारत में है। परन्तु भारत और पाकिस्तान का कुल क्षेत्र युद्ध से पहले की अपेक्षा कम है। १९५६ में दोनों देशों का तम्बाकू क्षेत्र बढ़ने लगा था परन्तु १९५२ में भारतीय क्षेत्र में तेजी से कमी हुई। पाकिस्तान में वह गत वर्ष के बराबर ही बना रहा। १९५३ के अनुमान के अनुसार भारत में भी तम्बाकू फिर अधिक क्षेत्र में बोर्ड जाने लगी है। कनाडा में १९५१ में तम्बाकू का क्षेत्र बहुत बड़ा परन्तु १९५२ में वह घटने लगा। इसका कारण यह था कि किसानों ने ब्रिटेन से धूम्रतापी तम्बाकू का अधिक निर्यात होने की आशा में उसकी खेती का क्षेत्र सीमित कर दिया। १९५३ में इस क्षेत्र में फिर वृद्धि हुई।

दक्षिणी रोडेशिया और न्यासलैण्ड में १९५० तक कनाडा की अपेक्षा कम भूमि में तम्बाकू बोर्ड जाती थी परन्तु १९५० में दक्षिणी रोडेशिया का क्षेत्र ही बढकर कनाडा से दुगुना हो गया। न्यासलैण्ड का क्षेत्र भी सम्भवतः इतना ही बढ गया है। दक्षिणी अफ्रीका और उत्तरी रोडेशिया में भी क्षेत्र काफी बढा है। आस्ट्रेलिया का क्षेत्र १९३६ की अपेक्षा १९५२ में ८,००० एकड़ अधिक हो गया यद्यपि यह १९५८ के लिये निर्धारित लक्ष्य से आधा ही है।

उत्पादन में कमी

संसार का तम्बाकू का उत्पादन १९५१ में अपनी चरम सीमा पर जा पहुँचा। १९६२ में वह थोड़ा घट गया। परन्तु फिर भी युद्ध से पहले की अपेक्षा यह १० प्रतिशत अधिक रहा। अब अमेरिका तथा एशिया महाद्वीपों में प्रायः ४० प्रतिशत तम्बाकू उपजने होती है, जबकि युद्ध से पूर्व विश्व भर की तम्बाकू का आधा भाग एशिया में और एक तिहाई अमेरिका में उत्पन्न होता था।

१९५२ में तुर्की और दक्षिणी रोडेशिया को छोड़कर प्रायः अन्य सभी बड़े निर्यातक देशों में तम्बाकू का उत्पादन घट गया। मुख्य देशों से उत्पादन सम्बन्धी जो समानांतर मिले हैं उनके अनुसार १९५३ में भी उत्पादन में कमी जारी रही है। उत्तरी अमेरिका में फल कम हुई है।

अमेरिका में यद्यपि युद्ध से पहले की अपेक्षा तम्बाकू की खेती का क्षेत्र घट गया है तथापि वहाँ अब प्रति एकड़ उपज अधिक हो रही है। इसी

कारण उत्पादन युद्ध से पहले की अपेक्षा अधिक हो रहा है। १९५१-५२ में यह २०,००० लाकड़ पौण्ड से भी अधिक हुआ। एशिया में भी उत्पादन बढ़ना आरम्भ हुआ था परन्तु इण्डोनेशिया और फिलिपाइन का उत्पादन १९५२ में घटा। जापान का उत्पादन बराबर बढ़ता जा रहा है। तुर्की का उत्पादन भी अधिक रहा परन्तु यूनायन के क्षेत्र में भारी कमी हो जाने के कारण उत्पादन इतना कम हो गया जितना कि १९५८ से अब तक कमी न हुआ था। अन्य यूरोपीय देशों में इटली, फ्रांस, जर्मनी और यूगोस्लाविया के उत्पादन भी घट गये। परन्तु स्पेन के उत्पादन में भारी वृद्धि हुई। लैटिन अमेरिका के कुछ महत्वपूर्ण देशों का उत्पादन भी गिरा परन्तु वह फिर भी युद्ध से पहले की अपेक्षा अधिक रहा।

ब्रिटिश राष्ट्र मण्डल के देशों में भारत और पाकिस्तान का उत्पादन हाल के वर्षों में युद्ध से पूर्व की अपेक्षा प्रायः एक तिहाई कम रहा है। भारतीय उत्पादन १९५२ में बहुत अधिक घट गया। पाकिस्तान का उत्पादन १९५१ और १९५२ में कुछ बढ गया। १९५३ के अनुमानों से प्रकट होता है कि भारत के उत्पादन में अब वृद्धि होने लगी है। कनाडा में १९५२ में तम्बाकू का क्षेत्र घटकर तीन चौथाई रह गया था। प्रति एकड़ उपज अच्छी होनेसे कुल उत्पादन १९५३ में भी अच्छा रहा। दक्षिणी रोडेशिया में उपज अच्छी हुई यद्यपि उत्तरी रोडेशिया और न्यासलैण्ड में १९५२ में उपज नहीं बढ़ी। इसके बाद १९५३ में इन तीनों देशों की उपज में अच्छी वृद्धि हुई।

कनाडा की भांति उत्तरी तथा दक्षिणी रोडेशिया में भी अधिकतर तम्बाकू धूम्रतापी वर्गीयता किम की होती है। परन्तु न्यासलैण्ड में यह अधिकतर में बड़ी अनिस्तापी पत्ती की होती है, जिसे मुख्यतः अफ्रीकी लोग अपने छोटे छोटे खेतों में पैदा करते हैं। दक्षिणी अफ्रीका में १९५१ तथा १९५२ में धूम्रतापी के बदले एक अन्य किम की पत्ती पैदा की जाने लगी है जो निर्यात के लिये अधिक उपयुक्त होती है। १९५१ में इसकी अच्छी उपज हुई परन्तु १९५२ में यह घट गई। कम उत्पादक देशों में १९५२ में न्यूजीलैण्ड का उत्पादन घट गया जबकि पूर्वी अफ्रीका के प्रदेशों में यह या तो घट गया अथवा उसमें बहुत थोड़ा परिवर्तन हुआ। आस्ट्रेलिया में उत्पादन युद्ध से पूर्व की अपेक्षा पहली बार अधिक हुआ है। उत्तरी क्वीन्सलैण्ड में सिंघाई योजनाएँ लागू हो जाने पर अगले कुछ वर्षों में उत्पादन में और भी वृद्धि होने की आशा है। नीचे की तालिका में संसार के प्रमुख देशों का तम्बाकू का उत्पादन दिया गया है—

(दस लाख पौण्डों में भार)

	१९३८	१९५१	१९५२
ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल			
भारत और पाकिस्तान	...	१,१३१	५८६ ४५८
कनाडा	...	१०१	१५५ १६८
दक्षिणी रोडेशिया (क)	...	२७	६२ १००
दक्षिणी अफ्रीका (क)	...	२०	५३ ४४

न्यासालैंड (क)	...	१८	३६	२३
उत्तरी रोडेशिया (क)	...	२	११	१०
न्यूज़ीलैंड (क)		२	५	४
आस्ट्रेलिया (क)		६	४	८
टागानीका		०	५	४
युगाण्डा		३	५	५
गाइयाना		—	२	२
अन्य देश				
अमेरिका		१,३८६	२,३३२	२,२५५
चीन (ख)		६८३	१,१००	१,२५०
ब्राजील	..	२०१	२६०	२३४
इन्डोनेशिया (ग)	...	६०		
इन्डोनेशिया (घ)		१४६	१०६	१११
जापान (घ)	...	१३८	२११	२११
तुर्की (क)	...	१२७	१८१	२४८
इटली		६५	१७५	१६१
फ्रांस (घ)		७३	१२०	१०६
यूनान (घ)		१०६	१३८	६१
बर्मा		६६	१११	१११
मेक्सिको	...	४२	७८	७६
दक्षिण अफ्रीका	...	५७	८	८
क्यूबा	...	५५	७६	७५
हंगरी	...	४८	८	८
अर्जेंटीना (क)	...	१७	८४	७३
बोस्निया (ख)	..	६२	८	८
अन्य बॉस्निया	...	४०	४७	४७
यूनीक्वन् गणतन्त्र	...	३१	४०	४०
फिनोपार्ल	...	८६	६६	५६
बर्मा (ग)		७३	५६	५१
यूगोस्लाविया	..	३५	६१	२२
रुमानिया	...	२६	८	८
स्पेन	..	—	४२	६४
पोर्तुगाल (क)	...	४४	२६	२८
बेलाजियम	..	१२	११	११
योग		५,३८६	६,७५०	६,६००

- (क) वर्ष में फसल के अन्त तक का
 (ख) १९३७-३८, केवल स्वतन्त्र चीन का
 (ग) बर्माची का उत्पादन
 (घ) जावा और मद्रुरा के छोटे उत्पादकों का उत्पादन
 (च) मुख्य जापान का
 (ङ) युद्धोत्तर, केवल दक्षिणी बोस्निया का
 (ज) युद्धोत्तर, केवल परिचयनी बर्माची का
 (क) अनुमानित
 (ख) योग में सम्मिलित अद्यमान

तम्बाकू का प्रति एकड़ उत्पादन भूमि की किस्म और अन्य स्थानों पर अवस्थाओं के अनुसार भिन्न भिन्न रहता है। उत्पादन का सबसे अधिक औसत परिचयनी यूरोप के कुछ देशों में २,००० पौण्ड प्रति एकड़ तक रहा है। यहाँ की खेती अत्यन्त गहन होती है। उत्तरी अमेरिका में गत १५ वर्षों में खेती की प्रणाली में सुधार हो जाने से उत्पादन का औसत प्रति एकड़ बटकर १,३०० पौण्ड तक हो गया है। ब्रिटिश मध्य अफ्रीका में उत्पादन कम होता है। दक्षिणी रोडेशियामें युद्धके अन्त समय युद्ध से पहले की अपेक्षा अधिक उत्पादन हो रहा था। बाद की वह और भी बट गया। १९५० में वह घटने लगा और ७०० पौण्ड प्रति एकड़ तक का लक्ष्य भी पूरा नहीं हुआ है। न्यासालैंड में अफ्रीकी लोग तम्बाकू पैदा करते हैं। उनके उत्पादन का औसत बहुत कम रहता है।

एशियामें उत्पादन का सबसे अधिक औसत जापान में है जो कन्नडा के बराबर है। भारत का औसत दक्षिणी रोडेशिया के बराबर है। जिन देशों में विशाल परिमाण पर रासायनिक खाद का प्रयोग आरम्भ नहीं हुआ है वहाँ उपज का औसत कम है और न उसके बढ़ने के लक्षण ही दिखाई देते हैं।

अमेरिका का निर्यात घटा

तम्बाकू के कुल उत्पादन के प्रायः पचमाश का ही विश्व व्यापार होता है। अमेरिका, भारत, चीन और रूस आदि विशाल उत्पादक देशों में उपजने वाली अधिकांश तम्बाकू बहा खर जाता है। अनिमित तम्बाकू के कुल निर्यात में १६५६ से कोड़ वटा परिवर्तन नहीं हुआ है। १६५१ में कुल निर्यात प्रायः १२,००० लाख पौण्ड का हुआ जो युद्ध से पूर्व की अपेक्षा थोड़ा ही अधिक था। १६५२ में अमेरिका का निर्यात तेजी से घटने के कारण सप्ताह के निर्यात व्यापार में कमी हो गई। अनेक अमेरिका से ही सप्ताह का ४० प्रतिशत निर्यात होता है।

अनिमित तम्बाकू के लिये अमेरिका अब विदेशों पर कम निर्भर रहता है। अमेरिका का तम्बाकू उद्योग अपने वहाँ उपजने वाली तम्बाकू का ही अधिकांशिक प्रयोग कर रहा है। १६५२-५३ में अमेरिका की केवल २४ प्रतिशत उपज ही विदेशों की भेजी गई, जबकि गत मौसम में २८ प्रतिशत और १६३८-३९ में ३७ प्रतिशत भेजा गया था। १६५१ में निर्यात फिर बट गया। १६५० में वह फिर कुछ घटा।

युद्ध के बाद तम्बाकू का निर्यात करने वालों में तुर्की का दूसरा स्थान है। इसका एक कारण यह भी है कि तुर्की में मुद्रा क्षेत्र के देशों से माल मिलने में कठिनाई होने के कारण यहाँ बहुत अधिक तम्बाकू खरीदी गई। १६४६ में तो तुर्की से तम्बाकू का निर्यात चरम सीमा को जा पहुँचा। १६५१ में यह घट गया और १६५२ में भी प्रायः १६५१ के बराबर ही बना रहा। अमेरिका को जाने वाले माल में कमी हो गई। परन्तु वह कमी जर्मनी और पूर्वी यूरोप को होने वाले निर्यात में हुई ही जाने में बहुत कुछ पूरी हो गई। यूनान का निर्यात भी १६५२ में तेजी से बढ़ा। यहाँ से बहुत अधिक भाग जर्मनी को भेजा गया।

दक्षिणी अमेरिका में ब्राजील का तम्बाकू उत्पादन बट जाने पर भी

निर्यात कम हुआ। इसका कारण विदेशी मुद्रा में तम्बाकू का नूतन कम रहना था। क्यूबा में भी उत्पादन बढ़ा परन्तु उसकी अपनी खपत भी बढ़ गई। १९५१ और १९५२ में यहाँ से पत्ती का निर्यात अच्छा हुआ।

सुदूर पूर्व में १९५२ में इन्डोनेशिया का निर्यात युद्ध से पूर्व का एक अंश ही रहा। परन्तु फिलिपाइन का निर्यात १९३७ के बराबर का पहुँचा। चीन में हाल के वर्षों में पूर्वी यूरोप को तम्बाकू भेजी जाने के समाचार मिले हैं।

डालर क्षेत्र से माल कम मिलने के कारण रोप माग को पूरा करने के लिये ब्रिटेन तथा अन्य देशों ने जो माल खरीदा उसके कारण ब्रिटिश राष्ट्र-मण्डल के अधिकांश देशों के निर्यात को प्रोत्साहन मिला। दक्षिणी रोडेशिया का कुल निर्यात १९५० के बराबर हो गया जो युद्ध से पूर्व की अपेक्षा प्रायः पांच गुना था। इसके बाद १९५१ में निर्यात कुछ घटा और फिर १९५२ में वह १९५० के बराबर हो गया। म्यांमारलैंड और उत्तरी रोडेशिया में फसल खराब होने के कारण युद्ध के बाद यहाँ से अधिक निर्यात नहीं हुआ। परन्तु १९५३ में दशम सुचने लगी। युद्ध काल से भारत से हुआ निर्यात घटता बढ़ता रहा है। १९५० और १९५१ में वह युद्ध से पूर्व अविभाजित भारत से हुए निर्यात का दुगुना हो गया। १९५२ में भारत का निर्यात भी फिर घटा और १९५३ की पहली छमाही में १९५२ के बराबर ही रहा।

बनाडा से ब्रिटेन को बहुत अधिक तम्बाकू भेजी जाने के कारण १९५२ में उसके निर्यात का योग ३६० लाख पौंड तक जा पहुँचा, परन्तु १९५३ में वह कुछ घट गया।

यूरोपीय पुनरुत्थान और पारस्परिक सुरक्षा कार्यक्रमों के अन्तर्ग १९५२ के अन्त तक अविर्मित तम्बाकू के निर्यात का योग ६,६०० लाख पौंड से अधिक रहा। यह निर्यात प्रायः साप ही अमेरिका से हुआ। १९४६ में, जबकि यह निर्यात अपनी चरम सीमा पर था तो अमेरिका से होने वाले तम्बाकू के कुल निर्यात में यह ७० प्रतिशत रहा करता था। परन्तु १९५२ अन्त-आते यह अयुक्त पद्धति १० प्रतिशत से भी कम रह गया। यूरोपीय पुनरुत्थान और पारस्परिक सुरक्षा कार्यक्रमों के अन्तर्गत होने वाले निर्यात में से ४३ प्रतिशत ब्रिटेन को और २३ प्रतिशत पश्चिमी जर्मनी को हुआ।

नीचे की तालिका में मुख्य मुख्य देशों को हुआ निर्यात दिखाया गया है :—

(लाल पौण्ड सूत्र भार)

१९३८ १९५१ १९५२

ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल			
दक्षिणी रोडेशिया	२३०	६७०	८८०
भारत (क)	...	५४०	१,०६०
म्यांमारलैंड	...	१३०	२७०
बनाडा	...	१७०	२६०
उत्तरी रोडेशिया	...	२०	६०

अन्य देश			
अमेरिका	४,८६० ५,२२० ३,६६०
तुर्की	६३० १,२७० १,२५०
बावील	-	-	५२० ६३० ६६०
यूनान	१,०८६ ६६० ६९०
इन्डोनेशिया	१,०८६ २७० २२०
डोमीनिक्न गणतन्त्र	१६० ३५० ३४०
क्यूबा	२८० ३८० ४००
अलजीरिया	२५० ३०० २४०
बल्गारिया	७४० — —
इटली	१६० १७० १७०
फिलिपाइन	२६० १४० २५०
हंगरी	२५० — —
चीन	३३० — —

योग .. १२,०१० ११,८५० १०,७००

इस तालिका में टी गई अनिर्मित तम्बाकू में उसके डटल, बतनें चूरा आदि भी सम्मिलित है।

(क) समुद्र द्वारा हुआ व्यापार। १९४८ में पहले अविभाजित भारत का जिसमें काठियावाड और त्रानकोर का भी सम्मिलित है १९४८ से १९५१ तक के आकड़े केवल भारतीय गणराज्य के ही हैं।

रवाल द्वारा १९५२ में भारत से जो निर्यात हुआ उसका योग ७० लाख पौंड रहा। इतने से ६० लाख पौंड माल पाकिस्तान को गया।

व्यापार का रूप

अमेरिका से तम्बाकू के निर्यात की दिशाओं में युद्ध से पहले की अपेक्षा काफी परिवर्तन हो गया है। १९५१ में जब बहुतसे डालर उपलब्ध थे तो ब्रिटेन को २,२३० लाख पौंड तक तम्बाकू भेजी गई जो कुल निर्यात की ४३ प्रतिशत थी। उसके बाद के वर्षों में डालर कम मिलने से ब्रिटेन को केवल ५५० लाख पौंड तम्बाकू ही भेजी गई जो कुल निर्यात को केवल १४ प्रतिशत थी। बाद को कुछ और भी तम्बाकू ब्रिटेन ने अमेरिका से खरीदी परन्तु वह १९५३ के आरम्भ में ही वहा पहुँच सकी।

युद्ध से पहले अमेरिकन तम्बाकू का दूसरा प्रमुख खरीदार चीन था। १९५० से चीन को अमेरिकी तम्बाकू जाना बन्द हो गया है। परन्तु हाल के वर्षों में फिलिपाइन और इन्डोनेशिया अधिक प्रमुख खरीदार हो गये हैं। जर्मनी को भी युद्ध से पहले अपेक्षाकृत कम अमेरिकन तम्बाकू जाती थी, परन्तु १९५० में वह बढ़कर ८०० लाख पौंड हो गई। फ्रांस ने अमेरिका से तम्बाकू लेना कम कर दिया है। परन्तु हालैंड केवलियन, लक्जम्बर्ग, स्वीडन, नारवे और स्वीटजरलैंड ने बधा दिया है।

नाचे का तालिकाओं से विगित होता है कि किन देशों ने किन देशों से कितनी तम्बाकू भगाई

(टच लाख पौ = सूया भार)

	अमेरिका			भारत			रूसिया		
	१९५२	१९५१	१९५०	१९५२	१९५१	१९५०	१९५२	१९५१	१९५०
ब्रिगिन	५०५	२२५	५५७	१७६	४५६	३२५	१६१	४२८	५५२
अमेरिका	०३	००	२५०	—	०४	०५	—	४२	७३
हांगकंग	१५	४७	३६	०५	१०२	२४	—	—	—
आयर	१०	१७६	१६४	—	०६	०१	—	०१	०१
जपान (ख)	८७	४७७	७६१	—	०१	०७	००	०२	४१
नागरलैण्ड	१७५	२४३	२६०	०४	०	२६	—	४१	८९
फ्रान्स	६०१	—	—	४०	३३	०४	—	—	—
प्रान्स	२१२	१००	६७	—	०५	१०	—	—	—
केनापन	१५२	२६६	१५६	—	१०	१२	०१	०७	१३
सिन्चरलैण्ड	४८	१०४	१०७	—	०१	—	—	—	—
डेनमार्क	६१	६१	६६	—	०३	—	—	४०	३५
मिल	०२	३८	५२	०१	२२	२०	—	०६	१५
अष्ट्रेलिया	१६	०७	—	—	—	—	—	—	—
स्वान	६६	१५०	१३०	—	१६	१४	—	०६	०६
इटली	०८	०	२६	—	०१	०६	—	—	०१
अन्य	५०८	१०१३	१२०७	१७५५	२६८८	२६५७	३२	६८	६५
योग	४८६१	५२२१	५६५५	६०१	१००४	७६६	२२६	६७४	८८४

	ब्रिगिन			भारत			जपान		
	१९५२	१९५१	१९५०	१९५२	१९५१	१९५०	१९५२	१९५१	१९५०
ब्रिगिन	०१	०८	०१	१०	३१	६७	११	१६	२१
जपान (ख)	२८३	१०२	१६३	३६४	१०३	२५६	५६६	१७३	४०६
नागरलैण्ड	१२०	१०७	६७	४०	१३	१६	२१	०४	०५
अमेरिका	—	०४	११	२७६	६६७	५१७	२६	१०६	१३८
प्रान्स	१०१	५७	०	०५	६७	०३	०५	६८	३०
केनापन	११	०	२८	१८	३८	५५	१५	०१	०४
स्वेन	—	६८	१२१	१	—	११	३	—	१२
सिन्चरलैण्ड	०१	७१	६७	०४	१६	२८	१०	११	२२
डेनमार्क	—	३५	४७	०५	०४	०३	०६	०१	—
मिल	—	—	—	२३	८०	४५	३०	४४	२६
अष्ट्रेलिया	१०३	२२	—	३	३	३	३	३	३
स्वान	०७	०७	०८	०५	११	१८	०३	१०	३०
इटली	—	—	—	७८	१७	३२	३१	५६	१५
अन्य	४३	११६	११६	६६	२००	२१३	१५१	१०७	१००
योग	५८०	६३७	६६५	६२०	१२०५	१२५४	१०७८	६६६	६१३

क—ब्रिगिन वर जो १ अग्रिल से आरम्भ होता है। समुद्र द्वारा डूबा गया। १९५१ और १९५२ में केवल भारत गणराज्य का। ख—जुद्धो वर वरों में केवल सशरीय गणराज्य का। ग—ब्रिगिन वर जो ६७ और इराननासरा १३६। घ—जपान १०६। च—सावकत रुस ७६। छ—जपान १४५। झ—नियत, यदि कुछ हुआ है तो उसमें 'अन्य' का समािलत है।

१९५१ से पूर्व लागू समझौते के अनुसार दक्षिणी रोडेशिया की दो तिहाई तम्बाकू प्रति वर्ष ब्रिटेन के निर्यात होते थे। उसके बाद निर्याताओं ने धूमतापी पत्ती की कुछ विशेष किस्में ही मुख्य और किस्म सन्तोपत्रक होने की अवस्था में उत्पीड़नी स्वीकार कीं। परिणाम के विषय में इस प्रकार निश्चय हुआ —

१९५२	...	७५०	लाख पौण्ड
१९५३	"	८००	" "
१९५४	"	८५०	" "
१९५५	"	८५०	" "
१९५६	"	८००	" "
१९५७	"	८००	" "

१९५१ में आस्ट्रेलिया के निर्याताओं के साथ भी इसी प्रकार का समझौता हुआ। ये उस समय रोडेशिया का ६। प्रतिशत तम्बाकू होते थे। इस के अनुसार १९५१ में ८२ लाख पौंड से लेकर १९५५ में ९० लाख पौंड लेना तय हुआ। आस्ट्रेलिया ने १९५२ में आयात पर जो प्रतिबंध लगाये थे उनमें दक्षिणी रोडेशिया की तम्बाकू मुक्त थी। दक्षिणी रोडेशिया की तम्बाकू हाल के वर्षों में दक्षिणी अफ्रीका को कम जाने लगी है। परन्तु नीदरलैंड और जर्मनी को उसका निर्यात बढ़ गया है।

भारतीय तम्बाकू की अर्थ भी सबसे अधिक खर्च ब्रिटेन में ही होती है। अन्य देशों को होने वाले निर्यात में प्रति वर्ष परिवर्तन होता रहता है। १९५१-५२ में हांगकांग और ताइवान रूप से अच्छा माल खरीदा। इसके बाद वाले वर्ष में जापान को हुआ निर्यात केवल ब्रिटेन से कम रहा।

१९५२ में न्यासलैण्ड की उपज का आधे से अधिक भाग ब्रिटेन को भेजा गया, यद्यपि अनुपात में यह युद्ध से पहले की अपेक्षा कम रहा। सिरालियोन, मिश्र और वेलाजिबेन कामो की अब इसका निर्यात बढ़ रहा है। ब्रनाडा की ८० प्रतिशत से अधिक तम्बाकू ब्रिटेन को जाती है। युद्ध से पहले यह ६० प्रतिशत जाती थी। अब शेष भाग ब्रिटिश केरीबियन द्वीपों तथा आस्ट्रेलिया को जाता है।

यूरोप वर्षों में तुर्की की तम्बाकू का सब से बड़ा खरीदार अमेरिका रहा है। पहले तुर्की की सबसे अधिक तम्बाकू जर्मनी को जाती थी और यद्यपि युद्ध के बाद जर्मनी फिर तुर्की की अधिकाधिक तम्बाकू खरीद रहा है तथापि वह युद्ध की अपेक्षा कम ही है। युद्ध से पहले तुर्की से ब्रिटेन को जाने वाली तम्बाकू का परिमाण लगभग ही था, परन्तु १९४६ में यह १६० लाख पौंड रहा। उसके बाद थोड़ा घट गया है। यूनान से युद्ध के बाद जर्मनी और अमेरिका को थोड़ा माल जाने लगा है।

आयात करने वाले मुख्य देश

यद्यपि शीतोष्ण कटिबंध के देशों में तम्बाकू की उपज बढ़ रही है तथापि अब भी वे अपनी अधिकांश आवश्यकता के लिये विदेशों पर निर्भर हैं।

ब्रिटेन अब भी सभार भर के समस्त देशों में सब से अधिक तम्बाकू का आयात करता है। परन्तु वह आयात की हुई तम्बाकू का पचमास निर्मित अवस्था में फिर निर्यात कर देता है। आयात का परिमाण युद्ध के बाद प्रतिवर्ष बढ़ता रहा है। ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल के अन्य देशों में आस्ट्रेलिया भी विदेशों से बहुत तम्बाकू मंगाता है। उसकी अपनी उपज बहुत थोड़ी होती है। न्यूजीलैंड का उत्पादन भी बढ़ रहा है। ब्रनाडा यद्यपि अपनी तम्बाकू निर्यात करता है तथापि सिंगार की पत्ती वाली तथा पूर्वी देशों की अन्य प्रकार की तम्बाकू कुछ परिमाण में मंगाता है। नाइजेरिया भी इधर आयात करने लगा है।

ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल के बाहर घरेलू उपयोग के लिये तम्बाकू का आयात करने वाले देशों में जर्मनी का फिर सबसे ऊँचा स्थान हो गया है। १९५२ में पश्चिमी जर्मनी ने १,१३० लाख पौंड तम्बाकू मंगाई। युद्ध से पहले समस्त जर्मनी में जितनी तम्बाकू खपती थी उसकी यह आधी है। युद्ध के बाद जर्मनी में बहुत सी तम्बाकू अमेरिका से आने लगी है। इधर कुछ वर्षों से तुर्क और बाल्कन राष्ट्रों ने भी जर्मनी को अधिक तम्बाकू भेजनी आरम्भ कर दी है। लेटिन अमरीकी देशों तथा इण्डोनेशिया से भी अधिक आयात होने लगा है। युद्धकाल से अमरीका भी विदेशी तम्बाकू अच्छे परिमाण में मंगा रहा है। उसे पूर्व की पत्ती की आवश्यकता होती है, जिसे वह तुर्क और यूनान से मंगाता है और अपने यहाँ भी तम्बाकू में मिलाता है। क्या पेरूविको और इण्डोनेशिया से वह सिंगार की पत्ती का आयात करता है। १९५१ में उसने १,०५० लाख पौंड मंगाई। १९५२ में भी उसके आयात का योग प्रायः इतना ही रहा, जब कि युद्ध में पूर्व ७५० लाख पौंड रहा था। नीदरलैंड में आने वाली तम्बाकू का योग अब भी युद्ध से पहले की अपेक्षा कम है। इण्डोनेशिया से अब यहाँ माल आना बहुत कम हो गया है। जितनी तम्बाकू आती है उसमें से प्रायः आधे का पुनर्निर्यात कर दिया जाता है। युद्ध से पहले दो तिहाई का निर्यात हो जाता था।

फ्रांस में तम्बाकू का आयात प्रतिवर्ष घटता बढ़ता रहा है। परन्तु १९५१ और १९५२ में यह युद्ध में पूर्व की अपेक्षा सवाया हुआ। अल्जीरिया से पहले के बरान ही तम्बाकू आने लगी है। यूनान और यूगोस्लाविया से भी हाल के वर्षों में अधिक आरंभ है। अमेरिका ने आने वाली तम्बाकू घट रही है। स्पेन ने १९५२ में ५६० लाख पौंड तम्बाकू मंगाई यह मुख्यतः लेटिन अमेरिकन देशों और फिलीपाइन से आरंभ है। १९५१ से अमेरिका से भी अधिक तम्बाकू आने लगी है। १९५२ में तुर्क और यूनान से भी युद्ध के बाद पहली बार स्पेन में तम्बाकू भेजी। डचों ने तम्बाकू उपजने लगने के कारण १९४८ से उसका कम आयात किया गया है। चीन ने १९५० से अमरीकी तम्बाकू मंगाना बन्द कर दिया है। मिश्र ने युद्ध से पहले की अपेक्षा हाल के वर्षों में दुगुनी तम्बाकू मंगाई है।

चीन को तालिका में विभिन्न देशों द्वारा किया गया तम्बाकू का आयात दिखायी पार्ता है —

(दस लाख पौंड खुरा मात्र)

विदेश	१९३८	१९५४	१९५४	
ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल				
जिने	...	३४५	२५५	२२४
आस्ट्रेलिया (क)	...	२३	२७	८७
भारत	...	७	६	६
पाकिस्तान (ख)	...	१	२	२
कनाडा	...	४	१	२
दक्षिणी अफ्रीका	...	५	५	३
न्यूजीलैंड	...	३	७	७
नाइजेरिया	...	३	६	६
आयर गणराज्य	...	१४	१६	१६
विदेश				
जर्मनी (ग)	...	२२३	१०२	११३
नॉरवे	...	१६०	१०६	१३५
अमेरिका	...	७१	१०५	१०३
चीन	...	५३	—	—
फ्रांस	...	५७	७०	७३
बेल्जियम	...	३८	५४	४७
स्पेन	...	—	४७	५६
स्विट्जरलैंड	...	१६	२४	२५
सैकोन्लोवाकिया	...	१७	—	—
डेनमार्क	...	२२	२२	२२
मिल	...	१३	२८	२६
अर्जेन्टाना	...	१८	६	—
स्वीडन	...	१४	२७	१६
इटली	...	६	५	४
योग	...	१,११४	१,०२६	६२०

इस तालिका में अतिमित तम्बाकू में उसके डटल, कतरों, चूरा आदि सम्मिलित हैं।

(क) दिखाये गये वर्ष के ३० जून को समाप्त होने वाले १० महीने।

(ख) केवल समुद्र द्वारा हुआ आयात।

(ग) १९५८ और १९५६ में सम्पूर्ण जर्मनी का और उसके बाद केवल पश्चिमी जर्मनी का।

उपभोग में उल्लेखनीय विस्तार

अमेरिका और कनाडा में तम्बाकू का उपभोग बहुत बढ़ता जा रहा है। अमेरिका में १९५२ में कुल उपभोग ११,००० लाख पौंड अथवा युद्ध से पहले की अनेका प्रायः ५० प्रतिशत अधिक हुआ। कनाडा में तो उपभोग की गति और भी तेजी से बढ़ी है। १९५३ में तम्बाकू पर अधिक कर लगाने से उपभोग कुछ कम हुआ परन्तु उसके एक वर्ष बाद कर हट जाने

पर वह फिर तेजी से बढ़ने लगा। युद्ध से पहले की अनेका तम्बाकू का उपभोग इटली में ३५ प्रतिशत से अधिक हो गया। फ्रांस, नॉरवे, डेनमार्क और स्वीडन में भी यह बढ़ गया। बेल्जियम में यह बल्कर युद्ध से पहले के बराबर हो गया है।

तम्बाकू के विभिन्न उत्पादों में सिगरेटों की खपत बहुत बढ़ी है। अमेरिका, कनाडा, स्वीडन और डेनमार्क में सिगरेटों की विक्री से युद्ध से पहले की अनेका दुगुनी हो गई है। अन्य अनेक देशों में भी ५० प्रतिशत बढ़ा है। दूसरी ओर अधिकतर देशों, विशेषतः अमेरिका में पाइप की तम्बाकू और सुघनों की खपत घट गई है। पहले नाइजरलैंड और डेनमार्क सिगार पीने के बड़े शौकान थे। परन्तु अब इनमें सिगार की खपत बहुत घट रही है। दूसरी ओर अमेरिका और कनाडा में सिगार की खपत बहुत बढ़ गई है।

नाचे की तालिका में कुछ देशों के तम्बाकू का खपत के आकड़े दिखाये गये हैं।—

बड़े सिगार (दस लाख सख्या)

	१९३८	१९५४	१९५४	
कनाडा	...	१३२	१६६	२००
अमेरिका	...	५,३२६	५,७३५	५,६८२
फ्रांस	...	१८१	१०२	६७
इटली (क)	...	१,१६७	६१२	५६३
नॉरवे	...	१,२३६	५६६	६६२
बेल्जियम	...	१६५	७७	११७
स्वीडन	...	२८	२०	२१
डेनमार्क	...	४६६	१८२	२१४

छोटे सिगार, सिगारिलो और सिगरेटें (दस लाख सख्या)

कनाडा	...	६,८७१	१५,६६७	१७,८४८
अमेरिका	...	१६३,६२१	३,८०,३५०	३,६४,६६५
फ्रांस	...	१६,२००	३२,४२०	३३,०२०
इटली (ख)	...	१७,५१२	२०,३३६	३२,०५२
नॉरवे	...	५,०७७	८,५६६	६,५६४
बेल्जियम	...	५,७२३	८,८५४	८,५५४
स्वीडन	...	२,३२०	४,५२०	५,२३५
डेनमार्क	...	२,०१३	३,०६५	४,४३३

तम्बाकू और सुघनों (हजार पौंड)

कनाडा	...	१५,३६८	३१,२३६	३४,८१०
अमेरिका	...	३,४३,२६२	२,२२,६३७	२,१५,१०१
फ्रांस	...	७०,४७२	४६,५६७	४२,८६०
इटली	...	१४,२२०	१२,६४१	१२,३६१
नॉरवे	...	२२,२२६	१,२३,२६६	२२,६५४
बेल्जियम	...	२६,१०३	१,७४०	२३,०८६
स्वीडन	...	१२,७१४	६,६६६	६,८६६
डेनमार्क	...	७,७६३	७,२४४	७,०६८

अनुमानित कुल उपयोग (दस लाख पौण्ड) (ग)

फनाडा	४५	७३	८३
अमेरिका	७८३	१,१२६	१,१५५
कान्स	११४	११८	११७
इटली	६३	८५	८८
नीदरलैण्ड	४६	५१	५४
बेल्जियम	५०	४८	५०
स्वीडन	२०	२१	२१
डेनमार्क	१६	२१	२२

नीचे दो गई तालिका में ब्रिटेन में विभिन्न देशों से आने वाली तम्बाकू के घोषित औसत मूल्य दिखाये गये हैं। इनसे इनके मूल्य की तुलनात्मक स्थिति का पता चल जाता है। परन्तु इनसे कोई निष्कर्ष निकालते समय अत्यन्त सावधान रहना चाहिए। इनसे प्रकट होता है कि १९५२ में विभिन्न देशों से आने वाली धूम्रतापी तम्बाकू के भाव चढ गये। युद्ध से पूर्व की अपेक्षा वे ३ से ५ गुने तक अधिक थे। दक्षिणी रोडेेशिया की पत्ती के मूल्य सब से अधिक चढे। वे १९५२ में ५ शि० २ पै० प्रति पौंड रहे, जबकि गत वर्ष ४ शि० ६ पै० प्रति पौंड और युद्ध से पहले १ शि० २ पै० प्रति पौंड रहे थे। स्टर्लिंग का अवमूल्यन होने के बाद पहली बार दक्षिणी रोडेेशिया की धूम्रतापी तम्बाकू के भाव अमरीकी तम्बाकू से अधिक रहे। अमरीकी तम्बाकू के भाव १९५२ में ५ शि० प्रति पौंड और युद्ध से पहले १ शि० ३ पै० प्रति पौंड थे।

(क) सिगारिलो सहित (ख) सिगारिलो रहित

(ग) सिगार और सिगरेटों को विभिन्न देशों में चालू, तोल के विनिमय के अनुसार मात्र में बदल कर उत्पादन और भार के आधार पर।

यदि पश्चिम देशों को छोड़ दें तो तम्बाकू की खपत की दृष्टि से ब्रिटेन का स्थान अमेरिका के बाद ही दूसरा है। परन्तु तुलनात्मक आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। धरलू उपयोग के लिये ब्रिटेन में जितनी तम्बाकू ली गई है उसके आंकड़ों से प्रकट होता है कि १९५६ तक जो कमी हो रही थी वह १९५६ से बृद्धि में बदल गई और १९५२ की खपत के आंकड़े १९३८ से १५ प्रतिशत अधिक रहे। नीचे की तालिका में तम्बाकू का वह परिमाण दिखाया गया है जो ब्रिटेन में घरेलू उपयोग के लिये रखा गया था।

(दस लाख पौण्डों में)

वर्ष	ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल में पैदा हुई	विदेशों की	योग
१९३७	४४.०	१३८.४	१८२.४
१९३८	४४.२	१४४.२	१८८.४
१९३९	४८.१	१५१.१	१९९.२
१९४०	४६.७	१४१.२	१८७.९
१९४१	६८.६	१५२.७	२२१.३
१९४२	७५.७	१५७.४	२३३.१
१९४३	५६.३	१६४.७	२२१.०
१९४४	४७.०	१७२.६	२१९.६
१९४५	४७.८	१८३.५	२३१.३
१९४६	५२.६	२४८.३	३००.९
१९४७	५५.४	१७३.०	२२८.४
१९४८	५०.५	१५२.७	२०३.२
१९४९	६०.४	१३८.६	१९९.०
१९५०	८१.३	१३२.१	२१३.४
१९५१	६०.७	१३०.०	१९०.७
१९५२	६७.२	१२०.४	१८७.६

पूर्वी देशों की तम्बाकू के कम मूल्य

१९५२ में अमेरिका तथा फनाडा में धूम्रतापी तम्बाकू के लिये जो मूल्य दिये गये उनका औसत गत दो वर्षों के मूल्यों से कम रहा। अमेरिका में अन्धे वर्ष की पत्ती के भाव चढते जा रहे हैं। दक्षिणी रोडेेशिया की धूम्रतापी तम्बाकू के भाव भी काफी चढ गये हैं। अन्य प्रकार की तम्बाकूओं में से अधिकांश के भाव गत वर्ष की अपेक्षा आलोच्य वर्ष में कुछ गिर गये। न्यासालैण्ड में १९५१ की अपेक्षा भाव कुछ चढ गये।

भारतीय धूम्रतापी तम्बाकू का भाव १९५२ में २ शि० १० पै० प्रति पौंड रहा था। यह युद्ध से पहले की अपेक्षा तीन गुने से अधिक रहा। न्यासालैण्ड से १९५१ में धूम्रतापी तम्बाकू कम आई। परन्तु यहाँ की गहरे रंग की पत्ती का भाव २ शि० ५ पै० प्रति पौंड रहा, जो गत वर्ष से २ पैस प्रति पौंड अधिक रहा। पूर्व देशों की पत्ती का आयात मूल्य १९५२ में गिर गया। यूनानी तम्बाकू का मूल्य १९४६ से बराबर गिरता रहा है, परन्तु तुर्की की तम्बाकू के मूल्य १९५० और १९५१ में कुछ सुधर गये। (पैस प्रति पौण्ड, शुल्क छोड़कर)

	१९३८	१९५१	१९५२
हल्की १९३७ पै० ; धूम्रतापी १९३९-४२			
दक्षिणी रोडेेशिया	१४.८	५७.४	६२.३
अमेरिका	१५.६	५८.६	६०.२
न्यासालैण्ड	१२.१	५५.१	४२.०
फनाडा	१८.२	५०.५	५२.५
भारत	१२.६	३३.२	३३.५
पूर्वी देशों की			
यूनान	२८.७	४१.२	३६.३
तुर्की	१७.५	४८.०	३८.६

गहरी १९३७-३८ ; धूम्रतापी के अतिरिक्त १९३९-४२ :

उत्तरी कोरिया (क)	३०.६	२४३.०	२७७.७
न्यासालैण्ड (ख)	११६.६	२६.४	२८.७

(क) सिगार बनाने की पत्ती
(ख) गहरे रंग की अन्तिमतापी जिसमें थोड़ी धूप अथवा वायु लापी नी मिली हो।
अन्तिम उपभोक्ता की दृष्टि से अब बहुत से देशों में तम्बाकू का मूल्य पत्ती के मूल्य की अपेक्षा उतार पर लिये जाने वाले सरकारी शुल्क के अनुसार निर्धारित किया जाता है।

दो महत्वपूर्ण उद्योग

मोटरगाड़ी उद्योग को सुदृढ़ आधार पर स्थापित करने की मुख्य कठिनाई यही है कि देश में अभी मोटर गाड़ियों की मांग बहुत कम है। इस कारण हमें उन फर्मों की सख्या परिमित रखनी पड़ी है जिन्हें गाड़ियां बनाने की अनुमति दी गई है। गाड़ियों की किस्मों का भी निर्धारण कर दिया गया है जिससे फर्मों को चलते रहने का अवसर मिल सके। इसी प्रकार रंग उद्योग के विषय में भी यदि हम हर किसी को जो वह चाहे करने की स्वतन्त्रता दे दें तो जिन चीजों में थोड़ी बहुत उन्नति हो चुकी है वही कड़ी-प्रतिस्पर्धा शुरू हो जायगी और उसके कारण नये कारखाने नष्ट हो जायेंगे। इसके साथ ही दूसरे क्षेत्रों में कभी कोई काम हो आरम्भ नहीं होगा।

विकास परिषदें

उद्योग अधिनियम को निष्पन्न करने वाले साधन मूल की दृष्टि से देरना अत्यन्त अवाञ्छनीय होगा। किसी को भी यह नहीं भूल जाना चाहिए कि अधिनियम में विकास को नियमन के ऊपर स्थान दिया गया है। अधिनियम में विकास के जिन साधनों की बरपना की गई है वे विकास परिषदें हैं जो आवश्यकतायुक्त उद्योग विषय के लिये स्थापित की जाती हैं। अब तक हम नीचे लिखे उद्योगों के लिये विकास परिषदें स्थापित कर चुके हैं —

- (१) भारी रासायनिक पदार्थ (तेजाज और कुनिम टाट)
- (२) अन्तरदाह रजान और शक्तिचालित पम्प।
- (३) वाहसिकलें।
- (४) चीनी।

बिजली के भारी सामान तैयार करने वाले उद्योगों, बिजली के हल्के सामान तैयार करने के उद्योगों, दवाइयों बनाने वाले उद्योगों और नकली रेशमों तथा ऊनी कपड़े तैयार करने वाले उद्योगों के लिये भी विकास परिषदें स्थापित करने का विचार है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना तैयार करने में इन विकास परिषदों का विशेष भाग होगा।

द्वितीय योजना में औद्योगिक विस्तार

मेरे मत में पहली की अपेक्षा द्वितीय पंचवर्षीय योजना में हमें औद्योगिक विकास पर अधिक जोर देना है। इसके कारण स्पष्ट हैं। जब पहली पंचवर्षीय योजना बनाई गई थी तो हमारे सिर पर अकाल की आशंका नाच रही थी। उस समय हमें सबसे अधिक चिन्ता खाद्य की थी। हमारी धारणा स्थिति सुधर जाने और हमारा बड़ी बड़ी सिंचाई योजनाएँ पूर्ण हो जाने अथवा पूर्णतः के निष्पन्न पड़ने जाने पर हमारे ध्यान का औद्योगिक प्रगति को और भी तीव्र करने की ओर जाना स्वाभाविक है। प्रायः हम सब इस विषय पर एकमत हैं कि हमारे उद्योगों का तेजी से साथ विकास होना चाहिए।

मेरा सदा से यह विश्वास रहा है कि इस नियम में सरकार को अधिक सन्धि और सीधी करबार्ड करने चाहिए। गतवर्ष इन्हीं दिनों एक

औद्योगिक विकास निगम (कारपोरेशन) बनाने का विचार उठाया। इस निगम को औद्योगिक विकास की सीधी उन्नति करने में सरकारी नीति का साधन बनाने की बात थी। उद्योगों और जनता दोनों ने ही इस विचार का उत्साहपूर्वक स्वागत किया है। तब से इसकी योजना काफी विकसित हो चुकी है और अब तक उसका पर्याप्त स्पष्ट रूप प्रकट हो चुका है।

सरकार का भाग

गैर सरकारी क्षेत्र में भी अब सरकारों को जो कुछ करना है उसके स्वीकार कर लिये जाने के फलस्वरूप हमें अपनी द्वितीय पंचवर्षीय योजना का पूर्व निर्धारित रूप बदलना पड़ेगा। पहली योजना बताते समय केवल यह अनुमान लगाया गया था कि गैर सरकारी क्षेत्र के उद्योग क्या कर सकेंगे। सरकार ने केवल अपनी शक्ति भर सुविधाएँ देने के अतिरिक्त और कुछ करने का दायित्व नहीं लिया था। परन्तु मेरा सुझाव है कि दूसरी पंचवर्षीय योजना में हमारा दृष्टिकोण बदल जाना चाहिए। विभिन्न उद्योगों के लिये हम जो योजना बनायें वे ऐसी नहीं होनी चाहिए कि वे उद्योग क्या कर सकेंगे वरन् ऐसी होंनी चाहिए कि वे क्या करेंगे। दूसरे शब्दों में सरकार को केवल विकास के लिये उपयुक्त आर्थिक वातावरण उत्पन्न करने ही सन्तोष नहीं कर लेना चाहिए वरन् लक्ष्य पूरा कर ही लेने के लिये सीधा सहायता देने की भी तैयार रहना चाहिए। निश्चय ही सरकार ऐसा समस्त उद्योगों के विषय में नहीं कर सकती। ऐसे बहुत से उद्योग होंगे जिनके विषय में सरकार इस प्रकार की सीधी योजना नहीं बना सकेगी। सरकार को आशा है कि ये उद्योग भी फलेंगे और फूलेंगे तथा देश में आर्थिक हलचल बढ़ने पर उनकी उन्नति को भी प्रोत्साहन मिलेगा। जिन उद्योगों का आगोजन किया जायगा लक्ष्य प्राप्ति के लिये उन्हें साधनों की सरकार भी पूर्ति प्रयत्न बढ़ि करती रहेगी।

इन लक्ष्यों को निर्धारित करने और इनकी प्राप्ति के उपाय चुनने में विकास परिषदें और विशेष समितियाँ महत्वपूर्ण भाग लेंगी। वे प्रत्येक उद्योग की समस्याओं और सम्भावनाओं के विषय में विचार करेंगी। तब से पहली समस्या उन उद्योगों के उगाव की होगी जिनका सीधा निर्वाहन किया जा सकेगा। हमें यह भी विचार करना होगा कि जो लक्ष्य निर्धारित किये जाय उनकी प्राप्ति पर किस प्रकार सुनिश्चित कर दें।

अधिक मजदूरी, अधिक उत्पादन

मेरा यह स्पष्ट अनुभव रहा है कि यदि मूलभूत उद्देश्य के विषय में कोई विचार विनिमय कर व्यवस्था अपना मजदूरों के प्रश्नों को केन्द्र बनाकर नलवायें तो उनमें कोई प्रगति नहीं हो पाती। समस्त कर व्यवस्था की दृष्टि से यह एक ऐसी समिति द्वारा परीक्षा की जा रही है जिनके अध्यक्ष एक ऐसे प्रमुख अर्थशास्त्री और व्यापारी हैं जो हमारी सरकार के वित्त मंत्रियों में रह चुके हैं। मजदूरों के प्रश्न पर मेरा मत यह है कि यदि आज की अपेक्षा उच्चतर स्तर पर मजदूरों को स्थिर कर देने की आवश्यकता को सामान्यतः स्वीकार कर लिया जाय तो उससे आज के संघर्ष के कारण दूर होने में सहायता मिलेगी और अधिक उत्पादन करने योग्य वातावरण भी बन जायगा। अतः मैं आज आपके समक्ष यह नारा

उत्पन्न करता हूँ : "अधिक मजदूरी और अधिक उत्पादन ।" परन्तु यहा हम जो समझौता करें वह उच्च स्तर पर रहना चाहिए । हमें इसे किसी एक वर्ग के पक्षगत की भावना से इस समस्या पर विचार नहीं करना चाहिए । एक दृष्टि के लिये हमें अपने दला के सम्बन्ध भूल कर यह मान लेना चाहिए कि उद्योग, श्रम और सरकार सभी के लिये यह एक सामान्य समस्या है और विशेष स्वार्थ रखने वाले दलों के मध्य चाहे जो मतभेद हो, हमें इसे सुलझाते समय एक होकर काम करना चाहिए । मन्मिलित प्रयत्न की यही भावना लेकर हमें अग्रणी पंचवर्षीय योजना में औद्योगिक मन्त्रिय की रूपरेखा निर्धारित करनी है ।

बड़े वनाम छोटे उद्योग

अन्त में मैं तथा संघित छोटे उद्योगों के विषय में भी कुछ शब्द कहना चाहता हूँ । मैंने कार्यक्रम न फौंडे निधि द्वारा मञ्जालित छोटे उद्योगों की समिति की रिपोर्ट भी मन्मिलित करा ली है । मेरे विषय में प्राय ही कहा जाता है कि मैं बड़े परिमाण के उद्योगों में निश्चान करता हूँ । मैं यह आगे प्रस्तुत करता हूँ । इसका कारण यही है कि मैं औद्योगिक, आर्थिक और नैतिक दृष्टि से इस देश को शक्तिशाली बनाने को अत्यन्त उत्सुक हूँ । अन्तिम उद्देश्य तब तक पूरा नहीं होगा जब तक हमारी औद्योगिक प्रगति में पर्याप्त तेजी नहीं आ जायगी । परन्तु इसके साथ ही यदि मेरे विषय में यह कहा जाय कि मैं औद्योगिकरण की राह से आसुरिक बात अर्थात् लोगों को काम देने की प्रेरणा करता हूँ तो मेरे साथ

बड़ा भारी अन्वय होगा । मैं अधिक से अधिक लोगों को काम देने की आवश्यकता पूर्ण तौर पर स्वीकार करता हूँ और यह भी मानता हूँ कि लोगों को काम देने समय कोई ऐसा समझौता भी करना होगा जिससे छोटे उद्योगों को यदि वे विकसित ही होकर न हों तो चलते रहने का अवसर मिले । इन उद्योगों को सहायता देने की व्यवस्था या तो सीधी सरकार को करनी होगी अथवा उसका भार जहाँ कहीं भी सम्भव होगा उद्योग के अन्य क्षेत्रों पर रखना होगा । परन्तु मेरे विचार में छोटे उद्योगों की लागत और देश के ब्यापार के लिए उनकी उपयोगिता का ध्यान बिना विना केवल मातृकता से प्रेरित होकर उनकी सहायता करना गलत है । इन उद्योगों में काम करने वाले व्यक्ति कभी न कभी अधिक उत्पादन द्वारा अधिक उत्पादन की कामना करेंगे । यह भी सोचना ठीक ही होगा कि इन उद्योगों को चलाने वाले व्यक्ति बनाने वाले श्रम को बनाने के लिए भारतीयों का प्रयोग करना पसन्द करेंगे । यदि हम देश प्रकाश का नाममात्रा करने को प्रसन्न हूँ तो हम एक ऐसा औद्योगिक टॉपना बना मरेगे जिसमें बड़े और छोटे तथा अपने उद्योगों सभी के लिए स्थान होगा । मे इस विचार को इस समय और आगे नहा बनाना चाहता परन्तु मैं इस अवसर पर आपका यह अवश्य बताना चाहता हू कि उद्योग के इस क्षेत्र में हमें अपना उद्योग आप चलाने वाला को प्रोत्साहित करना और जो ऐसा नहीं कर सकते उनके लिये औद्योगिक सहायता संगठन बनाने होंगे ।

हिन्दी संसार की 'सम्पदा' के तीन सुन्दर उपहार

यों तो सम्पदा का प्रत्येक अंक ही स्थायी साहित्य की सामग्री है, क्योंकि उसमें देश की विविध आर्थिक समस्याओं—उद्योग, व्यापार, कृषि, खाद्य, वीणा, बैंक और राज्यों की आर्थिक प्रगतियों आदि पर गम्भीर ज्ञानवर्धक सामग्री रहती है किन्तु तीन विशेषांक तो अमूल्य, अनुपम तथा हिन्दी पत्रकारिता में गर्व की वस्तु हैं—

योजना-अंक (भारत की पंचवर्षीय योजना पर प्रामाणिक व शतवर्षक सामग्री)

Hindi readers will benefit immensely from this publication
The best guide for digesting and understanding the economic situation of the country.

—आर्गेनाइजर

—कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री

भूमि सुधार-अंक (भारत की भूमि सम्बन्धी समस्याओं पर अद्भुत अंक)

...All this makes this number almost a reference number and deserves a place in all libraries and on every social worker's and patriot's table

—महदुदा (पूना)

लेखों का चयन और सम्पादन प्रशंसनीय है !

—आज

वस्त्र-उद्योग-अंक (भारत के प्रमुखतम उद्योग पर प्रामाणिक जानकारी)

इस अंक के पीछे काफी श्रम किया गया है । सम्पादन को वधाई
—घनश्यामदास विडला
It will fill a want in Hindi commercial literature
—ता० भरतराम दिल्ली क्लबा मिल्स
—R G Saraya

तीनों का प्रत्येक प्रथक मूल्य (१) और (१) ३) भेजकर तीनों अंक एक साथ मंगाइये । १९५२ व १९५३ की कुछ पाठों में भी मिल सकती हैं ।

मूल्य = प्रत्येक वर्ष

मैनेजर—सम्पदा अशोक प्रकाशन मन्दिर, रोशनारा रोड, दिल्ली ।

हमारे व्यापार प्रतिनिधियों द्वारा--

स्वीडन की आर्थिक स्थिति समृद्धि की ओर

मई में अमेरिका के औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि

हमारे विदेशों में स्थित व्यापार प्रतिनिधियों के पास से प्राप्त नवीनतम रिपोर्टों के अनुसार १९५४ के प्रथम चार महीनों में स्वीडन की आर्थिक स्थिति समृद्धि की ओर अग्रसर होती रही। उत्पादन बढ़ा, बेकारी घटी, मूल्य स्थिर हुए, माल की खपत बढ़ी और अधिक पूंजी लगाई गई।

फरवरी मास में अमेरिका ने भारत से जूट का माल, काली मिर्च और कानू अधिक मंगाया। चाय का आयात विशेषतः बढ़ा। भारत को अमेरिका ने अनिर्मित रूई विशेषतः अधिक भेजी।

मारीशस में भारतीय और मलाया की चाय को योने के परीक्षण हो रहे हैं, जिनके फलस्वरूप उसका चाय का उत्पादन बंद जाने की आशा है।

स्वीडन : जनवरी-अप्रैल १९५४ में विदेशी व्यापार में कमी

गत वर्ष के अन्त में स्वीडन के विदेशी व्यापार में मूल्य व परिमाण दोनों में जो उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी, उसकी अपेक्षा इस वर्ष प्रथम चार महीनों की अवधि में काफी कमी हो गई। जनवरी से अप्रैल १९५४ की चार महीनों की अवधि में कुल आयात २६,००० लाख क्रोनर मूल्य का हुआ, जब कि गत वर्ष की इसी अवधि में यह २६,५०० लाख क्रोनर का हुआ था। इस प्रकार आयात में लगभग १० प्र.श. की वृद्धि हुई। आलोच्य अवधि में कुल निर्यात, गत वर्ष की इसी अवधि में २१,६२० लाख क्रोनर की अपेक्षा, ४ प्र.श. बढ़ कर २२,८६० लाख क्रोनर हो गया। अतः व्यापार-सन्तुलन में ६,१४० लाख क्रोनर का घाटा रहा, जब कि १९५३ की इसी अवधि में घाटा ४,५८० लाख क्रोनर रहा था।

मई मास में स्वीडन का निर्यात ७,८२० लाख क्रोनर व आयात ७,७७० लाख क्रोनर का हुआ। इस प्रकार मई में स्वीडन के विदेशी व्यापार में निर्यात की बचत रही। जनवरी—मई तक की पाच महीनों की अवधि में, कुल निर्यात ३०,६७० लाख क्रोनर तथा कुल आयात ३६,७७० लाख क्रोनर का हुआ। अतः व्यापार-सन्तुलन में ६,१०० लाख क्रोनर का घाटा रहा, जब कि १९५३ की इसी अवधि में यह घाटा ५,५७० लाख क्रोनर रहा था।

व्यापार-सन्तुलन में इस हास से विदेशी विनिमय सुपरक्षित कोष को हानि पहुँची है और प्रथम पाच महीनों में यह १,२५० लाख क्रोनर घट गया। जनवरी-अप्रैल की अवधि में स्वीडन को यूरोपीय भुगतान संघ के व्यापार में ५२८ लाख डालर का घाटा पडा। फिर भी अप्रैल के अन्त तक संचित बचत १,६८० लाख डालर रही।

स्वीडन के विदेशी व्यापार के आकड़े निम्न प्रकार हैं :—

मास	विदेशी व्यापार (लाख क्रोनर)			विदेशी व्यापार (लाख क्रोनर)		
	आयात	निर्यात	व्यापार सन्तुलन	आयात	निर्यात	व्यापार सन्तुलन
जनवरी	६,६७०	५,८१०	-१,१६०	६,६६०	५,८२०	-१,१४०
फरवरी	५,६६०	४,६१०	-१,२५०	६,३७०	४,८६०	-१,५१०
मार्च	६,६६०	५,५५०	-१,१४०	८,०४०	६,०००	-२,०४०
अप्रैल	६,८८०	५,६४०	-६४०	७,६००	६,१२०	-१,४८०
योग	२६,५००	२१,६२०	-४,८८०	२६,०००	२२,८६०	-३,१४०

भारत-स्वीडन का व्यापार

जनवरी-अप्रैल १९५४ की अवधि में भारत और स्वीडन के बीच हुए व्यापार का विवरण-वस्तुओं के अनुसार-नीचे दिया गया है। तुलना के लिये इन वस्तुओं के, एशिया के कुछ अन्य देशों के साथ हुए व्यापार के, आकड़े भी दे दिये गये हैं। इनसे विदित होगा कि वर्तमान वर्ष के प्रथम चार महीनों में भारत से ६१ लाख क्रोनर का आयात तथा भारत को २२८ लाख क्रोनर का निर्यात हुआ। अतः व्यापार-सन्तुलन १३७ लाख क्रोनर (समायोजित) से स्वीडन के पक्ष में रहा।

प्र० श० तथा १९५३ के मासिक औसत १३,१३७ लाख डालर से लगभग ८ प्रतिशत अधिक है। इसी बीच सामान्य आयात ८,५८० लाख डालर से बढ़कर ६,५७२ लाख डालर हो गया। अतः १९५४ की प्रथम तिमाही के औसत ८३३६ लाख डालर से लगभग १५ प्र० श० तथा १९५३ के मासिक औसत ६,०६२ लाख डालर से लगभग ६ प्र० श० का वृद्धि हुई। परन्तु इसी अवधि में पारस्परिक सुरक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत भेजे गये माल का मूल्य २,०३६ लाख डालर से घटकर १,६४४ लाख डालर रह गया। १९५४ के प्रथम चार महानों के अनुमानित [जिनमें पारस्परिक सुरक्षा कार्यक्रम (सैनिक) के अन्तर्गत भेजा गया माल भी सम्मिलित है] ४८,१६८ लाख डालर हो गया। यह १९५३ की इसी अवधि में हुए ५२,७६२ लाख डालर के निर्यात की अपेक्षा लगभग ६ प्र० श० कम है। १९५४ के प्रथम चार महानों में पारस्परिक सुरक्षा कार्यक्रम (सैनिक) के अन्तर्गत भेजा गया माल ७,२४७ लाख डालर मूल्य का रहा, जब कि गत वर्ष की इसी अवधि में इस कार्यक्रम के अन्तर्गत १२,२८० लाख डालर के माल का निर्यात हुआ था। अतः इस बार निर्यात में ५,०३३ लाख डालर की कमी रही। यदि पारस्परिक सुरक्षा कार्यक्रम (सैनिक) के अन्तर्गत भेजा गया माल निकाल दें तो १९५४ के प्रथम चार महानों का निर्यात ४०,९२१ लाख डालर रह जाता है। यह १९५३ की इसी अवधि के ४०,४८२ लाख डालर से थोड़ा अधिक है। १९५४ के प्रथम चार महानों में कुल आयात ३४,५८१ लाख डालर का हुआ, जब कि १९५३ का इसी अवधि में यह ३७,६६१ लाख डालर रहा था।

भारत से व्यापार

अमेरिका के भारत से हुए व्यापार के आकड़े सक्षेप में निम्न तालिका में दिने गये हैं। इनस विहित हागा कि फरवरी मास में गत मास की अपेक्षा निम्न वस्तुओं का भारत से आयात बढ गया — जूट व उसके बना माल, इलमेनाइट, चाय, काली मिर्च तथा काजू। चाय के आयात में ह्रद वृद्धि विशेषतः उल्लेखनीय है। लोहक का आयात ४३,५२,००० नालर में घट कर ४०,१३,००० डालर रह गया। अमेरिका द्वारा भारत को निर्यात किए गए माल में अनिर्मित रूढ़ में विशेष वृद्धि हुई।

अमेरिका का भारत से व्यापार (लाख डालर)

अवधि	अमेरिका का निर्यात	सामान्य आयात
जनवरी १९५४	८८	१७६
फरवरी १९५४	१३७	१६६
मार्च १९५४	१०४	१८५

अमेरिका का भारत से आयात (००० डालर)

वस्तु	१९५३ में मासिक औसत	जनवरी १९५४	फरवरी १९५४
चमड़ा व रालें	७६७	७४२	३५१
रूढ़, अनिर्मित	२२५	२३६	२७६
रूढ़, अर्धनिर्मित	२११	१५२	८६
जूट व उसके बना माल	५,३६६	४,८५१	५,०७०
ऊन, अनिर्मित	४६८	४८५	४१५
धातु रहित खनिज पदार्थ और उनमें बना माल (अन्यक सहित)	८३३	४३०	४६४
खनिज लोहक ३५ प्र०श० और अधिक	३,२०३	४,३५२	४,०१३
पत्थर इलमेनाइट	१०८	२७८	४२८
चाय	१,९७७	२,०३६	२,४४०
काली मिर्च	१,७२५	१,३०८	१,८०४
काजू	१,६१७	६४३	६८४
अररडी का तेल	७६०	२०४	२५१

अमेरिका से भारत को निर्यात

अनाज व उसमें बनी वस्तुएं	३,६५५		
रूढ़, अनिर्मित	४७६	२,११६	५,७६६
पेट्रोलियम व उसके उत्पादन	१,४६१	१,००६	१,६६७
बिजली की मशीनें आदि	४६८	२८६	४८८
भवन निर्माण, खदाइ व खनिज की मशीनें	८८०	३१८	६२२
औद्योगिक मशीनें और पुर्जे	७५२	४३०	६८१
ट्रेक्टर, उनके हिस्से और पुर्जे	३२८	१७०	२४२
मोटर गाडियां, ट्रक, बसें व उनके हिस्से	८६३	२,१३७	१,३५६
चिकित्सा का सामान तथा औषधियां	७१२	५२८	३२२
रासायनिक विशेष पदार्थ	२७४	३५	७१

नेपाल : भारत से व्यापार

मई १९५४ में उत्पादन कर की छूट प्रणाली के अन्तर्गत भारतीय बपटे की २०६ गांठे नेपाल में आईं। इसके अतिरिक्त कर देकर कमी तथा रेशमी माल ढाक द्वारा भी आ रहा है।

भारत से नेपाल को भेजी गई वस्तुओं में पेट्रोल, चीनी, कपड़ा, तथा मोटो व साइकिलों के टायर व ट्यूब मुख्य हैं। विदेशी से मिट्टी का तेल साइकिल, शराब तथा मिर्गो मंगारे गईं। उपर्युक्त वस्तुओं का निर्यात इस प्रकार है —

भारतीय माल

चीनी	४६५ बोरिसा
कपड़ा	२०६ गांठें
पेट्रोल	२०,४०० गैलन
मोटर टायर	८ नग
साइकिल टायर	२५४ नग
साइकिल ट्यूब	२०० नग

विदेशी माल

मिट्टी का तेल	७,६२० बैलन
साइक्लें	१ पेटी
शराब	११६ पीटिया
सिगरेटें	१ पेटी

विराटनगर में व्यापार

अप्रैल १९५४ में विराट नगर से भारत को निर्यात की गई मुख्य वस्तुओं का निवरण इस प्रकार है.—

वस्तु	परिमाण (मन)
इमारती लकड़ी ..	८१,८००
जूट, कच्चा ...	४,१३३
चमड़ा ..	३८५
लाख, कच्ची	७५
जूटी वृष्टिया ..	२०४
सरसा ..	१,८७५
हड्डिया ..	३५०
चावल ...	३१,०००
धान ..	२६,५५०
जूट का माल ..	२२,५८०
चीनी ..	६८
खली ..	६००

अप्रैल १९५४ में भारत से विराटनगर में आइ मुख्य वस्तुओं का निवरण इस प्रकार है.—

वस्तु	परिमाण (मन)
कोयला ...	४६३०
मशीनों के पुर्जे	१५६०
पेट्रोल	१६७०
टी-न तेल	३२००
मिट्टी का तेल	४४५०
मशीं का तेल	५०२०
सूती भाग	४०५०
रेशमी माल	४८०
लोहे का सामान	१४८०
साजुन	४३०
गेहूँ	११४०
लालनें ..	७२
टापर व ट्यूब	२५०
चूना	११२५
मोबिल आयात ..	३७०
जूने	२६०
छाने	११४
सुपारी ...	३३३
मूँ, कच्ची	२०६०
बाच का सामान	५७०
नमक	१४२००
सीमेंट	६३०
बैटरिया	१६३
दवाइया	१६५
विजली का सामान	८५
लिखने की सामग्री	५३०
अलूमिनियम ..	८५

मारीशस : १९५३ में भारत से व्यापार

१९५३ में भारत से मारीशस में भगाये गये माल के आकड़े निम्न

प्रकार है :—	(मूल्य) ६०
वस्तु	७,३७,१२८
खाद्य पदार्थ ..	१,८०,२६४
तम्बाकू
न खाने योग्य कच्चा माल (चमड़ा व खालें जूट, सूती माल आदि सहित)	७५,५५६
खनिज तेल, पिकमाई हाने वाले तेल तथा सम्बद्ध वस्तुएं	१०,०४३
पशु, वनस्पति तेल और चर्बियाँ	१०,६४,७५०
सामयानिक पदार्थ ..	८५,४६४
निर्मित माल (चमड़े का सामान, सूती कपडा, सूती, कृति आदि सहित	६६,६३,२२५
मशीनों और यातायात का सामान	२१,५८६
बिबिध निर्मित माल (जूते, प्रदर्शन के लिये सिनेमा के चित्र, सर्गोत यन्त्र आदि सहित)	१३,६५,९४३
बिबिध चीरे तथा निर्मित वस्तुएं	१,६६५
योग	१,०५,७०,८३५

१९५४ में चीनी का उत्पादन

निश्चित (Guaranteed) चीनीको का मूल्य घटाकर ४१ पौण्ड प्रति इन्डियन सिक्किट किया गया है, जब कि १९५३ में यह ४२ पौण्ड ५ शि० प्रति इन्डियन था। यह सुल्फन, चीनी उद्योग में काम आने वाले माल—विशेषतः गोरियों व खाद में सुल्फक-अम्ल कम रहने के कारण हुआ है। अनिश्चित (Un-guaranteed) वाले ७५,००० टन माल पहले ही कनाडा व वेन दिया गया है। शेष बचता सम्भवतः १९५५ में निर्यात किया जाएगा।

१९५३ में चाय का उत्पादन १,००,८०४ पौण्ड हुआ। चाय प्रयोगात्मक केंद्र (Tea Experimental Centre) में बौद्ध गई। नई मलाया व भारतीय किस्म की चाय के द्वारा अधिक उत्पादन होने की आशा है। भारतीय किस्म की चाय न्यायालय से प्राप्त की गई। मुख्यतः हांग कांग व भारत से चाय पर्याप्त परिमाण में भगाई गई।

जानकारी विभाग

औद्योगिक विषय

लालटन उद्योग का संरक्षण हटाया गया

भारत सरकार ने तटकर आयोग की इस राय को स्वीकार कर लिया है कि हरीबैन लालटन उद्योग को अन्न संरक्षण की आवश्यकता नहीं है। अतः सरकार ने आयोग की सिफारिशों के अनुसार ३१ दिसम्बर, १९५४ के बाद टन उद्योग को संरक्षण न देने का निश्चय किया है। हाँ, सरकार उद्योग की सहायता करने के संबंध में आयोग की अन्य सिफारिशों पर कार्यवाही करेगी।

जुलाई में कोयला का उत्पादन बढ़ा

जून १९५४ में भारत में कोयले का उत्पादन २८,८६,१६६ टन था, जो जुलाई में बढ़कर २९,६६,१६५ टन हो गया। जुलाई १९५४ में कोयले की निर्यात २८,१०,१२७ टन की हुई, जबकि जून में २५,७६,०७५ टन की हुई थी।

महीने के आरम्भ में राजीव पर ३६,५७,३२८ टन का स्टॉक था, किन्तु महीने के अंत में यह ३६,६३,४११ टन रह गया।

आलोच्य मास में ८३६ खानों में प्रतिदिन औसतन ३,१८,१२२ मजदूर काम करते रहे। रोक के कारखानों में ३,३६,८४३ टन कोक तैयार किया गया और १,८०,८३७ टन की निकासी हुई।

विजली का उत्पादन

मई १९५४ में भारत में ६५१ विजली घरों में ६३ करोड़ १६ लाख किलोवाट विजली पैदा की गई, जिसमें से ५१ करोड़ ५४ लाख किलोवाट विजली उपभोक्ताओं को बेची गई। अप्रैल मास की तुलना में २,७० लाख किलोवाट विजली का मई में अधिक उत्पादन हुआ।

शार्कके तेल उद्योग की देखभाल

केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्रालय ने बम्बई, कोलिकोट और त्रिचैदम के शाक मट्टनों का तेल निकालने वाले कारखानों की देखभाल के लिये तीन समितियों नियुक्त की है। हर समिति में म्याम्ब्य मन्त्रालय, वाणिज्य एवं उद्योग मन्त्रालय और कारखाने का एक एक प्रतिनिधि होगा।

समितियों के मध्यम तेल निकालने के कारखानों का निरीक्षण कर इनके विस्तार के लिये आवश्यक साधन सामान के और जो दूसरे उपाय करने चाहिए उनके बारे में अपनी राय देगे।

औद्योगिक वित्त निगम द्वारा उद्योगों की सहायता

औद्योगिक वित्त निगम (इण्डस्ट्रियल फाइनेंस कॉर्पोरेशन) अपनी स्थापना के समय से अन्न तक प्राय १३७ कम्पनियों को कुल २१ करोड़ ८० के ऋण स्वीकार कर चुका है, जिसमें से १३ करोड़ ८० के ऋण आयेटकी की दिग्ने भी जा चुके हैं। निगम का छठवा वार्षिक प्रतिवेदन अभी प्रकाशित हुआ है, जिसमें उपर्युक्त सूचना तथा अन्य विवरण विस्तार सहित दिये गये हैं।

इस प्रतिवेदन में ३० जून, १९५४ को समाप्त होने वाले वर्ष में निगम के कार्यों की समीक्षा की गयी है। बताया गया है कि आलोच्य वर्ष में ६ करोड़ ८० के ऋणों के ४३ आवेदन पत्र निगम के पास आये, जिनमें से २६ पर ५.२७ करोड़ ८० के ऋण देने की स्वीकृति निगम ने दी।

अपने जन्म से अन्न तक के ६ वर्षों में निगम ने विविध उद्योगों को वित्तीय सहायता दी है। सूती वस्त्र उद्योग की ३.०७ करोड़, रासायनिक द्रव्यों की २.४४ करोड़, सीमेंट की २.३५ करोड़, चीनी की २.०५ करोड़, पागज उद्योग की २.०४ करोड़, मिट्टी व काच की १.२५ करोड़, विद्युत यन्त्र की १.२६ करोड़ और लोहा इस्पात (हल्के) उद्योग की १.१२ करोड़ ऋण दिये जा चुके हैं। एक करोड़ से कम पाने वाले उद्योगों में सूती वस्त्र बनाने की मशीनों, जमी कपड़ा, नकली रेशम, तेल, बिजली, अलौह धातुओं के कारखाने, अलसुमियन की पान, मोटर गाड़ी और ट्रेक्टर आदि के उद्योग हैं।

निगम ने ऋण के कुल १३७ आवेदनपत्र स्वीकार किये, जिनमें से ७८ टन-टन लाख ८० से कम के ऋणों के लिये, ५७ टन से ५० लाख ८० तक के लिये, एक ६० लाख ८० के और दूसरा १ करोड़ ८० के ऋण के लिये था। प्रतिवेदन में ऋण पाने वालों की पूरी सूची दी गयी है। निगम ने नये काम (१५ अगस्त, १९४७ के बाद) खोलने अथवा पुराने कामों के विस्तार व आधुनिकीकरण, दोनों ही के लिये ऋण दिये हैं। ६८ आवेदनपत्र नये काम खोलने के लिये थे और ६६ पुरानों के विस्तार या आधुनिकीकरण के लिये।

आलोच्य वर्ष में निगम के काम-काज की जांच भी करायी गयी। यह जांच भारत सरकार द्वारा नियुक्त एक जांच समिति ने की थी। प्रस्तुत प्रतिवेदन में इस समिति की सिफारिशों पर सरकार के निश्चय का विवरण दिया गया है।

राज्यो के विन निगमा की स्थापना मे जो प्रगत हुई है, प्रतिवेदन मे उम्मा मी उल्लेख दिया गया है। बताया गया है कि ने राष्ट्रीय निगम पञ्जाब, मौराप्र, तिरुवाङ्कुर कोचान, यम्पु, हेदराणाड और पञ्जाब के राज्सी मे स्थापित किये जा चुके हैं और आगाम, उत्तर प्रदेश प मध्य भारत मे उनकी स्थापना का प्रबन्ध किया जा रहा है।

रूप की वसूली के सम्बन्ध मे बताया गया है कि निगम की स्थापना के बाद मे दिये गये रूपों पर ंगन का १ ०० करोड़ ०० होता था, जिसमे मे ३ २ करोड़ ०० प्राप्त हो चुका है। किम्पा के रूप मे नून पन की मात्रा मे ६१ १६ लाख ०० उत्पन्न हुआ है, जबकि इन मद्र मे ६० २० लाख ०० की वसूली होता था।

मोरेपुर ने काच के कारखाने को इतरे गये रूप के सम्बन्ध मे बताया गया है कि कारखाने की कमी ने ठीक तरह मे काम नहीं दिया इताने २० जुलाई, १९५० को यह बन्द कर दिया गया। इसके बाद मद्रों फिर से बनायी गयी तथा कुछ और परिवर्तन किये गये, जिनका काम मद्र, १९५१ के प्रारंभ मे समाप्त हुआ। इन कारखाने को मधुनित टग से चलाने और किये गये मण्य की वसूली आदि न प्रश्न निवारण ह। ३० जून, १९५४ के दिन इस कम्पना पर कुल १,०३,२०८,८२२ ०० १४ आ० ६ पा० की रकम वारी थी।

सिंदरी के कोक मट्टी प्लाण्ट मे उत्पादन आरम्भ

सिंदरी रामायणिक एाद कारखाने के कोक मट्टी प्लाण्ट मे उत्पादन कार्य आरम्भ कर दिया है। इस प्लाण्ट को, निम्नी उत्पन्न क्षमता ६०० टन प्रति दिन है, बनाने मे अर्धमानव ० ५५,०० ००० ०० लागत आर है।

उपयुक्त प्लाण्ट मे काम मे लाई जाने वाली एक विधि प्लाम्पिंग प्रोसेस मे मागए कोयले को जिनमे कोक की मात्रा कम हो, प्रथम बेणी के सन्धि कोक मे परिवर्तित किया जा सकता है। इन विधि मे कोक गैस भी अनेकतः अधिक परिमाण मे प्राप्त की जा सकती है। सिंदरी कारखाने की विस्तार योजनाओं मे इस गैस का बडा महत्व है। अन्य खदा मे मिलाने के लिये इसका विशेष रूप से उपयोग होगा।

इस प्लाण्ट के उत्पादन के साथ कई प्रकार की उप वस्तुएं भी उपलब्ध हो सकेंगी जिनमे कोक गैस के अनिक्कित अमोनियम, तारकोल, पार बेंजोल आदि भी होंगे।

अनुमान है कि उप वस्तु के रूप मे लगभग १ करोड़ घनफीट कोक गैस मे अमोनियम नाइट्रेट तथा सुरिया बनाने का भी विचार है।

कांच के चादर उद्योग का संरक्षण जारी रहेगा

भारत सरकारने तटकर आयोग (टैरिफ कमीशन) की चादर उद्योग को संरक्षण जारी रखने सम्बन्धी रिपोर्ट पर अपना निष्पक्ष प्रस्तावित कर दिया है।

सरकार ने तटकर आयोग (टैरिफ कमीशन) की यह विचारणा स्वीकार कर ली है कि इस उद्योग को इस समय जो संरक्षण मिला हुआ है वह १ जनवरी, १९५५ मे तीन बरों के लिये और जारी रखा जा तथा

काच की चादरा पर संरक्षण शुल्क दो दर तन्वाल ही बचाकर मूल्य की ७० प्रतिशत कर दी जाए। शुल्क की इस वृद्धि के सम्बन्ध मे एक विनिर्दि की जारी की जा चुकी है। सरकार ने इस मांग पर भी जोर दिया है कि यह उद्योग अपने माल के भाव बढ़ाये। खरीदारी के हितों को सुरक्षित रखने के लिये मधुनित उपाय किये जायेंगे।

सरकार ने तटकर आयोग (टैरिफ कमीशन) की उद्योग सहायता देने सम्बन्धी अन्य विचारणाओं भी मान ली हैं।

खनिज रेत साफ करने का कारखाना

राज्य सभा मे श्री उल्लोखला के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए किन्ना भाग्य सरकार ने तिरुवाङ्कुर स्थित प्रेमस्य हापकिन एण्ड चिलिक्स लिमिटेड पर्यं का पर्यट लिखा है। प्रधान मंत्री ने निम्न लिखित उत्तर दिया —

भारत सरकार ने इस कारखाने को खरीदा नहीं है। पहले एक बार सरकार ने इस पर्यं के ५१ प्र० शु० हिस्से खरीदने का उद्योग किया था, ताकि उसे कम से कम उस एक कारखाने के काम काज पर नियन्त्रण रखने का अधिकार प्राप्त हो सके, जो तिरुवाङ्कुर कोचिन के समुद्र तटकी तलिन रेत के पत्तन, सफाई आदि का काम करता है। किन्तु और मोचने पर सरकार इस निष्पक्ष पर पहुँची कि राज्य के सन्धि के मे सम्पूर्ण उद्योग का राष्ट्रीयकरण ही अधिक ठीक होगा। दिवम्बर १९५२ मे केन्द्रीय और राज्य सरकारों के बीच राष्ट्रीयकरण के मूल सिद्धांतों पर समझौता हो गया और १ जनवरी १९५४ की जांच के लिये प्रारंभ में तैयार की गयी। इस समिति का प्रतिवेदन प्राप्त होने के बाद, भारत सरकार इस विषय पर फिर विचार करेगी।

पट्टों के उद्योग को संरक्षण

सूत और बालों के पटा के उद्योग का संरक्षण जारी रखने के लिये में तटकर आयोग की रिपोर्ट पर भारत सरकार ने अपना प्रस्ताव प्रकाशित कर दिया है।

आयोग ने यह विचारिका की है कि चाहे किसेही पट्टों को बहुत पमत्र किया जाता है और मध्य प्लाह के पटा द्वारा कड़ी प्रतिस्पर्धा हो रही है, अतः सूत और बालों के पट्टों के उद्योग को ३१ दिवम्बर, १९५६ तक मूल्य का १०।५ प्रतिशत संरक्षण शुल्क लेना संरक्षण दिया जाता रहना चाहिए। सरकार ने आयोग की यह विचारणा मान ली है।

आश्चर्यक किन्मा का पर्याप्त सूत उपलब्ध करेने भी सरकार इस उद्योग की सहायता करेगी।

कोकोआ और चाकलेट उद्योग का संरक्षण

तटकर आयोग ने यह विचारणा की थी कि कोकोआ चूर्ण और चाकलेट उद्योग का संरक्षण ३१ दिवम्बर, १९५६ तक के लिये रखा देना चाहिए। इसे भारत सरकार ने स्वीकार कर लिया है। सरकार ने आयोग को यह विचारणा मा स्वीकार कर ली है कि कोकोआ चूर्ण पर लिये जाने वाला मूल्य का २१।५ प्रतिशत संरक्षण शुल्क (जिनमे संस्कारों भी शामिल होगा) जारी रहना चाहिए और चाकलेट का शुल्क तन्वाल ही (७

सितम्बर से) बड़ा कर मूल्य का ५० प्रतिशत कर देना चाहिए। इस आशय का सूचना भी ७ नवम्बर को प्रकाशित की जा चुकी है।

इस उद्योग को बेरोजगारी की फलितया निशुल्क आयात करने की सुविधा अभी मिली हुई है। आगे भी ये फलितया पर्याप्त परिमाण में उपलब्ध होती रहे इसके लिये सरकार उपयुक्त उपाय करेगी।

सरकार ने इस उद्योग की मटावता करने के उद्देश्य से आयोग की अन्य सिफारिशों भी मान ली हैं।

सुरमा उद्योग का संरक्षण

तटकर आयात में सुरमा (Atimony) उद्योग का संरक्षण जारी रखने निम्नक जो सिफारिशों की थी उन पर भारत सरकार ने श्रवणा संकल्प प्रकाशित कर दिया है।

आयोग ने सिफारिश की थी कि सुगुमें पर मूल्य का ३१॥ प्रतिशत और बच्चे सुगुमें पर मूल्य का २१ प्रतिशत संरक्षण शुल्क जारी रखकर ३१ दिसम्बर, १९५६ तक सुरमा उद्योग का संरक्षण जारी रखना चाहिए। सरकार ने इसे स्वीकार कर लिया है।

सरकार ने आयोग की अन्य सिफारिशों भी स्वीकार कर ली हैं और कुछ विस्तृत बातों पर विचार करने के बाद वह इन सिफारिशों को अमल में लाने के लिये उपयुक्त उपाय करेगी।

साइकिल उद्योग का संरक्षण

भारत सरकार ने तटकर आयोग की साइकिल उद्योग का संरक्षण जारी रखने सम्बन्धी रिपोर्ट पर श्रवणा संकल्प प्रकाशित कर दिया है।

आयोग ने सिफारिश की थी कि संरक्षण की अवधि ३१ दिसम्बर, १९५६ तक बढ़ा देनी चाहिए। इसे सरकार ने स्वीकार कर लिया है। सरकार ने आयोग की यह सिफारिश भी मान ली है कि ब्रिटेन में बनी हुई पूरी साइकिलों पर इस समय लिया जाने वाला शुल्क घटाकर मूल्य का ४५ प्रतिशत कर देना चाहिए। इसमें सम्बन्धी शामिल नहीं होगा। सत्कार्षि मिथानर यह ४० प्रतिशत होगा। परन्तु सरकार का मत है कि घटाये हुए शुल्क से सम्भवतः सस्ती बाइसकिलों से पर्याप्त संरक्षण प्राप्त नहीं होगा। इसलिए उसने निश्चय किया है कि इसके बदले ६० रु० प्रति बाइसकिल के हिताय से निशेष शुल्क लिया जाय। ब्रिटेन के अतिरिक्त अन्य देशों को बाइसकिलों पर लिये जाने वाले शुल्क की दर ब्रिटिश साइकिलों के शुल्क से मूल्य की १० प्रतिशत अधिक होगी।

सरकार ने आयोग की यह सिफारिश स्वीकार नहीं की है कि बाइसकिलों के हिस्सा पर पूरी बाइसकिलों के समान ही शुल्क की दर धटा दी जानी चाहिए। चूंकि देश में व र्गाना के बहुत में हिस्से छोटे निमाताओं द्वारा तैयार किये जाते हैं, जिन्हें विशेष कठनाइयों का सामना करना पड़ता है अतः सरकार ने निश्चय किया है कि हिस्सा आदि पर वर्तमान दर में ही शुल्क जारी रहना चाहिए।

उद्योग की घटे तथा छोटे परिमाण पर चलने वाली शाखाओं की सहायता करने के उद्देश्य में सरकार ने आयोग की अन्य सिफारिशों भी स्वीकार कर ली हैं।

चाय काफ़ी और रबड़ उद्योग की जांच

१० अप्रैल, १९५४ को वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय ने एक विशिष्ट प्रकाशित करके बर्गाचा उद्योग जान आयोग नियुक्त होने की घोषणा की थी। सम्बद्ध हिता से प्रारम्भित बातचीत करने के बाद में आयोगने चाय उद्योग के लिये प्रश्नावलिया तैयार की हैं। एक प्रश्नावली चाय उत्पादक कम्पनियों और मैनेजिंग एजेंटों के लिये निशेषतः तैयार की गई है। इनकी प्रतिया उन्हें तथा माभेटागो के सगठनों और १०० एकट या उनसे बड़े बर्गाचा के मालिकों को भेजी गई है। छोटे बर्गाचा के कुछ प्रतिनिधियों को भी इसकी प्रतिया भेजी जायगी। अन्य छोटे बर्गाचों के मालिकों को यद्यपि प्रतिया नहीं भेजी जा रहा है तथापि चाहे तो वे भी उत्तर भेज सकते हैं। प्रश्नावलियों की प्रतिया के लिये वे आयोग के मन्त्री (बनाक न० ६, कमरा न० ३४३ शाहजहा रोड इटम्पेट नई दिल्ली) को पत्र लिख सकते हैं।

शेरा ट्रेडर (जिज चाय के दलालों, मिश्रण करने वालों, थाक व्यापारियों, उत्पादकों के एसोसियेशनों, व्यापारियों के एसोसियेशनों, व्यापार चेंबर, चाय बोर्ड और चाय उत्पादक राज्यो की सरकारों के लिये हैं। इन प्रश्नावलियों के उत्तर १ नवम्बर, १९५४ तक पहुँच जाने चाहिये।

काफ़ी और रबड़ सम्बन्धी प्रश्नावलियों

काफ़ी और रबड़ सम्बन्धी प्रश्नावलिया काफ़ी और रबड़ पैदा करने वाली सम्पन्धियों के मैनेजिंग एजेंट, भारतीय काफ़ी बोर्ड, भारतीय रबड़ बोर्ड, सम्बद्ध राज्य सरकारों, उत्पादकों के एसोसियेशनों तथा काफ़ी और रबड़ उद्योगों में सम्बद्ध अन्य व्यक्तियों को भेजी गई है। जिन व्यक्तियों को प्रश्नावलियों की प्रतिया नहीं भेजी गई है वे चाहे तो उन्हें आयोग के सेक्रेटरी बनाक न० ६, कमरा न० ४३ शाहजहा रोड इटम्पेट, नई दिल्ली से प्राप्त कर सकते हैं।

इन प्रश्नावलियों द्वारा साधारणतः पूजा व्यवस्था, उत्पादन प्रणालियों, और लागत, बर्गाचों के लिये धन की व्यवस्था और उत्पादन की विभिन्न व्ययों के लिये यों में जानकारी मार्गो गई है।

विजली के होल्डरों के उद्योग का संरक्षण

पौल के बने विजली के होल्डरों के उद्योग को ३१ दिसम्बर, १९५६ तक ० साल वा संरक्षण देने की सिफारिश को भारत सरकार ने मान लिया है। सरकार का यह संकल्प भारत सरकार के सूचना पत्र के अलावाएण्ड अरु में प्रकाशित किया जा चुका है। १९५४ के वित्त अधिनियम में शुल्क की जा दरें बना दी गयीं था उन्हें कम करने की आयोग की सिफारिश को सरकार ने नहीं माना। होल्डर उद्योग को सहायता देने के लिये भी और कई सिफारिशों को भी सरकार ने मान लिया है।

सुरक्षित फल उद्योग को संरक्षण

भारत सरकार ने तटकर आयोग की इस सुलक्ष सिफारिश को मान लिया है कि सुरक्षित फल उद्योग को १ जनवरी, १९५५ से दो साल तक और संरक्षण मिलना चाहिये। पर सरकार ने इन फलों की दो श्रेणियों पर शुल्क घटाने की सिफारिश को नहीं स्वीकार किया। इस उद्योग को सहायता देने के लिये भी आयोग की और अन्य कई सिफारिशों को भी सरकार ने मान लिया है।

गृह उद्योग

दस्तकारी के लिये ऋण

अखिल नागरीय दस्तकारी बोर्ड की कार्य समिति ने देश और विदेशों में उद्योग के लिये दस्तकारी का सामान बनाने के विभिन्न ऋण देन के नये में विचार करने के लिये एक उपसमिति स्थापित की है।

मकान में राख सकवान में पुञ्जा हैं कि कच्चा माल और अन्य आन इसक चीजे लगान के लिये धन की क्या आदि की कठिनाइयां में किन ० हाथ में प्रथम में उपायन कम हुआ है। अन्य की सुविधाएँ पहले उन्हा चीजा के उत्पन्न के लिये दो नगरीय विनकी माग है।

दिल्ली में बांस के सामान की प्रदर्शनी

अखिल भारतीय दस्तकारी बोर्ड अगले गणतन्त्र दिवस के समय नयी दिल्ली में काम के मानान तथा लान की पाणिम की हुए प्रमुञ्जा की एक अखिल भारतीय प्रदर्शनी करने का विचार कर रहा है जोई की कार्य समिति ने डिजायन के अन्ता दो दिन की बैठक में भारत सरकार में प्रदर्शनी उगन का एक योजना के लिये निवारण की है। इस प्रदर्शनी में वाम का चीजे और लाल की पाणिम की हुए चीजे दिनाओं उपनी।

इहा दिवस का चीजे के उपायन को प्रोत्साहन देने के लिए दस्तकारी बोर्ड ने नागरीयों को प्रतिक्रम पुनकार देन का निश्चय किचा है। इस प्रदर्शनीमें विन कारागारों के से मकमें अन्तः प्रदर्शनी उपनी शुरूमें उन्हीं को सामान दिना जगना। दो नौ, छे मी, एक मी २० और दो पञ्चम २० के सामान अयन का विचार है।

मध्य भारत में कपड़े की झपाड़े

बन्देरी और मदेहर के बने हुए रुपये के कपडे और माटिजा तो भाग प्रसिद्ध हैं ही परन्तु मध्य भारत के उडैयन, जायद और तागपुर आदि स्थानों में कपडे पर दो मुन्दर और प्रमनीहक छुआई होती है उनमें और लोगो का बहुत कम ध्यान गया है। इन स्थानों पर यह उद्योग उन्नाति की चलाय सजा पर है। इनके अतिरिक्त मध्य भारत के अन्य स्थानों पर भी यह अन्हा चल रहा है।

उडैयन में २ मील दूर सैरागट में कपडे पर उन्पा से चार पाच रग नरक की मुन्दर छयाइ होती है। यह फर्सागट जैसी होती है। उदा अतिबोधा में पनग की चारई आदि ही बनार जाती हैं। इस काम को २-५० परिवार करने हैं।

रतहास और अकमेर के बीच मन्डसौर के कस्बे में भी प्राय ०-१० परिवार कपडे की टयाई सारा अयनी क्रीडा चलती हैं। ये सुपनी तथा नई दोनों तरह की छुआर करते हैं और राखस्थानों टा की कपडै करके सुपनी छुपाने में शेर फर्सागट टैली रगो तक की छुआई का नाम प्रको यथा के साथ करते है। सुपनी की कपार का वाम स्थिदा करता हैं। सुपने डैकरो परिवारों के पेट पलते हैं। तिचार्डों के अन्तर पर कपार कस्बे रगी हुए सुपनी कनी शुभ मानी जाती है।

नीमन से १२ मील दूर चावड का कस्बा है। यहा भी कपड पर मुन्दर छुआर होती है। यहा अन्विकारदन रग की विग्रेण छुआर होती है जिम्का भेद केवल २६ परिवार हा जानते हैं। यह छुआर करने के लिये कपडे की धोकर और टी के तेल आदि में नद बार बुकना जाता है। इसके बाद इसे रंग के पानी में डुबाने का फिर पञ्चरा के घाल में टिनाले छुपी जाती है जो गहरे चान्दना रग में रगत आती है। पेटे रग गहटा करना हुआ ती महुआ का शराव में लौहा सुआकर पीण तैयार करते हैं और उसमें छुआर करते है। चावड में अतिबोधा छुपी जायन छानने का नाम करने है। इनका छुआर छुट आदि बने मुन्दर बनते है।

चावड में ३ मील दूर तागपुर के छोटे में कस्बे में छुआर का जो काम चल रहा है उसे बहुत कम लोग जानते हैं। यह कस्बा एक छोटे सी नदी के टोना आर वसा है और यहा ४४५ परिवार छुपाड का यह काम करते हैं। इन नगर में अतिबोधा न्हा लोगो की कस्बा है। ये छुपी बहुत कम देते लिये होते हैं परन्तु अयन काम में बटे प्रयोग होते हैं। यहा कच्चा तथा पक्की टोनी प्रना की छुआर होती है। यन्की छुआर करने में वे एक प्रकार का मोम काम में लागे हैं। यन्का उक्ति रिता में पुत्र की भाव होता है वरि चानी दर चानी आदि है। तागपुर के छुपा रहे अयने एवाग की कुची मानते है। यहा प्राय प्राय छुपी के घर में नीला रगाड का गट्टा है। कस्बे भर में एने गट्टा को संख्या ५,००० स अधिक होगा। कहा जाता है कि इन गट्टा की कमी कपार नहीं होती। फिर भी इनमें वे कना बोद टुंगेय आदि नहा आती। तागपुर में एदिल राति की किचा की साटिजा रिरेमन जना जाती है। इन साटिजा का रग गहटा नीचा होता है और उन पर मिर्च, कम्क, बुदा और आम पत्रिक करने वाली पक्की छुआर होता है। इनके ऊपर कच्चे रग को बुई रखी जाती हैं। इनै नागना करते हैं। मध्य भारत की मील किन्दा इन कपडे को बहुत पसन्द करती हैं। कल यहा इनकी विक्री न होने की बोद समझा नहीं है। जावड और तागपुर में प्रतेवर्ष प्राय २० लाख रुपये का छुआ का मााल तैयार होता है।

तागपुर के छोटे मले की अन्तः प्रचार होने की आसयका है। प्रचार होने पर अन्य वागगो में भी इसकी लखन हो सकेगी। नीने की इन छुआदि की कलकने के फेराडविल वृद्धा में भी माग होने लगी है, जहा इन्हे टकाये के परणे के काम में लाना उणे लगा है।

मध्य भारत के गौतमपुरा, वांगंगा, तागपुर, इन्दौर, खालिज आदि अन्य स्थानों पर कपड की छुआर का काम होता है जिम्के द्वारा सैकड़ों परिवारों के पेट पलते हैं।

मध्य भारत सरकारने इन उद्योग के अतिथि मद्दत को समझ है। इसमें राज्य क ५,००० न अधिक परिवार लगे हुए हैं और प्रति वर्ष इनमें १ करोड २० न अधिक का मााल तैयार होता है। इस समन सरकार छुपिने का सहकारी ग ५२ नवदल और उन्के माल की दिनी की अन्धी बन्धना बनाने के प्रयत्न कर रही है। इसके लिय प्राय ३

लाए रुपये की एक योजना तैयार की गई है। इसके साथ ही छुपाई की नई डिजायनें चालू करने और छुपे हुए कपड़ों को अन्य प्रकार से उपयोग करने की प्रक्रिया खोज निकालने के भी यत्न किये जा रहे हैं।

अखिल भारतीय हाथकरघा बोर्ड का पुनर्संगठन

अक्टूबर १९५२ में स्थापित किये गये अखिल भारतीय हाथकरघा बोर्ड का भारत सरकार ने पुनर्संगठन कर दिया है। नये बोर्ड में ३५ सदस्य होंगे। भारत सरकार के बम्बई स्थित टेक्सटाइल कमिश्नर बोर्ड के एक सदस्य और अध्यक्ष होंगे।

बोर्ड के अन्य सदस्य इस प्रकार होंगे : वनाइण्ड टेक्सटाइल कमिश्नर बम्बई (उपाध्यक्ष), प्रो० एन० जो० रंगा ससद सदस्य, श्री ए० क्यू० अशरी, श्री एम० सोमापा, श्री पी० एन० मुदलिया, श्री एस० आर० वासुदा, श्री आर० वी० नायडू, श्री जे० आर० मार्शल, श्री आर० ए० पोद्दार, श्री एन० एल० बालेकर, श्री एस० बनर्जी, नारायण ए० रमूल, श्री के० लक्ष्मण, श्री बी० मरार, श्री एफ० एम० उरदवाड, श्री एम० एम० पटनायक, श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय (अध्यक्ष प्रतिनिधि), श्री अरुणल मजुंदर, उत्तर प्रदेश और बिहार के उद्योग डायरेक्टर, हैदराबाद के वाणिज्य और उद्योग के डायरेक्टर, मद्रास और आन्ध्र के सहकारी समितियों के रजिस्ट्रार, मध्य प्रदेश के उद्योग डायरेक्टर, ग्रामाम के रेशम उत्पादन तथा कर्ताई के डायरेक्टर, मध्य भारत, पंजाब, पश्चिमी बंगाल, ट्रान्सनेर-कोचीन, और उड़ीसा के उद्योग डायरेक्टर, बम्बई के औद्योगिक सहकारिता तथा ग्रामोद्योग के जगद्वेद रजिस्ट्रार, श्री रघुनाथसिंह ससद सदस्य, भारत सरकार के वित्त मन्त्रालय (वाणिज्य और उद्योग शाखा) के प्रसिद्ध सेक्रेटरी और बम्बई स्थित भारत सरकार के टेक्सटाइल कमिश्नर के कार्यालय के सूत तथा हाथकरघा मन्त्री डायरेक्टर।

दस्तकारी को उन्नत करने की योजनाएं

अखिल भारतीय दस्तकारी बोर्ड का कार्यसमिति ने विभिन्न राज्यों द्वारा प्रस्तावित दस्तकारी को सहायता करने के लिये भारत सरकार से अनेक नई योजनाओं की सिफारिश की है। समिति ने बम्बई, हैदराबाद, पंजाब, बिहार, पश्चिमी बंगाल और दक्षिणी भारत से आई योजनाओं पर विचार किया। पंजाब के लिये मुनहरी वारनिश और अन्य कलापूर्ण दस्तकारी की योजनाओं की सिफारिश की गई है। होशियारपुर के सरकारी औद्योगिक स्कूल में दस्तकारी की शिक्षा देने के लिये एक सायकलीन कक्षा चलाने की भी सिफारिश की गई है। बम्बई और पश्चिमी बंगाल के लिये पीतल, पण्डियों की धातु, मुनहरी वारनिश, चूड़ी और लकड़ी के मिलाने बनाने के लिये डिजायन तथा गवेषणा केन्द्र खोलने की सिफारिशों की गई हैं। अहमदाबाद में रगाई और छुपाई का उत्पादन तथा गवेषणा केन्द्र स्थापित करने की सिफारिश की गई है। ममलीपट्टम के कलमकारी उद्योग को निर्तीय सहायता देने की सिफारिश की गई है। इस उद्योग के सम्बन्ध की आवश्यकता है।

कोसडापल्लु के जिलों की मांग बहुत बढ़ रही है। अतः समिति ने जिलों के बनाने की शिक्षा नयपुरम को देने की योजनाएँ स्वीकार की हैं। हैदराबाद के लकड़ी के जिलों के बनाने के उद्योग, और कमरहदी (पश्चिमी बंगाल) के फेन्सी बर्तन उद्योग को वितीय सहायता दिये जाने की सिफारिश की गई। बम्बई प्रजापति सहकारी उत्पादक मण्डल द्वारा बनाये जाने वाले देशी बर्तनों का विकास करने के लिये एक दस्तकारी केन्द्र खोलने के लिये वितीय सहायता देने की सिफारिश की गई।

बिहार सरकार ने दस्तकारी की वस्तुओं का विक्री समगद बनाने, पीतल तथा बाने के काम, लकड़ी और मुनहरी वारनिश के काम तथा पत्थर उद्योग के विकास करने का अग्ररोध किया है। इनके लिये भी सरकार से उपयुक्त सिफारिशों की गईं।

व्यापार की उन्नति

रत्नों के सीमाशुल्क में कमी

मार्च १९५३ में बिना जडे तथा बिना तराशे मगाये गये रत्ना तथा बिना जडे मोतियों पर २० प्रश० शुल्क लगाया गया था।

इस सम्बन्ध में इस आशय की शिफारिशें आई हैं कि उपर्युक्त शुल्क से लाल, पन्ना और नीलम पर भारी बोझ पडा है, जो प्राय तराश कर निर्यात किये जाते हैं। इस सम्बन्ध में शुल्क को वापस देने की कोई सलत तथा विषयसमीय विधि मालूम कर सक्ना सम्भव नहीं हो सका है।

इस धरने में लगे हुए व्यक्तियों के हितों का ध्यान करके तथा निदेशी बाजार में रत्नों की रूपधां शक्ति बनाये रखने के उद्देश्य से भागत सरकार ने रात्काल ही (२३ अगस्त से) लाल, पन्ना और नीलम का सीमाशुल्क मूल्य के २० प्रतिशत से घटकर ५ प्रतिशत कर देने का निश्चय किया है।

बर्मा को साबुन और बर्तनोंकी आवश्यकता

हाल हुआ है कि भारत से हाथ-मु ह तथा कवडा घोने के साबुन और धरेलु बर्तन बर्मा में भेजे जा सकते हैं। परन्तु इनकी निम्न अछ्छी और मान ऐसे होने चाहिए जो प्रतिस्पर्धा में टिक सके। इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्रथम सेक्रेटरी (व्यापारिक) भारतीय दूतावास, रगून से प्राप्त हो सकती है।

पेटेयों की प्रगति

१ जून से ३१ अगस्त, १९५४ तक की अवधि में भारत सरकार के पाठ ६१४ आवेदनपत्र पेटेय कराने के लिये आये। इनमें २ आवेदनपत्र स्थियां न दिये बिन्होंने स्वयं ही आविष्कार किये थे।

६१४ आदिनपत्रों में से १०८ भारत में दिये गये। इनमें मम्बई, पश्चिमी बंगाल, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मद्रास, मैसूर, हैदराबाद और त्रामा के क्रमशः ४८, ५५, १३, १०, ७, २, ४, २ और २ आदिनपत्र थे। शेष ४ भारत के अन्य भागों में दिये गये हैं। इन आदिनपत्रों में से ६२ के आदिनपत्र होने का टाटा भारतीया ने किया है। शेष १५ का अधिभार भारत में रहने वाले अन्य व्यक्तियों ने किया है। ३१ अगस्त, १९५४ को कुल १३,५६० पेटेंट चालू थे। इनमें में १,२२६ पेटेंट भारत में गैरबी गट वस्तुओं के थे।

दूसरी श्रेणी में डिजायना की रजिस्ट्री के लिये ७५३ आवेदनपत्र आये। इनमें ७३५ भारतीयों के और १८ विदेशी के थे। भारतीयों के आवेदनपत्रों में मद्रास, उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बंगाल, दिल्ली, मध्यभारत, पंजाब, मद्रास, मेसूर और तैलानूर के क्रमशः ५४६, ८०, २६, ४५, २१, १६, ०, ३, और १ आवेदनपत्र थे।

६७० डिजायना की रजिस्ट्री की गई जिनमें में ६५४ भारतीयों के नामों में थी।

न्यूजीलैंड को पेटा भेजिये

जो भारतीय आपूर्ति स्ट्राटेजी का सुरक्षा और डिम्बानन्द पेटा न्यूजी-

लैंड को भेजना चाहें उन्हें नीचे लिखी बातें ध्यान में रखनी चाहिये।

न्यूजीलैंड ग्राह्य और आपूर्ति नियम १९४६ के अनुसार राद्य पदार्थों के प्रत्येक पैकेज पर एक लेबिल अग्रहण होना चाहिए जिसमें वस्तु का नाम, ट्रेड मार्क अथवा वर्णन लिखा गया हो। यह नाम प्रत्यक्ष ट्रेड मार्क ऐश्वर्य हाना चाहिये जिसमें यह ज्ञात हो सके कि उक्त राद्य पदार्थों का दिन विशेष नियमों के अंतर्गत रखा जा सकेगा।

भारतीय स्ट्राटेजी का मुख्यालय न्यूजीलैंड के नियमों में आ जाता है परन्तु 'पेटा' लिपण में न्यूजीलैंड वाला को यह पता नहीं चलना कि उन में निम्न प्रकार के ग्राह्य पदार्थों का आशय है। हो सकता है कि लेबिल आदि देखकर परीक्षार्थ यह समझ ले कि अन्न-नाम जैसी कोई वस्तु है। इस कारण पेटे का स्पष्ट निम्नलिखित लेबिल पर दिया जाना चाहिए। इसमें यह लक्ष्यना चाहिए कि यह चायनी में डाला हुआ है और मिठाई के रूप में परोसा जाना चाहिए।

पैक करन वालों को यह भी जान लेना चाहिए कि न्यूजीलैंड के नियमानुसार मुख्यों में रग नष्ट जानना चाहिए। रग डाले हुए मुख्यों को वहां के सीमाशुल्क अधिकारी अपने वहां नहीं आने देंगे।

व्यापार नियन्त्रण

खनिज लोहक से निर्यात शुल्क हटाया जायगा

खनिज लोहक के निर्यात के सम्बन्ध में शिराघत आइ है कि अन्य कार्यों के अतिरिक्त, खनिज लोहक पर लगाय गये निर्यात शुल्क से भी उलक निर्यात में कटौत पड़ रही है।

भारत सरकार ने अपनी मानान्य नीति के अनुसार, स्थिति पर पुनर्विचार करके यह निर्णय किया है कि अन्तराष्ट्रीय बाजार में खनिज लोहक की प्रतिस्पर्धा मूलक स्थिति की सुधारण के उद्देश्य से, उस पर निर्यात जाने वाला निर्यात शुल्क तत्काल (१८ अगस्त से) हटा दिया जाय।

बिनाले के तेल का निर्यात

भारत सरकार ने बिनाले के तेल के निर्यात नीति पर पुनर्विचार करके यह निर्णय किया है कि डिम्बर १९५४ के अन्त तक एक निश्चित अधिकतम सीमा के भीतर इसका निर्यात करने की अनुमति दी जाय। यह आइन्सत बन्दरगाहों पर निर्यात निर्यन्त्रण अधिकारियों द्वारा जहाजों बिलो के आधारे पर दिये जायेंगे। ये जल निर्यातकों द्वारा निर्यात व्यापारियों से दूकृत होने के पद पण्डों के भीतर दर्ज कराने गये सीमा के होंगे। प्रत्येक निर्यातक इस बन्दरगाह पर मिलाकर अधिक से अधिक ४०० टन के लोहे दर्ज करा सकेगा।

मूंगफली के तेल का निर्यात शुल्क घटा

भावा के वर्तमान रूप को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने मूंगफली के तेल का निर्यात शुल्क तत्काल ही (२ मिनम्बर, १९५४ से)

३५० रु० में घटा कर ०.५ रु० प्रति टन कर देने का निर्णय किया है।

लोहक तथा लोहे का निर्यात

भारत सरकार ने परिवहन सम्बन्धी उल्लेख मुविधाया तथा अन्तर्देशीय बाजार की स्थितियों के प्रकाश में लोहक तथा खनिज लोहे के निर्यात की नीति पर पुनर्विचार किया है।

यह निर्णय किया गया है कि मिनम्बर १९५४ की श्रेणी में उपयुक्त कतिना का, कल्पना के बन्दरगाहों का मरा जाना, कोरे के आधार पर हा निश्चित किया जाता है। मद्रास के बन्दरगाह से निर्यात किये जाने के लिये, वेनाग हार्बेन गुण्डाहा (मोड गेज) क्षेत्र से ज्ञान वाला मान्य रूप की प्रकार निश्चित होगा। किन्तु विद्यालयाद्वय, मन्नीपट्टम तथा वाग्नाथा के बन्दरगाहों में निर्यात किये जाने वाले मान का मेजा जाना कोरे के आधार पर निश्चित तथा होगा। इन लाइन पर खनिज अर्थशास्त्रियों द्वारा माल के इन्-केनल उन्-निष्पादन, खान के मालिक तथा अन्तर्देशीय व्यापारियों का किये जा सकेंगे, या रजिस्ट्रार किये हुए हैं। रजिस्ट्रार तप पाने दे लिये मद्रास के अन्तर्गत निर्यात सम्बन्ध डिन्डा चाफ कन्ट्रोलर को आन्त पत्र भेजना होगा। इनमें किये जाने के मालिक को खान के चालू पत्रों तथा पुनर्नि निर्वातकों तथा अन्तर्देशीय व्यापारियों को निर्यात व्यापार सम्बन्धी प्रमाण्य भी देना होगा। अन्य इन्फुर्न कर्म भी, जो इन तीन श्रेणियों में नहीं आती, तथा विदेशी परीक्षार्थों में लोहा तप कर सकती हैं, उपयुक्त अधिकारियों को

रिजिस्ट्रेशन के लिये आवेदन पत्र भेज सकता है। इन आवेदन पत्रों पर उनके महत्व के आधार पर निम्नरितिया जायगा। बगलोर क्षेत्र के मीटर गेज सेक्शन से जाने वाला माल में इसी प्रकार नियन्त्रित होगा।

इन नीति की एक नई बात यह है कि लोहक तथा एलुमिना लोहे के पुराने निर्यात तथा पुराने के मालिक, कलकत्ता और मद्रास के बन्दरगाहों से माल निर्यात करने के लिये, सम्बन्धित निर्यात व्यापार नियन्त्रण अधि कारियों को चालू व्यापार के आधार पर पूरक कोषों के लिये आवेदन पत्र दे सकते हैं। इस प्रकार के आवेदन पत्रों पर, दो बातों को ध्यान में रख कर विचार किया जायगा। पहली, उम समय माल के टिप्पों मिलने सम्भव ही स्थिति क्या है, तथा दूसरी, निर्यातका को पहले टिप्पे गये बेटों का उपयोग किस प्रकार किया गया है। इस सम्बन्ध में लाइसेंस प्रणाली का विवरण निर्यात व्यापार नियन्त्रण अधिकारियों द्वारा मूचित किया जा रहा है।

इन्सुलेटों के हिस्सों का आयात

भारत सरकार ने निश्चय किया है कि क्रम संख्या ४३ (टी)/२ के अन्तर्गत वने टेशन के इन्सुलेटों के लिये टिप्पे गये लाइसेन्सों के आधार पर घातु के खुले हुए हिस्सा को चुगो में छोड़ने की अनुमति नहीं दी जायगी। पिन और केप वाले हिस्से इसके अन्वय में होंगे। इस आदेश की सूचना भारत सरकार के सितम्बर १९५४ के असाधारण गजट में प्रकाशित हुई है।

आयात की नई सुविधाएं

सामा शूलक (द्वितीय) संशोधन विनियम १९५४ के फलस्वरूप और व्यापारियों से प्राप्त सुझावों को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने अनेक वस्तुओं के विषय में आयात सम्बन्धी प्रतिबंधों को ११ सितम्बर १९५४ को एक सूचना निम्नलिखित कर डाला है। माने तार पर इस सूचना में निम्न प्रकार व्यक्त की गई है —

- (१) १२ वस्तुओं को दुर्लभ मुद्रा क्षेत्र से भगाने के लिये अधिक सुविधाओं दी गई हैं।
- (२) कुछ वस्तुओं के आयात कागम में वृद्धि की गई है।
- (३) कुछ वस्तुओं के लिये आयात लाइसेन्सों के प्रयोग पर लगे हुए प्रतिबंध दूर किये गये हैं।
- (४) उदारतापूर्वक लाइसेन्स देने को प्रणाली को कुछ अन्य वस्तुओं पर लागू कर दिया गया है।
- (५) जिन वस्तुओं के लिये आयातभूत अग्रप वडाकर १९५२-५३ को भी सम्मिलित कर लिया गया है, उनकी सूची का विस्तार किया गया है।

जो आयातक पिछली नीति के आधार पर अपने बेटों के लाइसेन्स प्राप्त कर चुके हैं उन्हें संशोधित बेटों प्रतिशत के आधार पर अतिरिक्त लाइसेन्सों के लिए नये आवेदन पत्र देने चाहिये। जहां कहीं पुराने आयातकों को अतिरिक्त लाइसेन्स देने अथवा मत्र प्रकार के आयातकों को उदार आधार पर लाइसेन्स देने का निश्चय किया गया है वहां निश्चय प्रणाली के अनुसार नये आवेदनपत्र देने चाहिए। जो आयातक उन वस्तुओं का अर्पण देना १९५२-५३ में किये वास्तविक आयात के आधार पर पुनः निश्चय करना चाहते हैं, जिन को आयातभूत अधि में विस्तार कर दिया गया है, उन्हें चाहिए कि शीघ्रतः शीघ्र सम्बद्ध अधिनियमों को आवेदनपत्र दें। आयातभूत आयात में वृद्धि होने के फलस्वरूप अतिरिक्त लाइसेन्स आवेदनपत्र देने पर दिने जायेंगे।

गेट्टे के चोकर का निर्यात

चूनि बेलन वाले आयात मिलों को उनके यहां इकट्ठे गेहूँ के चोकर को निकालने में बट्टिनाट हो रहा है इसलिये सरकार ने इन मिलों द्वारा इस चोकर के कुछ और निर्यात किये जान की अनुमति देने का निश्चय किया है। निर्यात का यह परिमाण उन प्रतिशत के अतिरिक्त होगा जिनकी अनुमति १३ फरवरी, १९५४ को निकाली गई मार्च/अप्रैल सूचना सं० १३ आ० टी० नो० (पी० एन०) ५४ में दी जा चुकी है। इन मिलों के अतिरिक्त दूसरी फर्मों को इस निर्यात के लिए आवेदन पत्र देने की अनुमति नहीं है परन्तु जिन मिलों को लाइसेन्स दिये जायेंगे उनकी और से दूसरी फर्में निर्यात कर सकेंगी। इस सम्बन्ध में विस्तृत विवरण बन्दरगाहों और अमुदतर, शिलांग तथा राजकोट के निर्यात व्यापार नियन्त्रण अधिकारियों से प्राप्त हो सकता है।

स्पाके प्लगों का आयात

११ सितम्बर, १९५४ के असाधारण गजट में प्रकाशित एक सार्वजनिक सूचना निम्नलिखित कर भारत सरकार ने घोषित किया है कि जनवरी से जून १९५२ और जुलाई से सितम्बर १९५३ तक की अवधियों के लिये जारी किये गये मोटर गाड़ियों के हिस्से के लाइसेन्सों से स्पाके प्लगों का आयात रद्द किया जा सकेगा। जो फर्म इस सम्बन्ध में सौदे कर चुकी हैं उनके विषय में विशेषतः विचार किया जायगा।

चालू अवधि के लाइसेन्स

यह निश्चय किया गया है कि लाइसेन्सों को चालू अवधि के विषय में आयात लाइसेन्स देने के लिए १५ सितम्बर, १९५४ के बाद पुराने आयातकों के कोई आवेदनपत्र स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

आयोजन और विकास

राष्ट्रीय विस्तार सेवा में नये क्षेत्र

भारत सरकार ने चालू वर्ष के लिए २४१ राष्ट्रीय विस्तार खेदा की स्वीकृति दी है। इन विस्तार खेदों के अंतर्गत एक १ करोड़ ६८

लाप ७० हजार आनामें के २४,१०० गांव आ जायेंगे। इस समय ४०१ विस्तार खेदों पर काम चल रहा है, जिससे ३ करोड़ ८८ लाप आवादी के ४८,७५० गांवों को लाभ पहुंच रहा है। इस प्रकार इस

है। बाद में इस धोल को ठंडा करके छाना जाता है। छुना हुआ तरल पदार्थ निक्कल सल्फेट के रूप में प्राप्त होता है जो इलेक्ट्रो-वोल्टिंग उद्योग में काम में लाया जा सकता है। ऊपर बताई गई विधि को व्यवसायिक पैमाने पर कम खर्च से चलाया जा सकता है।

हर्न से रासायनिक शोधक पदार्थ

बिहार की पटना स्थित औद्योगिक गवेषणा प्रयोगशाला में हर्न से एक रासायनिक शोधक पदार्थ तैयार करने की विधि खोज निकाली गई है।

यह धातु पदार्थ आयन एक्सचेंजर्स (Ion Exchangers) श्रेणी के हैं। इनके द्वारा अनायनिक कैल्शियम, मैग्नीशियम, कोबाल्ट और निकल को दूर किया जा सकता है। खारी पानी को ठीक

करने के लिये इन शोधक पदार्थों का विशेष महत्व है। पानी का खारापन उसमें घुले हुए लवणों के कारण होता है। इन लवणों के कारण पानी पीने के योग्य तो रहता ही नहीं उद्योगों में भी यह हानि पहुँचाता है। उदाहरण के लिये बायलरों में खारे पानी का उपयोग किया जाता है तो उनमें लवण जम जाते हैं और बायलर को बेकार कर देते हैं। जिन मशीनों को मतली नालियों में पानी का प्रयोग करना होता है वे खारे पानी से खराब हो जाती हैं। इस कारण खारे पानी का खारापन दूर करना आवश्यक हो जाता है। यह कार्य हर्न से बने शोधक पदार्थों से हो सकेगा।

भारत में हर्न प्रचुर परिमाण में होती हैं और इनसे विशाल परिमाण पर नया शोधक पदार्थ तैयार किया जा सकता है।



वित्त

राष्ट्रीय योजना ऋण में १३० करोड़ रु०

राष्ट्रीय धानना ऋण में १४ अगस्त, १९५४ तक १२६.७२ करोड़ रु० एकत्र हुए थे।

यह ऋण जिस भारत सरकार ने पंचवर्षीय योजना के लिये चालू किया है, गत १६ अगस्त, १९५४ से चालू किया गया था। इस ऋण के पूरक रूप में तथा थोड़ा बढ़ावपना लगाने वालों को भी अवसर देने के उद्देश्य से सरकार द्वारा राष्ट्रीय योजना सर्टिफिकेट भी जारी किये गये हैं। ७ अगस्त, १९५४ तक ८३,४०७ व्यक्तियों ने कुल १७६.१२ लाख रु० के ये सर्टिफिकेट खरीदे। ये सर्टिफिकेट १० वर्ष के लिये हैं तथा इन पर व्याज की दर ५।५० प्रतिशत रखी गई है।

राष्ट्रीय योजना ऋण, जिस पर व्याज की दर ३।५० प्रतिशत है, १० वर्ष अर्थात् १९६४ तक के लिये है। इस ऋण का लेना १६ सितम्बर, १९५४ से बन्द कर दिया गया है। लेकिन राष्ट्रीय योजना सर्टिफिकेट जारी हैं।

योडो-ब्रचत-जुलाई १९५४

जुलाई १९५४ में पोस्ट ऑफिस नेविगेशन बैंक, पोस्ट ऑफिस बैंक सर्टिफिकेटों, १० वर्षीय डिपॉजिट सेविंग्स सर्टिफिकेटों, नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेटों और हैदराबाद राज्य नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेटों तथा १० वर्षीय नेशनल प्लान सर्टिफिकेटों में जो धन लगाया गया है उसका योग लगभग ५०० लाख रु० रहा है।

विदेशों में कमाया हुआ लाभ

सितम्बर १९५१ में भारत सरकार ने घोषित किया था कि पिछले वर्ष से पहले दो अथवा अधिक वर्ष तक भारत में रह चुकने वाले जिस व्यक्ति के पास विदेशों में कमाया हुआ पैसा लाभ, इकट्ठा है जिस पर भारत में

लाये जाने पर कर लगेगा उसे कुछ अवस्थाओं में घर से मुक्त कर दिया जायगा। प्रायः कर में अधिनियम गत वर्ष आवश्यक सशोधन करके यह रियायत अमल में लाने आई गई थी।

घर से मुक्त करने की एक मुख्य शर्त यह थी कि भारत लाये जाने वाले धन के आधे भाग को भारत आने के बाद तीन महीनों के भीतर गवर्नमेंट सिन्धूरिटिवो में लगा देना होगा। ये सिन्धूरिटिया रिजर्व बैंक के द्वारा पर्यटनी जायगी और कम से कम दो वर्ष तक के लिये बैंक के पास सुरक्षित रखी जायगी। यह शर्त मुख्यतः मुद्रा बाहुल्य रोकने के उद्देश्य से लगाई गई थी, जिसकी अब उतनी आवश्यकता नहीं रही है जितनी कि इसके लगाये जाने के समय तीन वर्ष पूर्व थी। अतः भारत सरकार ने निश्चय किया है कि ३० सितम्बर, १९५४ के बाद विदेशों में कमाये लाभ का जो धन भारत लाया जायगा उसे रिजर्व बैंक द्वारा सरकारी सिन्धूरिटिवो में लगाने पर जोर नहीं दिया जायगा। आवश्यक अधिनियम में इस आशय का संशोधन भी कर दिया जायगा।

राष्ट्रीय ऋण में वृद्धि

संसद में दिये उत्तर के अनुसार १९५०-५१ की तुलना में १९५१-५२ में राष्ट्रीय ऋण में ४.८८ प्रतिशत की वृद्धि हो गई है। यदि मूल्यों में परिवर्तन होने का प्रभाव निकालकर देखें तो १९५१-५२ में हुई वृद्धि १४.५१ प्रतिशत रहती है। १९५२-५३ के पूरे आकड़े अभी प्राप्त नहीं हुए हैं, परन्तु उपलब्ध त्जानकारी से प्रतीत दृष्टोता है कि १९५२-५३ में भी राष्ट्रीय ऋण में वृद्धि हो रही है।

सरकार राष्ट्रीय ऋण के अनुमान प्रकाशित करती है। राष्ट्रीय ऋण समिति की अन्तिम रिपोर्ट में १९४८-४९ से १९५०-५१ तक के राष्ट्रीय ऋण के अनुमान दिये गये हैं। १९५१-५२ के अनुमान भी इसी आधार पर तैयार किये गये हैं।



खाद्य व खेती

मैदा और सूजी की निकासी

जून १९५४ में देशी गेहूँ से मैदा और रवा तैयार करने की अनुमति दी गयी थी। अब देशी तथा विदेशी दोनों ही प्रकार के गेहूँ से मैदा तथा रवा तैयार किया जा सकता है। परन्तु ऐसे देशी अथवा विदेशी गेहूँ से जो मैदा या रवा बनाने के लिए विशेष रूप से न दिया गया हो, चाँद मैदा या रवा तैयार किया जाय तो उसे उसी राज्य में वहीं भी भेजा जा सकता है, परन्तु वहाँ से अन्य राज्यों को नहीं भेजा जा सकता। मैदा या रवा तैयार करने के लिए विशेष रूप में टिपू गेहूँ का मैदा या रवा ही एक राज्य से दूसरे राज्य को भेजा जा सकता है। इन चीजों को बाहर भेजने के लिये भारत सरकार द्वारा परमिट टिपू जॉन का विवरण तैयार किया जा रहा है।

नह अन्न निश्चित किया गया है कि मैदा या रवा बनाने के बाद बचे हुए आगे को उस सरे राज्य को नहीं भेजा जायगा।

मुलायम गेहूँ से सूजी

मैसूर की केन्द्रीय खाद्य गवेषणाशाला ने मुलायम गेहूँ से सूजी वैधा एक पदार्थ तैयार करने की विधि निकाली है।

गेहूँ को मुच्छन, तीन किन्ते होती हैं। कटा गेहूँ, मुचायम गेहूँ और

दुकम गेहूँ। बड़े अथवा मुलायम साधारण गेहूँ से आद्य अथवा मैदा बन जाते हैं। सूजी गेहूँ का दानेदार रूप होता है। यह माघारणतः दुकम और बड़े गेहूँ में बनाया जाता है।

सूजी दलिया आदि गेहूँ के दानेदार उत्पादनों को चावल भोजों धेजों में आगे की अस्पदा अधिक पसन्द किया जाता है। इन्हे प्रति वर्ष पर्यन्त परिष्कार में विदेशों से मगया जा रहा है। १९५२-५३ में ही १२ लाख रुपये की सूजी और दलिया विदेशों से मगया गया था।

व्याप्य गवेषणाशाला में सूजी बनाने की जो विधि निकाली गई है उससे अनुहार गेहूँ को ३० अश सेखी० तापमान पर ३० मिनट तक भाग में पकाते हैं और फिर उसे सुखा लेते हैं। सूजने पर इस गेहूँ का क्षिप्र उतार देते हैं और फिर उतार कर उसका दलिया या सूजी बना लेते हैं। यह विधि वही सरल है और उसे छोटे परिष्कार पर उत्पादन करने के लिये भी अपनाया जा सकता है।

उपर्युक्त विधि द्वारा मुलायम गेहूँ से तैयार की गई सूजी से अनेक प्रकार के माटे और स्वादिष्ट व्यञ्जन तैयार किये जा सकते हैं। इन्हे खाने वालों ने बहुत पसन्द किया है। बड़े गेहूँ से तैयार का गट सूजी के समान ही यह मुचायम गेहूँ की सूजी भी स्वादिष्ट होती है।

श्रम

जून में औद्योगिक भगड़ों में कमी

जून १९५४ में उद्योग चर्चों में कम अन्तरे हुए। कुल भगडा की संख्या ७४ है, जिनसे १६,५३६ कर्मियों का संघ था और जिनमें कुल १,८८४,८७४ जन दिनों की हानि हुई। इनमें से दो भगडे, परिचयों भगान में, ताला बन्दी के थे, ५७ भगडे महीने के भीतर ही समाप्त हो गये और इनमें भी ३४ ऐसे थे जो ५ दिनों से अधिक नहीं चले।

जून दिनों की सबसे अधिक हानि, कुल की ६६ प्र० घ० परिचयों बगाल में हुई। उद्योगों के हिसाब से लकड़ी, पत्थर और काच उद्योगों में सबसे अधिक समय की हानि हुई, इनके बाद रासायनिक व रंग उद्योगों का सम्पर्क रहा।

जुलाई में नियोजन की स्थिति

पुनर्वास तथा नियोजन महानिदेशक के कार्यालय की एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि जुलाई १९५४ में काम हित्ताक केन्द्रों में ५,६०,०००

बेरोजगार लोगों के नाम दर्ज थे। यह संख्या पिछले महीने से ४० हजार अधिक रही। इस महीने १,५६,५७८ व्यक्तियों ने नौकरी के लिये नाम लिखने पिछले महीने यह संख्या १,४३,२८८ थी। इस महीने १५,३२० लोगों को नौकरी दिलायी गयी जबकि पिछले महीने १४,६७८ को नौकरी दिलायी गयी थी। नये नाम लिखाने वाला की संख्या में हृदिक परीक्षा फल घोषित होने के कारण हुई, क्योंकि इस महीने बहुत से उर्ध्वीय नवयुवकों ने नौकरी के लिये नाम दर्ज करवाये।

अम मजालय की प्रशिक्षण योजनाओं में प्रौट नागरिक प्रशिक्षण योजना का दूसरा और विस्थापितों के लिये व्यावसायिक प्रशिक्षण योजना का चौथा सत्र समाप्त। जून और जुलाई में समाप्त हुआ। शिक्षकों और निरीक्षकों के प्रशिक्षण को योजना के अन्तर्गत १०६ व्यक्तियों को कोची विलासपुर के केन्द्र में शिक्षा दी गयी। इससे अलावा उत्तर प्रदेश और परिचय बगाल में ६६८ विस्थापित अपरिचितों को प्रशिक्षित किया गया।

फसल का अनुमान

मेस्ता का प्रथम अनुमान

केन्द्रीय खाद्य एवं कृषि मन्त्रालय के अर्थ व अन्न विभाग के प्रथम अखिल भारतीय अनुमान के अनुसार चालू साल, १९५४-५५ में मेस्ता की खेती १ लाख ४४ हजार एकड़ में की गयी है। पिछले साल भी

मेस्ता इतने ही क्षेत्र में बोया गया था। यह अनुमान जून के अखिर व जुलाई १९५४ के शुरू तक का है और तब तक सब तत्क फसल अर्थात् होने की संभव थी। इस अनुमान में कुल राज्यों के वे क्षेत्र शामिल नहीं हैं जहाँ बुवाई टेर से की जाती है। इस लिये पूरे आकडे अंतिम अनुमान से ही प्राप्त हो सकेंगे।

सूखी लाल मिर्च का अंतिम अनुमान

१९५३-५४ में सूखी लाल मिर्च के अखिल भारतीय अन्तिम अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में सूखी लालमिर्च की टोती का क्षेत्रफल १३,२६,००० एकड़ और पैदावार ३,१०,००० टन आकी गई है, जबकि १९५२-५३ के अंशतः मशोषित अनुमान में ये संख्यायें क्रमशः १२,३५,००० एकड़ तथा २,८५,००० टन थीं। इस प्रकार पिछले वर्ष की अपेक्षा चालू वर्ष में टोती के क्षेत्रफल में ६१,००० एकड़ या ७.४ प्र.श. की और पैदावार में २६,००० टन या ६.२ प्र.श. की वृद्धि हुई है।

टोती के क्षेत्र की वृद्धि मुख्यतः आंध्र, हैदराबाद, राजस्थान, पंजाब, मैसूर व मध्य प्रदेश में और पैदावार की वृद्धि मुख्यतः आंध्र व मद्रास में हुई है।

आलू का द्वितीय अनुमान

१९५३-५४ में आलू के अखिल भारतीय द्वितीय अनुमान के अंतर्गत चालू वर्ष में आलू की खेती का क्षेत्रफल ६ लाख ४५ हजार एकड़ और उत्पादन १६ लाख ५७ हजार टन आका है, जबकि १९५२-५३ में ये संख्याएँ क्रमशः ६ लाख ३३ हजार एकड़ और १६ लाख ६८ हजार टन थीं। इस प्रकार टोती के क्षेत्रफल में १२ हजार एकड़ (१.६ प्र.श.) की वृद्धि और उत्पादन में ४१ हजार टन (२.५ प्र.श.) की कमी हुई।

चालू वर्ष में आलू की टोती का क्षेत्रफल बढ़ने के बावजूद भी उत्पादन में कमी रही। यह कमी बिहार, पश्चिमी बंगाल तथा पंजाब में रही और इसका कारण बुझाई के समय मौसम की प्रतिकूलता है।

यह अनुमान मई १९५४ के अन्त तक का है। अन्तिम अनुमान में क्षेत्रफल दूसरे अनुमान की अपेक्षा थोड़ा बड़ा जाता है।

विविध

थोक मूल्यों के साप्ताहिक सूचक-अंक

७ अगस्त, १९५४ को समाप्त हुआ सप्ताह

७ अगस्त, १९५४ को समाप्त हुए सप्ताह में थोक मूल्यों का सरकारी सूचक-अंक (अगस्त १९३६ में समाप्त हुए सप्ताह को आधार=१०० मानते हुए) ०.२ प्र.श. बढ़कर ३८२.२ हो गया, जबकि गत सप्ताह में इसका स्तर ०.६ प्र.श. कमी की ओर था। यह वृद्धि मुख्यतः खाद्य पदार्थों के मूल्यों में ०.६ प्र.श. वृद्धि हो जाने से हुई। यह सूचक अंक गत मास के इसी सप्ताह की अपेक्षा ०.६ प्र.श. अधिक और एक वर्ष पूर्व के इसी सप्ताह की अपेक्षा ७.२ प्र.श. कम था।

४ अगस्त, १९५४ को समाप्त हुआ सप्ताह

४ अगस्त, १९५४ को समाप्त हुए सप्ताह में थोक मूल्यों का सरकारी सूचक-अंक (अगस्त १९३६ में समाप्त हुए सप्ताह को आधार=१०० मानते हुए) ३८१.४ रहा, जबकि गत सप्ताह में यह ३८१.५ (समायोजित) तथा गत मास के इसी सप्ताह में ३८१.६ (समायोजित) रहा था। यह सूचक-अंक एक वर्ष पूर्व के इसी सप्ताह के स्तर से ७.५ प्र.श. कम था।

२१ अगस्त, १९५४ को समाप्त हुआ सप्ताह

२१ अगस्त, १९५४ को समाप्त हुए सप्ताह में थोक मूल्यों का सरकारी सूचक-अंक (अगस्त १९३६ को समाप्त हुए वर्ष को आधार=१०० मानते हुए) ३८१.७ रहा जबकि पिछले सप्ताह में यह ३८१.४

रहा था। गत मास और एक वर्ष पूर्व के इन्हीं सप्ताहों की अपेक्षा यह अंक क्रमशः ०.३ और ६.८ प्रतिशत कम रहा।

२८ अगस्त, १९५४ को समाप्त हुआ सप्ताह

२८ अगस्त, १९५४ को समाप्त हुए सप्ताह में थोक मूल्यों का सरकारी सूचक-अंक (अगस्त १९३६ को समाप्त हुए वर्ष को आधार=१०० मानते हुए) ०.८ प्रतिशत की वृद्धि होकर ३८४.८ हो गया। वस्तुओं के सभी वर्गों में वृद्धि होने के कारण सूचक अंक में यह वृद्धि हुई है। गत मास के इसी सप्ताह की अपेक्षा यह अंक १.२ प्रतिशत अधिक रहा, परन्तु एक वर्ष पूर्व के इसी सप्ताह के अंक की अपेक्षा ५.८ प्रतिशत कम रहा। अगस्त १९५४ का औसत अंक ३८२.३ रहा, जबकि गत मास का मशोषित ३८१.३ और अगस्त १९५३ का ४१०.४ रहा।

४ सितम्बर, १९५४ को समाप्त हुआ सप्ताह

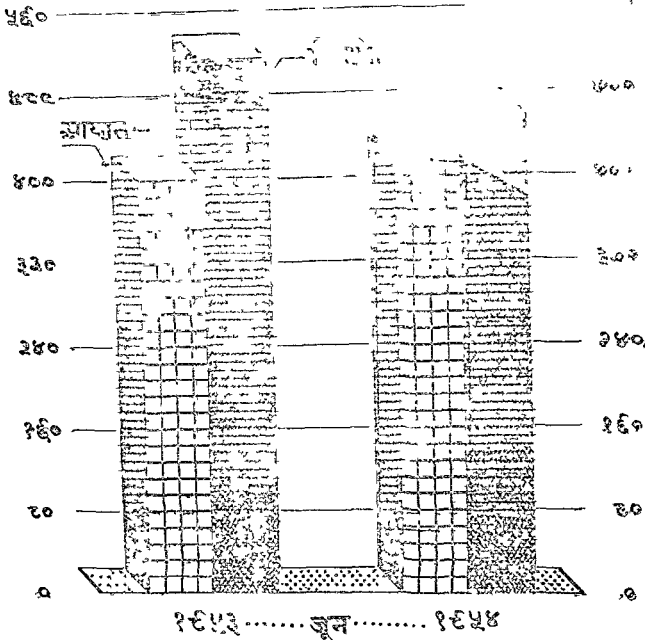
मातृ सरकार के आर्थिक सलाहकार के कार्यालय से प्रकाशित एक विज्ञप्ति में बताया गया है कि (अगस्त १९३६ में समाप्त वर्ष को आधार=१०० मानते हुए) ४ सितम्बर, १९५४ को समाप्त सप्ताह में थोक मूल्यों का सरकारी सूचक-अंक ३८५.२ रह गया। पिछले महीने के इसी सप्ताह की अपेक्षा यह अंक १.० प्र.श. अधिक और पिछले वर्ष के इसी सप्ताह की अपेक्षा ५.७ प्र.श. कम है।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र, जपू और स्थल द्वारा)

दस लाख रुपयों में

सं. १९५३-५४



इसमें सन्तान, स्टील आदि के विशेष आयात का मूल्य २१० लाख रु० सम्मिलित नहीं है, जिसका पूर्ण विवरण अभी उपलब्ध नहीं हुआ है।

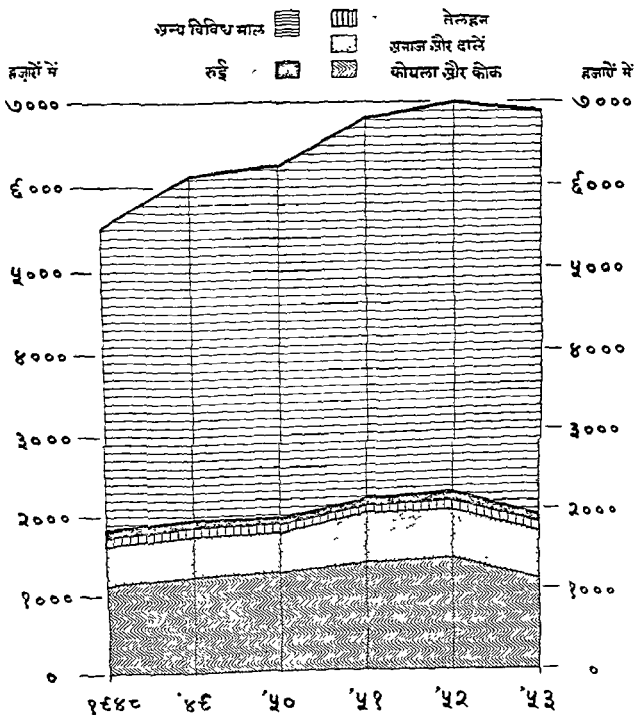
सम० श्री० मेहरा
रु० प्रो०

सेन्ट्रल स्टैटिस्टिकल ऑर्गेनाइजेशन नं० २०६/६-५४-३

अन्तर्देशीय परिवहन

लादे गये डिब्बे

(प्रथम अंश की रत्नों में)



सांख्यिकी विभाग

१. औद्योगिक उत्पादन* (१) बुनाई उद्योग

वर्ष	१	२	३ [क]	४ [ख]	५ पट्टे (टन)
	सूत (लाइन पौंड)	सूती कपड़ा (लाइन गज)	जूट वा माल (००० टन)	ऊनी माल (००० पौंड)	
१९४६	१३,६६८	३६,०८४	१,०८८ ४	२७,०००	६१५ ६
१९४७	१२,६६०	३७,६२०	१,०४१ २	२४,०००	६६०,०
१९४८	१४,४७२	४१,१८८	१,०८८ ४	२०,००४	६६०,०
१९४९	१३,६६६	३६,०४८	१,०४१ २	२१,०००	४०२,०
१९५०	१३,७४८	३६,६६८	८३४ ०	१८,०००	५१०,०
१९५१	१३,०४४	४०,७४४	८७४ ४	१७,७००	६७५,६
१९५२	१४,४६६	४६,६८४	६५१ ६	१६,५८४	७०६ २
१९५३	१४,०२०	४६,६००	८६८,८	१७,०२८	७६५ ६
१९५४ जनवरी	१,३२०	४,१६०	६७ ३	१,२२०	६८,०
फरवरी	१,२४०	४,०१०	६८ ६	१,३७४	५६,०
मार्च	१,२४०	४,६६०	७५ ६	१,२६८	५६,०
अप्रैल	१,२६०	४,२६०	७४ ०	१,२६५	६४,०
मई	१,२६०	४,२७०	७१ ३	१,४३७	७०,०
जून	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात
जुलाई					
अगस्त					
सितम्बर					
अक्टूबर					
नवम्बर					
दिसम्बर					

[क] अगस्त १९४६ से ये आरूढ़े ट्रिडियम जूट मिलस एम्प्लियेशन की सदस्यता वाले मिलों तथा एक गैर सदस्य मिल के उत्पादन के सम्बन्ध में हैं। [ख] इसमें बन्सू और कश्मीर के आरूढ़े भी सम्मिलित हैं।

(२) लोहा और इस्पात

वर्ष	६	७	८	९	१०	११	१२
	कच्चा लोहा (००० टन)	सीधी बलारई (००० टन)	लोह मिश्रित धातु (००० टन)	इस्पात के पिण्ड और टलारई (००० टन)	अधूरा तैयार इस्पात (००० टन)	तैयार इस्पात (००० टन)	इस्पात की नतिर्यो (टन)
१९४६	१,३४६,४	७५ ६	१५ ६	१,२६३,६	१,०३० ८	८६० ४	.
१९४७	१,३२०,०	६७,२	१८ ०	१,२५६,४	१,०२७ २	८६२ ८	.
१९४८	१,४०५,२	५१ ६	७ २	१,२५६,४	१,०२१,६	८५६ ८	.
१९४९	१,५३७,२	६३ ७	१६ ०	१,३५२,४	१,१०५,३	६३०,०	४७०,४
१९५०	१,५६२,४	६८ ४	१८ ०	१,४३७,६	१,१४२,४	१,००४,४	४२७,२
१९५१	१,७०८,८	६२ ४	२४ ०	१,५००,०	१,२४६,२	१,०७६,४	४५६,०
१९५२	१,६८५,८	१२६,६	४०,८	१,५७०,८	१,३००,०	१,१०२,८	२१४,८
१९५३	१,६५४,८	११५ २	७ २	१,५७४,२	१,२३०,०	१,०१७ ६	अज्ञात
१९५४ जनवरी	१,३३२,०	७,६	० १	१,५४,२	१,३१,४	१०६,७	अज्ञात
फरवरी	१,४४०	१२ ३	०,४	१,३२,६	१,२४,२	६६,१	१२,१
मार्च	१,३६,१	७ ७	०,३	१,४७,५	१,३५,६	१,१४,५	अज्ञात
अप्रैल	१,३२,६	१०,०	०,४	१,२२,७	१,०६,७	६६,१	अज्ञात
मई	१,३६,५	११,२	०,४	१,२३,४	१,०५,७	६४,७	अज्ञात
जून	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात
जुलाई							
अगस्त							
सितम्बर							
अक्टूबर							
नवम्बर							
दिसम्बर							

*नवीन रिपोटों के अनुसार इन अंकों में संशोधन हो सकता है।

१. औद्योगिक उत्पादन

[३] धातु उद्योग

वर्ष	१२ लक्ष डी के पेच (००० मोस)	१४ मशीनी पेच (००० मोस)	१५ रेकर ब्लेड (लाख)	१६ हर्बिने लालटेन (०००)	१७ मैट के लैन्प (०००)	१८ तामचीनी का सामान (००० सख्या)	१९ घटार्ई टूईर (उन)	२० दुल्लिबेडिंग धातु (सख्या)	
१९४६				४७० ४	१५ ६				
१९४७	७४ ४			६०६ ६	१९ २				
१९४८	१६० ०	२१ २		६७६ २	३० ४	५,७६३ २	६७२	१६८	
१९४९	३४४ ४	८७ ६	७५ ६	१,७२८ ०	३२ ४	६,५६० ४	१,५५४	३४८	
१९५०	७०३ २	१५६ ६	१०६ ८	२,८०६ ८	३८ ४	५,४४५ ६	२,१५८	७५६	
१९५१	७६६ ८	१२७ २	२२६ २	१,६७६ ८	६२ ४	५,१२५ २	१,८६६	१,५६०	
१९५२	१,३२६ ६	१७७ ६	१०० ०	१,५२३ २	६४ ८	७,६६० ८	२,०१६	१,०२०	
१९५३	२,५४४ ८	१६० ०	२३१ २	४,३१२ ८	३० ०	६,४७७ ६	१,६४४	६३४	
१९५४	जनकरी परकरी माचि कर्मित मई जून जुलाई अगस्त सितम्बर अक्तूबर नवम्बर दिसम्बर	२६२ १ ११० ६ ४४४ ८ ७१२ ० ४२६ ६ ५०३ ०	१८३ ३ १६ ४ २२ ० २० ३ ११ ७ १६ ७	५२ ८ ५७ २ ६४ ४ ८१ ५ ६२ ३ ६६ ८	४०२ ७ ३५६ ४ ४०० ४ ४७३ ५ ४२१ २ अभाव	१ १ १ ६ २ ४ १ ६ २ ७ अभाव	१,१८६ ५ १,१७५ ६ १,१७६ ७ १,१६६ २ १,१५८ ६ अभाव	८८ ८८ १२१ १२० ८६ अभाव	१०२ १५ ८० १२० ६४ अभाव

[४] मशीनें (बिजली की मशीनों के अतिरिक्त)

वर्ष	२१ डीजल इंजिन (सख्या)	२० शक्ति कलित पम्प (०००)	२१ सिलार्ई की मशीनें (सख्या)	२४ मशीनों के औजार (मूल्य ००० रुपये)	२५ टिक्ट दिल्ल (०००)	२६ केलिको करवे (सख्या)	२७ सिंग सिनिंग पम्प (पूरी) (सख्या)	२८ पिठार्ई के पम्प (००० पौंड)	२९ धुनार्ई की मशीनें घूमने वाली चापटी (सख्या)
१९४६	४६८		६,१२० [ग]	६,१२४ ८	३३ ६				
१९४७	६८४	६ ०	५,८२६	५,५८७ ६	२३ ५				
१९४८	१,०२०	८ ४	२०,०१६	५,७७३ २	२७ ०				
१९४९	२,०७६	१४ ४	२५,०३२	५,७२६ २	४० ०		७०६ ८		
१९५०	४,५६६	३० ०	३०,८८८	२,६६० ४	४४७ २		५०० ४		
१९५१	७,२४८	४८ ०	४०,४६०	५,७३० ४	१,०१७ ६	२,३२०	१७६	७०० ४	
१९५२	४,२४८	३२ ४	५०,०४०	५,४३७ ६	७७५ २	१,६६८	२८८	८६५ २	
१९५३	२,७२०	२५ २	६२,४२४	५,४०७ ६	३३६ ८	१,८१२	२७४	८०७ ६	
१९५४	जनकरी परकरी माचि कर्मित मई जून जुलाई अगस्त सितम्बर अक्तूबर नवम्बर दिसम्बर	६६५ ५५५ ७१६ ६० ६६२	१ ५ २ ४ २ ३ २ ३ २ ३	६,७६६ ७,११२ ७,०६६ ७,२४६ ६,८१५	३०२ ३ ३२५ ७ ४४० १ ४३३ ७ ४४० १	३६ ३ ३६ ८ ४० ४० १ ४६ ३	३४ २० १२ १४ १४	१०० ३ १०८ १ ६० ४ ६१ ८ ६४	३० २० ३० ३० ३५

[ग] निर्माण सम्बन्धी गणना से प्राप्त आँकड़े ।

१. औद्योगिक उत्पादन [५] लोहे से असम्बद्ध घातुएं

वर्ष	३० अलुमीनियम (टन)	३१ सुरमा (टन)	३२ तोबा (टन)	३३ सीसा (टन)	३४ लोहे से असम्बद्ध घातुछा के नल (टन)	३५ सोना (आंस) [घ]
१९४६	३,२३६ ४	१३२ ०	६,३१० ८	५५	१,२१,७७२	१,७१,७००
१९४७	२,२१४ ८	२३५ २	५,६३१ ६	१८६ ६	१,६०,८५२	१,६५,१४८
१९४८	३,३६१ २	३३० ०	५,८६४ ४	६२५ २	३६० ०	२,३५,०२०
१९४९	३,५८६ ६	६६ ६	६,१६० ०	५४७ ६	३३१ २	१,६६,८४८
१९५०	३,५६६ ४	३७५ ६	६,११४ ४	६२७ ६	३३८ ४	२,३६,२३६
१९५१	३,८४८ ४	३२७ ६	७,०८३ ६	८५६ २	३५८ ८	२,५२,६००
१९५२	३,५६६ ४	१८१ २	६,०७६ २	१,१३१ ६	३७० ८	२,३६,०२०
१९५३	३,७४८ ४	१३० ८	५,६२० ०	१,६६४ ४	३५७ ६	२,३६,२८६
१९५४ जनवरी	३०२ ३	६ २	३१० ०	१८०	१६ १	१६,८८०
फरवरी	२६५ १	५४ ०	३२० ०	१२५	१४ ४	२०,६०१
मार्च	३८७ ५	३७ ६	६५४ ०	२००	१६ ६	२०,६५४
अप्रैल	३७८ २	५२ ०	६३० ०	१७७	५ ४	२०,६५४
मई	३१५ १	४० ०	६२५ ०	१३०	२१ ०	२०,६५४
जून	५१ ६	५ ०	५६ ०	८५	४ ५	अप्राप्त
जुलाई						
अगस्त						
सितम्बर						
अक्तूबर						
नवम्बर						
दिसम्बर						

[घ] १९४८ से हैदराबाद में हुए सोने का उत्पादन भी इन आँकड़ों में सम्मिलित है।

[६] बिजली उद्योग

वर्ष	३६ उत्पन्न की गई बिजली [क] (लाख किलोवाट प्रति घण्टा)	३७ बिजली ले जाने की गलिया (००० फुट)	३८ सूखे सेल (लाख)	३९ समग्र की बैटरी फार्म (०००)	४० बिजली के मोटर (००० हार्स पावर)	४१ बिजली के ट्रान्स फार्म (००० के.बी.ए)	४२ बिजली की घरिया (०००)
१९४६	३८,६२०		८७६ ६	२७ ६	४५ ६	३८ ४	८,११२
१९४७	५०,७३०		८७६ ६	६६ ६	३८ ४	३२ ४	७,६२०
१९४८	५४,७५०	१,७०७ ६	१,२३८ ४	१,१०४	६० ०	८१ ६	६,२५२
१९४९	५६,०६०	२,६४८ ४	१,५२१ २	१,०६ ८	६८ ४	१,०६ २	१,३६,४४४
१९५०	५०,८८०	२,६६६ ४	१,३६१ २	१,०६ ८	८१ ६	१,७१ ६	१,५,६०४
१९५१	५८,५१७	३,६६६ ६	१,५२१ २	१,२२ ४	१,४१ ६	१,६४ ४	१,५,५१६
१९५२	६१,२४	३,६६६ ८	१,३०२ ०	१,५४ २	१,५७ २	२,२४ ८	२,०,८००
१९५३	६६,२७६	३,७१६ ४	१,५८४ ४	१,७६ ४	१,६२ ०	३,०८ ४	१,६,७७६
१९५४ जनवरी	५,००७	४४२ ६	१,२६ ४	१,२७	१,२६	२,६ ६	१,७४६
फरवरी	५,४२७	५१५ ६	१,२१ १	८ ६	१,४ ३	२,४ ७	१,५६७
मार्च	५,८५७	६०३ ४	१,१७ ७	१,२ ४	१,५ ०	३,३ ६	१,६२४
अप्रैल	६,०५८	६०३ ८	१,५५ ७	१,७ ०	१,४ ०	२,६ ६	१,६२७
मई	अप्राप्त	५५६ ३	१,६८ ७	१,७ २	१,५ ३	३,२ ३	१,८५६
जून	अप्राप्त	५५६ ६	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
जुलाई							
अगस्त							
सितम्बर							
अक्तूबर							
नवम्बर							
दिसम्बर							

[क] जम्मू और काश्मीर के आकड़े भी सम्मिलित हैं। अन्य दो स्टेशनों के साथ सार्वजनिक उपयोग के कार्यों के सब स्टेशन भी इसमें आ जाते हैं।

१. औद्योगिक उत्पादन (८) रासायनिक उद्योग

वर्ष	प्र.७ रगतोप और वारिनियो (टन)	प्र.८ ट्रिआसलाई [छ.] (००० पेट्रिया) [ज.]	प्र.९ यात्रुन [म्.] (टन)	६० सरेस (हडरवेट)	६१ गैस धातुओं को जोड़ने की आकसीजन एसिडलीन (लाफ धन फुट)		६२ मिलसरीन (टन)	६३ केकाल्ड्ट का साने बनाने का चूरा (००० पीड)
					६१ गैस	६२ गैस		
१९५६	३०,५००	५११६					१,७८८	
१९५७	३०,३०४	५६५६		१२,२६४			१,६३२	
१९५८	३५,७२४	५२२८	७५,६००	७३,००४	१२,१४४		२,१४८	
१९५९	३०,६२४	५२२८		७२,६६६	१३,५००		१,७५०	
१९६०	२७,६५८	५२२८		७२,६६६	१३,५००		२,००४	
१९६१	३३,५८०	५७७२		८६,५३६	१४,११२	१,५५२०	२,५२४	५२६६
१९६२	३२,१७२	६०८४		८६,६७६	१५,६५०	१,६५००	२,२२०	६६७२
१९६३	३०,८८८	५६०४	८०,०८८	१७,१००	१,८८८६		२,५०८	८३६४
१९६४ जनवरी	३,१८१	५५६	५,१२३	१,६२२	१७००		३३०	५४०
फरवरी	२,५७७	५१२	५,२४०	१,६२३	१६८८		३२०	२२६
मार्च	२,६००	५४७	६,२७३	१,८६४	१८८८		३४०	२०२
अप्रैल	१,३६५	३८८	५,६८०	१,६६८	१६५०		३८०	७४६
मई	२,१६५	५२६	६,०६५	१,३३०	१६००		२८०	१५८
जून	अप्रामा	३४१	अप्रामा	१,३०७	१६३०		३५०	८२५
जुलाई							अप्रामा	६२५
अगस्त								
सितम्बर								
अक्तूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

[छ.] इसमें जम्मू और काश्मीर के आकड़े भी शामिल हैं।

[ज] ६० तालिये वाली डिब्बियों के ५० मोस।

[म्] ये आकड़े संगठित कारखानों के उत्पादन के हैं।

(८) रसायनिक उद्योग

वर्ष	६४ लिबर का सब		६५ रेयन (टन)	६६ अलकोहल (००० गैलनों में सुला हुआ) शुद्ध स्फिरिट मिश्रित स्फिरिट			६७ अलसी का तेल, पोता हुआ टाट (लिनीलियम) (००० ली० गज)	६८ प्लास्टिक के साचे (००० मोस)
	इकेकयान			इजना में जलने वाला	शुद्ध स्फिरिट	मिश्रित स्फिरिट		
	(००० सी सी)	(००० पीड)						
१९५६				६,३७६	१,१४६	१,०२६		
१९५७				२,७३६	१,७७४	१,०५४		
१९५८				३,७७६	१,३०६	१,५०१		
१९५९	७,३१८	१८२		५,२३०	१,६२०	१,०६५		
१९६०	११,१५५	३०१		५,६७६	१,५३६	१,७७२		
१९६१	१०,६८५	२१२	२,०८८	५,८०६	५,०१०	१,६६६		
१९६२	१०,३७२	२१०	३,५८८	७,७४२	५,६३२	२,१५८	१,५४६	
१९६३	१०,११८	१०४	५,३५६	७,६७६	५,२६०	२,३६८	१,५४५	
१९६४ जनवरी	१,५६०	२५	३८८	६३८	५४५	३२४	२०७	
फरवरी	६३५	२३	३५२	६२६	५७०	२३७	२१७	
मार्च	१,१५०	२१	३६६	६७६	५०५	३७२	२५६	
अप्रैल	१,०५३	२२	३६५	८८८	३७६	२७६	२६६	
मई	१,१२३	२८	४०५	७००	३२०	२४२	२४६	
जून	अप्रामा	अप्रामा	३८४	६३६	३७०	२१०	२७१	
जुलाई							अप्रामा	
अगस्त								
सितम्बर								
अक्तूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

१. औद्योगिक उत्पादन (६) सीमेंट और चीनी मिट्टी का माल

वर्ष	६६	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७
	सीमेंट	सीमेंट की चादरें, एसबेस्टस	सफेद माल	स्वच्छता के लिये बनाया गया माल	परियार का सामान	चीनी का पालिश वाले गल	लुनी आच सदन करने वाली मिट्टी की ढेंटे	थियने वाला सामान	बिजली श्रवरोपक (इन्फ्लेयर)
	(००० टन)	(००० टन)	(टन)	(टन)	(००० टन)	(००० दर्जन)	(००० टन)	(००० टन)	एन टी. एल टी (०००) (०००)
१९५६	१,५४२ ०	२५ २	—	—	—	—	१५६ ०	६१ २	—
१९५७	१,५४० १	—	—	—	—	—	७७५ २	४० ८	७४ ४ १,५२० ४
१९५८	१,५४२ ८	७६ ८	५,२७६	१,५६४	१५ ६	—	१-६६	४४ ६	६० ० २,५०० ६
१९५९	१,५४२ ४	८६ ४	३,७३२	१,६०-	२२ -	—	२० ८	२५ २	१३६ ८ २,२३९ २
१९५०	१,५४२ ४	८६ ४	६,०६०	१,७-	२६ ४	६२ ४	२३६ ४	२१ २	१७४ ० १,२७९ २
१९५१	१,५४२ ६	८६ ६	६,१६२	६४ ८	३० ०	—	२३७ ६	२७ २	२४४ ८ २,४३२ ८
१९५२	१,५४७ ६	८७ ६	६,०६०	४२२ २	३३ ६	३५६ २	२४२ ६	४५ २	३२५ २ ३,०७-०
१९५३	१,७०० ०	७५ ६	८,०१६	७२०	३३ ६	३७९ २	२२ ८	५७ ६	५४७ २ २,३०६ ४
१९५४	जनवरी ३६२ ८	७७	२५७	५६	२ ८	२२ ६	१ ८	४ ६	३६ ८ ४४ ८
	फरवरी ३५१ ६	७५	—	५०	३ २	३७ ५	१ ७	५ ३	४२ ४ ४७ ७
	मार्च ३८० ६	७०	—	१०५	२ १	४५ ६	२ ७	५ ५	४८ १ १६४ ०
	अप्रैल ३५६ ८	६३	—	१०६	३ ४	२६ ३	२ ०	७ ०	४ ८ २५४ ८
	मई ३७३ ४	६०	—	११८	३ ५	३५ ७	१ ५	५ १	५ २ २५२ ८
	जून ३७७ ४	६३	अभाव	अभाव	अभाव	अभाव	अभाव	अभाव	अभाव
	जुलाई								
	अगस्त								
	सितम्बर								
	अक्टूबर								
	नवम्बर								
	दिसम्बर								

(१०) काँच और काँच का सामान

वर्ष	७८ काच की चादरें (००० वर्ग फुट)	७६ प्रयोगशालाओं का सामान (टन)	८० बिजली की बनियाँ के लोल (लाव बतिया)	८१ काच का अन्य सामान (टन)
१९५६	८,७३६ ०	—	—	—
१९५७	५,७१६ २	—	—	—
१९५८	६,२५६ ६	१,६२०	१११ ६	६३,५१६
१९५९	३,५५१ २	१,६८०	२१ २	६४ ४२ ८
१९५०	६,५७० ०	२,१६०	२२६ ६	७२,२१६
१९५१	११,०८६ २	१,६८०	१४५ ०	६०,३२४
१९५२	६,०४३ २	१,४७६	१६६ ८	८५,१६-
१९५३	२२,७८६ ८	१,३६२	१६६ २	६७,७७६
१९५४	जनवरी २,२५३ ४	१७०	१७ ३	७,२१६
	फरवरी २,१४-४	११६	१३ २	५,२६०
	मार्च २,४०६ ७	११६	१४ ४	७ २७३
	अप्रैल १,२६७ २	११६	१३ ०	७,११६
	मई ४८० ८	६०	१६ १	७ ०-२
	जून अभाव	अभाव	अभाव	अभाव
	जुलाई			
	अगस्त			
	सितम्बर			
	अक्टूबर			
	नवम्बर			
	दिसम्बर			

१. औद्योगिक उत्पादन (१२) खाद्य और तन्माकू

वर्ष	६० [अ] गहूँ का आटा (००० टन)	६३ [ट] चाँनी (००० टन)	६४ [ड] काफ़ी (टन)	६५ [ड] चाय (लाख पाउंड)	६६ गमक (००० मन)	६७ वनस्पति तेल से बनी हुई वस्तुएँ (टन)	६८ सिगरेट (लाख)
१९४८		६२२ =	२४,०४ =	४,४१४ ०	४७,८६ =	१,२५,०६६	
१९४७		६०१ २	१६,८४ =	४,६१२ ६	४५,६००	६४,११२	१,८०,७६६
१९४८		१,०७४ २	१६,१२ =	४,६ =	६६,४२ =	१,२६,६६६	२,१०,२४४
१९४९	४१७ ६	१,००० =	२२,४२ =	४,८४ =	४४,६२ =	१,४४,४४४	२,१०,६०४
१९४०	४७७ ६	६७७ =	२०,४३ २	६,०६ ०	७१,३१ ६	१,७१,६६ ६	२,१६,२६ २
१९४१	४८०	१,११४ =	१८,०६ ६	७,३० २	७४,३७ ६	१,७२,३२ ०	२,१४,६२ =
१९४२	४१२ ४	१,४६४ ०	२१,०६ ६	६,२२ ६ =	७४, = ०	१,६०, = १ २	२,०१,१६ २
१९४३	४२६ ६	१,२६१ १	२२,४७ २	६,० = १ ६	= ३१ ६	१,६१,३४ २	१,६६,७६ ४
१९४४	वनकारी फरफरी माच कड़ुआ मूँ जूत लुआँ कास्त निउम्बर कम्बुर नवम्बर दिम्बर	३४ ४ ३६ २ १६ १ ४० ७ ३६ =	३० ६ २४ १ १४ १ ४, ४ २ ६	३, ० ४, ४ १, ० ४, ४ ४, ७	४ ० ४ ५ १ = ३ ७ ४ ७	१, = ६ ३, = ३ १ =, २ ७ १६, = ० २ २२, ७ =	१७, १ ७ १६, १ १ १६, २ ४ ३, = ८ ४ ६, १ ६
		अभाव	अभाव	अभाव	अभाव	अभाव	अभाव

[अ] वे आँकड़े केवल बड़ी आटा मिन्ना के हैं। [ड] में आँकड़े फलना साल (नवम्बर से अक्टूबर) तक के हैं और केवल गन्ने से बने वाली चाँनी के विषय में हैं। [ड] में आँकड़े शायद और पीसने के पश्चात् काफ़ा भण्डार में दे जा जाने वाली काफ़ी के विषय में हैं। [ड] में मासिक आँकड़े पचाव (काँगडा और मण्डी रिवास्त) के उत्पादन को छोड़ कर हैं।

(१३) चमड़ा उद्योग

वर्ष	१९६ जूते, परिचमी टग के (००० टाउडे)	१९० जूते, पैशा टग के (००० जैटे)	१९१ कमाने चूचड़े का कौम (०००)	१९२ वनस्पति छालों से कमाया हुआ गाम मैस का चमड़ा (०००)	१९३ चमड़े लैसा कच्चा (००० गज)
१९४१					
१९४०					
१९४८	३,०१ ६	२,०६ ६	१,० = २	१,६४ ४	
१९४६	३,४० ०	२,१० ४	४ = =	१, = ३ ८	
१९४०	३, = १ ६	४, ६ ६	४, ६ ६	१, ४ ४ ४	
१९४१	३, ६ ०	२, ० ६ ६	= ७ ६	१, ७ ६ ०	१, ६ १ =
१९४२	३, ३ ७ २	१, = ३ ०	६ ४ ० ४	१, ४ ७ ४	६ ३ ४ =
१९४३	३, ३ ० =	= ० ४ ४	७ = =	१, २ ६ = ४	६ = ६ ४
१९४४	वनकारी फरफरी माच कड़ुआ मूँ जूत लुआँ कास्त निउम्बर कम्बुर नवम्बर दिम्बर	२६ ४ ३ ७ ४ ३ ० १ १, ४ ६ १ ७ ० १ = ७	१ ६ ४ १ ७ = १ ३ = ३ १ ४ ४ ४ १ ६ ० ४ १ ६ ० ३	४ ६ ६ ६ १ ७ ६ ६ ६ ६ ४ ६ ३ ४ ७ २	= २ ३ ६ ४ २ ६ ७ = ८ ७ ४ ६ ४ १ कमात

१. औद्योगिक उत्पादन (१४) अन्य उद्योग

वर्ष	१०४ खनिज कोयला	चाय की पैठिया	१०५ प्लास्टिड (१०० वर्ग फुट)			१०६ कागज (टन)			
			व्यापारिक	छुपाई और लिफाई का	योग	लपेटने का		गते	योग
						विशेष किस्म का कागज	विशेष किस्म का कागज		
१९४६	२८,८८४	३५,४००	२३,४००	५८,८००	६४,८६६	१५,६८४	६,८२८	१०,४८८	१,०५,६६६
१९४७	३०,०००	२८,५६०	५,७३६	३४,२३६	५२,७७६	१६,८४८	५,३१६	१८,१६४	६३,०६६
१९४८	२६,८२०	४५,१०८	८,६२८	५३,७५६	५०,३७६	१७,३८८	१२,६१२	३७,०००	६७,६०८
१९४९	३१,५४२	३८,४००	६,२४०	४७,६४०	५६,४८४	१२,८७६	११,२०४	२८,६२६	१,०२,२००
१९५०	३१,६६२	४२,३७६	८,८४४	५०,२२०	७०,१४२	१४,६१६	५,१६६	२८,६४८	१,०८,६१२
१९५१	३४,३०८	६०,६४८	१०,२००	७०,८४८	७८,२६०	२५,४८८	३,१२०	२४,०४८	१,२२,६१६
१९५२	३६,२२८	७८,२२८	१२,३१२	९०,५४०	९१,४०८	२१,४४०	८,८२०	२४,७२०	१,३७,५०८
१९५३	४५,८४४	४६,५००	११,२७६	६०,८७६	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	१,६८,२१६
१९५४	जनवरी २,६०६	४,२६३	८६२	५,६२५	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	१०,३२८
	फरवरी ३,०५६	४,७७२	८८६	५,६६१	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	६,६८६
	मार्च ३,०७१	३,७४२	६३२	४,४०२	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	१२,४७३
	अप्रैल ३,०६७	३,७७४	६६६	४,६३३	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	१३,७६४
	मई २,६७७	३,६२६	८५४	४,४६४	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	१०,२२४
	जून अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	१२,०१७
	जुलाई अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात
	सितम्बर अक्तूबर नवम्बर दिसम्बर	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात

(१४) अन्य उद्योग (शिपांक) परिवहन

वर्ष	१०७ मोटर गाड़िया (सख्वा)			१०८ साइकिलें	
	कार	ट्रक	योग	पुरी तैयार (मूल्य १०० रुपये)	
				हिस्से	हिस्से
१९४६				४२,६८४ (अ)	६६,६६६ (अ)
१९४७				३६,८६० (अ)	१,७३८८८ (अ)
१९४८				६२,८६६	१,११२८८ (अ)
१९४९				८०,०२८	१,७६६४४ (अ)
१९५०	६,६७२	१५,२३२	२१,९०४	१,०६,१५२	६,४५२२२ (अ)
१९५१	३,५८८	८,०१६	११,६०४	१,०६,१५२	६,४५०४४ (अ)
१९५२	१२,३८४	६,८८८	१९,२७२	१,०६,१५२	६,६६४४४ (अ)
१९५३	१,६४८	८,६४८	१०,२९६	१,०६,१५२	६,६६४४४ (अ)
१९५४	जनवरी २७७	६६६	८,९३३	१,०६,१५२	१०,१६४००
	फरवरी अज्ञात	अज्ञात	१,२७३	१८,६००	८५७००
	मार्च ५००	अज्ञात	१,२३६	२२,४६६	७६६००
	अप्रैल अज्ञात	अज्ञात	१,२६६	२७,८६४	८६१५६
	मई अज्ञात	अज्ञात	८२६	२६,३०४	६६७७६
	जून अज्ञात	अज्ञात	८१६	३३,०७३	६४४११
	जुलाई अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	१,०४३३३
	सितम्बर अक्तूबर नवम्बर दिसम्बर	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात

२. भारत का विदेशी व्यापार

(क) व्यापार-सन्तुलन का लेखा

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(लाल रूपाय में)

व्यापारी माल

१९५८-५९	१९५९-६०	१९६०-६१	१९६१-६२	१९६२-६३	१९६३-६४	१९६४-६५	१९६५-६६	१९६६-६७
---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------

(अप्रैल महीने)

(क) भारतीय व्यापारी माल का निर्यात

समुद्र तथा वायु द्वारा
स्थल द्वारा

५,११,०४	५,७२,०७	५,७८,६८	७,०१,७५*	५,५३,७७	५,१५,६९	७७,८८	६८,०५
३०,१९(अ)	२७,८८	१७,८२	२७,१४*	२८,८४	७,५६	७८	१,०१
योग	५,११,४३	५,६६,९५	५,७६,७९	७,२८,८९*	५,७२,६१	७८,६६	६९,०६

(ख) भारतीय व्यापारी माल का निर्यात

(वित्त मन्त्र तथा वायु द्वारा)

१ कच्चा, पेट और तन्हाऊ
२ कच्चा माल तथा उपन और मुख्यतः अनिमित्त माल
३ पूर्णतः अथवा मुख्यतः निर्मित माल

६२,३०	१,१५,८८	१,३५,८२	१,५८,२५	१,४६,३०	१,८१,१३	१७,५७	१५,२९
६७,८७	१,०५,२६	१,२५,७७	१,३६,६८	१,४६,२७	१,०६,८६	२१,३७	१५,२३
२,१९,०६	२,४६,७५	२,१५,७८	५,००,०९	२,६०,०८	२,५६,२५	३८,३५	३७,६७
योग [निसर्ग (५) जीवित पशु और (५) बाक द्वारा भेजी गई वस्तु भी सम्मिलित हैं]	५,२१,०४	५,७२,०७	५,७८,६८	७,०१,७५	५,५३,७७	७७,८८	६८,०५

(ग) पुनरनिर्यात (सक्रमण व्यापार द्वोडर)

७२६	६,०७	५,५६	५,०५	५,०४	५,७६	१,१७	१,०७
-----	------	------	------	------	------	------	------

(घ) कुल निर्यात

५,५८,७२	५,०६,०२	६,०१,३५	७,३४,६५	५,७७,६५	५,२७,६५	७६,८३	७०,९३
---------	---------	---------	---------	---------	---------	-------	-------

(ङ) आयात

समुद्र तथा वायु द्वारा
स्थल द्वारा

५,५७,१७	५,६५,३५	५,८१,१७	८,७५,६५	६,३६,०७*	५,५१,०२*	१,१५,५७	६६,६५
८५,०० (अ)	३३,७१	४२,७६	८०,५५	२५,६६	२२,६६	१,३७	२,८३
योग	६,४२,१७	६,२२,०५	६,२३,९३	९,५६,२०	६,५६,७३	१,१६,९४	६९,४८
सक्रमण व्यापार बाटकर	३,१५	६०	८०	१६	१२	३	८

(च) शुद्ध आयात

६,५७,१७	६,२४,६१	६,२३,३६	९,५५,६६	६,६४,०५*	५,७३,८६*	१,१५,६१	६६,५०
---------	---------	---------	---------	----------	----------	---------	-------

(छ) आयात

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

१ कच्चा, पेट और तन्हाऊ
२ कच्चा माल और उपन तथा मुख्यतः निर्मित वस्तुएँ
३ पूर्णतः अथवा मुख्यतः निर्मित वस्तुएँ

१,२७,१२	१,५६,६५	१,७०,६२	२,६७,०७	१,७५,६३	६७,७६	३२,०२	६,५३
१,२७,५७	१,५५,२७	१,६८,८१	२,५६,०८	१,७६,१६	१,६६,५५	३२,३६	५,८४
२,६७,६०	२,८८,६३	२,६६,५५	६,५१,५६	२,७६,३७	२,७६,०३	५७,०१	५,५८
योग [निसर्ग (५) जीवित पशु और (५) बाक द्वारा भेजी गई वस्तुएँ भी सम्मिलित हैं]	५,५७,१७	५,६५,३५	५,८१,१७	८,७५,६५	६,३६,०७	१,१६,९४	६९,४८

(ज) व्यापारी माल का व्यापार सन्तुलन

-१,८२,५५	-१,१८,८६	-७२,०१	-२,२१,६५	-८६,३६	-४८,६२	-२६,०८	-२६,७७
----------	----------	--------	----------	--------	--------	--------	--------

*अन्य देशों तथा आगे के क्रम आयात का मूल्य भी सम्मिलित है।

(अ) केवल पाकिस्तान के लिये।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की प्रमुख वस्तुएँ

(समुद्र, वायु तथा स्थल मार्गों द्वारा)

(१) चाय, पेय और तम्बाकू

(मूल्य लाख रुपये में)

वर्ष	महालियाँ	प्याज*	काजू की गिरी	इलायची	गोल मिर्च	चाय	तम्बाकू,		
							निर्मित	निर्मित	
	(००० हंटरवेट)	(००० हंटरवेट)	(००० हंटरवेट)	(००० हंटरवेट)	(००० हंटरवेट)	(लाख पौंड)	(लाख पौंड)	(००० पौंड)	
१९५०-५१	परिमाणु	३३५	३०६	३६६	१८	२४१	४४,३०१	६,६०	४,६७६*
	मूल्य	१,४७	५०	४,६१	७३	२,४७	६६,२४१	६,४६	५,६८
१९४९-५०	परिमाणु	३२१	७२५	३७६	१६	३३३	४४,५०	६,२०	४,२६७*
	मूल्य	१,६१	१,२६	५,६१	१,२५	१४,५०	७२,३१	१२,६४	४,१०
१९५०-५१	परिमाणु	३८७	१,१५६	५०८	३२	३०८	४४,२०	१०,३०	११,८२८
	मूल्य	२,४६	१,१५	८,५५	१,४८	२०,४०	८०,४२	१४,६१	४,३५
१९५१-५२	परिमाणु	४३५	६२५	४२६	१४	२६८	४२,६०	११,२०	१२,६५६
	मूल्य	३,२८	१,०७	६,०३	१,६४	२३,२२	६२,८६	१६,१४	६,३६
१९५२-५३	परिमाणु	४८८	६६४	५५८	२०	२४८	४२,७०	८,००	५,१४२
	मूल्य	३,८७	१,१३	१२,६८	१,६६	१३,०६	८०,८८	१३,०२	२,५४
१९५३-५४	परिमाणु	५३६	४६६	२७	१८	२४८	४७,१०	६,५०	२,६७८
	मूल्य	४,१६	६८	१,०,६३	१,३४	१२,७२	१,०२,१४	१०,२२	१,०४
१९५४-५५ :									
अप्रैल	परिमाणु	६	१२	३१	१	३३	६०	२०	३६
	मूल्य	८	१	५७	६	१,२४	२,३६	२७	१
१९५३-५४ :									
अप्रैल	परिमाणु	२३	५०	४७	१	२४	२,००	६०	१४५
	मूल्य	२१	६	१,०१	७	१,६८	३,६२	८६	५

* केवल समुद्र तथा वायु द्वारा ।

(ग) विचारार्थीन ।

‡ अफगानिस्तान और ईरान को स्थल मार्ग द्वारा भेजे गये, माल के आंकड़ों को छोड़कर

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएं

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(२) कच्चा माल तथा उपज और मुख्य अर्धनिर्मित माल

(मूल्य लाख रुपये में)

वर्ष	विवरण	कच्चा माल (००० टन)	उपज (००० टन)	अर्धनिर्मित माल (००० टन)	कच्चा माल (००० टन)	खनिज (००० टन)	पुराना लोहा व इस्पात (००० टन)	खनिज लोहा (००० टन)	अन्य (००० टन)	द्वितीय-कारखानों के तिले (००० टन)	
१९४०-४१	परिमाण्य मूल्य	१,१३२ ४,५८	३४० ६,६४	४६१ ८,६६	४२ ४६	२०४ ४,६८	नाखद नाखद	३०६ ३,८१	६१२ ५५	३१ ५७	
१९४६-४७	परिमाण्य मूल्य	२,३२३ ७,६३	२६८ ६,८५	४६६ ८,०६	२१ २१	२५८ ६,५६	०२ ०३१	४ १	७३६ ५,८५	८४१ ६०	३७ ६६
१९४०-४१	परिमाण्य मूल्य	६६४ ३,४४	४०७ १०,००	६६२ ११,८६	६८ ६६	२४८ ८,७४	२ ४	८५ २२	८२१ ८,०१	८२१ १,०३	४६ १,१६
१९४१-४२	परिमाण्य मूल्य	२,००१ ६,५५	४०८ १३,२१	७३४ १४,८७	६२ ६२	२२० ७,६२	४३ ७०	२८० १,००	१,१२६ १५,६६	८६७ १,१३	४६ ९,२८
१९४२-४३	परिमाण्य मूल्य	२,६६८ १०,०३	२८४ ६,०१	६८८ ७,६१	१ १	२२६ ५,५४	४७६ १०,२३	८११ ३,७१	१,४४० २१,७६	२६६ ४८	७२ ८,२७
१९४३-४४	परिमाण्य मूल्य	१,६१७ ६,८८	२५० ७,६५	५३८ ६,७६	..	२७७ ६,०६	२५० ४,६७	१,२०० ५,५३	१,५६८ २४,२३	६६७ ६२	६६ २,०४
१९४४-४५	परिमाण्य मूल्य	१३१ ५५	१४ ४०	२७ ३७	..	२३ ७२	७ २२	४६ १८	७६ ६३	३६ १	६ ३६
१९४३-४४	परिमाण्य मूल्य	१७७ ६४	३१ ७४	४३ ४४	..	१८ ५३	५६ १,६६	८२ ३७	१४१ १,६३	२६ २	७ २२

(ग) विभागीय।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएँ

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(२) कच्चा माल तथा उपज और मुख्यतः अनिमित्त माल (गत पृष्ठ से आगे)

(मुख्य लाल सपथों में)

वर्ष	वृंगफली का तेल (००० गैलन)	अरखी का तेल (००० गैलन)	अलसी का तेल (००० गैलन)	वृंगफली (००० टन)	अरखी का बीज (००० टन)	अलसी (००० टन)	रुई, कच्ची (००० टन)	रुई, रदी (००० टन)	पट्टा, कच्चा (००० टन)	ऊन, कच्ची (००० टन)
१९४८-४९	८,६५१*	३,००६	२,२२१	३८	...	२५	७३	१,०१७	६६५	८,६५८
	६,७०	२,१८	१,५८	३,१३	...	१,३६	१५,०१	५,१५	३,३६	१,०६
१९४९-५०	७,०४६*	१,१३८	१,७७३	१२६	५	७२	५८	१,५१३	३४२	२७,३६३
	५,४४	६६	१,२८	६,०४	२८	४,५६	१०,६१	८,२२	१,७५	३,७१
१९५०-५१	१६,६६१	५,८६८	१,३५६	३८	७६	६८	१५	१,३०७	२७१	२५,३७१
	१६,७४	४,२५	१,१०	३,५७	५,६२	५,६७	४,६४	१२,४१	१,२८	७,८७
१९५१-५२	५,११६	५,५२२	६,०७७	२०	१	७	२३	६२३	४१७	१८,२६५
	४,३२	६,५७	५,६६	२,३५	१६	७०	१३,६८	७,३५	२,४८	४,६०
१९५२-५३	१६,१६०	८,६२७**	६,२२२*	१३	४	नगण्य	७१	१,२५६	३४२	३७,६६६
	१०,४७	७,७२	५,८२	१,४०	३८	०,५३	१६,३३	६,६४	१,४६	८,४१
१९५३-५४	२६०	४,५६५**	६३८**	५	३५	१,३६६	३५५	२०,६६१
	२५	३,१६	५६	६३	६,४०	६,८७	१,१४	५,८७
१९५४-५५ :										
अप्रैल	परिमाण	...	४७३	५१	५४	२	८५	३१
	मूल्य	...	२८	३	५,३	६८	७०	६
१९५३-५४ :										
अप्रैल	परिमाण	२६५	१,७०१	२८८	३	६	६१	२२
	मूल्य	१८	१,१४	१७	३८	१,६३	७३	७

* केवल समुद्र मार्ग द्वारा ।

** अपूर्ण ।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ब) निर्यात की मुख्य वस्तुएँ

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(३) भारत जयवा मुख्यतः निर्यात मात्र

(दूसरे साल वर्षों में)

वर्ष	जयवा हुआ वस्तु वस्तु	वस्तु	वस्तु	वस्तु	वस्तु	वस्तु	वस्तु	वस्तु	वस्तु	वस्तु	वस्तु	वस्तु
	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०
	(००० हजार रु०)	रु०	(००० रु०)	(लाख मज)	(लाख मज)	(रु०)	(००० रु०)	(००० रु०)	(००० रु०)	(००० रु०)	(००० रु०)	(००० रु०)
१९४७-४८	निर्यात	१२६	१०४	७४००		३२,९०*	४३७	४३५	२४,४००	२,३३४	२६६	२६६
	मूल्य	४,६६	७,२०	१२६	६५	९६,४६*	५१	६१,४७	२० ७२	५,९६	२,९१	४,४७
१९४८-४९	निर्यात	२५१	१६२*	६७-३५(क)		७० ६०	४३५	३०६	१२,२३०	१०,४६४	१,४४४	१,४४४
	मूल्य	२५१	११०*	१० ४०	७६	९६ ६५	२१	६३ २२	५७,२५	१,४६	१,९१	७,२१
१९४९-५०	निर्यात	२५१	१४०(क)७५	०६१		६०० १०० १०	३५१	३६१	६,६६०	२४,०६१	२,४६०	२,४६०
	मूल्य	१२,००	१२,३३	१० २०	६६	१० ००	१ १२,१७	१ ७१	५५,३६	५२,६१	६७	५,६१
१९५०-५१	निर्यात	३६१	१२४(क)	६ १२२(क)		४००(क) ३-००	४७३	२०७	२,४३४	२३,५६१	३,१३६	३,१३६
	मूल्य	१३,६३	११,५१	१ ३७ १,००	६,७०	४२,६५	२,४६	१,९५,२६	३,२४,५०	१,३७	१,००	२,०६
१९५१-५२	निर्यात	३३३	२५३*	१०,०३३		५,५०	५६ ५०(क)	३७३(क)	३०४	३,३७५	७,३३३	१,३०२
	मूल्य	६,२२	१०,०३	५,५३	६६	० ७४	१३,३०	३,१५	६१,९६	६३,००	५२	९,००
१९५२-५३	निर्यात	३६५	१६०	२२,५०५		६,३०	७०,६०(क)	३३४	३०	३,३७३(क)	२,६६७	२,५३३
	मूल्य	१०,०३	१३,६९	५,७६	१,२३	६ ६५	५३,५५	३,२६	४०,०६	६६,५०	४६	३,३६
१९५३-५४	निर्यात	३४*	७*	५६		३०	५,१०	३४	३४	१५५	२३१	६३
	मूल्य	४०*	६३*	१	६	३५	५,१०	२३	४,००	५,००	३	३२
१९५३-५४	निर्यात	०७*	१२*	२,५०५		५०	५,३०	२३	२६	१२३	७२५	६७
	मूल्य	००*	६६*	५३	६	६०	३,६७	३५	० ६२	४,६२	२	३०

* क्षेत्र समुद्र तथा वायु द्वारा।

(क) अर्द्ध।

** इनमें अन्तर्निस्सृत और रतल की स्थल मार्ग द्वारा भेजा गया मात्र शामिल नहीं है।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(क) निर्यात की मुख्य वस्तुयें

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(३) पुर्यात अथवा मुह्यत निमित्त माल (गत पृष्ठ से आगे)

(मूल्य लाल वपयो में)

वर्ष	पैराफीन मोम	तैयार कस्त्र (होमियरी और जूट तथा जूतों के अतिरिक्त)	सिलस रीन*	इसबगोल की भूसी**	कच्चा लोहा	धातु के बर्तन तथा कालरी	यव उपकरण आदि	काच तथा मिट्टी का सामान (सीने की मशीनों सहित)	मशीनों और कारखानों का सामान (सीने की मशीनों सहित)	कागज गोंद, गन्ना तथा लिहने की सामग्री	खजूर वस्तुयें तथा उनसे बनी वस्तुयें के अतिरिक्त)	धातुयें (लोहा, इस्पात तथा उनसे बनी वस्तुयें के अतिरिक्त)	
	(००० टन)	(००० अतिरिक्त)	(००० इंडरवेट)	(००० इंडरवेट)	(००० टन)								
१९४८-४९	परिमाण्य मूल्य	१० १,१३	७४	...	४५	६२	५४	६४	२,३२	२६	४६	१,६७	६८
१९४९-५०	परिमाण्य मूल्य	१६ १,५८	५१		७१	६६	६१	७४	३२	६६	३१	२६	५६
१९५०-५१	परिमाण्य मूल्य	२० १,२६	१,१५		५४	८६	७८	६६	२६	४७	३३	१,६५	१,२४
१९५१-५२	परिमाण्य मूल्य	३२ २,८२	८२		२०	४१	१,२१	१,४७	४३	६५	१,१६	१,०८	१,४१
१९५२-५३	परिमाण्य मूल्य	१६ १,३३	१,६५	६०	११	४१	१,२०	१,५५	३५	१,२७	८७	१,४२	२,६७
१९५३-५४	परिमाण्य मूल्य	२४ १,५५	१,५६	६६	१७	५५	५३	१,६१	२६	६९	८६	१,७४	१,७७
१९५४-५५	परिमाण्य मूल्य	२ १३	७	२	३	४	७	८	२	६	८	६	१०
१९५३-५४	परिमाण्य मूल्य	१ ७	६	१०	५	६	१२	२	२	५	४	१३	२६

* अग्रे १९५२ से यह वस्तु व्यापार लक्षे में अलग दिखाई गई है।

** अग्रे १९५३ से यह वस्तु व्यापार लक्षे में अलग दिखाई गई है।

२. भारत का विदेशी व्यापार (ग) आयात की मुख्य वस्तुएं[†] (समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(मुख्य लाख रुपयों में)

वर्ष	मगोन के पट्टे	रमानामिक पदार्थ	तरलियों के राश	घन व तरकारादा	कनाब, दाने और फाटा*	घातु के वर्णन	मज, उपकरणों के पट्टे सहित)	हथ प्रकरण की मशीनें (नरेशन तथा तलमन्थी बनी वस्तुएं)	सोहा, रस्मान तथा तलमन्थी	खजुर (लोहा, रस्मान तथा उनसे बनी वस्तुओं के अतिरिक्त)
१९५०-५१	२,१२	२०,५७	१२,३४	=,२५*	१,०१,७०	५,६६	१५,८२	=१,५६	१२,३१	२२,३३
१९५१-५२	१,०१	७,७९	७,६६	१०,५=	१,३३,८=	६,१४	२०,७५	१,०५,५१	१३,७०	१८,१८
१९५२-५३	१,१६	८,३२	१३,६=	१३,५७	=०,७६	५,५७	१७,७८	६३,००	१६,००	२७,८४
१९५३-५४	२,०७	१६,६०	१४,२७	१३,६०	२,३०,३०	६,२४	२०,५३	१,०५,३१	२१,६७	३,९७
१९५४-५५	३,३१	१२,६=	७,५३	१३,७४	१,५६,७३	५,०५	२२,२२	=७,८६	२३,७१	१६,३७
१९५५-५६	३,०=	१२,६८	१५,५५	१३,७=	७२,५३	५,४०	२३,५६	८५,८४	२३,५७	१४,५१
१९५६-५७										
अग्रिम	७	१,५०	१,२१	७२	४	४४	१,६७	६,५५	१,=१	१,५५
१९५३-५४										
अग्रिम	५	१,०१	५४	६७	१५,२६	३५	२,१८	=,१३	१,६२	६०

† इसमें कनाब, दाल तथा फाटे के अन्य कानाब की वस्तुएं भी सम्मिलित हैं।

* इसमें कक्यानिस्मान तथा रस्मान द्वारा स्थान मार्ग से हुए कानाब के आंकड़े सम्मिलित नहीं हैं।

वर्ष	हाजम	रूब, कच्ची	मज, कच्ची	नक्की रेशम या मज	मोटर कानि मशीनों के भागों	मोटर कानि मशीनों के भागों (टैंकरी और मशीनें)	कौयकिया और कानि	मृत्ति कण्डे	रूब कच्ची कानि और मज	कमी माल की वस्तुएं	तेल मशरार की वस्तुएं	जूट, कच्चा
१९५०-५१	१३,३७	६५,४=	३,१=	२२,=२	=,६२	७,१४	=,१२*	६,३०	५,५०	३,२०	७,०=	७१,२५
१९५१-५२	७,७४	६३,७=	३,०३	१०,५६	५,३	३,१=	=,०५	१०,७०	५,७७	३,६५	७,३०	२६,३७
१९५२-५३	६,५०	१,००,७७	५,६२	१५,७१	२,६६	३,२४	१०,५२	३,३१	३०	३३	६,०२	२७,५७
१९५३-५४	१३,१६	१,३७,१=	२,६०	१७,२८	२,=७	५,७८	११,६०	२,३७	१,=२	४५	१०,८४	६७,०७
१९५४-५५	१३,२२	७२,१७	६६	७,=८	२,=	२,६६	११,५६	१,२५	२,०६	६२	५,७१	१६,५=
१९५५-५६	११,२५	५२,७१	१,६४	१५,०४	२,१५	३,=२	१२,५५	१,०२	१,३१	८५	६,५२	२५,३२
१९५६-५७												
अग्रिम	=४	७,६२	३	६=	२३	२३	६७	८	११	५	५६	८५
१९५३-५४												
अग्रिम	६३	७,३=	१२	१,५६	११	३४	१,१२	६	५	५	७५	३५

* इसमें कक्यानिस्मान तथा रस्मान द्वारा स्थान मार्ग से हुए कानाब के आंकड़े सम्मिलित नहीं हैं।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार-यूरोप

(मूल्य लाख रुपये में)

वर्ष	ब्रिटेन		फ्रांस		बेल्जियम		जर्मनी		नीदरलैंड	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	१,५२,६६	१,०३,२६	३,०१	७,३५	७,१०	५,८६	२,२८	२,६१	५,४५	७,२६
१९४९-५०	१,५३,६६	१,१८,२४	३,८१	५,४२	७,६२	६,४३	६,४२	६,५१	४,६६	७,३७
१९५०-५१	१,३१,४०	१,३६,८२	१,१,०७	६,०१	६,०४	६,०१	११,०४	१०,६३	६,६८	१०,१६
१९५१-५२	१,५८,१३	१,८६,६६	१०,७२	११,३७	६,५२	८,३६	२८,३४	६,३८	१०,६२	७,६२
१९५२-५३	१,३८,८५	१,२३,२६	१३,५५	५,६६	६,६०	६,६८	२२,६४	१२,४८	१०,८०	१०,३६
१९५३-५४	१,४२,७१	१,४६,६६	६,६३	५,३२	७,६७	४,५७	३१,१४	११,५६	११,३०	६,८६
१९५४-५५ :										
अप्रैल	१३,०६	६३२	६१	२६	४५	२२	२,६६	६३	१,१२	४६
१९५३-५४ :										
अप्रैल	१२,३६	८,५६	१,०३	५०	३२	४१	२,११	७५	७२	५५

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

वर्ष	आस्ट्रिया		हंगरी		पोलैंड		चेकोस्लोवाकिया		योगोस्लोविया		तुर्की	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	८०	३४	१२	२५	८	३२	२,०८	२,१६	१०	१०	६	६२
१९४९-५०	५६	५३	६	२३	२६	६८	२,८१	१,४६	६१	४४	१४	२,३१
१९५०-५१	१,६४	४३	१०	३	३०	४०	२,७७	१,०८	१२	६	३	२,२६
१९५१-५२	२,४७	१,०१	३२	..	३४	२६	२,८१	१,३६	१४	२६	१३	२,५५
१९५२-५३	१,८६	४२	१६	४	२६	४	१,३५	१,१८	६	११	०,८३	४,६५
१९५३-५४	२,५१	५७	१०	२	१६	१५	१,१४	३,०६	७	१	०,३१	२,५८
१९५४-५५ :												
अप्रैल	२६	नगण्य	१	नगण्य	१	..	१०	७	१	...	०,१	५
१९५३-५४ :												
अप्रैल	१७	७	०,४६	१	१	१	१२	१३	१	०,३६	नगण्य	४

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

भारत का विदेशी व्यापार

(मनुष्य तथा वस्तु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार-यूरोप (एत आदिवा स बन्)

(रूप लाख रुपयों में)

वर्ष	निर्यात		रजनी		स्वीटन		भारत		निर्मात		रुप	
	रुपय	मिनी	रुपय	मिनी	रुपय	मिनी	रुपय	मिनी	रुपय	मिनी	रुपय	मिनी
१९४८-४९	२,३६	१,२७	१,२३	६,५५	६,००	२,११	४,३५	८६	१,३८	१६	१,७६	५,३६
१९४९-५०	७,५५	७,५५	१,५३	५,६६	६,००	२,३०	२,५४	१,०६	१,१७	२०	१,६८	३,७४
१९५०-५१	७,६१	२,३३	१,६६	१५,००	५,२०	२,६८	२,३३	१,३३	१,५६	३३	३,३७	३,६७
१९५१-५२	६,६५	२,०६	१,७,६६	७,०६	७,५७	२,५५	१,५८	१,६०	३,१५	१,०६	१,३८	६,६२
१९५२-५३	६,६५	६१	१२,०१	१०,६१	५,६६	१,३३	१,७८	८८	१,००	२५	२५	८५
१९५३-५४	६,१७	८२	२२,०७	५,१२	६,१८	१,५३	२,६२	५१	१,००	१२	६०	१,१५
१९५४-५५												
अप्रैल	५१	०	१,६३	३६	४८	१२	२१	५	११	१	१	७४
१९५५-५६												
अप्रैल	१,३५	५	००५	६२	५१	१५	१३	२	१०	१	१	

मिनी में पुनर्निर्देश भी सम्मिलित हैं।

एशिया और अफ्रीका

वर्ष	भारत		इंग्लैंड		भारत		एशिया		अफ्रीका		मिश्र	
	रुपय	मिनी	रुपय	मिनी	रुपय	मिनी	रुपय	मिनी	रुपय	मिनी	रुपय	मिनी
१९४८-४९	१,७७	२,००	१,२७	१,७६	२०,५०	२,१४*	१,०७,१७	७६,६६	१,५०१	५,५५	२१,६०	६,७२
१९४९-५०	१,५६	७,११	३,०३	५,०२	२१,००	५,०२	५५,०५	५६,३०	१,५५२	६,०३	५०,२५	७,६५
१९५०-५१	१,१६	६,७६	५,२०	२,०६	२७,१५	५,६८	५१,६५	२०,६०	५,५३	६,०६	२२,८७	५,०७
१९५१-५२	८६	६,३०	३,६१	३,१०	०,१३	५,१७	८७,५०	५५,२६	२,६,६६	१२,१०	५०,५६	६,५६
१९५२-५३	५६	६,२२	२,०५	७,१२	५,५०	७,०७	५१,००	२१,१५	२५,१२	११,३६	१५,२२	५,६६
१९५३-५४	२२	६,०७	५,५६	२,५४	२,०५	१,५३	१६,३०	८,०५	२०,१७	१०,७६	२७,६६	३,५३
१९५४-५५ :												
अप्रैल	१	५०	१६	१५	५५	१६	१,०५	६७	२,२७	६५	२,६८	११
१९५५-५६ :												
अप्रैल	२	१,५६	६	१७	५	२	६०	३८	३,५५	८०	३,१७	५२

मिनी में पुनर्निर्देश भी सम्मिलित हैं।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार—एशिया और अफ्रीका (गन ताटिका से अग्रे)

(मूल्य लाख रुपये में)

वर्ष	मोजाम्बिक		लका		बर्मा		मलाया संघ, (सिंगापुर सहित)		भारतखंड		जापान	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	२,४७	८७	२,७३	१२,३१	२६,२५	१०,५६	९,९०	५,३४	८,५३	२,३७	६,३८	४,५९
१९४९-५०	३,००	६२	२,७३	१६,८२	१४,१७	१४,६३	१४,४८	१७,९८	१२,२४	४,१९	२२,३८	५,८७
१९५०-५१	४,४४	५२	४,५३	१९,६८	१८,८०	२२,४४	१६,६६	३६,२०	८,१५	४,८५	१०,११	१०,२८
१९५१-५२	३,४२	९२	५,६०	१६,८१	२३,३५	१९,७९	२२,०९	१५,८१	११,६४	८,७६	२४,६५	१४,८१
१९५२-५३	५,९१	९४	४,१९	२०,०८	२६,४७	२२,३८	१४,८२	१८,८६	७,७२	४,१९	१५,८२	३१,९९
१९५३-५४	४,४८	७०	५,०८	१८,१२	१७,५५	२१,०९	२०,४५	१४,२१	४५	३,६२	१३,०६	२३,६०
१९५४-५५												
अप्रैल	२४	४	६५	५४	३२	१,४९	२,०२	६६	०,२७	३०	७४	१,१८
१९५३-५२ :												
अप्रैल	६२	६	२८	१,०६	१,९१	१,३९	१,११	१,१०	१	३०	१,२७	२,६५

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

अमेरिका और आस्ट्रेलिया

वर्ष	राज्यक राष्ट्र अमेरिका		कनाडा		अर्जेन्टिना		आस्ट्रेलिया	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	१,०९,१३	७०,६८	१०,६६	८,६९	१२,८८	१६,१८	३०,०३	२०,६५
१९४९-५०	९५,४१	८१,५३	२३,९३	११,०६	८,९९	७,७८	४७,७५	२६,३९
१९५०-५१	१,१७,८७	१,१५,३८	२१,०२	१२,७९	५	१०,६५	३३,४४	३०,४१
१९५१-५२	२,८८,७०	१,३२,३६	१८,८२	१६,२९	७९	१७,६३	१७,६१	४७,६३
१९५२-५३	१,८१,४१	१,१२,७५	२६,३१	१२,८४	४	६,८३	१२,७३	१६,९८
१९५३-५४	७९,२५	९०,४२	१४,१०	१३,०९	२	१६,५७	२५,९९	१७,५३
१९५४-५५ :								
अप्रैल	६,५०	६,१०	३५	१,२४	नगण्य	४१	४७	१,७६
१९५३-५४								
अप्रैल	१२,७१	८,७०	१,५०	१,३३	...	६१	२,८९	१,०५

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

३. देश में वस्तुओं

वर्ग	बाजार	इकाई	सितम्बर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			₹० आ० पा०	₹० आ० पा०	₹० आ० पा०	₹० आ० पा०	₹० आ० पा०
खाद्य पदार्थ							
चावल							
(१) साधारण (न)	कलकत्ता	मन	१६ १२०	१६ १२०	१६ १२०	१६ १२०	१६ १२०
(२) लाल	पटना	"	२४ ००	१६ ००	१७ ००	१७ ००	१७ ००
(३) अनगढ़ा (उ)	बिजयवाड़ा	"	१४ ६२	१४ ६३	१४ ६२	१४ ६३	१४ ६३
गेहूँ							
(१) साधारण	बलपुर	"	२० ००	१८ १३०	१८ ६०	१७ ६०	१५ १२०
(२) "	अमृतसर	"	१२ १३०	१६ ००	१६ १२०	१६ १४०	१८ ११०
(३) "	हापुड	"	१५ १२०	१७ ४०	१६ ४०	१५ ५०	१६ ००
ज्वार							
(१) साधारण	अमरावती	"	अप्राप्त	१० १००	१० २०	६ १००	१० २०
बाजरा							
(१) साधारण	दौदरावाग शहर	२४० पींड	३६ ००	३४ १३०	३२ १२०	२८ ८०	२७ ००
चना							
(१) देशी	पटना	मन	१७ ००	१५ ००	१५ ००	१३ ००	१२ ८०
(२) "	हापुड	"	१५ १००	१४ ८०	१२ ८०	११ १००	१३ ००
नाल							
(१) साधारण	"	"	१२ १४०	१२ ००	१० ४०	६ १२०	१० १२०
चाय							
(१) आंतरिक उपभोग के लिए	कलकत्ता	पींड	१ ७ ५	१ १३ २	१ ६ ११	१ १२ ६	२ १०
(२) निर्यात —							
(क) निम्न मध्यम ब्रीक पीको	"	"	१ ११०	अप्राप्त	२ १६	अप्राप्त	अप्राप्त
(ख) मध्यम ब्रीक पीको	"	"	१ १२०	अप्राप्त	२ २६	अप्राप्त	अप्राप्त
काफी							
(१) प्लाण्टेशन पब्लिक (गोला) मगलौर/कोयंबटूर* इंडरवेन			२५३ ००	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२३२ ८०
(२) देशी चयनी	"	"	अप्राप्त	१७३ ८०	१६६ ००	१६० ००	१४७ ८०
चीनी (क)							
(१) डी २८	बालपुर	मन	०८ १५ ४	३० ० ४	३० ६ ७	३० ५ ३	३३ १४ ४
(२) डी २७	"	"	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
(३) ई २७	"	"	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
गुड़							
(१) खाने के लिये	अहमदनगर	"	अप्राप्त	१६ ८०	१८ ००	१६ ००	१६ ००
(२) "	मुजफ्फरनगर	"	१६ ८०	१५ १४०	१५ १०६	१६ ६०	२१ ११०

(न) निर्यात मूल्य (उ) उचित मूल्य

मन=८२—०/७ पींड।

(क) कारखाने से चलते समय का मूल्य।

धयाल मन=८२—२/१५ पींड।

* प्रतिवर्ष जनवरी से जून तक मगलौर बाजार के मुख्य और जूलाद से सितम्बर तक कोयंबटूर बाजार के मुख्य गिये जाते हैं।

† इस तालिका में समस्त मात्र प्रत्येक मास के दूसरे सप्ताह के दिये गये हैं।

के भाव : १९५४*

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
संख्या०पा०	संख्या०पा०	संख्या०पा०	संख्या०पा०	संख्या०पा०			
१६-१२-०	१६-१२-०	१६-१२-०	१७- ८-०	१७-१२-०			
१७- ०-०	१४- ०-०	१४- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०			
१४- ६-३	१४- ६-३	१४- ६-३	१५- ६-८	१६- ५-४			
१४- ६-०	१४- ०-०	अप्राप्त	१३- ८-०	१३- ४-०			
१४- ०-६	१०- ०-०	१०-१४-०	१२- ६-०	१३-१३-०			
१३- ८-०	११-१२-०	१२- ४-०	१२- २-०	१२- ०-०			
१०- २-०	६- ०-०	६- ४-०	६- ८-०	८- ८-०			
२३-१२-०	२६- ६-०	२७- ०-०	२६- ४-०	२६- ०-०			
१२- ८-०	११- ०-०	१०- ८-०	११- ०-०	१०- ८-०			
१२- ४-०	१०- ४-०	१०- ०-०	६- ८-०	१०- ०-०			
१०- ५-०	८- २-०	७-१५-०	७- ४-०	८- २-०			
१-१२-८	अप्राप्त	२-०-११	२- २-७	२- ८-७			
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२-१२-०	३- १-०			
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२-१२-६	३- १-६			
२२२- ८-०	२१६- ०-०	२२१- ०-०	२२१- ०-०	२२१- ०-०			
१५२- ०-०	१६२- ८-०	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त			
३१- ६-४	३०- ८-७	३१- ०-५	३१-१२-०	३२- २-०			
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	३०- २-०	अप्राप्त			
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त			
अप्राप्त	१६- ०-०	१७- ८-०	१७- ८-०	१७- ८-०			
२०-१०-०	१७-१०-०	१६- ०-०	२१- ८-०	२०- ४-०			

३. देश में वस्तुओं

वस्तु	आार	इकाई	तिनम्बर १९५३	अगस्त	सितम्बर	मार्च	अप्रैल
११ <u>गन्धक</u>			६०००००	६०००००	६०००००	६०००००	६०००००
(१) सान्ना (२)	सन्ना	मन	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००
(२) सान्ना	सन्ना	,,	१ ०	१ ०	१ ०	१ ०	१ ०
१२ <u>बन्दूक</u>							
का पूरा मध्यम	बन्दूक	वर्ग मन्	११५ १ ६	१ ० १ ०	१ ० १ ६	१ ० १ ६	अज्ञात
(सन्ना का अज्ञात दर्जे का)							
१३ <u>नाली सिर्वा</u>							
(१) सन्ना	,	,	० ० ०	० ० ०	० ० ०	१६० ० ०	१७० ० ०
(२) सान्ना	सन्ना	हदर	११५ ० ०	१ ५ ० ०	११० ० ०	६७ ० ०	२६० ० ०
१४ <u>कानू</u>							
मन्ना	मन्ना	मन्	१० ५ ०	१ ० ५ ०	१ ० ५ ०	१ २ १ ०	१ ५ २ ०

औद्योगिक कच्चा माल

१ रूई, कच्चा

(१) बाला एम वी एफ	बन्दूक	७०५ पाई का केडा	० ० ०	७६ ० ०	० ० ०	७५४ ० ०	७५२ ० ०
(२) ०१६ एम पा	,,	,,	अज्ञात	अज्ञात	६०६ ० ०	६१० ० ०	६१७ ० ०
अज्ञात एम वी							
(३) बाला बाला एम वी	,	,	५७० ० ०	६२५ ० ०	६४० ० ०	६२० ० ०	५६५ ० ०

२ जुट, कच्चा

(१) सन्ना	सन्ना	४०० पाई का पा	१५५ ० ०	१७० ० ०	१६५ ० ०	१६५ ० ०	१७५ ० ०
(२) सान्ना	,,	,,	१४	१६० ० ०	१५० ० ०	१५० ० ०	१६० ० ०
(३) सान्ना वन्नि सिर्वा	,	,,	० ० ०	५ ० ०	३० ० ०	३२ ० ०	६ ० ०

३ रेयाम, कच्चा

(१) ४०० वन्नि सान्ना	सन्ना	सेर	५० ० ०	५५ ० ०	५६ ० ०	६३ ० ०	६४ ० ०
(२) सान्ना बाला सिर्वा	बाला	३६ लोने का पा	६ ० ०	० ० ०	२७ ० ०	३१ ० ०	३६ ० ०

४ ऊन, कच्चा

(१) बाला लोने बाला	बन्दूक	मन्	० ० ५ ०	अज्ञात	० ० ५ ०	० ० ५ ०	० ० ५ ०
(२) दिवला	बाला	,,	१ ० ० ०	१ २ ५ ० ०	१ ६ ७ ० ०	१ ६ ५ ० ०	१ ६ ५ ० ०

(१) सिमन्ट मूल्य।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
ब०आ०पा०	ब०आ०पा०	ब०आ०पा०	ब०आ०पा०	ब०आ०पा०			
२- ८-०	२- ८-०	२- ८-०	२- ८-०	२- ८-०			
१- २-०	१- २-०	१- २-०	१- २-०	१- २-०			
अमास	१०५-१३-६	१०५-१३-६	६६-१३-६	६४-१३-६			
१५५- ०-०	१५०- ०-०	१३०- ०-०	१३०- ०-०	१६०- ०-०			
२४०- ०-०	१५५- ०-०	१८७-१५-०	२४६- ३-०	२२५- ०-०			
१२-१०-६	१३-१४-६	१२-१०-७	१२-१५-७	१४- ६-४			
७५०- ०-०	७२५- ०-०	६६७- ०-०	७०७- ०-०	७१४- ०-०			
६१०- ०-०	८८८- ०-०	८५७- ०-०	८६३- ०-०	अमास			
६०५- ०-०	५७५- ०-०	५५०- ०-०	५१५- ०-०	५४०- ०-०			
१५५- ०-०	१५५- ०-०	१४०- ०-०	१४०- ०-०	१५०- ०-०			
१५०- ०-०	१४०- ०-०	१२५- ०-०	१२५- ०-०	१३५- ०-०			
३२- ८-०	अमास	२७- ०-०	२७- ०-०	३२- ०-०			
६६- ०-०	६३- ०-०	६३- ०-०	६३- ०-०	६३- ०-०			
३०- ०-०	अमास	२८- ०-०	२६- ०-०	२७- ८-०			
२७७-११-३	२७७-११-३	२७२- ६-०	२६७- ७-०	२७२- ६-०			
१७२- ८-०	१७५- ०-०	१७५- ०-०	१६५- ०-०	१६५- ०-०			

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएँ	बाजार	इकाई	सितम्बर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			₹०आ०पा०	₹०आ०पा०	₹०आ०पा०	₹०आ०पा०	₹०आ०पा०
५. मूंगफली							
(१) बडादाना	बम्बई	हंडरकेट	५२- ८-०	३५-१०-०	३४- ४-०	३५-१२-०	३५- ४-०
(२) मश्रीम से छिली हुई	कडालोर	मन	३६- ४-४	२४-१०-२	२४-१२-०	२५- ६-०	२५- २-०
६. अलसी							
(१) बडादाना	बम्बई	हंडरकेट	२६- ४-०	२८- ८-०	२६- ०-०	२५- ४-०	२५- ८-०
(२) ५% रिफ़ेक्शन छोटा दाना (वैयार)	कलकत्ता	मन	२१- ०-०	२१- ८-०	२१- ४-०	२०- ४-०	१६- ०-०
७. अरण्डी का बीज							
(१) सलेम बिस्म का	मद्रास	”	अप्रगत	१८- ०-०	१५-१५-०	१५- ७-०	१४-१५-०
(२) छोटा साधारण अश्लित दों के हैदराबादी	बम्बई	हंडरकेट	३३- ०-०	२४- ८-०	२४- ४-०	२२- ४-०	२३- २-०
८. तिल							
(१) सफ़ेद बडादाना ८५%	”	”	६०- ०-०	४२- ०-०	४१- ०-०	४०- ८-०	४८- ०-०
(२) मिश्रित (गाबर)	मौली	मन	३२- ०-०	२८- ८-०	२५- ८-०	२४- ८-०	२७- ०-०
९. तोरिया							
(१) मिश्रित पटना खुदरा	कलकत्ता	बगाल मन	२६- ०-०	२६- ४-०	३१- ०-०	२६- ८-०	२६- ८-०
(२) लाल	बम्बई	मन	२६- ७-०	२३-१४-०	२५- ०-०	२३- ८-०	२३-१४-०
(३) सरखो काली	कांगुर	”	२६- ०-०	२८- ८-०	२४- ४-०	२१-१०-०	२३-१२-०
१०. ब्वनाला							
(१)	बम्बई	हंडरकेट	१८- १-४	१५- ७-६	१६- ६-५	१५-१४-६	१४-१५-७
(२)	अमरावती	८० पौंड का मन	११-१०-२	१०- ७-३	६-१४-४	६- २-५	१०- २-२
११. नारियल का गोला							
साधारण अश्लित दों के का	कोचीन	६५.५.६ पौंड की बैट्टी	३६१- ०-०	३६५- ७-०	३५४- ६-०	३४०- ०-०	३२३-१५-०
१२. कोयला (न)							
(१) लुना हुआ भेरिया	कोलादरी सार्द्विग में पहुँचने पर	टन	१५-१२-०	१५-१२-०	१५-१२-०	१५-१२-०	१५-१२-०
(२) वेथेरगट	”	”	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०
(३) म०प्र० प्रथम श्रेणी	”	”	१७- ८-०	१७- ८-०	१७- ८-०	१७- ८-०	१७- ८-०
१३. कच्चा लोहक							
निर्गत मूल्य	विद्यावापतनम	”	१०७- ३-११	१४१-५-६	११६-१४-४	१६१- ६-४	१७६- ७-४

(न) निर्गत मूल्य ।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
द०आ०पा०	द०आ०पा०	द०आ०पा०	द०आ०पा०	द०आ०पा०			
२६-४-०	२१-४-०	२१-४-०	२७-४-०	२६-१२-०			
२३-११-४	२०-१५-०	२२-८-०	१६-६-०	१८-२-०			
२७-४-०	२४-८-०	२३-४-०	२२-८-०	२३-४-०			
१६-१०-०	१७-०-०	१७-८-०	१६-४-०	१७-६-०			
१६-७-०	१४-७-०	१४-७-०	१४-१५-०	१४-१५-०			
२३-१०-०	२१-४-०	२२-२-०	१६-१०-०	१६-१४-०			
अप्रति	४२-०-०	४५-०-०	३८-०-०	३३-१२-०			
२७-०-०	२५-०-०	२४-०-०	२६-०-०	२१-०-०			
२७-०-०	२४-०-०	२६-०-०	२७-०-०	२६-०-०			
अप्रति	२१-५-०	२२-१२-०	२४-४-०	२२-६-०			
२३-१२-०	अप्रति	२२-१-५	२४-०-०	२४-१०-०			
१५-६-१	१५-३-२	१३-१३-१०	१३-८-५	१२-४-०			
१०-४-११	अप्रति	अप्रति	अप्रति	अप्रति			
३२७-८-०	३००-०-०	३१०-३-०	३२०-१२-०	३२३-८-०			
१५-१२-०	१५-१२-०	१५-१२-०	१५-१२-०	१५-१२-०			
१६-४-०	१६-४-०	१६-४-०	१६-४-०	१६-४-०			
१७-८-०	१७-८-०	१७-८-०	१७-८-०	१७-८-०			
१६२-३-१०	१५४-११-५	१२१-४-८	१४३-०-७	१३४-०-६			

३. देश में वस्तुओं

वस्तु	वाचार	इकाई	सतम्बर १९५३				
			अप्रैल	मार्च	फरवरी	जनवरी	दिसम्बर १९५३
			संख्यांका	संख्यांका	संख्यांका	संख्यांका	संख्यांका
१४ चमड़ा, कच्चा							
(१) नमक लगा हुआ गाय का कलकवा		२० पाउंड	अप्रैल	१६ ००	१५ ००	१५ ००	१५ ००
(२) नमक लगा हुआ भैंस का कलकवा		२० पाँड	अप्रैल	१० ००	१० ००	१० ००	१० ००
(३) नमक लगा हुआ गाय का कानपुर		काडा	२०० ००	२६० ००	२७५ ००	२७५ ००	२७५ ००
(४) नमक लगा हुआ भैंस का		२० पाँड	६ ६७	६ ११ २	६ १० ८	६ १ १	६ ० ५ ६
१५ खास कच्ची							
बकरी का, प्रोसेस किया हुआ कलकवा		१०० पाउंड	अप्रैल	३५० ००	५५० ००	३५० ००	३५० ००
१६ लाख							
(१) चमड़ा शुद्ध टां एन०		५ गाल मन	१०६ ८०	१०८ ००	६५ ८०	८७ ००	६१ ००
(२) बरतन शुद्ध		५ गाल मन	११८ ००	१२० ००	११४ ००	१०६ ८०	११५ ८०
१७ रबड़							
RMA IN RSS	बोगम	१०० पाउंड	१३३ ००	१३३ ००	१३३ ००	१३३ ००	१३३ ००

अर्द्ध निर्मित वस्तुएँ

१. चमड़ा

(१) गाय का चमड़ा	मद्रास	पाउंड	२ २०	३ ०३	३ १०	२ १५ ०	२ १४ ३
(२) भैंस का चमड़ा	"	"	२ ० ६	२ १ ६	२ १ ६	२ ० ६	२ ० ३
(३) भेड़ का छाले	"	"	६ ६ ०	६ ३ ०	५ १५ ०	५ ११ ०	५ ८ ०
(४) बकरा का छाले	"	"	४ १२ ६	४ १४ ०	४ १४ ०	४ १४ ०	४ १३ ०

२. खनिज तेल

(क) निट्री का तेल (न)

(१) मीठा थोक	कलकत्ता	८ गैलन	१० ७ ६	६ १५ ०	६ १५ ०	६ १५ ०	६ १५ ०
(२) ब्राया थोक	"	"	१० १४ ६	१० ७ ०	१० ७ ०	१० ७ ०	१० ७ ०
(ख) पेट्रोल (न)							
(१) थोक पम्प पर	"	गैलन	२ १२ ०	२ ११ ६	२ ११ ६	२ ११ ६	२ ११ ६
(२) " " "	दिल्ली	"	२ १४ ६	२ १४ ६	२ १४ ६	२ १४ ६	२ १४ ६
(३) " " "	मद्रास	"	२ १० ०	२ १२ ०	२ १२ ०	२ १२ ०	२ १२ ०

३. वनस्पति तेल

क. नारियल का तेल

(१) साधारण शीतल दूबे का (तैयार)	बाचान	६५४ पाँड	५१४ १५ १०	५६२ ६ ०	५२५ १२ ५	४६५ ० ७	४८० १ ३
(२) बेचना का	कलकत्ता	बगाल मन	७२ ० ०	८० ० ०	८४ ० ०	७४ ० ०	७२ ० ०
(३) सुला	कन्नड़	क्वार्टर	२३ ० ०	२६ २ ०	२५ ४ ०	२३ ० ०	२२ ४ ०

(न) नियोजित मूल्य ।

कैः भावः १६५४. (गत वृष्ट से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०
१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०
२५- ०-०	२३०- ०-०	२३०- ०-०	२५०- ०-०	२७०- ०-०	२७०- ०-०	२७०- ०-०	२७०- ०-०
११- ०-७	११-११-७	११- ०-७	११- ०-७	११- ०-७	११- ०-७	११- ०-७	११- ०-७
३५०- ७-०	३५०- ०-०	३००- ०-०	३००- ०-७	३००- ०-७	३००- ०-७	३००- ०-७	३००- ०-७
११५- ०-०	१३५- ०-०	१४३- ०-०	१३७- ०-०	१४६- ०-०	१४६- ०-०	१४६- ०-०	१४६- ०-०
१२३- ०-०	१४२- ०-०	१५०- ०-०	१५६- ०-०	१६०- ०-०	१६०- ०-०	१६०- ०-०	१६०- ०-०
१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०
२-१२-३	२-१२-३	२-१२-३	२-१२-३	२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६
२- ०-०	२- ०-०	२- ०-०	२- ०-०	२- १-०	२- १-०	२- १-०	२- १-०
५- ८-०	५- ८-०	५- ०-०	५- ३-०	५- ३-०	५- ३-०	५- ३-०	५- ३-०
४-१३-०	४-१३-०	४-१२-०	४-१४-०	४-१४-०	४-१४-०	४-१४-०	४-१४-०
६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०
१०- ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०
२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६
२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६
२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०
४८- ५-०	४४-१४-७	४५-१४-३	४७- १-७	४७- १-७	४७- १-७	४७- १-७	४७- १-७
७२- ०-०	६६- ०-०	६६- ०-०	६४- ०-०	६४- ०-०	६४- ०-०	६४- ०-०	६४- ०-०
२२-१०-०	२१- ०-०	२१- ४-०	२०-१२-०	२१- ८-०	२१- ८-०	२१- ८-०	२१- ८-०

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएँ	बाजार	इकाई	मिताम्वर १९५३				
			दिसम्बर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			₹० अंश० पा०	₹० अंश० पा०	₹० अंश० पा०	₹० अंश० पा०	₹० अंश० पा०
ख. भू-गण्डली का तेल							
(१) खुदरा	मद्रास	५०० पीट की बैट्टा	४६०- ०-०	३१८ ०-७	३१० ० ०	२०८- ० ०	२१२ ० ०
(२) खुला	बम्बई	क्वार्टर	३० ० ०	१८ १० ०	१७ ४ ०	१७ २ ०	१८ २ ०
(३) गुण्डार (टीन बन्ट)	कलकत्ता	बगाल मन	८३- ० ०	६०- ० ०	५७ ० ०	५७ ० ०	५८ ८ ०
ग सरसों का तेल							
(१) खुदरा (मिल से निकलने समय)	"	"	७१ ८ ०	७४ ८ ०	६६ ८ ०	६० ० ०	६३ ८ ०
(२)	पटना	मन	६७ ४ ०*	७३ ० ०	६५ ० ०	५६- ० ०	६० ० ०
(३)	बालपुर	"	६३ ०-०	६६ ६ ०	५८ ० ०	५४ ०-०	५८ ०-०
घ अरखडी का तेल							
(१) न० १ काठिया पीला (बहाण पर)	कलकत्ता	मन	७६ ० ०	७२ ० ०	७१- ० ०	६७ ० ०	६६- ० ०
(२)	मद्रास	५०० पीट की बैट्टी	६८० ० ०	६८५- ० ०	६३० ० ०	६१० ० ०	६२० ० ०
ङ तिल का तेल							
खुला	बम्बई	क्वार्टर	२८ ३ ११	२० ० ०	१६ ८ ०	१८ १० ०	२१ १५ १०
च अलसी का तेल							
(१) बन्दा खुदरा (मिल से निकलने समय)	कलकत्ता	मन	४८ ८ ०	५१- ०-०	४८- ०-०	४७ ० ०	४४ ०-०
(२)	बम्बई	क्वार्टर	१५- ८-०	१६- ०-०	१५- ८-०	१३ १२-०	१४ १२-०
५. खली							
(१) मूंगफली	कलकत्ता	मन	६ ४ ०	७ ८-०	७- ८-०	७- ० ०	७ ८ ०
(२) मारियल	बम्बई	११ हटरकेट	२१- ०-०	२५- ८-०	२७ ०-०	२७ ०-०	२४- ०-०
(३) तिल	"	टन	३२५ ० ०	३२५- ० ०	३३५- ० ०	३२५- ० ०	३३० ०-०
६. सूत (भूरे रंग का) भारतीय							
(१) १० नम्बरा	कलकत्ता	५ पीट	६- ८-०	६ १०-०	६-१४-०	६ ६-०	६ १० ०
(२) २० "	"	"	८ ७ ६	८ ३ ०	८ ८ ०	८ ६-०	८ १-०
(३) ४० "	"	"	१२ ० ६	१२ ०-०	१२- ०-०	१० ० ०	१२ ० ०
(४) सूत २० नम्बरी	बंग गौर	१ पीट	१७ १० ६	१६ ११-०	१७- ४ ०	१७ ८ ०	१७ १०-०
६. नारियल की सुतली							
(१) झलनी झलारट	कोचीन	६ हटरकेट की बैट्टी	२५५- ०-०	२७५- ० ०	२७५- ०-०	२७३- ५-०	२७८ ५ ०
(२) अन्नवैंगो बरिया	"	"	२६५- ० ०	३१५- ० ०	३१५- ०-०	३१५- ०-०	३१५- ० ०

(न) अनधिकृत मूल्य ।

* समाप्तोक्ति मूल्य ।

के साव : १५६४ (गत वृष से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
संख्यां०	संख्यां०	संख्यां०	संख्यां०	संख्यां०			
३०६- ०-०	२६५- ०-०	२७२- ०-०	२३५- ०-०	२२७- ०-०			
१८- ३०	१५- ६-०	१५-१२-०	१४- ०-०	१४- ०-०			
५६- ०-०	४६- ०-०	५१- ०-०	४३- ८-०	४३- ८-०			
६७- ८-०	६०- ८-०	६१- ८-०	६४- ०-०	६७- ०-०			
६८- ०-०	६०- ०-०	५७- ०-०	६०- ०-०	६५- ०-०			
६०- ०-०	५४- ८-०	५५- ०-०	५८- ८-०	६४- ०-०			
६६- ०-०	५६- ०-०	५६- ०-०	५३- ०-०	५३- ०-०			
२२७- ०-०	१८७- ०-०	२००- ०-०	१८०- ०-०	१७८- ०-०			
२१- ०-२	अप्रति	२०- ०-०	१६- ८-०	१५- ७-११			
४४- ८-०	३६- ०-०	३६- ८-०	३४- ८-०	३७- ०-०			
१५-१२-०	१२-१२-०	१२-१४-०	१२-१२-०	१३- ०-०			
८ ८-०	६- ०-०	८- ८-०	८ ०-०	८- ८-०			
२४- ०-०	२१- ०-०	२०- ०-०	१६- ०-०	२०- ०-०			
३४०- ०-०	३२०- ०-०	३३०- ०-०	३२०- ०-०	३२५- ०-०			
६-१०-०	६-१०-०	६-१०-०	६-१०-०	६-१०-०			
६- ०-०	६- ०-०	६- ०-०	६ ०-०	६- ०-०			
१२- ०-०	१२- ०-०	१२- ०-०	१२- ०-०	१२- ०-०			
१७-१२-०	१८- २-०	१७-१४-०	१७-१४-०	१७-१४-०			
२७०- ०-०	२७०- ०-०	२७०- ०-०	२६५- ०-०	२८०- ०-०			
३०२- ५-०	२८८- ५-०	२८०- ०-०	२७४- ३-०	३००- ०-०			

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएं	स्थान	इकाई	सितम्बर १९५३	नवम्बरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
७ लोहा और इस्पात			६०,००,०००	६०,००,०००	६०,००,०००	६०,००,०००	६०,००,०००
क कच्चा लोहा (न)							
(१) फ़ाउंडरी न० १	कलकत्ता पहुँचने पर	टन	१५३ ००	१६३ ००	१६३ ००	१६३ ००	१६३ ००
(२) लोहा बेसिक	"	"	१२७ ००	१४७ ००	१४७ ००	१४७ ००	१४७ ००
ख अर्द्ध शुद्ध (न)							
फिर गलान के लिये ड्रकड़े	कलकत्ता	"	२८६ ००	२८६ ००	२८६ ००	२८६ ००	२८६ ००
८ धातु (लोहे के अतिरिक्त)							
(१) बस्ता स्पेक्टर (मजली वाला) मुलायम	"	दरबट	५७ ८०	५४ ००	५३ ८०	५३ ००	५७ ८०
(२) पातल पीली धातु-सधान (ब्र सिंथर) ४" × ४"	"	"	१५७ ८०	१५६ ४०	१५७-१२०	१६५ ००	१७७ ८०
(३) पातल की चादरें (मिलेपडस)	बम्बई	"	१४८ ००	१४६ ००	१५५ ००	१५६ ००	१६० ००
(४) ताम्बे की चादरें (इथिडपन)	"	"	१६५ ००	१६५ ८०	२०२ ००	१६६ ००	२०१ ००
९ लकड़ी							
सागौन के गोल लट्टे	बलरसाह	घन कूट	२१ ००	२१ ००	११ ००	१२ ००	२१ ००
५ फीट और उससे अधिक परिधि वाले	(दक्षिण प्राय, मध्य प्रदेश)						
निर्मित वस्तुएं							
१ टेक्सटाइल							
क जूट का माल							
टाट							
(१) १०-१२ औंस ४०"	कलकत्ता	१००-गज	४२ १४ ०	४७ १० ०	४८ २० ०	४६ ०० ०	४५ १० ०
(२) ८ औंस ४०"	"	"	३३ ००	३७ १४ ०	३७ १२ ०	३७ ५ ०	३६ ००
कोरियाँ							
(१) बी दिव्ल	"	१०० कोरियाँ	६२ २०	१०५ ८०	१०३ २०	१०८ ००	१०६ ००
(२) सी भारी कोरियाँ	"	"	६४ ८०	१०३ ००	१०४ ८०	११२ ८०	११८ ८०
ख सूती माल							
(१) कोरा कमीज का कपड़ा १२१ ३५" × ३८ गज × ७ पौंड	बम्बई	एक यान	१६ ३८	१६ ३८	१७ ३६	१७ ३६	१७ ३६
(२) कोरा स्टैंडर्ड कमीज का कपड़ा-३८ गज	"	पौंड	२ ००	१ १३ ४	१ १३ ४	१ १३ ४	१ १४ ७
(३) लीट ५५८८ ४३" × ३८ गज	"	एक यान	२४ १५ ०	२४ १५ ०	२४ १५ ०	२६ २०	२६ २०
(४) कोरी कोरियाँ मध्यम ४३" × १०/२ गज × २ ६/१६ पाउंड	"	एक जोड़ा	५ १४ ०	५ ११ ०	५ ११ ०	५ ११ ०	६ ६ ०

के भाव :- १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
६०आ०पा०	६०आ०पा०	६०आ०पा०	६०आ०पा०	६०आ०पा०			
१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०			
१४७- ०-०	१४७- ०-०	१४७- ०-०	१४७- ०-०	१४७- ०-०			
२८६- ०-०	२८६- ०-०	२८६- ०-०	२८६- ०-०	२८६- ०-०			
५७- ८-०	५६- ८-०	५८- ८-०	५३- ८-०	६०- ०-०			
१७२- ०-०	१६७- ०-०	१६८- ०-०	१६३- ८-०	१६०- ८-०			
१६५- ०-०	१६५- ०-०	१६०- ०-०	१५६- ०-०	१५४- ०-०			
२०१- ८-०	२०१- ८-०	१६६- ८-०	१६६- ८-०	२००- ०-०			
११- ०-०	११- ०-०	११- ०-०	११- ०-०	११- ०-०			
४५-१२-०	४६- ४-०	४७- ८-०	४७- ४-०	६४- ०-०			
३६- २-०	३७- ०-०	३७- ८-०	३६-१२-०	३८- ८-०			
११२-१४-०	११२- ६-०	१०६- ८-०	१०४-१२-०	११७- ८-०			
११५- ८-०	११४- ८-०	१११-१२-०	१०४- ८-०	११५- ०-०			
१७- ३-६	१७- ३-६	१७- ३-६	१७- ३-६	१७- ३-६			
१-१४-७	१-१४-७	१-१४-७	१-१४-३	१-१४-३			
२६- २-०	२६- २-०	२६- २-०	२४-१५-०	२४-१५-०			
६- ८-०	६- ८-०	६- ८-०	६- ६-०	६- ६-०			

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएं	वाजार	इकाई	सिगन्वर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			व०आ०पा०	व०आ०पा०	व०आ०पा०	व०आ०पा०	व०आ०पा०
(५) रगति केप—कमीज का कपडा एफ० एम०—१०५	मद्रास	गज	१-०६	०-१५-३	०-१५-६	०-१५-६	०-१५-६
(६) एम—५०१ र्नीच किये मलमल ४८" × २०" गज	"	२० गज	१६-४-०	१६-४-०	१६-४-०	१६-४-०	१६-४-०
ग. रेयन और रेशम का माल							
(१) टैकेटा कोय २६-५०"; ४-३/४ १ से ५ पौंड तक (रेयन)	बम्बई	गज	०-७-३	०-७-०	०-८-३	०-६-०	०-६-६
(२) पूजा (चानी रेयम)	"	५० गज का यान	२७७-०-०	अज्ञात	३१०-०-०	३४०-०-०	४००-०-०
२. लोहे और इस्पात से निर्मित वस्तुएं (न)							
लोहे और इस्पात की फनालीदार चादरें-२४ गज	कलकत्ता	हडरकेट	३४ ०-०	३४ ० ०	३४-०-०	३४-०-०	३५-०-०
३. अन्य निर्मित वस्तुएं							
(क) सीमेंट (न)							
भारतीय (स्वसिक्का)	"	टन	८२-१४-०	८२-६-०	८२-६-०	८७-६-०	८७-१५-०
(ख) कॉच (विडकियो का)							
(१) बटा सार्च ३०" × २४" तक	"	१०० वर्ग फुट	६०-०-०	६०-०-०	६०-०-०	६०-०-०	६०-०-०
(२) मध्यम सार्च	"	"	५५-०-०	५३-०-०	५३-०-०	५५-०-०	५५-०-०
(ग) कागज							
सफेद छुप्राइ, डिमाई १४ पौंड और ऊपर	"	पौंड	०-१०-७	०-१०-७	०-१०-७	०-१०-७	०-१०-०
(घ) रासायनिक पदार्थ							
(१) फुटकरी	"	हडरकेट	१५-०-०	१३-०-०	१३-०-०	१३-०-०	१३-०-०
(२) गंधक का तेजाव	"	टन	२३५-००	२३५-००	२३५-००	२३५-००	२३५-००
(ङ) रंग							
लाल छोटे का सूखा अरवनी	"	हडरकेट	६०-८-०	८६-०-०	८६-०-०	८६-०-०	८६-०-०

(न) निरन्तरित मूल्य ।

के भाव : १९५४ (गत वृष्ट से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा० ०-१५-६	रु०आ०पा० १- ०-०	रु०आ०पा० १- ०-०	रु०आ०पा० १- ०-०	रु०आ०पा० १- ०-०			
१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०			
०-१०-०	०- ८-०	०- ८-०	०- ८-६	०- ८-६			
अप्राप्त	३४०- ०-०	३४०- ०-०	३१५- ०-०	३१५- ०-०			
३५- ०-०	३५- ०-०	३५- ०-०	३५- ०-०	३५- ०-०			
८०-१५-०	८०-१५-०	८०- ०-०	८०- ५-०	८०- ५-०			
६०- ०-०	६५- ०-०	४५- ०-०*	४३- ०-०	४३- ०-०			
५५- ०-०	६०- ०-०	४३- ०-०*	४०- ०-०	४०- ०-०			
०-१०-०	०१-०-७	०-१०-७	०-१०-७	०-१०-७			
१३- ०-०	१३- ४-०	१३- ४-०	१३- ४-०	१३- ४-०			
२३५- ०-१	२३५- ०-०	२३५- ०-०	२३५- ०-०	२२०- ०-०			
८६- ०-०	८६- ०-०	८६- ०-०	८८- ०-०	८८- ०-०			

*२६-६-५४ को समाप्त होने वाले सप्ताह से भारतीय काच के मूल्यों के स्थान पर आयात किये गये काच के मूल्य दिये गये हैं।

व्यापारिक और औद्योगिक शब्दावली

प्रस्तुत अंक में व्यापार और उद्योग क्षेत्रों के जिन विविध शब्दों का प्रयोग हुआ है उन्हें तथा उनके अंग्रेजी रूपों को पाठकों की सुविधा के लिये यहाँ दिया जाता है। ये केवल सुविधा की दृष्टि से दिये गये हैं। प्रामाणिकता की दृष्टि से इन्हें अनन्तन नहीं मान लेना चाहिये। —सत्यादक।

हिन्दी शब्द	अंग्रेजी रूप	हिन्दी शब्द	अंग्रेजी रूप
अग्निनापी तम्बाकू	Fire cured tobacco	पेटेंट	Patent
अनाम से बनी बस्तुएँ	Gram Preparations	प्रत्यक्ष दायित्व	Direct Responsibility
आदेशार्थी	Under Orders	प्रश्नावली	Questionnaire
आयुनिकीकरण	Mc dermsation	फ़ीरोज़	Turquoise
आविष्कार	Invention	बिना उड़े	Unset
उत्पादनशीलता	Productivity	बिना तराये	Uncut
उधार देने की नीति	Lending Policy	मनोनित	Nominate
एकत्र	Patent	मायिक	Ruby
कच्ची छुराई	Discharge Printing	मुक्त	Exempt
कलम लगाने की प्रणाली	Vegetative Method	मू का	Coral
कोकोआ चूर्ण	Cocoa Powder	मैंदा-मुंडी	Fines
गिरी	Kernel	मोती	Pearl
चाकलेट उद्योग	Chocolate Industry	युद्धकालीन अर्थ-व्यवस्था	War Economy
चीरी हुई लकड़ी	Sawed Timber	यूरोपीय पुनरुत्थान कार्यक्रम	European Recovery Programme (E.R.P.)
घोंकर	Bran	रत्न	Precious Stones
तनाव	Strain	रगति	Mode
तम्बाकू	Nicotiana Tobacum	लहलुनिदा	Cat's Eye
दबाव	Stress	लाभ	Ruby
द्रव्य	Money	बनान	Close of year
धूपतापी तम्बाकू	Sun Cured Tobacco	बायुनापी तम्बाकू	Air Cured Tobacco
धूमतापी तम्बाकू	Flue Cured Tobacco	विचारार्थी	Under Consideration
निरोधक	Anti	विधि संगत	Lawful
निदेशार्थी	Under Instruction	वित्तीय सहायता	Financial Aid
नीलम	Sapphire	विनाया	Wilaya. A light weight cloth in Sudan
पक्की छुराई	Resist Printing		
पहा	Lease		
पहा उद्योग	Belting Industry	वित्ताए	Expansion
पन्ना	Emerald	वैध	Legal
परमोद्वेष्ट	Mandamus	शांतिवर्कालीन अर्थ-व्यवस्था	Peace Economy
पशुओं का उत्पादन	Animal Products	सकनए	Transition
पारस्परिक सुरक्षा कार्यक्रम	Mutual Security Programme (M.S.P.)	सघर्ष	Friction
	Topaz	हूनहरी बारनिय	Lacquer
	Reconstruction	सिनेमा चित्र	Exposed Films
	Intricate	सम्भावनाए	Prospects
		हीरा	Diamond

उद्योग-व्यापार पत्रिका



सत्यमेव जयते

वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली

विज्ञान प्रगति

बैंगलूर और छोटे उद्योगों के लिये मासिक अनुसंधान-समाचार पत्र

उद्योगों पर लेख—

- गन्धक-संस्थाओं का परिचय
- वैज्ञानिक साहित्य का विमर्श
- आनिप्लार सम्बन्धी सूचनाएँ
- रेडेंट विधियों के वर्णन
- अनुसंधान-नियमों द्वारा प्रश्नों के उत्तर

इस के प्रौद्योगिक विकास में रुचि रखने वाले व्यक्तियों के लिये आवश्यक । रविनकर परधानी,
इन्डो चीन बायताइलों के लिये अनिवार्य

पब्लिशिंग हाउस डिजीनल

को नि त ऑफ सा इ टि कि र  र रठ इ उ रिट्ट व ल रि स र्व

ओल्ड मिल रोड, नई दिल्ली—२

वार्षिक मूल्य ५ रुपये

एक पते का भ्राट बना

★ राष्ट्रभारती ★

ॐ सम्पादक ॐ

: मोहनलाल भट्ट :

: हृषीकेश शर्मा :

(१) यह हिन्दी पत्रिकाओं में सबसे अधिक मूल्य, और सुन्दर साहित्यिक और सांस्कृतिक मासिक पत्रिका है ।
(२) विश्व ज्ञानपापन और मनोरंजन प्रेष्ठ पत्रिकाओं, कहानियाँ, खेरासी, नाटक रेखाचित्र, और शब्द चित्र रहते हैं । (३) बंगला, मराठा, गुजराती पञ्जाबी, राजस्थानी, उर्दू, तमिल, तेलगु, कन्नड, मलयालम आदि भारतीय भाषाओं के सुन्दर हिन्दी अनुवाद भा अधिमम रहते हैं । (४) यह प्रतिमास १ ली तारीख को प्रकाशन होती है । (५) वार्षिक चन्दा ६ रु०, छमाहा १।५ रु०, नमूने का प्रति टम आना मात्र । आज ही ग्राहक बन जाइये । (६) ग्राहक बना देने वालों का विशेष मुद्रिका की वागमरी । (७) पत्र पिकी [अजेर्मी] तथा विज्ञापन दर के लिये आज हा लिखिय ।

पता.—व्यवस्थापक, “राष्ट्रभारती”

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पो०—हिन्दीनगर (वर्षा. म० प्र०)

उद्योग व्यापार पत्रिका

प्राहकों से निवेदन

वार्षिक चन्दा ६ रु०, एक प्रति ८ आन ।

मनीआर्डर, क्रास क्रिये बैंक अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा कृपया नाच लिखें पते पर भेजकर आप किसी भी शक से ग्राहक बन सकते हैं ।

एजेन्टों को सूचना

जो सम्बन्ध पत्रिका की एजेन्सी लेना चाहें वे कर्मागमन आदि के लिये शीघ्र पत्र व्यवहार करें । एजेन्ट केवल सीमित सख्या में ही बनाने का निश्चय हुआ है । अतः इस के लिये शीघ्रता करनी चाहिए ।

सम्पादक,

उद्योग व्यापार पत्रिका,
वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय,
भारत सरकार, नई दिल्ली ।

प्राथमिक चिकित्सा का सामान

सरकारी नियमों (फेक्टरीज् एक्ट) के अनुसार
समस्त

फेक्ट्रियों, कारखानों और दफ्तरों के लिये

कारखानों के दवागानों, बालशालाओं और अस्पतालों के
सामान, उपकरणों आदि के विशेषज्ञ

स्वाइयां, टिंचर, शर्वत, मरहम, इंजेक्शन की औषधियां
और सब प्रकार की वी० पी० तथा वी० पी० सी०
स्टैडर्ड दवायें बनाने वाले

प्रसिद्ध औषधि-निर्माता

कैम्प एराड कम्पनी लिमिटेड

एलफिन हाउस, परभादेवी, काडेल रोड, बम्बई २८
शाखाएं

दिल्ली :

मद्रास :

कलकत्ता

हिन्दी और मराठी भाषा
में प्रकाशित होता है ।

उद्यम

सर्वोपयोगी हिन्दी उद्यम
प्रतिमाह १५ तारीख को पढ़िये

धर्मपेट, नागपुर

उद्यम में निम्न विषयों पर लेख प्रकाशित होते हैं

★ लाभदायक उद्योगधन्वों की व्यवहारोपयोगी जानकारी, अनाज की खेती, साग-सब्जी की बागवानी और रोगों का निवारण । पशुपालन, दुग्धव्यवसाय और प्रामाण्य सम्बन्धी लेख । आरोग्य, घरेलू औषधियों सम्बन्धी जानकारी ।

उद्यम के स्थायी स्तम्भ

★ महिलाओं तथा विद्यार्थियों के लिये उपयुक्त विभिन्न रुचिकर खाद्यपदार्थ बनाने की विधियाँ । घरेलू मितव्ययता । जिज्ञानु जगत् । कृषि, औद्योगिक क्षेत्रों में काम करने वाले व्यक्तियों की मुलाकात और परिचय । नित्योपयोगी वस्तुएं घर ही तैयार कीजिये ।

आज ही उद्यम का वार्षिक चन्दा रु० ७ भेजकर, उद्यम मासिक मंगवाइये ।

उद्योग-व्यापार पत्रिका

खण्ड ३]

नई दिल्ली, नवम्बर १९५४

[पृष्ठ ५]

निर्यात के महत्वपूर्ण आंकड़े--

★ गत महायुद्ध से पूर्व	६०० टन प्रति वर्ष
★ गत महायुद्ध के पश्चात	१५,००० टन प्रति वर्ष
★ वर्तमान निर्यात	१०,००० टन प्रति वर्ष

काली मिर्च का व्यापार बढ़ाया जाय

उपज बढ़ाने के लिये गवेषणा करने की आवश्यकता

भारत के निर्यात व्यापार में अब काली मिर्च का एक विशेष और महत्वपूर्ण स्थान बन गया है। अमेरिका इसे अच्छे परिमाण में खरीदता है और इस प्रकार इसके द्वारा हमें अधिक बालर प्राप्त करने में सहायता मिल रही है।

गत महायुद्ध से पहले इण्डोनेशिया और दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों से यूरोप तथा अमेरिका को बहुत अधिक काली मिर्च मन्जी जाती थी। परन्तु युद्ध के कारण वहाँ स्थिति सुधरने पर इण्डोनेशिया आदि से पुनः प्रतिस्पर्धा होने की सम्भावना है। अतः आवश्यकता यह है कि भारत में काली मिर्च के उत्पादन और निर्यात को लागत घटाई जाय और माल की किस्म अच्छी रखी जाय और उसका बर्गीकरण तथा प्रतिमानोकरण भी किया जाय।

मसाला जाच समिति ने काली मिर्च की खेती तथा विक्री व्यवस्था को सुधारने के लिये अनेक सिफारिशों की हैं जिनमें खाद का प्रयोग करने, अच्छी पौध देने और सहकारी ढंग पर संगठन करने के सुझाव प्रमुख हैं।

महायुद्ध के बाद मांग बढ़ी

गत महायुद्ध के पश्चात् काली मिर्च का भारत के निर्यात व्यापार में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान हो गया है। युद्ध से पहले इसका निर्यात नगण्य ही था। परन्तु युद्ध आरम्भ होते ही भारतीय काली मिर्च की मांग जटने लगी। अमेरिका और यूरोप के देशों ने बड़ा मांग निर्यात की गइ। अब तो ये देश अपनी काली मिर्च के अभाव में अति आवश्यकता भारत से ही पूरी करते हैं। युद्ध से पहले जहाँ १,००० टन से भी कम निर्यात होता था वहाँ अब १५,००० टन के लगभग यह निर्यात होने लगा है। युद्धकाल में

इण्डोनेशिया में काली मिर्च के बागीचा का भारी विनाश हुआ जिससे वहाँ में होने वाला निर्यात ६२,००० टन से घट कर केवल १०,००० टन रह गया। इसी प्रकार स्वाम, बोनिनो और रिन्दचीन में भी उत्पादन घट गया है जिससे वहाँ ७५ प्रतिशत कम काली मिर्च पैदा हुई। इसके फलस्वरूप भी भारत की काली मिर्च की मांग बढ़ गई।

नौचे की दो तालिकाओं में मार्च १९५४ को समाप्त होने वाले तीन वर्षों में हुए काली मिर्च के निर्यात के मूल्य तथा परिमाण दिये गये हैं:—

निर्यात का परिमाण

(हजार हज़ारवत्)

देश	१९५१-५०	१९५२-५३	१९५३-५४
अमेरिका	१५८४	१५६५	१२६८
ब्रिटेन	४३७	४३७	३०४
कनाडा	११६	११७	१०५
दुर्ला	११६	११०	११६
सांयुक्त रूम	२३१	७०	१६०
पश्चिमी जर्मनी	१०२	४६	नगण्य
फ्रांस	६८	६८	६६
मिस्त्र	०६	१२	०१
योग (अन्य महित)	०६३	०६०	०४३

निर्यात का मूल्य

(लाख रु० में)

देश	१९५१-५०	१९५२-५३	१९५३-५४
अमेरिका	१,००६	१,०६०	७२७
ब्रिटेन	३८०	३६६	१००
कनाडा	८५	७५	५६
दुर्ला	६५	८०	५८
संयुक्त रूम	१६०	१७	६०
पश्चिमी जर्मनी	०५	८५	१०
फ्रांस	५०	८०	७५
मिस्त्र	०३	८६	१२
योग (अन्य महित)	०,००३	१,६०५	१,२७७

काली मिर्च आन्ध्रप्रदेश, मल्लाबार और दक्षिण कर्नाटक जिले में उगाया जाता है। इस समय यह पश्चिम घाट का उत्पाद है। इसके अतिरिक्त मैसूर, हुगली और बम्बई राज्यों के कुछ भागों में भी यह पैदा होता है। इस आन्ध्र प्रदेश के तेलंगण जिले में और गुजरात प्रदेश में भी यह पैदा होता है।

काली मिर्च का पौधा एक बार पैदा होने के बाद २५ से ३० वर्षों तक उगा सकता है। चिन पागोचा में इसके अच्छी देखभाल की जाती है। इनमें यह ६० वर्ष तक भी उगा जाता है।

तैयार करने की विधि

काली मिर्च के पौधे में पुष्पों के समय में फल आने लगते हैं और फल बनने में लेकर मात्र एक वर्ष तक तैयार हो जाता है। बड़े जान के पौधे तीसरे वर्ष काली मिर्च का पौधा फलन लगता है। आरम्भ में इसमें कम फल लगते हैं परन्तु प्रतिवर्ष उनका परिमाण बढ़ता जाता है। छठे वर्ष से वे पूरी तरह फल देने लगते हैं। ये फल उर के समान होते हैं।

इनमें काली मिर्च तैयार करने का निम्न प्रकार है। फलों को ताज़ा कर चलाई अथवा साफ पानी में धो लें। बाद में उन्हें हाथों में मल डालते हैं अथवा पैरा में डुबल डालते हैं। इस प्रकार फल अलग हो जाते हैं। मूल जाने पर इनका रंग काला पड़ जाता है और बाहर का छिलका सूखने पर सिट्टू कर उस रूप का हो जाता है जिसे काली मिर्च बाजार में विक्री होती है। इसके बाद उन्हें ५-६ दिन तक धूप में सुखाया जाता है।

इन्डोनेशिया और दक्षिण पूर्वी एशिया के अन्य देशों में तथा मिर्च का व्यापार भी तैयार की जाती है। मध्य मिर्च का काली मिर्च के पौधे से ही तैयार होता है। इस तैयार करने के लिए फला का ताज़ा कर पानी में डालकर उसे और बाद में उन्हें पैरा में डुबलते हैं जिसे उनसे बाहर का छिलका उतर जाता है। इसके बाद उसे मखा लिया जाता है और मध्य मिर्च तैयार हो जाती है।

मध्य मिर्च बहुत कम परिमाण में तैयार की जाती है और व्यापार की दृष्टि में उसका बहुत कम महत्त्व है।

खेती की प्रणालियाँ

भारत में काली मिर्च का पैदा करने का तीन प्रणालियाँ हैं। पहली प्रणाली के अन्तर्गत कम ऊंचाई वाला और तराई का नुर्मि में जंगल माफ करके मिशान परिमाण पर काली मिर्च का पैदा की जाती है। यह प्रणाली आन्ध्रप्रदेश, मल्लाबार और तमिलनाडु राज्यों में प्रचलित है। एक एकड़ में औसत ३०० से ४०० लाल उगाए जाते हैं और प्रत्येक ट्रेल में चौड़ाई चौदह से पैंसठ तक काली मिर्च उपाय होती है। दूसरी प्रणाली के अनुसार पहाड़ियों की लतहाइनों और तम्बुना कना में अथवा पौधा के साथ काली मिर्च उगा जाता है। इनमें प्रायः पत्तों के अग्रहाने अथवा बाहर नुर्मा में उगा जाता है। इन प्रकार की पैदा में काली मिर्च का उर्ध्व जलन, आम नारियल आदि के पौधों पर उगा जाता है। इस प्रणाली में अन्धे उगाए जाने वाली पैदा होती है परन्तु इनके बनने का बहुत अधिक सुखदा है। तीसरी प्रणाली के अन्तर्गत काली मिर्च का पैदा मल्लाबार, नारायण आदि का महाप्रदेश उर के रूप में पैदा किया जाता है। यह हुगली और मैसूर के कुछ भागों में प्रचलित है।

काली मिर्च की खेती का क्षेत्र

काली मिर्च के प्रकाशन अनुभवों के अनुसार १९५१-५० में काली मिर्च का पैदा का क्षेत्र १६०,०३१ एकड़ था जिसमें से १,००,५०० एकड़ मध्य प्रदेश मल्लाबार और दक्षिण कर्नाटक जिला में और आन्ध्रप्रदेश कर्नाटक का क्षेत्र ८५,०८८ एकड़ था। मध्य हुगली और मैसूर में काली मिर्च का क्षेत्र ८,६८८ एकड़ था। बाकियों उर के ५५,५०० एकड़ में मल्लाबार और दक्षिण कर्नाटक कर्नाटक के जिलों में पैदा के अग्रहाने आदि में बहुत मोटा पैदा लगाई गईं जिन्हें फलन रूप अनुमान है कि काली मिर्च क्षेत्र में १ से १० प्रतिशत तक की

वृद्धि हो जाने का अनुमान है। सोते अनुमान के अनुसार इस समय भारत में काली मिर्च के ७२० लाख पौधे हैं जिनमें से ७०० लाख पुरानी झाड़ियों के रूप में हैं और शेष नई बेलों के रूप में हैं जो युद्ध के पश्चात् लगाई गई हैं।

उत्पादन का रुख

भारत के विभिन्न राज्या में १९५१-५२ में काली मिर्च का कुल उत्पादन इस प्रकार हुआ .—

त्रावनकोर कोचीन	१२,००० टन
मद्रास (मलाबार और दक्षिणी कनाडा)	६,००० टन
बम्बई (उत्तरा कनाडा)	१५० टन
कुर्ग	१५० टन
मैसूर और अन्य राज्य	नगण्य
योग	२१,३०० टन

उपर के विवरण से स्पष्ट है कि भारत का काली मिर्च का उत्पादन, त्रानकोर कोचीन और मद्रास राज्यों में ही केन्द्रित है जहाँ १९५१-५२ में कुल उत्पादन का ६८ प्रतिशत पैदा हुआ। त्रानकोर कोचीन में सब में अधिक उत्पादन होता है जो कुल उपज का ५६ प्रतिशत है। इस राज्य के थोड्डूवा, सुवड्डूवा, वायकम, चेंगानचेरी और मोनागिल (पलार्ड) तालुकों में काली मिर्च सब में अधिक होती है। मद्रास राज्य का स्थान उत्पादन में दूसरा है जहाँ कुल भारत की ४२ प्रतिशत काली मिर्च उत्पन्न होती है। मद्रास राज्य में मलाबार जिले के उत्तरी तालुके और दक्षिण कनाडा जिले का होसदुर्ग तालुका काली मिर्च उत्पादन के प्रधान क्षेत्र हैं। इन दोनों जगहों में छोटे छोटे बगीचों में उत्पादन होता है। इनमें से प्राय ६० प्रतिशत बगीचे एक एकड़ में भी कम के हैं। तिरुची, कुर्ग और मैसूर राज्य के मानान्त क्षेत्र के कुछ भागों में भी काली मिर्च उत्पन्न होती है। परन्तु यहाँ का उत्पादन अल्पमात्र का ही होता है। यह भारत की कुल उपज का मुश्किल से २ प्रतिशत होता है।

कोचीन से भारी निर्यात

युद्ध से पहले भारत ६०० टन काली मिर्च का निर्यात करता था। युद्ध के पश्चात् १९४८-४९ में और १९४९-५० में १५,००० टन में भी अधिक का निर्यात हुआ। इस समय १२,००० टन निर्यात होता है।

विदेशों को काली मिर्च मुख्यतः कोचीन के बन्दरगाह से भेजी जाती है। १९५१-५२ में केवल इसी बन्दरगाह से प्रायः १०,००० टन काली मिर्च का निर्यात किया गया। कोचीन बन्दरगाह का सुधार हो जाने के बाद पहिले की तट के अलपनी, नलीपट्ट, मंगलोर आदि अन्य बन्दरगाहों का महत्त्व घट गया है। युद्ध काल में बम्बई में भी काली मिर्च का निर्यात किया गया। बम्बई से जो मात्रा भेजा गया वह अधिकतर में मलाबार और त्रानकोर-कोचीन से ही आया था।

विदेशों के मुख्य बाजार

भारत की काली मिर्च का मुख्य बाजार अमेरिका है। युद्ध से पहले भारत की प्रायः ३० प्रतिशत काली मिर्च अमेरिका में पवती थी। युद्ध के बाद भारत से निर्यात ८७३ टन से बढ़कर ११,००२ टन हो गया। इसका भी ८८ १/२ प्रतिशत भाग अमेरिका को भेजा गया। १९५०-५१ में कुल निर्यात और भी बढ़कर १५,३६४ टन हो गया जिसका ६६.७ प्रतिशत अमेरिका को गया। युद्ध से पहले अमेरिका प्रायः २४,००० टन काली मिर्च का आयात करता था, जिनमें से अधिकांश इंडोनेशिया से आती थी। इन समय अनुमान है कि अमेरिका प्राय १४,००० टन का आयात करता है जिसमें से ५६.३ प्रतिशत भारत से आती है। भारत से काली मिर्च का अधिकतर निर्यात यद्यपि अमेरिका को ही होता है तथापि अभी इन्में और भी बढ़ाया जा सकता है और इस प्रकार काली मिर्च हमारे लिये डालर प्राप्त करने का और भी बड़ा साधन सिद्ध हो सकती है। भारत की काली मिर्च के अन्य महत्वपूर्ण खरीदार ब्रिटेन, इटली, सोवियत रूस, मिस्र, यूनान आदि हैं।

विदेशों को साधारणतः छठी हुई काली मिर्च ही भेजी जाती है। यह साफ, सूनी हुई और गर्त तथा धूल आदि से मुक्त होती है। इनमें खोपनी और हल्की मिर्च बहुत कम होती है। अमेरिका तथा अन्य देशों को पेसो ही छठी हुई किस्म की काली मिर्च भेजी जाती है।

द्वितीय महायुद्ध और विशेषतः भारत का विभाजन होने के बाद से देश में उपने वाली काली मिर्च की किस्म बहुत घटिया हो गई है। इसकी उपज भी कम हो गई है। युद्ध से पूर्ण जहाँ ६,००० से १०,००० टन तक काली मिर्च देश में पवती थी वहाँ अब (१९५१-५२) में प्रायः ५,००० टन ही पवती है।

काली मिर्च भोजन का एक महत्वपूर्ण मसाला है। भारत में इसका प्रयोग अत्यन्त प्राचीन काल से होता आया है। इसके अतिरिक्त आयुर्वेद की ग्रन्थ और चिकित्सा में भी यह प्रयुक्त होती है। अमेरिका में इसका आयात अधिकतर मास को पैक करने तथा डिब्बाबन्द खाद्य पदार्थों को सुरक्षित रखने के लिये किया जाता है। भोजन में मिलाने के लिये इसे पीस कर चामे की मेज पर भी रखा जाता है।

काली मिर्च विकास कोष का प्रस्ताव

ममाला जाच समिति ने तो यह चान तक दी है कि केन्द्रीय सरकार को चाहिए कि काली मिर्च उद्योग का वैज्ञानिक आधार पर विज्ञान करने के लिये उपयुक्त उपाय करे। इसके लिये उसने यह सिफारिश की कि भारत सरकार को काली मिर्च विज्ञान कोष स्थापित करना चाहिए। निर्यात शुल्क में नए एक करोड़ रुपये अलग करके काली मिर्च के विज्ञान पर व्यय करना चाहिए। यह विज्ञान पौधे प्रदान करने के व्यवस्था करने, नये पौधे तैयार करने के लिये नर्सरियों की स्थापना करने, जड़ वाली कलमें देने, हानि वाली जेबों के नरले नरने लगे, रसनी रेतती का निस्तार करने, कीटाणुनाश और रोगों का निवृत्तण करने, समष्टि की अच्छी व्यवस्था करने, बगीचण के प्रतिमान निर्धारित करने, व्यवस्थित विभि की व्यवस्था करने

और उत्पादन, विनी आदि के विवर में आश्चर्यक जानकारी प्रदान करने आदि सभी के विषय में होगा।

समिति ने यह सुझाव भी दिया कि धारम्म में केन्द्रीय सरकार को सम्बद्ध राज्य सरकारों में परामर्श करके भारत के कानूनी सिब्वे उद्योग का विकास करने के लिये एक द्रम वर्षीय योजना तैयार करनी चाहिए, और इसे शीघ्रतः पूर्णक कार्यान्वित करना चाहिए।

वैज्ञानिक ढंग से खेती होने की आवश्यकता

रिपोर्ट के अनुसार ऐसी गवेषणा होने की अत्यन्त आवश्यकता है जिसमें वैज्ञानिक प्रणाली अपना कर काला मिर्च का रसनी का सर्व प्रथम जा सके। इसमें लिये यह विचारिण्य का यह है कि आन्तरीक बोधन और मन्थानार के मुख्य उत्पादक देशों में दो प्रादेशिक उपेन्द्र भी स्थापित निज पाय। यह भी बताया गया है कि आसाम का बलवायु मानावार तट वैसा ही है, अतः आसाम के निजित स्थानों में काली मिर्च की रसनी को लोकप्रिय करने के लिये जाय की जना चाहिए।

देश में खपत बढ़ाई जाय

कनचारिया तथा उपकरणी का रस्य प्रथम ने 1936 गवेषणा के रस प्रविष्टाक वेन्द्र तथा उपेन्द्र में अरुण मसाला तथा महान्तर फलपा के निरस में भी रसा सम्भव गवेषणा का काली चाहिए।

सवार की काली मिर्च मन्थन्या मय का पूरा तार पर पूरा करने क लिये देश में काली मिर्च का उत्पादन बढाने का निवास्त आवश्यकता है। युद्ध के बाद भाव बच जाने पर भी काली मिर्च का जला का क्षेत्र पचाव नहीं बना है। देश में इसकी उपेन्द्र जगत क लिय समिति ने ये विचारिण्य का है — (१) काली मिर्च के रसनी कल्याण बगवाच में रसका गलन रसनी को जाय, (२) रसनी उर्तमान बगवाच से पुराना हानिकारक रसनी उत्पाद कर यह रसनी लम्बई जाय और (३) बड़ा करा भी सम्भव हा नये क्षेत्रों में काली मिर्च उगाने के प्रयत्न विने जाय।

केन्द्रीय सलाहकार समिति

प्रस्तावित दस बरान योजना के अन्तर्गत विकास के जिन उपायों के अनुसर लिये गये हैं उनका निष्कर्षण करने के उद्देश्य से समिति ने सिका की है कि नास्त नरनार को मसाला के विकास क लिय एक छोटी सा केन्द्रीय सलाहकार समिति बना देनी चाहिए। के-उद्य समिति की सहायता के लिये तीन प्रादेशिक सलाहकार समितियाँ होनी चाहिए जिनमें से एक आन्तरीक केन्द्रीय क लिय दूसरा मन्थानार और गिरिणी कल्याण क लिये और तीसरा मैसूर, कुर्ग और उन्ना कल्याण के लिये हाना वर्गाण। प्रादेशिक समितियों में १० से अधिक व्यक्ति तथा हाने चाहिए किन्तु रान्त सरकार प्रमोदत करे। ये रान्त सरकारों कमचारिया, उत्पादकी, व्यापारिया और अरुण कल्याण कल्याण क प्रत्यक्षिण रूप हाना चाहिए। व्यापारिया और अरुण कल्याण कल्याण क प्रत्यक्षिण रूप हाना चाहिए। व्यापारिया और अरुण कल्याण कल्याण क प्रत्यक्षिण रूप हाना चाहिए।

वार होनी चाहिए और उन्हें अपने अपने क्षेत्रों में दम रसिय काली मिर्च योजना की प्रगति का सिद्धान्तिकन करने के लिये समस्त योजनाओं के विवर में अग्रणी गय देनी चाहिए निजसा मन्थन्य आगोजन, एकीकरण तथा विकास के विभिन्न उपायों के लिये रसपा निर्धारित करने में हो। दस वर्षीय योजना को समन्वयापूर्णक कार्यान्वित करने और उसके लिये दिने गये धन का उचित उपयोग करने का दानित तीन प्रादेशिक समितियों पर रहेगा।

काली मिर्च के तीन महत्वपूर्ण उत्पादक क्षेत्रों के लिये अलग अलग प्रादेशिक समितियाँ नियुक्त करने की सिफारिश का अग्रिमार्थ यही है कि इस प्रकार प्रत्येक क्षेत्र समस्त स्थानीय साधनों का अच्छला कारण उपयोग कर सके और हमारी अर्थ-व्यवस्था के इस महत्वपूर्ण अंग का विकास हाने में जनता का भी सहयोग मिल सके।

नई बेलें लगाने का टंग

काली मिर्च की बी बेलें बर्गाच में लगाय जाती हैं वे बहुत प्रकार की होती हैं। प्रत्येक क्षेत्र में अपना अपनी स्थानीय विरस होती हैं। काली मिर्च की रस एक बार लगाने ज्ञान क वा २० वर्ष तक चलती है। रस लिये इसकी पीष मजा अच्छला रस की लगाई जानी चाहिए और इसके लिये उत्पादन क्षेत्रों के विभिन्न स्थानों में बहुत सी सहयोगिण्य पावु करने की आवश्यकता है जहाँ में विरसनीय पीष मजा पचाय परिमाण में प्रदान की जा सके। निजित समितियों को रसनी पुरानी रसों हटा देने का धन करना चाहिए जिन्में अरुण वर्गाच फल नष्ट होता और सुकषण होता है। इसके स्थान पर ऐसी नष्ट बेलें लगा दी जानी चाहिए जो वर्षभर नियमित रूप में फलती रहती हैं। यह काम ५ वर्ष में करा जाना चाहिए। साधारण बन्धन लगाने की अनेकाल बढ जाती। कल्याण मसालों से रस में कृष बन्धने ज्ञान लयने हैं। रस लिय नरनार के बड काली बन्धने देते वा बन्धने होना चाहिए। पुरानी बेलें के स्थान पर नष्ट बेलें लगाने का काम विधि-पूर्वक होना चाहिए। प्रादेशिक वर्गाचों में प्रतिवर्ष केवल पचमाश बेलें बदली जानी चाहिए। दस प्रकार ५ वर्ष में रसनी बेलें बढ हो जायगी और बीच में विनी भी समय फलत ज्ञानी बढ नी महा होगी। दस के लिये उरवा दस को पचाय प्रोत्साहन प्रदान करना चाहिये। यह विद्ध रसि का चुका है कि काली मिर्च के बराना का उत्पादन, उपाय करने से बड सकता है। अरुण इसके लिये सा- दन के उपयुक्त प्रयोग विने जाने चाहिए।

काली मिर्च में एक प्रकार का उत्पन्नान तय ना हाना है। इसे निस्तानत का सिब्वे र विरस में मा जाय रानी चाहिए। परन्तु दस काम के लिये रसय दस काली मिर्च का जाली चाहिए जिसका और नोट उपयोग नष्ट हाना।

नष्ट मिर्च तैयार करने और उसे ला-उत्पद दग से खराने की सम्माना तथा पर भी निवार करने का विरोध आवश्यकता है।

निर्घात बढ़ाने के यत्न

भारतीय काली मिर्च के मुदाय एन्टोपार अमेरिका और ब्रिटेन है। इन देशों में दिन अन्त्य देशों की काली मिर्च आती है उन्हेने अपने माल की उपत नजने के लिये यहा विशेष सगठन स्थापित कर रहे हैं। दूसरी ओर भारतीय उपत पुराने रिवाजों के अनुसार अपने माग्य भरीसे होती प्लाती आ रही है। समिति ने सिफारिश की है कि केन्द्रीय सरकार का न्युयार्क और लन्दन में ऐसे निर्घात वृद्धि सगठन विशेषतः स्थापित करने चाहिये जिनका उद्देश्य भारतीय काली मिर्च और अन्त्य मंगालों की उपत बढ़ाना हो। यह कार्य ऐसे ही अन्य सगठनों में सहयोग करते हुए किया जाय। न्युयार्क में इस समय भारत की निस निर्घात वृद्धि एडेन्स का प्रधान कार्यालय है उन्हे ही अमेरिका, ब्रनाडा और अमरीका महाद्वीप के अन्य देशों में उपत बनाने का काम सौंप देना चाहिए। इसी प्रकार लन्दन में जो एडेन्सी है उसे ब्रिटेन और अन्त्य यूरोपाय देशों में यह उपत बढ़ाने का कार्य सौंप जाना चाहिए।

सहकारिता से लाभ उठाया जाय

समिति के मतानुसार काली मिर्च की बिक्री में सरकारी नगठन का

अथ तक कोई विशेष माग नहीं रहा है। काली मिर्च को उगाने वाला में ६० प्रतिशत से भी अधिक व्यक्ति छोटे परिमाण पर यह काम करते हैं। ऐसी दशा में इसकी बिक्री को सहकारिता के ढंग पर आगे बढ़ाने में बड़ा लाभ हो सकता है। अतः मुख्य बाजारों में माग की बिक्री का प्रबन्ध करने के लिये उत्पादकों की सरकारी समितियाँ बनाने की अत्यन्त आवश्यकता है। इन समितियों को धारे धारे संगठित करके जिला सगठन बनाने चाहिये और उन्हें फिर प्रादेशिक अथवा राज्य के सगठन के अन्तर्गत ले आना चाहिए। केन्द्रीय और राज्य की सरकारों को ऐसी सहकारी समितियों के सगठन को प्रोत्साहन देना चाहिए और उनके सभा को निर्घात व्यापार में माग लेने के लिये सब प्रकार की सुविधाएँ देना चाहिए। इन सुविधाओं में गांठों आदि की व्यवस्था करने के लिए ऋण अथवा सहायता आदि सम्मिलित होनी चाहिए।

समिति ने जो अन्तः सिफारिशें की हैं उनमें आकड़े रखने की आवश्यकता, निर्घात योग्य माल या प्रतिमानोंकरण, मीटो को शत, छोटे उत्पादकों के लाभ के लिए राजाओं के नियन्त्रण, सडक परिवहन का सुधार, महत्वपूर्ण राज्यों में बाजार की जानकारी देना का व्यवस्था आदि उल्लेखनीय हैं। आल इण्डिया रेड्या से प्रतिनिधि बाजार की जानकारी का प्रसार किये जाने की भी सिफारिश की गई है।

हिन्दी संसार को 'सम्पदा' के तीन सुन्दर उपहार

यों तो सम्पदा का प्रत्येक अंक ही स्वाधीन साहित्य की सामग्री है, क्योंकि उसमें देश की विविध आर्थिक समस्याओं—उद्योग, व्यापार, कृषि, स्वास्थ्य, बीमा, बैंक और राज्यों की आर्थिक प्रगतियों आदि पर गम्भीर ज्ञानपूर्ण सामग्री रहती है, किन्तु तीन विशेषांक तो अमूल्य, अतुल्य तथा हिन्दी पत्रकारिता में गर्व की वस्तु हैं—

योजना-अंक (भारत की पंचवषय योजना पर प्रासाधिक व शनकर्मक सामग्री)

Hindi readers will benefit immensely from this publication
The best guide for digesting and understanding the economic situation of the country.

—आर्गेनाइजर

—कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री

भूमि सुधार-अंक (भारत की भूमि-सम्बन्धी समस्याओं पर अद्भुत अंक)

All this makes this number almost a reference number and deserves a place in all libraries and on every social worker's and patriot's table

—महराष्ट्रा (पूना)

—आज

वस्त्र-उद्योग-अंक (भारत के प्रमुखतम उद्योग पर प्रासाधिक जानकारी)

इस अंक के पीछे काफी श्रम किया गया है। सम्पादक को उपाई स्वागत योग्य प्रयत्न—उत्कृष्ट प्रनाशन के लिए वगैरे
It will fill a want in Hindi commercial literature
तीनों का प्रथक प्रथक मूल्य १)-१) और १)। २) भेजकर तीनों अंक एक साथ मंगाइये। १९५० व १९५३ की कुछ फाइलें भी मिल सकती हैं।
मूल्य २) प्रत्येक वर्ष

—धनश्यामदास विडला

—ला० भरतराम दिल्ली कलाय मिल्स

—R. G. Sanyal

मैनेजर—सम्पदा अशोक प्रकाशन मन्दिर, रोशनारा रोड, दिल्ली।

*** देश में मूलभूत रासायनिक पदार्थों से दवाइयां बनाने का यत्न होना चाहिए

औषध-निर्माण को प्रोत्साहन दिया जाय

जांच समिति की रिपोर्ट प्रकाशित : महत्वपूर्णा सिफारिशें

देश में दवा बनाने की प्रोपधियों की भरमार है। इन पर नियंत्रण रखना आर देश में उनके निर्माण को प्रोत्साहन देना आवश्यक है। इस समय देश में १६४३ कारखाने औषधियां तैयार करते हैं। इन के उत्पादन काय को ठीक ढंग से चलाना भी आवश्यक है। भारत सरकार ने औषधि निर्माण उद्योग की जांच करने के लिये जा समिति नियुक्त की थी। उसने अपना रिपोर्ट में बहुत सी महत्वपूर्ण सिफारिशें की हैं।

देश में प्रतिया और नकल आपधियों का गन्नाम के लिये जुरान और कद के प्रस्ताव किन गये हैं।

औषधि निर्माण उद्योग को अच्छे आधार पर लाने के लिये आवश्यक गवेषणा और चिकीत्सा आदि के लिये भी अनेक सिफारिशें की गई हैं।

औषधियों की किस्म अच्छी रखने के यत्न हों

देश में औषधि निर्माण उद्योग की जांच करने के लिये भारत सरकार ने मार्च १९५३ में एक समिति नियुक्त की थी। समिति की इस उद्योग की जांच करने एसे उपाय सुझाने का भी निदेश दिया गया था किन्तु सहायता में इस उद्योग का अच्छे ढंग पर संगठन किया जा सके। समिति ने जांच करने के पश्चात् गत कुछ मास में अपनी रिपोर्ट भारत सरकार को प्रस्तुत कर दी। चिकित्सा और स्वास्थ्य के भूतदूत डॉक्टर जनरल और हैराफाट सरकार के चिकित्सा विभाग के जर्मन सचिव मेजर जनरल एम० एल० मादिया समिति के अध्यक्ष और डॉ० बी० शाह मंत्री थे। इनके अतिरिक्त डॉ० ने० ब्रह्मदेव राव डॉ० बी० बा० राय, डॉ० ए० ए० गोय, डॉ० टी० एन० बनर्जी, डॉ० आर० मा० शाह डॉ० टी० आर० शेफाट्टे, डॉ० एन० आर० नातकी श्री जे० आर० चन्द्रन, श्री पी० एम० नावर और डॉ० ए० नागजन राव सदस्य थे।

समिति ने समस्त स्थिति पर विचार करके बड़ी विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसमें हमने ऊपर सिफारिशें की हैं। संक्षेप से वे निम्न प्रकार के महत्त्व रखती हैं : औषधि निर्माण उद्योग के क्षेत्र में विनियम किया जाना। विदेशियों को इस उद्योग में ब्रिज मिदालता पर भाग लेने इजाजत। औषधि अधिनियम और उसके अन्वयन बनाने का विद्यमान है। इस सहायता करना किन्तु औषधियों का निर्माण को अच्छी तरह से नियंत्रण किया जा सके। वे मशीनरी इस अधिनियम तब उमने निर्माण सम्बन्ध प्रशासन के क्षेत्राधिकार करने और औषधि विनियमन कापकता को लादेनेन अने म पूर्व

उन्के स्थान, उपकरण, परीक्षण सम्बन्धी सुविधाओं और प्रामाणिक बम चारियों के नियम में निश्चय कर लेने के विद्यमान होंगे। उद्योग (विनियम और निश्चय) अधिनियम में संशोधन किया जाय और उद्योग का ठीक ढंग में विनियम करने और दानों अधिनियम में मध्य अधिक अच्छा एक्सीरपण करने के लिये विनियम परिपट्ट स्थापित की जाय। गवेषणा और प्रशिक्षण की वर्तमान सुविधाओं में विस्तार किया जाय। औषधियां और औषधि के निरक्षण की वर्तमान दृश्यता वा संगठन किया जाय।

उद्योग का क्षेत्र

उद्योग के क्षेत्र के विद्यमान है समिति का मत है कि औषधि निर्माण कारखानों की केन्द्र औषधि की गोलीया, टाब्लेट आदि ही नहीं बनाना चाहिए बल्कि यह प्रयत्न करना चाहिए कि मूलभूत रासायनिक पदार्थ आदि में उच्छेष्ट प्रदान का अधिक से अधिक आधेपे तंत्र का काय। वे औषधों के निर्माण परियोजना में वैज्ञानिक का जाला चाहिए विनियम न केवल उन कारखानों की रूपनी आवश्यकता है परी हो मने वरन उन अन्य कारखानों को भी वे मिल सके जो उनका प्रयोग करने हैं। समिति ने सिफारिश की है कि सरकार को अन्वयन कारखानों में उच्छेष्ट रासायनिक पदार्थ और औषधियां तैयार करना चाहिए। वही उन निर्माण प्रयत्न द्वारा उन्हें वैज्ञानिक का मने वरन कारखानों का अन्वयन कर सकते हैं।

समिति ने वही भी सिफारिश की है कि सरकार औषधि मन्त्रालय के

(गवर्नमेन्ट मेडीकल स्कोल डिपो) के निर्माण कार्य का नये सिरे से व्यापारी-टंग पर संगठन किया जाना चाहिए। इन केन्द्रों के संग्रह सम्बन्धी कार्य को राज्य सरकारों के सौंप देना चाहिए। यदि राज्य सरकारें इन्हें लेने में अग्र-मर्थ हों तो समिति के मत से इन्हें बन्द कर देना चाहिए। सरकारी कारखानों में औद्योगिक ढग की भशानें लगाने और निर्माण की औद्युनिक प्रणालिया चालू करने की भी निफारिओं की गर्द है। समिति ने यह सुझाव भी दिया है कि कुनैन तथा मेथेरिया नाशक अग्र्य औपयो का विदेशी में आयात घटा कर कुनैन बनाने वाले देशों कारखानों को सहायता करने चाहिए। इसके अतिरिक्त इन वस्तुओं पर सीमा शुल्क भी लिया जाना चाहिए।

पेनिसिलीन के कारखाने का विस्तार

समिति का यह भी सुझाव है कि पिम्परी में दस समय पेनिसिलीन का जो कारखाना बनाया जा रहा है उसमें और विस्तार किया जाय जिससे उसमें स्ट्रेप्टो-माइसिन, केमीथिराप्यूटिक उत्पादन भी किए जा सकें। इनमें मलेरिया नाशक और सल्फा ड्रग तथा विटामिन बनाने का विशेषतः उल्लेख किया गया है। समिति ने सिफारिश की है कि या तो इन कारखानों में ही विस्तार कर दिया जाय अथवा देश को शेष आवश्यकता पूरी करने के लिये निजी ध्यक्तियों को इन्हें तैयार करने को अनुमति दे दी जानी चाहिए।

बन्दर और मद्रान सरकारों के शाक लीजर आयन के कारखानों के निर्माण और किसी व्याख्या में एकीकरण का जो अभाव है, उनको आलोचना करते हुए समिति ने कहा है कि इन कारखानों को अपने उत्पादनों के एक में प्रतिमान, पैकिंग और मूहन तथा नाम रखने चाहिए।

मूलभूत रासायनिक पदार्थों का निर्माण

निजी क्षेत्र के नियम में समिति का कहना है कि विदेशी नियन्त्रण में चलने वाली अधिकांश फर्मों में मुख्यतः विदेशों से मगार्द गर्द औपयियों से टिकिया, गोलिया, मरहम, इंजेक्शन आदि तैयार किया जाता है। उनके इस काम में ऐसी कोई विशेष योग्यता अथवा अनुभव की आवश्यकता नहीं पडती जो देशी निर्माताओं में न हो। अतः समिति का मत है कि इन फर्मों को भी मूलभूत रासायनिक पदार्थों में आरम्भ करके विशाल परिमाण पर औपयें तैयार करनी चाहिए। यदि मूलभूत रासायनिक पदार्थों के निर्माण से काम आरम्भ न किया जा सके तो मध्यमता अरुधता में उन वस्तुओं से निर्माण आरम्भ किया जाय जो मूलभूत रासायनिक पदार्थों के अत्यन्त निकट हो। उनके निर्माण में योजना ऐसी होनी चाहिए जिसमें केवल अपने ही नहीं बरक वैगो ही अन्य फर्मों को आरश्यकताएँ भी पूरी हो सकें। इन सभी विदेशी फर्मों के पास अपने देशों में आवश्यक अनुभव, पूँजी और मधेयता के साधन उपलब्ध हैं जिनकी सहायता से वे यहां के उत्पादन में होने वाली कठिनाइया दूर कर सकती हैं।

नौ न के कारखाने व्यापारिक दृष्टि में लाभजनक माने जा सकते हैं दस सम्बन्ध में समिति का कहना है कि माग की कमी देखकर निर्माण कार्य निपाय होकर बन्द नहीं कर देना चाहिए। यदि माग कम हो तो भी

निर्माण कार्य जारी रहना चाहिए। सरकार को चाहिए कि वह ऐसे कारखानों का विदेशी प्रतिस्पर्धा से तब तक संरक्षण करे जब तक कि देश में उनके उत्पादनों-की माग पर्याप्त बत न जाय।

सरकारी विनियमन की आवश्यकता

समिति का मत है कि देश में अग्र किसी भी विदेशी फर्म को अपना कारखाना खोलने को अनुमति तब तक नहीं देनी चाहिए जब तक कि वह नई औपयिणा अथवा वे औपयिणा बनाने का वचन न दे जो अग्र्य कारखानों में पर्याप्त परिमाण में नहीं बनाई जाती। प्रतिस्पर्धा को बनाने के लिये सरकार को किसी एक ही औपयि के निर्माण की अनुमति अनेक फर्मों को नहीं देनी चाहिए। कुछ भारतीय और विदेशी फर्मों और विदेशी फर्मों की भारत स्थित शाखाओं अथवा उप-कार्यालयों तथा उनके अपने देशों में स्थित मुख्य कार्यालयों के मध्य हुए बराबरा का विवेकपूर्ण करने के पश्चात समिति का कहना है कि इन कार्यों में भिन्न-भिन्न प्रकार की शर्तें रखी गई हैं और कोई स्पष्ट निर्देशक सिद्धान्त नहीं रखे गये हैं। समिति ने कुछ ऐसे मोटे सिद्धान्त भी निर्धारित किये हैं जिनके अनुसार विदेशी फर्मों को औपयि निर्माण उद्योग में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिए। सरकार को वर्तमान करारों को जांच करनी चाहिए जिनमें उन्हें इन सिद्धान्तों के अनु-रूप बनाया जा सके।

निश्चित प्रतिमान से घटिया औपयिणा न बन सकें इस लिये समिति ने औपयि निर्माता कारखानों के लिये न्यूनतम आवश्यक स्थान, उपकरण और योग्य कर्मचारियों के नियम में भी निश्चय कर दिया है। उसकी सिफारिश है कि कारखानों के उपकरणों और कर्म-चारियों की योग्यताओं की जांच होगी चाहिए और यदि वे उचित समय के भीतर आवश्यक शर्तें पूरी न करें तो उनके लाइसेंस खीन लेने चाहिए।

पेटेन्ट कानून

पेटेन्ट कानून के नियम में समिति ने कहा है कि इसके कारण भारत में कृत्रिम औपयि निर्माण उद्योग के विकास में बाधा पडती है। प्रायः सभी औपयों के पेटेन्ट विदेशी फर्मों के पास हैं जो या तो उनके अनुसार भारत में निर्माण सप्य होना स्वीकार ही नहीं करती अथवा भारी राखटी लेकर ही अनुमति देने को तैयार होती हैं। सरकार से दस नियम में विचार करने का अनुपात किया गया है कि क्या अन्तर्राष्ट्रीय पेटेन्ट नियमों को रद्द किया जा सकता है जिनमें देश में सल्फा ड्रग, विटामिन, होरमोन आदि आरश्यक औपयों का निर्माण विदेशी फर्मों ने भारी राखटी टिये बिना ही किया जा सके।

समिति ने यह भी कहा है कि औपयि बनाने वाले १९४३ कारखानों में से १,५६८ छोटे परिमाण पर चलते हैं। इनमें से बहुत से अस्वास्थ्यकर स्थानों पर स्थित हैं और उनके उपकरण पुराने ढंग के तथा अपर्याप्त हैं। अधिकांश न निर्माण कार्य शिक्षित और प्रामाणिक कर्मचारियों की देख-रेख में नहीं होता। इनके पास कच्चे माल अथवा तैयार वस्तुओं की

विश्वों की परीक्षा करने के लिए कोई प्रयोगशालाएँ भी नहीं हैं। इसलिए समिति ने यह सिफारिश की है कि जो कारखाने समिति द्वारा निर्धारित स्थान, उपकरण और कर्मचारियों विपन्न स्थूलतः शतों परी न करें उन्हें लाइसेंस रद्द कर के उन्हें बन्द कर देना चाहिए। जिन फर्मों की टिका प्रकृत हो उन्हें इसका प्रबंध कर लेने के लिये एक वर्ष का समय देना चाहिए। समिति ने यह भी सुझाव दिया है कि जो फर्म उक्त शर्तों को अलग अलग पूर्ण करने में असमर्थ हो उन्हें चाहिए कि वे आपस में मिलकर महानगी आधार पर इनके पूर्ण करने का प्रबंध करें।

कच्चे माल का प्रबन्ध

उद्योगों को कच्चा माल मिलने में प्रायः पर समिति ने कहा है कि जहाँ कहीं कच्चे माल के साधन उपलब्ध होते हैं वहाँ भाँजे कच्चे माल का इकट्ठा करने, समूह करने और उसकी बिक्री की व्यवस्था करने के उचित साधन उपलब्ध न होने के कारण यह उद्योगों को नहीं मिल पाता। इसमें अतिरिक्त कहीं-कहीं सरकार द्वारा आप्र तथा अन्य उद्देश्यों से उसका प्राप्ति पर कड़ा नियन्त्रण चिन्ते जाने के कारण उसमें उद्योगों तक पहुँचने में बाधा पड़ती है।

श्रीपथि तैयार करने के पौधा के इकट्ठा करने, समूह करने और उनकी बिना व्यवस्था करने के लिये संगठन स्थापित होने का आवश्यकता है। केन्द्र तथा राज्यों का इन पौधों की उपज बढ़ाने के लिये प्रोत्साहन देना चाहिए। इन्हें वैज्ञानिक दृष्टि से पैदा करना चाहिए और इनके पर सघ्न कार्य के लिये अनुदान दिए जाने चाहिए। विभिन्न राज्यों और अन्य संगठनों द्वारा श्रीपथियों के पौधों की खेतों के परीक्षण के लिये भाँजे एक समूह का मुकाव दिया गया है।

उद्योगों को इयाटल एलकोहोल प्राप्त करने में जो श्रद्धा हो रही है उसमें लिये समिति ने सिफारिश का है कि उत्पादन कर सम्बन्धी विशेष समिति ने जो सिफारिशें की हैं उन्हें तत्काल ही कार्यान्वित किया जाना चाहिए।

तारकोल के उत्पादन की प्राप्ति में सुविधा करने की दृष्टि से समिति ने अनेक उपाय सुझाये हैं। ये इस प्रकार हैं (१) तारकोल को पोषक कारखानों तक ले जाने के लिये लेन ट्रेन चालने पत्रात लिखे दिना ज्ञाप, (२) कोक नदी जले कक्षाता के लिये बैजल का उत्पादन भी अतिव्यापक कर दिया जान, (३) वेजेल पर न उत्पादन कर हटा दिया जान, (४) इयाटल के कारखाना द्वारा उनकी भट्टियों में तारकोल का जलाया जाना बन्द कर दिया जान, और (५) सम्बन्ध द्वारा उत्पादन में न उत्पादन बनाए किन्ते पात्र जन्ते निजा कारखाने तैयार नष्ट करते।

मुंबादल एलकोहोल पर लगे हुए प्रतिबन्धों का हटाने का भी समिति ने सिफारिश की है, जिसमें वय न कृत्रिम श्रीपथि उत्पाद का विनाश होने में सहानुभूति मिले और न.प.रक्षा तथा परीक्षणशालाओं में भाँजे दान के उत्पादन का प्रबंध।

उद्योगों को पशुओं की जिन ग्रन्थियों (Glands) आप्र अर्थात् की आवश्यकता होती है उन्हें उपलब्ध करने के लिये समिति ने सुझाव दिया

है कि मसालों समिति ने बम्बई राज्य के कर्णाटखानों में और विशेषतः बंटे जाने वाले पशुओं की ग्रन्थियों और आप्र सुरक्षित करने की उनमें जो व्यवस्था है उसे उन्नत करने सम्बन्धी जो सिफारिशें की हैं वे कार्यान्वित होने चाहिए। देश में अन्य कर्णाटखानों में भी यह प्रबन्ध किया जाना चाहिए।

आवश्यक औपधियों का उत्पादन

समिति ने कुछ ऐसी आवश्यक औपधियों की सूची तैयार की है जिनमें उत्पादन को प्रोत्साहन देना चाहिए। साथ ही यह भी सुझाव दिया है कि निरापराध द्वारा इनकी अधिक व्यापक सूची तैयार की जाना चाहिए। इन विशेषों में चिकित्सकी, निर्माताओं और सरकार के प्रतिनिधि होने चाहिए। समय-समय पर इस सूची में संशोधन भी हाते रहन चाहिए। इन औपधियों की देश में कितनी मांग हो सकता है उद्योगों में समिति ने दिये हैं।

देश में आवश्यक औपधियों के निर्माण को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए कच्चे माल, आवश्यक मशीनों और वैज्ञानिक उपकरणों के आयात शुल्क में कमी करने के भी सुझाव दिये गये हैं।

औपधियों के वर्तमान नियन्त्रण के दौर दूर करने और तैयार औपधियों के प्रतिमानों में एकसूत्रता लाने की दृष्टि से समिति ने सिफारिश की है कि औपधि अधिनियम (Drugs Act) के प्रशासन को केन्द्र के अधीन कर देना चाहिए और इस समय राज्यों के औपधि नियन्त्रक निर्माण, बिक्री और वितरण का जो नियन्त्रण करते हैं वह औपधि नियन्त्रक (मायत) के अधीन कर देना चाहिए। वैश्रीन स्वास्थ्य मन्त्रालय के अधीन एक औपधि नियन्त्रण विभाग भी खोला जाना चाहिए।

औपधि अधिनियम का संशोधन

घटिया और नकली औपधियों के निर्माण को रोकने के लिए परीक्षण का सुविधाओं की व्यवस्था का सुझाव देते हुए औपधि अधिनियम और उसके अधीन बनाने गये नियमों में अनेक संशोधन चिन्ते जाने की सिफारिशें की गई हैं। इसके लिए "निर्मिता और "औपधि" की नवी परिभाषाएँ की गई हैं। गुण गुणवत्ता वाला आप्रों का बिक्री को अनुमति न देने, नकली और पाँधा औपधियों का बजार देवने व लिये बांधा जुमाने और कड़ा कर देने, आप्रों के नाम और पते का प्रचार कर देने और उसका लाइसेंस रद्द कर देना, नकली उत्पादों का उत्पादन भी जुर्म करार देना, जिला मास्टरों की अनुमति लिये बिना नकली उत्पादों का तैयारी लेना के दृष्टि दम्बेकर को अधिष्ठात केन के संस्थापकों की ना सिफारिशें की गई हैं। इनमें अतिरिक्त औपधि नियमों में उत्पादन के स्थान, उपकरण और प्रयोगिक कर्मचारियों सम्बन्धी आदि तथा औपधियों का आयात, निर्माण और बिक्री पर लागू किये हुए नैन आग्र कच्चा आप्रों देवने बाधा का भी लाइसेंस देने का व्यवस्था करने के संशोधन सुझाव गये हैं।

कलकत्ता का औपधि प्रयोगशाला के कर्मचारियों के देवता भी सिफारिशें की गई हैं।

श्रोपधि निर्माण विकास परिषद

ममिति ने उद्योग (विनास और निमयन) अधिनियम में भी कई संशोधन करने की सिफारिशें की हैं जिससे छोटे कारखानों के विकास का निम्नलिखित किया जा सके और उत्पादन की संशोधित प्रणाली के अनुसार श्रोपधियों और श्रोपधों के उत्पादन को लाइसेंस प्रणाली के अन्तर्गत ले आया जाय। श्रोपधों और श्रोपधियों के लिये एक विकास परिषद बनाने की भी सिफारिश की गई है। यह परिषद उद्योग के विनास को युक्तियुक्त ढंग पर चलायेगी और ममिति की सिफारिशों की कार्यान्वित करायेंगी।

विश्व विद्यालयों, मरवागी मस्वाद्या और व्यापारी फर्मों द्वारा इस मन्त्रालय में दूसरे समान को गवर्नेन्स कार्य हो रहा है उसके विस्तार और एकीकरण के लिये भी ममिति ने सिफारिश की है। ममिति का मत है कि इधर बड़ी तेजी के साथ नये प्रकार की बहुत-सी दवाइयां जाकार में आ रही हैं और उनका जो प्रभाव होता है उसकी परीक्षा नहीं की जा सकती है। अतः एक ऐसा विशेषज्ञ मण्डल नियुक्त किया जाना चाहिए जो नए श्रोपधियों के प्रिय में समय-समय पर सूचित करता रहे। ये सूचनाएं प्रकाशित की जानी चाहिए। इनके प्रयोग की व्यवस्था भी होनी चाहिए। सैनिक अस्पतालों और डाक्टरों की शिक्षा देने वाली संस्थाओं के साथ सलम अस्पतालों में इनके प्रयोग विशेषतः करके देखने चाहिए।

विनगरा काये

वितरण के विषय में सामाजिक समाधान है कि उचित मूल्य प्रणाली लागू की जानी चाहिए जिसके अन्तर्गत एक ऐसे समूह द्वारा प्रत्येक श्रोपधि और दवाइ की विक्री के मूल्य निर्धारित कर देने चाहिए। यह निर्धारण कार्य एक समूह को मिला जाय जिसमें सरकार और व्यापारियों दोनों के ही प्रतिनिधि रहे। थोड़ा विक्री के मूल्य ऐसे २६ जिमसे खुदरा विक्रेताओं को भी उचित लाभ मिल जाय। उचित मूल्य में भी मस्ते टामो पर बेचने की प्रवृत्ति रोकी जानी चाहिए।

हाल में ही जो विज्ञापन नियंत्रण पास हुआ है उसमें झूठे विज्ञापन-

दाताओं के विरुद्ध कार्रवाई करने के लिये अधिनियम को पर्याप्त अधिकाधिक मिल गये हैं। परन्तु ममिति की सिफारिश है कि पत्रों और विशेषतः देश भाषाओं के पत्रों का ऐस मिशन न प्रकाशित करने को प्रयास करना लेना चाहिए। यदि आवश्यक हो तो सरकार की ओर से भी इन्हें रोक्ने के लिये कार्रवाई होनी चाहिए।

ममिति ने इस बात पर बल दिया है कि श्रोपधि उद्योग और चिकित्सकों के मध्य अल्पसंख्यक सहयोग होना चाहिए जिससे जनता देश में बनी श्रोपधियों पर विश्वास करने लगे। दोनों को मिलकर एक परीक्षण शालाएँ स्थापित करनी चाहिए जो नई दवाइयों की परीक्षा करके प्रमाण पत्र दें।

ममिति का मत है कि इस समय देश में विदेशों से आया हुआ अव्ययता में अधिकाधिक श्रोपधि भी पड़ी है। वेकार श्रोपधियों के आ जाने में हमारी विदेशी निम्निय का व्यवस्था पर भार पड़ता है। अतः विशेषतः एक ममिति द्वारा आवश्यक श्रोपधियों की सूची बनाई जानी चाहिए जिसमें महायता में देश में श्रोपधियों के उत्पादन और आयात का निम्नलिखित किया जा सके। दूध तैयार दवाइयों की भण्डार हो जाने से डाक्टरों द्वारा उपस्था लिखने की कला को धक्का लग रहा है। यदि यह प्रवृत्ति बढ़ने दी गई तो फिर डाक्टरों केवल बनी बनाई दवाइयों का ही प्रयोग करने लगेंगे।

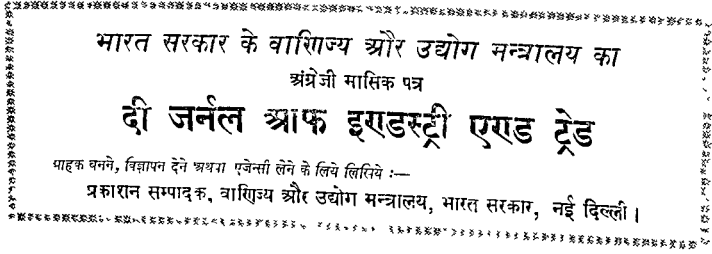
ममिति का यह भी मत है कि श्रोपधि देने का कार्य केवल फार्मेसी वालों का होना चाहिए। एक व्यक्ति की या तो डाक्टर के रूप में रजिस्ट्री करनी चाहिए या फार्मेसी वाले के रूप में, दाना के रूप में बनी नहीं। डाक्टर अपने रोगियों के लिये दवा बनाकर दे सकते हैं। इस कार्य के लिये उन्हें प्रमाणित योग्यता देने के लिये रजिस्ट्रार चाहिए। फार्मेसी चलाने के काम से सम्मान पूर्ण माने जाने की आवश्यकता पर ममिति ने बल दिया है और इन कार्य को करने जालों के लिये शिक्षण व्यवस्था के लिये सिफारिश की है। फार्मेसी अथवा श्रोपधि निर्माण की शिक्षा देने के लिये प्रत्येक राज्य में और एक केन्द्रीय शिक्षण शाला स्थापित होनी चाहिए और फार्मेसी अधिनियम समस्त देश में लागू कर दिया जाना चाहिए।



भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय का अंग्रेजी मासिक पत्र दी जर्नल आफ इण्डस्ट्री एण्ड ट्रेड

पाहक बनने, विज्ञापन देने अथवा एजेंसी लेने के लिये लिखिये :-

प्रकाशन सम्पादक, वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।



संसद का विगत अधिवेशन

कपड़ा और जूट उद्योगों का युक्तियुक्त संगठन

उद्योग और व्यापार सम्बन्धी अनेक विधेयक और प्रस्ताव

समय के गत परिग्रहान से, जो २० मिनटपर १६४४ का समाप्त हुआ, व्यापार और उद्योग के सम्बन्ध में अनेक विधेयक, प्रस्ताव आदि पाम किये गए। भारतीय सोमाशुल्क (द्वितीय संशोधन) विधेयक आयरन संशोधन विधेयक आदि इनमें मुख्य हैं।

रजिड उत्पादन और विक्री व्यवस्था) संशोधन विधेयक, और काका बाजार विस्तार (संशोधन) विधेयक नियमक प्रवर समिति की रिपोर्टें समझ में उपस्थित की गईं।

कपड़ा और जूट उद्योग का युक्तियुक्त संगठन करने के पक्ष में एक प्रस्ताव पाम किया गया। वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री टाउटो० कृष्णमाचारा ने इस प्रकार संगठित कारखानों पर एका पर लगान का सुझाव उपस्थित किया जिससे इस सम्बन्ध में पैसा हो जान वाल मजदूरों का नुकसान टा जाय।

चालू वित्तीय वर्ष के लिये २१४ ६१ करोड २०० की पूरक मांगे भी स्वीकार की गईं।

जूट, रूई और खाद्य पदार्थों का नियन्त्रण अधिकार

समय का गत अधिवेशन २२ अगस्त में आरम्भ हुआ ३० नवम्बर १६५५ का समाप्त हो गया। इसमें अधिवेशन (त्रितीय संशोधन) का एक पाम किया गया। इसके द्वारा नानवान का मालवा अनुसूची में ली गई नियम सूची में संशोधन करके केन्द्र का नर, नर, माय पर्यट आदि के नियन्त्रण के अधिनियम दिने गये हैं।

भारतीय सोमाशुल्क (द्वितीय संशोधन) विधेयक—इस विधेयक द्वारा आयात का २६ मश का शुल्क बनाने का प्रस्ताव किया गया है, इस भी गत अधिवेशन में समस्त पाम कर दिया। बड़े हुए शुल्क ११ नवम्बर १६५५ में लागू हो गए हैं। जिन प्रस्तुत के शुल्क बड़े हैं उनमें पोसिले, अलवारी की रूई, शरावे, उना वरुड, मफटा रज के ब्लैड आदि प्रमुख हैं। इस प्रकार ५५ करोड ६० को आयात ब्राय होगी।

इस विधेयक द्वारा सोमाशुल्क बन्दीशन के परामर्श ने कुछ उद्योग का सरक्षण बनाने तथा बापया और कुछ का समाप्त कर दिया जायगा। जिनका सरक्षण जारी रहगा वे ये हैं—सफ़ात फल, कोकोआ चूने और चाकनेट, बारकोनेट, फोटोग्राफी के गमार्गनिक पदार्थ, सूत और बाला के पट्टे, काच की चादरे, अलौह धातुए, अलुमीनियम, एरगोमनी, विजली के मोटर, पाल मेयरिन, गाम्बिज विजली की बत्तियों के पतिल के टरसे, बार्सिकिज उद्योग।

२ जनवरी १६५५ में इटिकेन लालपैना का सरक्षण समाप्त हो जायगा।

आयकर अधिनियम संशोधन विधेयक

इस विधेयक का पाम हो गया। इसके द्वारा उन व्यक्तियों की आय पर कर लगाया जा महेगा जो विजुला अर्थ में आयकर से बच गये हैं। ऐसे मामला की नियतने की प्रणाली मा नियमक में रे दी गई है।

इस सम्बन्धी कुछ बानुने की रज्जू और कश्मोर में भी लागू करने विषय एक विवेक में पाम किया गया। इसके द्वारा आयकर, सोमाशुल्क और उत्पादन कर सम्बन्धी भारतीय जन्तु को आयकरक परिवर्तना के साथ गडय में लागू किया गया है। माय रिपिट पर रज्जू और कश्मोर की सरकार ही १० वर्ष तक शुल्क नैती रहेगी।

मशीन से बनी वीडियों पर कर

मशान से बनने वाली गान्ठियों पर ० जुलाई १६५५ को एक आयकर देश निबान कर रे ६० प्रति हजार का उत्पादन कर लगाया गया था। इस आयकरके के स्थान पर केन्द्रीय उत्पादन कर और नमक (संशोधन) अधिनियम पाम किया गया।

प्रश्नोत्तरों द्वारा भी समझ में बहुत ही व्यापार और उद्योग सम्बन्धी जानकारी उपस्थित की गई।

३१ मार्च १६५६ को लोहा और दहान नियन्त्रण समाप्त कर में १६,५०,६७,६५० ६० थे। सरकार ने इसके आधार पर ताला आयात

एण्ट स्टील कम्पनी और इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी को नगम-टम टल करोट रु० का श्रृणु देना स्वीकार कर लिया है। इन श्रृणु पर १ जुलाई १९५४ तम बॉर्ड ध्यात नहीं लिया जायगा। बाद को न्याज की दर और वापसी का दर सामाज्युक्त कमिशन के परामर्श से तय किया जायगा।

कपड़ा मिलों में चार करघे क्री प्रणाली

चार करघा की प्रणाली कई जगह से धीरे धीरे कुछ मिलों में चालू की जा रही है। इस समय यमनई औद्योगिक समन्वय अधिनिगम के अधीन ६ मिला में यह प्रणाली चालू की जा रही है। अहमदाबाद में मीलों और मजदूरों के समठनों में इस चालू करने के विषय में सम्झौता हो चुका है। यमनई में इसके कारण ५६०० बम मजदूरों की आवश्यकता होगी परन्तु इन कारण मिला मजदूर का निराला नहीं जायगा। अहमदाबाद में जो मजदूर उनार होंगे वे वापस पाली में लय जायेंगे।

खेल के सामान का उद्योग

भारत में इस उद्योग के आगे मुख्य बढिनाइया शहदत की लकड़ी और शिशित कारिगरो की हैं। इन्हे दूर करने के लिये पञ्जाब तथा उत्तर प्रदेश के वन विभागों ने शहदत के पेड लगाने आरम्भ किये हैं। अग्नि की शहदत की लकड़ी का आयात मुले सामान लाइसेन्स द्वारा करने की अनुमति दे दी गई है।

मेरठ में उत्तर प्रदेश की सरकार ने खेल का सामान बनाने को शिक्षा देने के लिये एक क्लास खोला है। नैनीताल में इसके उत्पादन का एक नया केन्द्र खोला गया है।

पश्चिमी बंगाल की सरकार ने बालोरा को शिक्षा देने और मिल का सामान बनाने का केन्द्र खोलने का निश्चय किया है। भारत सरकार ने उसे १९५३-५४ में इसके लिये ६८,४५० रु० की सहायता दी है।

इसके अतिरिक्त अन्य सामान का आयात करने में सहायता दी जाती है। कुटशाला आदि में प्रयुक्त होने वाले यमनई के लिये बालेनकर का नमडा बनाने की शाला में गवेषणा की जा रही है। अच्युता यमनडा उपलब्ध करने की भी एक योजना है। खेल का सामान वाले घन की उहायता के लिये पाप्य सरकारी से भाग कर सरते हैं।

देश में अन्नक का बहुत कम उत्पाद होता है। प्रायः सभी अन्नक विदेशों को भेज दिया जाता है। अन्नक उत्पादन समिति ने मिफारिशा की है कि दूदा हुया अन्नक रगैनेर और पामिडक उद्योगों में प्रयुक्त किया जाय। देशीय बन और मिनिडक गवेषणाशाला से इन सम्बन्ध में आश्चर्य अदसम्बन्ध करने को कहा गया है।

हाथ का बना क गज

१९५४-५५ में ४० नरु के द्रा में हाथ से बनाज बनाने का निश्चय किया जायगा। इस प्रकार ऐसे मेरठ में कुल सध्या ४५ हो जायगी। कागज की निरम से प्रनिगमित किया जायगा और उच्चकोटि का कागज

बनाने के लिए मरुंगरो को शिक्षा दी जायगी। उपररुख करीदने, शिक्षा देने और गवेषणा कार्य के लिये अखिल भारतीय राष्टी और प्रामोयोग बोर्ड को घन दिया जा रहा है।

१९५४-५४ में सरकार ने तैयार किये गये १२० टन हाथ के कागज में से ५५५० टन राष्टीय शिक्षा मुख्य रु०,१३६ ६३३३ ६० था।

आरुतीय लाग उपररु समिति ने मिफारिशा की है कि लाग के उपरदे के सौदो का निश्चय होना चाहिए और भारत में लाग की कलमो के निर्यात का भी निश्चय होना चाहिये। फारवर्ड मार्केट कमिशन इस सवध में निवार कर रहा। और उसका एक अन्तरिम रिपोर्ट सरकार के पास आ गई है।

अख्तारी कागज का निमोण

मन्य प्रदेश में नेपा निरुत पर अनुमानत ५५७०५ टालर रु० की लागत आयागी। आशा है कि यह मिल इस वर्ष के अन्त होने तक सधा-रुख देशी खुदती तथा विदेशों में आरु रगामयिक खुदती में अगुवारी कागज बनाने लगेगी। यह मिल बाबू और सलाद की लखडी में कागज बनायेगी जो मध्य प्रदेश में उपलब्ध है। परन्तु काल्पिक सोडा, मोडा परा, तरल क्लोरीन आदि बाहर से मगाने पडेगे।

करघे का कपड़ा

राज्य सरकारों से करघे के कपडे के उत्पादन विषयक आकडे एकजित करने की ध्यन्या करने को कहा गया है। करघे के कपड का अनुमान तः उत्पादन इस प्रकार है —

१९५१	५,४३० लाख गज
१९५२	६१,०८० लाख गज
१९५३	१२,००० लाख गज
१९५४	६,३०५ लाख गज

(जवरी स जुन)
इसका निर्यात बढाने के लिये मा अनेक उपाय किये जा रहे हैं।

दिसम्बर १९५३ में जुन १९५४ तम का अग्रधि में नीचे लिखी वस्तु रूप में भारत आद .—

दूरबान, सिनेमा चित्र दिखाने के यन्त्र और ध्वनि आलेपरक यन्त्र, सिनमा के नित्र, रग और अरुवगी कागज।

पेंसिल उद्योग

देश में प्रतिवष लगभग ६,००,००० ग्रोम पेंसिलो की आवश्यकता होती है। १९५३ में लगभग १,६३,००० ग्रोम पेंसिलो देश में बनाई गईं। पेंसिल निर्माताओं का नीचे लिखी सुविधाएं दी जाती हैं:—

- (१) निर्माताओं को अच्छी भिद्ध मा रचना मान जैसे सुन्ना, लरुडी आदि का आयात करने की अनुमति दी जाती है।
- (२) सुन्ना पेंसिल की पेंसिलो की प्रायण नीति का निश्चय करने उद्योग र प्रोत्साहन देने का उन्न किया जाना है।

★ अधिक प्रनाज ★ अधिक कपडा ★ अधिक बिजली ★ अधिक लोहा

देश की अर्थ-व्यवस्था में बहुमुखी उन्नति

पंचवर्षीय योजना की तीन वर्षों की प्रगति का विवरण

प्रथम पंचवर्षीय योजना के अनुसार उसने पहले तीन वर्षों में नौ करोड़ टुकड़ा हथियाने का कार्यक्रम को निश्चित रूप में लागू पड़ चुका है। (१९५६-५७) में अप्रैल १९५७ में १० लाख तन अधिक प्रनाज उत्पन्न हुआ।

समाप्त उत्पन्न उद्योगों में अच्छी प्रगति हुई है। निम्न प्रकार उद्योगों में मुक्त कपड़ा, सामान्य भाँडा, फ्लायिंग सूटिंग, गालमक्री, मिलाई का मगाना इत्यादि का उत्पादन बढ़ाया गया है।

इसबाद और बिजली का उत्पादन पूर्ण हो जाने से प्रायः २० लाख घण्टा बिजली का उत्पादन होने लगा।

मुद्रा प्रसार नहीं होने पाया है। पूर्वी की स्थिति में बहुत हाहाकार है। आर्थिक समस्याओं में विश्वास की भावना बढ़ाई है।

(१)

आर्थिक विकास का कार्य आगे बढ़ाया जाय

संवेतानुकी प्रगति

“मानव शक्ति के पहले ताल पर हाँ चूने हैं और इस समय मानव शक्ति का उपयोग करने की आवश्यकता है। यह स्थिति सकारणक ता है हाँ, मनुष्य की शक्ति को बढ़ाने के लिए आवश्यक है—उच्च शिक्षा, स्वास्थ्य तथा शैक्षणिक प्रवृत्ति, न्याय और गणतन्त्रवाद। न्याय में सत्य के लक्ष्य में पंचवर्षीय योजना का १९५६-५७ का प्रगति का प्रतिबन्ध प्रस्तुत करने हुए हैं।”

कुल १३० अर्थीय के इस प्रतिबन्ध में सुप्रसन्न दस बात पर प्रकाश डाला गया है कि १९५६-५७ में योजना में क्या प्रगति हुई।

प्रतिबन्ध का नृत्तिका में योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री वा० ग० कृष्णामाचाराय ने कहा है कि इस योजना का अमली काय्या यथा है कि जिस सीमा तक लोगों का ध्यान दूसरी ओर आकर्षित हुआ है। उन्होंने कहा कि इसने आधापर अर्थात् न्यूनतम बढ़ावा देना संभव है कि विकास सम्बन्धी समस्याओं के समाधान के लिए योजना के अन्तर्गत का कार्य किया जा रहा है, उसका लाभ स्वीकार कर रहे हैं। अर्थीय विकास के इस बात की है कि अर्थीय तंत्र का संरक्षण प्राप्त हो जा चुका है उसके आधार पर और मनुष्यता से काम किया जाय और आर्थिक विकास तथा सामाजिक प्रगति का मार्ग कार्यक्रम आगे बढ़ाया जाय।

प्रतिबन्ध में कहा गया है कि विद्युत् १० अर्थीय में देश की आवश्यकता से अधिक उत्पादन तथा मनुष्यता प्रगति हुई है। अर्थीय उपकरण हैं, औद्योगिक उत्पादन मनुष्यता रूप में वृद्धिशील रहा है, १९५०-५१ के अनुपातरूप रूप में बढ़े हुए मूल्यमन्तर मन्तर शक्ति युद्ध में पहले के मूल्य मन्तर का अर्थीय व मन्तर गिर गई है और देश के सुगतान संतुलन की स्थिति में मन्तर हुआ है। अन्ततः पर मन्तरांतर विद्युत् उत्पादन और इन्फ्राराड का स्थिति पर न्याय हाने में उद्योगिकीयों को शक्ति सहायता हुई है।

उत्पादन मूल्य मन्तर तथा मनुष्यता के हाथ में धन का उपलब्धि की स्थिति में अर्थीयसहित जो मन्तर हुआ है यह युद्ध के बाद का अर्थीय में मनुष्यता अधिक मनुष्यता है। आयोग ने कहा है कि युद्ध तथा बाद में मनुष्यता के परिणामस्वरूप मनुष्यता का जा वर्या और अन्तः मनुष्यता का हाने हुए था, यह दूर होना ही रहा है।

अन्ततः का उपकरण के बाद में १९५५-५६ क लिये जा लब्ध रखा गया था, उसमें भाँडा और अधिक उपकरण का युक्त है। अन्ततः का उपकरण की स्थिति अन्ततः मनुष्यता पर है। योजना में निवारित लक्ष्य के ८० प्रति

श. भाग की पूर्ति अकेले १९५३-५४ में की गई। जूट तथा गन्ने के मामले में वर्ष प्रति वर्ष स्थिति बदलती रही। कोरिया युद्ध का इन पर प्रतिदूल प्रभाव पड़ा। जैसे तुल मिलाकर १९५०-५१ की तुलना में कृषि उत्पादन १८ प्र. श. से भी अधिक बढ़ चुका है।

औद्योगिक उत्पादन में भी वृद्धि हुई है। १९४६ को आधार अथवा १०० मानते हुए १९५० में औद्योगिक उत्पादन का सूचक अंक १०५ था, जो १९५१ में ११७, १९५२ में १२६ और १९५३ में १३५ हो गया। १९५४ के पहले चांग महाना में वर्ष अंक ११० तक पहुँच गया था, जो १९५० की तुलना में लगभग ३३ प्र. श. वृद्धि का परिचायक है। १९५३-५४ में मिलों में ४ अरब ६० करोड़ ६० लाख गज सूता कपड़ा बनाया, जो १९५२-५३ के लिए निर्धारित लक्ष्य से भी लगभग २१ प्र. श. अधिक है। १५ वर्षों के कड़े के उत्पादन में भी वृद्धि हुई।

मूल्याँ में स्थिरता

उत्पादन के क्षेत्र में प्रगति के साथ साथ सब तरफ मूल्याँ में भी स्थिरता आई है। यह महत्वपूर्ण बात है कि योजना के पहले तान बना में जो नई पूंजी लगाई गई उसने तनिक भी मुद्रा बाहुल्य नहीं हुआ। योजना आरम्भ होने से तत्काल पहले जो मूल्य स्तर नियमान था, वह अब काफी नीचे आ गया है। धोखे मूल्याँ तथा रहन-महन के अतिरिक्त भारतीय सूचक अन्वेषण का तुलनात्मक अध्ययन करने में दृष्ट कर से शत हो जाता है कि स्थिति में वर्षोंतः सुधार हुआ है।

योजना के आरम्भ में (३१ मार्च, १९५१ को) धन की प्राप्ति १,९६६ करोड़ रु० थी, जो मार्च १९५४ के अंत में १,८५४ करोड़ रु० रही। इससे स्पष्ट है कि उच्च मन्वन्वी पाटा के बावजूद योजना संचालन के परिष्कार स्वरूप किये जाने वाले धन से मुद्रा बाहुल्य नहीं हुआ।

पिछले दो वर्षों में देश के भूगतान संचालन की स्थिति में सुधार हुआ है। १९५०-५१ में चालू ऋणों में भारत को ५५.६ करोड़ रु० विदेशों से लेना था, लेकिन अनाज तथा औद्योगिक साज-सामान के द्वारा भारत के बाह्य १९६१-५२ में स्थिति उन्नत गई और १३६.३ करोड़ रुपये की देनदारी हो गई। लेकिन फिर स्थिति में सुधार हुआ और १९५२-५३ में ७५.१ करोड़ रु० से भूगतान संचालन भारत के पक्ष में हो गया। १९५३-५४ में भी स्थिति अनुकूल ही बनी रही और हम वर्ष के अस्थायी आकड़ा

के अनुसार ४८.४ करोड़ रु० विदेशों से लेना था। देश में अनाज की उपज की वृद्धि होने से १९५३ में उसके आयात में कमी हुई। हमसे स्पष्ट है कि वितीय मामला में स्थिरता आयी है।

यद्यपि १९५१-५२ में और लगभग तुलार्ई १९५० तक रिजर्व बैंक में पौड पावने के खाते में कमी हुई, किन्तु स्थिति में फिर सुधार हुआ। इस समय इस खाते में ७३० करोड़ रु० है, जो योजना से पहले के स्तर से १५० करोड़ रु० कम है।

विकास कार्यों पर अधिक खर्च

प्रतिवेदन में कहा गया है कि योजना अर्थात् में तुल २,०४६ करोड़ रु० के खर्च की व्यवस्था थी, लेकिन अब तक केवल लगभग ८८५ करोड़ रु० तुलना १० प्र. श. तक हुआ है। अतः अतिम दो वर्षों में खर्च की ग्यारह में काफी तेजी करना बहुत आवश्यक है।

बनाया गया है कि यद्यपि १९५२-५३ में गैर सरकारी सगटिन उद्योगों में तुल्य कम पूंजी लगायी गई किन्तु धीरे-धीरे अब इस दिशा में सुधार हो रहा है। १९५२-५३ की अपेक्षा १९५३-५४ में पूंजीगत माल के निमाण में वृद्धि हुई है। १९५३ में ८१ करोड़ रु० का नई पूंजी जारी करने की स्वीकृति दी गई, जो कि १९५२ में यह रकम ४० करोड़ रु० और १९५१ में ६० करोड़ रु० थी।

१९५३ में ज्वाएंट स्टॉक कम्पनियों में लगी हुई पूंजी में ३६२ करोड़ रु० की वृद्धि हुई, जबकि १९५० में ३६.७ करोड़ रु० की वृद्धि हुई थी। लेकिन बाद की स्थिति को देखते हुए यह निश्चय रूप से कहा जा सकता है कि अतनोगवा अब गैर सरकारी उद्योगों में तेजी से पूंजी लगाई जा रही है। गैर सरकारी उद्योगों की उन्नति के लिए सरकार कुछ सुझावों पर विचार कर रही है।

आयोग ने प्रतिवेदन में इस बात पर जोर दिया है कि टीक समय पर योजना को क्रियान्वित करने के लिए मन्विष्य में केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों और जनता को अनेकाहृत वही अधिक प्रयत्न करना होगा। आयोग को आशा है कि योजना की सफलता के लिए जितने प्रयत्न और सहयोग की आवश्यकता है, वह अग्रय मिलेगा।

(२)

प्रगति की कुछ बातें

१९५३-५४ के प्रतिवेदन के अनुसार पंचवर्षीय योजना के पहले तीन वर्षों में निम्नलिखित क्षेत्रों में जो प्रगति हुई है उसकी कुछ मुख्य-मुख्य बातें इस प्रकार हैं :—

आधार वर्ष १९४९-५० के मुकाबले १९५३-५४ में उत्पादन के उत्पादन में १ करोड़ १४ लाख टन की वृद्धि हुई है। इन तरह पंचवर्षीय

योजना की अर्थात् में ७६ लाख टन अतिरिक्त अन्न पैदा करने का जो लक्ष्य निर्धारित किया गया था योजना के तीनों ही वर्षों में उत्पादन उनसे ३८ लाख टन अधिक हो गया।

इस अर्थात् में कपास के उत्पादन में ६६ लाख गांठों की वृद्धि हुई।

सरकार की ओर से प्रतिष्ठापित उद्योगों में प्रायः सर्वत्र ही उत्पादन में वृद्धि हुई है। व्यक्तिगत रूप से ऐसे विभिन्न उद्योगों का कारखानों की स्थिति का सविस्तार चोरा इस प्रकार है :—

विचारजन का रेल-इंजन कारखाना—पिछले तीन सालों में इस कारखाने में रेल इंजनों और उनमें लगने वाले पुञों का उत्पादन बराबर बढ़ता गया है। पचत्रयाय यात्रना काल के लिये २६८ रेल इंजनों का लक्ष्य निर्धारित था, जिम में से पहले तीन वर्षों में ११४ रेल-इंजन तैयार हो चुके हैं। १६ जनवरी, १९५४ को इस कारखाने का नया १००वा रेल इंजन निराला गया, जिम्मे मारे पुञें कारखाने के ही बने थे।

सवारी के डिब्बे—रेलों के सवारी के डिब्बे बनाने का कारखाना पैराम्पुर में प्यठा किया जा रहा है। इस पर कुल ७५ करोड़ ६० लक्ष होने का अनुमान है। १९५५ से डिब्बे बनने लगेंगे। मार्च, १९५४ में कारखाने में एक म्कल सोला गया है, जिमम प्रतिवर्ष ६०० शिल्पकारों (टेक्नीशियन्स) को काम मिलाना जायगा।

सिंदरी कारखाना—यह कारखाना राधाधनिक प्ठान बनाता है। आलोच्य वर्ष (१९५३-५४) में इसने २ लाख ४६ हजार टन अमोनियम सल्फेट तैयार किया, जब कि १९५२-५३ में २,२०,००० टन और १९५१-५२ में ३४,८०० टन ही तैयार हुआ था। प्ठान तैयार करने के लिये 'आयर्न आक्साइड' की जरूरत पड़ती है, जो अब सरकार में ही तैयार किया जाने लगा है और २५००० रू० प्रति टन पड़ता है। विदेश में यह १० हजार रू० प्रति टन के भाउ से मगाना होता था। कारखाने में ही 'फोस्' तैयार करने का मंडिया भी प्ठान कर ली गयी है। प्ठान तैयार करने के लिये ये मंडिया प्रनि-टिन ६०० टन कीक निकालती है।

सेसूर आयरन प्ठान स्टील वसे—पिग आइरन तैयार करने के लिये कारखाने में बिजली की मट्टी (इलेक्ट्रिकल स्मेल्टर) १९५३-५४ के अत तक लग कर पूरी हो चुकी है। इसके कारण अगले वर्ष पिग आयरन का उत्पादन ३० हजार टन और बढ़ जायगा।

हिन्दुस्तान सिपयार्ड—जहाज बनाने के इस कारखाने का विस्तार किया जा रहा है। तीसरी 'बर्थ' बन कर पूरी हो चुगी है और १०४ टन का एक मैन भी लग चुका है। १९५३-५४ में दो और बर्थें बनाने का काम हाथ में लिया गया। १५० लाख रू० के लक्ष में एक नया डैक बनाने की भी आयोजना है।

इण्डियन टेलीफोन इंजिनरीज—१९५१-५४ तक के तीन वर्षों में इस उद्योग पर १८० लाख रू० लक्षें हुआ है और सशोधित व्यरथा के अनुगार योजना की अवधि में ३४६ लाख रू० लक्षें करना है। सशोधित योजना के अनुगार १९५५-५६ तक प्रतिवर्ष ६०,००० टेलीफोन और ४०,००० एकसेज लाइनें तैयार करने का लक्ष्य निर्धारित है। टेलीफोन मन्कषी लक्ष्य पूरा भी हो चुका है।

अन्य योजनायें

हिन्दुस्तान केमिक्स फैक्टरी आलोच्य वर्ष में बन कर प्रायः पूरी हो चुकी है और इसके कई विभागों में माल भी तैयार होने लगा है।

मशीनों औजारों का कारखाना जलहल्ली में बन रहा है। निर्माण-कार्य कुछ पिछड़ गया है, पर आशा है कि नवम्बर, १९५४ में प्ठान कर मशीनों की पहली रिन्त तैयार कर ली जायगी।

उत्तर-प्रदेश सरकार का मीमेन् का कारखाना इसी महीने में माल तैयार करने लगेगा। ख्याल है कि बिहार मुद्राकल्पेड फैक्टरी और नेपा न्यूजपिन्ट मिलम में १९५५ से पहले काम न शुरू हो पायेगा। पेनिस्किन और डी टा टी तैयार करने के मगगाने चालू वर्ष के अत तक माल तैयार करने लगेगे।

हिन्दुस्तान हाउसिंग फैक्टरी में रजिस्ट्री जनवरी, १९५३ में हुई थी। इसमें लकड़ी का मामान और मीमेन्ड व रकरीट के पादप बनाने शुरू किये थे। अब रकरीट की दूसरी बीजें और इस्पात के टाचे आदि भी बनने लगे हैं।

तूक्रेका (उडीमा) में लोहा व इस्पात तैयार करने का नया कारखाना प्ठाना जा रहा है और इसके निमित्त वित्तों व शिल्पिक सहायता प्राप्त करने के लिए 'कप डेमग' नामक प्रसिद्ध जर्मन फर्म के माथ कराव हुआ है। १९५४-५५ में कारखाने के निर्माण का काम शुरू हो जायगा। योजना अवधि में इस कारखाने पर ३३ करोड़ रू० लक्षें होगा।

बिजली की भारी मशीनों तैयार करने का एक कारखाना सरकारी क्षेत्र में प्ठान करने के सबध में कई तर्जवीजें विचारधीन हैं।

तिरुवाट्ट-कोचीन के तुल्लम मिट्टी कारखाने से निचलने वाले कचडे से यूरेनियम आक्साइड व थोरियम नाइट्रेट निरालने का एक कारखाना ड्रामे में खोलने का निश्चय किया गया है। पगलौर के पास, जेतान और निरुत आरु सधवी राज सामान तैयार करने का एक कारखाना खोलने का निश्चय किया गया है। इस पर ७ करोड़ रू० लक्षें होगा।

निजी क्षेत्र

पिछले दो वर्षों में, निजी क्षेत्र के अनेक उद्योगों में भी उत्पादन बढ़ा है। १९५२-५३ में उससे पिछले वर्ष की तुलना में और १९५३-५४ में १९५२-५३ की तुलना में जितने प्रतिशत वृद्धि हुई, कुछ उद्योगों के सबध में उमके आकटे नीचे दिने जा रहे हैं।

उद्योग	पिछले वर्ष की तुलना में उत्पादन की प्रतिशत वृद्धि		
(१)	(२)	(३)	
		१९५२-५३	१९५३-५४
वस्त्र उद्योग			
(क) श्वत	..	१०.६	२.६
(ख) कपडा	.	१५.४	२.६
सिमेंट		७.०	१४.७
काच की चादरें		१३.०	८४.४
सोडा एश	..	६.२	३६.३
कार्टिक सोडा		१३.३	४७.०

(१)	(२)	(३)
मिलार्ड की मशीनें	८५	३१.१
कार्मिगलें	७३.०	३६.२
वाल मशीन	६६.०	४०.०
म्यान	६५.०	१७.०
ड्रामफामर	१५.०	६१.५
विजली के मोटर	५.८	०.८
ए. सी. एस. डार कंटेनर	५.८	१०.०
मन सार	१६.०	१.६
शान	१०.८	१.२
गमक	३.०	६.१
वेनस्पिन	१०.६	०

१९५३-५४ में कुल नई चीजे देश में पहले पहल तैयार की गईं जिनमें—मोर्टर की मिनार्ड की मशीनें, स्टील ल. मादरिला के प्रोहीवील व चने, ग्रेट प्रिन्सिंग, मोडे-बनवान की तुनाई की मुरदा, आग्निमोमार्डिन, नकली एमेटीकामिट एमिशन आदि।

पेट्रोलियम शोधने के कारखाने

मिजी क्षेत्र में पेट्रोलियम की सफाई के लिये स्टैंडर्ट टेक्नुअम आपल कम्पना आर वर्मा शल की मानव शालाये बंगाल हा गद ह। आलोचन नई में इन पर कुल १५ करोड़ ६० लाख हुआ। आर्या है १९५४-५५ के अंत तक इनमें उत्पादन शुरू हो जायगा।

अब तक इन चार उद्योगों के लिये विकास परिषद् स्थापित का जा चुका है—मोरी राममनिक ड्रव्य तथा गार्ड, अन्डरि हडन व पम्प आदिमन्ले और चानी। १९५३-५४ में कुल और परिषदे भी काममें होगी। बिचार ह कि द्वितीय पंचययव योजना के आर्थिक विकास का कार्य कम निश्चित करने का काम विभिन्न उद्योगों में सशक्ति इन विभाग परिषदों की ही माया जायगा।

जाना। मादरगाठिया और वेटिया मशीनों का उत्पादन १९५१-५२ में ही कम है। इन के माल और चाय को पेटिया व फादरुड का उत्पादन जानना अज्ञात के पहले दो नया में बढ़ा, पर १९५३-५४ में कम पड़ गया।

(४)

सिंचाई और विजली उत्पादन की प्रगति

पंचययव योजना के अन्तर्गत निश्चाल सिंचाई योजनाएं पूर्ण होने में २८ लाख एकड़ में अधिक भूमि के लिये सिंचाई की व्यवस्था हो चुकी है और ४,५०,००० बिसीगाड विजली का उत्पादन होन लगा है।

सिंचाई और विजली योजनाओं पर हम प्रसार व्यय हुआ है—
(लाख रुपये में)

वर्ष	योजना में पहले की गई व्ययस्था	१९५४
१९५२-५३ (वास्तविक)	८१७१	८,५१०
१९५३-५४ (वास्तविक)	६७७६	१२,१००
१९५३-५४ (वास्तविक)	२०५६	१२,७००
योग	२०००६	२०,३१०

१९५४-५५ में सिंचाई और विजली योजनाओं के लिये कुल १६७ करोड़ रुपये खर्च किये गये हैं, जब कि पहले १०७ करोड़ २० रुपये किये थे।

पन्थली पंचवर्षीय योजना में सिंचाई और विजली का कार्यक्रम तय गना है वह दार्दकालाव योजना का एक भाग मत्र ह। त्रिंशाल न योजना यह है कि १५-२० करोड़ में सिंचाई क्षेत्र का दुगना कर दिया जाय और प्रायः ७० लाख बिसीगाड विजली पैदा की जाय। तदर्थमिन्न कार्यक्रम में अद्यतन ८५ लाख एकड़ नई क्षेत्र में सिंचाई होगी और १५ लाख बिसीगाड विजली पैदा होगी। जानना अज्ञात म इस कार्यक्रम पर ५५८ करोड़ ६० लाख हुआ। इसमें से ४२० करोड़ ६० करोड़ योजनाओं पर और १२८

करोड़ विजली की योजनाओं पर व्यय होगा। १९५३ के अन्त में सिंचाई और विजली की योजनाओं के लिये ६५ करोड़ की एक अतिरिक्त योजना भी सम्मिलित कर ली गयी है। इसमें १० करोड़ ६० उन सिंचाई योजनाओं के लिये थे जिनमें अन्तर्भाव गले क्षेत्रों को स्थायी रूप में लाय, पहुँचना।

बहुउद्देशीय योजनाएं

३० मार्च १९५४ की सम्मति हुए तान नया में बहुउद्देशीय योजनाओं के विषय में जो प्रगति हुई उसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

भाकरा नागल योजना—पञ्जाब में नागल बाघ और नागल हाइडल पैन्ल का निर्माण हो गया है। भाकरा नहर भी खोदी जा चुकी है। जुलाई १९५४ के प्रारंभ मन्त्रा न इन नहरों का उत्पादन किया। अब राजस्थान और पंजाब में नहरें खोदी जा रहा है। मोरार बाघ की नाय का एक निहाल काम मन्त्रा न हो गद है। नागल और उद्योगों के पावर हाउसों में मशीनें लगाई जा रही हैं। इन योजनाओं में पहले तान नया में कुल ५,५५८ लाख ६० पर होने का अनुमान है।

हरा के बाघ—२ बाघ व इन बाघ का काम भी सम्पन्न हो चुका है। इस पर पर १ तान का में १० लाख २० व्यय होने का अनुमान है।

दागोडर घाटी योजना—नेकाग धमल पावर स्टेशन न १९५३ में काम आरम्भ पर गया है। नहा ००,००० बिसीगाड विजली पैदा होगा। निचला हाट्टा स्टेशन पर १९५४ में काम न चालू हो गया। बनार गव मई १९५४ तक नैयार हो गया। २०४४ नदी के मादधान नय

का दो तिहाई काम समाप्त हो गया है। इससे टायोटर धाड़ी में बाट भी रोकੀ जायेगी। अन्न पंचेत हिल बाथ और दुर्गापुर बाथ तथा नहरों का काम चल रहा है। १९५४-५४ में इन सब पर ४,४१४ लाख रु० व्यय हुए।

हीराकुड बांध—बाढ़ आर के पुरते में ११५ लाख धनकीट कर्मीट और टाहिनी आर के पुरते में ७२ लाख धनकीट कर्मीट डाली जा चुकी है। इस प्रकार इनका क्रमशः ६५ और ३५ प्रतिशत काम समाप्त हो चुका है। मिट्टी वाले भाग में ४२२४ लाख धनकीट में स ७२० लाख धनकीट मिट्टा जमाई जा चुकी है। ८४ प्रतिशत नहरें और १० प्रतिशत उनके रखरखे खोदे जा चुके हैं। बिजली पैदा करने की मशीनें पहुँचाने लगी हैं और पूरा पावर हाउस १९५० तक बन कर तैयार हो जायेगा। इस योजना पर पहले तीन वर्षों पर अनुमानतः २,५८८ लाख रु० व्यय हुए हैं।

सिंचाई योजनाएं

सिंचाई योजनाओं पर १९५४-५४ में आन्ध्र में ५६२ लाख रु० व्यय हो चुके हैं। आसाम के लिये जो धन रखा गया था उसमें से अब तक २० प्रतिशत व्यय हुआ है। बिहार में ६७३ लाख में से ४०१ लाख रु०, कर्नाट में २,२६६ लाख में से १,११५ लाख रु०, मध्य प्रदेश में २०८ लाख में से १६६ लाख रु० व्यय हो चुके हैं। १९५३-५४ में बम्बई में १४,४०० एकड़ भूमि को सिंचाई योजना में ले आने का लक्ष्य रखा गया था। इसमें से ८०,००० एकड़ अंश आये गये। इसी प्रकार मध्य प्रदेश में २१,००० में से १०,००० एकड़ ले आये गये हैं।

मद्रास में इन योजनाओं के लिये २,०१६ लाख रु० रखा गये थे जिनमें से १,१६६ लाख व्यय हो चुके हैं और ८०,००० एकड़ के लक्ष्य में से ४५,५०० एकड़ सिंचाई योजना में ले आये गये हैं। अन्य राज्यों में व्यय हुए रकम और सिंचाई वाले एकड़ इस प्रकार हैं। काश्मिर में सिंचाई लक्ष्य की संख्याएं दी गई हैं— उडुपी १७१ लाख रु० (३०० लाख रु०) और ६२,००० एकड़ (३,७२,००० एकड़), पंजाब २३२ लाख रु० (३२६ लाख रु०), उत्तर प्रदेश १,४०८ लाख रु० (१,६११ लाख रु०) और ७,४७,५०० एकड़ (१२ ३३,००० एकड़), पश्चिमी बंगाल ८६८ लाख रु० (१,५३७ लाख रु०), हैदराबाद १,३६६ लाख रु० (२,५७१ लाख रु०) और ३२ ००० एकड़ (१,०२,००० एकड़), बम्बई और कर्नाट १६० लाख (३४० लाख रु०) मध्य भारत १०४ लाख (३२८ लाख रु०), मैसूर ७१४ लाख रु० (१,४२६ लाख रु०) और ६,५०,००० एकड़ (१२,००० एकड़), पेरूम में ३१ लाख रु० प्रतिशत और राजस्थान में ५०४ लाख रु० प्रतिशत। राजस्थान में १२,६००० एकड़ लक्ष्य में से ७२,५०० एकड़ भूमि में सिंचाई होने लगी। सौराष्ट्र ३४० लाख रु० (७७५ लाख रु०) और २६,५०० एकड़ (२६,००० एकड़), प्रायद्वीप क्षेत्र ७०८ लाख रु० ५५ प्रतिशत और १२,००० अतिरिक्त एकड़ में सिंचाई होने लगी। आन्ध्र में १०६ लाख रु० (११ लाख रु०), हिमाचल प्रदेश १६ लाख रु० (८० लाख रु०), कच्छ ५२ १७ लाख (६१ लाख रु०)।

बिजली का उत्पादन

निजी क्षेत्र में ८६,००० किलोवाट बिजली पैदा करने वाली नई मशीनें काम करने लगी हैं। दिल्ली राज्य बिजली बोर्ड ने भी २०,००० किलोवाट की मशीनें लगाई हैं। इनके अतिरिक्त केन्द्रिय रेल ने अपने बरखाख स्टेशन पावर स्टेशन में २४,००० किलोवाट अतिरिक्त बिजली पैदा करने के लिये और १९५४-५६ तक १८,००० किलोवाट और पैदा करने लगेगी।

विभिन्न राज्यों में इन मशीनों में अब तक आठ प्रतिशत हुए हैं वर इस प्रकार है—

आन्ध्र—मनकूड पावर हाउस जून १९५५ में चालू हो जायेगा और गुजरात केन्द्र १९५७ के आरम्भ में बिजली देने लगेगी। १९५१-५४ तक पहली ताल वर्ग का आरंभ में १,०६६ लाख रु० व्यय किया गये, जब कि २,०४१ लाख रु० खर्च गये थे।

आसाम—उमतरु जल विद्युत योजना १९५६-५७ तक पूरा हो जायेगी।

बिहार—७०६ लाख रु० में से २८२ लाख रु० व्यय किये जा चुके हैं।

बम्बई—१०४६ लाख रु० में से ७५५ लाख व्यय हो चुके हैं। साठव गुजरात ग्रिड स्कीम के अनुसार १५,००० किलोवाट अतिरिक्त बिजली पैदा होने लगी है। प्लांट में बम्बई सरकार का बिजली नेट १९५४ में ही चालू हो जाने का आशा है। उत्तरी गुजरात ग्रिड स्कीम की भी पूर्णतः प्रगति हो चुकी है।

मध्यप्रदेश—६०० लाख में से २६१ लाख व्यय हो चुके हैं और ५२,००० किलोवाट शक्ति वाता मशीनें लगाई जा चुकी हैं।

मद्रास—मोथार और पापानशम योजनाओं के फलस्वरूप ६८,००० किलोवाट अतिरिक्त बिजली तैयार होने लगी है। पावकारा और मद्रास की अन्य योजनाएं १९५४-५५ में तैयार हो जायेगी। पेरियार जल विद्युत योजना भी मशीनियन कार्ययंत्र में वर्तमानित कर ली गई है। अब तक २,६६७ लाख रु० में से १,४४२ लाख रु० व्यय हो चुके हैं।

उड़ीसा—रूक धर्मल योजना पूर्ण हो चुकी है। हीराकुड योजना में १९५२-५३ में बिजली मिलाने लगेगी। हीराकुड को छोड़ कर अन्य योजनाओं के लिये ३३१ लाख रु० खर्च गये थे जिनमें से १६० लाख रु० व्यय हो चुके हैं।

पंजाब—३६० २ लाख में से ७२ लाख व्यय हो चुके हैं। भास्वा-नागल योजना का व्यय दमले अलग है।

उत्तर प्रदेश—मध्य आकार की अनेक जल विद्युत योजनाएं कार्यान्वित हो जा रही हैं। मोरमनपुर का बिजली घर चारू हो गया है। पथरी और शारदा की जल विद्युत योजनाएं १९५५ के आरम्भ में चालू हो जायेगी। पूवा जिलों में अनेक धर्मल केन्द्र भी स्थापित किये जा रहे हैं। १,४११ लाख में से १,०१४ लाख रु० व्यय हो चुके हैं।

पश्चिमी बंगाल—दार्जीलिंग घाटी बायोडेशन की लार्देन बलकना नगर तक लार्दे जा रही हैं। प्रामांने विन्नी देने की भी बर्र योजनाए पूर्ण की जा रही हैं। ७६ लाख रु० में से ७१ लाख रु० व्यय हो चुके हैं।

हृदराबाद—गामागुण्डम धर्मल योजना और निजाम माना उल्लिखित योजना १६५५.५६ न चालू हो जायगी। हृदराबाद राज्य की और शर्ती तुंगभद्रा उल्लिखित योजना पर भी श.प्र. ही काम आरम्भ होगा। २०१ लाख रु० में से १०५ लाख रु० व्यय हो चुके हैं।

मध्य भारत—२०८ लाख रु० से १७६ लाख रु० व्यय हो चुके हैं और ५,००० किलोवाट अतिरिक्त बिजली पैदा होन लगी है।

मैसूर—१,२६८ लाख रु० में से ७४१ लाख रु० व्यय हो चुके हैं। जंग पावर हाउस में ७२,००० किलोवाट की अतिरिक्त मशानें लगाई जा चुकी हैं।

पम्पू—३१ लाख रु० से ५ लाख रु० व्यय हुए।

राजस्थान—५६३ लाख रु० से ६० लाख रु० व्यय हुए। १६५५-५६ तक २४,००० किलोवाट अतिरिक्त बिजली मिलान लगेगी।

सौराष्ट्र—२११ लाख रु० से २७ लाख रु० व्यय हुए।

कोचीन—१०३५ लाख रु० से ६५० लाख रु० व्यय हुए।

“ग” श्रेणी के राज्यों में १६६ लाख रु० से ५ लाख रु० व्यय किए गये।

भरतम, मैसूर, ब्राननबोर कोचीन आदि उल्लिखित राज्यों के प्रामांने भी बिजली देने में पर्याप्त प्रगति हो चुकी है। भरतम में १६५० तक ५,५०० गावों में बिजली दी जा चुकी है।

नयी योजनाएं

इस समग्र चक्रल, कोचीन, कृष्णा विहण्ट, और कोटना की नयी योजनाए विचारधीन हैं। विहण्ट योजना में २,४०,००० किलोवाट बिजली मिलेगी जिससे उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग, बिहार के पश्चिमी भाग और निम्न प्रदेश तथा मध्य प्रदेश के निम्नतरी भागों को लाभ पहुँचेगा। इस योजना के लिए भारत अमरीकी शैलिफर सहयोग कार्यक्रम १६५३-५४ के अन्तर्गत ११० लाख डॉलर का बचारा हो चुका है।

अन्तर्गत क्षेत्रों की दृशा सुधानें के विभिन्न केन्द्रों में राज्यों की सहायता दी है। इसके फलस्वरूप १५ लाख एक्ड अतिरिक्त भूमि में खेती होने लगेगी जिसमें लगभग १० लाख की निवेश होगी। यह सहायता इस प्रकार की गई है।

आन्ध्र ५०० लाख रु०, आन्ध्र १०० लाख रु०, बिहार ३५० लाख रु०, कर्नाट ५०० लाख रु०, मद्रास ६२० लाख रु०, उत्तर प्रदेश ६७३ लाख रु०, पश्चिमी बंगाल १०० लाख रु०, हृदराबाद ३०० लाख रु०, मैसूर ३५० लाख रु०, राजस्थान २५० लाख रु०, सौराष्ट्र २५० लाख रु० और अजमेर २५ लाख रु०।

इनने अतिरिक्त पेंडिंग सरकार कृष्ण भी देगी जो ३० वर्षों में बायन लिजा जायगा। इस प्रणाल पर पट्टे ५ वर्षों में कोई व्याज नहीं लिजा जायगा। शीम लाभ पहुँचाने की दृष्टि में ये योजनाए बनाई गई हैं। इनमें महत्वपूर्ण इस प्रकार हैं :—

योजना	कुल व्यय (लाख रु० में)
आन्ध्र	
(१) निचली शान्तेसू	५४७०
(२) कर्नाट कृष्णा नहर का सुधार	२६०००
आन्ध्र	
(३) वाण रोडने और पानी निकालने की योजना	६२२०
बिहार	
(४) त्रिवेणी नहर का विस्तार	३६००
(५) पानी निकालने की योजनाए	५७२०
(६) वाण निम्नतरी की योजनाए	६५५०
कर्नाट	
(७) घोट नयी योजना	३००००
(८) दोहट ताहुके को पाटाई गरी तालाब योजना	४१६८
मद्रास	
(९) आगार निचारा योजना	२५०००
(१०) अमरावती निचारा योजना	२००००
उत्तर प्रदेश	
(११) माताडीला बांध	५००००
(१२) सुरेशाबाद योजना (प्रथम चरण)	३०३५०
पश्चिमी बंगाल	
(१३) उधु अतिरिक्त रत्नकूप	३१००
हृदराबाद	
(१४) नयी योजना	६८००
मैसूर	
(१५) नगरी योजना की सहायता	२०००
सौराष्ट्र	
(१६) मन्डू	८६०३

[५]

योजना के व्यय का विवरण

पञ्चदशिय योजना के मार्च १९५४ को समाप्त होने वाले तीन वर्षों में अनुमानित लगभग ८८५ करोड़ रु० व्यय हुए हैं। योजना पर जितना धन व्यय करने का प्रस्ताव किया गया था उसका यह ४० प्रतिशत है। इसमें केन्द्र ने ४४४.६ करोड़ और राश्री ने ४३६.६ करोड़ रु० व्यय किये हैं। १९५४-५५ में ५७२ करोड़ रु० व्यय करने का प्रस्ताव है जिसमें से ३५६ करोड़ केन्द्र द्वारा और २१६ करोड़ रु० राज्य द्वारा होगा। १९५३-५४ के सञ्चालित व्यय में यह २१५ करोड़ रु० अधिक है। कृषि, सामूहिक योजनाओं, विद्या और विजली, रेल, बन्दरगाहों और पतनों, बड़े उद्योगों, शिक्षा, स्वास्थ्य, मकाना, स्थानीय निर्माण कार्यों और पुनर्वास पर अधिभूत र्ण होने से यह वृद्धि हुई है।

३१ मार्च १९५४ तक केन्द्र द्वारा व्यय किये गये ८८५ करोड़ रु० में से लगभग ६० प्रतिशत अर्थात् ५३५.३ करोड़ रु० माध्याय बजट में भे दिये गये। लगभग १५ प्रतिशत अर्थात् १३६.४ करोड़ रु० विदेशी सहायता से मिले और शेष २१८.१ करोड़ रु० अर्थात् प्राय. २५ प्रतिशत शेष नगरी, सिस्मरिडियो की विन्की और अल्पकालीन श्रृणो से प्राप्त हुए। राज्य सरकारों ने १९५१-५४ तक जो ४४० करोड़ रु० व्यय किये

उनमें से प्राय १६० आर्य की बचत में से और ५२ करोड़ रु० जनता में मृण्य लेकर किये। केन्द्र से राज्यो का १२२ करोड़ रु० की महायता दी गई। शेष धन मिन्पूरिडियो की विक्री आदि से प्राप्त किया गया। कमीशन का मत है कि ५ वर्षों की योजना अधि में सरकार को जनता से इतना रुपया मिल जायगा कि उनसे वह कमी पूरी हो जायगी जिसे वह अतिरिक्त ध्यान अथवा करा द्वारा पूर्ण नहीं कर सनी है।

योजना पर धन व्यय करने की गति में निर्धारित गति की अपेक्षा कम रही है। मद्रास, बम्बई, उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बंगाल और बिहार ने ५० प्रतिशत अर्थात् उनसे कुछ अधिक व्यय कर डाला है। परन्तु हैदराबाद, मौराष्ट्र, मैसूर, मध्य प्रदेश, उड़ीसा और त्रानमेर कोचिन ने लगभग ४० प्रतिशत ही व्यय किया है। शेष राज्य न तो और भी कम किया है। इस तथा अगले वर्ष राज्यो को केन्द्र द्वारा उनके हिस्से का समस्त शेष धन देने के प्रयत्न किये जायेंगे।

विदेशी सहायता के २३४ करोड़ रु० में से १९५१ से १९५४ तक प्राय. १३२ करोड़ रु० व्यय हो चुके हैं। चालू वर्ष के लिए ४८ करोड़ रु० और पाचवें वर्ष के लिये ५४ करोड़ रु० निर्धारित किये गये हैं।

कपडा और जूट उद्योगों का युक्तियुक्त संगठन [शृ ३४१ का शेषाश]

उद्योगों में लगाई गई पूंजी

१९५१ से १९५४ तक उद्योगों में जो पूंजी लगाई गई है वह इस प्रकार है :—

उद्योग	पूंजी (लाख रु० में)
१ लोहा और इस्पात (मुख्य उत्पादक)	१,१६८
२ अलुमिनियम	१४३
३ अन्य धातु शोधन उद्योग	७५
४. चादसिल्लि	२२१
५ डोजल इन्ज और पम्प	४०
६. मोटर गाडिया	११२
७. कपडा मिल मशीन	१७५
८ रेल के इन्ज डिन्ने	६२२
९ जहाज निर्माण	६०१
१०. विजली के तार और बरिल	१६८
११ विजली बनाने का मशीने	१,६२६
१२ अन्य इंजीनियरी उद्योग	८८१
१३. भारी सामायिक पदार्थ, कृत्रिम रगत और औपधिया	१,४०४
१४ रंगलेप और वारनिशें	४५
१५ फेट्रोप्लियम शोधन	१,७०२

१६. कागज	५८८
१७ रब्र	४८०
१८ सीमेंट	६२७
१९ चीनी	७२
२० वनास्पति और ताडुन	८२
२१ धान	१६५
२२ सूती कपडा	४५०
२३ अन्य उद्योग	४३६

चोरी से आने वाला सोना

भारत में नीचे लिखे अनुयाय चोरी से लाया जाने वाला सोना पकडा गया और जन्त करके बम्बई और कलकत्ता की सरकारी टकसालो में ररद दिया गया। अभी इस मोने को जेच देने का प्रस्ताव नहीं है :—

१९५१	६५,११८ तोला
१९५२	५४,७७३ तोला
१९५३	१६,६८६ तोला
१९५४	५१,०५४ तोला

(पदली छुमारी)

इन १९५४ की मारत के स्टलिय पावने का योग ७४४ करोड़ रु० था, जब कि जनवरी १९५४ में यह ७२७ करोड़ रु० था।

पश्चिमी बंगाल—टांगोर घाटी बरपोशात की लाटनें कलकता नगर तक लाई जा रही हैं। ग्रामों में बिजली देने की भी कई योजनाएँ पूर्ण की जा रही हैं। ७६ लाख रु० में से ७७ लाख रु० व्यय हो चुके हैं।

हृदरावाट—गामाशुवटम धर्मल योजना और निजाम सागर जल-निगुन योजना १९५५-५६ में चालू हो जायगी। हृदरावाट राज्य की ओर वाली तु गभद्रा जल विद्युत योजना पर भी शेष की काम आरम्भ होगा। २०१ लाख रु० में से २०५ लाख रु० व्यय हो चुके हैं।

मध्य भारत—२०८ लाख में से १०६ लाख रु० व्यय हो चुके हैं और ४,००० किलोवाट अतिरिक्त बिजली पैदा होन लगी है।

मैसूर—१,२६८ लाख में से ७४४ लाख रु० व्यय हो चुके हैं। जंग पावर हाउस में ७२,००० किलोवाट की अतिरिक्त मशीनें लगाई जा चुकी हैं।

पम्पू—३१ लाख में से ५ लाख रु० व्यय हुए।

राजस्थान—४६६ लाख में से ६० लाख रु० व्यय हुए। १९५५-५६ तक २४,००० किलोवाट अतिरिक्त बिजली मिलने लगेगी।

सौराष्ट्र—२१२ लाख में से २७ लाख रु० व्यय हुए।

कोचीन—१०३५ लाख में से ६४० लाख रु० व्यय हुए।

“ग” श्रेणी के राज्यों में १६६ लाख में से ५५ लाख रु० व्यय बिजनें गये।

मद्रास, मैसूर, वादनकोर कोचीन आदि टुकड़ राज्यों के ग्रामों में भी बिजली देने में पर्याप्त प्रगति हो चुकी है। मद्रास में १६५० तक २,५०० गांवों में बिजली दी जा चुकी है।

नयी योजनाएँ

इस समय चम्बल, कोणी, कृष्णा रिहण्ट, और कोचना की नयी योजनाएँ विचारार्थ हैं। रिहण्ट योजना से २,४०,००० किलोवाट बिजली मिलेगी जिसमें उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग, बिहार के पश्चिमी भाग और त्रिपुण्ड्र प्रदेश तथा मध्य प्रदेश के निकटतम भागों को लाभ पहुँचेगा। इस योजना के लिए भारत अमरीकी सैलिकन सहयोग कार्यक्रम १९५३-५४ के अन्तर्गत ११० लाख डालर का बतार हो चुका है।

अमावस्यत क्षेत्रों की दशा सुधारने के लिये केन्द्र ने राज्या को सहायता दी है। इसके फलस्वरूप १५ लाख एक्ड़ अतिरिक्त भूमि में खेती होने लगेगी जिसमें लगभग १० लाख की सिंचाई होगी। वट सहायता इस प्रकार की गई है।

आज ५०० लाख रु०, आगाम १०० लाख रु०, बिहार ३५० लाख रु०, कन्नड़ ४८० लाख रु०, मद्रास ६२० लाख रु०, उत्तर प्रदेश ६७३ लाख रु०, पश्चिमी बंगाल १०० लाख रु०, हृदरावाट ३०० लाख रु०, मैसूर ३५० लाख रु०, राजस्थान २५० लाख रु०, सौराष्ट्र २५० लाख रु० और अजमेर २५ लाख रु०।

इसके अतिरिक्त केन्द्रीय सरकार ऋण भी देगी जो ३० वर्षों में वापस लिया जायगा। इस ऋण पर पहले ५ वर्षों में कोई व्याज नहीं लिया जायगा। शीघ्र लाभ पहुँचाने की दृष्टि में ये योजनाएँ बनाई गई हैं। इनमें महत्वपूर्ण इस प्रकार हैं :—

योजना	कुल व्यय (लाख रु० में)
आन्ध्र	
(१) बिजली सरोवरे	४१.००
(२) बरगूल कटपा नहर का सुधार	६६.००
आगाम	
(२) वाट रोपने और पानी निकालने की योजना	६३.२०
बिहार	
(४) विकेरी नहर का विस्तार	३६.००
(५) पानी निकालने की योजनाएँ	४७.२०
(६) वाट निरन्तर की योजनाएँ ...	६५.४०
मध्य	
(७) घोट नदी योजना ...	६००.००
(८) दोहट तासुके की पाटाङ्ग गरी तालाब योजना	४१.६८
मद्रास	
(६) वागार सिंचाई योजना	२५०.००
(१०) अमरावती सिंचाई योजना	२००.००
उत्तर प्रदेश	
(११) माताटीला बांध ...	४००.००
(१२) सुरेगाव योजना (प्रथम चरण)	३७३.४०
पश्चिमी बंगाल	
(१३) ७५ अतिरिक्त कलकू ...	३१.००
हृदरावाट	
(१४) नूरी योजना ...	६८.००
मैसूर	
(१५) नाटा योजना की सहायता	२०.००
सौराष्ट्र	
(१६) मच्छू	८६.०३

[५]

योजना के व्यय का विवरण

पञ्चपथ योजना के मार्च १९५४ को समाप्त होने वाले तीन वर्षों में अनुमानित लगभग ८८५ करोड़ रु० व्यय हुए हैं। योजना पर जितना धन व्यय करने का प्रस्ताव किया गया था उम्मा यह ४० प्रतिशत है। इसमें केन्द्र ने ४४४६ करोड़ और राज्यों ने ४३६६ करोड़ रु० व्यय किये हैं। १९५४-५५ में ५.७२ करोड़ रु० व्यय करने का प्रस्ताव है जिसमें से ३५६ करोड़ केन्द्र द्वारा और २.१६ करोड़ रु० राज्यों द्वारा होगा। १९५६-५७ के सशेषित व्यय से यह २.१६ करोड़ रु० अधिक है। कृषि, सामूहिक योजनाओं, मिनाइ और बिजली, रेल, बन्दरगाहों और पत्तनों, बड़े उद्योगों, शिक्षा, स्वास्थ्य, मराना, स्थानीय निर्माण कर्मों और पुनर्वास पर अग्रिम गर्च होने से यह वृद्धि हुई है।

३१ मार्च १९५४ तक केन्द्र द्वारा व्यय किये गये ८८५ करोड़ रु० में से लगभग ६० प्रतिशत अर्थात् ५३५.३ करोड़ रु० साधारण बजट में से किये गये। लगभग १५ प्रतिशत अर्थात् १३१.४ करोड़ रु० विदेशी महाकांस मिले और शेष २१८ करोड़ रु० अर्थात् प्राय २५ प्रतिशत शेष नदी, सिस्सु-विद्युत् की बिजली और अल्पकालीन ऋणों से प्राप्त हुए। राज्य सरकारों ने १९५१-५४ तक जो ४४० करोड़ रु० व्यय किये

उन्में न प्राय १६० अथवा की बचत में से और ५२ करोड़ रु० जनता ने ऋण लेकर किये। केन्द्र से राज्यों को १२२ करोड़ रु० की महाकांसा दी गई। शेष धन निकगुरिडिय की बिजली आदि से प्राप्त किया गया। कमीशन का मत है कि ५ वर्षों की योजना अग्रिम में सरकार को जनता से इतना रूपय मिल जायगा कि उनमें वह कमी पूरी हो जायगी जिसे वह अतिरिक्त आन अथवा करा हाग पूर्ण नहीं कर सकी है।

योजना पर धन व्यय करने की गति भी निर्धारित गति की अथेक्षा कम रही है। मद्रास, कर्नर, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और बिहार ने ५० प्रतिशत अथवा उससे कुछ अधिक व्यय कर डाला है। परन्तु हैदराबाद, मौराष्ट्र, मैसूर, मध्य प्रदेश, उड़ीसा और आन्ध्र प्रदेश राज्यों ने लगभग ४० प्रतिशत ही व्यय किया है। शेष राज्या न तो और भी कम किया ह। इस तथा अगले वर्ष राज्यों को केन्द्र द्वारा उनके हिस्से का समान शेष धन देने के प्रयत्न किये जायेंगे।

विदेशी महाकांसा के २३४ करोड़ रु० में से १९५१ से १९५४ तक प्राय १३२ करोड़ रु० व्यय हो चुके हैं। फाल्गुन वर्ष के लिए ४८ करोड़ रु० और पाचवें वर्ष के लिये ५४ करोड़ रु० निर्धारित किये गये हैं।

कपड़ा और जूट उद्योगों का युक्तियुक्त संगठन [पृष्ठ २४१ का शेष]

उद्योगों में लगाई गई पूंजी

१९५१ से १९५४ तक उद्योगों में जो पूंजी लगाई गई है वह इस प्रकार है —

उद्योग	पूंजी (लाख रु० में)
१ लोहा और इस्पात (मुख्य उत्पादक)	१,१६८
२ अलुमिनियम	१६३
३ अन्य धातु शोधन उद्योग	७५
४ कार्टिगिल	२२१
५ अजिल दूधन और पन्थ	१०
६ मोटर गाडिय	११२
७ कृषय मिल मशीन	१७५
८ रेश के दूधन बिन्धे	६२२
९ जहाज निर्माण	६०१
१० बिजली के तार और कंविज	१६८
११ बिजली बनाने का यंत्रों	१,६२६
१२ अन्य इन्जीनियरी उद्योग	८८१
१३ भारी रासायनिक पदार्थ, कृत्रिम द्यार और औषधिया	१,४०४
१४ रगलेप और कार्टिगिल	४५
१५ पेट्रोसियम शोधन	१,७०२

१६ मागज	५८८
१७ रेशन	४८०
१८ गीमेष्ट	६२८
१९ चीनी	७२
२० वनास्पति और साडुन	८२
२१ बच	१६५
२२ सूते कपडा	४५०
२३ अन्य उद्योग	४३६

चोरी से आने वाला सोना

भारत में नीचे लिखे अनुसार चोरी से लाया जाने वाला सोना पकडा गया और जप्त करके कर्नर और कलकत्ता की सरकारों तकहालों में रख दिया गया। अभी इस सोने को बेच देने का प्रस्ताव नहीं है :—

१९५१	६५,११८ तोला
१९५२	५४,७७३ तोला
१९५३	१६,६८६ तोला
१९५४	५१,०५४ तोला

(पहली छुमाही)

यून १९५४ को भारत के स्थलिय पावने का योग ७५४ करोड़ रु था, जब कि जनरु १९५४ में यह ७२७ करोड़ रु था।

★ भारत और चीन के बीच व्यापार का विकास किया जाय

★★ दोनों के मध्य पहले से ही जो मैत्री है उसे और सुदृढ़ किया जाय

भारत और चीन के बीच पहला व्यापार-करार

दोनों देशों में व्यापार और मैत्री बढ़ाने की आकांक्षा

साल १९५५ अक्टूबर १६५५ को भारत और चीन के बीच एक व्यापार करार पर हस्ताक्षर हो गये। दोनों देशों के बीच अपनी तरह का यह पहला करार है। इस का उद्देश्य दोनों देशों के वर्तमान मैत्रीभाव को और दृढ़ करना तथा समानता एवं पारस्परिक लाभ के सिद्धांत पर दोनों देशों के बीच व्यापार बढ़ाना है। आयात, निर्यात और मुद्रा-निमित्त मजबूती नियमों के अनुसार हा दोनों देशों में व्यापार किया जाएगा। मुद्रा-मुक्त में यह करार दो वर्षों के लिये हुआ है। बातचीत करके यह अवधि और बढ़ाई जा सकेगी।

करार में दो परिशिष्ट हैं, जिनमें निर्यात और आयात की जाने वाली जिनसा की सूची दी गई है।

करार की एक विशेषता यह भी है कि इसे भारत की राजभाषा हिन्दी में लिया गया है और हिन्दी प्रति जो प्रामाणिक माना गया है। इसमें पूर्व में का कोई करार हिन्दी में नहीं लिया गया था।

करार होने के समय दो पक्षों का भी आदान प्रदान हुआ है। एक पक्ष में यह उपाय गया है कि कुछ पैसा माल जिसकी चीन के निर्यात प्रदेशों की जरूरत होती है और निम्नो पूर्ति भारत से नहीं हो सकती—चीन में भारत द्वारा निर्यात भेजने के लिये क्या परीक्षा प्रयत्नया जायगा। दूसरा पक्ष भारत चीन व्यापार में उपस्थित होने वाली कई समस्याओं के सम्बन्ध में है। दोनों सरकारों के बीच यह हुआ है कि इन व्यावहारिक समस्याओं के विषय में विस्तारपूर्वक बातचीत चीन याद में की जायगी।

करार पर भारत की ओर से वाणिज्य एवं उद्योग सचिव श्री पंच० पी० आर० आर्यागर ने और जन-गणराज्य चीन की ओर से चीनी विदेशी व्यापार के उपाय मंत्री तथा भारत आये हुये चीनी व्यापार मंडल के नेता महामतिम था कुंग युआन ने हस्ताक्षर किये हैं।

समता तथा पारस्परिक हित का प्रयत्न

पूर्ण करार इस प्रकार है —

भारत गणराज्य की सरकार और चीन के जनवादी गणराज्य की केन्द्रीय जनवादी सरकार ने दोनों देशों के बीच व्यापार विकसित करने तथा भारत और चीन की सरकारों और जनता में पहले से ही जो मैत्री है उसे और भी सुदृढ़ करने की सामान्य आकांक्षा से प्रेरित होकर समता तथा पारस्परिक हित के आधार पर निम्नलिखित करार किया है —

अनुच्छेद १

दोनों सविधानकारी पक्ष दोनों देशों के बीच व्यापार का विकास करने के लिये सब सम्भव उपायों को अपनाने की आकांक्षा से ऐसे व्यापार की बनाने के सब सुझावों पर पूर्णतः प्रतिकार करने के लिये सहमत हैं।

अनुच्छेद २

दोनों सविधानकारी पक्ष सहमत हैं कि दोनों देशों के बीच सब वाणिज्यिक सीधे अपने-अपने देशों में समय-समय पर प्रश्न आयात, निर्यात तथा वैदेशिक-निमित्त विनियमों के अनुसार किये जायेंगे।

अनुच्छेद ३

दोनों सविधानकारी पक्ष दोनों देशों में तत्काल प्रवृत्त विधियों और विनियमों के प्रचालन अनुसूचियों 'फ' और 'ख' में दो गई अनुसूचियों के आधार पर नियम के लिये सुविधाएँ देने के लिये सहमत हैं।

अनुच्छेद ४

वर्तमान करार दोनों सविधानकारी पक्षों की उन वस्तुओं के व्यापार में सुविधा देने के लिये प्रचलित रहा करारों को सहमत अनुसूचियों 'फ' और 'ख' में नहीं गंज है।

अनुच्छेद ५

भारत गणराज्य और चीन के जनवादी गणराज्य के निर्यात प्रदेशों के बीच व्यापार उन करारों के उपस्था के अनुसार किया जायगा जिन पर पक्षों में २६ अगस्त, १९५५ को भारत गणराज्य और चीन के जनवादी

गणराज्य के बीच भारत और चीन के तिब्बत प्रदेश के बीच व्यापार और समागम के लिये हस्ताक्षर हुये ह।

अनुच्छेद ६

भारत गणराज्य का नरेश महमूद है जिन् वान के जनजाती गणराज्य की सरकार की प्राथमा पर वह प्रवृत्त नियमा के अधीन ऐसी वाणिज्यिक वस्तुओं के लिये आ भारत में प्राप्त नहा हो सकती, कल्पना परन में प्रवेश की तथा तत्पतर चीन के जनजाती गणराज्य के तिब्बत प्रदेश में जाने देन की उचित मुनियामें प्रगन करेगी। ये मुनियामें केवल उन वस्तुओं को प्रदान की जायेगा जिनका उत्पत्ति-स्थान चीन हा।

अनुच्छेद ७

भारत गणराज्य और चीन के जनजाती गणराज्य के बीच सब वाणिज्यिक और आवाणिविषय सुगवान, पास्वरिक सुनिवास्तुसार, भारतीय रुपयां वा पीछे स्टर्लिंग में क्रिय जा सकेंगे। ऐसे सुगतानों की सुविधा के प्रवाजन से चीन का जनजाती बैंक भारत में एक या अधिक एमो वाणिज्यिक बैंक (बैंकों) में जा वैदेशिक प्रिनिमय में व्यवहार वन के लिए प्राधिकृत हा, 'क' कहलाने वाला (बाले) लेखा (लेख) जालेगा। इसके अतिरिक्त चीन का जनजाती बैंक, यदि आवश्यक हो, भारत के रिजर्व बैंक में, 'ए' कहलाने वाला एक अन्य लेखा जालेगा। दोना देरों के बांच सब सुगतान लेखा (लेख) 'क' द्वारा क्रिया जायेगा। लेखा 'ज' का उपयोग नैकल, जब कभी आवश्यक हो, लेखा (लेख) 'क' में शेष राधा की प्राप्त वे लिय क्रिया जायेगा। भारत के निवासियों द्वारा चीन के जनजाती गणराज्य के निवासियों को दिने जाने वाले सुगतान, ऐसे सुगतान की राशि को उपयुक्त लेखा (लेख) 'क' में आंकलन द्वारा क्रिये जा सकेंगे। चीन के जनजाती गणराज्य निवासियों द्वारा भारत के निवासियों को दिने जाने वाले सुगतान उक्त लेखा (लेख) 'क' में विकलन द्वारा क्रिय जायेंग। लेखा (लेख) 'क' की पूर्ति, जब और जैनी आवश्यकता पड़े, निम्नलिखित रीतियों में से एक के द्वारा की जायेगी, अर्थात् —

- (१) चीन के जनजाती बैंक के अन्य वाणिज्यिक बैंक के साथ अन्य लेखा 'क' में से या भारत के रिजर्व बैंक के साथ लेखा 'ए' में या निविधा स्थानान्तरित कर के,
 - (२) सम्बन्धित बैंक को, स्टर्लिंग देव कर।
- लेखा 'ए' की पूर्ति वा तो भारत के रिजर्व बैंक को स्टर्लिंग देव कर वा लेखा (लेख) 'क' में एकमें स्थानान्तरित कर के की जायेगी।

२. इस प्रकार के अनुच्छेद ७ में निम्नलिखित सुगतान आते हैं —

- (१) वर्तमान वरार के अन्तगत आयात और निर्यात की गई वस्तुओं के लिये सुगतान,
- (२) वाणिज्यिक सीने से सम्बन्धित सुगतान और बीमा, माडा (फिसी एक देश के जहाजा द्वारा वस्तुएं भेजने की दशा में); पनन सम्बन्धी व्यय, समग्र और आगे भेजने का तथा माल लाने का व्यय निशाकर,

(२) चल वित्तों के वितरण के लिये तथा स एहतिक अभिनयो और अन्य प्रस्थावियों की आय तथा व्यय के लिये सुगतान,

(४) वाणिज्यिक, लाकृतक, सामाजिक अथवा शानकीय स्वरूप के प्रतिनिधि मण्डल की यातायात के व्यय वा सुगतान,

(५) चान में भारत गणराज्य के राजदूतावास, उणिवा दूतावास और व्यापार अभिरक्षण वा सधारण के लिये सुगतान तथा भारत में चान के जनजाती गणराज्य के राजदूतावास, वाणिज्य दूतावास और व्यापार अभिरक्षण के सधारण के लिय सुगतान,

(६) अन्य आवाणिविषय सुगतान जिन पर भारत के रिजर्व बैंक और चीन के जनजाती बैंक के बीच वार हा जाय।

३ चान के जनजाती बैंक द्वारा सचुन लेखा (लेख) 'ए' वा लेखा 'ए' के आंकलन पद में शप राशिवा स्तर्लिंग में, माग पर जिनो भी समय, भारतीय विनिमय बैंक तस्या द्वारा समय समय पर निश्चित बैंक की स्तर्लिंग के लिय सामा य विवर त्तर पर परिवर्त्य होंगी। उपयुक्त शेष राशिवा दन वरार के गमाप्त होने के बाद भी परिवर्त्य होंगी।

४ भारत गणराज्य और चीन के जनजाती गणराज्य के सीमावर्ती व्यापार के लिये सुगतान, रुठिगत प्रथा के अनुसार तन क्रिये जायेंगे।

अनुच्छेद ८

दोनों सणिवाकारी पद एमो प्रश्नों पर एक दूसरे से परामर्श करने के लिय सहमत हैं जो वरार को वाणिज्यिक करने के दौरान में उत्पन्न हा।

अनुच्छेद ९

यह वरार इस पर हस्ताक्षर होने की तिथि से प्रभावी होगा और तो वर्ष की अन्तिम के लिये मान्य रहेगा।

यह वरार दोनो सणिवाकारी पदों के बीच इसकी समाप्ति में ३ मस पूर्व प्रारम्भ होने वाली वार्ता द्वारा आगे के अणगा अ नरीकृत किया जा सकेगा।

१४ अक्टूबर, १९५४ को नद दिल्ली में हिन्दा, चीनी और अग्नेजी भाषाओं में तो ३ प्रतिभा में सम्पादित हुआ। सब पाठ समान रूप से प्रामाणिक हागे।

कु ग युधान
चान के जनजाती गणराज्य की
सरकार की ओर में।

६० व० रा० अण्यगार
भारत गणराज्य की सरकार
की ओर से।

अनुसूची (क)

चीन से भारत को निर्यात के लिये उपलब्ध वस्तुयें

१. अनाज
(१) चावल (२) चावल के अतिरिक्त अन्य अनाज (३) हरी फलिया (४) मोयाबोन—हरी तथा काली।

२. मशीनें

जिगमें लेनिंग और शेपिंग की मशीनें, बगो की मशीनें, अन्य मशीनों के औजार इनकवाइनेषल नाचिंग प्रेत, वायु एजिन, फमल काटने

के दूर, लटक कूटने के बेलन (रोट मशाल), बिजली के पम्प, पथर बरतणर द्रव्योत्त मिलाने वाले घूर, पथर फोउने के घूर, छापने की मशीने मैसिन्ट्रिक का मशीने, टयमकार्मरे पम्प, बिजली की मोटार, गीज शान का मशीने गानर मोटार मशीने, मूठी बरतणर काने की मशीने, प्रत का प्रत बनाने का मशीने, टेलीफोन एक्जन्जेक मशीने, रबड चूटे तार, डैडिनेटर वायु जलना का सामान, ई० ० मी० तथा १०० मी० नेक्टर और विविधकारीन उपकरण मर्ममालत है ।

७. खनिज पदार्थ

(१) पट्टामनी बूट शंभु आकुर (२) लिथम (३) ग्रेफाइट (४) पत्तारम्पार (५) गडक (६) मने शिला (मणल) (७) हस्ताल (८) मोटासा (९) शोषत नैपथालीन (१०) चिकनी मिट्टा (११) आग्निबोलाप्रद (आग्नेय आकुराद) ।

४. रेशम तथा रेशमी कपड़ा

(१) लकड़ तथा पाला कच्चा रेशम, वायु द्वारा घोड़े से निकाल कर लोरेड गानर (२) कना टुथा रेशम (३) टसर रेशम (जगली रेशम) (४) इण्डियन रेशम (५) रेशमी कपडा (६) पूर्वी रेशमी कपडा (७) टसर रेशमी कपडा ।

५. पशुधर्म से प्राप्त वस्तुए

(१) डन (२) बगडा तथा खालें (३) चतस के पर, हड के पर (४) ऊदी घासा (५) लोरेड मोम (६) बडद ।

६. कागज तथा लेखन-सामग्री

(१) आखनारी कागज (२) छापने के कागज के लिए मशीन से बनाई गई छुगरी (३) लोरेड का कागज (४) स्टैलिज कागज (५) स्पाही सौकला (६) पाउन्ड्रेपेन (७) पेसिल (८) स्पाही (९) छापने की लकड़ी (१०) ब्रह्मकन मशीने ।

७. रासायनिक पदार्थ

(१) डाइकार्बोक्सीड कार्बोन (२) सोडियम फास्फेट (३) हाथों लिक् अम्ल (फिनोल) (४) पेटेथियम कार्बोनेट (५) मोनो क्लोरो बैजोन (६) ६६६ डीटनाराक (७) क्लोरीन पाउडर ।

८. तेल

(१) टाग तेल (लकड़ों का तेल) (२) टाकनीनों का तेल (३) वेपरमेट का तेल ।

९. विविध

(१) बरुण (२) वेचपात (३) कम्प्यूट (४) नडगल (५) सोफ का घासा (घासा साफ) (६) मिथल के रवे (७) लुखान की मिरी (८) गलेगल (९) गैलत (१०) बन्दरवात विविधनीय पदार्थ (११) बाला की जली (१२) प्रसिद्धत नलिज (१३) रगनेर (१४) बार्डमिगल (१५) मेल सा सामान (१६) फोमोसिय (१७) रान तथा काच का सामान (१८) मुड्डिन पीडो तथा डुगण (१९) डिग्ना मे गड वस्तु (२०) टाच (२१) निरोड फ्लायक (२२) बलन (२३) प्रकटावय चटा सामान (२४) पटाणे (२५) मोने बनिजान आदि

तुलने की सुदवा (२६) गिलार्ड की सुदवा (२७) मखली तथा स्युडो उपायन (२८) दूर के बल (२९) वकिज तथा सन्निधे स कने दस्तुने (३०) लहसुन (३१) बरमोसोली (३२) बानी फिने (विजु लॉनी) ।

अनुसूची (ख)

भाग १

विद्युत समेन चीन को निर्यात के लिये भारत से उपलब्ध वस्तुयें खाद्य पदार्थ तथा तन्मजू

(१) घने, चाल और दाले (२) मगले, विन्ने लाल मिचं सर्मालित है (३) कच्चा तन्मजू ।

कच्चा माल तथा सुलवत आनेमित पदार्थ

अयस्क तथा साद्रित पदार्थ

(१) कोन अस्क (२) कालाडर अस्क (३) मेगनीज अस्क (४) बग और क्लत साद्रित ।

पतन्मलि तेल

दु गफली का तेल

उपजडीन तेल

(१) अगिन पान का तेल (२) चन्दन का न ।

डुलने के रेडो

(१) कच्ची चूई (२) कच्चा डन ।

लकड़ी तथा इमारती लकड़ी

चन्दन की लकड़ी ।

खाले तथा चमड़ा

बन्दे की कच्ची खाले आर मेड क भाग मेन की गाले और कभाड हुर गाले तथा चमड़ा ।

विविध

(१) हरा तथा हरा का मल (२) वैरोफिन मोम (३) हांय चमड़ा ।

सुदयत निर्मित पदार्थ

रासायनिक उद्ये, रासायनिक पदार्थ और औषधि तथा औषधें

(१) रासायनिक दवा (डाइमोसुल, कैलियम बलोराइट, कोमिक अम्ल, मिन्सर्ब डेनाशियम क्लोराइट, डेनाशियम क्लोरेट, नैपथालेन, पेटेशियम बोमोट, पेटेशियम कार्बेट, साइटम बोमोट, सोडियम क्लोराइट सोडियम क्लोराइट) (२) औषध, औषधे तथा विविध मन्क्या लण वडिज (३) नैवग किने टूने रग (४) शार्फ मखली का नेम ।

औजार, उपकरण तथा मायन

(१) उपकरण सामग्री (२) विन्ली के लैप (३) विन्लु-शरंगक सामल (४) विन्लु निविला मन्क्या उपकरण (५) गण्ड

सन्मन्त्री औजार (६) शल्य चिकित्सा सम्बन्धी औजार (७) एक्म रे उपकरण (८) टेलीफोन (९) बिजली के पट्टे।

मशीने

(१) बाल तथा रोलर बेमरिज (२) जनित्र (३) मोटर (४) कपडा बनाने की मशीनें, जिनमे स्पिडिलस, रिंग प्रेम, धुनने के पवित्र, कपडे और फिनिशिंग की मशीनें सम्मिलित हैं (५) थालर।

मशीनी औजार

टुसमे सेंटर लेथ, बरमे की मशीनें, शेपिंग की मशीने, स्लाटिंग की मशीने, प्लेनिंग की मशीने हेबसा की मशीनें, यात्रिक शक्ति दाबक, लेथ चक्म, लेथ सैंडर्स और ड्रिल चक्म, लेथ मैट्रिलस, वाइसेज प्लेन मशीने, ड्रिल स्तोबज, लकड़ी का माटाइ के प्लेनर्स, राउण्ड बालेट्स, एसिडिलीन जनित्र, राउण्ड सीमिंग मशीने, शक्तिचालित बैरट बाली गिलोटिन शीपरिंग मशीनें, लाइव सैंडस, हाथ के तथा पैर के दाक्क, ग्रैडल गिलोटिन शीपरिंग मशीने, प्लेन मिलिंग मशीने सम्मिलित है।

धातु निर्मित चीजें

१ एल्यूमिनियम, पीतल और तांबे का सामान २ बनेसर्स का छोड़ कर लोहे और इस्पात से निर्मित चीजे ३ अलौहस धातु के उत्पादन।

कपडा

१. सूती कपडे के थान और सूत से निर्मित चाजे २ सूती टिवुस्ट और पागा ३ फूनेस से निर्मित चीजें ४ सिसल के रस्से और द्वाहन ५ जूट से निर्मित चीजे।

वाहन

१ वाइसिक्लें २. मोटर कारें।

विविध

१. भारतीय फिरमें (चित्र लिची) २ हल्की इजीनियरिंग की वस्तुएं, बेन्द्रापकारी पम्प, जो० आई० बाल्टिंग, हराकेन लाल्टेनें, सिलाइ की मशीनें ३. एगस्टिफ से निर्मित चीजें ४ कपडा ५ अन्नक ६ अदह सीमेंट की चादरें ७. सीमेंट ८ धूम पाइप ९. मअन बनाने वाली का लोहे का सामान १०. टायर और ट्यूब ११ मशीनी के पट्टे १२ कागज १३ राल मिश्रित वस्तुयें १४. खेती के औजार १५. रोगाणुनाशक चीजें।

भाग २

चीन के तिब्बत प्रदेश को भारत से निर्यात के लिये उपलब्ध वस्तुएं स्वाद्य पदार्थ तथा तम्बाकू

१. मिठाइया २ उद्जनित तेल ३. डिब्बों मे बन्द फल और सब्जिया ४. सिगरेट।

कच्चा माल तथा मुख्यतः अनिर्मित पदार्थ

सनरपति तेल

१. अरंडी का तेल २. बग्डीनीड का तेल ३. अलसी का तेल ४. सरसों का तेल ५. नादगरसीड का तेल ६. रेपसीड का तेल।

करवा

पहनने के रस्त्र।

विविध

बजल गोट के अतिरिक्त अन्य गोट।

मुख्यत निर्मित पदार्थ

औजार, उपकरण तथा साधन

१ मचायम २ बिजली के तार और केबिल ३ विमान सम्बन्धी औजार ४ ट्राममिशन लाइन उपकरण ५ वायरलेस सम्बन्धी औजार।

मशीनें

ट्रोलेज तथा ट्राममिशन गीयर।

धातु निर्मित चीजे

१ बोल्ट और नट २ इनेमल का सामान ३ लकड़ी के पेंच। कागज समेत लेखन सामग्री कागज तथा लेखन-सामग्री।

वाहन

(१) ट्रक (२) ट्रैक्टोरे तथा गाडिया (३) गाडियो के पहिये और धुरे।

विविध

(१) मोमबलिया (२) टीबाल की घडिया (क्लाक) (३) निर्मित मूगा (४) डियासलाइया (५) सानुन तथा धोने के पाउडर (६) प्रगाथन वस्तुयें (७) सुअर की चर्बी (८) सुअर का मास (९) चीनी (१०) बरसातिया (११) खड के जूते (१२) रीडम्पोर्समिन्ट के लिये लोहे के सरिये (१३) जस्ता चटा लोहे का तार (१४) काटदार तार (१५) इस्पात की प्लेटे और चादरें (१६) सडक बूटने के रेलन (१७) गैसोलीन, मिट्टी का तेल, डीजल और इजन के तेल (१८) साठी तथा नालोडार जस्ता चटी लोहे की चादरें (१९) चमटा और चमडे की वस्तुएं (२०) मेफ्टी रेजर ब्लेड (२१) निस्कुट (२२) टायर तथा ट्यूबों को छोड़ कर रबर की बनी चीजें (२३) काच की चादरें और काच का सामान (२४) खेल का सामान (२५) मल्ट लकड़ी।

दो पत्र

भारत सरकार,

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्रालय
नयी दिल्ली

१४ अक्टूबर, १९५४

प्रिय श्री कुं'ग,

उस चर्चा के दौरान मे, जिसके फलस्वरूप भापट गणराज्य की सरकार और चीन के जनवादी गणराज्य की सरकार के बीच व्यापार करार हुआ है, यह स्वीकार किया गया था कि अत्युच्छेद ६ और उसे कार्यान्वित करने की प्रक्रिया के बारे में दोनों सरकारों के अभिप्राय पत्र भिन्नियम द्वारा अभिलिखित भिये जाने चाहिये।

(-) ममत आर पारम्परिक हित क आधर पर दोन सरकारों भारत आर नान के उनवादा गणराज्य के तिबत प्रदेश क चीन उर्जमान गणराज्य व्यापार से मधुत तथा निरमित करना चाहती हैं ।

(-) नारन गणराज्य की सरकार वर समझती है कि चीन क उनवादी गणराज्य के निरमित प्रदेश को कतिपय ऐसी परिस्थित्त वस्तुआ व आर वृद्धता पट सकती हैं, जो भारत के प्रान्त नहीं हो सकती । अतएव नर ऐसी वस्तुआ को चीन क उनवादा गणराज्य के तबत प्रदेश क नान वन के लिने वनकता होकर निष्कामन वर मनुचित सुत्रधाने वन क लान राजा है वर शन यह है कि उन वस्तुआ को उ पमि म्यान नान नान चाह्य ।

(५) नर स्वभार किना जना है कि पिछली नरिडका म उल्लिखित वस्तुआ के निष्कामन आर मन्वण के लिय प्राकृता की निम्नलिखित स्थल बाने अग्रपदा शोये :-

(१) निष्कामन आर परिवहन को सुविधाजनक बनान की दृष्टि से नान के उनवादी गणराज्य की सरकार भारत सरकार क चीन क उनवादी गणराज्य के तिबत प्रदेश को भोजी नान नाला ऐसी वस्तुआ क अग्रिम पुरता भारत म ऐसा वस्तुआ का उललावध का नान से एतन दूर यह सुनिश्चित करने के लिने देगी कि क्या निष्कामन आर नान वन नर सुविधाने प्रधान की जा सकती है । ऐसी वस्तुआ क परिवहन म सम्बन्धित निरन को नया टिकला प्थित चीनी राजदूतागार आर भारत सरकार क वाच बतजात वर के तय करा जायेगा ।

(२) निष्कामित निने नान के लिप रीडित वस्तुओं, आर नत होने पर, कलकता पवन के सीमाशुल्क यह म रखी जायेगा ।

(३) भारत क सीमाशुल्क विनियमा के अग्रिम ररल दुये, आर सीमा शुल्क अधिवाशिया द्वारा अग्रमित निक्षप वने पर सीमाशुल्क मुहर के अग्रिम उत वस्तुआ को रीडित मार्गों से नान के उनवादा गणराज्य के तिबत प्रदेश म भजे जान के लिने निष्कामित करा जायेगा ।

(४) वस्तुआ को अग्रिम निर्गम स्थान पर स्थल सीमाशुल्क पदा विनियम के समुद्र सीमाशुल्क को अग्रमित मुहरों सहित प्रस्तुत किना जायेगा आर चीन के उनवादी गणराज्य के तिबत प्रदेश को निवात के लिय निष्कामित किना जायेगा ।

(५) यदि वस्तुआ अग्रमित मुहर सहित प्राप्त हा ता स्थल सीमा शुल्क अधिवाशिया वस्तुआ का निष्कामित कमा आर दम आश्रय का प्रमाण पत्र दगा ।

(६) कलकता पवन पर सीमाशुल्क अधिवाशिया क समुद्र एसा प्रमाण पत्र उपस्थित कने जान पर एत प्रमाणपत्र वन्द का कान वर, निन पर पारम्परिक महामत हा निनय का लाटा निग नानगा ।

(५) नर पन आर आर की पुष्टि दोन सरकारों द्वारा वरार का नन माने नान ।

मन्वीन

१० व० रा० अर्यवार्

तनननन कु ग युक्रान

नान क देशशिउ वनापर उपमना,

तथा नान व्यापार प्रतिनिधिमण्डल के नना,
नयी दिल्ली

भारत सरकार,

वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय,

नयी दिल्ली

१४ अक्टूबर, १९४४

प्रिय श्री कु ग,

उम नता के नान में जबके फलवन्वप भारत आर चीन के वन उर्जमान व्यापार वरार हुआ है, वाना प्रतिनिधिमण्डलों ने यह माना था कि निरान्ण मन्वण, नीरहन, बीमा आर व्यापारिक द्वारा यात्रा का मन्वणा पर विचार किया जाना चाहिये और उन्हे व्यवहारिक रूप से हल किया जाना चाहिये जिसम कि वरार के उद्देश्यों का और भी अर्थही तरह से पूरा किया का मर और दोन दशा क बीच व्यापार सम्बन्ध और भी हन हा वने । ये सम्मन्ध सिद्धान्त का अग्रिम ध्योने के प्रश्नों से अधिक सम्बन्ध ररना है और दमा के अग्रिम दोन प्रतिनिधिमण्डल इस बात पर समत हो गर है कि दन निरनों पर चर्चा काट की किनी तिथि के लिन स्थगित कर गी वने । आशा है कि इन बात का चर्चाका म हमारी दोन सरकारों ऐसा मन्वणक हल निकाल सकेंगी जा हमार दाना देशों के बीच व्यापार को प्रामाणित करन आर उने सरलता से आर वनन मे महानक होमा ।

(२) इस बीच दोन दशा क बीच व्यापार एत आधर पर दठा रहेगा जिम पर सम्बन्धित यात्रात तथा निवात करने वाली सहमत होंगे ।

(३) यह पत्र और आप की पुष्टि दोन सरकारों द्वारा वरार के आर माने जायेगे ।

मन्वीन

१० व० रा० अर्यवार्

तनननन कु ग युक्रान,

नान क देशशिउ वना उपमना,

तथा नान व्यापार प्रतिनिधिमण्डल के नना,
नयी दिल्ली ।

हमारे व्यापार प्रतिनिधियों द्वारा—

नारवे का औद्योगिक उत्पादन बढ़ा

भारत को रासायनिक पदार्थों आदि का निर्यात

संसार के विभिन्न देशों में स्थित हमारे व्यापार प्रतिनिधियों की जो नवीनतम रिपोर्ट प्राप्त हुई है उनमें अनुसार नारवे के औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि हो गई है। इन उत्पादनों का निर्यात भी अच्छा हुआ है। स्वीडन का व्यापार समतुलन अब उसके कम प्रतिफल रह गया है।

लेना और भारत का व्यापार समतुलन जन १९५४ में १०७ लाख रु० से लेना ने प्रतिफल रहा जबकि मई १९५४ में १०३.२ लाख रु० से रहा था।

नेपाल भारत में पेट्रोल, चीनी, कपड़ा, जूते आदि नित्यप्रति काम आने वाली वस्तुएं मंगा रहा है।

नारवे : औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि

नारवे के औद्योगिक उत्पादन की गत रुकी रहने के बाद, १९५४ की प्रथम तिमाही में काफी वृद्धि हो गयी। यह वृद्धि मुख्यतः कुल प्रमुख उद्योगों के उत्पादनो का निर्यात बहुत बढ़ जाने के कारण हुई।

१९५१ तक नारवे के उद्योग में उन्नत हो रही थी और उस वर्ष का सामान्य सूचक अंक १२१ (आधार १९४६=१००) रहा। उसने बाद मंदी आ गयी। १९५२ में उत्पादन में कोई वृद्धि नहीं हुई और सूचक अंक १२२ रहा। परन्तु १९५३ के शिशिर में उत्पादन में पुन वृद्धि हो गयी और १९५४ की प्रथम तिमाही में वह और भी बढ़ गया।

नारवे के उद्योगों के निर्यात का निरंतर निरन्त तालिका में दिखा गया है —

(आधार १९४६=१००)

कुल उद्योग	निर्यात करने वाले उद्योग					
	१९५२	१९५३	१९५४	१९५२	१९५३	१९५४
प्रथम तिमाही	१३३	१३३	१४४	१५८	१५०	१७८
द्वितीय तिमाही	११६	१२४	—	१२०	१२१	—
तृतीय तिमाही	१०६	१०७	—	१११	१२६	—
चतुर्थ तिमाही	१२७	१३०	—	१२५	१२६	—

दमाती लकड़ी उद्योग में, जो नारवे के निर्यात करने वाले प्रमुख उद्योगों में एक है, निर्यात उठाति हुई। निर्यात करने वाले उद्योगों की उन्नति में नारवे की आर्थिक स्थिति पर बहुत अनुकूल प्रभाव पड़ा है,

विशेषतः यह देखने हुए कि हाल में ही मुद्रा सम्बन्धी गम्भीर समस्याओं का सामना करना पड़ा था। निर्यात के आकड़ों से स्पष्ट हो जाता है कि १९५४ की प्रथम तिमाही में निर्यात का मूल्य, गत वर्ष की इसी अवधि की अपेक्षा, काफी बढ़ गया। आयात का व्यय बराबर कम होता गया है और व्यापार समतुलन का कुल घाटा २५ स ३० प्र० श० तक कम हो जाने का आशा है। १९५४ की प्रथम तिमाही में व्यापार की शर्तों का सूचक अंक १०० रहा, जब कि १९५३ की इसी अवधि में यह ६३ था।

दूसरी ओर व्यापारी जहाज, बिन्दे दश की आर्थिक उन्नति में मुख्य भाग लेना पड़ता है, उनकी स्थिति प्रतिफल बनी रही। जहाजों के निर्यातों की कमाई अब भी बहुत कम है और नारवे के व्यापारी जहाजों की कमाई में बराबर कमी होती जा रही है। १९५४ की प्रथम तिमाही में नारवे के कुल सुगतम समतुलन में ३,११० लाख क्रोनर का घाटा रहा, जो १९५३ की इसी अवधि के लगभग बराबर ही है। फिर भी अमेरिका तथा स्वीडन में स्पष्ट प्राप्त होने से नारवे की मुद्रा स्थिति में हाल में कुछ सुधार हुआ है।

भारत से व्यापार

१९५४ की प्रथम तिमाही में नारवे ने भारत से जो वस्तुएं मंगाई उनमें से प्रमुख हैं चाय (१,७५,००० क्रोनर मूल्य), गोल मिर्च (१,२४,००० क्रो०), मसाले (२,३१,००० क्रो०), जल (२,०२,००० क्रोनर), चर्द रूई (१,६८,००० क्रो०), तेल (६६,००० क्रो०), सूती कपड़ा और सूत

(७ १,००० कौ०), नूट का मोटा टाट पट्टा और नूट की थोरिया (१-६०० कौ०) आदि।

इस आरथि में भारत में भारत को जो वस्तुएं मंगा, उनमें प्रमुख हैं

धातु—छोटा और बड़ा कागज (४५,६५,००० कौ०), नूननूत धातु (६,८०,००० कौ०), गन्नादि—र मि अथ पदार्थ (२,१३,००० कौ०), रबड़ के पट्टे तथा रबड़ का अन्य सामान (१,०५,००० कौ०) धातुओं में बना बस्तुएं (५,६०,००० कौ०) आदि।

स्वीडन : जनवरी-जून १९५४ में व्यापार-सन्तुलन की प्रतिकूलता घटी

वर्तमान वर्ष का प्रथम षट्मास तिमाही में स्वीडन का व्यापार परिस्थिति लगभग २० प्र० श० का गना, जब कि आयात में केवल २० प्र० श० का वृद्धि हुई। जनवरी में जून १९५४ का पूरा छमाही में निर्यात व आयात दोनों में नतीज का दसा अरथि ०। अर्थात्, १०-२० श० का वृद्धि हुई।

जानवरी मूल्य वर्तमान वर्ष का प्रथम दो तिमाही में, सामान्यतः स्थिर तथा गणवर्गिक आयात मूल्य का बल कुछ वृद्धि का कारण था। १९५० के अन्त में मूल्य में कुछ कमि आया था जो आयात में निर्यात का अर्थात् अक्षय था।

१९५० का प्रथम छमाही में स्वीडन का मूल्य प्रमुख निर्यात वस्तुओं में, जिनमें स्वीडन के २०,०४० लाख कौ० के कुल निर्यात में लगभग पांचवां भाग अर्थात् ७,०८० लाख कौ० का भाग मगना। स्वीडन का मूल्य मगना जमा में जिनके बाद अमातुमार एडिन्गी वर्मना, नार्वे, डेन्मार्क, हॉलैंड और अमेरिका का गना रहा। स्वीडन का मूल्य केवल बाला में परिवर्तना अर्थात् मूल्य में प्रमुख रहा और अन्य जिनकी वृद्धि स्थिति कुछ ही गयी है। मूल्य केवल जमा में ही कमि कमि के बाद अमातुमार अमेरिका हॉलैंड, डेन्मार्क, लक्जम्बर्ग और फ्रान्स का स्थान रहा।

एशिया में स्वीडन का प्रमुख आरथि भारत था। वर्तमान वर्ष की प्रथम छमाही में स्वीडन ने भारत को २३७ लाख कौ० का मूल्य मंगा, जब कि १९५३ की इसी अरथि में ३१० लाख कौ० का मगना था। इसके बाद अमातुमार टुर्कीशिया ने २०८ लाख कौ०, जापान ने २२६ लाख कौ०, और पाकिस्तान ने ११६ लाख कौ० का मूल्य मगना।

१९५४ की प्रथम छमाही का आर्थिक विवरण

१९५४ की प्रथम छमाही में स्वीडन के विदेशी व्यापार में कुल ५,८०० लाख कौ० का आयात अधिक हुआ था। पूरा विवरण निम्न तालिका में दिया गया है।

स्वीडन का विदेशी व्यापार

कुल आयात	कुल निर्यात	आयात (—) निर्यात (+)	
		(लाख क्रोनर)	वर्ष
१९५८	२,०८०	१,८४३	— २३६
१९५६	४,२३३	५,०४०	— ८०७
१९५०	६,१००	५,०००	— १,१००
१९५४*	६,१८६	६,२०५	+ ११९
१९५०	८,६६०	८,१५४	— ५०६
१९५४*	८,६६१	७,६५५	— १,००६

*पारिभाषिक आरथि है।

भारत स्वीडन का व्यापार

१९५० के प्रथम पांच मगना में भारत स्वीडन का व्यापार-सन्तुलन १०० लाख क (लगभग १८० लाख क) में भारत के प्रतिकूल रहा। प्रथम छमाही में यह २०० लाख कौ०, लगभग १११ लाख क) में प्रतिकूल रहा था जब कि गतवर्ष का इसी अरथि में यह १६६ लाख कौ० (लगभग १०८ लाख क) में प्रतिकूल रहा था। इसमें अमातुमार आरथि निम्न तालिका में दिए गये हैं—

भारत से आयात

वस्तु	(लाख स्वीडन क्रोनर)
जानवरी—जून १९५४	२८
जानवरी—जून १९५३	२८
(काफ़ी चीज और मसाले)	(००)
गन्ना और अरथि में नोडक निर्यात मूल्य पदार्थ	१४
कपड़े बनाने के यंत्र	१०
कपड़ा मीठा-निर्यात	११
जंग (अन्य वस्तुओं सहित)	६२

भारत को निर्यात

वस्तु	जानवरी—मई १९५४
जंग पदार्थ (दूध, मक्खन आदि ट्यूबरोलाना के उत्पादन)	५
गन्ना-गणवर्गिक पदार्थ	६
लकड़ों व उनसे बना माल	५
लकड़ी	४०
कागज और गना	८२
लोहा व स्टील का सामान	५१
मशीनें (विद्युत् के सिवा)	६१
मशीनें (विद्युत् की)	११

योग (अन्य वस्तुओं सहित) ... ८८३

औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि

१९५४ की प्रथम छमाही में स्वीडन के उद्योगों के उत्पादन का औद्योगिक परिमाण, गतवर्ष का इसी अरथि की अर्थात्, ५,२०० श० का मगना। जून मास में कुल अरथि २०६ (आयात १६३५००) का मगना जब कि मई १९५४ में यह २०१ तथा जून १९५३ में २१४ था, अर्थात् मीसम के अनुसार समतुलित अरथि २०७ था।

वर्तमान वर्ष की प्रथम छमाही के औद्योगिक उत्पादन की, १९५३ की द्वांमा अर्ध के उत्पादन में तुलना करने से मालूम होता है कि खुदी व कामाज उद्योग में लगभग १७ प्र० श० की वृद्धि हुई है, जब कि इमारती लकड़ी का उत्पादन १० प्र० श० गटा है। इस वर्ष लकड़ी के सामान का निर्यात कच्चे स्तर पर हुआ है। गरीबारी की पसन्द सुख्यत, कनिया किष्मो पर केन्द्रित रही है। गत छः महीनों में खुदी के मूल्य

स्थिर रहे और मूल्यो की जो गतिविधि हुई है, उसका बरा उद्धि की और रहा है।

खानों में लोहा निकालने के उद्योग में लगभग १० प्र० श० की रमी रही। दूसरी ओर लोहे में इस्पात सम्बन्धी कारखानों का उत्पादन ७ प्र० श० घटा गया परन्तु १९५३ में लोहे सम्बन्धी कारखानों में, आर्दको की कम रमी जो वर्तमान वर्ष की प्रथम छमाही में भी जारी रही।

डेनमार्क : भारत से व्यापार

जनवरी से मई १९५४ की अवधि में डेनमार्क में कुल ३०,६८० लाख क्रो० आयात १६,५३३ की इमी अर्धों में २,८४० लाख क्रो० अर्धों का आयात हुआ। मई मास में ही आयात का योग ६,४५८ लाख क्रो० हो गया, जब कि एक मास पूर्व यह ६,२३६ लाख क्रो० था। दूसरी ओर निर्यात में ४,५६ लाख क्रो० की वृद्धि हो गयी, जिससे मई में आयात की वन्त,अप्रैल में १,६१८ लाख क्रो० से, घटकर ६४२ लाख क्रो० रह गयी।

भारत तथा अन्य कुछ देशों में हुए डेनमार्क के व्यापार का विवरण निम्न प्रकार है :

(००० कोर)

डेनमार्क से आयात	डेनमार्क को निर्यात	व्यापार सन्तुलन
भारत	६,८४५	५,११४ — १,७३१
पाकिस्तान	१,२२३	२६६ — ६२४
बर्मा ...	२,४४३	७०२ — १,७६१
लका ...	१,०६६	२,१६७ + १,०६८
जापान	१०,६७८	१,८६५ — ६,११३
चीन	५,७२	१,७६४ + १,१६२
इण्डोनेशिया	८,६४३	६५ — ८,५७८
मलाया	७,३७५	१२,६०२ + ५,२२७

भारत से आयात

(००० कोर)

वस्तु	
काफी, कोकोआ, चाय, चाक्रेट, और मसाले	११६
पाग व पशुओं के खाने की अन्य वस्तुएं	१०४

भारत को निर्यात

(००० कोर)

वस्तु	
दूध, मक्खन आदि दुग्धशाला के उत्पादन, आटे और शहद	४,५४३
पेय पदार्थ	२३५
खाद व कच्चे खाद्य पदार्थ	२८१
चमड़ा रगने और रमाने के पदार्थ	७८
औषधें	१,६००
आदि सहित जनित्र पदार्थों में बना सामान	१५२
आदि में बना सामान	१६२
मशने (विजली के सिगा)	१,०५०
विजली की मशीनें आदि	१,१६०
योग (अन्य वस्तुओं सहित)	६,८४५

मारीशस : अनुकूल व्यापार-सन्तुलन

१९५४ की प्रथम तिमाही में मारीशस में कुल व्यापार का मूल्य १०,५७,७६३ रु० रहा, जिसमें निर्यात ५,७७,११२ रु० और आयात ४,८०,६५१ रु० का हुआ। यह अनुकूल व्यापार सन्तुलन, १९५३ में योग बने हुए चीनी के उत्पादन का बहुत बड़ा भाग निर्यात हो जाने के कारण हुआ है।

वर्तमान वर्ष की प्रथम तिमाही में कुल आयात का मूल्य, १९५३ की द्वांमा अर्धों की अर्धों, ३४ प्र० श० घटा गया है। यह बर्मा, बर्मा से चाय तथा प्रभा अर्धों में खाने योग्य तेल व चिकनाई वाले पदार्थों का आयात बहुत ही कम हो जाने के कारण हुई है।

आयात

उत्प्रे प्रमुख देशा मे हुए आयात का (लागत, मात्रा, वामा महित)
मूल्य रूपया मे निम्न प्रकार है

मूल देश	(रूपये)
ब्रिटेन	२०,६६० ६०७
अमेरिका	८,०६४ ७५०
हामकाग	५,०६४ ४४५
भारत	५,६०५,६१६
रुट्टस साटलमण्ड	७६७,०११
जलविषम	६६७,६८०
फ्रांस	३,३३०,३८५
जर्मनी	१,६८६,१८७
इटली	७१०,४५७
जापान	११०,८२०
स्वाम	१,१२३,०१६
अमेरिका	३५२,८८३
योग (अन्य महित)	४८,०६४,६३०

निर्यात

मारीशस से कुल प्रमुख देशा का किये गये निर्यात का बटारा विराया
आटि व्यव मुक्त (F O B) मूल्य रूपया मे निम्न प्रकार है —
श्रान्तिम गन्तव्य स्थान (रूपये)

ब्रिटेन	५,०८,६१,७१५
लका	५२,६१,१७४
भारत	२
केनिया	६,८३८
हामानीका	५,१२७
फ्रांस	६,१५१
जर्मनी	७,०००
मैडागास्कर	२,५६७
अमेरिका	७,५८,८००
योग (अन्य सहित)	५,७०,४६,७४६

स्थानीय उत्पादन की निर्यात की गयी कुछ प्रमुख वस्तुओं के जहाज
निर्यात आटि व्यव मुक्त (F O B) मूल्य रूपया मे निम्न प्रकार हैं —
वस्तु परिमाण मूल्य (रूपये)

चीना	विला	१०६ ०८३ ०२८	५४,७५६,७६६
शीरा	लिन्ग	४८ ८०५,४०७	२,७६६,३३०
दवाइल धलकोरोल	विलो	६७७	६५,६६०
चाय			
सुमन्तर वा रशा		५,०००	७,०००
अन्य पम्पू पठाव		—	५४,६३०
योग पम्पू निर्यात			५७,०६,०४६

भारत से व्यापार

भारत तथा अन्य देशा मे आने व लेने सूता कपड़े, मिश्रित रेशे के कपड़े तथा काच के रेशे के आयात का तुलनात्मक विवरण निम्न तालिका मे दिया गया है —

मूल्य रूपये	वर्ग मीटर	लागत भावा आदि सहित मूल्य
भारत	१,०७,५८७	६४५,७२७
ब्रिटेन	८६,८२७	१,५६६,३६४
हामकाग	१,६१६	१३,६२७
जापान	१,००८	१,४२४
स्विट्जरलैण्ड	४१५	१,७०७
फ्रांस	१३२	७६६
नेलजियम	७०	१,०७५
स्विट्जरलैण्ड	४६	५७१
योग	१,६२,५४५	७,५३६,६०२

काच और कृत्रिम रेशे के कपड़े

ब्रिटेन	५६०,६०५	१,१०६,१६१
हामकाग	७४१	७२,४०६
इटली	६६४	३६,६०५
भारत	२७,३१०	४७,४८८
जापान	७४,६६०	३०,७७२
फ्रांस	१०,१२८	२०,५५५
जर्मनी	१५६	१,०५३
मैडागास्कर	६	६५
योग	६८४,३१८	१,३२८,१५४

लंका : भारत से प्रतिकूल व्यापार-सन्तुलन

मई व जून १९५४ तथा जून १९५३ में लका द्वारा भारत से किये गये आयात व निर्यात का विवरण निम्न तालिका मे दिया गया है —
(लाल रंग)

भारत से लका में आयात	मई	जून	जून
	१६५४	१६५४	१६५३
भारत को लका से निर्यात	१४३०	१४३८	१६५१
भारत के अग्रकूल व्यापार सन्तुलन	३६८	३६८	२२५
	१०३२	१०७०	१४१६

इस प्रकार जून १९५४ में भारत का लका में व्यापार सन्तुलन, एक नस पूरा की अनेका, कुछ सुखर गया है। भारत में लाल मिर्च, इमली, अण्डे, सूनी भल्लूनी, गुठ और नकली रेशम, मड १६५४ की अनेका, अथिक मूल्य के भेजे, जब कि सूनी माल विरायत हाथ कपड़े के सारग, सागिया और रंगे हुए माल कम मूल्य के भेजे। जून १९५४ में भारत ने नागिल का तल, मड १६५४ की अनेका, अथिक मगया।

प्रतिकूल व्यापार सन्तुलन

मद व जून १९५४ में लका द्वारा किये गये आयात (साना, चांग व लना स नियात
 १ सक्कों महित) व नियात (पुननियात सहित) का विवरण नीचे दिया लना में आयात
 गया है। तुलना की दृष्टि से जून १९५३ के आंकड़े मा १ न्य गये हैं — व्यापार सन्तुलन

(लाख रुपये)		
मद	जून	जून
१९५४	१९५४	१९५३
१,४६७	१,४७३	१,२६०
१,०१५	१,४८४	१,४६०
४५२	—११	—२०

नेपाल : भारत से व्यापार

जून १९५४ में भारत से नेपाल में आइ वस्तुओं में मिट्टी का तल
 कपडा कपडे के जूते तथा मोनर व साइकिलों के टायर व ड्यूब मुख्य हैं। मझी का तल
 विदेशों में मिट्टा का तेल, लौंग, मू पा, साइकिलें तथा शराब मगाइ गई। सूती माल
 उपयुक्त वस्तुओं का विवरण इस प्रकार है — रथमा माल

भारतीय माल	चीनी	पेट्रोल	कपडा	कपडे के जूते	मानर गवर	भोनर टयुब	साइकिल टायर	साइकिल टयुब
११० भारया	२० ८०० गैलन	६६ गादें	१६० दजन	२८ सख्या	२१ ,	२०० ,,	१६० ,	

विदेशी माल
 मिट्टी का तेल
 साइकिलें
 शराब
 मू पा
 लौंग
 मोटर साइकिलें

मिट्टी का तल	२७५०	३८००
मझी का तल	५१५०	५६००
सूती माल	३०००	२५००
रथमा माल	३६५	३३५
लाट का सामान	१५००	१५५०
सामेन	३८५०	३३६०
नमक	११००	८०००
काच व काच का सामान	४५०	५३०
साजुन	३००	३५०
दवाइया	१६०	२००
मसाले	६६०	५५०
लियन की सामग्री	६६०	८५०
मेवा	११०	८००
गहूँ	२६५०	२४८०
दालें	११००	१२५०
रूद कच्ची	१४५०	१२००

इसी अक्थि म विराटनगर से भारत को निर्यात की गद मुख्य मुख्य
 वस्तुओं का विवरण इस प्रकार है —

विराटनगर से व्यापार	मई (मन)	जून (मन)
बोयला	५६००	७०००
मशीनें	१७००	१४५०
पेट्रोल	१६५०	१६००
शाल तेल	१८५०	२८००

मद (मन)	जून (मन)
२,०८,०००	६०,५५०
४२५०	२०००
७२०	१५०
३१५	१००
२३०	२०५
२६,०००	१८,०००
१८,०००	१०,०००
१६,०००	१३,०००
६०१	१३६
८०६	१२५



जावकारी विभाग

औद्योगिक विषय

उद्योगों में लगी पूंजी

लाभ सन्ध्या में पृष्ठ १०० पर उद्योग सम्बन्धी एक प्रश्न के उत्तर में योगदा उप-सूची आ एम एम० मिश्र ने जेलना काल के प्रथम तीन वषों (१९५१-५४) में विभिन्न उद्योगों में लगाए गए पूंजी के विवरण की एक तालिका उपस्थित की। यह तालिका इस प्रकार है —

उद्योग	लागत रुपये में (अनुमानित)
१. लाहा व रक्षात्म-प्रमुख उत्पादक	१,१६८
२. अनुसन्धान	१४२
३. धातु सम्बन्धी अन्य उद्योग	७५
४. नार्मिकल	२२१
५. डीजल इंजिन व पम्प	४०
६. मोटर गाड़ियाँ	११२
७. कपड़ा मिल की मशीनें	१७५
८. रेल के इंजन टिन्के	६२२
९. उद्घाटन निमाख	६०१
१०. विजला के रेलि और तार ..	१६८
११. विजली बनाने की मशीनें	१,६२६
१२. अन्य इंजीनियरी उद्योग	८८१
१३. भारी रसायनिक पदार्थ, रसायनिक खाद तथा औषधि	४,४०४
१४. रंगरंग और डाइनिंगें	५५
१५. पेट्रोलियम शोधक कारखाने	१,७००
१६. कामकाज	५८८
१७. रेल	४८७
१८. मामूली	६२८
१९. चीनी	७२
२०. दसमरति तेल, बनस्पति तथा सातुन	८२
२१. काच	१६५
२२. सूती कपड़ा	४४०
२३. अन्य उद्योग	४२६
योग	४०,५५४

खानों से अधिक लोहा निकाला गया

खानों के मुख्य निरीक्षक ने प्राण आइटों के अनुमान, भारत में लोहे की खानों में कुलार्द १६५४ में ३,१५,६३२ टन बच्चा लोहा निकाला गया, जबकि वृत्त १६५४ में ३,०६,५४५ टन निकाला गया था।

६० खानों में जो विवरण जुलाई १६५४ का मिला है, उसमें शत्रु हाना है कि कुल मिलाकर ३,७२,६४० टन बच्चा लोहा, लोहे और इस्पात के सामग्रियों से तथा ४१,६८२ टन विदेशी मशीनों को भेजा गया। मशीनें ने अन्त में रवाक में ६ ६६,४४८ टन बच्चा लोहा बनाया।

डीजल प्यूअल इंजेक्शन इन्वियमेंट उद्योग की जांच

सामा शुल्क आयोग (टैरिफ कमिशन) ने २ अक्टूबर १६५३ की प्रेष पत्रिका में बताया था कि यह मोटरगाड़ी के डीजल प्यूअल इंजेक्शन इन्वियमेंट उद्योग की समीक्षा तथा सहायता देने की मांग का अर्पण कर रहा है। आयोग जांच में आयोग को विनित हुआ कि डीजल प्यूअल इंजेक्शन इन्वियमेंट के बहुत से हिस्से मोटर गाड़ी के डीजल इंजन तथा अन्य प्रकार के डीजल इंजिनों में भी काम आते हैं। अतएव आयोग ने परीक्षा तथा सहायता देने की मांग पर, अन्य इंजनों को भी ध्यान में रखते हुए, विचार करने का निश्चय किया है। उद्योग की व्यापक जांच करने के लिये उसने उत्पादकों, उपभोक्तार्थी तथा सहायता के लिये एक प्रस्तावनी बनाई है जो जागी बिने जाने के लिये तैयार है। जो सम्बन्धित फर्म, संस्थाएं तथा व्यक्ति आयोग का अपने विचार भेजना चाहते हैं, वे प्रस्तावनी की प्रतियां सेक्रेटरी, टैरिफ कमिशन, कप्टेक्टर बिल्डिंग, नेशनल रोड, डेलार्ट स्ट्रीट, बम्बई—१ में भेजा सकते हैं।

खनिज लोहे के उत्पादन में कमी : अगस्त १६५४

खानों के मुख्य निरीक्षक द्वारा प्रकाशित संख्या आइटों के अनुमान भारत में खनिज लोहा का अनुमानित उत्पादन जुलाई १६५४ के ३,१५,६३० टन से अगस्त अगस्त १६५४ में २,७०,६४४ टन रह गया। ६५ खानों में प्राप्त सूचना के अनुसार अगस्त मास में लोहे तथा इस्पात के कारखानों में २,७०,६४४ टन का निदान के लिये २,५६,६२७ टन मात्र डिपॉसिट किया गया। मात्र का एक मास अ अगत में ८,७८,२०२ टन रहा।

अगस्त में कोयले के उत्पादन में कमी

खानों के मुख्य निरीक्षक ने अनुमान, अगस्त १६५४ में भारत की खानों में कोयले का उत्पादन कुलार्द १६५४ में ८६,७०,२६५ टन में अगस्त १६५४ में ७७,७७५ टन रह गया। इस मास में कोयले की निकाली ७६,५५,८८७ टन की कुल उच्चिगत मात्र में ८८,१३,७७५ टन की कुल थी। वस्तुतः खानों में कोयले का एक, जो इस मास में आरम्भ में ७७,७७,५८८ टन का था, मात्र अ अगत में अगस्त २७,७७,७७६ टन रह गया।

आलोच्य माम मे ८३० एानो मे ८३० प्रतिदिन औसतन ३,२३,२६३ मजदूर काम करते रहे। एनिक तथा लाटने वाचा के प्रति जन-पाली उत्पादन का अनुमान लगभग १ ११ टन, एाना मे अन्दर तथा बाहर काम करने वाले सब मजदूरों का ० ६१ टन तथा काम पर लगाने गये सब व्यक्तियों (उपर काम करने वाले मजदूरों सहित) का ० ३६ टन लगाया गया है।

इस मास मे एानो के कोक बनान के कारखाना मे तथा अन्य स्थान पर २५, मुलायम व अन्य क्रिस्मा का २,५५,१८८ टन कारक तैयार हुआ और १,६०,७३० टन की निकासी हुई।

जून १९५४ में बिजली का उत्पादन

जून १९५४ मे भारत के ६६० मार्बजिक उपयोग के बिजली घरों में कुल ६,५४३ लाख किलोवाट घण्टे बिजली उत्पादन की गई, जिसमें से ५,१०३ लाख किलोवाट घण्टे उपभोक्ताओं का प्रेच दी गई। इन आबन्ध मे ३ नये बिजला घर और ६ नये केन्द्रों के आकड़े का सम्मिलित है। ये बिजला घर बिहार के बोधगो और तिलेरा नगरों मे तथा पश्चिमी बंगाल के ताम्रलिप्त नगर मे हैं। कथ केन्द्र पश्चिमी बंगाल के पाण्डवेश्वर नगर, पञ्जाब के खगर, कुराली और माडल टाउन (हिमाचल) तथा उर्गसा के तुर्दा जली और पिपलो नगरों मे हैं। मई की अपेक्षा, इस मास का उत्पादन ६६ लाख किलोवाट घण्टे कम रहा।

जून १९५३ में बिजला के उत्पादन व निर्यात के आकड़े क्रमशः ५,४३१ लाख किलोवाट घण्टे तथा ४,५०० लाख किलोवाट घण्टे और जून १९३६ मे २,०६६ लाख किलोवाट घण्टे तथा १,७७२ लाख किलोवाट घण्टे रहे थे।

इराक के कारखाने के लिये शिल्पकारों की ट्रेनिंग

७२५ करोड़ रुपये की लागत के हिन्दुस्तान स्टील वर्क्स का काम सम्पन्न के लिये, भारत के अनुभवशाली शिल्पकारों (टैक्निशियन्स) में से १८० का ट्रेनिंग के लिये जर्मनी भेजा जा रहा है। ये लोग अगले वर्ष के प्रारम्भ मे भेज दिये जायेंगे इनमे से ७० का फोरमैनी का ट्रेनिंग दिलायी जायगी। भारत लौटने पर, उद्युक्त कारखाने का काम काब सम्पन्न का मुख्य भार इन्हीं लोगों पर डाला जायगा। भारतीय उत्पाद कारखानों का स्थापना के विभिन्न जर्मनी का कप टमग कम्पनी सलाहकार बनाई गई है और शिल्पकारों की ट्रेनिंग का प्रबंध भी उसी मे किया गया है।

हिन्दुस्तान स्टील वर्क्स की स्वीकृत पूजा १०० करोड़ रु० का है। कारखाने के बन जाने पर, उसमे प्रतिवर्ष ३१ लाख टन उत्पादन तैयार किया जा सकेगा। आगे चलकर उत्पादन बढ़कर १० लाख टन तक पहुँचाया जा सकेगा। भारत-सरकार और जर्मन कम्पनी ने ४ और १ के अनुपात मे हिन्दुस्तान स्टील वर्क्स के शेयर खरीदे हैं।

मोटरगाड़ी के लीफ स्प्रिंग उद्योग का संरक्षण जारी रहेगा

भारत सरकार ने सोमायुक्त आयाग (टैरिफ कमाशन) की मोटरगाड़ी के 'लीफ स्प्रिंग' उद्योग सम्बन्धी रिपोर्ट पर अपना निरन्तर प्रकाशित कर दिया है।

सरकार ने आयोग की यह सिफारिश मान ली है कि 'लीफ स्प्रिंग' तथा उनसे मोटर गाड़ियों (मोटर साइकिल तथा मोटर स्कूटरों को छोड़ कर) में काम करने वाले हिस्से-पुजा पर मूल्य का ५० प्रतिशत संरक्षण शुल्क लगाया जाय। उद्योग का संरक्षण ३१ डिसेम्बर १९५६ तक बढ़ा दिया गया है।

सोडा एश उद्योग का संरक्षण

सोमायुक्त आयोग (टैरिफ कमाशन) ने सोडा एश उद्योग का संरक्षण ३१ डिसेम्बर १९५४ के बाद भी जारी रखने का प्रश्न पर जांच प्रारम्भ कर दा है। इस सम्बन्ध मे उत्पादकों, आयातकों तथा उपभोक्ताओं के लिए बनाई गई प्रस्तावतियां जाप की जाने के लिये तैयार हैं। जो फर्म व्यक्ति तथा संस्थाएं इस उद्योग अथवा उन उद्योगों से सम्बन्ध रखती हैं या जो सोडा एश की खपत पर निर्भर हैं, वे सम्बन्ध प्रस्तावतियों की प्रतियां संक्रेटरों टैरिफ कमाशन, क्लर्कस्टर बिल्डिंग, निक्स राउट, नेनाई इस्टेब्लिशमेंट—१ मे प्राप्त कर सकते हैं। आयेदन एवं भेजते समय प्रार्थना की गई भी बता देना चाहिये कि यह किस हित का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमे उसे उमी की प्रस्तावतियों में भी शामिल करे।

केलशियम क्लोराइड उद्योग

केलशियम क्लोराइड उद्योग को संरक्षण दिया जाता जारी रहे या नहीं इसकी जांच प्रारम्भ करने समय सोमायुक्त आयोग के अध्यक्ष श्री एम० डी० भट्ट ने कहा कि इस उद्योग की वर्तमान कठिनाईनाइमे इसके उत्पादन की पर्याप्त माग न होने के कारण हैं। इस कारण उद्योग को अपने उत्पादन की क्षमता बढ़ाकर और लागत घटाकर माग बनाने का प्रयत्न करना चाहिये।

श्री भट्ट ने आगे कहा कि इस उद्योग को प्राय ७ वर्षों से संरक्षण प्रदान किया जाता रहा है। इस समय देश मे १,५०० टन केलशियम क्लोराइड प्रतिवर्ष उत्पादन हो सकता है। परन्तु १९५० में १,३४५ टन, १९५१ मे १,५६६ टन, १९५२ में १,६३३ टन, १९५३ मे ७३२ टन और १९५४ का पहली छमाही में ३०५ टन उत्पादन हुए हैं। उद्योग ने फिर संरक्षण और संरक्षकों की माग की है। संस्थापकों के रूप में यह दावा की गई है कि केलशियम क्लोराइड के आयात का नियमन किया जाय। इनके विपरीत रेल द्वारा कोयला और चूने की दुलाई का भाड़ा कम किया जाय और बस्ता चूनी चार्जों दी जाय जिनमे इसे भरने के पाये बनाये जाय।

सीमेन्ट के पैक करने के दाम

२० मार्च १९५४ को भारत सरकार ने यह घोषणा की थी कि सीमेन्ट पैक करने के दाम प्रत्येक तिमाही मे निर्धारित होंगे। तात्कालिक गत नौ महीनों के प्रत्येक मसाले में बाजार में पैक करने से मामान के जो अक्षिप्त व न्यूनतम मूल्य रहेगें, उनके औसत में १०४ आ० प्रति टन का प्रासंगिक व्यय (Incidental charges) मिलाकर जो योग होगा वही निर्धारण का आधार होगा। इसके अनुसार चालू तिमाही में पैक करने के दाम १२६० ५ आ० प्रति टन रखे गये हैं। १ अक्टूबर १९५४ से प्रारम्भ होने वाली अगली तिमाही के लिए ये १३६० प्रति

बाज का सामान, सादरिल के पुर्जे, ताले, टूतांगी व लण्टी का काम, लुहारों, रैन के सामान, टिमा-क्रिया तथा माप के सरल अगार। इनमें अतिरिक्त पीतल व धातु के बने यन्त्र, रिजालाट, मिठाई के बर्तन तथा लडा के उद्योग आये।

राज्य विनीत निगमा के मार्फत छोटे तथा मध्य प्रकार के उद्योगों के विकास के लिये अर्थात् सुविधाएँ प्रदान की जायें किन्तु यह है। मार्च १९५४ तक पञ्जाब, माराठ, राजस्थान, कोचीन, मद्रास, हरियाणा और पश्चिमी बंगाल के छः राज्यों में निम्नलिखित स्थानों पर चुने गये। यह प्रयोगों में निर्देशक अफसर टिमा द्वारा जारी गत १९५०-५१ में ५०० शं० टिमा गरा है जो सम्पूर्ण रूप में १ करोड़ २०० लक्षांश है। अन्ततः पूर्व में पञ्जाब विभाग निगम द्वारा २२६५४ लक्ष २०० टिमा व विनियम किया गया।

फार्ट फाउण्डेशन के तत्वावधान में विशेषण का एक अन्तर्देशीय दल १९५० में भारत आया था जिसका उद्देश्य छोटे उद्योगों की सम्पन्नता की जांचबीन करना था। दल दल में अपनी रिपोर्ट मार्च १९५४ में प्रस्तुत की। भारत सरकार ने दल की जानकारी तथा अध्ययन करने, निम्न निष्कर्षों को यथा शीघ्र कार्यान्वित करने का निश्चय किया है।

(१) छोटे उद्योगों को उनकी उत्पादन विधि प्रकृष्टता सुधारने लक्ष्य तथा प्रतिलुप्त, कच्चा माल उपलब्ध कराने तथा सस्ते अतिरिक्त निम्न में किन्ना प्रकृष्टता करने तथा छोटे उद्योगों की बड़े उद्योगों का महावप करने तथा उनके उत्पादन कार्यों का समन्वय करने में महात्मा जेने के उद्देश्य ने प्रादेशिक समूहों को स्थापित करना। प्रकृष्टता उद्योगों के लिए निम्न उद्देश्यों में रूप में काम करेगी।

(२) एक व्यापार व्यवस्था सेवा निगम की स्थापना करना। यह नै इस निगम के कार्यों का एकीकरण शिष्टमता प्रकृष्टता संस्थाओं के कार्यों में होगा।

(३) सरकारी अर्थात् के अनुभाग उत्पादन व्यवस्थित करने के लिये छोटे उद्योगों का एक निगम स्थापित करना।

दल का श्रेय सिफारिश विचारार्थ है। यह तो निश्चय किया है कि नुसार एक वर्ष प्रदर्श के लिए यह संस्था हाउस में स्थापित की जाय। श्रेय संस्थाओं का स्थापना इस प्रकार किने जाने का विचार है, उनका संस्था—(१) पूर्णता के लिये पर १९४६ में, पश्चिमी संस्था इन्स्टीट्यूट का समापन दक्षिण संस्था मद्रास राज्य के मद्रास नगर में।

राज्यों की योजनाएं

राज्य प्रगति रिपोर्ट में बताया गया है कि राज्य सरकार न कराने यह तथा छोटे उद्योगों के लिये योजनाओं पर पहले तीन राज्यों में करार १९४४ करोड़ ६०० लक्ष किया। दल योजनाओं पर कुल १९६४ करोड़ ६०० लक्ष करने की व्यवस्था है। जयपुर उत्तर प्रदेश, मद्रास, उज्जैन, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गोपाल ग्रीक पञ्जाब राज्य के दल तीन राज्यों में रखी गयी राशि का लगभग ५० प्र० ग० व्यय किया गया है किन्तु अन्य राज्यों में इस संस्थाओं प्रगति सीमा रखे है। योजनाओं में समाप्ति के पश्चात् वरन् नै योजनाएं समिन्धन का गत है किन्तु पर १००० लक्ष ६०० अतिरिक्त पर होगा। दल योजनाओं में पश्चिमी बंगाल सरकार की (हाउस में) उद्योगों उद्योगों योजना तथा मद्रास राज्य की गतों के छोटीगोकरणी की योजना है।



व्यापार की उन्नति

केलिफोर्निया के मेले में भारतीय स्टाल

गत नवम्बर मास में केलिफोर्निया के 'जारागो मेले' में भारत ने बड़ी सफलतापूर्वक भाग लिया। भारत का स्टाल अत्यंत श्रेष्ठ (विटन, पाकिस्तान, पश्चिमी जर्मनी, स्वीडन, फिनलैंड, डेन्मार्क और सोवियत) की अनेकानेक में बना था। मेले में सर्वोत्तम अन्तर्देशीय प्रदर्शन स्थल होने का पदक उभे ही मिला। गत वर्ष भी भारतीय स्टाल को ही यह पदक मिला था। अतः एक किन्ती भी देश को यह पदक लगायान दो राज्यों तक नहीं मिला है।

भारतीय स्टाल का १५ मिनट तक टेलीविजन से प्रसार किया गया और अनेक बार रेडियो द्वारा प्रसार करने के लिये भी उभरे विपणन में रेकार्ड तैयार किये गये। मेले के दिनेमा में भारत के सूचना प्रकृष्टता प्रतियोगिता के गये।

भारतीय स्टालकारों की समूहों की किन्ना और विभिन्नता का गौरव प्रथमा की गई। साटिया, चटनो और सुबनी, मरिदासा के बहुरा अर्थात् के विषय में बहुत पृष्ठपत्र हुईं।

पूर्वी जर्मनी से व्यापार सम्बन्ध

राष्ट्रिय छोटे उद्योग मन्त्रालय तथा जर्मनी के लाइन्डनार्गमक गत राज्य के व्यापार प्रतिनिधि मंडल के राजनीतिक दिक्कों में जो बातचीत हो रहा थी उभरे फरवरी १९४५ राष्ट्रिय और उद्योग मन्त्रालय के सचिव की एच० ग० आर० आनगाए और जर्मनी के व्यापार प्रतिनिधि मंडल के नेता श्री हर्बर्ट मैयर के मध्य बना का आदान-प्रदान हुआ। इन दोनों में की व्यवस्था निश्चित की गई है वह तुम्हें लक्ष्य हींगी और एक साथ एक जारी रहेगी।

भारत में जर्मन लोकतन्त्रात्मक गणराज्य की निरास किने जाने योग्य कुछ मुख्य व्यापारिक पदार्थों की सूची इस प्रकार है—चाय, बहन, लकड़ी, लकड़ी के बनी चीजें, कच्चा ताम्र, कच्चा लोहा, कच्चा तेल, परिष्कृत तेल, मसाले इन्धने वाली मिर्च नौ है, कपड़, धुंगी कपड़ा, रेशम, जूत, जूत की बनी चीजें, नारियल का रेशा और उसकी बनी चीजें, पन्हा और तांबा (कमार हूट), चायदा, अरबक, हरद, हरद का मत, कमान हुआ चमड़ा और उसकी बनी चीजें।

जर्मन लोकतन्त्र-मन्त्रालय से भारत में आयात किये जाने योग्य मुख्य पदार्थों की सूची इस प्रकार है— रासायनिक औषध और औषधि उद्योगों के लिये मशीनें और सज्ज सामान, खाना में काम करने वाली मशीनें, कपड़ा बुनने की मशीनें और उनके कलपुत्र, वैद्यक और अन्य कल पुत्र, औजार और यंत्र, रासायनिक द्रव्य, माटा फिक्म और अलुमिना बगल।

डिजाइनों की रजिस्ट्री के लिये अधिक आवेदनपत्र

१९५३ में डिजाइनों का रजिस्ट्री के लिये आवेदनपत्रों की संख्या बढ़कर पिछले वर्ष की संख्या से लगभग दुगुनी हो गई। १९५२ में यह संख्या १,२६६ थी, परन्तु १९५३ में २,५१३ हो गई।

डिजाइन की रजिस्ट्री के लिये भारत में केवल ३५ आवेदनपत्र आये। कपड़े की डिजाइनों के लिये २,०२८ आवेदनपत्र प्राप्त हुए। वस्त्र रान्त से १,८०६ आवेदनपत्र आये, जिनमें से १,६७० कपड़े की डिजाइनों के लिये थे।

रिपोर्ट में बताया गया है कि जिन आविष्कारों के पेटेंटों के लिये आवेदनपत्र भेजे गये, ये उद्योग के प्रिभिन क्षेत्रों में सम्बन्ध रखते हैं। भारतीय आविष्कारों में दर्दनाशक, परनिरोधक और लूय निवारक औषधियाँ, चीनी, गन्धक, ककरोट का सामान, कृषि यन्त्र और कुछ भारतीय भाषाओं के टाइपराइटर्स के निर्माण में विशेष रुचि दिखाई।

मन् १९५३ में पेटेंटों के लिये २,२२५ आवेदन आये, जबकि १९५० में ५,२७२ आये थे। इन आवेदनपत्रों में से ४६१ इस देश से प्राप्त हुए, जिनमें से ४०६ भारतीय नागरिकों द्वारा और बाह्य विदेशियों द्वारा भेजे गये थे। लगभग ६० प्र० श० आवेदनपत्र कम्बू और पश्चिमी बंगाल से आये और २५ प्र० श० मद्रास, मैसूर, उत्तर प्रदेश, बिहार और दिल्ली से। विदेशी आवेदनपत्र ज्पायसत ब्रिटेन, अमेरिका, स्विटजरलैंड और जर्मनी से प्राप्त हुए।

विदेशी आविष्कारकों ने अधिकतर र-ग-टवण, औषधि द्रव्य तत्वों, कृत्रिम धागा और उनसे कपड़ा, ईंधन और चिकनार्द वाले तैलों

तैलेंट और मनेरिया की औषधियाँ आदि के आविष्कारों के बारे में पेटेंटों का मांग था। उद्देश्य धनुष का काम, माटर-कार, पालिश करने और पामन का मशाना आदि डोजल इन्जन में भी विशेष रुचि दिखायी।

कपड़ा-उद्योग-सम्बन्ध आधिकार्य आविष्कार विदेशों में ही हुए थे। य प्रायः रूड आदन, पुनन, पूना करने आदि क बडल बनाने तथा नक्शा धाग तयार करने आदि कपडे रगन एव कपडे छापन का मशीनों से सम्बन्ध रखत है।

सन १९५३ में पेटेंट कार्यालय की आय लगभग ७,२१,००० रु० थी और व्यय लगभग ४,४१,००० रु०। पिछले वर्ष आय ६,७३,००० रु० थी और व्यय ३,६०,००० रु० था।

वायुयान द्वारा अफगानिस्तान से फलों का आयात

अफगानिस्तान से वायुयान द्वारा फलों के आयात को सुविधाजनक बनाने के लिए भारत सरकार ने यह निश्चय किया है कि अमृतसर के हवाई अड्डे पर धुआ देने के पश्चात् अफगानी फलों का आयात किया जा सकता है।

फलों और शाकों को धुएँ द्वारा शुद्ध करने के लिए अमृतसर के हवाई अड्डे पर १ अगस्त १९५४ से एक धूम्रनिर्णय केन्द्र खोल दिया गया है। एक बार में लगभग ६० मन फलों के धूम्रनिर्णय का प्रबन्ध किया जा सका है।

धूम्रनिर्णय का व्यव आयातक से एक कपड़ा आदि आना प्रतिमन के हिसाब से लिया जायगा। यह शुल्क वृद्ध सरकारी परामर्शदाता नर्द दिल्ली या अमृतसर में उसके प्रतिनिधि के पास भेजा जायगा। वायुयान द्वारा ममाये गये फलों पर धूम्रनिर्णय का कम से कम शुल्क एक रु० आदि आना होगा। लेकिन यानी लोग अपने साथ सामान के रूप में अधिक से अधिक ५ पाउंड फल जा सकेंगे और उनकी धूम्रनिर्णय निःशुल्क किया जायगा।

व्यापार नियन्त्रण

बढ़िया किरम के तम्बाकू का निर्यात

अन्तरराष्ट्रीय तम्बाकू की दृष्टि में भारतीय तम्बाकू का वर्तमान स्थिति को दृष्टिगत कर यह जरूर समझा जा रहा है कि पुराने, जून प्रकृत अथवा युवे तम्बाकू का निर्यात करने के लिए एक सम्मन उपाय में काम निरत जाय। इस निरत में तम्बाकू की जाय करने वाले निभाग को आदेश दिने जा चुके हैं और उमग बना गया है। उन केवल उन्व कोटि का

ही तम्बाकू विदेश में जाने दे। 'एगमार्क' ने विदेशी बाजारों में जो सिक्का जमाग है, उसकी रक्षा पूरी तौर से की जानी चाहिए।

निर्वाचन का प्यान, मॉरेन्गि सीरीज ७० के अन्तर्गत जारी किये गये आदेशों की प्र याकृत किता जात है। इन आदेशों के अन्तर्गत वर्गीकृत और विन्हेट तम्बाकू के पुन्निन्दी की जाय खेलेय स्टेशन, गोयस या हवाई बटराहा पर कि से दो टा मनेना। दो तम्बाकू एक साल से निरत पुराना

हो चुका है, उसे फिर से अंचलकार, उसके लिए नये मॉर्टिजिटेड प्रायज २२ लिये जाने चाहिए। खगब तम्बाकू ता विदेशों को ब्यापार में बेचना चाहिए।

बिना अनुमति को चायकर का पास पट्टिया तम्बाकू हा, उन्हें पूरी सामग्री में काम लेना चाहिये जिसमें कि वर्गाङ्कण कि बिना निर्यात के लिये तम्बाकू के पुनर्विक्रय में बाधे जाय।

लाल मिर्च के अतिरिक्त कोटे

भारत सरकार ने लाल मिर्च के सम्बन्ध में निर्यात-नीति पर फिर से विचार कर लिया है और निश्चय किया है कि बालू छमाही के लिए अतिरिक्त कोटे लिये जायें। लाइसेंस-निधि का निवर्ण बन्दरगाहों पर निर्यात आगम निरन्तर प्राधिकारियों द्वारा मूचित किया जा रहा है।

साइकिल के पुर्जों के आयात के लाइसेन्स

भारत सरकार को इन आयात के आवेदन प्राप्त हुए हैं कि जिन लोगों के पास पूरा साइकिलों के आयात के बोटा मौजूद हैं, परन्तु जो साइकिलों के पुर्जे बाहर से नहीं मंगा सकते, उन्हें साइकिलों के कुछ पुर्जे मगाने के लिये अतिरिक्त लाइसेन्स देने जायें, जिसमें अह साइकिलों की सम्मिलित आदि के अन्तर्गत में मुद्रित हो सके।

सरकार ने उन विचार करने निश्चय किया है कि साइकिल के अतिरिक्त आयातकों को साइकिल के पुर्जों के आयात के लिये अतिरिक्त लाइसेन्स देने जायें। इन व्यापारियों के पास जुलाई और दिसम्बर १९५४ के मध्य जिनके मूल्य की साइकिलों मगाने का लाइसेन्स होगा, उनके ७५ प्रतिशत मूल्य के साइकिल-पुर्जे वे मंगा सकेंगे। परन्तु जिनको २५वीं अग्रिम में साइकिल पुर्जा के मगाने का लाइसेन्स मिला होगा, वे उसी मूल्य के साइकिल पुर्जे और मंगा सकेंगे, जो साइकिल के कोटे के मूल्य के ७५ प्रतिशत और साइकिल-पुर्जों के कोटे के मूल्य के अन्तर्गत के बराबर होगा।

अतिरिक्त लाइसेन्स केवल साइकिल की तालिया, माइक्रोला, चैन, भी. जी. शैला और गाइडों के आयात के लिये दिये जायेंगे।

इन अतिरिक्त लाइसेन्सों को एक शर्त यह भी है कि कोई भी एक पुर्जा लाइसेन्स में निश्चित मूल्य के पाचवें भाग में अधिक का न मगाया जाय।

लाइसेन्सों के लिये आवेदन पर निश्चित फार्म पर, १५ नवम्बर १९५४ से पहले, बन्दरगाहों पर लाइसेन्स अधिकारियों के पास भेज देने चाहिये। आवेदन पर के साथ लाइसेन्सों का पूरा निवर्ण भी भेजना चाहिये।

क्यानाइट के निर्यात के अतिरिक्त कोटे

भारतीय स्थिति पर मोच विचार करने के बाद भारत सरकार ने क्यानाइट के निर्यात के अतिरिक्त कोटे देना का निश्चय किया है। जो टाल मालिक और सुपाने निर्यातक अपने पहिले कोटों का साफ माल भेज चुके

हैं, किन्तु विदेशी व्यापारियों के साथ जिनके सौदे अधिक माल को मगाने के लिये हुए शेष पड़े हैं, उन्हें अतिरिक्त निर्यात के कोटे दिये जा सकेंगे। हमने अतिरिक्त अन्य निर्यातकों को भी उचित आधार पर ऐसे कोटों के लिए कोटे देने कायमें जिनके वे विशेषा व्यापारियों के साथ तय कर चुके हैं। इन कोटों का माल २१ दिसम्बर १९५४ तक भेज देना होगा। उक्त निर्यातकों को सम्बन्धित बन्दरगाहों के लाइसेन्स अधिकारियों के पास आदान पर भेजने चाहिये।

क्रोम खनिज का निर्यात

क्रोम खनिज की निर्यात नीति पर पुन विचार किया गया है। यह पुनर्विचार स्टार, निर्यात के लिये दिये गये बालू माल की तस्मन्त-शर्त प्रगति तथा अन्तर्देशीय बाजार की स्थिति को ध्यान में रखकर किया गया है। इसके फलस्वरूप यह निश्चय किया गया है कि जराजी चिला के शिपमें पर खानब कोम के निर्यात लाइसेन्स अग्रिम रूप में दिये जाय। उपरुक्त निर्यात-त-बालू (०.७ दिसम्बर ५४ से) लागू हो गया है।

कच्चे ऊन का निर्यात

भारत सरकार ने कच्चे ऊन की उपलब्धि तथा देश के उद्योग को होने वाली उनकी आवश्यकता के प्रकाश में, उनकी निर्यात नीति पर पुनर्विचार किया है और यह निश्चय किया है कि १ अक्टूबर १९५४ से ३१ मार्च १९५५ का अग्रिम में निर्यात के लिये और माल दिया जाय। यह निर्यात पुनर्विचार नये निर्यातकों को कोटा के आधार पर करने दिया जायगा। इस सम्बन्ध में लाइसेन्स प्रणाली का विस्तृत विवरण निर्यात व्यापार निरन्तर अधिकारियों द्वारा बन्दरगाहों पर मूचित किया जा रहा है।

अधुना नीति की एक नई बात यह है कि जिन सुपाने कोटा पाने जाला के कोटे छ. मास से पहले समाप्त हो गये हैं, उनके पूरक कोटे सम्बन्धी आवेदन-पत्रों पर उनके विशेष उद्देश्यों को ध्यान में रखकर विचार किया जायगा। किन्तु यह विचार इन बातों का भी ध्यान में रखकर किया जायगा कि आवेदन-पत्र देते समय माल की पूर्ति तथा उनकी मात्र सम्बन्धी स्थिति क्या है।

निर्यात के लिये मूंगफली का और तेल

यह निश्चय किया गया है कि मूंगफली तथा मूंगफली के तेल के सुपाने निर्यातकों को निर्यात के लिये और मूंगफली का तेल दिया जाय। सुपाने निर्यात यदि इसके लिए बन्दरगाहों पर लाइसेन्स अधिकारियों को आवेदन पर देने तो उन्हें जन द्वाप १९५१-५२ को समाप्त होने वाले पार तथा के किसी मा नये दिये गये निर्यात के १५ प्र. १०० के आधार निर्यात का कटा दे दिया जायगा, किन्तु किन्मा एक निर्यात के लिये यह कोटा अधिक-से-अधिक १०० टन तथा कम से-कम ५ टन होगा।

इन कोटों को अग्रिम दिसम्बर १९५४ अन्त तक रहेगा।

चाय का निर्यात शुल्क बढ़ा

भारत सरकार ने चाय का निर्यात शुल्क तत्काल ही (५ अक्टूबर १९५४ में) बढ़ाकर ४ आने से ७ आने प्रति पौंड कर देने का निश्चय किया है।

चाय के निर्यात शुल्क (४ आने प्रति पौंड) में १९४७ से काई परिवर्तन नहीं हुआ था। यद्यपि १९५२ में चाय उद्योग को मन्दी का सामना करना पड़ा था, किन्तु १९५३ व १९५४ के वर्षों में बाजार में अधिक मात्रा होता रहा है। भारत सरकार ने पिछले वक़्त के समय शुल्क बढ़ाने

के पक्ष पर विचार किया था, किन्तु उस समय उसने ऐसा करना उचित न समझा, क्योंकि उद्योग को १९५२ की मन्दी में जो क्षति उठानी पड़ी थी, उसकी पूर्ति के लिए सुस्थिर से एक ही वर्ष बीता था।

बाजार के वर्तमान ऊँचे स्तर पर ७ आने से भी अधिक का शुल्क लगाना उचित होता। किन्तु भारत सरकार ने इस सम्बन्ध में दीर्घ-कालीन स्थिति का विचार करते हुए केवल अतीव ही वृद्धि की है जिससे चाय के निर्यात व्यापार को बौद्धिक हानि नही पहुँचेंगी।

वैज्ञानिक गवेषणा

हाइड्रोजन पर ओक्साइड को सुरक्षित रखने की विधि

बंगलोर की भारतीय विज्ञानशाला में स्थित गये अख्यपत्र में शत हुआ है कि न्यून रासायनिक पदार्थों की महाप्रमा से हाइड्रोजन परओक्साइड को सुरक्षित रखा जा सकता है। हाइड्रोजन पर ओक्साइड औद्योगिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण वस्तु है। परन्तु यह विगत बड़ा जलदा जाता है। साधारण तापमान की अत्यन्त अधिक तापमान होने पर तो यह और भी तीव्रता पूर्वक प्रसार हो जाता है। अतः इसे सुरक्षित रखना अथ एक एक समस्या बना हुआ था।

हाइड्रोजन पर ओक्साइड में तापने, लोहे, मैंगनीज, सोने आदि का जो अशय होता है उसी के कारण यह विगत जाता है। यदि इन अशयों को दूर कर दिया जाय तो हाइड्रोजन पर ओक्साइड सुरक्षित रह सकता है। इनका दूर करना बड़ा कठिन है। परन्तु यदि इसमें कुछ रासायनिक पदार्थ मिला दिये जाय तो वे तापने आदि के अशय को निश्चिन्त कर देते हैं और फिर हाइड्रोजन पर ओक्साइड अत्यन्त बना रहता है। बंगलौर की विज्ञानशाला में जाना गया है कि सोडियम सेलोसाइलेट के मिश्रण, लक्ष्मीसेलैमाइड, निपाकिन, एडिसेमिलाइड और फिनास्टीन आदि को मिलाया जाय तो हाइड्रोजन पर ओक्साइड सुरक्षित बना रहता है और प्रयोग नहीं होता। इन पदार्थों में से कोई किसी धातु के अशय को निश्चिन्त करता है तो कोई किसी को। इस कारण इनके मिश्रण से मिलाने में ही अशय बन जाता है।

वेकार सारे से चीनी तैयार करने की विधि

उत्तर प्रदेश में सरदार नगर की सहाय डिस्टिलरी (शापन पौचने के कारखाना) की प्रयोगशाला में प्रथम बार के प्रयोग से वेकार सारे से चीनी निकालने के एक तरीके के बारे में सफलतापूर्वक परीक्षण किये जा रहे हैं।

प्रतिदिन २५ टन सोरे का प्रयोग कर सकने वाली एक मशीन पत्रले ही में डिस्टिलरि में लगी हुई है। अनुमान है कि इस तरीके से प्रतिदिन लगभग ७ मन चीनी तैयार की जा सकती है।

यह तयारा डिस्टिलरी के प्रधान सभान शांति स्वर्गाय डा० कल्याण रम द्वारा निराला गया था। व्यापारिक लाभ की दृष्टि में अभी तक इस तरीके का प्रयोग नही किया गया। यदि इस दृष्टि में यह तरीका सफल मानित हुआ तो देश में चीनी का उत्पादन बढ़ाने में बड़ी सहायता मिल सकेगी।

देशी सामग्री से चमड़ा कमाने की उन्नत विधि

भद्राच की केन्द्रीय चमड़ा गवेषणाशाला में चमड़ा कमाने के काम आने वाली डिग्रीडिनी के वाट और अन्य देशी सामग्री का प्रयोग करने की एक मरल विधि खोज निकाली गई है।

देश में चमड़ा कमाने के बन्दरपति साधन प्रचुर परिमाण में उपलब्ध है। डिग्रीडिनी के बोडे भी इनमें से एक है। इनमें चमड़ा कमाने के लिये जा तत्काल पदार्थ तैयार किया जाता है उसमें चीनी का अशय होता है, जिससे अत्यन्त मजबूत के बौद्धिक उत्पन्न हो जाते हैं। इसमें कमाने का अशय घट जाता है। फल यह होता है कि इस तत्काल पदार्थ में चमड़ा हुआ चमड़ा सफा बन जाता है। इन्हीं दौरीयों के कारण डिग्रीडिनी के बोडे और अन्य सामग्री का चमड़ा कमाने में अधिक उपयोग नहीं किया जाता। एक ओर यह दशा है तो दूसरी ओर चमड़ा कमाने की बहुत सी सामग्री विदेशों से मगानी पन्ती है।

नई विधि में बौद्धिक ओ अयमेलिक एमिड और सोडियम वाटफ्लाइट के घोल में डाल दिया जाता है। वाट की हानिकर इस तत्काल पदार्थ की रूप में लाया जाता है। यदि थोड़ा सा कार्बिक एमिड मिला दिया जाय तो इसे ४ से ६ मस्ताह तक समय लायक अच्छी दशा में रखा जा सकता है।

पूर्व-भारतीय चमड़ा रंगने का तरीका

भद्राच केन्द्रीय चमड़ा गवेषणाशाला में चमड़ा रंगने का एक प्रायोगिक कारखाना स्थापित हो जाने से पूर्व-भारतीय चमड़ा रंगने के तरीके का निर्गमित अध्ययन किया जाने लगा है।

पूर्व भारतीय चमड़ा रंगने का तरीका भारत में सामान्यतः छोटे

पहले २४ फरवरी १९५२ को कानपुर और दिल्ली में लागू हुए। बाद में पञ्जाब के मात उद्योग क्षेत्रों और नागपुर में भी लागू हो गये।

सामान्य लाभ

इस योजना से ग्रामशुद्धा व्यक्तिों को पाच प्रसार के लाभ होते हैं— बीमारी, प्रसव, शक्तिहाताका, आश्रितों और चिकित्सा सम्बन्धी। बीमारी और काम करते समय चोट आदि लग जाने की हालत में मिलने वाले लाभ, क्षेत्र में योजना लागू होने ही मिलने आरम्भ हो जाते हैं। बीमारी और प्रसव सम्बन्धा लाभ, राजना लागू होने में ६ महानें बाद मिलते हैं। दिल्ली और कानपुर में वे लाभ २३ नवम्बर १९५२ में और पञ्जाब में १३ फरवरी १९५४ में मिलने लगे, नागपुर में ६ अप्रैल १९५५ में और वृहत्तर बम्बई में २ जुलाई १९५५ में मिलेंगे।

जहाँ जहाँ योजना लागू हो गयी है वहाँ-वहाँ चिकित्सा सम्बन्धा लाभ मिलने लगे हैं।

चिकित्सा व्यवस्था के सुधार के लिये प्रयत्न किये जा रहे हैं, और अस्पताला की संख्या बढ़ाई जा रहा है। बम्बई में जब तक अस्पताला का स्थापना न हो, तब तक वर्तमान अस्पताला में पलगा का सुविधित करना आवश्यक हो गया है। उद्देश्य बम्बई में राजना के निदान के लिये सुविधायें और विशेषज्ञ सेवाएँ प्रदान करने के लिए विशेष केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं। ये सुविधायें अन्य क्षेत्रों में भी माता जायेंगी। बीमा शुद्धा व्यक्तियों के परिवारों के लिए भी चिकित्सा सम्बन्धी सुविधायें देने का निश्चार हो रहा है। इन दोनों सम्बन्धाओं के अन्तर्गत, वर्तमान लाभों को बढ़ाने का प्रस्ताव है। परन्तु इन लाभों में वृद्धि करने में पूर्ण निश्चार सम्बन्धा का ध्यान रखा है। परिवारों की चिकित्सा व्यवस्था पर काफी ध्यान देने की सम्भावना है।

भविष्य की योजनायें

समस्त देश में योजना का लागू होना बहुत ही मन्द गति में चल रहा है। देश भर में कारखानेदार, विशेष अर्थशास्त्रज्ञ कर रहे हैं, इसलिए कर्मचारियों को जितना जरूरी लाभ मिले उतना ही अच्छा। समस्त देश में वर्तमान निश्चार वर्ष की समाप्ति तक यह योजना अहमदाबाद, बलरना, हायडा जिला, बॉम्बई, हैदराबाद, ग्वालियर, इटावा, उज्जैन, खलाम, और अन्य राज्यों के विभिन्न शहरों में भी लागू हो जाय, जिससे योजना के अन्तर्गत ग्रामशुद्धा व्यक्तियों की कुल संख्या लगभग १०.६६ लाख हो जायगी। यदि प्रगति योजनानुसार होती रहा तो १९५५ में समाप्ति तक देश के लगभग मना महत्वपूर्ण औद्योगिक क्षेत्रों में यह योजना लागू हो जायगी।

आरस्त में नियोजन की स्थिति

आरस्त १९५४ में काम डिजाऊ केंद्रों में नया नाम दर्ज कराने वाली तथा पुनः दर्ज कराने वाला की संख्या कम हो गयी। तब भी, इन मास के अन्त में, काम डिजाऊ केंद्र द्वारा काम चाहने वाले रजिस्टर्ड व्यक्तियों की संख्या ५,६६,३६० थी, जो इनमें ५२१ महानों को अनेका १०.५२३ प्रतिशत है। अलाउच्य मशीनों में १,२०,०३४ व्यक्तियों में रजिस्टर्डों में अग्रने नाम दर्ज कराने और १,२०,६२ व्यक्तियों को नाम से लगाया जा सका। गत मास में वे आरस्त कम्पनी १,५६,५७० और १५,३२० थे।

इस मास में काम डिजाऊ केंद्रों को सूचित किये गये रिक रवानों की संख्या २०,५५० से कम होकर १७,६३३ रह गई। व्यक्ति नये नाम दर्ज कराने वालों की संख्या घट गई, तथा रिक रवानों और डिजाऊ केंद्रों को काम का महत्वा कम हो जाने से आरस्त के अन्त तक इन केंद्रों द्वारा काम पाने के सम्बन्ध रजिस्टर्ड व्यक्तियों की कुल संख्या कम गई। इस प्रकार नियोजन की स्थिति अस्तन्वयजनक बनी रही।

इस मास के अन्त तक श्रम मन्त्रालय की प्राशिक्षण योजनाओं के अन्तर्गत ८०,५१ व्यक्तियों विभिन्न प्राशिक्षण सम्बन्धाओं और केंद्रों में ट्रेनिंग पा रहे थे। इनमें ५६० मिन्या और ००१७ मिन्यापित थे। इनके अतिरिक्त सेवा विज्ञानपुर की केंद्रों में प्राशिक्षण मन्था में १०० उम्मेदवार शिस्त प उन प्रदेश और पश्चिमी बंगाल में मिन्यापिता के लिये “उम्मेदवार शिस्त योजना” के अन्तर्गत ७०५ उम्मेदवार शिस्तार्थी प्राशिक्षण पा रहे थे।

जुलाई में औद्योगिक भगडों

जुलाई १९५४ में औद्योगिक भगडों की संख्या में काफी कमी हुई, परन्तु पछले महीने की अनेका भगडों में शामिल मजदूरों की संख्या में वृद्धि हुई और हानि भी अधिक जननि की हुई। अलाउच्य मास में ६० भगडे हुए, इनमें २२,०३१ मजदूरों ने भाग लिया और २ लाख ३३ हजार ५५४ जननि का हानि हुई। इन भगडा की औमत अग्रधि ६० दिन रही, जब कि जुलै १९५४ का औमत ६.५ दिन रहा था।

चार भगडों में तालाबन्दी रही। इन भगडों में ५,१६७ मजदूरों ने भाग लिया और ८० हजार ८२३ जननि की हानि हुई। इनमें से दो भगडे पश्चिमी बंगाल में और एक आंध्र और एक बम्बई में हुआ।

हटवली और तालाबन्दी के अतिरिक्त देस्ये ५ मामलों में काम बन्द रहा, जिनमें औद्योगिक भगडे नहीं बडा जा सका। इनमें ८,०१८ मजदूरों ने भाग लिया और ८,२०० जननि की हानि हुई। ये सब मामले बम्बई में हुए।

१६ भगडे, अगोच्य मास में समाप्त हुए। इनमें से ३२ भगडे ५ दिन से भी कम और तीन ३० दिन से अधिक चले। १६ भगडा का मुख्य कारण मजदूरों, भना और बोनन या और २० भगडा का कारण अधिकारियों के सम्बन्ध में शिस्त था। ११ भगडों में मजदूरों को पूर्ण या आशिश मकनता मिनो और २२ में वे अग्रकच रहे। १० भगडों का परिणाम अगोच्यित रहा और ३ के सम्बन्ध में अगो परिणाम का पता नहीं चल सका है।

राज्य में, अगोच्य मास में, पश्चिमी बंगाल में भगडा, इनमें भाग लेने वाले मजदूरों तथा जननि की हानि की संख्या सबसे अधिक रही। इन राज्यों में, गत मास को अनेका भगडे कम हुए परन्तु जननि की हानि की संख्या बढ गयी। मद्रास और आंध्र में भी, इस मास में, जननि की हानि अधिक हुई। ममय की हानि की दृष्टि से, बम्बई, ममय प्रदेश, बिहार, पञ्जाब और दिल्ली की स्थिति में सुधार हुआ।

२२० अमेरिकन, १४७ स्विड, ८२ जर्मन, ७३ इंग्लिश, ६७ डच, ५५ स्वीडिश, ४५ पाकिस्तानी और ४० चीनी हैं। ब्रिटिश नागरिकों की संख्या १९४७ में ६,६०१ थी जो ब्रम्बर १९५२ में ७,२१४ हो गई, परन्तु

पिछले २ वर्षों में ब्रम्बर ६,७४७ रह गई है। पिछले २ वर्षों में, डच, जर्मन, स्वीडिश, आस्ट्रिश और बनावटियन नागरिक कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि हुई है।

फसल का अनुमान

तिल का प्रथम अनुमान

१९५४-५५ में तिल के अग्रिम भागताय प्रथम अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में तिल की ऐंटी का क्षत्रफल २७ लाख ६ हजार एकड़ आका गया है जब कि १९५३-५४ में यह क्षत्रफल २६ लाख ६ हजार एकड़ था। इस प्रकार ऐंटी के क्षेत्रफल में ४३ हजार एकड़ या १ प्र० श० म कुछ अधिक की वृद्धि हुई।

यह अनुमान जुलाई १९५४ के अन्त तक का है और इसका क्षत्रफल कुल का ५५ प्र० श० बैठता है।

गन्ने का प्रथम अनुमान

साथ एव कृषि मन्त्रालय के अर्थ व अन्न विभाग ने १९५४-५५ में गन्ने के अग्रिम भारतीय प्रथम अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में गन्ने की ऐंटी का क्षेत्रफल ३६,३७,००० एकड़ आका है, जब कि १९५३-५४ के संशोधित प्रथम अनुमान में यह संख्या ३४,५६,००० एकड़ थी। इस प्रकार ऐंटी के क्षेत्र में १,६१,००० एकड़ या ५.५ प्र० श० की वृद्धि हुई है।

यह वृद्धि मुख्यतः उत्तर प्रदेश में हुई शताधी जाती है। शुद्ध का अधिक भाग, मौसम की अनुकूलता और सिंचाई की अधिक सुविधा ही इस वृद्धि के मुख्य कारण हैं। इस अनुमान में साधारणतः जून १९५४ के मध्य तक का अग्रिम ग्रामिण जा जाती है। किन्तु इसमें १९५४-५५ में गन्ने की ऐंटी का पूरा क्षेत्रफल शामिल नहीं है।

मूंगफली का प्रथम अनुमान

१९५४-५५ में मूंगफली के अग्रिम भारतीय प्रथम अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में मूंगफली की ऐंटी का क्षेत्रफल ८२,४२,००० एकड़ आका गया है, जब कि १९५३-५४ के प्रथम संशोधित अनुमान में यह क्षेत्रफल ७७,६५,००० एकड़ था। इस प्रकार क्षेत्रफल में, गत वर्ष की अपेक्षा, ४,७७,००० एकड़ अर्थात् ६.१ प्र० श० की वृद्धि हुई है।

चालू वर्ष में मूंगफली की ऐंटी के क्षेत्रफल में यह वृद्धि मुख्यतः सौराष्ट्र, बम्बई, आन्ध्र, मध्य भाग और मद्रास में सामान्यतः बुध्दाई के समय पर्याप्त व सामयिक वर्षा होने से हुई है। दूसरी ओर वर्षा की कमी के कारण बुध्दाई में देर होने से हैदराबाद, मध्य प्रदेश और मैसूर में क्षेत्रफल में कमी हुई है।

वर्तमान अनुमान में सामान्यतः जुलाई १९५४ के अन्त तक की जानकारी सम्मिलित है। तब तक फसल की स्थिति सामान्यतः सन्तोषजनक थी।

इस अनुमान में १९५४-५५ में मूंगफली की बुध्दाई वाला भाग क्षेत्र सम्मिलित नहीं है। गत अनुभव से सिद्ध हुआ है कि प्रथम अनुमान के समय का क्षेत्रफल अन्तिम रूप से बोये हुये क्षेत्रफल वा लगभग ६० प्र० श० होता है।

२२ अनुमान में, प्रथम बार हा. मैसूर के बैलारी जिले और उत्तर प्रदेश की जानकारा सम्मिलित की गयी है। इस के अतिरिक्त चालू वर्ष में पहला बार हा अनुमान के क्षेत्र में आन्ध्र के सब जिला को सम्मिलित किया गया है। १९५४-५५ की फसल में, यह क्षेत्र सम्मिलित करने में, क्षेत्रफल में ६,३६,००० एकड़ की वृद्धि हुई है।

गेहूँ का अन्तिम अनुमान

१९५३-५४ में गेहूँ के अग्रिम भारतीय अन्तिम अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में गेहूँ की ऐंटी का क्षेत्रफल २,६०,६८,००० एकड़ और उत्पादन ७७,६२,००० टन आका गया है, जबकि १९५३-५४ के आशिक संशोधित अनुमान में ये अन्न क्रमशः २,४२,८५,००० एकड़ और ७३,८३,००० टन थे। इस प्रकार क्षेत्रफल और उत्पादन में क्रमशः १८,१३,००० एकड़ अर्थात् ७.५ प्र० श० और ४,०६,००० टन अर्थात् ५.५ प्र० श० की वृद्धि हुई।

क्षेत्रफल में वृद्धि मुख्यतः उत्तरप्रदेश, बम्बई, बिहार, पंजाब, गोपाल, राजस्थान, विन्ध्य प्रदेश हैदराबाद, सौराष्ट्र तथा हिमाचल प्रदेश में हुई है। यह वृद्धि मुख्यतः बुध्दाई के समय पर्याप्त व सामयिक वर्षा होने से हुई है। गोपाल व विन्ध्य प्रदेश में बरत ऐंटी के फिर ऐंटी वाप्य बना लेने, विस्तारित कृषि तथा अन्य 'शायिक उन्नत उपकरणों' योजनाओं से मा यह वृद्धि हुई है। वर्तमान वर्ष की गेहूँ की फसल में मध्य भारत, तथा बम्बई व बरमौर के क्षेत्रफल में नागस्य वमी कटाई जाती है।

गेहूँ पैदा करने वाले प्रायः सब राज्यों से उत्पादन में भी वृद्धि होने के नमन्चार मिले हैं। उत्तर प्रदेश, बम्बई, गोपाल, बिहार, पंजाब, विन्ध्य-प्रदेश, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, सौराष्ट्र और हैदराबाद में विशेष वृद्धि हुई है। उत्पादन में इस वृद्धि का कारण कुछ तो ऐंटी की भूमि में वृद्धि होना और कुछ वर्तमान वर्ष में फसल करने के अनुकूल मौसम रहना है। राजस्थान, बम्बई व बरमौर, पंजाब और आन्ध्र के उत्पादन में कुछ कमी हुई है। राजस्थान में यह कमी मौसम प्रतिबुल रहने से हुई, जबकि पंजाब में बीमाधी लग जाने से फसल की हानि पहुँची।

इस अनुमान में उन क्षेत्रों की भी सूचना सम्मिलित है, जिन्हे अनुमान तैयार नहीं होते। आ. न. आ. भा. म. म. प्रदेश (केवल लखल क्षेत्र), मद्रास, बम्बई व बरमौर, राजनकोर रोन्चान और मंगोपुर ऐंटी ही क्षेत्र हैं। इन सब में १९५०-५४ में कुल २,५७,००० एकड़ में ऐंटी हुई

अपने सुभाव भेजिये

उद्योग व्यापार पत्रिका, उद्योग और व्यापार से सम्बन्ध रखने वाले पाठकों की सेवागत १६ महीनों से कर रही है। इस अल्प अवधि में ही पत्रिका ने अपना एक विशेष एवं महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। देश के औद्योगिक और व्यापारी क्षेत्रों में इसका हृदय से स्वागत किया गया है।

पत्रिका को अधिक न अधिक उद्योगों बनाने का प्रयत्न किया जाता है। परन्तु इस सम्बन्ध में हम अपने प्रिय पाठकों के सुभाव भी चाहते हैं। अन निवेदन है कि पाठकगण अपने सुभाव हमें शीघ्र लिख भेजने की कृपा करें। सुभाव केवल इसी दृष्टि से होने चाहिए कि पत्रिका का उनके लिये किस प्रकार और अधिक उपयोगी बनाना जा सकता है।

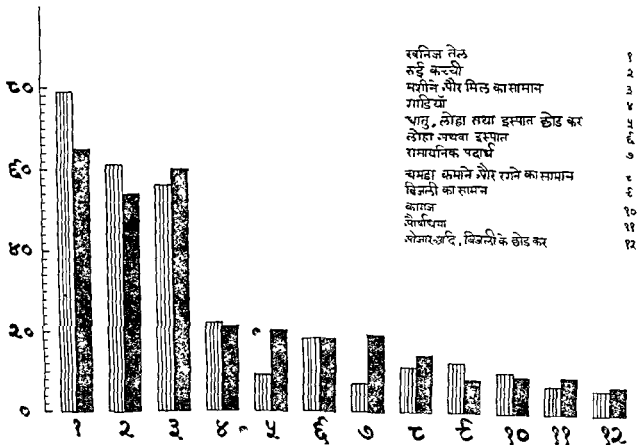
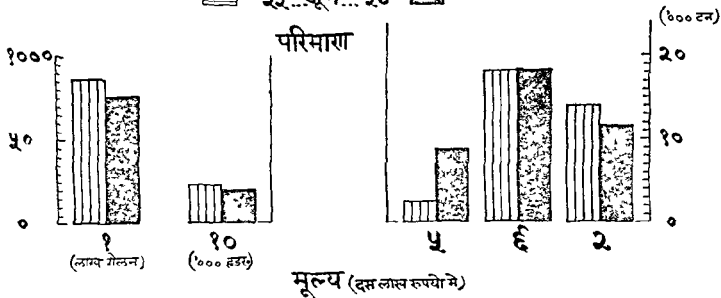
★

सम्पादक,
उद्योग व्यापार पत्रिका

वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय,
भारत सरकार, नई दिल्ली

आयात की चुनी हुई वस्तुएँ

▨ '५३ जून '५४ ▨



- १ रबनिज तेल
- २ रुई कच्ची
- ३ मशीन और मिल् का सामान
- ४ गाड़ियाँ
- ५ धातु, लोहा तथा इस्पात छोड़ कर
- ६ लोहा लथवा इस्पात
- ७ रासायनिक पदार्थ
- ८ चमड़ा कमान और राने का सामान
- ९ बिजनी का सामान
- १० कागज
- ११ लोकरियाँ
- १२ सोना, चाँदी, बिजनी के छोड़ कर

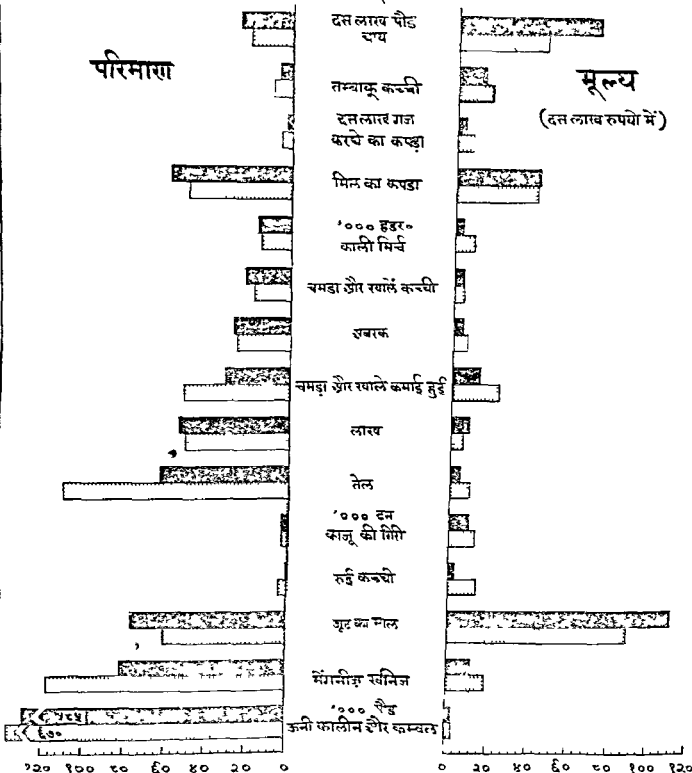
निर्यात की चुनी हुई वस्तुएँ

१-६५४ ~~६६१~~ जून १-६५३

परिमाण

मूल्य

(दत्त लायब रुपयों में)



सांख्यिकी विभाग

१. औद्योगिक उत्पादन* (१) दुनाई उद्योग

वर्ष	रु (लाख पौंड)	रु (लाख गज)	रु [क] शु. मा. माल (००० गज)	र [ल] उनी माल (००० पौंड)	शु. पट्टे (टन)
१९४६	१३६६८	३६० ४	१०-४	२७,०००	
१९४७	१०६६०	३७० ६००	१०५१ २	२४,०००	६१५ ६
१९४८	१४,४७२	४२ १-	१०-४	२०,००४	६६० ०
१९४९	१३,६६६	३१ ०४	१४४ ६	२१,०००	४०२ ०
१९५०	१३,०४८	३६ ६६	१३४ २	१०,०००	५१० ०
१९५१	१३,०४४	४० ७६४	८७४	१७,७००	६७४ ६
१९५२	१४,४८६	४१ ६ ४	६४१ ६	१६,५८४	७०६ २
१९५३	१५,०६०	४ ६००	८६८ ८	१७,००८	७६५ ६
१९५४ जनवरी	१,३१७	४ १०	६७ ३	१,२२०	६८ ०
फरवरी	१,२२१	३ ६७६	६-३	१,३७४	६६ ०
मार्च	१,७५२	४ ०६	११ ६	१,३६८	६३ ०
अप्रैल	१,२६०	४ २६०	७५ ०	१,२३५	६४ ०
मई	१,२६०	४ २७०	७१ ३	१,४७७	७० ०
जून	१,२६०	४ २७०	७४ ६	१,६०७	६० ०
जुलाई	१,३६०	४ ४१०	० ७	१,७ २	अप्रगत
अगस्त					
सितम्बर					
अक्टूबर					
नवम्बर					
दिसम्बर					

[क] अगस्त १९४६ में ने आकड़े इतिथ्य जूट मिलन एसासियेशन की सहायता वाले मिलों तथा एक गैर सदस्य मिल के उत्पादन के सम्बन्ध में हैं। [ल] इसमें जम्मा और बर्मा के आकड़े भी सम्मिलित हैं।

(२) लोहा और इस्पात

वर्ष	रु बन्धा लोहा (००० टन)	रु सीधी टलाइ (००० टन)	रु लोहा मिश्रित धातु (००० टन)	रु इस्पात के विपट और टलाइ (००० टन)	रु अधुआ नैयार इस्पात (००० टन)	रु नैयार इस्पात (००० टन)	रु इस्पात की नलियाँ (टन)
१९४६	१,३४६ ४	७५ ६	११ ६	१,२६३ ६	१,५३० ८	८६० ४	
१९४७	१,३२० ०	६७ २	१० ०	१,२६६ ४	१,०२७ २	८२२ ८	
१९४८	१,४०५ २	५१ ६	७ २	१,२५६ ४	१,०२१ ६	८५६ ८	
१९४९	१,२४७ ६	६३ ६	१८ २	१,३५२ ४	१,०५४ २	६३० ०	४७० ४
१९५०	१,२६२ ४	६८ ४	१० ०	१,५७७ ६	१,१४२ ४	१,००५ ४	४२७ २
१९५१	१,७०८ ८	६२ ४	२४ ०	१,५०० ०	१,२५८ २	१,०७६ ४	४५६ ०
१९५२	१,६४८ ८	३२६ ६	४० ८	१,५७० ०	१,३७० ०	१,१०२ ८	२११ ८
१९५३	१,६५४ ८	३१५ २	७ २	१,१०७ २	१,२३० ०	१,०१७ ६	अप्रगत
१९५४ जनवरी	१६३ २	७ २	० १	१५४ २	१६१ ४	१०६ ७	अप्रगत
फरवरी	१४४ ०	१० ३	० ४	१२२ ६	१२४ २	६६ ३	१२१
मार्च	१५६ १	७ ७	० ३	१४७ ५	१२६ ६	१२४ ५	अप्रगत
अप्रैल	१३६ ०	१० ०	० ४	१२८ ७	१०६ ७	६६ २	अप्रगत
मई	१४३ ८	११ ८	० ४	१२७ ७	१०६ ४	६८ २	अप्रगत
जून	१३८ ४	१३ ३	० ८	१३३ ०	११५ ३	६६ ६	अप्रगत
जुलाई							अप्रगत
अगस्त							अप्रगत
सितम्बर							
अक्टूबर							
नवम्बर							
दिसम्बर							

*नवीन रिपोर्टों के अनुसार इन अंकों में घटोचन हो सकता है।

१. औद्योगिक उत्पादन

[३] धातु उद्योग

वर्ष	१३ लाइवों के पेच (००० प्रोसे)	१४ मशीनों के पेच (००० प्रोसे)	१५ रेडार ब्लेड (लाख)	१६ हरिंमिन लालनें (०००)	१७ गैस के लैंप (०००)	१८ तामचीनी का सामान (००० संख्या)	१९ बटाई हुई धातु (टन)	२० डुलिनेजिंग (संख्या)
१९४६				४३० ४	१५ ६			
१९४७	७४ ४			६०६ ६	१६ २	२,५२२ २	६७२	१६८
१९४८	१६८ ०	२१ २		६७६ २	३८ ४	६,७२३ २	१,४६४	३४८
१९४९	३४४ ४	८७ ६	७५ ६	१,७२२ ०	३२ ४	६,५६० ४	३००	५२२
१९५०	७०३ २	१५८ ६	१०६ ८	२,००६ ८	३८ ४	५,४४५ ६	२,१४८	७४६
१९५१	७६६ ८	१२७ २	२०६ २	२,६७६ -	६२ ४	८,१३० ०	२,१८८	१,५६०
१९५२	१,३२८ ६	१४७ ७	१०० ०	३,५२३ ०	३७ ८	७,६६० ८	२,०१६	१,०२४
१९५३	२,५७१ ६	१६-०	२३१ ६	४,३१२ ८	३० ०	६,५८३ ६	१,६५६	६२४
१९५४ जनवरी	२६२ १	१-३	४० ८	४०२ ७	११	१,१०६ ५	१२२	१०२
फरवरी	३१० ६	१६ ४	५७ २	३५६ ४	१६	१,१७६ ६	२२५	६५
मार्च	४४६ ३	२२ ०	६४ ६	६०८ ५	२४	१,१६६ २	२२५	८०
अप्रैल	४१२ ०	२० ३	८२ ५	४०३ ५	३६	१,१६६ ६	१७०	२२०
मई	४२६ ६	२० ६	६२ ३	४११ २	२७	१,१७७ ६	२३६	६४
जून	५०० ०	१० ४	६६ ८	३३७ ०	५ २	१,१६६ ३	१६६	२८
जुलाई	४४-०	१७ ८	१२६ ६	४७० ०	३७		अप्रति	अप्रति
अगस्त							अप्रति	अप्रति
सितम्बर								
अक्टूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

[४] मशीनें (बिजली की मशीनों के अतिरिक्त)

वर्ष	२१ डीजल इंजिन (संख्या)	२२ शक्ति चालित पम्प (०००)	२३ मिलार्ड की मशीनें (संख्या)	२४ मशीनों के औद्योगिक (मूल्य ००० रुपये)	२५ ट्रिब्युट ट्रिब्युट (०००)	२६ वेल्डिंग करने (संख्या)	२७ गिग सिपनिंग प्रेस (पुर्ण) (संख्या)	२८ पियार्ड के नक्के (००० पीछे)	२९ धुआं की मशीनें चपटी (संख्या)
१९४६	४६ ८		६,१०० [ग]	६,१०४ -	६३ ६				
१९४७	६८ ४	६ ०	५,८५६	५,८५७ ६	२३५ २				
१९४८	१,०२०	८ ४	२०,०१६	१,५७३ २	२७६ ०				
१९४९	२,०७८	१४ ४	२५,०३२	१,७२१ २	६०० ८				
१९५०	४,६६६	३० ०	३०,०००	१,६६० ४	४४७ ७		७०६ ८	६०० ४	
१९५१	७,२४८	४० ०	४४,४६०	५,७३० ४	१,७३७ ६	२,०००	२७६	७०० ०	
१९५२	४,२४८	३२ ४	४०,०४०	४,४३० ६	७७६ २	१,३६८	२८८	८६१ ०	
१९५३	३,७२०	२४ २	६२,४४४	५,४०७ ६	३३४ -	१,०१२	२०४	८०७ ६	
१९५४ जनवरी	६६५	१ ६	६,७८५	३०० ३	३६	२६	१४	१०७ ३	
फरवरी	५४५	२ ४	७,११४	३१५ ७	३-	२८	२०	१०० १	
मार्च	७१६	३ ३	७,०५३	६०० १	४७ ४	४०	१३	६० ४	
अप्रैल	६००	२ ३	७,२६६	४३६ ७	६० १	१५	१४	६१ ८	
मई	६६२	३ ३	६,०१५	४३ १	४३ १	१६	१४	७ ४	
जून	७७३	३ ६	६,४३३	४०१ ०	२३ ३	१६	१४	६० ४	
जुलाई	अप्रति	अप्रति	७,०४५		०	१-७	अप्रति	अप्रति	
अगस्त									
सितम्बर									
अक्टूबर									
नवम्बर									
दिसम्बर									

[ग] निर्माता मन्त्राली मण्डल ने प्राप्त आँकड़ें ।

१. औद्योगिक उत्पादन

[५] अल्ट्राह घाटुण

वर्ष	०० अलुमिनाम (टन)	३१ सुरमा (टन)	३० नॉना (टन)	३३ मोंसा (टन)	३४ लोहे से अस्थम्बद घाटुओ के नल (टन)	३५ मोंना (आस) [घ.]
१९४६	३,२३६ ४	१३२०	६,३१० -	अस्थ		१,३११,७७२
१९४७	३,२१४ -	१३१४ २	५,६३१ ६	१०६ ६		१,७१,७००
१९४८	३,३६१ ०	३३००	४ ६४ ४	६२५ २	३२४ ०	१,००,०५२
१९४९	३,४ - ६	६६ ६	६ २०००	५२४ ०	३६० ०	१,६४,१४८
१९५०	३,४ - ६	३७४ ६	६ १४ ४	६०७ २	३३१ २	१,६६,५८८
१९५१	३,५ - ४	३७७ ६	७ ० ३ ६	६१६ ०	२४८ ४	२,२६,२३६
१९५२	३,५६६ ४	१२१ ०	६ ०७ ०	१,१३१ ६	३७० ८	२,५२,६००
१९५३	३,७१ - ४	१३० =	४ ६० ०	१,६६४ ४	३५७ ६	२,२३,०२०
१९५४ जनवरी	३०२ ०	६ २	३१० ०	१००	१६ १	१६,२०६
फरवरी	३१	४४ ०	६२० ०	१२५	१४ ६	१६,८३०
मार्च	३ ७ ५	३७ ६	६६५ ०	२००	१६ ६	२०,६०१
अप्रैल	३७ - २	५२ ०	६३० ०	१६७	१४ ४	२०,८१५
मई	३१५ १	४० ०	६१५ ०	१३०	२१ ०	१८,६५५
जून	२३४ ६	५६ ०	५६० ०	८५	४ ५	२१,२०२
जुलाई	--	५ -	६२३ ०	१५०	अप्राम	२१,१३७
अगस्त						
सितम्बर						
अक्तूबर						
नवम्बर						
दिसम्बर						

[घ] १९४८ से हैदराबाद में हुए मोने का उत्पादन भी इन आँग में सम्मिलित है।

[६] विजली उद्योग

वर्ष	३६ उत्पन्न की गई विजली [घ] (लाफ़ मिलावाफ़ प्रति घण्टा)	३७ विजली ले जाने की मलिया (००० कु०)	३८ सूने सेल (लाफ़)	३९ सम्रह की बैटरी (०००)	४० विजली के मोटर (००० हास/घावर)	४१ विजली के ट्रान्स्- फार्मर (००० के वी.ए.)	४२ विजली की बतिया (०००)
१९४६	३८,६२०		८७६ ६	२७ ६	४५ ६	३८ ४	८,११२
१९४७	४०,७३०		८७६ ६	६६ ६	३८ ४	३२ ४	७,६२०
१९४८	४५,७५०	१,७०७ ६	१,२३८ ४	११० ४	६० ०	८१ ६	६,२५१
१९४९	४६,०६०	२,६४८ ४	१,६२१ ४	१०६ ८	६८ ४	१०६ २	१३,६४४
१९५०	४०,०००	३,६६६ ४	१,३३२ ०	१२७ २	८१ ६	१७१ ६	१५,१०४
१९५१	४८,५१७	३,६६६ ६	१,५३४ ०	२३२ ४	१४१ ६	१६४ ४	१५,५१६
१९५२	६१,२५५	३,६६४ ८	१,३०२ ०	१५ - ४	१५७ २	२१४ ८	२०,८८०
१९५३	६६,२७६	३,७१६ ४	१,५८४ ४	१७६ ४	१६२ ०	३०८ ४	१६,७७७
१९५४ जनवरी	५,००७	४४२ ६	१५६ ४	१२ ७	१२ ६	३०	१,७४६
फरवरी	५ ४२७	५११,६	१२२ १	८ ६	१४ ७	२४ ७	१,५६७
मार्च	५ - ५७	६०१ ६	११७ ७	१२ ४	१५ ०	३४ ०	१,६२८
अप्रैल	६,०५६	५१८ ८	१११ ७	१७ ०	१५ २	२६ ६	१,८२७
मई	६,३१६	५४६ ३	१७ - ७	१७ ३	१५ ७	३२ ४	१,८५७
जून	६ २५२	६५६ ६	१६६ ६	अप्राम	१५ २	२२ ०	१,६२१
जुलाई		अप्राम	अप्राम	"	१७ ०	३४ १	२० १६६
अगस्त							
सितम्बर							
अक्तूबर							
नवम्बर							
दिसम्बर							

[घ] जम्मू और चारमग के आकड़े भी सम्मिलित हैं। अन्य दो स्थांना के माथ सार्वजनिक उपयोग के बाणों के सब स्थांना भी इसमें आ जाते हैं।

१. औद्योगिक उत्पादन (८) रासायनिक उद्योग

वर्ष	र गलेन और वारिगों (टन)	टि सानचार [छ.] (००० पात्रा) [ज.]	सातुन [भ.] (टन)	मरम (हडरवट)	ध तुया को जोडन का आकमीजन एमिटलान (लाप 'न कु')		मिलमरोन (टन)	बेकलाइट का साने बनान का नुप (००० पीड)
					दू१ गैस	दू२		
१९४६	३२,४००	४११६					१,७८८	
१९४७	३२,६०४	४६६६					१,३३२	
१९४८	३४,७२४	४३२८	७६,६००	१०,२५६			२,१४८	
१९४९	३०,६२४	४२६८	७६,००६	१२,१४६			१,७४०	
१९५०	२७,६४८	४३२८	७७,६६६	१३,१००			२,००४	
१९५१	३३,४८०	४७०२	८२,४२४	१४,११०	१,४१०	२६८८	२,४२४	४६६०
१९५२	३२,१७०	६००४	६३,७७०	१६,६६०	१,४१०	३१६६	२,२२०	६६७०
१९५३	३२,०६२	५६०४	२,२००	१,३१०	१,४१०	३३६८	२,५०८	८३७६
१९५४ जनवरी	३,१२३	४६६	४,१००	१,६१०	१,७००	३३०	५४	२३६
फरवरी	२,४४७	४१२	४,०४०	१,६०३	१६	३६	२१८	२३६
मार्च	२,११४	४६७	६,०७६	१,६४	१६८	३४०	२०२	७३६
अप्रैल	२,६३६	३८७	६,६००	१,३६८	१६८	३४०	२२२	७४४
मई	२,४६१	४३६	१,०६६	१,३३०	१६१	३६०	१४८	८२४
जून	२,७२६	३४१	अप्रान	१,३०७	१६२	३६०	२४५	६३४
जुलाई	अप्रान	अप्रान	अप्रान	१,४१०	१६०	३६०	अप्रान	१,०८४
अगस्त								
सितम्बर								
अक्टूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

[छ.] इसका जन्म और बहारमीर के आकड़े भी शामिल हैं।
[भ.] ये आकड़े संपादित कारणानों के उत्पादन के हैं।

[ज.] ६० तीलिया वाली डिबिया के ५० प्रोस।

(८) रसायनिक उद्योग

वर्ष	दू४ लिफ्ट का सत		दू५ रेफा (टन)	दू६ अलमोदल (००० गैलन में खुना हुआ)			दू७ अलसी का तेल, पोता हुआ टाट (लीनोलियम) (००० ली० गज)	दू८ प्लास्टिक के साने (००० प्रोस)
	इलेकशन (००० सी. मी)	जाने वाला (००० पीड)		जलना में				
				शुद्ध रिफिजिट	मिश्रित रिफिजिट			
१९४६				२,३६७६	२,१४६८	१,०२३६		
१९४७				२,७३६०	१,७७४८	१,०८४८	...	
१९४८				३,७७६४	२,३६६४	१,४०१६		
१९४९				४,२३००	१,६६००	१,०६६६		
१९५०	७,३३८८	१०१२		४,५६७६	३,४६६६	१,४७७२		
१९५१	१०,३४६६	३०१२	०,०५०	५,०६६६	४,०६६६	१,६६६८	१,४४६०	
१९५२	१०,६२२४	३३००	३,५८८	७,७४२४	६,६६६०	२,१६६६	१,६४४४	
१९५३	१०,३३८८	२०४४	४,३६६	८,१२०४	६,६७६४	२,४६६६	१,३६६२	
१९५४ जनवरी	१,४६०	२४२	३८८	६७४	४४४	३२४	२०७	
फरवरी	६१३४	३०१२	३५०	६७६४	४७६	२२७३	२०४	
मार्च	१,१४०	३१६	३६६	६७६	४०१	२७८	१०४६	
अप्रैल	१,०६३७	२२१	३६६	६७६	४७७	२७१	१०४६	
मई	१,१७२२	१८६	४०४	७०००	३३०४	२४०४	१०३४	
जून	६२१४	१६६	३६६	६३७२	३८८८	२४०४	१०३४	
जुलाई	अप्रान	अप्रान	अप्रान	७७३	अप्रान	अप्रान	अप्रान	
अगस्त								
सितम्बर								
अक्टूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

१. औद्योगिक उत्पादन (६) सीमेंट और चीनी मिट्टी का माल

वर्ष	६६	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७
	मासेट	मॉनिट की चादरे, एमट्रेमटम	सफेट माल	स्वच्छता के लिये बनाया गया माल	पावर का नामान	चीनी की पाबिश बाले मल	कच्ची आच सहन करने वाली मिट्टी की दू ट्टे	गिराने वाला सामान	विजली-शक्तीरोधक (इन्सुलेटर)
	(००० टन)	(००० टन)	(टन)	(टन)	(००० टन)	(००० टन)	(००० टन)	(००० टन)	एच.टी. एल.टी.
१९५६	१,५४२०	२५२					१,५७२	६१२	
१९५७	१,५४७१						१,७५२	६००	१,५२०५
१९५८	१,५४२४	७६८	५,०७६	१,५६५	१५६		२०८८	५५६	२,६७३२
१९५९	२,१०२४	८६४	६,०६०	१,७०८	५४	६०४	२,७५४	५१२	१,७७२
१९६०	२,६२२४	९६४	६,०६०	६५८	०००	३१००	२,७७६	७७२	१,५३००
१९६१	३,१६४६	१०८६	६,०६०	५३०	३३६	३,७५६	५५६	५५६	३,७७०
१९६२	३,७०००	७५६	६,०६०	६००	३३६	३,७५६	३३०	५७६	३,५६००
१९६४	३,७०००	७७७	६,०६०	५६८	३००	३,७५६	३३०	५६६	३,५६००
जनवरी	३,७०००	७७७	६,०६०	५६८	३००	३,७५६	३३०	५६६	३,५६००
फरवरी	३,७०००	७७७	६,०६०	५६८	३००	३,७५६	३३०	५६६	३,५६००
मार्च	३,७०००	७७७	६,०६०	५६८	३००	३,७५६	३३०	५६६	३,५६००
अप्रैल	३,७०००	७७७	६,०६०	५६८	३००	३,७५६	३३०	५६६	३,५६००
मई	३,७०००	७७७	६,०६०	५६८	३००	३,७५६	३३०	५६६	३,५६००
जून	३,७०००	७७७	६,०६०	५६८	३००	३,७५६	३३०	५६६	३,५६००
जुलाई	३,७०००	७७७	६,०६०	५६८	३००	३,७५६	३३०	५६६	३,५६००
अगस्त	३,७०००	७७७	६,०६०	५६८	३००	३,७५६	३३०	५६६	३,५६००
सितम्बर	३,७०००	७७७	६,०६०	५६८	३००	३,७५६	३३०	५६६	३,५६००
अक्टूबर	३,७०००	७७७	६,०६०	५६८	३००	३,७५६	३३०	५६६	३,५६००
नवम्बर	३,७०००	७७७	६,०६०	५६८	३००	३,७५६	३३०	५६६	३,५६००
दिसम्बर	३,७०००	७७७	६,०६०	५६८	३००	३,७५६	३३०	५६६	३,५६००

(१०) काँच और काँच का सामान

वर्ष	७८	७९	८०	८१
	काच की चादरे (००० वर्ग फुट)	प्रयोगशालाओं का सामान (टन)	विजली की बलिपों के खोल (लाल बलिपों)	काच का अन्य सामान (टन)
१९५६	८,७३६०		२११६	६३,५१६
१९५७	५,७३६०	१,६२०	२११६	६३,५१६
१९५८	६,२५६६	१,६२०	२११६	७२,२१६
१९५९	६,५५६२	२,१६०	२,१६०	७२,२१६
१९६०	६,५७००	२,१६०	२,१६०	७२,२१६
१९६१	११,०६६२	१,६२०	२,१६०	७२,२१६
१९६२	८,०५६२	१,६२०	२,१६०	७२,२१६
१९६३	२२,७०६८	१,६२०	२,१६०	७२,२१६
१९६४	२,२५६४	१,६२०	२,१६०	७२,२१६
जनवरी	२,२५६४	१,६२०	२,१६०	७२,२१६
फरवरी	२,२५६४	१,६२०	२,१६०	७२,२१६
मार्च	२,२५६४	१,६२०	२,१६०	७२,२१६
अप्रैल	२,२५६४	१,६२०	२,१६०	७२,२१६
मई	२,२५६४	१,६२०	२,१६०	७२,२१६
जून	२,२५६४	१,६२०	२,१६०	७२,२१६
जुलाई	२,२५६४	१,६२०	२,१६०	७२,२१६
अगस्त	२,२५६४	१,६२०	२,१६०	७२,२१६
सितम्बर	२,२५६४	१,६२०	२,१६०	७२,२१६
अक्टूबर	२,२५६४	१,६२०	२,१६०	७२,२१६
नवम्बर	२,२५६४	१,६२०	२,१६०	७२,२१६
दिसम्बर	२,२५६४	१,६२०	२,१६०	७२,२१६

१. औद्योगिक उत्पादन (११) रबड़ उद्योग

वर्ष	रबड़ के		रबड़ का मूल्य					रबड़ का मूल्य			
	वृत्त	मा मान, गिग्लोनी मुन्नार आदि (लाय जोड़ें)	मोटर गाडिया	सादरिने	रेक्टर	वायुयान	ता	मोटर गाडिया	साइक्लें	ट्रेक्टर	वायुयान
१९५६	१४४०		७५००	२,४६६				७०००	३,७४४		
१९५७			८२००	३,२२०				८२००	४,३२०		
१९५८	१८७२	२३३४	७७०४	३,३६०				७५००	३,७८०		
१९५९	१७७६	६८४	६६६४	४,६५५				७०००	३,१२०		
१९६०	१६२६	१०२६	६२०४	४,३५१				६६०४	४,२००		
१९५१	२३०४	३५०४	८७००	३,४००				८२००	४,८७०		
१९५२	२२००	३३००	७२१०	४,१००	३,८०			६८४२	४,३६५	४,४४	६८४
१९५३	२४००	३२४०	७६००	४,६४०	८,००			६,५००	४,६००	८,१२६	८,२८
१९५४	जनकरी २४३	६४	७०२	४,३१३	८२०			२,६८०	४,३४६	३,६१	३,०६
	परकरी २४४	१०४	७३२	४,३६०	१,०६०			४,०११	४,२११	४,८२१	३,३३३
	माने २२१	१०४	७३६	३,८७१	१,४२६			३,७८०	४,२८०	४,३७७	३,४२२
	अमित २६३	१३१	७४२	४,६४३	३,३११			३,६३१	७,६६१	७,६७७	६,६
	मई ३५३	३५३	७४०	४,४७७	३,७४६			३,७४०	४,८३६	४,०७७	३,०११
	जून ५२७	१७७	७३०	४,००१	३,४४४			२,७४७	६,०७७	८,८८	३,३११
	जुलाई २४४	अप्राम	६८१	६,६१६	३,६१३			३,३६६	४,११६	२,४८६	२,३६६
	अगस्त										
	सितम्बर										
	अक्टूबर										
	नवम्बर										
	दिसम्बर										

रबड़ उद्योग (रोपाया)

वर्ष	रबड़ के नल			पटा के पट्टे	रैली का रबड़ का सामान	रबड़ इन्वोइस्ट	पानी रोक्ने वाले नून	रबड़ के स्पड
	रिटिपटर	वैकुञ्जम ब्रैक	अन्य प्रकार के	(०००)	(०००)	(००० पाँट)	(००० गज)	(००० पाँट)
१९५६								
१९५७								
१९५८								
१९५९	१०००	३०७६	२,८८२	४००	१,४२०			
१९६०	२०६४	३,३३६	२,८२०	१,६००	६,६१२			
१९६१	२२००	४,७२०	३,५७६	२,६००	७,७८०	१,६६२	१,५७६	४,७२६
१९६२	२,५४०	४,५४०	३,८४६	४,५००	१,११६	२,२६०	१,२६४	६,६६६
१९६३	१,४०४	४,७२०	४,४२०	४,३२०	१,२३६	८८०	२,०४४	४,६४६
१९६४	जनकरी १,१४	२,७२	३,५११	४,३४	१,२००	८७	१,८०६	४,६७
	परकरी ८६	२,७०	३,४७०	४-६	२,२६६	६७	३,६१६	७,४०
	माने १,०७	३,५४	३,५०१	३,५२	१,५४७	७,३	३,७२६	६,८१
	अमित १,२६	४,०१	३,६३६	४,०३	४,०७	७,२	२,७७६	७,३२
	मई १,२२	७,००	४,००७	३-८	६,०४	६,६	२,५०४	७,८३
	जून १,१४	७,२६	१-८	३,७४	१,१०६	८,६	२,३६२	६,२६
	जुलाई १,६८	४,६२	४,२२६	३,७६	१,२४८			
	अगस्त							
	सितम्बर							
	अक्टूबर							
	नवम्बर							
	दिसम्बर							

१. औद्योगिक उत्पादन (१२) खाद्य और तम्बाकू

वर्ष	ए. [अ] मैके आटा (००० टन)	ए३ [उ] चीनी (००० टन)	ए४ [उ] काफ़ा (टन)	ए५ [उ] चाय (टन लाख फ़ाउ)	ए६ मन्डर (००० मन)	ए७ वनस्पति तेल से बनी हुई वस्तुएं (टन)	ए८ मिगरिट (ला०)
१९५२		६२२ =	२५,०५ =	५८०	५७,०६ =		
१९५७		६०१ ७	१६,०५ =	५६१ ६	५१,६००	१,२५,०६६	
१९५८		१,०७५ ७	१६,१७ ७	५५८ =	६७,५२ =	६८,११२	१,००,७०६
१९५९	५१७ ६	१,००० =	२२,१२ =	५५६ =	६७,५२ =	१,२६,६६६	१,१०,५५५
१९५०	५७७ ६	६७६ =	२०,५२ =	५५६ =	६७,५२ =	१,५५,५५५	१,१६,६०५
१९५१	५८६ ०	१,११५ =	२०,०६६ =	६६ =	७५,३७६	१,७२,६६६	१,२६,५६२
१९५२	५१२ ५	१,५८५ ०	२१,०६६	६१५ ५	७२,३२०	१,६०,३२०	१,२५,५००
१९५३	५२७ ६	१,७६१ २	२०,५०७	६०० =	७६,३२६	१,६०,३२२	१,०१,६६६
१९५४	नमस्ती	२१५ ५	२,७०६	६ ५	१,००६	२५,०६२	१७,६६६
	परबरी	३६२	२५१ १	६,५११	५ =	३,६६६	२६,७३२
	माई	३६१	१,५५१	१,१००	१०१	६,६६६	२६,७३५
	कमैल	५०७	५२५	५,३०५	१२,५५६	१६,००६	२५,६६०
	मंड	३६ =	२६	३,७३६	७,०६५	२२,२७६	२५,५६५
	जून	२०६		१,६६६	१६,१५६	१६,००५	१७,५६५
	लुआ	३ =	कमैल	०६६	५ ५	६,३३२	१,५५०
	कॉमल					कमैल	
	मिन्डर						
	कनडर						
	नवडर						
	दिमडर						

[अ] में आंकड़े केवल बड़ी आटा मिला के हैं। [उ] में आंकड़े फमला मान (नवडर न अकडर) तक के हैं और केवल गाने से बने वाली चीनी के विषय में हैं। [उ] में आंकड़े शासन और पॉपुलर के पश्चात् काफ़ा मन्डर में ये दो जाने वाली काफ़ी के विषय में हैं। [उ] में माटिक आंकड़े पलाव (बांगड़ा और मण्डी रिफ़ायन) के उत्पादन को छोड़ कर हैं।

(१३) चमड़ा उद्योग

वर्ष	ए६ जूते, परिचयी टग के (००० जोड़े)	१०० जूते, देशी टग के (००० जोड़े)	१०१ कमाने चमड़े का नाम (०००)	१०२ वनस्पति छापना से कमाया हुआ गान- सँस का चमड़ा (०००)	१०३ चमड़े बैसा कपड़ा (००० गज)
१९५२					...
१९५७					
१९५८	२,०१६	२,०६७ ३	१,०७७	१,६५५	
१९५९	२,०५०	२,१०० ५	५०० =	१,६५५ =	
१९५०	२,०६६ =	२,१६६ =	५५६ =	१,५१५	
१९५१	२,१५० =	२,००६	७६६		
१९५२	२,१७२	१,१००	६२० ५	१,७७७	१,६१० =
१९५३	२,२५० =	१,०५६	७०० =	१,७७५	१,५५०
१९५४	नमस्ती	२,६५	१,०६	६६	१,००
	परबरी	३१७ ५	१,७० =	६६१	१,००
	माई	३२२ १	१३	७१६	६७
	कमैल	२६६	१५१ ५	६६६	७५
	मंड	२०० १	१०० ५	१,१५	७५
	जून	२५७ ३	१०० ५	६७ =	६५ ५
	लुआ	३०३ ६	२०३ =	५१ =	६१ ६
	कॉमल			६३१	१०६ २
	मिन्डर				
	कनडर				
	नवडर				
	दिमडर				

१. औद्योगिक उपादन (१४) अन्य उद्योग

वर्ष	१०४		१०५			१०६				
	खनिज	प्या की	प्लास्टिड (००० मग पुड)			कागज (टन)				
	कीचला	पेटिया	व्यापारिक	लुगाई आंग निगार का	याग	लपेटने का	विशेष विस्म का कटा	गते	योग	
(००० टन)										
१९५६	२८,८८४	३५,४००	२३,४००	५७,००	६५,६६	१५,६८४	६,८२८	२८,५८८	१,०५,६८६	
१९५७	३०,०००	२८,५६०	५,७३६	२४,२८६	८०,७७६	१७,८४८	५,३३६	२८,५३६	६३,०६६	
१९५८	२६,८२०	४६,२००	—,६५०	४०,७२६	८०,७७६	१७,८४८	२३,६२२	२७,२७२	६७,६००	
१९५९	३१,५५०	३८,४००	६,२४०	४७,६४०	५८,५४६	२३,८७६	११,६०४	२८,५३६	१,०३,६३६	
१९६०	३१,६६०	४१,३७६	६६	४०,७७६	७०,१४६	१५,६२६	५,६६६	२८,५४८	१,०८,६३६	
१९६१	३५,३००	६०,६५८	१०,२००	७७,८६६	७७,८६६	२५,६२६	३,६२०	२५,७४८	१,३१,६३६	
१९६२	३६,२२८	७८,२२८	१०,३६२	६०,५४०	६१,५४८	२१,५४८	२,८२०	२१,७२०	१,३७,६०८	
१९६३	३५,८५४	४६,७८८	११,३७६	६०,७६६	६६,६२८	२१,१५४	३,८२०	२६,५२२	१,३६,७०४	
१९६४	जलवरी परवरी माचू अम्ल मई जून जुलाई अगस्त सितम्बर अक्तूबर नवम्बर दिसम्बर	२,६०३ २,०५६ ३,००१ ३,०२७ २,६७७ ३,८८५ २,६६६	५,२६३ ५,७८८ २,२५४ ५,७५४ ५,१७७ ५,०५६ ५,६८२	६३३ — १,२७५ १,२७५ १,०५५ १,५५४ ७६४	६,१२६ १,७७७ ७,५६६ ६,२११ १,६५४ ५,५६६	८५४ १,७७७ ७,३६६ ६,०७३ अभाव अभाव	२,१७७ २,००६ ३०० ५६६ १,०२३ अभाव अभाव	२०२ ८८८ ३०० ५६६ १,२०२ अभाव अभाव	१,५६५ १,२८६ १,६६५ २,१३२ १,६२० अभाव अभाव	१,०,३२८ ६,८०६ १,५,७७४ १,५,७६६ १,२,६८८ २,०,०६७ अभाव

(१४) अन्य उद्योग (शिपांश) पत्रिका

वर्ष	१०७ मोटर गाड़िया (सक्या)			१०८ साइकिलें		
	कारें	ट्रक	योग	पूरी तैयार (मूल्य ००० रुपये)	हिस्से	
	१९५६	—	—	—	५२,६५० (क)	६२३६ (ख)
१९५७	—	—	—	३२,८६० (क)	१,७३८५ (ख)	
१९५८	—	—	—	५५,५२३	१,१२५८ (ख)	
१९५९	६,६७२	१५,१३२	२१,८०४	६५,५२३	१,७६६२ (ख)	
१९६०	६,५८८	—,०१६	१५,६०४	१,०३५,१६२	६,५५२२ (ख)	
१९६१	१२,३८४	६,८८८	२२,२७२	१,१५५,२७८	५,५८८४ (ख)	
१९६२	६,६८८	६,६४०	१६,३२८	१,६६६,६५६	८,५४७६ (ख)	
१९६३	५,६३२	—,६८८	१३,६२०	२,६५५,६८८	१०,१६५० (ख)	
१९६४	जलवरी परवरी माचू अम्ल मई जून जुलाई अगस्त सितम्बर अक्तूबर नवम्बर दिसम्बर	२७७ ५२३ ५०० ५७१ ५०३ ५४२ अभाव	६६६ —,०१६ ७६५ ५३६ ५३६ अभाव	१,२७७ १,०१३ १,२६६ २३६ ७६५ अभाव	१,८६० २,२,५६६ २,७,८५५ २,६,६६६ ३,६,६६६ अभाव	८६७० ८६३० ६३६७ १,०७६३ ८८५८ अभाव

[क] निर्माण सम्बन्धी गणना से प्राप्त आकड़े। [ख] १९५८ से १९५० तक के कारों में पूरी साइकिल बनाने वाली फर्मा द्वारा तैयार किये गये हिस्से शामिल नहीं हैं।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(क) व्यापार-सन्तुलन का लेखा

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(लागू अथवा में)

व्यापारी मान	१९४०-४६	१९४६-५०	१९५०-५१	१९५१-५२	१९५२-५३	१९५३-५४	१९५४-५५	१९५५-५६
(क) भारतीय व्यापारी माल का निर्यात								
समुद्र तथा वायु द्वारा	५,११,०४	४,७७,०७	५,७०,६८	७,०१,७५*	५,५३,७७	५,१५,६६	१५७,५०	१२६,२२
स्थल द्वारा	३०,६८८(अ)	२७,०८	१७,०२	२७,१४*	१२,५४	७,५६	१,५७	२,१०
योग	५,४१,५०	५,०४,१५	५,८७,७०	७,२८,८९*	५,७६,३१	५,२३,२२	१५९,०७	१२८,३२
(ख) भारतीय व्यापारी माल का निर्यात								
(विशेष समुद्र तथा वायु द्वारा)								
१ खाद्य, रेश और तम्बाकू	६२,३०	१,१५,००	१,३५,००	१,५८,२५	१,४३,३०	१,५१,१३	२०,५१	४५,३७
२ कच्चा माल तथा उपज और मूल्यन अतिमान मान	६७,०७	१,०५,०६	१,०५,७७	१,३६,३८	१,४६,७७	१,०६,०६	३०,७७	२०,३१
३ पूर्ण अथवा मूल्यन निर्मित माल	२,८६,०६	५,८६,७४	३,३५,७०	५,००,०६	३,६०,०८	२,५४,२५	७०,७५	७६,६७
योग (विमान (घ) जीवित पशु और (ख) डाक द्वारा भेजे गए वस्तुएं भी सम्मिलित हैं) --	५,१५,४३	५,७६,८०	५,७६,७३	७,९४,६९*	५,५६,०७	५,११,१६	१५७,५२	१२६,२२
(ग) पुनर्निर्यात (सकमच व्यापार छोड़कर)	७-६	६,०७	४,५६	५,०५	५,०५	५,७६	१,५४	१,७८
(घ) कुल निर्यात	५,२२,७२	५,८३,०२	६,०१,२९	७,९९,७४*	५,७७,६५	५,२७,६४	१६०,०६	१२८,१०
(ङ) आयात								
समुद्र तथा वायु द्वारा	५,५७,१७	५,६६,३४	५,२१,२७	८,७५,६४	६,७६,०७*	५,५१,०२*	२,१६,२२	२,६३,०२
स्थल द्वारा	२५,०० (ग)	३३,७१	४२,७६	८०,५५	७५,२६	२५,२६	५,०८	५,६०
योग	५,८२,१७	६,००,०५	५,६४,०३	९,५६,१९*	७,५१,३३	५,७६,२८	२,२१,३०	२,६८,६२
सकमच व्यापार काटकर		३,२४	६०	८०	१६	१२	६	६
(च) शुद्ध आयात	६,४०,१७	६,०५,०१	६,०३,३३	९,६५,५६	६,६६,०४*	५,७३,०६*	२,२०,७४	२,६८,०६
(ज) आयात								
(समुद्र तथा वायु द्वारा)								
१ खाद्य, रेश और तम्बाकू	१,२७,१०	१,५६,६४	१,१०,६१	०,६०,७७	१,७५,६५	६०,७५	४५,३६	११,३७
२ कच्चा माल और उपज तथा मुद्रा-निर्मित वस्तुएं	१,७७,५७	६,४५,७७	१,८५,००	७,८६,०८	६,७५,३६	१,५६,५६	६५,६६	७,०६
३ पूर्ण अथवा मूल्यन निर्मित वस्तुएं	३,३५,५०	३,०३,३३	३,०८,६६	७,५९,८८	४,५३,०७	३,७५,६५	१,५५,२९	१,५०,५९
योग निमान (घ) जीवित पशु और (ख) डाक द्वारा भेजे गए वस्तुएं भी सम्मिलित हैं	५,४०,१७	६,००,०५	५,६४,०३	९,६५,१९*	७,५१,३३	५,७६,२८	२,२१,३०	२,६८,६२
(झ) व्यापारी माल का व्यापार सन्तुलन	-१,३३,५६	-१,१६,०३	-७,७६,७६	-१,६६,४६	-१,७९,६६	-५,५६,०६*	-२,२०,७४	-२,६८,०६

*समान, डाक तथा वाणिज्य के अन्तर्गत आयात का मूल्य भी सम्मिलित है।
 (अ) कृपया ध्यानपूर्वक देखें।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की प्रमुख वस्तुएं*

(समुद्र, वायु तथा स्थल मार्गों द्वारा)

(१) खाद्य, पेय और तम्बाकू

(मूल्य लाख रुपया में)

व. क्र.	वस्तु	मार्ग	मार्च १९५४	अप्रैल १९५४	मार्च १९५३	अप्रैल १९५३	वृत्त	वर्ष	वृत्त	वर्ष
			(००० इन्डियन रु.)	(००० इन्डियन रु.)	(००० इन्डियन रु.)	(००० इन्डियन रु.)	(लाख रु.)	(लाख रु.)	(लाख रु.)	(लाख रु.)
१५-६८	परिभाषा	मूल्य	३३६	३०८	३६६	३	१४१	४४,३०५	६,६०	४,६७६*
१६५	परिभाषा	मूल्य	१६१	७१५	३०६	१६	३१३	४४,५०	६,२०	४,१६७*
१६५०	परिभाषा	मूल्य	२,५६	१,१६	६१	१,२६	१४,६०	७०,६१	११,६५	४१०
१६५०	परिभाषा	मूल्य	२,५६	१,१६	६०	१,२६	२०,४०	२०,४२	१४,११	४,३५
१६५१	परिभाषा	मूल्य	४३५	६२५	४२६	१४	३६८	४७,६०	११,२०	१२,३५६
१६५२	परिभाषा	मूल्य	३,२८	१,०७	६,०१	१,६४	२३,२२	६३,८६	३६,१५	६,३६
१६५२	परिभाषा	मूल्य	४८८	६६५	५५-	३०	२४८	४२,७०	८,००	५,१४२
१६५३	परिभाषा	मूल्य	३,२७	१,१३	१२,६८	१,६६	१६,०६	८०,८८	१३,०३	२,५५
१६५३	परिभाषा	मूल्य	५३६	४६६	२७	१८	२४८	४७,१०	६,५०	२,६७८
१६५४	परिभाषा	मूल्य	४,१६	६८	१०,६३	१,३४	१२,७२	१,०२,१५	१०,२२	१,०५
१६५४	वृत्त	मूल्य	३२	४७	५७	१	१६	२५०	६०	१७००
१६५४	वृत्त	मूल्य	३५	७	१,०२	११	४३	६,६२	१,२६	६
१६५४	वृत्त	मूल्य	३२	४४	६८	१	१५	२,१०	६०	१,३६०(अ)
१६५४	वृत्त	मूल्य	२६	१२	१,३०	७	१,००	४,३७	१,७४	५

* केवल समुद्र तथा वायु द्वारा।

† अथगानिस्वान और ईरान को स्थल मार्ग द्वारा भेजे गये माल के आकड़ों को छोड़कर।

(अ) स्थल मार्ग के आकड़े छोड़कर।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएं

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(२) कच्चा माल तथा उपज श्रौंग सुप्लायन अभिमित्त माल

(मूल्य लाख रुपया म)

वर्ष	कोषला	इन्डरवेर	लात	चमडा, कच्चा	पाने, कच्ची	पुराना लोहा व दस्तान पुरानिनोप	सजिन लोहा	गोनव लोहक	अवन	दड्डिया कारपाने के लिये	
											(००० टन)
१९४४-४६	परिमाण मूल्य	१,३३२ ४,४८	३४० ५,६४	४६१ ८,६६	४२ ४६	२०४ ४,६८	नगयव नगयव	३०६ १,८१	६१२ ४४	३१ ४७	
१९४६-४०	परिमाण मूल्य	२,३२३ ७,६३	२६८ ६,८५	४४६ ८,०६	१६ २१	२४ ६,४६	०२ ०३१	४ १	७३६ ४,५५	८४५ ६०	३७ ६९
१९४०-४१	परिमाण मूल्य	६६४ ३,४४	४०७ १०,००	६६२ ११,८६	३८ ६६	२४८ ८,७४	० ४	५ २२	८२१ ८,०१	८२१ १,०३	४५ १,१६
१९४१-४२	परिमाण मूल्य	२,००१ ६,४५	४०८ १३,२१	७१४ १४,८७	२४ ६०	२४० ७,६२	४३ ७०	२८० १,००	१,१२५ १४,६६	८६७ १,१३	४६ २,२८
१९४२-४३	परिमाण मूल्य	२,६६८ १०,०३	२८४ ६,०१	६८८ ७,३१	१ १	२२६ ४,५४	४७ १०,२३	८३१ ३,७१	१,४४० २१,७६	४३६ ४८	७२ २,२७
१९४३-४४	परिमाण मूल्य	१,६१७ ६,८८	३५० ७,६५	४३८ ६,७६	—	२७७ ६,०६	२५० ४,६७	१,२०० ४,४३	१,४६८ २४,२५	६६७ ६०	६६ २,०४
१९४४-४५	परिमाण मूल्य	२०२ ६०	२७ ४८	५३ ६२	—	१८ ५०	१३ २०	४४ १६	८२ १,२०	१५१ ८	४ १४
१९४३-४४	परिमाण मूल्य	१५७(म) ४५	२६ ७४	४० ५६	—	१६ ४३	१४ २२	७२ ३०	११७ १,१०	७० ६(म)	६ १६

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएँ

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(२) कच्चा माल तथा उपज और सुदृप्त अनिर्मित माल (गत पृष्ठ में आगे)

(मूल्य लाल घपपों में)

वर्ष	मूल्य	मूल्य	मूल्य	मूल्य	मूल्य	मूल्य	मूल्य	मूल्य	मूल्य	मूल्य	
		मूल्य	मूल्य	मूल्य	मूल्य	मूल्य	मूल्य	मूल्य	मूल्य	मूल्य	
१९५०-५१	परिमाणु	८,६२१*	३,००८	२,२=१	३=	२५	७६	१,०१७	६६५	८,६५८	
	मूल्य	६,७०	२,१=	१,६=	३,१३	१,३६	१५,०१	५,१५	३,३६	१,०६	
१९५१-५०	परिमाणु	७,०४६*	१,१३=	१,७०३	१=६	५	७२	५=	१,५१३	२७,३६३	
	मूल्य	५,४४	६६	१,२=	८,०४	२=	४,५६	१०,६१	८,२२	१,७५	३,७१
१९५०-५१	परिमाणु	१६,६६१	५,=६=	१,३१६	३	७६	६=	१५	१,३०७	१७१	२५,३७१
	मूल्य	१६,७४	४,३१	१,१०	३,१७	५,६२	१,६७	५,६४	१२,४१	१,२=	७,८७
१९५१-५२	परिमाणु	५,११६	५,५२२	६,०७७	२०	१	७	२३	६२३	४१७	१८,२६४
	मूल्य	४,३२	६,५७	८,१६	२,३५	१६	७०	१३,६=	७,३५	२,४=	४,६०
१९५२-५३	परिमाणु	१६,१६०	=,५२७**	६,=१२*	१३	४	नगण्य	७१	१,२५६	३४२	३७,३३६
	मूल्य	१०,४७	७,७२	४,=२	१,५०	३=	०,५३	१६,३३	६,६४	१,४६	८,४१
१९५३-५४	परिमाणु	३६०	४,५६५**	६३=**	५	३५	१,२६६	३५५	२०,६६१
	मूल्य	२५	३,१६	५६	६३	६,४०	६,८७	१,१४	५,=७
१९५४-५५ :											
जून	परिमाणु	...	५१२	५३	००४	१	६२	५३	२,७३६
	मूल्य	..	२=	३	१	२६	५१	२२	..
१९५२-५४ -											
जून	परिमाणु	१०	७७=	१=२	०,२	५	६०	२१	२,१५४
	मूल्य	१	५६	१०	१	१,४०	७४	७	६१

* सेल मसुद्र मार्ग द्वारा ।

** अज्ञेय ।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएँ

(समुद्र, वायु तथा रेल द्वारा)

(३) घूर्णित, श्रयदा मुख्यतः निर्मित माल

(मूल्य लाख रुपया में)

वर्ष	कमाना हुआ चमड़ा	कमाना हुआ दाने	रुद्र श्रोटी हुड	यूवी होन्चरी	यूवी बपडा (कग्रे का)	यूवी बपडा (मिल का)	विजाती का बाना	बोरिया	टाट	नकली रेशम का बपडा	ऊनी नालीन व कन्या	नारियल की नंग
	(००० इन्डर बेट)	००० इन्डरबेट	(००० पौंड)	(लाख मज)	(लाख टन)	(मुख्यतः यूनी माल से बना हुआ)	(००० टन)	(००० टन)	(००० टन)	(००० टन)	(००० टन)	हजार टन
१९४४-४५	परिमाण १२६ मूल्य ४,६६	१०४ ७,४०- ७,२०	१२८ १२८	६४	१०** १४**	४४७ ६४,७७	४२४ ००,७२	२४,४०० ४,१६	०,३३४ २,६१	०६६ ४,४७		
१९४५-४६	परिमाण ३२४ मूल्य ८,४३	१६३ ११-३ ११,४०	१३५-३५(क) ७६	७० ४६ ६४	५० ५०	४३४ ६३,२२	३०६ ४७ २४	१०,४६५ ३,३३	१,४२४ ७,२१			
१९४६-४७	परिमाण ३४१ मूल्य १२,०२	१४०(क) ७४,०६१ १३,३३	१७,२० १७,२०	८६ १०,०० १,१०,१७	१०० १-२,४० १,७१	३४४ ४४,३६	२६६ ४०,६१	६,६६० ६७	१४,०६१ ४,४६	१,४६० १०,०१		
१९४७-४८	परिमाण ३३५ मूल्य १३,६३	१२४(क) ६ १-२(क) १३,४१	१,६७ १,६७	१,२० ६,२०	४,०० (क) ३०,०० ४०,६४	४७३ १,३४,२६	२०७ १,२४,५०	०,४३४ १,१७	१३,४६१ ३,००	१,२३६ १०,१६		
१९४८-४९	परिमाण ३३३ मूल्य ६,२२	१४४* १-०,०४ १,०६	४,४१ ४,४१	६६ ०,७४	४,४० (क) ४३,२-२	३७१(क) ६४,३६	३०४ ६३,००	३,६७५ ४२	७,३२० ३,००	१,२०२ ७,३६		
१९४९-५०	परिमाण ३६४ मूल्य १०,०३	१६० २२,४-४ १३,६३	४,७६ ४,७६	१,२३ ६ ६४	६,३० ४३ ४४	७०,६०(क) ३,७३	३४४ ४० २६	३-६ ६० ४०	३,१७७(क) ४६	०,६६७ ३,३६	१,४२१ ८,१६	
१९५०-५१	परिमाण २१* मूल्य ६४*	०* ७१*	३० ४०६	४६ २०	४६ ४,७-	२० ४,०६	४२४ ७	४०४ २६	११२ ६४	
१९५१-५२	परिमाण ३६* मूल्य १,०२*	१४* १,२७*	२,४-६(क) ४४	...	४० ३६	४६० ३ ६७४	२० ३ १४	२० ४,४०	१६३ ३	६७० ४६	१३० ६७	

* केवल समुद्र तथा वायु द्वारा। (क) कपूश। (ख) स्थल मार्ग व काष्ठ लोडकर।

** इनमें कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, जम्मू तथा कश्मीर के स्थल मार्ग द्वारा भेजा गया माल सम्मिलित नहीं है।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(क) निर्यात की मुख्य वस्तुयें

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(३) पर्याप्त अथवा मुख्यतः निमित्त मात्रः (सत वृष्ट से क्रम)

(मूल्य लाख रुपये में)

वर्ष	वैश्विक मूल्य (००० टन)	विद्युत शक्ति (००० टन)	निम्न शक्ति (००० टन)	इन्धन (००० टन)	कच्चा तेल (००० टन)	गन्ना (००० टन)	चाय (००० टन)	काठ (००० टन)	कागज (००० टन)	रेशम (००० टन)	धातु (००० टन)	अन्य (००० टन)
१९५०-५१	परिमाणु मूल्य	२० १,१३	४१	४४	६४	२,१२	२६	४६	१,३७	६०
१९५१-५२	परिमाणु मूल्य	१६ १,५०	५१	...	६६	६१	७४	३२	६६	७१	६६	५६
१९५२-५३	परिमाणु मूल्य	२० २,२६	१,१५	...	०६	७०	६६	२६	४७	३३	१,६५	१,२४
१९५३-५४	परिमाणु मूल्य	३२ २,०२	...	०२	६१	१,२३	१,५७	४३	६५	१,१६	१,००	१,५१
१९५४-५५	परिमाणु मूल्य	१६ १,३३	१,३५	६०	४१	१,१०	१,५५	३२	१,७७	०७	१,५२	२,६७
१९५५-५६	परिमाणु मूल्य	२० १,५५	१,५६	६६	५३	२३	१,३३	१,६३	२६	६२	०६	१,७७
१९५६-५७ :	परिमाणु मूल्य	३ १६	...	०३	४
१९५७-५८ :	परिमाणु मूल्य	२ ६	१३	३३	६	३	६	३२	२	६	६	३३

* अप्रैल १९५२ से यह वस्तु व्यापार क्षेत्र में अलग दिखाई गई है।
 ** अप्रैल १९५३ से यह वस्तु व्यापार क्षेत्र में अलग दिखाई गई है।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ग) आयात की मुख्य वस्तुएं*

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(मूल्य लाख रुपयों में)

व. क्र.	मशीन के पट्टे	रामायनिक पदार्थ	तारकीय के रंग	फल व तरकारिया	अनाज, दालें और आटा	धनु के बर्तन	दमक, उपकरण आदि	हर प्रकार की मशीनें (मशीन के पट्टों सहित)	लोहा, बरतान तथा तलमशीनी बनी वस्तुएं	बादर (चूने, इस्पात तथा अन्य) के वस्तुओं के समितिक)
	१६४-४६	२,१२	२०,४७	१२,३४	७,२४*	१,०१,७०	५,६६	१२,०१	२२,३१	२२,३१
	१६४-४०	१,०१	७,७६	७,६६	१०,५०	१,३३,००	६,१४	२०,७४	१,०५,५१	१३,७०
	१६४-४१	१,१८	६,२२	११,६०	१३,५७	०,७६	४,५७	१७,७६	६३,००	१६,००
	१६४-४२	२,०७	१६,६०	१४,२७	१३,६०	२,३०,३०	६,१४	२०,४२	१,०४,३१	२१,६७
	१६४-४३	१,६१	१२,६०	७,५१	१३,७४	१,५६,७३	४,०५	२२,२२	०७,०६	२३,७१
	१६४-४४	१,००	१२,६८	२५,५४	१३,७८	७२,६६	४,४७	२१,५६	२५,०४	२४,५१
	१६४४५									
	जूल	६	१,६०	१,३६	३२	३,६६	४२	१,४६	६,१२	१,७६
	१६४४६									
	जूल	५	७२	१,००	१,०४	१२,३६	३३	१,००	५,६६	१,७०

* इसमें अनाज, दाल तथा आटे के अन्य अंगों की वस्तुएं भी सम्मिलित हैं।

* इसमें अफगानिस्तान तथा ईरान द्वारा स्थल मार्ग से हुए आयात के आंकड़े सम्मिलित नहीं हैं।

व. क्र.	समाप्त	रुई, कच्ची	ऊन, कच्ची	नवर्त रेशम का यूल	मोटर आदि गाड़ियों के नौबे क बाचे	मोटर गाड़ियों के बाँरे (टैंकरी गाड़ियों बवायवा सहित)	यूटी कपड़े	रूई क्रीडी क्री	कमी माल की वस्तुएं	तेल मयदार की वस्तुएं	जड़, कच्ची
	१६४-४८	१३,३७	६४,४०	३,१०	१२,०६	०,६२	७,६४	०,१२*	८,३०	४,५०	३,१०
	१६४-४९	७,७४	६३,७६	३,०३	१०,४६	५,३०	३,१०	०,०४	१०,७०	५,७७	१,६४
	१६४-५०	६,५०	१,००,७७	५,६२	१४,७७	५,६६	३,२४	१०,५२	६,३१	३०	१३
	१६४-५१	१३,१६	१,३७,१०	२,६०	१७,२६	२,०७	४,७८	१५,६०	२,३७	१,०२	४०,७७
	१६४-५२	११,२२	७,६७	६६	७,०४	२,००	२,६६	११,४२	१,५५	२,०८	६२
	१६४-५३	११,२५	५२,७१	१,६४	१३,०४	२,१५	२,००	१२,४५	१,०२	१,३१	२५,५२
	१६४५४										
	जूल	६२	५,५०	२२	१,०१	२५	२४	६६	५	६	३
	१६४५५										
	जूल	१,०३	६,१२	२३	१,०३	०	३-	७६	५	१०	७

* इसमें अफगानिस्तान तथा ईरान द्वारा स्थल मार्ग से हुए आयात के आंकड़े सम्मिलित नहीं हैं।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार-यूरोप

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष	ब्रिटेन		फ्रान्स		बेल्जियम		जर्मनी		नोर्डरलैंड	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९५८-५९	१,५२,९९	१,०३,२९	३,०१	७,२८	७,१०	८,८९	२,२८	२,६१	५,५८	७,२६
१९५९-६०	१,२३,९६	१,१८,१५	३,८१	१,६०	७,६०	९,२३	६,५२	६,५१	५,९६	७,३७
१९६०-६१	१,३२,५०	१,३९,८२	११,०७	९,०१	९,०५	९,८१	१२,०५	१०,९३	६,६८	१०,१६
१९६१-६२	१,५८,१३	१,८९,६६	१०,७२	११,३७	९,८२	८,३९	२८,३५	९,३८	१०,९२	७,९२
१९६२-६३	१,३८,८५	१,०३,०९	१३,५५	८,६९	६,६०	६,६८	२२,६५	१२,५८	१०,८०	१०,३९
१९६३-६४	१,५२,७१	१,५९,९९	९,६३	८,३२	७,२७	५,५७	३१,१५	११,५६	११,३०	६,८६
१९६४-६५ :										
जून	१०,९६	१२,६९	७०	३२	६५	८०	२,७०	१०६	१,१०	१०,८
१९६५-६६ :										
जून	८,९५	९,५८	६७	८८	७२	५३	२,७५	५६	१,९०	५०

निर्यात में पुनःनिर्यात भी सम्मिलित हैं।

वर्ष	आस्ट्रिया		इटली		पोलैण्ड		नेपोल्नोवाक्रिया		योगोस्लाविया		तुर्की	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९५८-५९	८०	३५	२२	०५	८	३२	२,०८	२,१९	१०	१०	६	९२
१९५९-६०	८९	५३	६	०३	२९	६८	२,८३	१,५९	६१	५५	१५	२,११
१९६०-६१	१,९६	७३	१०	३	३०	५०	२,७७	१,०८	१२	९	३	२,२९
१९६१-६२	२,५७	१,०१	३२	३५	०६	२,८१	१,२९	१५	२६	१३	२,५५	
१९६२-६३	१,९९	५२	१६	५	२६	४	१,३५	१,१८	९	११	०,८३	५,६५
१९६३-६४	२,८१	५७	१०	२	१६	१८	१,२५	३,०६	७	१	०,३१	२,५८
१९६४-६५ :												
जून	१९	१	नगण्य	नगण्य	०,५	९	९	०,१	८	
१९६५-६६ :												
जून	१२	२२	०,६	नगण्य	२	२	१३	१५	१	...	नगण्य	१५

निर्यात में पुनःनिर्यात भी सम्मिलित हैं।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार—यूरोप (घन मालिखत में आता)

(रुपय लाख बराबर में)

वर्ष	विद्युत्-उत्प्रेषण		बटनी		आयन		नारिये		फिनलैंड		रुन	
	आयात	निर्वात	आयात	निर्वात	आयात	निर्वात	आयात	निर्वात	आयात	निर्वात	आयात	निर्वात
१९४०-४१	२,६६	१,२२	१,२२	६,४६	६,००	०,११	४,६६	०	१,३०	१६	३,७६	५,३६
१९४१-४२	७,४६	२,४४	१४,०३	५,६०	६,२०	२,३	२,४४	१,०६	१,१७	२०	१६,६०	३,७४
१९४२-४३	७,६१	२,२३	१६,६०	१,६००	५,००	२,३०	२,३३	१,३३	१,४६	२३	२३	१,३७
१९४३-४४	६,६४	२,०६	१७,६६	७,६०	७,४७	२,४४	३,४०	१,६०	३,१४	१,०६	३,३०	६,६२
१९४४-४५	६,६४	६२	१२,०१	२,०६१	६,६६	१,००	२,७०	०	१,००	२५	२४	०५
१९४५-४६	६,१२	०	२३,०७	५,१२	६,१२	१,६३	२,६२	४१	१,०७	१२	६०	१,१६
१९४६-४७												
जून	६६	११	१,४४	५०	०	१०	०	३	१०	२	६	१
१९४७-४८												
जून	५७	११	२,५७	२६	१०	१०	२०	२	२७	१	३	

निर्वात में पुनर्निर्वात भी सम्मिलित है।

एशिया और अफ्रीका

वर्ष	अयन		ईटाक		प्रात		पारिस्थान		पूर्वी अफ्रीका		मिस्र	
	आयात	निर्वात	आयात	निर्वात	आयात	निर्वात	आयात	निर्वात	आयात	निर्वात	आयात	निर्वात
१९४०-४१	१,७७	२,००	१,२७	१,३६	२०,१०	३,१४*	३,०७,३७	७६,६६	१४,०३	५,४४	३१,६०	६,७२
१९४१-४२	१,४६	७,११	३,३०	४,००	३२,४०	४,०२	४४,०४	४३,३०	१०,४२	६,०३	४०,२४	७,६४
१९४२-४३	१,१६	६,७६	४,२६	२,०६	३७,१४	६,६०	४३,६४	३०,६०	२२,४३	६,०६	३२,०७	५,०७
१९४३-४४	०	६,३०	३,६१	३,१६	२०,६३	४,१७	०७,४०	४६,२६	२३,६७	१२,२०	४०,४६	६,४६
१९४४-४५	५६	६,३२	२,०५	२,११	२,५०	०,०७	२१,००	३१,१४	२४,१३	११,३०	१४,१२	५,६६
१९४५-४६	२२	६,०३	२,४६	२,४४	२,०४	१,२३	१६,३०	०,०४	२०,१७	१०,७६	२७,६६*	३,५१
१९४६-४७												
जून	१	३६	२	२१	१६	१६	१४६	६४	१७७	१०३	१,२५	३१
१९४७-४८												
जून	१२	६३	१०	२६	६	०	१,४७	४०	२६०	७६	२,२६	१०

निर्वात में पुनर्निर्वात भी सम्मिलित है।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार—एशिया और अफ्रीका (गत तालिका में आगे)

(मूल्य लाख रुपया में)

वर्ष	भोजानिक		लकड़ा		बर्मा		मनावा सन, (सिंगापुर सहित)		थारलैण्ड		जापान	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	२,४७	८७	२,७३	१२,३१	२६,२१	१०,५६	६,६०	५,३४	८,४३	२,३७	६,३८	४,४६
१९४९-५०	३,००	६२	२,७३	१६,८२	१४,१७	१४,६३	१४,४८	१७,६८	१२,२४	४,१६	२१,३८	५,८७
१९५०-५१	४,४४	६२	४,५३	१६,६८	१८,८०	२२,४४	१६,६६	३६,२०	८,१५	४,८५	१०,११	१०,२८
१९५१-५२	३,४२	६२	५,६०	१६,८१	२३,३५	१६,७६	२२,०६	१५,८१	११,६४	८,७६	२४,६५	१४,८२
१९५२-५३	५,६५	६४	४,२६	२०,०८	२६,४७	२२,३८	१४,८२	१८,८६	७,७२	४,३६	१५,८२	३१,६६
१९५३-५४	४,४८	७०	५,०८	१८,१२	१७,५५	२१,०६	२०,४५	१४,२१	४५	३,६२	१३,०६	२३,६०
१९५४-५५												
जून	५	४	४२	११०	३,१५	१,८६	१,७५	६६	१	१२	६२	७४
१९५३-५४:												
जून	६६	५	२५	१,३२	४,००	१,६७	१,५३	१,०६	०३	२६	८६	२,५३

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

अमेरिका और आस्ट्रेलिया

वर्ष	संयुक्त राष्ट्र अमेरिका		कनाडा		अर्जेन्टायना		आस्ट्रेलिया	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	१,०६,१३	७०,६८	१०,६६	८,३६	१२,८८	१६,६८	३०,०३	२०,६५
१९४९-५०	६५,४१	८१,५३	२३,६३	११,०६	८,६६	७,७८	४७,७४	२६,३६
१९५०-५१	१,१७,०७	१,१५,३८	२१,०२	१३,७६	५	१०,६५	३३,४४	३०,४१
१९५१-५२	२,८८,७०	१,३२,३६	१८,८१	१६,२६	७६	१७,६३	१७,६१	४७,६३
१९५२-५३	१,८१,४१	१,२२,७५	२६,३१	१०,८४	४	६,८३	१२,७३	१६,६८
१९५३-५४	७६,२४	६०,४६	१४,१०	१३,०६	२	१६,५७	२५,६६	१७,६३
१९५४-५५								
जून	८,१७	६,५०	१६	१,०४	नगण्य	८०	१,४६	२,४६
१९५३-५४:								
जून	५,२६	७,११	६८	६८		२१७	४,१८	०,३०

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

३. देश में वस्तुधो

वस्तु	स्थान	इकाई	अक्टूबर १९५३		नवम्बर		मार्च		अप्रैल	
			१० आ० पा०	६० आ० पा०	१० आ० पा०	६० आ० पा०	१० आ० पा०	६० आ० पा०	१० आ० पा०	६० आ० पा०
खाद्य पदार्थ										
१ चावल										
(१) साधारण (न)	कलकत्ता	मन	१६ १० ०	१६ १० ०	१६ १० ०	१६ १० ०	१६ १० ०	१६ १० ०	१६ १० ०	१६ १० ०
(२) लाल	पटना	"	११ ००	१६ ००	१६ ००	१६ ००	१६ ००	१६ ००	१६ ००	१६ ००
(३) अन्नगड्डा (उ)	पानवारा	"	१४ ६५	१४ ६५	१४ ६५	१४ ६५	१४ ६५	१४ ६५	१४ ६५	१४ ६५
२ गेहूँ										
(१) साधारण	कलकत्ता	"	१६ ६०	१६ ६०	१६ ६०	१६ ६०	१६ ६०	१६ ६०	१६ ६०	१६ ६०
(२) "	अमृतसर	"	१५ १३०	१६ ००	१६ १२०	१६ १२०	१६ १२०	१६ १२०	१६ १२०	१६ १२०
(३) "	हावड़ा	"	१० ००	१० ४०	१६ ४०	१६ ४०	१६ ४०	१६ ४०	१६ ४०	१६ ४०
३ नार										
	अमरावती	"	६ ६०	१० १००	१० २०	१० २०	६ १००	१० २०	१० २०	१० २०
४ नानरा										
	हैदराबाद शहर	२५० पीट	५ ४०	५ ४०	५ ४०	५ ४०	५ ४०	५ ४०	५ ४०	५ ४०
५ चना										
	बा पल्ला	"								
(१) दूरी	पटना	मन	१७ ००	१५ ००	१५ ००	१५ ००	१५ ००	१५ ००	१५ ००	१५ ००
(२) "	हावड़ा	"	१४ १४०	१४ ६०	१४ ६०	१४ ६०	१४ १००	१४ ६०	१४ ६०	१४ ६०
६ चालू										
अरहर										
	"	"	१३ ४०	१० ००	१० ४०	१० ४०	६ १५०	१० १५०	१० १५०	१० १५०
७ चाय										
(१) अत्याधिक उपभोग के लिए	कलकत्ता	पाउ	१ ११०	१ १५५	१ १६१	१ १६१	१ १५६	१ १५६	१ १५६	१ १५६
(२) नयात —										
(क) निम्न मध्यम श्रेणी पाकी	"	"	१ १५६	अप्राप्त	२ १६	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
(ख) मध्यम श्रेणी पाकी	"	"	१ १५०	अप्राप्त	५ ०६	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
८ कान्नी										
(१) प्लास्टिक पाकिरा(गोला)मगलौर कोम्प्लेक्स* हावड़ा			५५० ००	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
(२) दशा कान्नी	"	"	अप्राप्त	१७० ६०	१६६ ००	१६६ ००	१६० ००	१६० ००	१६० ००	१६० ००
९ चीनी (क)										
(१) डा ०८	कलकत्ता	मन	६ १० ३	० ० ४	३० ६ ७	३० ६ ७	३० ५ ३	३३ १४ ४	३३ १४ ४	३३ १४ ४
(२) डा ०७	"	"	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
(३) डा ०६	"	"	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
१० गूँड़										
(१) पाने के लिए	अहमदनगर	"	अप्राप्त	१६ ६०	१६ ००	१६ ००	१६ ००	१६ ००	१६ ००	१६ ००
(२) "	मुम्बई	"	१६ ६०	१५ १४०	१५ १०६	१६ ६०	१६ ६०	१६ ६०	१६ ६०	१६ ६०

(न) नियंत्रित मूल्य (२) उचित मूल्य

मन = ६०—२७ पीट।

(क) बाजारों में चलते मन्ना का मूल्य।

बगल मन = ६२—०/१५ पाउ।

* प्रतिवर्ष जनरल में मुन तक मगलौर बाजार के मूल्य और तुलार में मिनटवर तक कोम्प्लेक्स बाजार के मूल्य दिए जाते हैं।

† इस तालिका में समस्त मात्र प्रत्येक मान के दूसरे सप्ताह के लिए दिये हैं।

के भाव : १९५४*

मार्	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
ह०आ०पा०	ह०आ०पा०	ह०आ०पा०	ह०आ०पा०	ह०आ०पा०	ह०आ०पा०		
१५ १२०	१६ १५०	१६ १२०	१७ ८०	१७ १२०	१६ १५०		
१७ ००	१४ ००	१४ ००	१५ ००	१५ ००	१२ ००		
१४ ६३	१४ ६३	१४ ६३	१५ १०८	१६ ५४	१६ ००		
१४ ६०	१४ ००	अप्राप्त	१३ ८०	१३ ४०	११ ००		
१४ ०६	१० ००	१० १४०	१२ ६०	१२ १३०	१४ ७३		
१३ ८०	११ १२०	१२ ४०	१२ २०	१२ ००	१२ ८०		
१० २०	६ ००	६ ४०	६ ८०	८ ८०	८ ४०		
२३ १२०	२६ ६०	२७ ००	२६ ४०	२६ ००	२४ ००		
१२ ८०	११ ००	१० ८०	११ ००	१० ८०	१० ८०		
१२ ४०	१० ४०	१० ००	६ ८०	१० ००	६ १२०		
१० ५०	८ २०	७ १५०	७ ४०	८ २०	७ ८०		
१ १२ ८	अप्राप्त	२० ११	२ २ ७	२ ८ ७	अप्राप्त		
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२ १२०	३ १०	अप्राप्त		
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२ १२ ६	३ १ ६	अप्राप्त		
२२२ ८०	२१६ ००	२२१ ००	२२१ ००	२२१ ००	२२० ००		
१५२ ००	१६५ ८०	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	बकी नहा		
३१ ६४	३० ८७	३१ ०५	३१ १२०	३२ २०	२१ १५४		
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	३० २०	अप्राप्त	अप्राप्त		
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त		
अप्राप्त	१६ ००	१७ ८०	१७ ८०	१७ ८०	१८ ००		
० १००	१७ १००	१६ ००	२१ ८०	२० ४०	२ १२०		

३. देश में वस्तुओं

वस्तु	वास्तव	दकार	अक्टूबर १९२३	नवम्बर	फरवरी	मार्च	अप्रैल
१८ नमक			६०,००,०००	६०,००,०००	६०,००,०००	६०,००,०००	६०,००,०००
(१) साम्भर (न)	गुजरात	न	५,००,००	५,००,००	५,००,००	५,००,००	५,००,००
(२) बाला	बम्बई	,,	१,५०,००	१,५०,००	१,५०,००	१,५०,००	१,५०,००
१९ <u>तम्बाकू</u>							
जागू पूला मध्यम	कलकत्ता	बंगाल मन	१००,१५,६	१२०,१२,६	१५०,१५,६	१५०,१२,६	अप्रैल
(साधारण श्रेणीत टर्के का)							
२३ <u>नाली मिर्च</u>							
(१) एलपा	,,	,,	२६०,००	२२०,००	१८०,००	१६०,००	१७०,००
(विना छुट्टा)							
(२) छुट्टा टुट	काचान	हृदयवट	१००,००	५२५,००	३१०,००	५६७,००	२६०,००
२४ <u>नाजू</u>							
भारतीय	मंगलीर	मन	१८,५५,०	१२,१०,७	१५,१०,७	१२,१५,०	१५,३०

औद्योगिक कच्चा माल

१ रुई कच्ची

(१) जाराला एम का एक	बम्बई	७८४ पौंड का बैला	३००,००	७६०,००	८२०,००	७५४,००	७५५,००
(२) ५१६ एफ पी	,,	,,	अप्रैल	अप्रैल	६८६,००	६९८,००	६९७,००
अमेरिका एम का							
(३) बंगाल बन्धिया एम बी	,,	,,	५८०,००	६५५,००	६४०,००	६२०,००	५६५,००

२ जूट कच्चा

(१) फुट्ट स	कलकत्ता	४०० पौंड की गाठ	१४०,००	१७०,००	१६५,००	१६५,००	१७५,००
(२) लाउरिंगिंग	,,	,,	१५५,००	१६०,००	१५०,००	१५०,००	१६०,००
(३) भारतवा गट्टा मिन्चि	,,	मन	३१,००	३५,००	३२,००	३२,००	३३,००

३ रेशम कच्चा

(१) ५०० ताना खामरु	मालगा	सेर	५६,००	५५,००	५६,००	६३,००	६४,००
(२) बगता बाण्डा विस्म का	बंगलीर	३६ तोले का पौंड	५६,००	५८,००	५७,००	६३,००	६६,००

४ ऊन, कच्चा

(१) नाडवा मनेट्ट बन्धिया	बम्बई	मन	२६१,००	अप्रैल	२७०,१००	२६७,१००	२७७,११३
(२) तिन्वता	बालिन्पाग	,,	१३०,००	१३५,००	१६७,००	१६५,००	१६५,००
	पहुँचने पर						

(न) लान्कन मूल्य ।

के भाव : १९५४ (गत वृत्त से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
क०आ०पा०	क०आ०पा०	क०आ०पा०	क०आ०पा०	क०आ०पा०	क०आ०पा०		
२ ८०	२ ८०	२ ८०	२ ८०	२- ८०	२ ८०		
१ २०	१ २०	१ २०	१ २०	१- २-०	१ २०		
अप्राप्त	१०५ १३६	१०५ १३६	६६ १३६	६४-१३-६	अप्राप्त		
१५५ ००	१५० ००	१३० ००	१३० ००	१६० ०-०	१६५ ००		
२४० ००	१५५ ००	१८७ १५०	२४६ ३०	२२५ ०-०	१६० ००		
१२ १० ६	१३ १४ ६	१२ १० ७	१२ १५ ७	१४ ६ ४	१२ १० ७		
७५० ००	७२५- ००	६६७ ००	७०७ ००	७१४- ००	अप्राप्त		
६१० ००	८८८ ००	८५७ ००	८६२ ००	अप्राप्त	अप्राप्त		
६०६ ००	५७५- ००	५५० ००	५१५ ००	५४०- ०-०	अप्राप्त		
१६५ ००	१५५ ००	१४० ००	१४० ००	१५० ०-०	अप्राप्त		
१५० ००	१४० ००	१२५ ००	१२५ ००	१३५ ०-०	अप्राप्त		
३२ ८०	अप्राप्त	२७ ००	२७ ००	३२ ०-०	३२ ८०		
६६ ००	६३ ००	६२ ००	६३ ००	६३- ००	६५ ००		
३० ००	अप्राप्त	२८ ००	२६ ००	२७ ८-०	अप्राप्त		
२०७ ११ ३	२७७ ११ ३	२७२ ६०	२६७ ७०	२०२ ६०	२६७ ७०		
१०२ ८०	१७५ ००	१७५ ००	१६५ ००	१६५ ००	१८० ००		

६. देश में वस्तुओं

वस्तुएं	वर्ग	इकाई	अक्टूबर १९५१	नवंबर	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			हजारों पा०	हजारों पा०	हजारों पा०	हजारों पा०	हजारों पा०
५. मूंगफली							
(१) बगाना	बम्बई	हजार टन	४० ००	३५ १० ०	२४ ४०	२५ १२ ०	३५ ४०
(२) मदान स खिला इड	बड़ोदा	मन	२५ ६ २	२४ १० २	२४ १३ ०	२५ ६ ०	२५ २ ०
६. अलसी							
(१) बगाना	बम्बई	हजार टन	२७ १२ ०	२८ ८ ०	२६ ० ०	२५ ४ ०	२५ ८ ०
(२) ५० परकशन छाया गना (लैन्डर)	कलकत्ता	मन	१८ ८ ०	२१ ८ ०	२१ ४ ०	२० ४ ०	१६ ० ०
७. अरण्डी का बीज							
(१) मनेम विरम का	मद्रास	"	१६ ७ ०	१८ ० ०	१५ १५ ०	१५ ७ ०	१४ १५ ०
(२) छुटा माधारण अलसत के का हैराबाग	बम्बई	हजार टन	२ ० ०	२४ ८ ०	२४ ४ ०	२२ ४ ०	२३ २ ०
८. तिल							
(१) सफेद बगाना ८५%	"	"	४४ ० ०	४२ ० ०	४१ ० ०	४० ८ ०	४८ ० ०
(२) अमिश्रित (गाजर)	भारत	मन	२४ ० ०	२८ ८ ०	२५ ८ ०	२४ ८ ०	२७ ० ०
९. तारिया							
(१) अमिश्रित पन्ना खुट्टा	कलकत्ता	बगाना मन	७ ० ०	२६ ४ ०	२१ ० ०	२६ ८ ०	२२ ८ ०
(२) लाल	बम्बई	मन	२१ ५ ०	२२ १४ ०	२५ ० ०	२३ ८ ०	२३ १४ ०
(३) साना बाला	बांगपुर	"	२४ १० ०	२८ ८ ०	२४ ४ ०	२१ १० ०	२३ १२ ०
१०. चिनाला							
(१)	बम्बई	हजार टन	१४ १५ ७	१५ ७ ६	१६ ६ ५	१५ १४ ६	१४ १५ ७
(२)	अमरावती	८० पींड का मन	११ ६ ४	१० ७ ३	६ १४ ४	६ २ ५	१० २ २
११. नारियल का मांस							
साधारण अमिश्रित के का	कोचिन	६५५ पींड का हैरा	१७७ ८ ०	१५ ७ ०	२५ ६ ०	४० ० ०	३२ १५ ०
१२. कायला (न)							
(१) नाना हुआ नायदा	कालाहरी मार्गिंग में पहुँचने के	मन	१५ १ ०	१५ १ ०	५ १ ०	१५ १ ०	१५ १ ०
(२) नाना हुआ	"	"	१० ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०	१६ ४ ०
(३) मंथन प्रथम भरण	"	"	१७ ८ ०	१७ ८ ०	१७ ८ ०	१७ ८ ०	१७ ८ ०
१३. चन्दा लोहक							
अमिश्रित चन्दा	विशाखापटनम	"	११० ७ ०	१४१ ४ ६	११६ १४ ४	११६ ६ ४	१०६ ७ ४

(न) निम्नित मूल्य।

के भाव : १९५४ (गत वृष्ट से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
६०आ०पा०	६०आ०पा०	६०आ०पा०	६०आ०पा०	६०आ०पा०	६०आ०पा०		
३६ ४०	३१- ४०	३१ ४०	२७ ४०	२६-१२-०	२६ ००		
२३ ११-४	२०-१५०	२२- ८०	१६ ६०	१८ २-०	१७ १-०		
२७ ४०	२४- ८०	२३- ४-०	२३- ८०	२३- ४-०	२३ ८०		
१६ १००	१७ ०-०	१७- ८०	१६- ४०	१७ ६०	१७ २०		
१६- ७०	१४- ७-०	१४- ७-०	१४ १५०	१४ १५-०	१७-१५-०		
२३-१००	२१- ४०	२२- २०	१६ १००	१६-१४०	१६ ४०		
अप्राम	४२- ००	४५ ००	२८ ०-०	३३-१२०	२८ ०-०		
२७ ०-०	२५ ०-०	२४ ०-०	२६ ००	२१- ००	१६ ०-०		
२७- ००	२४ ००	२६ ०-०	२७ ००	२६- ०-०	२७ ०-०		
अप्राम	२१- ५०	२२-१२०	२४- ४-०	२२ ६-०	२३ ८-०		
२३ १२०	अप्राम	२२ १ ५	२४- ००	२४ १०-०	२४ १०-०		
१५ ६-१	१५- ३२	१३ १३-१०	१३- ८५	१२ ४-०	१२ ५-४		
१० ४-११	अप्राम	अप्राम	अप्राम	अप्राम	अप्राम		
३२७- ८०	३००- ०-०	३१० ३-०	३२० १२०	३२३ ८-०	३२१ ६०		
१५ १२०	१५ १२०	१५ १२०	१५ १२०	१५ १२-०	१५ १२०		
१६ ४०	१६ ४०	१६ ४०	१६ ४०	१६- ४०	१६ ४०		
१७ ८०	१७ ८-०	१७ ८०	१७ ८०	१७- ८-०	१७ ८०		
१६२ ३१०	१५४ ११५	१२१ ४- ८	१४३ ०७	१३४ ०६	१४३-१-१०		

३. देश में वस्तुओं

वस्तु	बाजार	इकाई	अक्टूबर १९५४ ₹०आ०पा०	नवम्बर ₹०आ०पा०	फरवरी ₹०आ०पा०	मार्च ₹०आ०पा०	अप्रैल ₹०आ०पा०	
१४ चमड़ा, कच्चा								
(१) नमक लगा हुआ गाय का कलकत्ता		१० पीड	अप्रैल	१६ ००	१५ ००	१५ ००	१५ ००	
(२) नमक लगा गाला भैंस का कलकत्ता		१० पीड	अप्रैल	१० ००	१० ००	१० ००	१० ००	
(३) नमक लगा गाला गाय का कानपुर		काडा	२१० ००	२६० ००	२७५ ००	२७५ ००	२०५ ००	
(४) नमक लगा गाला भैंस का "		"	२० पीड	६ ११ २	६ ११ २	१० १०-८	११ ६ १	१० ५ ६
१५. खाल कच्ची								
बकरा का अंतन किस्म का कलकत्ता		१०० थान	अप्रैल	२५० ००	२५० ००	३५० ००	३५० ००	
१६. लाल								
(१) चपड़ा शुद्ध टा० एन०	"	बगाल मन	६१ ००	१०८ ००	६५ ८०	८७ ००	६१ ००	
(२) रंगन शुद्ध	"	"	१०८ ००	१२० ००	११४ ००	१०६ ८०	११२ ८०	
१७. रून्ड								
RMA IX RSS	कागधम	१०० पीड	१३३ ००	१३३ ००	१३३ ००	१३३ ००	१३३ ००	
अर्द्ध निर्मित वस्तुएं								
१ चमड़ा								
(१) गाय का चमड़ा	मद्रास	पीड	२ १५ ३	३ ० ३	३ १०	२ १५ ०	२ १४ ३	
(२) भैंस का चमड़ा	"	"	१ १५ ६	२ १ ६	२ १ ६	२ ० ६	२ ० ३	
(३) भेड़ का खालें	"	"	६ ४०	६ २०	५ १५ ०	५ ११ ०	५ ८०	
(४) बकरा का खालें	"	"	४ १० ०	४ १४ ०	४ १४ ०	४ १४ ०	४ १२ ०	
२ खनिज तेल								
(क) मिट्टी का तेल (न)								
(१) शान्दा थाक	कलकत्ता	गैलन	१० ७ ६	६ १५ ०	६ १५ ०	६ १५ ०	६ १५ ०	
(२) शान्दा थाक	"	"	१० १४ ६	१० ७ ०	१० ७ ०	१० ७ ०	१० ७ ०	
(ख) पेट्रोल (न)								
(१) थाक पम्प पर	"	गैलन	२ १० ०	२ ११ ६	२ ११ ६	२ ११ ६	२ ११ ६	
(२)	गाला	"	२ १४ ६	२ १४ ६	२ १४ ६	२ १४ ६	२ १४ ६	
(३)	मद्रास	"	१२०	२ १२०	२ १२०	२ १२०	२ १२०	
३ घनम्पति तेल								
अ नारियल का तेल								
(१) माधारंग अमिन तेल का (नगर)	बन्धान	६५४ पीड का डेन	४६५ १० ७	५१० ६०	५०५ १२५	४६५ ०७	४८० १३	
(२) बन्धान का शान्दा, मद्रास	कलकत्ता	गाला मन	७ ००	८० ००	८४ ००	७४ ००	७२ ००	
(३) गुणा	बम्बई	बन्धान	२ ८०	२६ ००	५ ४०	२३ ००	२२ ४०	

(न) नवम्बर मन्थ

के भाव : १९५४ (गत छूट से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	अक्तूबर	अक्तूबर	नम्बर	दिसम्बर
६०आ०पा०	६०आ०पा०	६०आ०पा०	६०आ०पा०	६०आ०पा०	६०आ० ११		
१५ ०-०	१५ ०-०	१५ ० ०	१५ ०-०	१५ ०-०	१५ ० ०		
१० ० ०	१० ० ०	१० ० ०	१० ०-०	१० ०-०	१० ० ०		
२४५ ०-०	२३०- ०-०	२३० ० ०	२४० ० ०	२७०- ०-०	२७० ० ०		
११- ० ७	११-११ ७	११- ०-७	११ ० ७	११ ०-७	११ ० ७		
३५० ७-०	३५० ० ०	३०० ० ०	३००- ० ७	३००- ०-०	३०० ०-०		
११५- ० ०	१३८- ०-०	१५३ ० ०	१३७ ० ०	१५६ ०-०	अप्रामा		
१२३ ० ०	१५२- ०-०	१५०- ० ०	१५६ ० ०	१६०- ०-०	अप्रामा		
१३३- ० ०	१३३ ० ०	१३३- ०-०	१३३ ० ०	१३३- ०-०	१३३- ० ०		
२-१२-३	२ १२ ३	२ १२-३	२ १२ ३	२-११-६	२ ७-६		
२- ० ०	२- ०-०	२- ०-६	२ ० ६	२- १-०	१ १५-६		
५- ८-०	५ ८-०	५ ० ०	५- ३ ०	५- ३ ०	५- ३ ०		
४ १३-०	४ १३-०	४-१२ ०	४ १४ ०	४-१४-०	५ ० ०		
६ १५-०	६-१५ ०	६ १५ ०	६ १५ ०	६-१५-०	६ १५ ०		
१० ७-०	१० ७ ०	१० ७ ०	१० ७ ०	१०- ७-०	१० ७ ०		
२ ११ ६	२-११-६	२ ११-६	२ ११ ६	२-११-६	२ ११ ६		
२ १४-६	२-१४ ६	२ १४-६	२ १४ ६	२-१४-६	२-१४-६		
२ १२-०	२ १२ ०	२ १२ ०	२ १२ ०	२ १२-०	२ १२ ०		
४८६ ५ ०	४४३ १४ ७	४५३ १ ३	४७० १ ७	४७०- १ ७	४८२ १३ १		
७२ ०-०	६६- ० ०	६६ ० ०	६४ ० ०	६४- ० ०	अप्रामा		
२१ १०-०	२१ ०-०	२१ ४ ०	२० १२ ०	२१ ८ ०	२१ ८ ०		

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएं	बाजार	इकाई	अक्टूबर १९५३	नवम्बर	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			₹०आ०पा०	₹०आ०पा०	₹०आ०पा०	₹०आ०पा०	₹०आ०पा०
ख मूँगफली का तेल							
(१) खुदरा	मद्रास	५०० लीटर का कैंडा	३३० ००	३१८ ००	३१० ००	३०८ ००	३१५ ००
(२) खुला	बम्बई	बजार	२१ ८०	१८ १००	१७ ४०	१७ २०	१८ २०
(२) खुदरा (गान बग)	कलकत्ता	बगाल मन	६३ ००	६० ००	५७ ००	५७ ००	५८ ८०
ग सरसों का तेल							
(१) खुदरा (मिल से निकलने समय)	,	,	६३ ००	७४ ८०	६६ ८०	६० ००	६३ ८०
(२)	पटना	मन	६५ ००*	७५ ००	६५ ००	५६ ००	६० ००
(२)	बालपुर	,,	५८ ००	६६ ६०	५८ ००	५४ ००	५८ ००
घ अरएडी का तेल							
(१) न० १ बणिया पाला (जहाज पर)	कलकत्ता	मन	७६ ००	७२ ००	७१ ००	६३ ००	६६ ००
(२)	मद्रास	५०० पीट की ड्रड्रा	२८५ ००	२८५ ००	२३० ००	२१० ००	२२० ००
ङ तिल का तेल							
खुला	बम्बई	बजार	अप्रैल	२० ००	१६ ८०	१८ १२०	२१ १५ १०
च अलसी का तेल							
(१) कच्चा खुदरा (मिल से निकलने समय)	कलकत्ता	,,	६१ ८०	५६ ००	५८ ००	५७ ००	५४ ००
(२)	बम्बई	बजार	१३ ८०	१६ ००	१५ ८०	१३ १२०	१४ १०
छ. खली							
(१) मूँगफली	कलकत्ता	मन	८ १२०	७ ८०	७ ८०	७ ००	७ ८०
(२) नासिक	बम्बई	१। हारव	२३ ४०	५ ८०	२७ ००	२७ ००	२४ ००
(३) तिल	,,	टन	५६० ००	३२५ ००	३२५ ००	३२५ ००	३३० ००
ज सूत (भूरे रंग का) भारतीय							
(१) १० नम्बरा	कलकत्ता	५ पीट	६ ८०	६ १००	६ १४०	६ ६०	६ १००
(२) २० ,,	,,	,,	६ ७६	८ ३०	८ ८०	८ ६०	८ १२०
(३) ४० ,,	,,	,,	१२ ०६	१२ ००	१२ ००	१२ ००	१२ ००
(४) सूत २० नम्बरा	बगलार	१ पीट	१७ १००	१६ ११०	१७ ४०	१७ ८०	१७ १००
झ नारियल की तेल							
(१) अलसी खली	कलकत्ता	६ हारव की ड्रड्रा	२६० ००	२७५ ००	२७५ ००	२७३ ५०	२७८ ५०
(२) अलसी खली	,,	,,	२६० ००	३१५ ००	३१५ ००	३१५ ००	३१५ ००

के भाव : १५६४ (गत उद्य से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
६०आ०पा०	६०आ०पा०	६०आ०पा०	६०आ०पा०	६०आ०पा०	६०आ०पा०		
३०६ ००	१६५ ००	२७२ ००	२३५ ००	२२७ ००	२२० ००		
१८ ३०	१५ ६०	१५ १२ ०	१४ ००	१४ ००	१३ १० ०		
५६ ००	४६ ००	५१ ००	४३ ८०	४३ ८०	अप्राप्त		
६७ ८०	६० ८०	६१ ८०	६४ ००	६७ ००	६७ ८०		
६८ ००	६० ००	५७ ००	६० ००	६५ ००	६१ ००		
६० ००	५४ ८०	५५ ००	५८ ८०	६४ ००	६७ ८०		
६६ ००	५६ ००	५६ ००	५३ ००	५३ ००	५५ ००		
२२७ ००	१८७ ००	२०० ००	१८० ००	१७८ ००	१८५ ००		
२१ ०२	अप्राप्त	२० ००	१६ ८०	१५ ७ ११	१४ ००		
४४ ८०	३६ ००	३६ ८०	३४ ८०	३७ ००	३६ १२०		
१५ १२०	१२ १२०	१२ १४०	१२ १२०	१३ ००	१३ २०		
८ ८०	६ ००	८ ८०	८ ००	८ ०	८ ४०		
२४ ००	२१ ००	२० ००	१६ ००	२० ००	१८ ८०		
३४० ००	३२० ००	३३० ००	३२० ००	३२५ ००	३२५ ००		
६ १००	६ १००	६ १००	६ १००	६ १००	६ ८०		
६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००	६ ००		
१२ ००	१२ ००	१२ ००	१२ ००	१२ ००	१३ ००		
१७ १२०	१८ २०	१७ १४०	१७ १४०	१७ १४०	१७ १२०		
२७० ००	२७० ००	२७० ००	२६५ ००	२८० ००	२८२ ८०		
३०३ ५०	२८५ ५०	२८० ००	२७४ ३०	३०० ००	२९० ००		

३. देश में वस्तुआ

वस्तु	वाणर	इकाई	जनवरी १९४३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
७ लाहा और दुग्ध			६००००	६००००	६००००	६००००	६००००
क नक्का लाहा (न)							
(१) फाउन्ड्री नं० १	कलकत्ता पदुचन पर	गन	१४२ ००	१६३ ००	१६२ ००	१६२ ००	१६२ ००
() लाहा नक्का	"	"	१२७ ००	१४७ ००	१४७ ००	१४७ ००	१४७ ००
ख अर्द्ध शुद्ध (न)							
फर गलान के लिये टुकड़े	कलकत्ता	"	२२६ ००	२२६ ००	२२६ ००	२२६ ००	२२६ ००
८ धातु (लाह व अविरिक)							
(१) कच्चा स्पन्डर	"	इन्च	५५ ८०	५४ ८०	५३ ८०	५३ ८०	५७ ८०
(गलाना बला) मुलायम							
(२) पतल वाला धातु-संघात	"	"	१५७ ८०	१४६ ४०	१५७ ९०	१६५ ००	१७७ ८०
(स लानर) ४" X ४"							
(३) धातु का चारों	बम्बई	"	१४६ ००	१४६ ००	१५५ ००	१५६ ००	१६० ००
(गलेरन्स)							
(४) तम्बू का चारों	"	"	१६२ ८०	१६५ ८०	२० ००	१६६ ००	२०१ ००
(इपिडन्स)							
९ लकड़ी							
गलान के गल लकड़े	बल ग्राह	गन	११ ००	११ ००	११ ००	११ ००	११ ००
५ फाउन्ड्री उमन आक	(गच्छा बादा,						
पाराध बाले	मध्य प्रदेश)						

निर्मित वस्तु

वस्तु	वाणर	इकाई	जनवरी १९४३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
१ टक्सगटल							
क जूट का माल							
टाट							
(१) १०-१२ औंस ५०"	कलकत्ता	१०० गन	४५ १००	४७ १००	४८ २००	४६ ०००	४५ १००
(२) ८ औंस ४०"			२४ १००	२७ १४०	२७ १२०	२७ ४००	२६ ०००
वारियाँ							
(१) १० टिन्स	"	१०० बोरियाँ	६ ८०	१०५ ८००	१०३ २००	१०८ ०००	१०६ ०००
(२) सा मा गा चों			६४ १२०	१०२ ०००	१०४ ८००	११२ ८००	११२ ८००
ख सूती माल							
(१) नारा कमांड का कप १	बम्बई	एक मान	१८ ३८८	१६ ३८८	१७ ३६६	१७ ३६६	१७ ३६६
१०० "५" X ३८ गज X ७ चौड़ा							
(२) नारा कमांड का कप १	दौल	२ ००	१ १२४	१ १२४	१ १२४	१ १२४	१ १२४
का कप १ ८ गज							
(३) लुग ५५८८		एक मान	२४ १५०	२४ १५०	२४ १५०	२६ २००	२६ २००
५५" - गज							
(४) नारा कमांड का कप १	"	एक बोरा	५ १४०	५ ११०	५ ११०	५ ११०	६ ६०
१०० गज ६ १६ चौड़ा							

के भाव : १९५४ (गत प्रष्ठ स आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०		
१६३ ००	१६३ ००	१६३ ००	१६३ ००	१६३ ००	१६३ ००		
१४७ ००	१४७ ००	१४७ ००	१४७ ००	१४७ ००	१४७ ००		
२८६ ००	२८६ ००	२८६ ००	२८६ ००	२८६ ००	२८६ ००		
५७ ८०	५६ ८०	५२ ८०	५३ ८०	६० ००	अभाव		
१७२ ००	१६७ ००	१६८ ००	१६३ ८०	१६० ८०	१६३ ८०		
१६४ ००	१६५ ००	१६० ००	१५६ ००	१५४ ००	१६३ ००		
२०१ ८०	२०१ ८०	१९६ ८०	१९६ ८०	२०० ००	२१६ ००		
११ ००	११ ००	११ ००	११ ००	११ ००	११ ००		
४५ १२०	४६ ४०	४७ ८०	४७ ४०	६४ ००	अभाव		
३६ २०	३७ ००	३७ ८०	३६ १२०	३८ ८०	अभाव		
११२ १४०	११३ ६०	१०६ ८०	१०४ १२०	११० ८०	अभाव		
११५ ८०	११४ ८०	१११ १२०	१०४ ८०	११५ ००	अभाव		
१७ ३६	१७ ३६	१७ ३६	१७ ३६	१७ ३६	१७ ३६		
१ १४ ७	१ १४ ७	१ १४ ७	१ १४ २	१ १४ ३	१ १४ ३		
२६ २०	२६ २०	२६ २०	२४ १५०	२४ १५०	२४ १५०		
६ ८०	६ ८०	६ ८०	६ ६०	६ ६०	६ ६०		

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएं	बाजार	इकाई	अक्टूबर १९५३	नवंबर	फरवरी	मार्च	अप्रैल
(५) रंगीन कप-कम्राज का नपना एफ० एस०-१०५	मद्रास	गज	१ ०६	१५३	१५६	१५६	१५६
(६) एम-५०१ ब्लाचु क्रिया मलमल ४८ x २०" गज	"	२० गज	१६ ४०	१६ ४०	१६ ४०	१६ ४०	१६ ४०
ग रयन और रेशम का माल							
(१) टैफेल काले २६-५०", ४-३/४ १ स ५ पौंड तक (रयन)	बम्बई	गज	० ६६	० ७०	० ८३	० ६०	० ६६
(२) डूजा (चाना रेशम)	"	५० गज का माल	२७५ ००	अप्रैल	२१० ००	३४० ००	४०० ००
५. लाइ और इस्पात से निर्मित वस्तुएं (न)							
लाइ और इस्पात का पनालादार चारों २४ गज	कलकत्ता	हडरवट	३४ ००	३४ ००	३४ ००	३४ ००	३५ ००
३ अन्य निर्मित वस्तुएं							
(क) सीमट (न)							
भारतीय (स्वास्तिका)	"	टन	८२ ६०	८२ ६०	८२ ६०	८७ ६०	८७ १५०
(ख) काच (खिडकिया का)							
(१) बग साइज ३० x २४" तक	"	१०० बग फुट	६० ००	६० ००	६० ००	६० ००	६० ००
(२) मध्यम साइज	"	"	५७ ००	५२ ००	५३ ००	५५ ००	५५ ००
(ग) कागज							
सफेद छयाड लामाड १४ पौंड और ऊपर	"	पौंड	० १०७	० १०७	० १०७	० १०७	० १०७
(घ) रासायनिक पदार्थ							
(१) फ्लुरी	"	हडरवट	१५ ००	१३ ००	१३ ००	१३ ००	१२ ००
(२) गंधक का तेजाब	"	टन	२३५ ००	२३५ ००	२३५ ००	२३५ ००	२३५ ००
(ङ) रंग							
लाल म स का सूया अमला	"	हडरवट	६० ८०	८६ ००	८६ ००	८६ ००	८६ ००

(न) लघु-तक मूल्य ।

के भाव : १९५४ (गत वृत्त से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
६०आ०पा० ० १५ ६	६०आ०पा० १ ००	६०आ०पा० १ ००	६०आ०पा० १ ००	६०आ०पा० १ ००	६०आ०पा० १ ००		
१६ ४०	१६ ४०	१६ ४०	१६ ४०	१६ ४०	१६ ४०		
० १००	० ८०	० ८०	० ८६	० ८६	० ७६		
आयात	३४० ००	३४० ००	३१५ ००	३१५ ००	३३० ००		
३५ ००	३५ ००	३५ ००	३५ ००	३५ ००	३५ ००		
८७ १५०	८७ १५०	८८ ००	८८ ५०	८८ ५०	८८ ५०		
६० ००	६५ ००	४५ ००*	४३ ००	४३ ००	४३ ००		
५५ ००	६० ००	४३ ००*	४० ००	४० ००	४० ००		
० १००	० १०७	० १०७	० १०७	० १०७	० १०७		
१३ ००	१३ ४०	१३ ४०	१३ ४०	१३ ४०	१३ ४०		
२३५ ०१	२३५ ००	२३५ ००	२३५ ००	२२० ००	२२० ००		
८६ ००	८६ ००	८६ ००	८८ ००	८८ ००	८८ ००		

*२६ ६ ५५ को समाप्त होने वाले मसाले से भारतीय बाज के मूल्यों के स्थान पर आयात किये गये बाज के मूल्य लिये गये हैं ।

व्यापारिक और औद्योगिक शब्दावली

प्रस्तुत श्रृंख में व्यापार और उद्योग क्षेत्रों के जिन विशिष्ट शब्दों का प्रयोग हुआ है उन्हें तथा उनके अंग्रेजी रूपों को पाठकों की सुविधा के लिये यहाँ दिया जाता है। ये केवल सुविधा की दृष्टि से दिये गये हैं। प्रामाणिकता की दृष्टि से इन्हें अन्तिम नहीं मान लेना चाहिये। — मम्पादक।

हिन्दी शब्द	अंग्रेजी रूप	हिन्दी शब्द	अंग्रेजी रूप
अखबारों कागज	Newspint	पटाच	Cracker
अगिना घास	Lemon Grass	पनन	Port
अस्ट	Asbestos	पक्ष	Party
अगिहरना	Agency	पूरगामी	Foregoing
अयस्क	Ore	प्रभावा होना	To come into force
अनौह	Nonferrous	प्रानदाप्त नलिया	Flourecent Tubes
आकलन	Credit	प्रलाक्षारस चत्रा सामान	Lacquer ware
उत्पत्ति स्थान	Place of Origin	प्रवृत्त	In Force
उपकरण	Equipment	प्रामाणिक	Incidental
औषधि	Drug	फ्लोरेस्पा	Flourspar
औषध	Pharmaceuticals	मनगत	Munsell
कटिका	Para	मन शिला	Realgar
कृत्रिम चरटा	Art Shellace	सुनकका	Raisin
कमकन मशीनें	Numbering Machines	माटर गाड़ी का टाका	Chassis
कमहीन	Orderless	रक्षित	Reserve
खुबर्नी	Apricot	रोगाणुनाशक	Insecticide
जमेली	Jasmin	रूपद द्वारा कोपे से निकालकर लनेवा	
चिन्नी मिट्टी	Clay	गया	Steam Filature
छात्र पद्य की खाल	k p	वकलन	Debit
जड़ी बूटी	Herbs	विनियम	Regulation
जनित्र	Generator	त्रिरक	Bleaching
कस्ता	Zinc	शहदूत	Mulberry
टसर रेशम	Tusbah Silk	संचरण	Movement
टीन	Tin	सधारण	maintaining
धतूरा	Stramonium	सविदा	Contract
धूम्रोकरण	Fumigation	सविदाकारी	Contracting
नदनलुख	Jaconet	सन	Extract
नवीकरण	Renewal	महमत	Agreed
नियम	Rule	मात्रक का चमडा	Chamois Leather
निर्वात फ्लास्क	Vacuum Flask	मात्रित	Concentrated
निष्कासन	Clearance	मुस्मा	Graphite
निक्षेप	Deposit	क्षात्र प्रणाला	Leaching Method
नीचू पाठ	Lemon grass	स्थूल सिद्धांत	Broad Principles
		हरिताल	Orpiment

परिशिष्ट

१. विदेशों में भारत सरकार के व्यापार-प्रतिनिधि ।
२. भारत में विदेशी सरकारों के व्यापार-प्रतिनिधि ।

विदेशों में भारत सरकार के व्यापार प्रतिनिधि

नाम और पता

काय क्षेत्र

यूरोप

(१) लन्दन

(१) श्री एल० आर० एम० मिड, आर्द० नो० एम०, मन्त्री (व्यापारिक), (२) डा० टी० जॉ० मेनन और (३) श्री जे० ए० शाह, ट्रिनि में मान्य डेप्युटी कमिश्नर के फस्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक)। इण्डिया हाउस आल्बर्टविच, लन्दन, टेल्यू० नो० * । तार का पता —हिक्वॉमिण्ड (HICOMIND), लन्दन।

ब्रिटेन और आयर

(२) पेरिस

श्री एम० वी० गमकट्टन, आर्द० एफ० एम, भारतवाय दूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), १५ रियु अलफ्रेड डेटॉनिक, पेरिस १६ एम (फ्रान्स) । तार का पता :—इण्डाट्रैकम (INDATRACOM), पेरिस।

फ्रान्स और नारवे

(३) जनेवा

श्री एम० मेन, आर्द० नो० एम०, भारत के इंसल जनरल, १३ रियु, चल्फोनेट, मैशन प्लाजा (दूसरी मंजिल), जनेवा (स्विटजरलैंड) । तार का पता :—कॉन्जेण्डिया (CONGENDIA) जनेवा।

स्विटजरलैंड

(४) रोम

श्री एम० एस० शाकपेट, भारतीय राजदूतावास के व्यापारिक परामर्शदाता, व्वा मीनेस्को हेन्जा ६६, रोम (इटली) । तार का पता —इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), रोम।

इटली, यूनायन आर यूरोस्लाविया

(५) वॉन

श्री वी० पी० आडरकर, जर्मनी में भारतीय राजदूतावास के मन्त्री (व्यापारिक), २६०, कोन्नेन्गर स्ट्राने, वॉन (जर्मनी) । तार का पता :—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), वॉन।

जर्मनी

(६) वायना

डा० के० नो० रामस्वामी, आग्निष्ट्या में भारत के वाइस कंसल और एम्बेसी, भारतवाय लीगेशन, १३, मेस्सरोम, वायना, १८ (आग्निष्ट्या) । तार का पता :—इण्डलीगेशन (INDLEGATION), वायना।

आग्निष्ट्या

(७) ब्रसेल्स

जेर्नीजम में भारतवाय राजदूतावास के सेक्रेटरी (व्यापारिक), ६०, एडेम्स मैजलिन स्ट्रैट, ब्रसेल्स (बेल्जियम)। तार का पता :—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), ब्रसेल्स।

बेल्जियम

(८) स्टॉकहोम

श्री पी० टी० वा नलन, भारतीय लीगेशन के व्यापारिक एम्बेसी, स्ट्रैट्टेनेन ४७४, स्टॉकहोम (स्वीडन) । तार का पता —इण्डलीगेशन (INDLEGATION), स्टॉकहोम।

स्वीडन, फिनलैंड और डेनमार्क

नाम और पता

कार्यक्षेत्र

अमेरिका

(६) न्यूयार्क

श्री ए० एस० लास, आर्ट० सी० एस०, भारत के बसल जनरल, २ ईस्ट ६४ स्ट्रीट, न्यूयार्क, २१, एन० वार्ड०। तार का पता:—कनजेषिड्या (CONGLNDIA), न्यूयार्क।

पूर्वी संयुक्तराष्ट्र अमेरिका
और क्यूबा

(१०) सेन फ्रांसिस्को

श्री एम० ए० हुसैन, आर्ट० सी० एस०, भारत के बसल जनरल, ४१७, मान्टगोमरी स्ट्रीट, सेन फ्रांसिस्को, कैलीफोर्निया।

पश्चिमी संयुक्तराष्ट्र अमेरिका

(११) वाशिंगटन

श्री एस० कृष्णामूर्ति, आइ० एफ० एस०, भारतीय दूतागम के फर्स्ट नेक्टेडंग (व्यापारिक), २१०७, मैसेचुसेट्स एवेन्यू, एन० डब्ल्यू० वाशिंगटन—८ डी० सी० (संयुक्त राष्ट्र अमेरिका)। तार का पता.—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), वाशिंगटन।

संयुक्तराष्ट्र अमेरिका और
मैक्सिको

(१२) ओटावा

श्री आर० अगजेल खान, कनाडा में भारतीय हाट कमीशन के संकट सेक्रेटरी (व्यापारिक), २००, मेकलोन स्ट्रीट, ओटावा, ओन्टारियो (कनाडा)। तार का पता:—हिचोमिण्ड (HICOMIND), ओटावा।

कनाडा

अफ्रीका और मध्यपूर्व

(१३) मोम्बासा

श्री ए० बी० थडानी, मोम्बासा में भारत सरकार के व्यापार कमिश्नर, जुबली इन्व्हेस्टमेंट्स बिल्डिंग, पी० बॉ० न० ६१४, मोम्बासा (केनिया)। तार का पता:—इण्डोक्म (INDOCOM), मोम्बासा।

पूर्वी अफ्रीका (केनिया, उगाण्डा
और टांगानिका), अन्जीबार,
उत्तरी रोडेेशिया, दक्षिणी
रोडेेशिया और न्यासालैण्ड

(१४) सिकन्दरिया

श्री रघुनाथ सिन्हा, आर्ट० एफ० एस०, मिल में भारत के बसल जनरल तथा सूडान, सीरिया साइप्रस और जार्डन में भारत सरकार के व्यापार कमिश्नर, अल-नसर बिल्डिंग, न० ५, रूय अरबि दे हसाक, अबेन्नु टि ला रेनो नाजूली, सिकन्दरिया (मिस्र)। तार का पता:—“इण्डियाकम (INDIACOM), सिकन्दरिया।

मिस्र, सूडान, सीरिया,
लेबनान, साइप्रस और ट्रान्सजार्डन

(१५) तेहरान

श्री एम० के० रे, भारतीय राजदूतागम के सहायक सेक्रेटरी (व्यापारिक), अबेन्नु शाह रजा, तेहरान (ईरान)। तार का पता:—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), तेहरान।

इरान

(१६) बगदाद

श्री जयदीश चन्द्र, भारतीय लीगेशन के मेन्टड सेक्रेटरी (व्यापारिक), ८/८, यफी-अल-दीन-इल हिली स्ट्रीट, बशीरिया, बगदाद (ईरान)। तार का पता:—इण्डेग्लोमेशन (INDLEGATION), बगदाद।

ईरान

(१७) अदन

श्री ए० एस० धन, अदन में भारत सरकार के कमिश्नर, अदन। तार का पता:—कोमिण्ड (COMIND), अदन।

अदन, ब्रिटिश सोमालीलैण्ड
और इटैलियन सोमालीलैण्ड

नाम और पता

कार्यक्षेत्र

आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड

(१८) मिडनो

आ एम० ग्री० पटेल, आइ० एफ० एम०, भारत सरकार के व्यापार कमिश्नर, प्रिंटेडिंग मिनिस्ट्रिज, ३६, ४६, माउन्ट प्लेन, सिडनी (आस्ट्रेलिया)। तार का पता.—आस्ट्रिण्ड (AUSTRIND), सिडनी।

आस्ट्रेलिया

(१९) वेलिंगटन

आ एम० केशवन, न्यूजीलैंड में भारत के हाई कमिश्नर क फर्स्ट सकेटरी (व्यापारिक), फिन्टरगर विलिडिंग, २६, विलिम स्ट्राट, वेलिंगटन, (न्यूजीलैंड)। तार का पता.—ट्रीकोमिण्ड (TRACOMIND), वलिंगटन।

न्यूजीलैंड

एशिया

(२०) टाकिया

डा० ए० एम० शुभा, जापान में भारतीय राजदूतागम क फर्स्ट सकेटरी (व्यापारिक), एम्पायर हाउस (नाइगट विलिडिंग), मारुनाची, टाकिया (जापान)। तार का पता —इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), टाकिया।

जापान

(२१) कालम्बो

श्री के० ब्रा० एफ० टारलनानी, आइ० एफ० एम०, लना में भारत के हाई कमिश्नर क फर्स्ट सकेटरी (व्यापारिक), वा० वा० न० ८६६, पोर्ट, कोलम्बा। तार का पता —ट्रेडिण्ड (TRADING), कोलम्बो।

लका

(२२) रघून

आ एम० पी० माधुर, आइ० एफ० एम०, भारत के राजदूतागम के फर्स्ट सकेटरी (व्यापारिक), रतवैरिया विलिडिंग, फायर स्ट्राट, वा० वा० न० ७५१, रघून (उमा)। तार का पता.—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), रघून।

उमा

(२३) कराची

आ एम० धान, आइ० एफ० एम०, पाकिस्तान में भारत क हाई कमिश्नर के फर्स्ट सकेटरी (व्यापारिक), चारटर्ड बैंक चैम्बर, "अजीसा महल," एम० ज० सेंपरा रोड, न्यू टाउन, कराची ५ (पश्चिमी पाकिस्तान)। तार का पता.—इण्ट्राकम (INTRACOM), कराची।

पाकिस्तान

(२४) डाका

श्री पी० दासगुप्ता, पाकिस्तान में भारत क हाई कमिश्नर क फर्स्ट सकेटरी (व्यापारिक), गोपी कृष्ण लेन, पी० आ० बागता, डारा (पूर्वी पाकिस्तान)। तार का पता —"गुडविल" (GOODWILL), डाका।

पूर्वी पाकिस्तान

(२५) मिगापुर

श्री जे० कीडलही, आइ० एफ० एम०, मलाया में भारत सरकार के प्रतिनिधि के फर्स्ट सकेटरी (व्यापारिक), इण्डिया हाउस, पी० वा० न० ८३६, मिगापुर (मलाया)। तार का पता —इण्ट्राकम (INTRACOM), मिगापुर।

मलाया

(२६) मनीला

मन्वी, व्यापारिक विभाग, भारतीय लीगेशन, ६९४ नेब्रास्का, मनीला (फिलिपाइन)। तार का पता —इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), मनीला।

फिलिपाइन

(२७) जकार्ता

आ क० वा० अमीन, आइ० एफ० एम० भारतीय राजदूतागम के फर्स्ट सकेटरी, वा० वा० न० १७८ ४४, केशुन सिटी रोड, बकाता (इण्डोनेशिया)। तार का पता —इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), जकार्ता।

इण्डोनेशिया

(२८) बैंकाक

श्री गुहथननमिद आइ० एफ० एम०, भारतीय राजदूतागम के सक्सेसिवर (व्यापारिक), बैंकाक (थाइलैंड)। तार का पता —इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), बैंकाक।

थाइलैंड

सूचना—(१) तिब्बत में निर्माणाधीन अग्रिमरी भारत के व्यापारिक हितों का रक्षण करने हैं—

१. मारटोक सिक्किम में भारतीय पार्लिमेन्टल अफसर क व्यापारिक सेक्टरेय।

२. भारत के व्यापार एजेण्ट, थातु ग (तिब्बत)।

(२) जिन देशों में अलग व्यापारिक प्रतिनिधि नही हैं, उनमें भारतीय राजदूत और कमलर अफसर भारत के व्यापारिक हितों का रक्षण करते हैं।

भारत में विदेशी सरकारों के व्यापार-प्रतिनिधि

देश	पद	पता
१. अफ़ग़ानिस्तान	भारत में शाही अफ़ग़ान राजदूतावास के आधिकारिक एटेंची।	२४, वेस्टमन रोड, नई दिल्ली।
२. अमेरिका	भारत में अमेरिकन दूतावास के आधिकारिक मामलों के कौंसिलर।	बहाकलपुर वाउस, सिकन्दरा रोड, नई दिल्ली।
३. आस्ट्रिया	भारत में आस्ट्रिया के व्यापार प्रतिनिधि।	कनांस मैगशन, वेस्टमन रोड, फोर्ट, बम्बई।
४. आस्ट्रेलिया	(१) भारत में आस्ट्रेलिया सरकार के व्यापार कमिश्नर। (२) भारत में आस्ट्रेलिया सरकार के व्यापार कमिश्नर।	मरकैंडाइल बैंक बिल्डिंग, ५२ ६६, महात्मा गांधी रोड, जनरल पो० ग्रा० ६० न० २१७, बम्बई। २, फेंडरली प्लेस, कलकत्ता।
५. इटली	भारत में इटली के राजदूतावास के व्यापारिक सकेटरी।	१७, यार्क रोड, नई दिल्ली।
६. इण्डोनेशिया	भारत में इण्डोनेशियन दूतावास के व्यापारिक कौंसिलर।	२१, कर्बन रोड, नई दिल्ली।
७. कनाडा	(१) भारत में कनाडा हाई कमिश्नर के व्यापारिक कौंसिलर। (२) भारत में कनाडा हाई कमिश्नर के व्यापारिक सकेटरी।	४, ग्रौरगवेन रोड, नई दिल्ली। ग्रेशम एग्जोटेन्स हाउस, मिट रोड, बम्बई।
८. चीन	भारत में चीनी गणतन्त्र के राजदूतावास के व्यापारिक मामलों के कौंसिलर।	जिंद हाउस, लिटन राड, नई दिल्ली।
९. चेकोस्लोवाकिया	(१) भारत में चेकोस्लोवाक राजदूतावास के व्यापारिक एटेंची। (२) भारत में चेकोस्लोवाक राजदूतावास के व्यापारिक कौंसिलर।	-५, ग्रौरगवेन राड, नई दिल्ली। हिमालय हाउस, पालटन रोड, बम्बई।
१०. जर्मनी	भारत में जर्मनी के सश्रीय गणराज्य के राजदूतावास के फुर्ट सकेटरी (व्यापारिक)।	८६, मुन्डर नगर, मथुरा रोड, नई दिल्ली।
११. जापान	भारत में जापानी दूतावास के संक्यड सकेटरी (व्यापारिक)।	४, सक्क्युन रोड, डिप्लोमैटिक एनक्लेव, नई दिल्ली।
१२. डेनमार्क	भारत में शाही डैनिश लॉगेशन के व्यापारिक कौंसिलर।	पोलो जी मैगशन, न्यू काफ पेट, बम्बई।
१३. तुर्की	भारत में तुर्की दूतावास के व्यापारिक एटेंची।	मेटन हाटल, दिल्ली।
१४. नारवे	(१) भारत में नारवे लीगेशन के व्यापारिक कौंसिलर। (२) भारत में नारवे के कंसलेट जनरल के व्यापारिक एटेंची।	५-१, मेटन होटल, दिल्ली। इम्पीरियल चेम्बर, रिजमन रोड, ग्रेलरु इस्टेट, बम्बई।
१५. नीदरलैंड	भारत में नीदरलैंड राजदूतावास के व्यापारिक एटेंची।	२६८, बाजार गेट स्टीट, बम्बई।
१६. न्यूजीलैंड	भारत में न्यूजीलैंड सरकार के व्यापार कमिश्नर।	मरकैंडाइल बैंक बिल्डिंग, कनरा मस्जिद, महात्मा गांधी रोड, बम्बई।

देश	उद्योग	पता
१७. पाकिस्तान	भारत में शक्तिमान हाट बमशुन क व्यापारिक मेकेटरा ।	शरशाह राउ मय, नद दिल्ली ।
१८. फिनलैंड	भारत में आफिशियल बरेशम क मरुट्ट मय गरा (व्यापारिक) ।	१ हुमाय राउ नद दिल्ली ।
१९. फ्रांस	भारत में भोज दूतागम व आयाक ममला क कामनर ।	२०, थिनेर कम्युनिकेशन विक्टिंग, कनाट प्लेस, नद दिल्ली—
२०. जर्मनी	भारत में रसा दमिन क व्यापारिक कामिजनर ।	कनाट प, नद राउ, नद दिल्ली ।
२१. ब्रिटेन	(१) भारत में ब्रिटेन क हाट बमशुन क आर्थिक मनाहका और (२) भारत में ब्रिटेन क ममिनर व्यापार कामिजनर । (३) कलकता में ब्रिटेन क मुख्य व्यापार कामिजनर । (४) मद्रास में ब्रिटेन क व्यापार कामिजनर ।	६, अलबूक राउ, नद दिल्ली । १, हैरिंगटन स्ट्राट, कलकता—१६ । पो० बा० न० १५०५, आरमोनिनन स्ट्रीट, मद्रास ।
२२. बेलजियम	भारत में ब्रिटेन क दूतागम क व्यापारिक कामिजनर ।	थिनेर कम्युनिकेशन विक्टिंग, कनाट प्लेस, नद दिल्ली—१ ।
२३. मिस्र	भारत में मिस्र दूतागम क व्यापारिक एजेन्स ।	कनरा न० -६ सिवम स्ट्रीट, दिल्ली ।
२४. रूमनिया	भारत में रूमनिया क व्यापारिक प्रतिनिधि ।	हॉल एमप्लाइन्स, कनरा ।
२५. रूस	भारत में रूस क व्यापारिक प्रतिनिधि ।	४, बगमक स्ट्रीट, कलकता ।
२६. लंका	भारत में लंका हाट बमशुन क व्यापारिक मेकेटरा ।	मालोन हाउस, ब्रूस स्ट्रीट, कनरा ।
२७. स्विटजरलैंड	भारत में स्विटजरलैंड क व्यापारिक कामिजनर ।	पो० बा० १००, ग्रेशम एन्ड रोसल हाउस, कनरा ।

सूचना :—जिन देशों के कलम व्यापार प्रतिनिधि नहीं हैं, उनके व्यापारिक हिता को, भारत में स्थिति उनके शान्तिपूर्ण व कलम के विकास, ध्यान में रखा है ।

भारतीय रुपये का मूल्य : विभिन्न देशों की मुद्राओं में

देश	भारतीय मुद्रा	विदेशी मुद्रा
१. पाकिस्तान	१०० रु०	= ६६ पाकिस्तानी रु० ६ आ०
२. लवा	१०० रु० ६ आ०	= १०० लका के रु०
३. बरमा	१०० रु० ४ आ०	= १०० म्यात
४. अमेरिका	४७५ रु०	= १०० डालर
५. कनाडा	४८२ रु० ११ आ०	= १०० डालर
६. मलाया	१५६ रु०	= १०० डालर
७. हांगकांग	८३ रु० ४ आ०	= १०० डालर
८. ब्रिटेन	१ रु०	= १ शि० ५-३१/३२ पैस
९. न्यूजीलैण्ड	१ रु०	= १ शि० ५-३१/३२ पैस
१०. ऑस्ट्रेलिया	१ रु०	= १ शि० १०-३/८ पैस
११. दक्षिणी अफ्रीका	१ रु०	= १ शि० ५-२५/१६ पैस
१२. पूर्वी अफ्रीका	६७ रु० २ आ०	= १०० शि०
१३. मिस्र	१३ रु० १३ आ०	= १ पीड
१४. फ्रांस	१०० रु०	= ७,३५० फ्रान्क
१५. बेल्जियम	१०० रु०	= १,०४५ फ्रान्क
१६. स्विट्जरलैंड	१०० रु०	= ६१-३/८ फ्रान्क
१७. पश्चिमी जर्मनी	१०० रु०	= ८७ ११ १६ मार्क
१८. नीदरलैंड	१०० रु०	= ७६ ११ ३२ गिल्डर
१९. नारवे	१०० रु०	= १४६ १ ४ क्रोन
२०. स्वीडन	१०० रु०	= १०८ ५ ८ क्रोनर
२१. डेनमार्क	१०० रु०	= १४५ १/१६ डेनमार्क क्रोनर
२२. इटली	१ रु०	= १३० लीरा
२३. जापान	१ रु०	= ७८ येन
२४. फिलिपाइन	२३७ रु०	= १०० पीसो
२५. ईराक	१,३३८ रु०	= १०० दीनार

(ये जिनियम दरें मई १९५४ में भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार हैं ।)

“आर्थिक समीक्षा”

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आर्थिक राजनीतिक अनुसंधान विभाग का

पाक्षिक पत्र

प्रधान सम्पादक : श्री आचार्य श्रीमन्नारायण अग्रवाल

सम्पादक : श्री हर्षदेव मालवीय

हिन्दी में अनूठा प्रयास

आर्थिक विषयों पर विचारपूर्ण लेख

आर्थिक सूचनाओं से अंतर्प्रोत

भारत के विकास में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिये अत्यावश्यक, पुस्तकालयों के लिये अनिवार्य रूप से आवश्यक ।

वार्षिक खर्च : ५ रुपये

एक प्रति का साठे बीन आने

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, ७, जन्तर मन्तर रोड,
नयी दिल्ली

उद्योग-व्यापार पत्रिका



सत्यमेव जयते

वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय, भारत सरकार,
नई दिल्ली

विज्ञान प्रगति

देश और छोटे उद्योगों के लिये मासिक अनुसंधान-समाचार-सेवा

उद्योगों पर लेख—

- मानवपणा समस्याओं का परिचय
- वैज्ञानिक साहित्य का चिन्तन
- आदिपत्तार सम्बन्धी सूचनाएँ
- पेटेन्ट विधियों के पणन
- अनुसंधान-समियों द्वारा प्रश्नों के उत्तर

देश के औद्योगिक विकास में रुचि रखने वाले व्यक्तियों के लिये आवश्यक । रेगिमेंटरल सम्पाद्यो,
इन्डो और वाचमालवों के लिये अनिवार्य

पब्लिकेशन-स डिवीजन

बो सिल ऑफ साइंटिफिक एयड इंडस्ट्रियल रिसर्च



क्रोड मिल रोड, नई दिल्ली—२

वार्षिक मूल्य १ रुपये

एक प्रति का आठ आना

★ राष्ट्रभारती ★

● सम्पादक ●

: मोहनलाल भट्ट :

: हृषीकेश शर्मा :

(१) यह हिन्दी पत्रिकाओं में सबसे अधिक सम्ती, अ्येक सुन्दर साहित्यिक और सांस्कृतिक मासिक पत्रिका है ।
(२) अिसमें ज्ञानपोषक और मनोरंजक श्रेष्ठ कविताओं, कहानियाँ, अ्येकाकी, नाटक, रेखाचित्र, और शब्द
चित्र रहते हैं । (३) बगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी, राजस्थानी, उर्दू, नगल, तेलगु कन्नड, मलयालम आदि
भारतीय भाषाओं के सुन्दर हिन्दी अनुवाद भी अिसमें रहते हैं । (४) यह प्रतिमाम १ ली तारीख को प्रकाशित
होती है । (५) वार्षिक चन्दा ६ रु०, छमाही ३।) रु०, नमूने की प्रति दस आना मात्र । आज ही प्राहक बन
जाअिये । (६) प्राहक बना देने वाला का विशेष सुविधा दी जायगी । (७) पत्र विक्री [अ्येजमी] तथा विज्ञापन
दर के लिये आज ही लिखिये ।

पता:—व्यवस्थापक, “राष्ट्रभारती”

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पो०—हिन्दीनगर (वर्धा, म० प्र०)

उद्योग व्यापार पत्रिका

ग्राहकों से निवेदन

वार्षिक चन्दा रु० ६००, एक प्रति रु० आने।

मनीआर्डर, क्रास किये बैंक अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा अपना नीचे लिखे पते पर भेजकर आप किसी भी अंक से ग्राहक बन सकते हैं।

एजेन्टों को सूचना

जो सञ्जल पत्रिका की एजेन्सी लेना चाहें वे कम्प्लायन आदि के लिये शीघ्र पत्र व्यवहार करें। एजेन्ट केवल सीमित संख्या में ही बनाने का निश्चय हुआ है। अतः इत के लिये शीघ्रता करना चाहिए।

सम्पादक,

उद्योग व्यापार पत्रिका,
वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय,
भारत सरकार, नई दिल्ली।

प्राथमिक चिकित्सा का सामान

सरकारी नियमों (फेक्टरीज् एक्ट) के अनुसार
समस्त

फेक्टरियों, कारखानों और दफ्तरों के लिये

कारखानों के दवाखानों, बालशालाओं और अस्पतालों के
सामान, उपकरणों आदि के विशेषज्ञ

दवाइयां, टिंचर, शर्वत, मरहम, इजेक्शन की औपधियां
और सब प्रकार की वी० पी० तथा वी० पी० सी०
स्टैंडर्ड दवायें बनाने वाले

प्रसिद्ध औपधि-निर्माता

कैम्प एराड कम्पनी लिमिटेड

एलफिन हाउस, परभादेवी, काठेल रोड, बम्बई २८
शाखाएं

दिल्ली :

मदरास :

कलकत्ता

हिन्दी और मराठी भाषा
में प्रकाशित होता है।

उद्यम

सर्वोपयोगी हिन्दी उद्यम
प्रतिमाह १५ तारीख को पढ़िये

धर्मपैठ, नागपुर

उद्यम में निम्न विषयों पर लेख प्रकाशित होते हैं

- ★ लाभदायक उद्योगधन्यों की व्यवहारोपयोगी जानकारी, अनाज की खेती, साग-सब्जी की बागवानी और रोगों का निवारण। पशुपालन, दुग्धव्यवसाय और ग्रामाद्योग सम्बन्धी लेख। आरोग्य, घरेलू औपधियों सम्बन्धी जानकारी।

उद्यम के स्थायी स्तम्भ

- ★ महिलाओं तथा विद्यार्थियों के लिये उपयुक्त विभिन्न रुचिकर खाद्यपदार्थ बनाने की विधियाँ। घरेलू मितव्ययता। जिज्ञासु जगत्। कृषि, औद्योगिक क्षेत्रों में काम करने वाले व्यक्तियों की मुलाकात और परिचय। नियोपयोगी वस्तुएं घर ही तैयार कीजिये।

आज ही उद्यम का वार्षिक चन्दा रु० ७ भेजकर, उद्यम मासिक मंगवाइये।

विषय सूची

विशेष लेख

	पृष्ठ
१. छोटे श्रोत्र ग्राम उद्योगों का विद्यमान	१६८
२. १९५३-५४ में रूर का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार	१७२
३. भंगालों का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार	१७६
४. नूट उद्योग का सकट टला	१८२
५. भारत में प्रतिमान निर्धारण	१८५

हमारे व्यापार प्रतिनिधियों द्वारा—

हालान्ड, हांगकांग, अमेरिका, नेपाल मन्त्रालय
आर फिजा

ज्ञानकारी विभाग

१. औद्योगिक विभाग	१६३
२. यह उद्योग	१६४
३. व्यापार की उन्नति	१६६
४. वाणिज्य व्यवस्थापन	१६७
५. व्यापार नियन्त्रण	१६७
६. वैज्ञानिक गवेषणा	१६६
७. वित्त	१७०
८. व्याघ्र व नेत्रो	१७२

पृष्ठ

६. धम	२०२
१०. फल का अनुमान	२०३
११. विधिष	२०६
ग्राफ विभाग	
१. भारत का विदेशी व्यापार	२०८
२. औद्योगिक उत्पादन—१	२०६
३. औद्योगिक उत्पादन—२	२१०
४. आयात की तुलना हुई वस्तुएँ	२११
५. निर्यात की तुलना हुई वस्तुएँ	२१२

सांख्यिकी विभाग

१. औद्योगिक उत्पादन	२१३
२. भारत का विदेशी व्यापार	२२२
३. देश में वस्तुओं के मान	२३२

व्यापारिक और औद्योगिक शब्दावली

परिशिष्ट—

१. विदेशों में भारत सरकार के व्यापार प्रतिनिधि	२४८
२. भारत में विदेशी सरकारों के व्यापार प्रतिनिधि	२५१

भारत सरकार के व्यापार और उद्योग मन्त्रालय के प्रकाशन-सम्पादक द्वारा प्रकाशित ।

सूचना :—

इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का सम्बन्ध जब तक विशेषतः स्पष्ट न लिखा जाय, भारत सरकार (अथवा उसके किसी भी मन्त्रालय से नहीं होगा ।

हरगोविन्द धरमसी

३१, मीरहा स्ट्रीट, बम्बई ३.

PHONE: 27328

CABLE: PLATEGLASS

सब तरहकी चौडाई
और रंगमें प्लेट, शीट, वायर,
गिन्ड फीगर ग्लास हमेशा
स्टॉक रखते हैं ।



स्वस्तिक मार्का के आयेने बनानेवाले

उद्योग-व्यापार पत्रिका

नवम्बर ३]

नई दिल्ली, सितम्बर १९५४

[अंक ३]

*** यदि अच्छे ढंग से चलने लगे तो गृहउद्योग देश की काया पलट कर दे सकते हैं.....

छोटे और ग्राम उद्योगों का विकास

विभिन्न राज्यों में हुई बहुमुखी प्रगति का सिंहावलोकन

विभिन्न राज्यों में अब छोटे और ग्राम उद्योगों के विकास पर विशेष वल दिया जा रहा है। जहा कदों भी इस कार्य के लिये पहले से कोई संस्था या संगठन थे, उन्हें अब नये सिरे से संगठित करके अधिक सक्रिय और लाभदायक बनाने के यत्न किये जा रहे हैं। जहा इनका अभाव था वहा नई संस्थाएं और नये संगठन चालू किये जा रहे हैं।

इन उद्योगों का विकास नरन के लिये जो नये केन्द्र खोले जा रहे हैं उनमें प्रदर्शन, शिक्षण और उत्पादन की व्यवस्था की जाती है। गानों के कारीगरों को नई विधियाँ सिखा कर उनके पुराने उद्योगों को आधुनिक ढंग का कर देन क यत्न किये जा रहे हैं।

ग्राम उद्योगों के उत्पादनों की बिक्री के लिये भी विशेष यत्न किये जा रहे हैं। इसके लिये नगरों में बिक्री-भण्डार खोले गये हैं। प्रस्तुत लेख से इस दिशा में हुई प्रगति का सन्देश में आभास मिल जाता है।



हैदराबाद में तीन सलाहकार बोर्ड

भारत सरकार न छोटे उद्योगों का प्रोत्साहित करने की जो नीति अपनाते हैं उसी के अनुसार हैदराबाद की सरकार न भी नीचे लिखे तीन सलाहकार बोर्ड बनाये हैं ---

- (१) हाथ करघा मलाहकार बोर्ड,
- (२) खादी और ग्रामोद्योग सलाहकार बोर्ड, और
- (३) दूरदर्शनी सलाहकार बोर्ड।

इन बोर्डों के अध्यक्ष नैरु नरनगी व्यक्ति बनाये गये हैं। हाथ करघा

बोर्ड न कुछ योजनाये बनानर उपस्थित कर टी है जिनमें २० उत्पादन तथा बिक्री यन्त्राधिक केन्द्रों, ६ बिक्री भण्डार और ३० खुदरा बिक्री की दुकानें खोलने की व्यवस्था की गई है। इनका उर्च अपिल भारतीय हाथ करघा बोर्ड देगा। उनी उद्योग के विनास की योजनायें भी तैयार कर ली गई है, जिन पर १६,७०,००० रु० व्यय होने का अनुमान है।

पिछली योजनायें हाथकरघा, उन और चमड़ा बमाने के उद्योगों का विनास करने के विषय में था, इनलिये निम्नाने न इनका अन्य महत्वपूर्ण ग्राम उद्योगों में सम्पन्न स्थापित करने के उद्देश्य न एक संगठित ग्रामोद्योग

उत्पन्न हुए कठिनाइयों को दूर करने की ओर विशेषतः ध्यान दिया गया है। इसमें लगे हुए बुनकरी को सहायता दी गई है। उत्पादन और बिक्री बढ़ाने तथा बुनकरी को काम देने के लिये हाथ बढ़ाया बुनकर सहकारी समितियों के द्वारा अनेक उपाय किये गये हैं। इस समय राज्य में ३० उत्पादन केन्द्र चल रहे हैं। जिलों के केन्द्रों और अन्य महत्वपूर्ण स्थानों पर बिक्री भण्डार खोले जा रहे हैं। सितम्बर १९५२ में एक हाथ करपा गवेषणा और डिप्लोमा केन्द्र चालू किया गया था जिसे विभाग अब भी चला रहा है। १९५३ में राज्य में छतौ कपड़े और कम्बल तैयार करने की ओर विशेषतः ध्यान दिया गया है। देहाती क्षेत्रों में जहा कच्चा माल उपलब्ध है, प्रदर्शन और प्रचार के ६ केन्द्र चालू किये गये हैं। कोलार के सरकारी जमी बुनाई केन्द्र में धुन्ने की मशीनें लग चुकी हैं। सारी उद्योग का विचार करने के लिये १ लाख रुपये का अनुदान दिया गया है। बरपा उद्योग का विचार करने के लिये दो योजनाएँ स्वीकृत हो चुकी हैं जिन पर ₹,१०,००० रु० व्यय होगा।

पेप्सू की योजनाएँ

योजना कमिशन के परामर्श के अनुसार पेप्सू सरकार ने छोटे उद्योगों के विकास के लिये नीचे लिखी योजनाओं में संशोधन किया है और नई योजनाएँ तैयार की हैं। इनमें यह उद्योगों पर विशेषतः जोर दिया गया है।—

संशोधित योजनाएँ :—

१. केन्द्रीय कला कौशल भण्डार
२. रेशम उत्पादन
३. यह तथा छोटे उद्योगों के लिये बिक्री भण्डार
४. हाथ बरपा विचार योजना, और
५. स्त्रियों के लिये शिक्षण तथा काम का केन्द्र

नई योजनाएँ :

१. चमड़ा उद्योग।
२. वन धुलाई और बुनाई केन्द्र।
३. रुद बतार और बुनाई केन्द्र।
४. तेल की कच्ची घाणों का उद्योग।
५. उद्योगों के लिये शैलियक सहायता की व्यवस्था।
६. कलाकौशल क्लब, और
७. शाइकिला तथा मिलार्ड की मशीनों के हिस्से बनाने का शिक्षा देने के लिये औद्योगिक म्यूज।

राजस्थान का प्रयत्न

यह उद्योग की वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने के लिये राजस्थान की सरकार ने भी विशेष ध्यान दिया है। अपने लिये उसने दिल्ली, जयपुर और जोधपुर में बिक्री भण्डार खोले हैं। राज्य में तथा राज्य के बाहर, हैदराबाद,

साचां, दिल्ली आदि स्थानों पर हुए मेले तथा प्रदर्शनियों में भी उसने इन वस्तुओं की बिक्री तथा प्रदर्शन का प्रबन्ध किया है। यह उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिये राज्य के अनेक स्थानों पर उत्पादन केन्द्र खोले गये हैं। ये केन्द्र सामूहिक योजना क्षेत्रों में स्थित हैं, जहा शिक्षण और उत्पादन कार्य दोनों ही किये जाते हैं। पुरानी विधियों में सुधार करने परीक्षण किये जाते हैं और फिर सुधरी हुई विधियाँ कारीगरों को सिखाई जाती हैं।

अलाओच्य वर्ष में ५. यह उद्योगशालाएँ भी चलती रहें। तार बुन उद्योग में बरपा उन्नति की है। १९५२ में उसके ३० नये केन्द्र चालू हुए हैं। राजस्थान में ताड़ के प्रायः २० लाख पेड़ हैं। मेड़ और उन निवास की सन्तोषजनक प्रगति और विकास हुआ। यह उद्योगों की वृद्धि वस्तुओं की राज्य में तथा बाहर अच्छी भाग हुई है। इनमें छुपे और रगे हुए कपड़े, कटाई किये हुए चमड़े के थैले और जूते, घातु की सुराहियाँ, लाख की नूदियाँ, मीनाकारी की हुई पीतल की वस्तुएँ इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

सौराष्ट्र में तीन बोर्डों की स्थापना

छोटे उद्योगों की सहायता के लिये सौराष्ट्र की सरकार ने नीचे लिखे बोर्ड स्थापित किये हैं।—

१. सौराष्ट्र लघु उद्योग (दस्तकारी बोर्ड)

२. सौराष्ट्र हाथ करपा बोर्ड, और

३. सौराष्ट्र खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड।

वाणिज्य और उद्योग मन्त्री श्री टी० टी० कृष्णामाचारी ने नाम्बर १९५३ में इन बोर्डों का उद्घाटन किया था।

सौराष्ट्र लघु उद्योग (दस्तकारी) बोर्ड—छोटे उद्योगों को नष्ट करने के लिये ५ लाख रु० निश्चित कर दिये गये हैं। नष्ट करने के नियमों का ज्ञान की जा रही है। छोटे तथा यह उद्योगों का नष्ट करने के लिये बोर्ड सरकार को मलाह देगा। छोटे उद्योगों के उत्पादन की बिक्री के लिये एक भण्डार खोलने, शिक्षण देना, गवेषणा करने तथा उन्नत विधियों को चालू करने के प्रस्ताव भारत सरकार के पास भेजे गये हैं।

सौराष्ट्र हाथ करपा बोर्ड—अपिल भारतीय हाथ करपा बोर्ड में हाथ करपा उद्योग को प्रोत्साहित करने और अपने बुनकरी को उन्नति करने का काम उठाया है। सौराष्ट्र की सरकार ने भी उद्योग मन्त्री की अध्यक्षता में एक बोर्ड बनाया है। हाथ करपा बुनकरी के लिये जो आदर्श सहकारी समितियाँ बनाने का विचार है उनका सन्धान बोर्ड ने तैयार कर लिया है। १,००० बुनकरों को सहकारी समितियाँ का अनुसर्गत ले आने के लिये नए समितियाँ बनाए जा रही हैं। अपने विचार नये करध लागने के लिये १,००० रुपया की धन का सहायता देने की योजनाएँ बनाई जा रही हैं। सहकारी समितियों के हिस्से रजिस्ट्रेशन और पूँजी रूप में प्रयोग करने के लिये बुनकरी का नष्ट देने का निश्चय किया गया है। १९५२-५३ में बुनकरी को कुल ५,०६,००० रु० की सहायता देने की योजना है।

सौराष्ट्र खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड—सौराष्ट्र में पहले एक यह उद्योग बोर्ड था। वह एक सतत-चगड़न या जिनकी और से चमड़ा

श्रीर परती १९५३ में इनमें ३,००० पीपे रोपे गये। जुलाई में शहदत के २,५०० पीपे मण्डो जिले के जमींदारों को दिये गये और धौलाडू आ के बगीचे में ५५० पीपे लगाये गये। मण्डी और सफूप के बगीचों में पैदा किये गये शहदत के २०,००० पीपे विभाग ने किसानों को दिये हैं।

कच्चे रेशम का उत्पादन— मण्डी में कोश्रों से रेशम कातने का प्रबन्ध किया गया है। सरकारी कारखाने में ४४ पौंड रेशम का धागा तैयार किया गया है। विभाग के बगीचों में ६ व्यक्तियों को नाम सिपाने के लिये नियुक्त किया गया। इन्हें काम के लिये मजदूरों की भी ढी गई। रेशम उद्योग की कच्ची शिक्षा लेने के लिये विभाग का एक एन प्रेजेंट एशमीर और मैसूर को भेजा गया है।

रेशम के कीड़े पालना— उद्योग को बनाने के लिये रेशम के काड़े पालने की योजना चालू की गई है। इसके अनुसार विभाग प्रतिवर्ष कीड़े पालने वाले १२ व्यक्तियों की भर्षापतिदा बनाने के लिये ५० ६० की सहायता देता है। इसके अतिरिक्त इन्हे उपकरण भी दिये जाते हैं। ये लोग विभाग की देखरेख में रेशम के कोड़े उत्पन्न करते हैं जिसे विभाग बीज के लिये लेता है।

विन्ध्य प्रदेश के गृह उद्योग

१९५३-५४ के आरम्भ में विन्ध्य प्रदेश में नीचे लिखी शैलियन और औद्योगिक सत्यापन चला रही थी—

- (१) शिल्प शाला (Technical Institute) रागा, विमन
- (क) लकड़ी का कारखाना,

- (ल) बुनाई का कारखाना, और
- (ग) शस तथा बेंत का कारखाना था।

- (२) ताड़ गुड़ उत्पादन और शिक्षण केन्द्र, टीकमगढ़
- (३) टरी तथा बालीन शाखा, टीकमगढ़, और
- (४) चमड़ा कमाने और उसकी चीजे बनाने वाली सरकारी सस्था रीरा।

शिल्प शाला का लकड़ी का सरकारी कारखाना व्यापारिक आधार पर चलाया जाता है। विभिन्न सरकारी विभागों की परन्तुचर मन्त्री समस्त आशयस्यता यहाँ से पूरी करने के यत्न किये जाते हैं। १९५३ में नीचे लिखी सर शास्त्री का पाला जाना स्वीकृत हुआ और आशा है कि ये शांति ही चालू हो जायगी—

- (१) हाथ के रागज रा केन्द्र उमरिया, जहा शिक्षण और उत्पादन का व्यवस्था होगी।
- (२) बुनाई केन्द्र वृन्धीपुर। यहा भी शिक्षण और उत्पादन की व्यवस्था होगी।

उपरोक्त योजनाया के अतिरिक्त विन्ध्य प्रदेश की सरकार कुछ अन्य योजनाया पर भी विचार कर रही है। मित्रियों ने शिक्षण देने का केन्द्र चलाने का भी प्रस्ताव है। सामूहिक योजना सखों में ग्रामीण कला कौशल के विकास का कार्य भी आरम्भ किया गया है। चमड़ा कमाने का एक केन्द्र, ताड़ गुड़ उत्पादन का एक केन्द्र और एक बात तथा बेंत के कामों का केन्द्र चालू किया जा चुका है।

भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय का

अंग्रेजी मासिक पत्र

दी जर्नल आफ इण्डस्ट्री एण्ड ट्रेड

पाहक बनने, विज्ञापन देने अथवा एजेन्सी लेने के लिये लिखिये :-

प्रकाशन सम्पादक, वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

दक्षिणी अमेरिका में कोकोम्ब्रपा और इक्वेडोर को छोड़ कर अन्य देशों में उपर्युक्त वस्तु। आंगोल को छोड़ कर अन्य सभी देशों में रुई का लेन भी बन्द गया। अर्जेन्टीना वीन में, पाराग्वे और कोलम्बिया का उत्पादन घटोत्तर नहीं है वरन् वर्ष में अधिक रहा।

रूस, चीन और पूर्वी यूरोप में रुई का उत्पादन बराबर चलता आ रहा है। अनुमान है कि चीन में १९५२-५४ में १०० लाख एकरट भूमि में रुई की वृद्धि जिसमें ३० लाख गाट उत्पन्न हुए। रूस में ४२.५ लाख गाट उत्पादन होने का अनुमान है, जब कि पिछले बीस वर्षों में १० लाख गाट हुए भी।

खपत भी बढ़ी

दुनिया में रुई का खपत का हल भी बरतों की आरंभ रहा। आलोच्य वर्ष में कुल खपत का अनुमान २५५ लाख गाट रहा, जब कि १९५२-५३ में २३६ लाख गाट था। इसमें से उन्नीस तथा दक्षिणी अमेरिका, एशिया, पश्चिमी यूरोप और अफ्रीका में २६६ लाख गाट की खपत हुई, जब कि रूस, चीन और पूर्वी यूरोप में ७६ लाख गाट की हुई। १९५०-५२ में यही आरंभ केवल २५६ लाख गाट और ७६ लाख गाट रहे थे। अमेरिका के अतिरिक्त अन्य देशों में १९५२-५४ में खपत १८० लाख गाट हुई जो १९५२-५३ की अपेक्षा १५ लाख गाट अथवा १० प्रतिशत अधिक है।

इस वृद्धि के सम्बन्ध में कई रोचक बातें ध्यान में रखने योग्य हैं। यह ऐसे समय में हुई जब नकली देशों में रुई की जोरदार प्रतिस्पर्धा हो रही थी। अतः हममें प्रकट होता है कि रुई नकली देशों में अधिक सफल रही है। रुई का उत्पादन भी बढ़ जाना सब वस्तुओं की खपत का रुई की स्थिति पर पुनः प्रभाव नहीं हुआ। दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि अमेरिका के अतिरिक्त अन्य देशों में भी रुई की खपत बढ़ गई है।

पश्चिमी यूरोप में भी खपत बढ़ी

पश्चिमी यूरोप में रुई का खपत गतवर्ष की अपेक्षा आलाच्य वर्ष में ६-७ लाख गाट अधिक हुई। जिनमें से कच्चा उद्योग की स्थिति सुधार गई। वहाँ १९५३-५४ में रुई की खपत का अनुमान १८.५ लाख गाट है। १९५०-५१ में बहुत अधिक खपत हुई थी और गत वर्ष बहुत कम। आलोच्य वर्ष की खपत इन दोनों के बीच में रही है।

एशिया में युद्ध के परिणामों के कारण खपत बराबर चलती रही है। पिछला तीन वर्षों में प्रतिवर्ष ७० लाख गाट में अधिक वृद्धि होती रही है। जपान में फिर कच्चा उद्योग चालू हो जाने और भारत में उच्च निर्यात विस्तार होने के कारण ही ऐसा हुआ है। जब पाकिस्तान में कच्चा निर्यात होने के बन्द हो रहे हैं। अतः वहाँ भी रुई की खपत बरती। पाकिस्तानी मिलों में कच्चा की सहाय तैयारी में रुई की और दूसरी भीषण में वहाँ ८.५ लाख गाट रुई खपत की आशा है, जो १९५२-५३ में मात्र चारों लाखों है।

भारतीय मिलों में देशी रुई

इस भारत की यह विद्यमान रुई है कि उनमें कपड़ा मिलों में भारतीय रुई की आर्थिकता पर्याप्त है उपयोग करने का प्रयत्न किया है। इसका कारण यह है कि अब भारत में भी लाने देखे की अर्थी रुई उपलब्ध लगी है। साथ ही रुई का क्षेत्र और उपज भी बढ़ गई है।

कुछ प्रमुख वस्तुओं में भारत में खपत प्रकार रुई की खपत हुई है उनके आरंभ होने के दिनों में हैं :-

(४०० पीट वाली लाख गाटों में)

वर्ष	भारतीय रुई	पाकिस्तानी रुई	अन्य देशी की रुई	योग
१९४२-४३	३०३	१३६	४७	४८६
१९४४-४५	२६६	१२५	६५	४५६
१९४५-४६	२७०	१२६	६०	४६६
१९४७-४८†	२८६	७२	६३	४२१
१९४९-५०	२५२	०२	१०६	३६०
१९५१-५२	२६६	नगण्य	८६	३५२
१९५२-५३	३६७	नगण्य	८५	४५६
१९५३-५४†	४६५	नगण्य	३४	५००

† १९४७-४८ में पहले अतिरिक्त भारत के आरंभ में।

† केवल ६ महीने।

दक्षिणी अमेरिका के देशों में रुई की कुल खपत १९५१-५२ के बराबर हो जान की आशा है। इसका कारण यह है कि अर्जेन्टीना में कच्चा उद्योग की वृद्धि अब सुधार गई है। इन देशों में खपत में १ लाख गाट की वृद्धि हो जायगी जिसमें मात्र १६ लाख गाट हो जायगी।

महाद्वीप के अनुमान १९५३-५४ में खपत का हल नहीं की ताकिता में प्रकट होता है :-

महाद्वीप	१९५१-५२	१९५२-५३	१९५३-५४
		(लाख गाटों)	
उत्तरी अमेरिका	६६	१०२	६०
पश्चिमी यूरोप	६८	६५	७२
एशिया	६५	७८	८०
दक्षिणी अमेरिका	१६	१५	१६
अफ्रीका	४	५	५
योग	२५०	२५६	२६६
रूस	२८	३१	३२
चीन	३१	३०	३५
पूर्वी यूरोप	१८	१९	१३
संसार का योग	३२३	३२५	३५५

रुई का स्टाक

हाल के वर्षों में समार में रुई, खत की अपेक्षा पैदा अधिक हुई है। अतः उसके स्टाक बढ़ते जा रहे हैं। १९५२-५३ के मौसम में रुई का निर्यात करने वाले देशों में स्टाक ३१ लाख गाट की वृद्धि होकर १०५ लाख गाट हो गया था। अर्थात् गन्ने वाले देशों में स्टाक घटकर १० लाख गाट रह गया था। यह इतना कम बहुत वर्षों बाद हुआ है। विषयवस्तु में रुई के भाव के रुत चले हुए हैं। इसी कारण अयात करने वाले देशों में रुई का अचिन्त स्टाक नहीं मिला। १९५३-५४ में भी यही रुत बना रहा जैसा कि नीचे की तालिका से प्रकट होता है। —

क्षेत्र	१९५१	१९५२-	१९५२	१९५४
	५२	५३	५४	५५
	(लाख गाटों)			
अमेरिका	०३	२८	५६	६६
अयात करने वाले अन्य देश	२७	४४	४८	३१
निर्यात करने वाले देशों का योग	५०	७२	१०४	१३०
अयात करने वाले देशों का योग	५७	६३	५१	५०
योग	१०७	१३२	१५५	१८०

† इनमें रुम चीन और पूर्वी यूरोप के आकड़े शामिल नहीं हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि

१९५३-५४ में रुई के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भी वृद्धि हो गई। इसका अनुमान ११५ लाख गाट है, जब कि १९५२-५३ में यह १०६ लाख गाट रहा था। अर्थात् करने वाले देशों में रुई की खपत बढ़ जाने के कारण ही यह ६ लाख गाट की वृद्धि हुई है। अमेरिका के बाहर (रूस और चीन को छोड़ कर) रुई का कुल निर्यात प्रायः ८० लाख गाट का ही हुआ, जबकि पिछले मौसम में ७६ लाख गाट का ही हुआ था। इस वर्ष ब्राजील से फिर रुई का निर्यात होने लगा। भाव मंदा होने के कारण ब्राजील से काफी निर्यात हुआ। १९५३-५४ में दसवां अनुमान १२५ से लेकर १५ लाख गाट तक का है, जबकि पिछले मौसम में यह नगण्य था। पाकिस्तान में खपत बढ़ जाने और उत्पादन घट जाने के कारण निर्यात के लिये बहुत कम रुई रह जाती है। इस मौसम में मिस्र, तुर्कान, युगाटा और पीछे से मिस्त्री रिसम की रुई भी भारी मात्रा हुई।

इस वर्ष के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को एक विशेषता यह भी रही कि

युद्ध के बाद पहली बार रूस अब पुनः निर्यातक के रूप में मैदान में आ गया है। उसने लगभग १६ लाख गाट यूरोपीय देशों को भेजा है। अभी कह नहीं सकते कि रूस आगे इन देशों को और अधिक रुई भेजेगा परन्तु लक्ष्य कुछ ऐसे ही लगते हैं।

अयात के स्रोतों में परिवर्तन

इस वर्ष समार के मुख्य रुई अयातक देश जिन देशों से रुई का अयात करते हैं उनमें उल्लेखनीय परिवर्तन हो गये। जिनमें नए फिर मिस्र और तुर्कान से पहले के समान माल परीक्षण आरम्भ कर दिया। इसके अतिरिक्त ब्राजील ने भी अपने काफी रुई ली है। डालर क्षेत्र से अपने कम रुई मगाई। भारत ने अमेरिका से गत वर्ष की अपेक्षा बहुत कम रुई मगाई। पूरु अरबीया से भी कम अयात हुआ। परन्तु मिस्र और तुर्कान ने अग्रिम रुई मगाई। पश्चिमी जर्मनी ने रुई पैदा करने वाले छोटे देशों से अधिक माल मगाना आरम्भ किया है। यूरोप के कुछ रुई अयातक देशों ने अरबीया में रुई की खरीद बढ़ाने के प्रयत्न किये जिससे उन्हें बहा से अग्रिम परिमाण में रुई मिल सके। १९५३-५४ में रुई अयातक तथा निर्यातक देशों के बीच बहुत से समझौते हुए। नकली रामायनिक देशों के प्रयोग पर बल दिये जाने के कारण भी रुई के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर प्रभाव पड़ा है। उदाहरण के लिये जापान रामायनिक देशों का चलन बढ़ाने के लिये रुई की खपत को सीमित कर देने के विषय में विचार कर रहा है। पश्चिमी यूरोप के कुछ देशों के विषय में भी ऐसा ही हो रहा है।

क्षेत्र कम हो जाने पर भी उपज बढ़ जाने की आशा से अल्लोच्य वर्ष के आरम्भ में समार के रुई बाजारों का गिरता हुआ चल रहा शीघ्र ही यह भी प्रकट हो गया कि क्षेत्र कम हो जाने पर भी अमेरिका का उत्पादन अधिक होगा। साथ ही इस आशय के समाचार भी मिलने लगे कि अन्य देशों में भी फलन की हालत अच्छी है। इससे भी आरम्भ में भाव गिरे। अमेरिका में माधुर्य, भाव बहुत कम घटे बड़े। परन्तु अमेरिका से जाहर उमदी मध्यम दर्जे की रुई के भावों में मौसम के समय काफी परिवर्तन हुए। गैर डालर क्षेत्र में पाकिस्तान और तुर्कान के भावों में विशेष परिवर्तन हुए। अन्य देशों में बहुत थोड़ा वृद्धि हुई।

१९५३-५४ की एक विशेषता यह भी रही कि विभिन्न देशों में रुई के भाव अमेरिकन भावों के आधार पर चले। मिस्र ने अपनी १९५२-५३ की नीति में अपनी रुई के भाव न्यूयार्क के भावों के आधार पर ही निश्चित किये। न्यूयार्क के भावों से मिस्र में कारक रुई के भाव ३० प्रतिशत और अरबीया के ५ प्रतिशत अधिक रहे। ब्राजील ने भी निदेशों के हाथ अपनी रुई बेचने का आधार न्यूयार्क का भाव ही चुना है।

दक्षिणी अमेरिका में कोलांबिया और इक्वेडोर को छोड़ कर अन्य देशों में उपज बट गई। ब्राजील को छोड़ कर अन्य सभी देशों में रुई का क्षेत्र भी बट गया। अर्जेंटीना, पारू में, पापुगुए और कोलांबिया का उत्पादन युद्धोत्तर वर्षों में इस वर्ष तक में अधिक रहा।

रूस, चीन और पूर्वी यूरोप में रुई का उत्पादन बराबर बढ़ता जा रहा है। अनुमान है कि चीन में १९५२-५४ में १०० लाख एक्ट भूमि में रुई बोध क्षमता २० लाख गाठ उपजने हुए। रूस में ५२.५ लाख गाठ उत्पादन होने का अनुमान है, जब कि पिछले मौसम में ४० लाख गाठ हुए थे।

खपत भी बढ़ी

दुनिया में रुई का खपत का दखल भी बढ़ता जा और रहा। आलोच्य वर्ष में कुल खपत का अनुमान ३५५ लाख गाठ रहा, जब कि १९५२-५३ में ३२५ लाख गाठ था। इसमें नै उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका, एशिया, पश्चिमी यूरोप और अफ्रीका में २६६ लाख गाठ की खपत हुई। जब कि रूस, चीन और पूर्वी यूरोप में ७६ लाख गाठ की हुई। १९५२-५३ में यहाँ आरंभ के क्रमशः २५६ लाख गाठ और ७६ लाख गाठ रहे थे। अमेरिका के अतिरिक्त अन्य देशों में १९५२-५४ में खपत १८० लाख गाठ हुए जो १९५२-५३ की अपेक्षा १५ लाख गाठ अर्थात् १० प्रतिशत अधिक है।

इस वृद्धि के सम्बन्ध में कई रोचक बातें ध्यान में रखने योग्य हैं। यह ऐसे समय में हुई जब नकली रेशों से रुई को जोरदार प्रतिस्पर्धा हो रही थी। अतः इससे प्रकट होता है कि रुई नकली रेशों से अधिक सफल रही है। रुई का उत्पादन भी बढ़ जाने से बढ़ी हुई खपत का रुई की स्थिति पर बुरा प्रभाव नहीं हुआ। दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि अमेरिका के अतिरिक्त अन्य देशों में भी रुई की खपत बट गई है।

पश्चिमी यूरोप में भी खपत बढ़ी

पश्चिमी यूरोप में रुई की खपत मतवर्ष की अपेक्षा आलोच्य वर्ष में ६-७ लाख गाठ अधिक हुए। ग्रेट ब्रिटेन में कपड़ा उद्योग की स्थिति सुधर गई। वहाँ १९५३-५४ में रुई की खपत का अनुमान ६८५ लाख गाठ है। १९५०-५१ में बहुत अधिक खपत हुई थी और गाठ बच बटुन कम। आलोच्य वर्ष की खपत इन दोनों के बीच में रही है।

एशिया में मुक्त के पश्चात् रुई की खपत बराबर बढ़ती रही है। पिछला तीन फसला में प्रतिवर्ष ७५ लाख गाठ में अधिक वृद्धि होनी रही है। जापान में फिर कपड़ा उद्योग चालू हो जात और भारत में उपजा निरन्तर विस्तार होत के कारण ही ऐसा हुआ है। अब पाकिस्तान में कपड़ा तैयार होने के दिन हो रहे हैं। अतः वहाँ भी रुई की खपत बढ़ेगी। पाकिस्तानी मिलों में कपड़ा की मशीन तेजी से बट रही है और इसी मौसम में वहाँ ५.५ लाख गाठ रुई खपत की आशा है, जो १९५०-५३ में मात्र दुगुनी होगी।

भारतीय मिलों में देशी रुई

इसका भारत की यह विशेषता रही है कि उसके कपड़ा मिलों में भारतीय रुई को आधिकारिक परिमाण में उपयोग करने का प्रयत्न किया है। इसका कारण यह है कि अब भारत में भी लम्बे रेशों की अच्छी रुई उपजने लगी है। साथ ही रुई का क्षेत्र और उपज भी बट गई है।

कुछ प्रमुख वर्षों में भारत में जिस प्रकार रुई की खपत हुई है उसके आकड़े नीचे दिये गये हैं :-

(४०० पोत वाली लाख गाठों में)

फसल	भारतीय रुई	पाकिस्तानी रुई	अन्य देशों की रुई	योग
१९४४-४३	३०३	१३.६	४७	४८६
१९४५-४५	२६.६	१२.५	६.५	४८.६
१९४५-४६	२७०	१२.६	६०	४६.६
१९४७-४८	२८६	७.२	६.२	४२.३
१९४८-४९	२५.२	०.२	१०.६	२६.३
१९५१-५२	२६.६	नगण्य	१०८	५०.७
१९५२-५३	३६.१	नगण्य	८.५	४४.६
१९५३-५४	१६.५	नगण्य	३.४	२२.६

† १९४७-४८ में पहले अविभाजित भारत के आकड़े हैं।

† केवल ६ मिलों।

दक्षिणी अमेरिका के देशों में रुई की कुल खपत १९५१-५२ के बराबर हो जाने की आशा है। इसका कारण यह है कि अर्जेंटीना में कपड़ा उद्योग की दशा अत्यन्त सुधर गई है। इन देशों में खपत में १ लाख गाठ की वृद्धि हो जायगी जिससे मात्र बटकर १६ लाख गाठ हो जायगी।

महाद्विपोक अनुसार १९५३-५४ में खपत का दखल नीचे की तालिका में प्रकट होता है :-

महाद्विपोक	१९५१-५२	१९५२-५३	१९५३-५४
		(लाख गाठों)	
उत्तरी अमेरिका	६६	१०२	६७
पश्चिमी यूरोप	६८	६५	७२
एशिया	६५	७०	८०
दक्षिणी अमेरिका	१६	५५	५६
अफ्रीका	४	५	५
योग	२५२	२५६	२६६
रूस	६८	३१	३२
चीन	३१	३०	३४
पूर्वी यूरोप	१०	१३	१४
संसार का योग	२२३	२१५	२५५

रुई का स्टाक

हाल के वर्षों में समार में रुई, खपत को अपेक्षा पैदा अधिक हुई है। अतः उसके स्टाक बढ़ते जा रहे हैं। १९५२-५३ के मौसम में रुई का निर्यात करने वाले देशों में स्टाक ३१ लाख गाठ की वृद्धि होकर १०४ लाख गाठ हो गया था। आयात करने वाले देशों में स्टाक घटकर १० लाख गाठ रह गया था। यह रकना कम बहुत वर्षों बाद हुआ है। निरवसर में रुई के भाव के रूप चलेते हुए रहे। इसी कारण आयात करने वाले देशों में रुई का अधिक स्टाक नहीं मिला। १९५३-५४ में भी यही चल रहा जाँता कि नीचे की ताकिता से प्रसन्न होता है। —

देश	१९५१	१९५२-	१९५३	१९५४
	५२	५३	५४	५५
(लाख गाठों)				
अमेरिका	०३	२८	५६	६६
आयात करने वाले अन्य देश	२७	४४	४८	३१
निर्यात करने वाले देशों का योग	५०	७२	१०४	१३०
आयात करने वाले देशों का योग	५७	६१	५१	५०
योग †	१०७	१३३	१५५	१८०

† इनमें रूस चीन और पूर्वी यूरोप के आकड़े शामिल नहीं हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि

१९५३-५४ में रुई के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भी वृद्धि हो गई। इसका अनुमान १६५ लाख गाठ है, जब कि १९५२-५३ में यह १०६ लाख गाठ रहा था। आयात करने वाले देशों में रुई की खपत बढ़ जाने के कारण ही यह ६ लाख गाठ की वृद्धि हुई है। अमेरिका के बाहर (रूस और चीन को छोड़ कर) रुई का कुल निर्यात प्रायः ८० लाख गाठ का ही हुआ, जबकि पिछले मौसम में ७६ लाख गाठ का ही हुआ था। इस वर्ष ब्राजील से फिर रुई का निर्यात होने लगा। भाव नस्ता होने के कारण ब्राजील से काफी निर्यात हुआ। १९५३-५४ में इसका अनुमान १२५ से लेकर १५ लाख गाठ तक का है, जबकि पिछले मौसम में यह नगण्य था। पाकिस्तान में खपत बढ़ जाने और उत्पादन घट जाने के कारण निर्यात के लिये बहुत कम रुई रह जाती है। इस मौसम में मिस्र, तुर्कान, युगाडा और पिरू में मिस्री रिसस की रुई की माँग नाग हुई।

इस वर्ष के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की एक विशेषता यह भी रही कि

युद्ध के बाद पहली बार रूस अब पुनः निर्यातक के रूप में मैदान में आ गया है। उसने लगभग १.२ लाख गाठ यूरोपीय देशों को भेजी है। अभी कह नहीं सकते कि रूस आगे इन देशों को और अधिक रुई भेजेगा परन्तु लक्ष्य कुछ ऐसे ही लगते हैं।

आयात के स्रोतों में परिवर्तन

इस वर्ष सप्ताह के मुख्य रुई आयातक देश जिन देशों से रुई का आयात करते हैं उनमें उल्लेखनीय परिवर्तन हो गये। ब्रिटेन ने फिर मिस्र और तुर्कान में पहले के समान माल जरीदना आरम्भ कर दिया। इसके अतिरिक्त ब्राजील से भी अपने काफी रुई ली है। डालर क्षेत्र से अपने कम रुई मगाई। भारत ने अमेरिका में गत वर्ष की अपेक्षा बहुत कम रुई मगाई। पूर्वी अफ्रीका से भी कम आयात हुआ। परन्तु मिस्र और तुर्कान में अधिक रुई मगाई। पश्चिमी जर्मनी ने रुई पैदा करने वाले छोटे देशों में अधिक माल मगाना आरम्भ किया है। यूरोप के कुछ रुई आयातक देशों ने अफ्रीका से रुई की जेती बढाने के प्रयत्न किये जिससे उन्हें वहाँ से अधिक परिमाण में रुई मिल सके। १९५३-५४ में रुई आयातक तथा निर्यातक देशों के बीच बहुत से समझौते हुए। नवली रासायनिक देशों के प्रयोग पर बल दिये जाने के कारण भी रुई के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर प्रभाव पड़ा है। उदाहरण के लिये जापान रासायनिक देशों का चलन बढ़ाने के लिये रुई की खपत को सीमित कर देने के विषय में विचार कर रहा है। पश्चिम में यूरोप के कुछ देशों के विषय में भी ऐसा ही हो रहा है।

चेन कम हो जाने पर भी उपज बढ़ जाने की आशा से आलोच्य वर्ष के आरम्भ में सप्ताह के रुई बाजारों का गिरता हुआ रक्त रहा शीघ्र ही यह भी प्रयत्न हो गया कि क्षेत्र कम हो जाने पर भी अमेरिका का उत्पादन अधिक होना। साथ ही इस आशय के मन्त्राचार भी मिलते लगे कि अन्य देशों में भी फसल की हालत अच्छी है। इससे भी आरम्भ में भाव गिरे। अमेरिका ने साधारणतः भाव बहुत कम घटे बडे। परन्तु अमेरिका से बाहर उत्तर की मध्यम दर्जे की रुई के भावों में मौसम के समय काफी परिवर्तन हुए। गैर डालर क्षेत्र में पाकिस्तान और तुर्कान के भावों में विशेष परिवर्तन हुए। अन्य देशों में बहुत थोड़ी वृद्धि हुई।

१९५३-५४ की एक विशेषता यह भी रही कि विभिन्न देशों में रुई के भाव अमेरिकन भावों के आधार पर चले। मिस्र ने अपनी १९५२-५३ की नीति में अपनी रुई के भाव न्यूयार्क के सौदों के आधार पर ही निश्चित किये। न्यूयार्क के भावों से मिस्र में कारतक रुई के भाव ३० प्रतिशत और अफ्रीकी के ५ प्रतिशत अधिक रहे। ब्राजील ने भी विदेशों के हाथ अपनी रुई बेचने का आधार न्यूयार्क का भाव ही चुना है।

१९५२ में निर्यात

★ काली मिर्च ४,७७,००० हज़ारवेट

★ लौंग १,५८,००० हज़ारवेट

★ सोंठ १,३०,००० हज़ारवेट

मसालों का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार

काली मिर्च, लौंग और सोंठ की महत्वपूर्ण स्थिति

चौ तो मसाले सभी उपयोगी होते हैं परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में काली मिर्च, लौंग और सोंठ का विशेष स्थान है। ब्रिटिश राष्ट्र-मण्डल की अर्थ सभिति न वगीचों में होने वाले उत्पादनों के विषय में १९५३ की जो रिपोर्ट प्रकाशित की है उसमें मसालों के व्यापार का सुन्दर विवेचन किया गया है।

रिपोर्ट के अनुसार १९५२ में काली मिर्च का शुद्ध निर्यात ५,७५,००० हज़ारवेट हुआ, जहाँ की गत वर्ष यह ४,०६,००० हज़ारवेट हुआ था। लौंग का शुद्ध निर्यात ३,८०,००० हज़ारवेट न घटकर १,५८,००० हज़ारवेट रह गया। सोंठ का निर्यात भा १,५६,००० हज़ारवेट न घट कर १,३०,००० हज़ारवेट रह गया।

आशा है मसालों के व्यापार की यह जानकारी हमारे व्यापारी वर्ग के लिये उपयोगी सिद्ध होगी।

गोल मिर्च का भारत सबसे बड़ा उत्पादक

गोल मिर्च एक जेन न मुच्छिन्ना के रूप में लगती है। नू नल दक्षिण अण्ड, लका और मलाना में बहुत उपजती है। उनके अनिरीक इन्फेनिशिया, हिन्मन्त और सराप्रक में जो नू शोध जाती है। नू नो किम्म को होता - (१) काला और (-) सवेन। मुच्छिन्ना माषामयन नू हरु होता है अथवा उनका रंग नडगन नगता है तभी उन्हें तीव्र जिवा जाता है। इनमें परे फना नो अणग करने मात आठ दिन तक पानी में डाल रखते हैं अथवा नू नू एक और उनका डेर लगा रखते ह। सब दमक गुण सुनामन पन जाता ह तो उसे मयल डालते हैं। सुश काफ करने पर उसमें नाते में जो गुटलिया निकल आती हैं नहा सूचन पर सवेन गोल मिर्च कहलाती है। काली मिर्च बनान के लिये सब प्रकार की मुच्छिन्ना का डेर लगा जिवा जाता है। चार दिन पटो रहने के बाद इनमें जो हरे फल होने हैं उनका गुना नः सुनामन पट जाता है। यदि का रम निचोड कर निशान दिना जाता है और फिर मुच्छिन्नों को धूप में सुखने के लिये फैना डिवा जाता है। जब यह सूज कर कण और काणों पर जाती हैं तो काली मिर्च कहलाती है।

अधिकारा क्षेत्रों में काली मिर्च की नो फमर्से होती हैं। इनमें बडी फमन अणतल का कितम्बर में और ह्योग भर्च अणपल अणैल में होती है। परन्तु मिर्च लैवार करने का काम बर्ष नर चलता रहता है। नाग में लम्बा काली मिर्च और जावा मेंनी काला मिर्च भी पैदा होती है। परन्तु अधिक न होने के कारण इनका निचान नहा होता और अधिकारा में स्थानाव निनाखी ही उन्हें अरने काम में ले आते है। काली मिर्च का वृण नः नः नाग मास का मरदण करने और टिक्काण्ड करने में काम आ जाता है। इस कार्य के लिये अनेरिका में दमकी नारी माग होती है।

गोल मिर्च का उपागन अधिकतर दक्षिण पूर्वी एशिया में ही होता है। यदा उपान्त का अधिकार हो जाने पर इस भारी पनका लगा था। गोल मिर्च की जेन तीव्र में लेखर पाव नर तन में करने लगती है।

सुद्ध में पदने दःकोनेशिया में १० से लेखर १५ लाख हज़ारवेट तक गोल मिर्च प्रतिवर्ष पैदा होती थी। सुद्ध के बाद सबसे अधिक, अर्थात् १,६०,००० हज़ारवेट १९५० में हुई। १९५१ में इसका उत्पादन पट कर ६५,००० हज़ारवेट रह गया परन्तु १९५० में यह १५० हज़ारवेट

१,००,००० हड़वेट हो गया। सरावक में गोल मिर्च की खेती का क्षेत्र १६४६ में फिर युद्ध से पहले के बराबर हो गया। भाव चढ़ जाने से अगले वर्ष इसकी खेती में और नो विस्तार हुआ। फल में श्रीमारी लगने और बाड आने पर भी कुल उपज १६५१ की अपेक्षा अधिक रही। हिन्दूचीन में युद्ध के बाद यह युद्ध, उपद्रव आदि होने के अतिरिक्त पौधो में रोग भी फैल गया, जिसके कारण उपज घटकर केवल २४,००० हड़वेट के लगभग रह गई, जबकि युद्ध के पहले वह ८०,००० हड़वेट थी। बाद को इसमें और भी कमी होती रही।

युद्ध के बाद इण्डोनेशिया के बदले भारत गोल मिर्च का सबसे बड़ा उत्पादक देश बन गया है। यहाँ १९५०-५१ में १,६७,००० एकड़ क्षेत्र में ६,१०,००० हड़वेट गोल मिर्च उत्पादन हुई। १९५१-५२ में क्षेत्र बढ़कर २,०२,००० एकड़ हुआ परन्तु उत्पादन घट कर ४,६०,००० हड़वेट ही रह गया। इसका कारण मौसम की प्रतिकूलता थी। १९५२-५३ से क्षेत्र २,०३,००० एकड़ रहा और उत्पादन ४,३०,००० हड़वेट हो गया।

युद्ध के बाद गोल मिर्च का व्यापार

युद्ध के बाद विश्वभर में गोल मिर्च का जितना व्यापार हुआ वह युद्ध से पहले की अपेक्षा आधे से भी कम है। भारत युद्ध से पहले गोल मिर्च का आयात करता था। परन्तु युद्ध के बाद वह उसका मारी निर्यात करने लगा है। १९५० में तो कुल उपज का लगभग आधा भाग निर्यात कर दिया गया। १९५१ और १९५२ में निर्यात में कमी हो गई। इसका कारण अमेरिका को कम माल भेजा जाना था। १९५१ में इण्डोनेशिया का निर्यात भी बहुत कम हो गया था। परन्तु १९५२ में वह बढ़कर लगभग १६५० के बराबर हो गया। सरावक का निर्यात १९५१ में बड़ा और १९५२ में बढ़कर ८०,००० हड़वेट रह गया। यह युद्ध से पहले की अपेक्षा अधिक और केवल १६३४ से ही कम था। दूसरी ओर हिन्दूचीन का निर्यात युद्ध से पहले की अपेक्षा कम ही बना रहा।

मलाया से अधिकांश में इण्डोनेशिया और सरावक से आयात हुआ माल ही निर्यात होता है। १९५२ में सरावक से अधिक माल आ जाने के कारण मलाया का निर्यात भी बढ़ गया। नीचे की तालिका से गोल मिर्च के व्यापार का रूपा प्रकट होता है। (हजार हड़वेट)

देश	१९३७	१९३८	१९५०	१९५१	१९५२
निर्यात					
मलाया ...	२१४	१५३	७७	६६	६३
सरावक ..	४३	६०	६	२४	८०
भारत .	२६	१४	३०८	२६८	४६
ब्रिटेन	१४	२७	१७	१०	२७
इण्डोनेशिया	६११	१,०७३	१४१	६६	१३६
हिन्दूचीन ...	७६	१०६	२०	१३	८
अमेरिका	१०	२३	६	१	१
मैडागास्कर ..	२	४	५	७	८
योग ..	६६६	१,४६३	५८०	४८७	५६६
शुद्ध निर्यात ...	७५२	१,२४६	४८५	४०६	४७७

देश	१९३७	१९३८	१९५०	१९५१	१९५२
आयात					
मलाया .	१६८	१६०	७१	६६	६०
ब्रिटेन	८६	६६	३६	४७	५७
भारत	२२	२४	१	२	४
बनाहा	१५	१७	१६	१६	१५
आस्ट्रेलिया ..			८	६	७
अमेरिका	३०६	५१६	२६६	२१६	२५६
जर्मनी	११४	८८	२८	२६	३२
फ्रान्स	५२	५०	२६	२६	२८
इटली	४२	३०	१६	१०	१७
चीन ...	२७	३६
अर्जेन्टायना ..	१७	१३	१	५	४
मिक्स	१५	१५	४	३	३
नीदरलैण्ड ...	१३	८	३	२	३
श्रीलंका	६	२१	१३
ईरान .	११	६	५	४	२
स्वीडन ..	१३	१५	४	५	६
योग ...	६४४	१,०५०	५३०	४५८	५३७

भारतीय गोल मिर्च का सबसे बड़ा खरीदार अब भी अमेरिका के बाद ब्रिटेन ही है। कुछ वर्षों में सोवियत रूस ने भी काफी माल लिया है। इण्डोनेशिया से अमेरिका, नीदरलैण्ड और जर्मनी को १९५२ में कुछ अधिक माल भेजा गया, परन्तु पुनर्निर्यात के लिए मलाया को कम माल भेजा गया। मलाया से जो निर्यात हुआ वह अमेरिका और ब्रिटेन को अधिक परिमाण में गया। यूरोप में नीदरलैण्ड के बदले सुएयत जर्मनी को माल भेजा गया।

१९५२ में ब्रिटेन में ५७,००० हड़वेट गोल मिर्च मगार्द गई जो १९४६ की अपेक्षा अधिक थी। परन्तु युद्ध से पहले की अपेक्षा वह अब भी दो तिहाई थी। १९५२ में ब्रिटेन ने आयात कम किया परन्तु पुनर्निर्यात अधिक किया।

देशों के अनुसार गोल मिर्च का व्यापार नीचे की तालिका में दिया गया है :—

१९६२ में जंजीवार से अन्य सब देशों को तो बहुत कम माल भेजा गया परन्तु मलाया को इस वर्ष भी बहुत भेजा गया। भारत ने इस वर्ष कोई माल नहीं भेजा था जबकि १९६० और १९६१ दोनों ही वर्षों में २०,००० हज़ारवेट से अधिक भेजा था।

इण्डोनेशिया को भी कम माल भेजा गया परन्तु अमेरिका को दुगुना माल भेजा गया। १९५२ में मैडामास्कर से सभी देशों को १९५१ की अपेक्षा कम माल भेजा गया। मलाया को तो अपेक्षाकृत सबसे कम भेजा गया। यह १,१७,००० हज़ारवेट से घटकर २५,००० हज़ारवेट रह गया। अमेरिका और फ्रांस को भेजा गया माल में घटकर आधा रह गया। १९५२ में वहा से इण्डोनेशिया और ब्रिटेन को कोई माल नहीं भेजा गया।

१९५२ में ब्रिटेन ने कुल ५,००० हज़ारवेट लौह मगार जो सफ़ी सब जर्नीयर से आर।

सॉठ: नाइजेरिया में उत्पादन बढ़ा

अदरल ही सफ़र सौट बन जाता है। यह उष्ण कटिबंध के अन्तक देशों में उत्पन्न होता है। भारत, जर्मनी और सिरालियान इसके प्रमुख निर्यातक हैं। इथर नाइजेरिया में इसकी उपज बढ़ा है और आग्नेय अफ्रीका में बढ़ाने के दल हो रहे हैं। चीन में भी अदरल बहुत हाता है परन्तु उस मालके रूप में काम में न लाकर केवल अदरल व रूप में ही लाते हैं।

१९५१ में सौट के मात्र नल जान से १९५२ में सतार नर में इसका उत्पादन बहुत बढ़ा जिससे मात्र तेजी से गिर गये। भारत में सौट स्थानीय उपभोग के लिये हा होता है। अर १९५१ ५० में इसका उत्पादन ३,००,००० हज़ारवेट दुगुना को आगे ले वर्ष घटकर ७,७५,००० हज़ारवेट रह गया। सिरालियोन में मात्र आधरकर निर्यात के लिये पैदा की जाती है। वहा प्राग्गन में सौट को लेता न केवल बहुत नया पन्तु राट को उम्मा विस्तार कर गया। जर्मनी में किसी व्यवस्था अच्छी न हाने और १९५० तथा १९५१ में क्षेत्र का विस्तार हो न न के कारण उत्पादन और निर्यातन के पास पर्याप्त रटाक दृष्टा हो गया।

नीचे की तालिका में सौट के व्यापार के आकड़े दिने गये हैं —

(हजार हज़ारवेट)

देश	१९३८	१९५०	१९५१	१९५२
निर्यात				
सिरालियोन	५४	४५	६५	५०
भारत (क)	६०	४४	५२	६४
जर्मनी	२६	२३	५७	२७
नाइजेरिया	७	६	१२	६
योग ..	१४७	१११	१९६	२३०
आयात				
ब्रिटेन	३८	३६	५८	२६
मदन (र)	३३	१३	२५	३३
कनाडा	५	६	४	३
मलाया	१०	८	२३	२३
अमेरिका	६	३४	४३	३५
जर्मनी (ग)	१४	२	—	—
अरब (घ)	११	१३	१२	१२
योग ...	१७७	११०	१६५	१३२

(क) नेत्रल समुद्र द्वारा दुगुना व्यापार। १९५८ के बाद केवल भारत सघ बा।

(ख) अधिकांश अरब को पुनर्निर्वात।

(ग) उद्योगर वषों में परिचामी जर्मनी।

(घ) अरब को भारत से निर्यात। त्रितीय वर्ष।

ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल के देशों में ही सतार नर की अधिकांश सौट उत्पन्न होती है। इसका अधिकांश आयात व्यापार भी इन्हीं के हाथों में है।

१९५२ में सौट का उत्पादन घट जाने पर सतार के साठ के व्यापार में भी कमी हो गइ, यत्रप्रि मुख्य देशों का कुल निर्यात मुद्र में पहले के वार्षिक औसत में कुछ ही कम रहा। भारत का निर्यात १९५२ ५३ में बट गया, जबकि जर्मनी का १९५१ के बराबर १९५२ में भी बना रहा। सिरालियोन का निर्यात घट कर आधा रह गया। आयातक देशों में ब्रिटेन और अमेरिका ने जर्मनी और सिरालियोन का अधिकांश माल खरीदा। जर्मनी से अमेरिका को १९५१ की अपेक्षा १९५२ में अधिक माल भेजा गया। इन दोनों ही देशों में ब्रिटेन में कम माल आया। सिरालियोन में तो १९५१ की अपेक्षा नेत्रल एक विहार पाल ही मगारा। भारत से सौट मुख्य अरब और अरब का भेजा जाती है। अरब की मेना जाने जाला माल भी अरब को ही भेज दिया जाता है। हागबाग में मुख्य सप्लिन अदरल का ही निर्यात होता है। अमेरिका को कुछ परिमाण में सौट भेजा जाता है।

ब्रिटेन में १९५२ में २६,०० टन सतार आर को गत वर्ष में प्राधी थी। युद्धकाल में युग्निगत व्यापार मरुतपूर्ण होता वा रहा है। १९५२ में आयात कम दुगुना ना युद्ध से पहले की अपेक्षा एक विहाद से भी कम है।

नाचे की तालिका में साठ के व्यापार का विवरण दिखाया गया है —

(हजार हज़ारवेट)

देश	जर्मनी		निरालियोन			भारत(क)	
	१९३८	१९५१	१९३८	१९५१	१९५२	१९३८	१९५१
ब्रिटेन	१४	११	१०	१५	४२	१४	५
कनाडा	३	२	१	२	१	—	(र)
आग्नेय अफ्रीका	१	१	—	१	—	—	(ख)
अरब	—	—	१	—	—	२२	१६
अमेरिका	८	११	१४	२०	१४	६	३
अरब	—	—	—	—	—	१०	१२
अन्य	०	०	१३	८	७	१६	२२
योग...	२६	२७	२७	५४	६५	३०	६०

(क) केवल समुद्र मार्ग द्वारा दुगुना व्यापार। १९५१ से वितीय वर्ष के आकड़ों को भारत सघ के हैं।

(र) यदि कोई है तो अन्य में सम्मिलित।

यत्र जिन उत्पादनों का उल्लेख किया गया है उनमें जायफल, जाकिरी दालचीनी, लालमिर्च, इलायची इत्यादि भी सम्मिलित है। परन्तु कार्नामिर्च, लौंग और सोंठ की तुलना में इन अन्य मसालों का बहुत कम अन्तर्गमन व्यापार होता है।

जायफल और जाकिरी एक ही वृक्ष से निकलते हैं। जायफल तो उसका बीज होता है और जाकिरी बीज में से जाली वैसी वस्तु निकलती है। लौंग के समान यह भी मलक्का का पौधा है और अब भी सगर भर का आधा उत्पादन इण्डोनेशिया में ही होता है। अब यह परिचमी द्वीप समूह में भी होने लगा है। इण्डोनेशिया के बाद इसकी उपज में दूसरा स्थान ब्रिटेन का है। इण्डोनेशिया से इसका १९५१ और १९५२ में व्यापार निर्यात हुआ जो बुद्ध से पहले की अपेक्षा दो तिहाई था। १९४६-५० में ब्रिटेन में ६१,००० टन इण्डोनेशिया जायफल पैदा हुआ परन्तु फिर दो फसलों में यह घट कर केवल ५३,००० टन रह गया। इसके साथ ही निर्यात भी घटा परन्तु १९५२ में निर्यात फिर बढ़ गया और यद्यपि यह १९५० की संख्या पर तो नहीं पहुँच सका तथापि बुद्ध से पहले के स्तर से अधिक हो गया।

दालचीनी का पेठ लम्बा में होता है और मसाले के रूप में उस पेठ की छाल काम में लाई जाती है। अब भी सगर को अधिकांश दालचीनी लम्बा से ही मिलती है। यह पेठ मेकनीक द्वीप और हिन्दचीन में भी होता है परन्तु यहाँ दालचीनी का उत्पादन अनिश्चित होता है। तेजपात भी दालचीनी के ही वर्ग का होता है और दालचीनी के बटले भी काम में लाया जाता है। कुछ दिन पहले तक तेजपात बड़े परिमाण में चीन से मगया जाता था परन्तु हाल में ही यह इण्डोनेशिया से बड़े परिमाण में आने लगा है। १९५०-५१ में यह मलाया से भी मगया गया। मलाया से जो तेजपात आता है वह भी इण्डोनेशिया का ही होता है।

लालमिर्च भारत में बहुत पैदा होनी है। १९५०-५१ में भारत में ६० लाख टन इण्डोनेशिया लालमिर्च उत्पन्न हुई जो गत वर्ष से कुछ कम थी। उसका निर्यात भी यद्यपि काफी हुआ तथापि अधिकांश एशिया देशों में ही हुआ। बुद्ध के बाद मेक्सिको ने लालमिर्च का अन्तर्गमन निर्यात किया है। युगाटा और नाइजेरिया का निर्यात १९५० और १९५१ में बटन के बाद १९५२ में फिर गिर गया।

इलायची भारत और लम्बा में बहुत होती है। पहले हिन्दचीन भी इलायची बहुत निर्यात करता था। परन्तु बुद्धकाल से उसका निर्यात बहुत कम हो गया है।

अन्य मसालों का जिनमें १९५० में बहुत कम मगया। १९४६ के बाद दुनियाँ कम आयात १९५० में ही हुआ है। निर्यात गन्तव्यगत के देशों में होने वाला आयात निर्यात कम हुआ है। इन देशों में हांगकांग, भारत और लम्बा भी सम्मिलित हैं। मार्गो मोरक्को से भी उमने कम मगाने मगाने।

जिन मसालों का जो पुनर्निर्माण किया है उनमें १९५२ में कुछ बुद्ध बुद्ध परन्तु १९५० की तुलना में बढ़ फिर भी कम रहा।

नीचे की तालिका में अन्य मसालों के अन्तर्गमन व्यापार सम्बन्धी आँकड़े दिये गये हैं।

अन्य मसालों का निर्यात

(हजार टन प्रति वर्ष)

	१९२८	१९५०	१९५१	१९५२
जायफल और जाकिरी				
ब्रिटेन	...	४१	६८	२८
इण्डोनेशिया	..	६५	६२	५४
दालचीनी				
लम्बा	...	४७	६८	४४
मेक्सिको	...	१	५	४
हिन्दचीन	...	२२	४	१
तेजपात				
मलाया	...	७	२२	३७
चीन	...	११७	८६(ब)	३३(ब)
इण्डोनेशिया (क)	...	४६	७५	६३
लाल मिर्च				
भारत (ख)	...	१२५	६१	८७
मर्या	...	६६	—	—
युगाटा	...	१	१८	१८
नाइजेरिया (ग)	...	—	१६	४
मेक्सिको (घ)	...	४८	१७०	१७६
पिण्डो				
जर्मनी	...	७७	२६	४४
इलायची				
भारत (ख)	...	१३	१२	१४
लम्बा	...	४	२	३
हिन्दचीन	...	१०	३	२
वनीला				
मेडागास्कर	..	७	१४	१०
मेक्सिको (घ)	...	३	२	५
मार्गो मोरक्को	...	२	४	४

(क) सम्पूर्ण भारत १९४६ से १९४६ केवल सयौं प्रवेश का।

(ख) केवल समुद्र द्वारा हथका व्यापार। १९४८ में गत विनिर्माण वर्ष में भारतीय मध्य का। स्थलमार्ग द्वारा पाकिस्तान की १९४६-५० में ७७,१९५० ५१ में १,१९५१ ५२ में १८० और १९५२-५३ में १८ निर्यात हुआ।

(ग) मुख्यतः लाल मिर्च।

(घ) ताजी और सूखी लाल मिर्च।

(च) चीन में कुछ आयातक देशों में आयात।

नीचे की तालिका में लन्दन के बाजार के मसालों के भव दिये गये

हैं। लोग का भाव गत वर्ष की अनेका कजा खुला और आलोच्य वर्ष में चटकर दुगना हो गया। जमैका की सेंट का भाव अश्रीकी सेंट से काफी कजा खुला परन्तु आलोच्य वर्ष में दोनों के भाव पर्याप्त गिर गये। दोनों के भावों का अन्तर भी काफी कम हो गया। काली मिर्च के भाव

वर्ष के आरम्भ में साधारणत एक वर्ष पूर्व के भावों से कम थे। आलोच्य वर्ष में मलाबार की काली मिर्च के भाव कुछ चढे परन्तु सपानक की मिर्च के गिरे। जायफल और जापिनी के भाव आरम्भ में अच्छे थे परन्तु बाद को वे गिर गये। तालिन इस प्रकार है —

	काली मिर्च			लौंग		सेंट	गिरी		जायफल		पिन्नेटो (प्रति पौण्ड)
	लेम्पेग काली (प्रति पौण्ड) शि०पै०	सरावक काली (प्रति पौण्ड) शि०पै०	मलाबार काली (प्रति हण्डर०) शि०	जवी बार (प्रति पौण्ड) शि०पै०	मैडामा स्वर (प्रति पौण्ड) शि०पै०		अश्रीकी (प्रति हण्डर०) शि०	जमैका १० ३ (प्रति हण्डर०) शि०	पश्चिमी द्वीप (प्र०पै०) शि०पै०	पश्चिमी द्वीप (प्रति पौण्ड) शि०पै०	
१९३७ जनवरी	० ३३			० ८३	० ७७	६२	६० ६०	२ ८ ० ६	० १० ३	० ८ ३	० ८ ३
१९३८ जनवरी	० २३			० ८	० ६३	५२ ३	६० ६०	२ ४ ० ६	१ १ १	१ ७ ३	१ ७ ३
१९३९ जनवरी	० २५			० ८ ३	० ८	२ २ ३	४० ७५	१ ६ ० ८ ३	० १० १	० ८	० ८
१९४० जनवरी				१ ७ ३		८०(क)		५ ० ४ ०			१ ६
१९४० जनवरी	२ ०			० १० ३		८०(क)	११०	७ ६ ४ ६			१ ६
१९४० जनवरी	१ ११ ३(क)		२१०(क)	० ६ ३		६७ ३	६ ५	७ ३ ३ ६	२ ८		१ ० ३
१९४६ जनवरी	३ २ १(क)	३ १०	२६ ५	१ ०	० १० ३	८७ ३	१००	६ ८ ३ १	२ ८ ३	१ २	१ २ ३
१९५० जनवरी	८ ४ ३	१४ ६	१,०००	१ ३	१ ४ १	३ ५ ५	३ ५ ५	६ ० २ ६	२ १०	१ ६ ३	१ ६ ३
१९५१ जनवरी	१० १० ३	१८ ७ ३	१,३४८	३ २(क)		३ २०(क)	३ ६ ५	८ ६ ४ ६(क)	५ ७	१ ६	१ ६
१९५२ जनवरी	११ ०(क)	१४ ६	१,१८०(क)	५ ०	४ ८(क)	२ ३ ५	४ ५०	६ ३ ४ ६	३ ८ ३	१ १ ३	१ १ ३
फरवरी	११ ०(क)	१५ ६	१,२००(क)	६ ५ ६	६ १	२००(क)	४००(क)	६ ०			
मार्च	११ ०(क)	१४ ६	१,०२५(क)	७ १ ३	६ ०	१ ७ ५	३ २०(क)				
अप्रैल	६ १ ३(क)	१२ ०	६७ ५	६ १०		१ २ ५	१ ६ ५	४ ०	३ ६	३ ६	२ ०
मई	८ ०(क)	१० ३(क)	६ ४ ५	६ १० ३		१ २ ५	१ ६ ५	५ ६ ३ ६	३ ४		
जून	६ ०(क)	११ ०	१,१००	८ ०	७ ०	१ २०		५ ६ ३ ४	१ ८	२ ०	
जुलाई	१० ६(क)	११ ३	१,३६०	६ ०(क)	८ ०(क)	१ १ ५	१ ६०				
अगस्त	१० ४ ३(क)	१० १० ३(क)	१,४८८	६ ०(क)		१ १० ३	१ ५ ०		३ ६	२ ८ ३	...
सितम्बर	१० १ ३	११ ६	१,४७५	१० ०(क)		१ १ ५	१ ५ ०		३ ४	२ ८ ३	...
अक्टूबर	८ ३	११ ०	१,४००(क)	१० ६		१ १०	१ २ २ ३		३ ४	२ ४	२ १
नवम्बर	६ ६(क)	१० ७ ३	२,३५०(क)	११ ०		१ १०	१ २ ७ ३		३ ०	२ ५	
दिसम्बर	६ ६	६ ६	१,२२ ५	११ ६		६ २ ३	१ २०		३ ०	२ ७ ३	२ १ ३

लाइन के स्थान पर भाव को महीने के आरम्भ में अथवा उसके निवृत्त।
(क) नाममात्र।



(लाख गाड़ो में)

मौसम	१९५३-५४	१९५२-५३	१९५१-५२
जुलाई ...	४.४६ (१.६२)	२.६१ (०.२२)	२.२६ (१.६२)
अगस्त ...	४.६३ (१.६५)	२.६५ (०.५८)	३.३१ (२.१३)
सितम्बर ...	४.५६ (१.७६)	३.७७ (०.५६)	४.६३ (२.६३)
अक्टूबर ...	४.३४ (०.६३)	६.२६ (२.१६)	६.६८ (३.५१)
नवम्बर ...	५.०६ (०.८२)	६.०० (२.६२)	६.२८ (२.१६)
दिसम्बर ...	६.०७ (१.२८)	६.३७ (२.२२)	४.६६ (०.६६)
जनवरी ...	४.१२ (१.२५)	५.२१ (१.४०)	६.०३ (१.२७)
फरवरी ...	४.५४ (१.१६)	४.११ (०.८२)	३.६३ (१.५७)
मार्च ...	३.५६ (०.८३)	४.८४ (१.०४)	३.३८ (१.३१)
अप्रैल ...	३.१८ (०.७८)	३.०० (०.३८)	२.८० (०.५७)
मई ...	३.५१ (१.०७)	३.७४ (०.२१)	३.६२ (०.४२)
जून ...		४.५३ (१.१२)	२.१६ (०.५३)
योग	५३.५० (१५.०)	५४.७ (१३.२५)	५०.४२ (१८.३०)

कोष्ठकों में दिये गये अक्ष पाकिस्तान में आये जूट के हैं।

+ अनुमानित।

उत्पादन में थोड़ी कमी

१९५३-५४ में जूट के माल का उत्पादन थोड़ा घट गया। गत वर्ष यह जहाँ ८.६२ लाख टन हुआ था, वहाँ आलोच्य वर्ष में ८.६६ लाख टन ही हुआ। यह कमी कुल सीमा तक मिलाई की उत्पादन नीति में परिवर्तन होने के कारण हुई है, क्योंकि उ-होने अपनी कुल शक्ति की बोरियो के बदले टाट बनाने में लगाने लगे थे। मौसम की दूसरी छमाही में टाट की मांग बढ़ने लगी थी। मौसम भर भारतीय जूट मिल्स एसोसियेशन के सदस्य मिलो ने पति सप्ताह ४२० घन्टे काम किया। १९५३-५४ के मौसम में टाट का उत्पादन ३.६० लाख टन रहा, जबकि १९५२-५३ और १९५१-५२ में क्रमशः ३.४८ लाख टन और ३.०६ लाख टन रहा था। बोरियो का उत्पादन कुल घट कर ४.४५ लाख टन रहा, जबकि १९५२-५३ और १९५१-५२ में क्रमशः ५.१० लाख टन और ६.०७ लाख टन रहा। जूट के माल के उत्पादन का सब गिराटा हुआ होने के कारण मिलाई में कच्चे जूट की खपत भी घट कर १९५३-५४

में ५०.४५ लाख गाठ रही, जबकि गत दो मौसमों में क्रमशः ५३.१८ लाख गाठ और ५६.३६ लाख गाठ रही थी। इस उत्पादन में उन मिलाई का उत्पादन सम्मिलित नहीं है जो एसोसियेशन के सदस्य नहीं हैं। इन मिलाई का उत्पादन १९५२-५३ और १९५१-५२ में क्रमशः ३६,००० टन और ३८,००० टन रहा था।

नीचे की तालिका में गत तीन मौसमों में हुए जूट के माल के उत्पादन के आकड़े दिये गये हैं। इनसे प्रकट होता है कि उत्पादन का सब पैसा रहा है:—

(अक्ष हजारों में)

	१९५३-५४	१९५२-५३	१९५१-५२
जुलाई	७८.८	८३.८	७१.६
अगस्त	६८.१	७४.३	७५.७
सितम्बर	७३.१	७०.०	६६.३
अक्टूबर	६६.८	७६.८	६६.२
नवम्बर	६६.०	७२.२	८२.०
दिसम्बर	७७.८	७८.८	८४.३
जनवरी	७६.३	७३.०	६१.८
फरवरी	६८.३	६८.६	८३.७
मार्च	७५.६	७४.४	८२.६
अप्रैल	७५.०	७४.३	८१.७
मई	७१.३	७२.५	८२.५
जून	७४.६	७२.८	७३.३
योग	८६५.७	८६१.५	६४५.०

निर्यात में वृद्धि

मौसम के आरम्भ में जूट के माल के निर्यात की प्रगति सन्तोषजनक नहीं थी। इतलिये भारत सरकार ने टाट का निर्यात शुल्क २७.५० से घटा कर १२.०० प्रतिशत कर दिया। इसमें भारतीय टाट विदेशी बाजारों में अन्य देशों के टाट से अन्वृत्ति प्रतिस्पर्धा कर सका। १९५३-५४ की पहली छमाही में जूट के माल के निर्यात का कुल योग ४.१६ लाख टन था, जबकि पिछली दो छमाहियों में यह क्रमशः ३.३१ लाख टन और ३.४६ लाख टन रहा था। निर्यात हुए ५.१६ लाख टन में २.२१ लाख टन टाट, १.८२ लाख टन बोरिया और १.१३,६४० टन अन्य वस्तुएँ थीं। तीसरी छमाही में निर्यात का योग १.६० लाख टन रहा और अन्तिम छमाही में भी इतना ही बने रहने का अनुमान है। बोरियों के निर्यात में भी थोड़ी वृद्धि हुई। मार्च १९५४ में यह ४६,२०० टन रहा। १९५३-५४ में जूट के माल के कुल निर्यात का योग ८.१ लाख टन होने का अनुमान है, जो १९५२-५३ के ६.७७ लाख टन और १९५१-५२ के ७.६६ लाख टन से कहीं अधिक है। यहाँ यह ब्यात देने योग्य है कि १९५३-५४ में निर्यात १९५८-५६ के बाद से सब से अधिक हुआ है जबकि उमका योग ८.७२ लाख टन रहा था।

मान का ताविका में हान के वनों में हुआ जूट के माल का नियात किया गया है —

जूट के माल का निर्यात

मौसम	(लाख टनो में)
१९४६ १०	७ ५६
१९४७ ४८	८ ६६
१९४८ ४६	८ ७०
१९४९ ५०	७ ५४
१९५० ५१	७ १६
१९५१ ५०	७ ६६
१९५२ ५३	६ ७७
१९५२ ५४	८ ००*

* अनुमानित

स्टाक की अच्छी स्थिति

१९५३-५४ में मिलों में उत्पादन कम होने पर भी नियात अधिक हो सका। इसका कारण यही था कि मिलों के पास माल का काफी स्टॉक था जिसमें से बचे नियात के लिये माल दे सके। मौसम आरम्भ होने पर मिलों के पास बहुत अधिक स्टॉक इकट्ठा था। इसका अनुमान जुलाई १९५३ में १३० लाख टन तक था। टाट का स्टॉक ४४ ६००० टन और बारियों का ६० १०० टन था। इस स्टॉक में धारे धारे कमी जाती गई और नवम्बर के अन्त में वह बर कर ६७ ६०० टन ही रह गया। मई में वह सबसे कम अर्थात् ८६ २०० टन रह गया। १९५३-५४ का मौसम समान हावे समय स्टॉक फिर वृद्ध बढ़ कर ८६ ६०० टन हो गया।

मिला में स्टॉक का नियात नाने के आकषण से स्पष्ट हो जाता है — (हजारों में)

	१९५२-५४	१९५२-५३	१९५१-५२
जुलाई	१३६ ७	१०० ५	७४ ६
अगस्त	१३३ ४	६३ ८	६६ ०
सितम्बर	११८ ४	६१ ५	६३ ५
अक्टूबर	१०७ ६	६५ ०	७४ ०
नवम्बर	६८ ३	१०४ ४	८ ४
दिसम्बर	६८ ६	११४ ०	८७ ५
जनवरी	६५ ७	१२८ ५	८६ ४
फरवरी	६५ ४	१३६ ०	१०६ ५
मार्च	६२ ६	१३८ ०	१११ ५
अप्रैल	६१ ४	१७३ ३	११६ ४
मई	८६ ५	१६८ ८	१०३ ८
जून	८६ ६	१३३ ८	६८ ६

अमेरिका में टाट की खपत घटी

१९५३-५४ में अमेरिका में टाट की खपत गत मौसम की अपेक्षा कम हुई। पहला तिमाही में खपत में १० लाख टन रही यदि निकले दो मौसमों की पहली तिमाहियों में यह कमरा २५०० लाख गज और १,०६० लाख गज रहा था। दूसरी तिमाही में यह खपत जोड़ी अक्टूबर २,००० लाख गज हो गई जबकि गत मौसम की इसी

तिमाहा में यह २,२४० लाख गज रही थी। तीसरी तिमाहा में यह घट कर १,९७० लाख गज रह गई और अन्तिम तिमाही में इसके और भी गट कर १,७७० लाख गज रह जाने का अनुमान है। १९५३-५४ के कुल मौसम में अमेरिका में टाट की खपत का योग ८ १२० लाख गज होने का अनुमान है, जबकि १९५२-५३ और १९५१-५२ में यह क्रमशः ८ ७०० लाख गज और ५ ७६० लाख गज रहा था।

नाने का ताविका में १९५३-५४ में कच्चे जूट और जूट के मान के मूल्या के आकड़े दिये गये हैं —

मास*	कच्चा जूट		जूट का मान	
	आराम बाटम प्रति मन	मिन प्रथम प्रति गाट	टाट १०० गाज क ११ पाटर	बारिया १०० की विल
	र १०००	र ००००	र ००००	र ००००
जुलाई	२४ ८	१६ ०	४५ ४	६७ १२
अगस्त	२६ ०	१८ ०	४५ ४	६० ४
सितम्बर	२६ ८	१६ ५	४२ ६	६४ १४
अक्टूबर	२४ ८	१४ ५	४३ १४	६ १४
नवम्बर	२६ ८	१७ ०	४६ २	६६ ०
दिसम्बर	२७ ८	१८ ०	४७ ३	६० ३ ४
जनवरी	२८ ८	१८ ५	४६ ५	६७ ४
फरवरी	२८ ०	१८ ०	४५ ७	६० २ ४
मार्च	२५ ०	१८ ०	४४ १४	६० ६ १
अप्रैल	२६ ०	१८ ०	४२ १४	६० ८ २
मई	२५ १	१७ ५	४४ ०५	६१ ३ ४

* प्रत्येक मास के पहले सप्ताह में रहे मूल्य।

जूट की फसल का पूर्वानुमान (लाखों में)

मौसम	घन (एकड़)	फसल
१९५०-५१		
पश्चिमी बंगाल	६ ७०	१५ ४३
शार भाग	७ ८४	१ ५५
	योग	१४ ५४
१९५१-५२		
पश्चिमी बंगाल	६ ०१	२३ ६२
शार भाग	१० ५०	२ ८६
	योग	१६ ५१
१९५२-५३		
पश्चिमी बंगाल	८ ४४	२४ २१
शार भाग	६ ७३	२ ८४
	योग	१५ १५
१९५३-५४		
पश्चिमी बंगाल	५ ५०	१५ ३६
शार भाग	६ ४६	१ ५ ६१
	योग	११ ९६

★★★ खरीदार देसी माल का विश्वास नहीं करते और विदेशी माल को महंगा होते हुये भी खरीदते हैं...परन्तु क्यों ?

भारत में प्रतिमान निर्धारण

खरीदारी में धोखे से बचने का सर्वोत्तम उपाय
(ले०—श्री टी० टी० कृष्णामाचारी, अध्यक्ष भारतीय प्रतिमानशाला)

भारतीय प्रतिमानशाला १९४७ में स्थापित की गयी थी। इस अल्पजीवन में शाला ने लगभग ५०० प्रतिमान प्रकाशित किये हैं। स्थापना के समय शाला के केवल १०० सदस्य थे पर ध्यान उनकी सख्या बढकर लगभग ८०० हो गयी है। भारतीय प्रतिमानशाला अल्पपेन्डीय प्रतिमान समग्रत से भी सम्बद्ध है और अन्तरक तथा लाय के अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिमान निष्पन्नने मे इसने महत्वपूर्ण कार्य किया है।

प्रतिमानशाला का इतिहास सतोपजनक अक्षय्य है किन्तु, औद्योगिक विकास में प्रतिमाना को अभी महत्व नहीं दिया जा रहा है। उद्योगपतियों को विनाशक है कि खरीदार देसी माल का विश्वास नहीं करते और विदेशी माल को, महंगा होते हुए भी, खुरी से खरीदते हे। सरकार भी विदेशी माल का आना पूरी तरह नहीं रोक सकती। अतः प्रतिमान निर्धारण ही ऐसा इलाज है जिसके दुकानदार और खरीदार दोनों को सतोप और सुविधा हो सकती है। दुकानदार समझ सकता है कि उसका माल निश्च प्रतिमान का होने के कारण उच्चमं धोला नहीं हो सकता और ग्राहक भी इसपर विश्वास करेगा।

आसान काम नहीं

प्रतिमान निर्धारण कोई आसान काम नहीं। वह काम शाला की बहुत सी उप समितियों द्वारा किया जाता है और उपभोक्ता व्यापारी, खरीदार और प्रौद्योगिक जानकार सभी इनके सदस्य हैं। आरम्भ में इन सदस्यों की सख्या केवल ६०० थी और अब ४,५०० हो गयी है। १९५२ में भारतीय प्रतिमानशाला (प्रमाणिकरण विष्ट) अधिनियम बन जाने से प्रतिमान शाला के अधिकार बढ गये हैं। शाला को प्रमाणिकरण विष्ट देने और कम्पनियों को भारतीय प्रतिमानों के अन्तर्गत माल तैयार करने के लाइसेंस देने का अधिकार मिल गया है। इससे उचित किन्धम के माल को प्रोत्साहन मिलेगा और सस्ते तथा घटिया माल के मुकाबले का डर कम हो जायगा। केन्द्रीय सरकार की नीति है कि लहा तक हो निश्च प्रतिमान की चीजें ही खरीदी जाय। क्या क्या उपभोक्ता प्रतिमान वाली चीजों पर भरोसा करेंगे लो लो औद्योगिक विकास को गति तीव्र होती जायगी। हमारे जैसे निरर्थक देश में तो बच्चे माल की बचत का महत्व बुद्ध और शांतिकान दोनों में एक सा है।

इस समय भारतीय प्रतिमानशाला इमारतों में काम आने वाले इस्पात के प्रतिमान निर्धारण और निर्माण विधियों के नियम निर्धारण

करने का यत्न कर रही है। इससे हर साल काफ़ी बचत हो सकती है। प्रतिमान निर्धारित न होने में भारी मात्रा में उत्पादन करना कठिन होता है। इसी प्रकार विदेशों में हमारे माल की बिक्री में भी कठिनाई होती है। विदेशी व्यापारी माल को आप्रण से देखे बिना नहीं खरीदते। यदि निश्च प्रतिमान का माल हो तो केवल तार द्वारा ही सौदा पकना हो सकता है।

४२० समितियां

प्रतिमानशाला की ४२० समितियां हैं। इनका संचालन (१) इंजीनियरिंग विभाग परिषद (२) निर्माण विभाग परिषद (३) वस्त्र विभाग परिषद और (४) रासायनिक विभाग परिषद करती हैं। शीघ्र ही खाद्य और कृषि उत्पादन विभाग परिषद भी स्थापित करने का विचार किया जा रहा है।

प्रधान मंत्री द्वारा भारतीय प्रतिमान शाला के भवन का शिलान्यास देश के औद्योगिक विकास के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है। पर अभी बहुत कुछ करना बाकी है। शाला का नाम इसके सदस्यों के चर्चे से चलता है। प्रायः सब राज्य सरकारों इसके सदस्य हैं और केन्द्रीय सरकार से भी सहायता मिलती है। पर इसमें भी बटकर है व्यापारियों और उपभोक्तार्थी तथा जनता का सहयोग। चूंकि ही प्रतिमानों का महत्व उनकी समझ में आ जायगा तब समक लीजिए कि आशा मैदान उम्मी दिन सर हो जायगा।

प्रतिमानों का राष्ट्रीय महत्व भारतीय प्रतिमानशाला का कार्य

उपर श्री टी० टी० कृष्णामाचारी, अध्यक्ष भारतीय प्रतिमानशाला के लेख में शाला के कार्य और महत्व पर प्रकाश डाला गया है। भारतीय प्रतिमानशाला ने अब तक क्या किया है और उसके कार्य का कितना महान् राष्ट्रीय महत्व है, यह सन्देश में नीचे के विवरण से शत हो सकेगा।

क्या बर्करें, क्या यहियों और क्या कोई बडा बर्माचारी, भारतीय प्रतिमानशाला सब के लाम का काम करती है। आप पूछेंगे कैसे? साबुन का ही उदाहरण ले लीजिए। आखिर साबुन तो सभी इस्तेमाल करते हैं। साबुन भी अच्छा और बुरा होता है। यदि साबुन में चिकनाई का अश्व बढ गया तो वह खराब हो जाता है और क्षार का अश्व बढ गया तो भी

उसकी उपनोगिता और मूल्य घट जाता है। अतः अच्चे राशुन के लिये सब पदाओं का निश्चय अद्यतन होना चाहिये। प्रतिमानशाला ने अभी तक ५०० प्रतिमान जारी किए हैं। उनमें में एक नहाने के सातुन का भी है। इनके लिए द्धार का अधिकतम परिमाण ०.५ प्र० श० निश्चय किया गया है।

वही बात बिजली के पदा के बारे में है। हियाय लगाया गया है कि घडिया पने में एक व्यक्ति को १० साल में ३ हजार ६० की हानि उठानी पानी है। इस समय भारत में ३६ मे लेकर ८४ रूच व्यास तक के ६ तरह ने हून के पने बनाये जाते हैं। वे एक मिनट में १५० मे लेकर ३०५ आ घूम मरते हैं। ६० रूच की पानिया के हून के ए सी परदे से कम में कम ६,५०० घनकूट और प्रतिघाट शक्ति में १५० घनकूट हवा पंकी जानी चाहिये।

हून के बिन्ली के पला का प्रतिमान निर्धारित करने में शाला की औद्योगिक समिति ने १५ सदस्यों को चार वर्ष लगे। इनके लिए सदस्यों को पिछले २० सालों के आकड़ों का गहन अध्ययन करना पडा। ऐसे कामी के लिये सदस्य कारखानों में जाकर निर्माण की विधियों आदि का अध्ययन भी करते हैं और यह भी देखते हैं कि क्या भारत में मिलने वाले बच्चे माल में हाथे चीजों बनाई जा सकती हैं।

प्रतिमान क्या है? इस प्रश्न के उत्तर में कहा जा सकता है कि एक आन्तर्जक आवश्यकता की पूर्ति का नाम है प्रतिमान है। कारखानों में वेनाद जाने वाली किमी भी वस्तु की फलोत्पादकता और कार्य सम्पन्नता का एक निश्चय रूप कायम करना ही प्रतिमान विचारण करना है। मन्ने वटी बात यह है कि प्रतिमान देश के औद्योगिक विकास में सूचक भी माने जाते हैं।

प्रतिमान निर्धारण बंद नयी बात नहा। नारवे, मिश्र वा और किर्य देश की पाराण वालीन सभ्यता के जो चिह्न आज मिलते हैं उन सबमें एक ही पंथर की छुनिजा मिलती है। इसी प्रकार उस काल के उदाल भी बहुत तुल्य मिलने लुगे है। आज, आधुनिक अर्थ में, प्रतिमान निर्धारण से चीनों की किन्में कम हो जाती है और थोटी भी किस्मा का अधिक परिमाण में कम नर्च में सम्पन्न किया जाता है।

प्रतिमान निर्धारण से प्राहक और उत्पादनका दोनों को लाभ है। माहक को मदोय रहता है कि उमे अपने देने में पूरी और बटिया चीज मिलती है और उत्पादनकर्ता के माल की देश और विन्य में साल बननी है। प्रतिमान प्रदर्श और जागतिकता में मन्प नमभौता करने वाला विचरानी है।

व्यापक समर्थन

भारतीय प्रतिमानशाला का कार्य अराष्ट्रीय महत्व प्राप्त कर चुका है। शाला ७ माल पहले माहक और मन्ता के समर्थन में आरम्भ का गर्द भी और यह भारत में स्थान और बनन वाली चीजा के नाप, किन्म और काम से प्रतिमान निर्धारित करनी है। यह अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिमान समठन में भी

भात का प्रतिनिधित्व करती है। शाला को केन्द्रीय सरकार सहायता देती है। इसके अलावा राज्य सरकारों औद्योगिक एव व्यापारिक मन्षाए, कारखाने, औद्योगिक शालाए, नगरपालिकाएँ और निगम आदि में शाका के सदस्य हैं और इसके लिये चडा देते हैं। इसके काम की लोकप्रियता और महत्व उसी बात में प्रकट होता है कि अब कारखानों के मालिक अपनी चीजों के प्रतिमान निर्धारित करने को माग स्वयं करने लगे हैं।

इस समय शाला ई धन गवेषणाशाला के सहयोग से तेल के लैमोय का प्रतिमान निर्धारित करने का यत्न कर रही है। बच्चे लोहे का प्रतिमान बनाया ही जा चुका है। शाला की ईजीविपरिम शाका, तावे, रस्त, बिजली के पने, मोर्गो तथा कृषि आदि के औजारों के १०० प्रतिमान जारी कर चुकी है।

जूट, रेशम, ऊन और सूती वस्त्रों के भी ७० प्रतिमान जारी किये जा चुके हैं और १५६ तैयार किये जा रहे हैं। अ० आ० करपा बोर्ड ने भी बरधे के कपडे के लिये प्रतिमानों के निर्धारण का मुभाब रखा है।

भारतीय प्रतिमानशाला के विकास में सबसे महत्वपूर्ण बात है १९५२ का भारतीय प्रतिमानशाला अधिनियम। इस अधिनियम के अंतर्गत शाला को प्रमाणीकरण चिह्न और प्रतिमानों के अनुसार माल बनाने के लाइसेन्स देने का अधिकार प्राप्त हो गया है। इससे अनुचित मुकाबले की सम्भावना बहुत कम हो जायगी। अगले ६ महीनों में प्रमाण पत्र की व्यवस्था लागू हो जायगी और आर्द० एन० आर्द० की सुहर देखकर माहक को माल के वीयापन का निश्वास हो जायगा।

भारतीय प्रतिमानशाला की प्रगति

भारतीय प्रतिमानशाला की प्रगति पर निम्न आकडा में अल्प प्रकाश पडता है :-

	३१ मार्च १९५८	३१ मार्च १९५०	३१ मार्च १९५२	३१ मार्च १९५४
१. प्रतिमान जारी किये गये	११०	३००	४७३	
२. नया प्रतिमान जारी किये गये	३७०	४६५	७३०	
३. ममितिया, उप-ममितिया आदि की संख्या	७३	२२६	२६७	४२३
४. ममितिया आदि उप-ममितिया की कुल सदस्य संख्या	४८६	१,८२२	२,०१८	४,०६६
५. चन्दा दन वाले सदस्यों की संख्या	३५६	५६३	७५८	८६६
६. शाला के अफसरों की संख्या	६	११	११	२३
७. अन्य कामचारियों की संख्या	३६	५८	८३	११६
८. प्रतिमानों की विक्री (ह०में)	७००	३०,६००	१,५१,१००	१,५७,८००

गृह तथा छोटे उद्योग धन्ये और प्रतिमान निर्धारण

देश के स्वदेशी आन्दोलन में गृह तथा छोटे उद्योग धन्यो ने महत्त्वपूर्ण भाग लिया है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी चाटी के मित्राण पर ही नहीं, अर्थात् अल्प गृह उद्योगों की उन्नति पर भी बहुत जोर देते थे। इन उद्योगों के महत्त्व को सन् १९४८ में मान्यता मिली, जब भारत सरकार ने आल इण्डिया कंफेडरेशन बोर्ड की स्थापना की। सन् १९४६ से भारतीय प्रतिमानशाला ने भी इस तर्फ ध्यान दिया। बाद में याचना आयोग ने पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत अखिल भारतीय आघार पर इन उद्योगों के विस्तार पर जोर दिया।

माननिर्धारण में कठिनाई

गृह उद्योग के क्षेत्र में मान निर्धारण करने में अनेक कठिनाइयाँ हैं। वस्तुशुद्धा की किस्म को नियमित करना भी कठिन है। केन्द्र तथा राज्य की सरकारों वर्तमान समस्याओं का निराकरण करने के लिए देश के प्रमुख नगरों में, औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र तथा शो रुम (प्रदर्शन कक्षा) स्थापित करने की व्यवस्था कर रही हैं। हाल ही में भारत सरकार ने फोर्ड काउन्सेलेशन द्वारा प्रस्तुत एफ़ अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ दल को यहाँ के छोटे मोटे उद्योग धन्यो के अन्वेषण तथा उनकी उन्नति के लिए अथवा सुझाव देने को आमन्त्रित किया है।

भारतीय प्रतिमानशाला ने गृह व छोटे उद्योगों की अनेक वस्तुओं के मान निर्धारण की दिशा में पर्याप्त ध्यान दिया है।

सूती वस्त्र

भारतीय राष्ट्रीय मण्डल द्वारा के कते और हाथ के बुने सूत में बनता है। शाला ने विभिन्न आकार के मण्डले बनाने का प्रतिमान विशिष्ट किया है। इसी प्रकार निर्माणु में वस्त्रे पर बने गलीचों का, भारतीय प्रतिमान के अन्तर्गत, सूत की किस्म बनावट तथा पकड़े रंग के बारे में ज्ञान शक बातो का उल्लेख किया गया है।

जन के वगाकरण का भारतीय प्रतिमान बन जाने के कारण पहले जैसी वगाकरण सम्बन्धी गडबडी समाप्त हो गई है, और विशिष्टी ने मात्रा भेजने में अधिक सावधानी बरती जाती है। वस्त्रे पर बने सामान का प्रतिमान-निर्धारण किया जाने वाला है।

लाल और अवरक

भारत लाल आदि रलों का ससार में सब से अधिक निर्यात करता है। इस सम्बन्ध में तीन प्रतिमान अत्र तक निर्धारित किये जा चुके हैं।

अवरक के क्षेत्र में भारत का वस्तुत एकधिकार है। अवरक उद्योग में अनेक छोटे छोटे उद्योग हैं जिनके द्वारा अवरक निचला और साफ किया जाता है। अवरक के लिए दो प्रतिमानों का निर्धारण किया जा चुका है।

यह व छोटे उद्योगों के अन्तर्गत खेल के सामान का वस्तु निर्माण होता है। पाकिस्तान बनने से पूर्व, भारत खेल के सामान का काफी निर्यात करता था। देश के बटवारे से उत्पन्न गडबडी के शान्त होने के बाद यह उद्योग पुनर्जातित हुआ है और अत्र विशिष्टी में माल की खपत बढ रही है। कि जेन्, हारी के गेंद, फुटबाल, तथा जैमिक के बल्ला की तात के प्रतिमान द्वारा दिये गये हैं।

नहाने तथा कपडे धोने का साबुन तथा वनस्पति तेलों के प्रतिमान भी प्राय निर्धारित किये जा चुके हैं।

लोहे का सामान तथा ताले

इमारत अति बनाने में कम खर्चा हो, इस उद्देश्य से कुछ लोहे के इमारती सामान के प्रतिमानों का निर्धारण किया गया है, जैसे बिचाड का विट्थनी, कन्डे आदि। लोहे का कुछ सामान पडोसी देशों को भी भेजा जाता है। अलीगड में गृह उद्योग तथा छोटे धन्ये के रूप में ताले बनाने का जो काम होता है, उमका प्रतिमान निर्धारित किया जा चुका है।

पूर्वी पंजाब में साइकिल के विभिन्न भाग बनाये जाते हैं। यह काम वहा छोटे उद्योग धन्ये के रूप में होता है, परन्तु यदि इसे ठीक ढग से मण्डित किया जाय, तो इससे बडे पैमाने पर चलने वाले कारखानों को विशेष सहायता मिल सकती है। साइकिल के बहुत से पुजों के प्रतिमानों के प्राण्य तैयार कए समीक्षा के लिए प्रस्तुत किये गये हैं। इस उद्योग का विनाश निवारित प्रतिमानों का टीक उपयोग करने पर निर्भर करता है।

चाय की पेटियां

करीब ४ करोड़ की लागत की, चाय रखने की पेटिया, निर्यात करने के लिए, प्रतिवर्ष बनार जाती हैं। कुछ समय पूर्व तक भारत अपनी जरूरत का आधा सामान विदेशों से मगता था। चाय की पेटिया बनाने के इस उद्योग को अत्र भारतीय प्रतिमानों के आघार पर नियमित किया जा रहा है। अत्र बाहर में चाय रखने की पेटिया नहा मगार जाता।

बडे पैमाने पर चलने वाले उद्योगों द्वारा बनार जाने वाली वस्तुशुद्धा के प्रतिमान भी निर्धारित किये गये हैं। यह उद्योगों के विस्तार में टाचा बनाने का लोटा, इस्वात की पनालोदार चादरें, लोहे चादरें, नर्वनों के लिये अल्यूमीनियम, टीन, ताबा, लकडों, पालिश, तारपान का तेल, काच बनाने का रेत, कच्चा रेशम आदि का महत्वपूर्ण स्थान है, इसलिये इनके भी प्रतिमान निर्धारित किये गये हैं। भारतीय प्रतिमानशाला इन वस्तुओं के प्रतिमान निर्धारण कर देश के विभिन्न छोटे छोटे उद्योगों में लगे दस्त-बारां का पडो सेवा कर रही है। देश के बहुत से लोगों को इससे लाभ मिल रहा है।

हमारे व्यापार प्रतिनिधियों द्वारा—

हालैण्ड में भारतीय माल की खपत बढ़ी हांगकांग को कोयला भेजने वालों में भारत का मुख्य स्थान

संसार के विभिन्न देशों में नियुक्त हमारे व्यापार प्रतिनिधियों की नवीनतम रिपोर्टों से ज्ञात होता है कि १९५३ में हालैण्ड ने भारत से ३६३ लाख गिल्टर का माल मंगाया। १९५० में मंगाये भारतीय माल से यह ८.६ प्रतिशत अधिक है।

हांगकांग का कोयला भजने वालों में अब भी भारत का मुख्य स्थान है। वहाँ के उद्योगों का कारोबार बढ़ता जा रहा है, जिससे आत्महित होकर नये-नये कारखाने खुलते जा रहे हैं।

मार्च मास में अमेरिका का आयात ८,०८७ लाख डालर से बढ़कर ८,५८१ लाख डालर हो गया परन्तु निर्यात ११,८४ लाख डालर से घटकर ११,२१८ लाख डालर रहे गया।

नेपाल में सूत, चाय, चीनी और सस्ती सिगरेटों की मांग बहुत अधिक हो रही है।

हालैण्ड : भारत से व्यापार

१९५३ में भारत द्वारा हालैण्ड को अनुमानित २,६५,४०,००० गिल्टर मूल्य का माल भेजा गया। यह १९५२ में भेजे गये ३,३४,४५,००० गिल्टर के माल की अपेक्षा ८६ प्र.श. अधिक है। इसी अवधि में भारत को ६,१७,५०,००० गिल्टर मूल्य का माल भेजा गया। अतः इस बार, १९५२ के ८,५६,५६,००० गिल्टर के निर्यात की अपेक्षा, २८ प्र.श. अधिक की बनी रही।

भारत उच्च व्यापार की हाल के वर्षों में जो प्रगति हुई है, उसका कुछ जानकारी निम्न आकृति से मिल सकेगा।—

(मूल्य लाख गिल्टर में)

	१९४६	१९५०	१९५१	१९५२	१९५३
हालैण्ड को भारतीय निर्यात	३५३	५७८	४३८	३२५	३६३
हालैण्ड से भारत में आयात	४४७	३२४	६६०	८५७	६१८

१९५१, १९५२ व १९५३ में हालैण्ड को भेजी गई प्रमुख भारतीय वस्तुएँ इस प्रकार थीं— (मूल्य लाख गिल्टर में)

वस्तु	१९५१	१९५२	१९५३
निम्नलिखित प्रकार के सूत	१३०	७६	६६
रुई—कच्ची व रेशा	३३	३५	६७
बनस्पति तेल	८०	८७	१६
चाय	१८	४४	५०
मू गफली तथा अन्य तेल उपज करने वाले बीज	५	४	७

	१	२	३	४
तम्बाकू		२२	१७	३१
खनिज पदार्थ	...	१४	२१	१५
खनिज वाटुए		६	२४	१
कपड़े	..	२८	५८	२६

इसी अवधि में भारत को भेजी गई इन वस्तुओं में प्रमुख ये थीं—
(मूल्य लाख गिल्टरों में)

वस्तु	१९५१	१९५२	१९५३
दूध तथा उससे बना वस्तुएँ	१३६	१२०	१२१
माछा, हवा बनस्पति का मत आदि	६०	१२	६
उद्योगिक पदार्थ	१५	११	१६
पैपर्स, वैद्युत, चिकनाई वाले तेल आदि	८	१००	११
गन्ना और कागज	...	२५	१६
परमन, घृत आदि	..	१६	६
सूत	..	६८	११५
जस्ता और उद्योग के माल	..	७	१८
यातायात के साधन	..	८४	२७
मशीनें और औजार	..	६४	११८
दान और चमक बना माल	..	१	५३
लाइ और टम्बक का सामान	..	०	२४
रंगलेप, नावनिर्माण आदि	..	१६	८

जनवरी व फरवरी १९५४ की दो मास की अवधि में भारत से हालैण्ड को ७५,५१,००० गिल्टर मूल्य का निर्यात हुआ और इसी अवधि में हालैण्ड ने भारत को १,०२,८०,००० गिल्टर का माल भेजा।

जनवरी व फरवरी १९५४ की अवधि में भारत से हालैण्ड को भेजी गई वस्तुओं में प्रमुख ये थीं—

वस्तु	मूल्य
सूत	२०,५४,००० गिल्टर
काफी	१३,७२,००० "
रूई वच्ची व रदी	८,६६,००० "
चाय	७,४६,००० "
कपड़े	६,१३,००० "
तन्नाऊ पत्ती	३,८५,००० "
खनिज पदार्थ	३,२०,००० "
उडनशील तेल आदि	२,८४,००० "
गोंद, राल आदि	२,५७,००० "

भारतीय माल की खपत की सम्भावना

काफी—१९५३ में हालैण्ड ने भारत से ३,१६,००० गिल्टर की काफी मंगाई। १९५४ के प्रथम दो महीनों में वह १३,७२,००० गिल्टर मूल्य की भारतीय काफी भगा चुका है। हालैण्ड के काफी व्यापार अधिकारियों से जांच करने पर शत हुआ है कि काफी के आयात में जो वृद्धि हुई है उसका मुख्य कारण यह है कि डच व्यापारियों को अपने सामान्य-साधन, पुर्नगौरव अफ्रीका, जहा गत वर्ष की अनिश्चिति से फसल को बहुत

हानि पहुँची है; से पर्याप्त मात्रा में काफी प्राप्त करने में कई कठिनाइयों का श्रुतभव करता पड़ा। अफ्रीका में कम फसल होने से रोबुस्टा (Robusta) काफी के मूल्य में बहुत वृद्धि हो गई है।

भारतीय काफी, डच बाजार में अपने लिये स्थायी स्थान बना लेगी या नहीं, यह मुख्यतः काफी की किस्म तथा भारत से ठीक समय पर उसके पहुँचते रहने पर निर्भर होगा। हाल में पहुँचे माल की किस्म के बारे में लोगों का कहना है कि भारतीय काफी इतने प्रकार की आई है कि अभी उसके विषय में कोई निश्चित मत नहीं दिया जा सकता।

तन्नाऊ — कुछ समय के लिये हालैण्ड में भारतीय तन्नाऊ खरीदे जाने की बहुत कम सम्भावना है। कारण कि भारतीय निर्यातक कुछ समय से पश्चिमी यूरोप को बड़े परिमाण में तन्नाऊ भेजते रहे हैं, जो बाजारों में न खप सकने के कारण अमस्टर्डम, रोटरडम और एन्टवर्प के गोदामों में पडी हुई है। हालैण्ड और बेल्जियम में जिना पिकी हुई ऐसी तन्नाऊ का स्टाक ५,००० से ७,००० गाठ तक पडा हुआ है। भारतीय तन्नाऊ के ये स्टाक हेम्बर्ग और ब्रेमन शहरों के गोदामों में भी हैं।

शत हुआ है कि डच तन्नाऊ उद्योग अपने मिश्रणों में भारतीय तन्नाऊ का बहुत कम उपयोग करता है। इसलिये समझा जाता है कि गोदामों में पडी हुई तन्नाऊ कुछ समय तक बाजार की मांग को पूरा करती रहेगी।

मूल्गों के विषय में बताया गया है कि १९५३ की फसल की श्राग में तपार्ई हुई वरजौनिया एल० एम० जी० किस्म की तन्नाऊ गोदाम के बाहर ६। पैस प्रति पौण्ड पर तैयार मिल रही है परन्तु उसके कोई अधिक खरीदार नहीं हैं। एल० बी० वाइ० फ्रिम की तैयार तन्नाऊ भी ४। पैस प्रति पौण्ड पर उपलब्ध है परन्तु इसके भी खरीदार नहीं हैं।

हांगकांग : कौयला भेजने वालों में भारत प्रमुख

शत हुआ है कि हांगकांग में भारतीय सूत व्यापार को कठिनाइयों का सामना करना पड रहा है। कारण कि भारतीय बाजार के मूल्य भारतीय माल का लागत से कम हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय कर्मी नौ व्यापार की हीन विधियों के कारण ये कठिनाइया और भी बढ रही हैं। इसी कारण भारतीय सूत का आयात काफी कम हो गया है। हांगकांग को कोयला भेजने वाले देशों में भारत अब भी प्रमुख है। फरवरी १९५४ में भारत से जो आयात हुआ और को निर्यात किया गया उसके मूल्य निम्न प्रकार हैं—

भारत से आयात

वस्तु	हांगकांग डालर
सूत	१०,६७,८६२
पादरो का कौरा कपडा	३,७२,६७७
टाट की कौरिया	४,१८,३५५
विविध	१२,२४,१७५
योग	३१,१३,०८६

भारत को निर्यात

वस्तु	हांगकांग डालर
लच्छों में कच्चा रंगम	४,५३,६६३
पौधे, बीज, फूल आदि	२,४०,६०८
विविध	६,२१,३२८
योग	१३,१६,३२८

व्यापार में उदारता

फरवरी मास में आवश्यक वस्तु-पूर्ति प्रमाणपत्र नियन्त्रण के अन्तर्गत और भी अधिक सुविधाओं की घोषणा कर दी गई।

इससे प्रभावित वस्तुएं इस प्रकार हैं—

छुड़ किमो के मीटर, सामान्यतः सर्वत्र काम आने वाले पुल, बोलच वाले मीटर, लकड़ी चीरने के मोल आदि, लकड़ी चीरने के पटी वाले आदि, हाथ से धालू काटने वाली आरियां, विविध प्रकार के पेंच के यन्त्र, टेलीफोन ऐम्पलीफायर।

औद्योगिक उन्नति

हागकाग में नये-नये कारखाने खुलते जा रहे हैं। यह उद्योगों के कारो-
बार में अनेकानेक वृद्धि होने का चोखर है। एक बड़ी आयात पीटने की मिल
प्रायः न्त कर नैवार हों गई है। इसमें प्रतिदिन ५० पीस्ट वाली आटे की

५,००० टोपियों जिस कर तैवार होंगी। इससे पहले के बारे रेकार्ड बनाने
के लिये भी एक कारखाना तैवार हो रहा है। इस कालने का ५,९६००
तकुआं वाला एक नया कारखाना भी तैवार होने पर है। फरवरी मास में
हागकाग में बनी बस्तुओं के निर्यात का कुल मूल्य ४०७ लाख हा० का०
डालर रहा।

अमेरिका : मार्च में निर्यात घटा और आयात बढ़ा

भारत से व्यापार

वाणिज्य विभाग के गणना केन्द्र ने घोषित किया है कि सकुल छपू
अमेरिका के घरेलू व विदेशी व्यापारी माल का निर्यात फरवरी में ११,८१४
लाख डालर में घटकर मार्च में ११,८१८ लाख डालर रह गया। यह १६५३
के मानिक आगत १३,१३० लाख डालर के स्तर से लगभग १५ प्र० श०
कम है। इसी अवधि में, सामान्य आयात ८,०८० लाख डालर से घटकर
८,५८१ लाख डालर हो गया। फिर भा १६५३ के मानिक आगत ६,०६२
लाख डालर में लगभग ५ प्र० श० कम रहा। पारस्परिक सुरक्षा कार्य-
क्रम (सैनिक) के अन्तर्गत किये गये निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इसका
मूल्य १,८८४ लाख डालर से घटकर २,०३६ लाख डालर हो गया।
१६५४ की प्रथम तिमाही में कुल निर्यात [जिसमें पारस्परिक सुरक्षा कार्य-
क्रम (सैनिक) के अन्तर्गत किया गया निर्यात जो मरिमालिन है] का मूल्य
३३,६४२ लाख डालर हो गया। यह १६५३ की इसी अवधि में हुए
३८,८२५ लाख डालर के निर्यात का अर्धदा लगभग १३ प्र० श० कम
है। १६५४ की प्रथम तिमाही में पारस्परिक सुरक्षा कार्यक्रम (सैनिक) के
अन्तर्गत भेजा गया माल ५,५७३ लाख डालर मूल्य का रहा, जबकि
१६५३ की इसी अवधि में इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत ८,८८२ लाख डालर
के माल का निर्यात हुआ था। अतः इस बार निर्यात में ३,३०९ लाख
डालर की कमी रही। यदि पारस्परिक सुरक्षा कार्यक्रम (सैनिक) के अन्तर्गत
भेजा गया माल तकाल में, तो १६५४ की प्रथम तिमाही का निर्यात,
१६५३ की इसी अवधि के निर्यात की अपेक्षा, ५ प्र० श० कम रहा। १६५४
की प्रथम तिमाही में कुल आयात २४,६६७ लाख डालर का हुआ जबकि
१६५३ की इसी अवधि में यह २७,८२६ लाख डालर रहा था।

मार्च १६५४ में अमेरिका का भारत से आयात व निर्यात व्यापार
क्रमशः १८५ लाख डालर और १०४ लाख डालर का हुआ, जबकि गत
मासमें यह क्रमशः १६६ लाख डालर व १३७ लाख डालर का हुआ था।

अमेरिका द्वारा भारत से मंगाने गये माल के प्रारम्भिक आकड़ों से पता
चलता है कि १६५३ में कई प्रस्तुतों का डालर मूल्य कम हो गया। ये
आयत निम्न प्रकार हैं—

अमेरिका का भारत से आयात

(लाख डालर)

वस्तु	१६५२	१६५३
चमड़ा व खाँसे	—	—
सूत व उसमें मिश्रित बस्तुएं	६८	६२
अनिजित वन	१,०३२	६४७
एनिजित पदार्थ	—	—
लोहे के मिश्रण	१२२	५६
चाय	—	—
बाँस	—	—
एनिजित इल्मेनाइट	—	—
आयर्नोसा तेल	—	—
शाली मिर्च	३७	८०
	२०५	२०७

नेपाल : भारतीय माल की खपत

मई मास में उनी व रेशमी माल, जो टाक हाग आता रहा है,
उसके अनधिक भारतीय बन्दे की २१८ गांठे आनी। नैराल मोठी बिस्म
का बपटा अनी और ले गज्जा है।

यदा एत बहुत कम परिमाण में पहुँचता है। इसकी वही बहुत भाग
है। कारण कि यदा के गरीब लोग अपना बपटा अपने हाथ से बरदा पर
हो तैवार करते है और दुमरे बिस्म गज्जा की आरसपकना होनी है।

प्रायः सब बिस्म की चाय न मूल्य ७२ गने है। इन की यदा बहुत
भाग है।

विदेशी बाइसिकलों और मोटर साइकिलों का आयात जारी है।

यदि भारत में बनी साइकिलें यहा बेजी जाय तो इनकी अपेक्षा खपत
हो सकती है। फिर भी भारतीय साइकिलों की बिस्म व मजदूरी के
सम्बन्ध में लोगों की विरहम दिलाला रहेगा। यहाँ के पाजारों में
अपना पैर उमाने के लिये मूल्य व अनुसर किम्प भी अपेक्षा होनी
चाहिये।

यदापि प्रतिदिन चीनी के मूल्य बढ़ते जा रहे हैं, तथापि इस आरसर
रनु की यदा बड़ी माग है। यदि और अधिक चीनी यदा बेजी जान तो
उसका मूल्यत किंवा बान्सा। अतिस मास में बाटमाप्ट में चीनी की
६२० टोपिया आनी।

मोटर व साइकिलों के टायर और टयून पश्चिमी बंगाल से आ रहे हैं और यहा इनकी बड़ी ख्वाहिश है। यहा सुपारी, दालचीनी, इलायची और मसालों की बहुत अच्छी मांग है, परन्तु ये सब वस्तुएँ मलया से आती हैं। अग्रपाम, इत्यादि श्रु गार-सामग्रियों को भी अच्छी विनिर्ण है और इस समय भारतीय व विदेशी- दोनों प्रकार के माल यहा आते हैं। घर के वर्तन तैयार करने के लिये पीतल व ताम्बे की चादरी का नैपाल में अच्छा व्यापार हो सकता है। तम्बाकू और शीरे की बहुत अच्छी खपत होती है और इसे १०० प्र० श० तक आसानी से बढ़ाया जा सकता है। वस्ती किस्म की सिगरेटों की मांग प्रायः असीमित है। इत्याल, लोहा धातु के टुकड़े, टीन और पनालीदार लोहे की चादर भी यहा बहुत कम परिमाण में पहुँचती हैं और उनकी भारी मांग रहती है।

शराब, सिगरेटें व सुपारी प्रमुख थीं। उपर्युक्त वस्तुओं का विवरण निम्न प्रकार है:—

विदेशी माल

पटिया	२३ नग
जायफल	१८ बोरिया
बैडियो	१६ पैटिया
रफेद चमकीला अलवारी कागज	४४ गाटें
सुपारी	२४२ बोरिया
मिठो का तेल	७,६२०
शराब	२६ पैटिया
सिगरेटें	७ पैटिया
इन वस्तुओं पर कुल ६० ५८,०१६ ६ ० की सीमाशुल्क की छूट दी गई।	

भारतीय माल

पेट्रोल	१६,२०० गैलन
चीनी	६२० बोरिया
बपडा	२१८ गाटें
मोटर के टायर	४८ सख्या
मोटर टयूब	३५ सख्या
साइकिल टायर	५० सख्या
इन वस्तुओं पर कुल ६० ३७,३२०-१-० की उत्पादन शुल्क की छूट दी गई।	

विदेशी व्यापार

मई मास में भारत से आने वाली वस्तुओं में पेट्रोल, मोटर व साइकिलों के टायर व टयूब, कपडा और चीनी मुख्य थीं। विदेशों से मंगाई गई वस्तुओं में घडिया, मिठी का तेल, जायफल, बैडियो, अलवारी कागज,

मलया : १९५३ में प्रतिकूल व्यापार संतुलन

१९५३ में मलया का कुल आयात ३२,३८१ लाख म० डालर तथा कुल निर्यात २६,११५ लाख म० डालर रहा। अत. व्यापार-संतुलन ३,२६६ लाख म० डालर से उसके प्रतिकूल रहा, जबकि १९५२ में यह ५,२७ लाख म० डालर से उसके प्रतिकूल व १९५१ में १२,७०२ लाख म० डालर से उसके अतुल्य रहा था।

निम्न तालिका में १९५२ व १९५३ में हुए प्रलाया के विश्व व्यापार का तुलनात्मक विवरण दिया गया है:—

	(००० मलया डालर)	
	१९५२	१९५३
आयात	३८,५७,४१०	३२,३८,१६४
निर्यात	३७,६४,७२६	२६,११,५२१
व्यापार संतुलन	-५,२६,६८१	-३,२६,६४३

मलया के कुल आयात में, १९५२ की अपेक्षा, ६,००० लाख म० डालर व कुल निर्यात में ८,८३० लाख म० डालर की कमी रही। यह कमी मुख्यतः रबड़ व टीन के मूल्य कम हो जाने के कारण हुई। इन वर्ष मलया का इण्डोनेशिया, अमेरिका व ब्रिटेन से व्यापार कम हो गया। इसी कारण आयात व निर्यात का अंतर बढ़ गया।

१९५३ में मलया के कुल व्यापार में ब्रिटेन का भाग १८.७ प्र० श०, एण्टोनेशिया का १६.५ प्र० श०, अमेरिका का १०.० प्र० श०, जापान का ४.६ प्र० श०, थाइलैण्ड का ६.६ प्र० श०, सरावक का ४.० प्र० श० आस्ट्रेलिया का ५.० प्र० श० और भारत का ३.० प्र० श० रहा। १९५३ में उपर्युक्त ८ देशों से हुआ व्यापार मलया के कुल व्यापार का ६८.४

प्र० श० है, १९५३ में मलया के कुल व्यापार में केवल रबड़ का भाग ही २५.२ प्र० श० रहा। अन्य व्यापार की प्रमुख वस्तु टीन थी जिसका भाग ६.३ प्र० श० रहा। अन्य मुख्य वस्तु पेट्रीलियम उत्पादन (१५.७ प्र० श०), सूती कपडा (३.१ प्र० श०) और लाघ पदार्थ (१६.६ प्र० श०) थीं।

भारत मलया का व्यापार

दिसम्बर १९५२ में मलया का भारत से कुल ६.५ लाख म० डालर का व्यापार हुआ, जिसमें भारत से आयात ५.५ लाख म० डालर का व भारत को निर्यात ४० लाख म० डालर का हुआ। अतः व्यापार-संतुलन १.५ लाख म० डालर से भारत के अतुल्य रहा, जबकि गत मास में यह १० लाख डालर में उसके प्रतिकूल रहा था। १९५३ में भारत-मलया का व्यापार-संतुलन १३६ लाख म० डालर से मलया के अतुल्य रहा, जबकि १९५२ में यह ४४१ लाख म० डालर से भारत के अतुल्य रहा था। १९५३ में मलया में भारत से आयात, १९५२ की अपेक्षा, ४७६ लाख म० डालर से घट गया। परन्तु मलया का भारत को निर्यात ६६ लाख म० डालर से बढ गया।

१९५२ व १९५३ में मलया का भारत से जो व्यापार हुआ उसका तुलनात्मक विवरण निम्न प्रकार है:—

	(००० मलया डालर)	
	१९५२	१९५३
भारत से आयात	१,३२,६५५	८४,८०६
भारत को निर्यात	८८,५४६	६८,४३१
व्यापार संतुलन	-४४,१०६	+१३,६२२

१९५३ में मलाया का भारत से आयात कुल ८४८ लाख मलया डालर का हुआ। यह १९५२ की अपेक्षा ४७८ लाख डालर कम है।

१९५२ व १९५३ में भारत से मलाया में मगार्द गईं मुख्य वस्तुओं का तुलनात्मक विवरण निम्न तालिका में दिया गया है —

वस्तु	(१०० मलाया डालर)	
	१९५२	१९५३
सूती कपडा	६७,१६५	३७,५६६
सूती मयम	८,५४७	७,७७५
सिगरेट	१,०७७	३६
टाटगुड	६,३६२	१,७४२
जूट का माल (टाट की बोरेिया)	५,४३१	१,४७०
प्याज और लहसुन	२,४७४	२,७७८
जूट के खररे	२,८५७	१,११०
नारियल की रस्सिया	१,४५७	१,२८१
तैयार चमचा ..	१,४१७	१,३०३
बोयला	६,४४०	१,६१५
मिनार की मशीनें ..	००२	१६१
छात के पत्ते	३५०	४५२
इस्पात का फर्माचर	०३	६१
चमचे के जूते	०८४	१४५
सिनेमा के चित्र (प्रदर्शन के लिये)	३३६	५७४
छपी हुट फ्लक्के	४६६	६५३
अनिमित्त वस्त्राङ्क	१६०	२४०
ताजी मछली ...	५५	४५६
मछली की हुट ...	४२१	१६५

१	२	३
शर्क मछली के पर	६६३	४६८
ताबे कल	३८५	२६६
सूती तरकारिया	२३४	१६६
घृहा	६४६	१,४५७
मू गफनी का तेल	७४४	३४२
पेटेन्ट औषधिया ..	२०८	६०
मोटर गाडियो के टायर	१७१	३५८
साइकिल टायर	—	१२७
जूट की रस्सी	१,५६२	६४०
अन्य रस्सिया	६०६	४३८
अलूमीनियम के बरतन	२८४	१६३

१९५३ में मलाया में भारत की कुल ६८४ लाख म० डालर का माल भेजा। यह १९५२ की अपेक्षा ६६ लाख म० डालर अधिक है।

१९५२ व १९५३ में मलाया से भारत को भेजी गईं मुख्य वस्तुओं का तुलनात्मक विवरण इस प्रकार है —

	(मुख्य लाख म० डालर में)	
	१९५२	१९५३
पेट्रोलियम उत्पादन	३२३	३५६
टीन	१६३	१७१
रबर	५३	४
सुपारी ...	१८३	१४६
ताट का तेल ...	०	८३
नारियल का गोला	६	१६
नारियल का तेल	१०१	११५

फिजी : भारत से व्यापार

१९५३ के व्यापार आंकड़े, जो फिजी सरकार ने हाल में ही प्रकाशित किये हैं, उनसे पता लगता है कि १९५० के बाद पहला बार फिजी का व्यापार-सन्तुलन उसके अग्रदूल रहा है। यह विशय कर्कषे चाना व केला के नियात में वृद्धि होने से हुआ है। इसका मुख्य कारण मौसम का अनुकूल रहना है। १९५३ में हुए फिजी के कुल आयात व निर्यात का मुख्य, १९५२ की तुलना में, नीचे दिया गया है।

(पीण्डा में)

वर्ष	आयात	निर्यात
१९५३	१,०५,४८,६-७	१,३१,८०-६६८
१९५२	१,००,०८,६-०	६८,७०,७५०

फिजी का आयात व्यापार कम हो जाने से स्वभागत ब्रिटेन व आस्ट्रेलिया, जो फिजी को माल भेजने वालों में प्रमुख हैं, से होने वाले आयात को घटका पहुँचा। फिर भी इस सम्बन्ध में भारत से होने वाले आयात पर अन्ध देहों की अपेक्षा अधिक ध्यान पड़ा है। यह भारत से

मगाने गये माल के मत ५ वरा के आंकड़ों से स्पष्ट है। आगे नीचे की तालिका में दिने जाते हैं —

वर्ष	भारत से आयात (पीण्ड)
१९५३	५,८६,६३६
१९५२	८,०४,६६०
१९५१	१,६०,४६१
१९५०	३,६६,११०
१९४६	३,८६,६६०

खपत की सम्भावना

फिजी तथा उनमें ग्राम पाम के ईंधन, तोंगा, मनोआ और न्यू कैलाडोनिया में निष्कृष्टा के आंतरिक टांकिना और अखंडी किन्ग की धानी की निष्कृष्टा का बड़ी मांग है। ये अन्ध आस्ट्रेलिया और ब्रिटेन से मगार्द जाती हैं। इनमें से कुछ भारतीय निष्कृष्टा में काफी परिण होता है।

जानकारी विभाग

औद्योगिक विषय

मैसूर का लोहे और इस्पात का कारखाना

कपूर मे लटकती एक बाल्टी आती है और कच्ची धातु के ढेर में से थोड़ा सा मरकर तार के सदृश चलती है तथा भट्टी में उसे जा उड़ेलती है। चार घंटे के बाद यह धातु पिघलकर शुद्ध रूप में बाहर निकलती है और ठंडी होकर लोहे के बड़े बड़े ढोंकों की शक्ल में बदल जाती है। यह काम मद्रासकी के मैसूर आयल एण्ड स्टील वर्क्स में निरंतर चलता रहता है। इस कारखाने में इस्पात और लोहे के नलों के अलावा प्रतिदिन १०० टन कच्चा लोहा तैयार होता है। पंचवर्षीय योजना के अंत तक इसका उत्पादन दुगुना हो जाने की आशा है।

मद्रासकी का लोहे और इस्पात का कारखाना बंगलौर से लगभग १०० मील की दूरी पर है। इसकी स्थापना १९२३ में हुई थी और उस समय इसका मुख्य उद्देश्य इस स्थान के निम्न मिलने वाले पत्थरों का उपयोग करना था। मद्रासती से ३० मील दूर वेम्पतुथुडी में लोहे की खानें और २५ मील दूर चूने के पत्थर की खानें हैं। आस पास के जंगलों से लकड़ा का कौयना आसतमों से मिल जाता है।

आरम्भ में कारखाने का उत्पादन केवल ५ हजार टन कच्चे लोहे तक ही सीमित रखा गया था। इस लोहे का अधिकांश बाहर भेज दिया जाता था। १९३६ में इस्पात का भी कारखाना स्थापित किया गया। इसके बाद सीमेंट और फेरोसिलीकन के कारखाने स्थापित किये गये।

कारखाने के विस्तार के साथ साथ इसका आयुर्निर्धारण भी होता रहा है। उदाहरण के लिये देश में केवल इसी कारखाने में बिजली की भट्टी है। बिजली की भट्टी से लोहा बनाने का आर्थिक महत्व है। जोग के कम्पा में जो बिजला तैयार होती है यह भट्टी उमी से गर्म होती है और अक्टूबर १९५२ से बराबर काम कर रही है। दो और भट्टिया शीम ही लगाई जाने वाली हैं।

बिजली की भट्टी द्वारा कच्चे लोहे से इस्पात बनाने की एक नई विधि निष्कली गई है। अब इस्पात बनाने के लिए लोहे को टुंडा करने की आवश्यकता नहीं रहती है। गर्म लोहे में ही चूने का पत्थर प्रौर दूसरी चीजें मिला दी जाती हैं और मात्रा में ठानकर इस्पात टाल दी जाती है।

इस्पात की सलाखों की सरिज और पत्तर बनाने वाले कारखाना में ले जा कर हथौड़ा से पोंदकर मान को मोर और चप्पे आकार का बना दिया जाता है। कपास और पट्टन की गाँठें बांधने की पतिया भी यहाँ बनाई जाती हैं। इन सब चीजों का वार्षिक उत्पादन २० हजार टन है।

कुछ इस्पात नल बलने के काम आता है। इस्पात, कच्चे लोहे और प्लार्ड के काम आने वाले लोहे को मिलाकर पानी के नल बनाये जाते हैं। इनका वार्षिक उत्पादन माडे सत से ६ हजार टन के भीन् होता है। कारखाने को गाँठों, बिजली के तारों, पानी की टकियों, चिमनियों, मकानों के टारों और खम्भों आदि के बनाने के भी आर्डर मिलते रहते हैं।

यह कारखाना देश के और इस्पात कारखानों की भी सहायता करता है। देश में यही एक ऐसा कारखाना है जो फेरो गिलीवन नामक एक मिश्रित धातु बनाता है। यह मिश्रित धातु इस्पात बनाने में काम आती है। अभी तक इसका वार्षिक उत्पादन ५ हजार टन है। पर कारखाने की शक्ति अनुमान उत्पादन होने पर, न केवल इससे देश की सारी आवश्यकता पूर्ण होगी बल्कि इस्पात का निर्यात भी संभवेगा। यहा पर लोहे की अन्य मिश्रित धातुएं (फेरो अलाय) जैसे फेरो क्रोम, फेरो मैंगनीज आदि बनाने के लिए भी यत्न किये जा रहे हैं।

आम पास चूने का पत्थर, मिट्टी और मदी की खेत प्रचुर मात्रा में मिलने के कारण मैसूर के इस्पात कारखाने न सीमेंट बनाने का भी विचार किया और १९३८ से सीमेंट बनाना शुरू कर दिया। पहले पहल तो यहाँ प्रतिदिन ६० टन सीमेंट ही बनता था पर १९५२ से दैनिक उत्पादन २२५ टन हो गया है।

कारखाने के विस्तार के साथ मजदूरों के हित और बलयाण की ओर भी ध्यान दिया जाता है। पांच वर्ग मील के क्षेत्र में मजदूरों को एक बस्ती भी बसाये गयी है। कारखाने के ६ हजार कर्मचारियों में से आधे से अधिक इसमें रहते हैं। वरा ३१ रोगियों को रखने योग्य एक अस्पताल भी है, जहा कर्मचारियों की सुस्थ चिकित्सा होती है। इसके अलावा ६ प्राथमिक पाठशालाएं, ८ मिडिल स्कूल और लड़के और लड़कियों के दो हाई स्कूल हैं। नौकरियों के लिये एक प्रौद्योगिक स्कूल भी है।

इन सुविधाओं के अलावा यहा बैंक, सहकार समितियां, वाचनालय, मजन मंदिर, महिला शिक्षा केन्द्र और खेलने के क्लब भी हैं।

वाइक्रोमेट उद्योग का संरक्षण जारी रहेगा

भारत सरकार ने तटकर आज़म (डैरिफ कमीशन) की वाइक्रोमेट उद्योग को संरक्षण जारी रखने सम्बन्धी रिपोर्ट पर अपना निश्चय प्रकाशित कर दिया है।

मन्त्रालय ने तटकर आज़म (डैरिफ कमीशन) की यह सुझाव विचारित मान ली है कि उद्योग को इस समय को संरक्षण मिला हुआ है वह २ जनवरी,

१९५५ से चार वर्षों के लिये और आगे बढ़ा दिया जाय। सरकार शुरूक की दर बढ़ी रहेगी; जो उस समय है, अर्थात् मूल्य की ३१।। प्रतिशत जिसमें सरकारवादी भी सम्मिलित है। संरक्षण का यह शुरूक शीघ्र मिश्रणों तथा सोडियम बोटॉशियम वाइक्रोनेटों पर भी लिया जाता रहेगा।

सरकार ने तटकर आयोग (टैरिफ कमीशन) भी उद्योग को सहानता देने सम्बन्धी कुछ अन्य विचारों भी मान ली हैं।

केन्द्रीय उद्योग सलाहकार परिषद

नारत सरकार ने उद्योग (विकास और नियमन) अधिनियम १९५१ के अन्तर्गत नियुक्त की गई केन्द्रीय उद्योग सलाहकार परिषद का पुनः संगठन कर दिया है। वारिण्ड और उद्योग मंत्री श्री टी० टी० कृष्णामाचारी परिषद के अध्यक्ष हैं और उनमें अनुसूचित उद्योगों के १२, इन उद्योगों में काम करने वालों के ५, उपभोक्ताओं के ५, और प्राथमिक उत्पादकों आदि के ५ प्रतिनिधि सदस्य रूप में रहेंगे। यह परिषद पहले मई १९५० में २ वर्षों के लिये बनाई गई थी।

अनुसूचित उद्योगों के प्रतिनिधि इस प्रकार हैं श्री बी० एम० विटला, श्री बी० टी० विटला, श्री बनूर नारद लाल नारद, श्री सुरारजी बे० वैद्य, श्री वे० गी० वर्मा, श्री जी० एस० मेन्डिरे, लाला भीराम, श्री कानचन्द थार।

काम करने वालों के प्रतिनिधि श्री एस० आर० वनानदा, श्री खण्डमाद के देवरा, श्री मादकल मान, श्री एस० ए० ड्यांग और श्रीमती मण्डेन बारा।

उपभोक्ताओं के प्रतिनिधि पी० हुटवनाय कु जन श्री एन० कननगो, श्री विमल कुमार डोग, श्रीमती अनुसूचा नार बरले, और श्री आर० वेंकटरमन।

प्राथमिक उत्पादकों आदि के प्रतिनिधि डा० बे० सी घोष, श्री रामनरानी मद्रालियार, श्री रामधर माधोराव देशमुख, श्री गुड गोविन्द वतु, और श्री टी० एल० देशपांडे।

अप्रैल १९५४ में बिजली का उत्पादन

अप्रैल १९५४ में भारत के ६५१ बिजली घंटे में कुल ६,०५६ लाख किलोवाट घण्टे बिजली उत्पादन की गई, जिसमें से ५,०५४ लाख किलोवाट घण्टे उपभोक्ताओं को बेच दी गई। इन आंकड़ों में ३ नये बिजली घंटे के उत्पादन भी सम्मिलित हैं जो आंध्र के विद्दूर में, बन्दर के

कारवार नगर में और बिहार के साबरी स्थान में हैं। मार्च की अनेका इस मास का उत्पादन १६२ लाख किलोवाट घण्टे अधिक रहा।

अप्रैल १९५३ में बिजली के उत्पादन व बिक्री के आंकड़े क्रमशः ५,२५६ लाख किलोवाट घण्टे तथा ४,३०२ किलोवाट घण्टे और अप्रैल १९६६ में २,०४७ किलोवाट घण्टे तथा १,७२० किलोवाट घण्टे रहे थे।

जून में कोयले के उत्पादन में कुछ कमी

खानों के मुख्य मिचेलर के अनुसार जून १९५४ में कोयले व कोक के उत्पादन तथा भारत की कोयले की खानों में दैनिक रूप से काम पर लगाये गये मजदूरों का औसत संख्या में सामान्य रही।

आलोच्य मास में ८४६ कोयला-खानों में काम होता रहा, जबकि गत मास ८८८ खानों में होता रहा था।

कोयले का उत्पादन मई में २६,७६,११४ टन में घटकर जून में २८,८५,१२२ टन रह गया। खानों के कोक बनाने के कारखानों में तथा अन्य मकान, मुलायम व अन्य विन्मा का ३,२६,०५४ टन कोक तैयार हुआ, जबकि मई में ३,२८,६०० टन कोक तैयार हुआ था।

जून में दैनिक रूप से काम करने वाले मजदूरों का औसत मई में २,०८,०६० में घटकर २,२०,२६० रह गया। खानों तथा लाइनें वालों का प्रति टन खानों का उत्पादन लगभग १.०६ टन पर स्थिर रहा। अनुसूचितों का प्रतिशत, मई में १३.४६ में घटकर जून में १३.३६ रह गया।

चीनी के नये कारखानों के लिये आवेदनपत्र

चीनी के नये कारखानों स्थापित करने अथवा पुरानों का विस्तार करने के लिए भारत सरकार के पास जो आवेदनपत्र आये हैं उन पर विचार करने के लिए लाइसेंस समिति में एक उपसमिति स्थापित की है। इसके सदस्य निम्न प्रकार हैं श्री बी० बी० स्वसेना, डिप्टी सेक्रेटरी, वारिण्ड और उद्योग मन्त्रालय, श्री टी० प्रसाद, विशेष पदाधिकारी (चीनी), लाय आर डी मन्त्रालय, श्री जी० सी० मार्ग, चीना अनुसंधानशाला, कानपुर में चीनी इंजीनियरिंग के सहायक प्रोफेसर, श्री गन्तलाय टट, आइ-टेकर, चीनी गदेषणा केन्द्र कोयलनूर और श्री के० पी० जैन, डिप्टी टाईटेर (चीनी) न्याय और डीपी मन्त्रालय।

राज्यों के आवेदनपत्रों पर विचार करते समय उपसमिति में राज्य सरकार के एक-दो प्रतिनिधि और ले लिये जायेंगे। येन प्रमाणन का एक प्रतिनिधि भी आकस्मिकतातुम्हारा रखा जायगा।

गृह उद्योग

ग्रामोद्योगों का विकास

भारत सरकार ने छोटे हथकरघा तथा ग्राम उद्योगों के विकास के लिये और भी अनुदान व ऋण देना स्वीकार किया है।

अखिल भारतीय खादों व ग्रामोद्योग बोर्ड की १७ लाख रु० का ऋण दिना गया है। इस रकम में से ६ लाख रु० गाव के तीन उद्योग के विकास

में तथा ६ लाख रु० धान का हाथ में कुटार करने सम्बन्धी योजना को कार्यान्वित करने में लगाए जायेंगे।

यह उद्योग के विकास के निमित्तने में, राज्यस्थान को एक नमूना बनाने का प्रदर्शन केन्द्र स्थापित करने के लिये ३१,७४० रु० तथा मौराड़ को खम्बिल यह उद्योगों की प्रथमपय विन्यासों के लिये १२,००० रु० निने हैं।

हाथ करपा उद्योग के विकास के लिये अग्रम को ३,११,०८६ रु का अनुदान प्राप्त हुआ है। उद्योग की रकम का उपयोग अन्य बर्तनों के अतिरिक्त डिजाइनों तैयार करने की फैक्ट्रियां जोलने तथा अच्छे उपकरण उपलब्ध करने में किया जायगा।

मद्रास को १,५०,००० रु दिये गये हैं, जिसमें से आधी रकम अनुदान के रूप में तथा शेष आधी ऋण के रूप में दी गई है।

पश्चिमी बंगाल को ४५,००० रु का अनुदान तथा २५,००० रु का ऋण दिया गया है। अनुदान की रकम से अच्छे उपकरण खरीदे जायेंगे, जबकि ऋण का उपयोग उन कपड़ों की खरीदने में किया जायगा जो चलती फिर्ती गाड़ियों में बने जायेंगे।

मण्डिपुर को उसकी सहकारी समितियों की पूंजी के लिये ३०,००० रु का ऋण दिया गया है।

आसाम को हथकरघे के कपड़े के विक्रय पर छूट देने के लिये २५,००० रु का अनुदान प्राप्त हुआ है।

पेश्वे को १३,६५० रु ऋण स्वरूप दिये गये हैं। इस रकम का उपयोग बुनकरों की चालू तथा नई सहकारी समितियों की पूंजी के रूप में किया जायगा।

मध्यप्रदेश को ५,३३० रु का अनुदान मिला है। इस रकम से राज्य के हथकरघा उद्योग के विकास का आर्थिक व्यय चलाया जायगा।

गृह उद्योगों के विकास के लिये सहायता

भारत सरकार ने १० अगस्त, १६४४ को समाप्त दो वर्षाहों में कपड़ा, खादी, ग्राम तथा गृह उद्योगों के विकास के लिए और अधिक अनुदान तथा ऋण देना मंजूर किया है।

अग्रम राज्य की उत्तक हाथ करपा उद्योग के विकास के लिए ६,७३,१२५ रु का ऋण तथा गृह उद्योगों के विकास के लिए ३,००० रु का अनुदान स्वीकार किया गया है। ऋण की रकम का उपयोग सहकारी समितियों में सम्मिलित होने वाले ६,५०० बुनकरों के लिए हिस्सा पूंजी लगाने के रूप में तथा इन समितियों की काम चलाऊ पूंजी के रूप में होगा। अनुदान की रकम से ही डिजाइनों तैयारी आदि का केन्द्र स्थापित करने में लगाई जायगी।

विप्रा को २३,८५० रु का अनुदान दिया गया है। इस रकम से २ गाड़ी पर खोले जायेंगे तथा थोमेगाले शटल के ८०५ कपड़े के बंदले प्लाई शटल करने लगाए जायेंगे।

करघे के कपड़ा की विक्री की दृष्टान्त जोलने के लिए पेश्वे को ७,८८८ रु का अनुदान दिया गया है।

आसाम को ८३,२०० रु प्राप्त हुए हैं जिसमें ७३,२०० रु अनुदान के रूप में तथा शेष ऋण स्वरूप हैं। अनुदान की रकम का उपयोग ४ विक्रय-भंडार योजना तथा २ चल फिर कर कपड़ा बेचने वाली गाड़िया खरीदने में किया जायगा, जबकि ऋण का उपयोग इन गाड़ियों के लिए कपड़ा खरीदने में किया जायगा।

मध्यप्रदेश को १४,७५० रु का अनुदान तथा १,५०० रु का ऋण देना स्वीकार किया गया है। वह रकम लोहे की १,००० नलियों तथा बेक गाई लगे हुए १० कपड़े खरीदने में लगाई जायगी।

गृह उद्योगों का विकास करने के लिए पंजाब को ०६,०८० रु का अनुदान दिया गया है। इस रकम का उपयोग सुवस्त्र-इन उद्योगों से सम्बन्ध प्रशिक्षण या उत्पादन केन्द्र स्थापित करने में किया जायगा। चमड़ा पुन बसाने तथा समापन का केन्द्र ५,८,८८६ रु, वास की तथा अन्य वस्तुओं के उत्पादन का प्रशिक्षण केन्द्र १०,०६८ रु, ग्राम क्षेत्रों में जहाँ विजली उपलब्ध है, लोहारी के काम का एक प्रशिक्षण केन्द्र ४,६१८ रु, जूते तथा चमड़े के सामान बनाने का प्रशिक्षण उत्पादन केन्द्र ४,५८५ रु वने।

चमड़ा बसाने के उद्योग का विकास करने के लिए बम्बई को ४३,६८५ रु का अनुदान दिया गया है। इसके अन्तर्गत चमड़ा बसाने की १४ प्रशिक्षण शालाएँ खोली जायगी।

उपयुक्त राज्या के अतिरिक्त हाथ करपा उद्योग के विकास के निमित्त अखिल भारतीय हाथ करपा बोर्ड को ४,२०,००० रु की रकम दी गई है।

अखिल भारतीय खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड को विभिन्न प्रकार के गृह उद्योगों के विकास के लिए अनुदान तथा ऋण स्वीकार किया गया है। इसका निरवय इस प्रकार है -

(१) खादी उद्योग—इस उद्योग के विकास के लिए बोर्ड को २,३४,००० रु देने को स्वीकृति दी गई है जिसमें १,५६,००० रु अनुदान के रूप में तथा शेष ऋण के रूप में होगा। यह रकम गोदाम बनाने तथा बुनार केन्द्रों में बुनकरों के परिवारों को फिर से बसाने के काम में लाई जायगी।

(१) हाथ से चालू खादी उद्योग—इस सम्बन्ध की एक योजना को कार्यान्वित करने के लिए बोर्ड को १,३१,००० रु का अनुदान दिया गया है। वह रकम १,२०० नर्मचारियों को प्रशिक्षण देने तथा प्रचार आदि के कामों पर लगाई जायगी।

(३) गुट तथा जाड़सारी उद्योग—इस सम्बन्ध में बोर्ड को १,३५,००० रु का ऋण दिया गया है, जो गोदाम बनाने और गुट तथा जाड़सारी के विकास पर होने वाले अतिरिक्त व्यय के लिए ६ केन्द्रों को उल्लू और ऋण देने के काम में लाया जायगा।

(४) तेल उद्योग—ग्राम के इस उद्योग की एक योजना को कार्यान्वित करने के लिए बोर्ड को ७०,००० रु अनुदान दिया गया है।

(५) मिट्टी के बर्तनों का उद्योग—इस उद्योग के विकास के लिए बोर्ड को २०,००० रु का ऋण दिया गया है।

(६) ग्रामोद्योग—ग्रामोद्योग के विकास के व्यवस्थित कार्यक्रम के निमित्त १५,००० रु का अनुदान दिया गया है।

(७) चमड़ा उद्योग—ग्राम के इस उद्योग के विकास के लिये बोर्ड को २,०७,६०० रु दिये गये हैं, जिसमें ७७,००० रु ऋण के रूप

में हैं। यह रकम ६० शिद्धाधियों का खर्च पूरा करने तथा ७ आदर्श चमशालाएँ खोलने आदि पर लगाई जायगी।

(८) मनुमक्ली पालन उद्योग—इसके विकास के लिए बोर्ड को

१,३५,००० रु० का अनुदान दिया गया है। इस रकम से मनुमक्ली पालन के २५ आदर्श केन्द्र तथा ५० उपकेन्द्र खोले जायेंगे। इनके आतिरिक्त इससे कुछ व्यक्तियों को प्रशिक्षण भी दिया जायगा।

व्यापार की उन्नति

भारत और इटली का व्यापार

भारत और इटली की सगरीरों के बीच जो व्यापार सम्बन्धी बातचीत चल रही थी उसने फलस्वरूप २६ जुलाई, ५४ को नई दिल्ली में, दोनों सरकारों के प्रतिनिधियों के मध्य एक व्यापार व्यवस्था हो गई। यह व्यापार तन्त्राला ही अमल में आ चुकी है और ३१ दिसम्बर, १९५५ तक लागू रहेगी। इस व्यापार व्यवस्था में जो अग्रदुर्घिया लगाई गई है उन पर १९५५ के आरम्भ में पुनर्विचार किया जा सकेगा।

व्यापार में उन्नति करने के उद्देश्य से दोनों देशों ने एक दूसरे के साथ बड़ी व्यवहार करना स्वीकार किया है जो वे उसी मुद्रा-वर्ग के अन्य देशों के साथ करते हैं।

भारत में इटली को जो वस्तुएँ भेजी जा सकेंगी उनमें कुछ महत्वपूर्ण ये हैं :—चाय, तम्बाकू, कोयला, खनिज जैसे खनिज लोहक, क्वालाइट खनिज, क्रोम खनिज (कच्ची श्रेणियों के आतिरिक्त) व वाक्साइड, लाख व चमड़ा, वस्त्रों व भेड़ की कच्ची खालें, बनस्पति उद्भवशील तेल, रुई—कच्ची व गढ़ी, रेशम रई, कुछ दवाइयाँ व औषधियाँ, तारपीन, चमड़े के जूते, बालीय, नारियल की जटा और उमकी लुनली तथा उससे बनी वस्तुएँ, कच्चे बाल, कान का सामान (धरमास फ्लाम्क के अतिरिक्त), लिनोलियम, कार्डिय डहन, तेल के मामान, टस्कनारी की वस्तुएँ तथा भारतीय फिल्ले।

इटली से भारत को जो वस्तुएँ भेजी जा सकेंगी, उनमें कुछ ये हैं :—मिट्टी, सरसिल खाद्य, नकली च्यापी सूत व रज्ज, बिसाठी का बाना, अल्युमीनियम व उसके मिश्रित पदार्थ, मैगनीशियम के मिश्रित पदार्थ व सम्बद्ध वस्तुएँ, तेल के डहन डिब्बे, बाल व रोजर पैरिंग, रंगीन के यंत्र तथा बर प्रकार के औद्योगिक व विजली के यंत्र, यद्यपि राइटर, हिस्सा विताय करने की मशीनें, मशीनी औजार, औद्योगिक भाँटियाँ सिनेमा चित्र, प्रदर्शन के यंत्र, उपकरण आदि जोड़े खीचने के कैमरे चित्रों की फिल्ले एडमरे ड्यू, न्याय, गन्धक—कच्ची व शोधित, रंग और आग जुमाने के यंत्र उपकरण आदि।

दोना सरकारों द्वारा एक दूसरे को निम्न प्रकार की सुविधाएँ देना भी स्वीकार किया गया है—

- (१) एक दूसरे के जहाजा को बिना पत्रपत्र के नौति करने, वहाँ सुविधाएँ देना जो वे अन्य देशों को देना करते हैं।
- (२) दोनों देशों की हवाई लाइन्स का उन्नति के लिये मान्य व यात्रियों के परिचयन को प्रासाहित करना।
- (३) दोनों देशों के बीच आर्थिक तथा औद्योगिक सहयोग धनप्रदान करना।

सीमाशुल्क तथा व्यापारिक सामान्य सम्झौता

अप्रैल व मई १९५४ में भारत सरकार ने जेनेवा में सीमाशुल्क तथा व्यापार सम्बन्धी सामान्य सम्झौते (General Agreement of Tariffs and Trade) के तन्वाधान में बातचीत की थी जिसका उद्देश्य कुछ ऐसी वस्तुओं पर आयात शुल्क बढ़ाने की छूट प्राप्त करना था जिन पर पहले और अधिक शुल्क न बढ़ाया जाना तय हुआ था। यह बातचीत विशेषतः उन देशों के प्रतिनिधियों के साथ की गई किन्हीं या तो पहले रियायते दी गई थीं या जो सम्बद्ध वस्तुओं को भारत भेजना चाहते थे।

उपयुक्त बातचीत के फलस्वरूप भारत को निम्न वस्तुओं पर आयात शुल्क बढ़ाने की छूट मिल गई है :—

- (क) तारपीन के रंग, जो भारतीय सीमाशुल्क मट न० ३०७३ में सम्मिलित है।
- (ख) रेजर ब्लेड।
- (ग) कैंच के मनके व नकली मोती, और
- (घ) शराबे जिनमें प्रुफ लिमिटेड ४२ प्रतिशत से अधिक न हो।
- (१) शेण्डन तथा अन्य चमकदार शराबे, और
- (२) अन्य प्रकार की शराबे।

उपयुक्त शुल्क बढ़ाने की सुविधा के बदले भारत ने भी निम्न वस्तुओं पर शुल्क कम करना स्वीकार कर लिया है :—

- (क) प्लास्टिक के कुछ कच्चे माल जैसे, मेल्युलोग प्लास्टिक (मेल्युलोग एसोसिटेड, रिनाल्ट रोजन तथा स्टॉरिन को छोड़कर)
- (ख) निम्न रकम मान जो छोटे औजारों को बनाने के काम आते हैं।
- (१) बटोर दस्ताव जिसमें १३ प्रतिशत से अधिक टंगस्टन (Tungsten) न हो।
- (२) मिश्रण मिश्रित दस्ताव जिनमें, इनमें से कोई एक वस्तु हो।
- (३) ०.१० प्रतिशत या अधिक मोलिब्डेनम व निकल।
- (४) ०.१० प्रतिशत या अधिक उरनामक (Molybdenum) टंगस्टन या वेनेडियम।

इसके अतिरिक्त भारत ने निम्न वस्तुओं पर आयात शुल्क घटाना भी स्वीकार किया है। एन्टी बायोडिफेंस औषधियाँ, लुनेन के यंत्र (विजली के) घातु की प्रोमों के टायर तथा दूध की साथ वस्तुएँ।

चीन भारतीय तम्बाकू खरीदेगा

भारत के वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय ने प्राप्त सूचना के अनुसार

चीन भारत से उसकी १६५३ की फसल की २,००० टन (मेट्रिक) तम्बाकू खरीदेगा। यह सौदा सरकार की ओर से सुदूर पूर्व के देशों को भेजे गये भारतीय तम्बाकू प्रतिनिधि मण्डल द्वारा किया गया है।

वारिाज्य व्यवसाय

समुद्र तथा वायु मार्गों द्वारा भारत का विदेशी व्यापार

जून १९५४

जून १९५४ में निजी तथा सरकारी साधनों से समुद्र और वायु मार्गों द्वारा हुए विदेशी व्यापार के अन्तर कालीन आकड़े नीचे दिये गये हैं। ये आकड़े कलकत्ते के व्यापारिक जलकारी और साख्यको विभाग में उपलब्ध सामग्री के आधार पर तैयार किये गये हैं।

व्यापारिक माल—

इन्में पाकिस्तान होकर हुआ नक्रमण व्यापार सम्मिलित नहीं है, परन्तु स्थल सीमा से लगे अन्य देशों से हुआ व्यापार शामिल है —

निर्यात	४,१८८ लाख रु०
पुनर्निर्यात	४३ लाख रु० (सक्रमण व्यापार ५ लाख रु०)
आयात	४,३७८ लाख रु० (सक्रमण व्यापार नगण्य)
कुल व्यापार	८,६०६ लाख रु०

कोय—

निर्यात—

बरेंसी नोटों का निर्यात (पुनर्निर्यात सहित) ... ४ लाख रु०
अन्य ... रु०

आयात—

सेने का आयात . २ लाख रु०
बरेंसी नोटो का आयात . ६८ लाख रु०
अन्य रु०

व्यापार संतुलन—

आयात किये गये व्यापारी माल में ऐसे सरकारी माल का मूल्य शामिल नहीं किया गया है जिसका समायोजन होना शेष है। आयात के आन्तों से इन् मूल्य के अलग रहने और सक्रमण व्यापारी माल शामिल न करने के पश्चात् निर्यात किये गये व्यापारी माल (जिसमें पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है) सेने और चाटी का कुल मूल्य, आयात किये गये माल से १५४ लाख रु० कम रहा।

व्यापार नियन्त्रण

मूंगफली के तेल का निर्यात

दस वर्ष के आरम्भ में मूंगफली के तेल का मूल्य बराबर गिरता रहा है। अब अधिकांश बाजारों में वट लगभग १,२०० रु० प्रति टन पर स्थिर हो गया है। दक्षिण भारत के कुछ भागों में, ये मूल्य और भी गिरते प्रतीत होते हैं।

उत्पादकों तथा व्यापारियों के पास बर्दा माना में मूंगफली तथा बर्दा बर्दा मूंगफली के तेल का स्टाक पडा हुआ है। दुखलिये और भी मूल्य गिर जाने की सम्भावना है। सरकार वर्तमान स्तरों पर मूल्यों को स्थिर रखने के पक्ष में है और यह नहीं चाहती कि मूल्य और अधिक गिर जाय। इसी उद्देश्य में यह निश्चय किया गया है कि उपराने निर्यातकों द्वारा मूंगफली के तेल का थोड़े परिमाण में निर्यात करने की स्वीकृति दी जाय प्रति टन ३५० रु० निर्यात शुल्क लगाने से, मूल्यों को वर्तमान स्तर पर स्थिर करने का निश्चय है।

निर्यात के केंपे बन्दरगाहों पर लाइसेंस अधिचारियों द्वारा उपराने निर्यातकों को दिये जायगे। ये केंपे उन्हें उनके सर्वोत्तम वर्ष के निर्यात के आधार पर दिये जायगे। ये १६४८ रु०, १६४६ रु०, १६५०-५१, १६५१-५२ इन चार वर्गों में से किसी भी एक वर्ष में, जा उन्होंने पहले ही चुन लिया है, उनके द्वारा हुए निर्यात का १५ प्र० श० होंगे। परन्तु ये प्रति निर्यातक के लिए अधिक से अधिक ४०० टन और कम से कम ५ टन

के लिये होंगे। इन केंपे के अनुसार अक्टूबर १९५४ के अन्त तक निर्यात किया जा सकेगा।

इसके साथ ही प्रशासित की गई अन्य निर्यात द्वारा सरकार ने १५० रु० प्रति टन (२,०४० पाउंड का एक टन) निर्यात शुल्क लगा दिया है।

चाय के निर्यात का कोटा

अप्रैल के प्रथम सप्ताह में, ३,६५६ लाख पाउंड चाय, जो भारत के प्रतिमानित निर्यात केंपे का १०५ प्र० श० है, निर्यात करने के लिये दी गई, जबकि अधिक से अधिक १३५ प्र० श० निर्यात की जा सकती है। हाल में चाय के निर्यात कोटा के मूल्य में असाधारण वृद्धि हो जाने से, भारत सरकार ने १५ प्र० श० तक और भी चाय निर्यात के लिये दे देने का निश्चय किया है। इसके निर्यात का कुल परिमाण अन्तर ४,१७६ लाख पाउंड हो जायगा।

रुई का अग्रगऊ व्यापार

भारत सरकार रुई के अग्रगऊ सौदे का अग्रगऊ व्यापार (नियमन) अधिनियम, १९५० [Forward Contracts (Regulation) Act, 1952] के अन्तर्गत नियमन करने के प्रश्न पर विचार कर रही थी। साधनकी के साथ विवेचन के पश्चात् तथा अग्रगऊ बाजार आयोग (Forward Markets Commission) की सिफारिशों के आधार

पर, यह निष्पत्ति दिया गया है कि वह अधिनिम्न तबाल ही भारतीय दर पर लागू किया जाय। भारत सरकार के ३० जुलाई, १९४५ के क्रमाधार १८३३ में एक सूचना प्रकाशित हुई है जिसे क्रमुत्तर इस अधिनिम्न की धारा ५४ का सम्बन्ध देश में भारतीय दर पर लागू कर दिया गया है।

इस निश्चिति के क्रमुत्तर मान्य मस्याओं के मर्यादा या किमी मर्यादा के द्वारा बिने गण मौरा के अनिश्चित क्रम्य मर्या प्रकार के क्रमांक मौराे अत्रैष माने जायेगे।

इस सूचना के परिपोमन्वकप बन्ध क्रमांक व्यापार नियन्त्रण अधिनिम्न १९४७ की वे धाराए की भारतीय दर से सम्बन्ध नरती थी सब रट हो जायगी। क्रमांक मौरा (नियमन) अधिनिम्न की धारा २६ के क्रमुत्तर बन्ध सरकार द्वारा २६ इण्डिया दर एमोनिशयन लि० बन्ध की टी गरी मान्यता तब तक दयावत प्रनी रहेगी उरतक कि इस सम्बन्ध मे सरकार द्वारा क्रमांक मौरा (नियमन) अधिनिम्न के क्रमगत उचित कार्यवाही नहीं कर दी जायगी।

चावल की चोकर का निर्यात

भारत सरकार ने चावल की चोकर विदेशों को निर्यात करने सम्बन्धी नीति पर पुनर्निर्धार किया है तथा विशेष उद्देश्य के आधार पर, एक सीमित कोटि के अन्तर्गत निर्यात करने की अनुमति देने का निर्णय किया है। इस सम्बन्ध में कोटि की सीमा तथा लाइसेंस प्रणाली आदि का निम्नलिखित विवरण निर्यात व्यापार नियन्त्रण अधिकाधिकों द्वारा बन्दरगाहों पर तथा राजकोट में सूचित किया जा रहा है।

तम्बाकू के निर्यात में सुविधा

भारत सरकार को बताया गया है कि बड़े दर्जे की भारतीय तम्बाकू का निर्यात करने की बड़ी गुंजाइश है, लेकिन विदेशी मुद्रा व अग्रगत सम्बन्धी बाधनाओं के कारण विदेशों के व्यापारी भारत की यह तम्बाकू बन्दरगाहों में लेना पारते हैं। जो निश्चयि बन्धनियता या बन्धनियता भारत की यह तम्बाकू आयात करना चाहते हैं उनका कहना है कि उनके मूल्य का अनुमान वे भारत की अधिक माल भेजकर करना चाहते हैं, जिनकी सुविधा उन्हें नहीं है।

अतएव, भारतीय तम्बाकू का निर्यात करने और विदेशी व्यापारियों की अनुमतिपूर्ण अनुमति बाधनाओं दूर करने के लिए भारत सरकार ने निम्नलिखित प्रोत्साहन योजना का पारषय बन्धक सुलु शिर्षों के साथ तदय आयात लाइसेंसों मर्या १-११ का आदेश किया है। शर्तों में है— (१) भारत में विश्व बाजार का आयात करना है, यह सरकार की आयात मर्यादा उदात्तनीतिक के अन्तर्गत जाना हो (२) जिस देश में पहले से माल मर्या है, उसे भारत से तम्बाकू मर्या के अनुमति सम्बन्धी लिखितें हो, और (३) दम्बाकू प्रायोजक सरकार का निश्चित प्रमाण दे मरे कि निश्चित बिम्बी का भारतीय तम्बाकू की खरीद व लिए सम्बन्धित देश के बन्धन से उम्मा मौरा पक्का हो चुका है।

वदर की शर्त पूर्ण होने पर, पहले क्रम्यांश आयात लाइसेंस दिने

जायेंगे। बाट में बच यह प्रमाणित हो जायगा कि तम्बाकू उस विदेश को भेज दी गयी, तब दून क्रम्यांश आयात-लाइसेंसों की पुर्ति बरती जायगी।

यदि तम्बाकू का निर्यात पहले करने में वास्तविक अड़चनें हैं, और भारतीय व्यापारी तम्बाकू के बदले विदेश से सामान पहले मंगाया चाहता है तो उसे लाइसेंस अधिकारी को यह प्रमाण देना होगा कि निश्चित बिम्बी की भारतीय तम्बाकू के निर्यात करने के लिये सम्बद्ध देश से वहाँ में बदले में बह माल मंगा रहा है, उम्मा सीमा लिखी हो चुकी है। आयात लाइसेंस की पुष्टि बिने जाने पर, ऐसे लाइसेंस से माल सुदामा जा सकेगा। लेकिन इस सम्बन्ध में व्यापारी को सम्बद्ध बन्दरगाहों पर आयात नियन्त्रण अधिकारियों के साथ इस आयात का एक बन्धक (Bond) भरना आवश्यक होगा कि आयात लाइसेंसों के टिय जाने से चार महीनों के भीतर तम्बाकू का निर्यात किया जायगा। इस बन्धक का दायित्व बिम्बी बैंक पर होगा जो आयात लाइसेंस के २० प्र० श० मूल्य के लिये उत्तरदायी होगा। लाइसेंस प्राप्तकर्ता द्वारा निर्धारित अधिने सम्बद्ध व्यापार निर्यात अधिकारियों को तम्बाकू के वास्तविक निर्यात करने का प्रमाण न दिने जाने पर, उपयुक्त रकम सरकार द्वारा जब्त की जा सकेगी।

तम्बाकू के निर्यात का आवश्यक प्रमाण देने पर बन्धक रट कर दिया जायगा। साथ में खाद्य व वृष्टि मन्त्रालय, के प्रमुख तम्बाकू अधिकारी का यह प्रमाण पत्र भी होना चाहिये कि जेना गया तम्बाकू का माल निर्यात बिम्बी तथा १९४५ से पूर्व की फसल का था।

व्याज का निर्यात

भारत सरकार ने जुलाई दिम्बर १९४५ के लिये बन्धक व सीरान्ट के रूप में प्याज का निर्यात करने के कोटि दे दिये हैं। इस सम्बन्ध में लाइसेंस प्रणाली का निर्यात निर्यात व्यापार नियन्त्रण अधिकारियों द्वारा बन्धक तथा राजकोट में सूचित किया जा रहा है।

च बल का निर्यात

भारत सरकार ने वेकल बन्धक व बन्धक के बन्दरगाहों में सुलु परिमाण में चावल का निर्यात करने की अनुमति देने का निश्चय किया है। दम्बे किने लाइसेंस उन मौरा की बहाली इण्डिया के दिने जायेंगे जिन्हे निर्यात विदेशों खरीदने के साथ मौरा बन्धे के बट ५८७७ के भीतर बन्धक निर्यात व्यापार बन्धनियता के बहा दर्ज करा देगा। मान भेजने का अनुमति दिम्बर १९४६ के अत तब होगा। निदाना के लिये वह आयातन होगा कि वे सम्बद्ध बन्धक बन्धक का किना मान्य मर्यादा या वेकल आयात बन्धक म इस आयात का प्रमाण पत्र प्राप्त कर प्रमुख को कि देशा चाबेराला मान करीबत व उम्मा बन्धके बीन हुए मौरा व क्रमुत्तर है।

सभ ही में एक क्रम्य निर्यात की जायगी की गई है जिन्हे क्रमुत्तर सरकार ने चावल और धान (जिन्में चावल का अग्रम अधिकार है जिन्हे उम्मा की चोकर व मौरा नहीं) पर उम्मा = वाट प्रबन्धन (बन्धनियत का) की दर से लगने वाले बन्धनियत सुलु क की दर में मर्यादित कर दिना है। मर्यादित निर्यात शुल्क मूल्य का २० प्रतिशत होगा।

सितम्बर १९५४

नकली रेशमी धागे का आयात

३० मई, १९५४ को घोषित की गई नकली रेशमी धागे की जुलाई से दिसम्बर १९५४ तक की आयात की आयात नीति में बताया गया था कि जिन व्यक्तियों के पास नकली रेशमी धागे के आयात लाइसेंस हैं वे इन आधारे से अधिक १५ प्रतिशत मूल्य तक स.हा. १२० डेनियर का चमकीला रेशमी धागा और अधिक से अधिक ५ प्रतिशत मूल्य तक से ही १५० डेनियर का चमकीला रेशमी धागा मंगा सकेगे। इन डेनियर के धागे की कमी दसगुना अथवा १२० डेनियर के आयात की सीमा २५ प्रतिशत और १५० डेनियर का १० प्रतिशत कर देने का निश्चय किया गया है। चालू आधारे के लिये पहले जो लाइसेंस जारी किये जा चुके हैं उन पर भी प्रतिशत की यह वृद्धि लागू होगी।

रूई का नियन्त्रण जारी रहेगा

भारत सरकार ने सितम्बर १९५४ से अगस्त १९५५ तक के मौसम में मा रूई का निष्पन्न जारी रखने का निश्चय किया है। विभिन्न प्रकार की रूई के अधिकतम और न्यूनतम मूल्य निश्चित किये जाते रहेंगे। अनेक तथ्यों पर विचार करते भारत सरकार ने न्यूनतम मूल्य में ५५४ रु० प्रति बैगैडी बमी कर देने का निश्चय किया है। जुलाई १९५२ से पूर्व भी यही न्यूनतम भाव था। इस प्रकार २५, ३२ इन्ची रेशोनीली जरीला

किस्म का लूई का न्यूनतम मूल्य ४६५ रु० प्रति बैगैडी होगा। अन्य किस्म के न्यूनतम मूल्य भी इसी प्रकार घटा दिये जायेंगे। अधिकतम मूल्य में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।

मिलों के लिये कोटा निश्चित करने की प्रणाली भी जारी रहेगी। चूँकि बहुत से मिलों ने १९५३-५४ की फसल में से निधारित अपना कोटा खपा डाला है अतः मिलों का उनसे कोटे की २५ प्रतिशत और रूई तत्काल देने का निश्चय किया गया है। मिलों ने रूई देने के लिए देश को उत्तर और दक्षिणी दो क्षेत्रों में अब तक विभाजित किया गया था। परन्तु अब यह विभाजन दूर कर दिया गया है। अब मिल जहाँ से भी चाहे अपने लिये रूई खरीद सकते हैं।

भारत सरकार ने १९५४-५५ की फसल के विषय में अगला व्यापार करने की अनुमति देने का भी निश्चय किया है। फरवरी १९५५ के सौदे अगस्त १९५४ के सौदे के साथ ही हो सकेगे। मट्टेबाजी को रोक्ने के लिये भारत में सशोधन करने के लिए विचार हो रहा है।

बंगाल देशों रूई का अब इस मौसम में और निर्यात करने की अनुमति नहीं दी जायगी। धौलरा और मथिया किस्मों की रूई के निर्यात की अन्तिम ३० सितम्बर १९५४ से बढ़ा कर ३१ दिसम्बर १९५४ कर दी गई है।

वैज्ञानिक गवेषणा

चमड़े का गत्ता

मद्रास की केन्द्रीय चमड़ा गवेषणाशाला ने क्रोम की छीलनों से चमड़े का गत्ता तैयार किया है।

चमड़े की छीलनों को पोंग कर किमी चिपकने पदार्थ में मिला दिया जाता है और फिर उसे दबाकर वाष्पनीय आकार का गत्ता बना लिया जाता है। इसके लिये स्टार्च डैक्स्ट्रिन (गोहूँ के सत में निकलने वाला पदार्थ) और फेनीन (दूध से तैयार होने वाला पदार्थ) में तैयार किये गये कड़ टूटे चिपकाने वाले पदार्थों का प्रयोग किया गया है और वे सतोपजनक पाये गये हैं। लैडेनम फमलेशन को भी चिपकाने के काम में लाने पर उल्साह वर्द्धक परिणाम निकले हैं। इस सम्बन्ध में अमी और भी पोज हो रही है।

हाल में ही गवेषणाशाला ने, रगने के कुछ उपयुक्त पदार्थ, जो इस समय बाहर में मगाये जाते हैं, बनाने के लिये ज्ञान आरम्भ की है। ऐसे कई पदार्थ तैयार किये जा चुके हैं और इन्हें परीक्षण कर के व्यापारिक में अन्तर्गत बताया है। चमड़े के कारखानों में परीक्षण के लिये इन्हे अधिक बट परिमाण पर तैयार करने का प्रस्ताव है।

पायरेथ्रम का सत

हाल ही में जम्बू की औषध गवेषणा शाला में गुलदाउरी जिने अग्नेजी में पायरेथ्रम कहते हैं, के पूला से पनीभूत सत तैयार करने की विधि निम्न

लने के सम्बन्ध में गवेषणा की गई है। इन फूलों से व्यावसायिक उपयोग के कई आवश्यक पदार्थ बनाये जा सकते हैं।

पायरेथ्रम के फूलों से कई प्रकार के कीटनाशक पदार्थ तैयार किये जाते हैं जो ऐली, पशुचिकित्सा तथा घरेलू कामों के लिये बड़े उपयोगी होते हैं। अब इन फूलों की उत्ती जम्बू व कार्मोर राज्य में व्यवस्थित टग से की जा रही है और आशा है कि निरन्तर भविष्य में ये फूल अधिक परिणाम में उपलब्ध हो सकेंगे जिसमें अधिक मात्रा में कीटनाशक पदार्थ तैयार किये जा सकेंगे।

गवेषणाशाला में ऐसे मत भी तैयार किये गये हैं जिनमें पायरेथ्रम (फूल का गन्धि अंश) की मात्रा १५.०० प्रतिशत हो। इस सत से मच्छुओं को मारने वाला एक प्रकार की कीम या मरहम भी तैयार की गई है जिसमें पायरेथ्रम की मात्रा ०.२ प्र० श० होती है। इस मरहम को खुले शरीर पर लगा देने से मच्छु वार पाच घंटे पाम तक नहीं फटते।

विटामिन मिला मूंगफली का तेल

वैज्ञानिक एच औटोगाक गवेषणा परिषद की सहायता से बलकसा रिश्विन्टालय में अमी हाल में विटामिन 'ए' मिले तेलों के बारे में आज की गर है।

अब यह मान लिया गया है कि तरह तरह के दाधों और खाद्य पदार्थों में विटामिन 'ए' मिलाया जाय तो इससे इनके पोषक तत्व बढ़

यथाशीघ्र सहायतृप्तपूर्वक विचार करेगी।

इस सम्बन्ध में भारत सरकार के वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय ने विचार किया कि मशीनों का प्रयोग करने से फैलनेवाली प्रेसिंगरी को किन प्रकार रोका जा सकता है। मशीनों के कारण पर्याप्त गंभीर समस्या उत्पन्न हो रही है। जिस पर शीघ्र विचार करने की आवश्यकता है।

बौटी उद्योग में मशीनों को बचाना न देने तथा इसकी जीविता देने सम्बन्धी समता को बनाने रखने की नीति के अनुसार ३० जुलाई, १९५४ को केंद्रीय उत्पादन व व मन्त्र (सशोधन) अध्यादेश, १९५४ जारी किया गया। इस अध्यादेश के अन्तर्गत निम्न बौटियों को बनाने में किसी शुक्तिालित या बिना शुक्तिालित मशीनों को सहायता लेनी पड़ती है, उन पर ३ रु० प्रति हजार के दर से उत्पादन-कर लिया जाएगा। यह कर उपयुक्त विधित्त बनाई गई बौटियों के उन स्टाफ पर भी लिया जाएगा जो अध्यादेश के जारी विचे ज्ञान पर मौजूद है।

ग्राम क्षेत्रों में छोटी बचत का आन्दोलन

ग्राम्य क्षेत्रों में लोगों को छोटे-मोटी रकमें बचाने को प्रोत्साहित करने के लिए भारत सरकार ने हाल में ही कई नयी योजनाएँ चालू की हैं। इनके अन्तर्गत नविके के गण-माम्य लोगों तथा ग्राम-पंचायतों को बारह-साला नैशनल सेविंग सर्टिफिकेटों के विक्री करने के अधिकार दिये गये हैं। ये योजनाएँ पश्चिमी बंगाल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और सौराष्ट्र में क्रियान्वित भी की जाने लगी हैं। इन योजनाओं के द्वारा छोटी-बचत आन्दोलन को ग्राम्य क्षेत्रों में भी फैलाने का आयोजन किया गया है। अब तक आन्दोलन का अधिक जोर शहरों क्षेत्रों में ही था यद्यपि १९५२ में इस विधा में मोटा-बहुत प्रयास हुआ था।

पश्चिमी बंगाल में यह योजना विछले जाल अग्रस्त में केवल दो जिलों में चालू की गयी थी, पर अब सब राज्य में चालू है। इसके अन्तर्गत युनिट-वोट का अल्पतया प्राम्य म्युनिसिपलिटियों का समन्वित सर्टिफिकेटों को विक्री के लिए अधिकृत एजेंट नियुक्त किया जा सकेगा और विक्री पर उते १(१) प्र० श० का कमीशन मिलेगा।

मध्य प्रदेश में, ग्राम-पंचायतों नैशनल सेविंग सर्टिफिकेट बेचने के लिए एजेंट का काम करेगी। उन्हे जो कमीशन मिलेगा, वह पंचायत की आयमन्दी के ढाले में दर्ज होगा। ऐसी ही योजना सौराष्ट्र में भी, विछले अञ्चल के महीने में, २१ महीने के लिए चालू की गयी थी। मध्य प्रदेश में कुल १०० और सौराष्ट्र में कुल ५०० ग्राम-पंचायतों को एजेंट बनाने की योजना है।

उत्तर प्रदेश में जो योजना चलायी गयी है, उसके अनुसार राज्यीय विधान मन्त्रालय के सदस्यों और कानूनांगों व लेखापाल (पटवारी) जैसे सरकारी कर्मचारियों को छोटी बचतों की रकमें इकट्ठी करने के लिए एजेंट के अधिकार दिये गये हैं।

इन योजनाओं के अतिरिक्त, एजेंसी देने की साधारण व्यवस्था के

अन्तर्गत भी ग्राम्य क्षेत्रों के लिए एजेंट नियुक्त किये जा सकते हैं। यह व्यवस्था मैदूर, हैदराबाद, मणिपुर, त्रिपुरा और त्रिपुरा के सिवा अन्य सभी राज्यों में चालू है। इसके अंतर्गत एजेंटों की संख्या के बारे में कोई सीमा नहीं है और न नियुक्ति की आवधिक के ही बारे में। एजेंट को दो हजार रु० की जमानत देनी होती है, जो नैशनल सेविंग सर्टिफिकेटों या ट्रेजरी सेविंग डिपॉजिट सर्टिफिकेटों के रूप में होनी चाहिए।

जो 'एकमुद्रा डिपॉजिट ब्रांच पोस्टमास्टर' छोटी बचतों के काम में सहायता देना चाहे, वे भी एजेंट नियुक्त किये जा सकते हैं। उन्हे नैशनल सेविंग सर्टिफिकेटों के रूप में १०० रु० की जमानत देनी होगी, और सर्टिफिकेट खरबा के पास बंधक रख देने होंगे। इन्हे भी १(१) प्र० श० का कमीशन मिलेगा।

लगभग ७० हजार व्यक्तिगणों ने योजना सर्टिफिकेट खरीदे

भारत सरकार के राष्ट्रीय बचत आयुक्त (नैशनल सेविंग कमिश्नर) को प्राप्त सूचनाओं के अनुसार जुलाई, १९५४ के अन्त तक लगभग ७० हजार व्यक्तिगणों ने राष्ट्रीय योजना सर्टिफिकेट खरीदे। उक्त तथित तक इनके लगभग १ करोड़ ५३ लाख रु० की रकम इकट्ठी हुई है।

१० मई, १९५४ को इन सर्टिफिकेटों की विक्री लुली भी। अग्री हाल में इकट्ठी हुई कुल रकमी का वीर्य इस प्रकार है :—

खरीद की अवधि	रकम	खरीददारों की संख्या
३ जुलाई, १९५४ तक	८७ लाख रु०	३४,७४६
१७ जुलाई, १९५४ तक	११८ लाख ६६ हजार रु०	५२,६२२
३१ जुलाई, १९५४ तक	१५२ लाख ८६ हजार रु०	६६,६६१

ये सर्टिफिकेट कम से कम २५ रु० के खरीदे जा सकते हैं और १० वर्ष की मिलो पूरने पर इन पर साठे चार प्र० श० के हिसाब से ब्याज भी दिया जाएगा। पंचवर्षीय योजना के लिए धन जुटाने के निमित्त सरकार ने जो राष्ट्रीय योजना प्रारम्भ जारी किया था, ये सर्टिफिकेट उसके दूरक है। जुलाई के अन्त तक प्रारम्भ में कुल १ अरब २५ करोड़ ५ लाख रु० की रकम इकट्ठी हुई।

छोटी बचत

मई और जून १९५४ में पोस्ट ऑफिस सेविंग बैंक, डिफेंस सेविंग बैंक, पोस्ट ऑफिस कैश सर्टिफिकेटों, १० वर्षीय डिफेंस सेविंग सर्टिफिकेटों, नैशनल सेविंग सर्टिफिकेटों और १० वर्षीय राष्ट्रीय योजना सर्टिफिकेटों में जो धन लगाया गया है उसका योग कर्मशः ८०.४ लाख और २७० लाख रु० है।

सीमाशुल्क और उत्पादन कर से आय

मई १९५४

व्यापारिक जानकारी और सांख्यिकी विभाग (Department of Commercial Intelligence and Statistics) में प्राप्त हुए आंकड़ों के अनुसार मई १९५४ में भारत को तयुद तथा स्थल

पा रहे थे। इनमें ४३५ स्त्रियाँ और २६४ विधवायुक्त थीं। इनके अतिरिक्त कोशी विनासपुर की केन्द्रित प्रशिक्षण मस्त्र्या में १०६ उन्मत्तवार शिषक व उत्तर प्रदेश व पश्चिमी बंगाल में विस्थापितों के लिये "उन्मत्तवार शिषक योजना" के अन्तर्गत ६४० उन्मत्तवार शिषार्थी प्रशिक्षण पा रहे थे।

मई १९५४ में औद्योगिक भगडों में कमी

मई १९५४ के औद्योगिक भगडों के अस्थायी आकटों से पता चलता है कि गतमास की अपेक्षा इस माहिने इन भगडों की संख्या कम रही, परन्तु इनमें शामिल होने वाले मजदूरों तथा जन दिनों की हानि की संख्या अधिक हो गई। इस महिने कुल ७८ भगडे हुए, जिनमें ३६,६११ मजदूरों ने भाग लिया और २,१२,३६२ जन दिनों की हानि हुई। इन भगडों का औसत अवधि ५.३ दिन रही, जबकि अप्रैल १९५४ का औसत ५.६ दिन रहा था।

छ भगडों में तालाबन्दी की नौषत आगों, जगका ५,४१२ कजदूरों पर प्रभाव पडा। इनमें ७५,५१६ जन दिना की हानि हुई। इनमें ४ पश्चिमी बंगाल में और शेष बम्बई में हुए।

हटताल और तालाबन्दीयों के अतिरिक्त ऐसे ५ मामलों में तालाबन्दी हुई, जिनमें औद्योगिक भगडे नहीं बसा जा सकता। इनमें ६,६४६ मजदूरों ने भाग लिया और ८,०११ जन-दिना की हानि हुई। ये सब मामले बम्बई में हुए।

इन मास ५६ भगडे समाप्त हुए जिनमें २३ भगडे ५ दिन से अधिक नडा चले। २६ भगडा का मुख्य कारण मजदूरों, भसा और बोनस था और ३० भगडों का कारण अधिधारियों के सम्बन्ध में शिनायतें था। १२ भगडों में मजदूरों ने पूर्ण वा आंशिक सफलता मिला और १६ में वे अक्षफल रहे। १८ भगडा का परिणाम अनिश्चित रहा और १० के सम्बन्ध में अभी परिणाम का पता नहीं चल सता है।

इस मास पश्चिमी बंगाल में भगडों, इनमें भाग लेने वाले मजदूरों तथा जन दिनों की हानि का संख्या सबसे अधिक रही। भगडों व मजदूरों की हानि की संख्या को देखते हुए इस राज्य की स्थिति में, गत मास की अपेक्षा, काफी सुधार हुआ। बम्बई में यद्यपि भगडों तथा इनमें शामिल होने वाले मजदूरों की संख्या काफी कम हो गई तथापि जन दिनों की हानि कुछ अधिक हुई। समन की हानि की दृष्टि से, आन्ध्र व मध्य प्रदेश की स्थिति पहले से पराज हो गई परन्तु मद्रास व उत्तर प्रदेश की स्थिति में सुधार हुआ।

भगडों से प्रभावित उद्योगों में, लकटों, पत्थर और काच उद्योगों में समय की हानि सब से अधिक हुई। समय की हानि का दृष्टि से श्रूट के कारखानों, कागज और छुपाद, बंगले का पानों, म्युनिस्पैलिटीयों तथा विविध उद्योगों की स्थिति में, गत मास की अपेक्षा, काफी सुधार हुआ। बुगई उद्योग (श्रूट के अतिरिक्त) गान, पेय तथा तम्बाकू, रासायनिक पदार्थ, रंग, कागले के अतिरिक्त अन्य पानों में अतिरिक्त समन नष्ट हुआ। इस मास परिवहन और जगान्ता के उद्योगों में को भगडन नहीं हुआ।

बीमा उद्योग के भगडे

श्रम मन्त्रालय की एक निवेष्टि में बताया गया है कि भारत सरकार ने फिलहाल बीमा उद्योग में, औद्योगिक भगडा के निवृत्तों के लिए अखिल भारतीय - याधिचरण नियुक्त न करने का निश्चय किया है। सन १९४७ के औद्योगिक विवाद अधिनियम के अन्तर्गत बीमा कम्पनियों के औद्योगिक भगडे भी निवृत्तों जा सकते है।

बीमा कर्मचारियों को कुछ संस्थाओं ने भारत सरकार से अखिल भारतीय न्यायपरिषद नियुक्त करने का अनुरोध किया था, इसी मिलसिले में यह निश्चय किया गया है।

फसल का अनुमान

गेहूँ का चतुर्थ अनुमान

१९५३-५४ में गेहूँ के अखिल भारतीय चतुर्थ अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में गेहूँ की टेली का क्षेत्रफल २,४७,७१,००० एकड और उत्पादन ७१,६७,००० टन आका गया है, जबकि १९४२-५३ के संशोधित चतुर्थ अनुमान में वे अन्न क्रमशः २,२४,२६,००० एकड और ६७,६१,००० टन थे। इस प्रकार १९५३-५४ के अनुमान के क्षेत्रफल में, १९५२-५३ की अपेक्षा, १३,४५,००० एकड अर्थात् ५.७ प्र.श. और उत्पादन में ४,३६,००० टन अर्थात् ६.४ प्र.श. की वृद्धि हुई है।

वर्तमान वर्ष में गेहूँ के क्षेत्रफल में वृद्धि गेहूँ पैदा करने वाले प्रायः सब राज्यों में हुई है। इनमें उत्तर प्रदेश, बम्बई, राजस्थान, पंजाब, हैदराबाद, पेश्व, हिमाचल प्रदेश, पश्चिमी बंगाल और सौराष्ट्र मुख्य है। ये सब फल में यह वृद्धि मुख्यतः कुआरों के समन पर्याप्त व सामाधिक रणों

होने से हुई है। फिर भी, वर्तमान वर्ष की गेहूँ की फसल में मिन्ध्य प्रदेश, बिहार और मध्य भारत के क्षेत्रफल में नगण्य कमी बतार् जाती है।

गेहूँ पैदा करने वाले प्रायः सब राज्यों से उत्पादन में भी वृद्धि होने के नामानार मिले है। उत्तर प्रदेश, बम्बई, राजस्थान, मध्य भारत और पेश्व में विशेष वृद्धि हुई है। उत्पादन में इस वृद्धि का कारण कुछ तो टेली की भूमि में वृद्धि होना, और कुछ वर्तमान वर्ष में फसल बन्ने के लिये अग्रदुल मौसम रहना है। चालू वर्ष के उत्पादन में केरल पंजाब में नगण्य कमी बतार् जाती है।

वर्तमान अनुमान में नामान्यतः अप्रैल के अन्त या मई के आरम्भ तक से जलकारी सम्मिलित है। तब तक फसल की स्थिति सामान्यतः सन्तोषजनक थी। बम्बई के दरनाटक भाग और मिन्ध्य प्रदेश के सीधो, दोबनगट, वृत्तिग और छतरपुर जिलों में थोले पटने व वर्ष की न्यूनता से फसल की हानि पहुँची। बम्बई के कुछ भागों में बीडे मनोडों ने फसल को हानि पहुँचार् है।

दम अनुमान में गेहूँ की कुआरें बाला प्रायः गारा क्षेत्र सम्मिलित है और अन्तिम अनुमान में, वर्तमान अनुमान से, कोई अधिक अन्तर होने की सम्भावना नहीं है। इस से, पहली बार ही, जैलारी जिले, जो अब मैसूर का एक भाग है, का जानकारी सम्मिलित ही गई है। वर्तमान वर्ष में इस क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल २,८२६ एकड़ और उत्पादन ४६४ टन आका गया है।

अरहर का अन्तिम अनुमान

१९५३-५४ में अरहर के अंतिम भारतीय अन्तिम अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में अरहर की खेती का क्षेत्रफल ५७,७६,००० एकड़ और उत्पादन १७,८२,००० टन आका गया है, जबकि १९५२-५३ के अंशतः समायोजित अनुमान में ये क्रम क्रमशः ५६,२७,००० एकड़ और १६,७५,००० टन थे। इस प्रकार पिछले वर्ष की अपेक्षा, इस वर्ष के अनुमान के क्षेत्रफल में १,५१,००० एकड़ अर्थात् २.५ प्र. श. की कमी और उत्पादन में १,०८,००० टन अर्थात् ६.४ प्र. श. की वृद्धि हुई है।

वर्तमान अनुमान में क्षेत्रफल की यह कमी मुख्यतः बिहार, उत्तर प्रदेश व पश्चिमी बंगाल में कुआरों के समय प्रतिकूल मौसम रहने से हुई। परन्तु हैदराबाद, बम्बई, और मैसूर गण्यों में कुआरों के समय पर्याप्त वर्षा होने से धेड़ में जो वृद्धि हुई, उससे बिहार, उत्तर प्रदेश व बंगाल की कमी कुछ हद तक दूर हो गई।

उत्पादन में वृद्धि मुख्यतः मध्य प्रदेश, बम्बई और हैदराबाद राज्यों में हुई। यह वृद्धि कुछ तो फसल की चरों के समय अनुकूल मौसम रहने और कुछ खेती का क्षेत्रफल बढ़ जाने से हुई। इस वृद्धि में, मुख्यतः उत्तर प्रदेश व बिहार राज्यों के क्षेत्रफल में कमी होने से उत्पादन में जो कमी हुई भी उसे पूरा कर दिया।

चने का अन्तिम अनुमान

१९५२-५४ में चने के अंतिम भारतीय अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में चने की खेती का क्षेत्रफल १,८८,६३,००० एकड़ और उत्पादन ४५,५१,००० टन आका गया है, जबकि १९५२-५३ के अंशतः समायोजित अनुमान में ये संख्यायें क्रमशः १,८०,११,००० एकड़ और ४१,६५,००० टन थीं। इस प्रकार चालू वर्ष के अनुमान में खेती के क्षेत्रफल में १९५२-५३ की अपेक्षा ८,७६,००० एकड़ अर्थात् ४.६ प्र. श. और उत्पादन में ३,८६,००० टन अर्थात् ९.२ प्र. श. की वृद्धि हुई है।

वर्तमान अनुमान के क्षेत्रफल में यह वृद्धि बिहार, मध्य भारत, मैसूर और दिल्ली के अतिरिक्त चना कीट वाले प्रायः सब राज्यों में हुई है। उत्तर प्रदेश, पंजाब, पश्चिमी बंगाल, हैदराबाद तथा बम्बई राज्यों में कुआरों के समय पर्याप्त व सामयिक वर्षा के कारण क्षेत्रफल में काफी वृद्धि बतलाई जाती है। परन्तु बिहार, मध्य भारत, मैसूर तथा दिल्ली में कुआरों के समय अत्यधिक सूखी रहने से क्षेत्रफल में जो कमी हुई, उसमें अन्य राज्यों की वृद्धि कुछ हद तक घट गई है।

उत्पादन में वृद्धि भी, चना बोने वाले प्रायः सब राज्यों में हुई है।

पंजाब, उत्तर प्रदेश, पेरु, बम्बई तथा पश्चिमी बंगाल इनमें मुख्य हैं। यह वृद्धि कुछ तो खेती की भूमि में विस्तार तथा कुछ फसल बनने की अवधि में अनुकूल मौसम रहने से हुई है। फिर भी बिहार, राजस्थान, मध्य भारत तथा गोवाल में फसल बढ़ने के दिनों में प्रतिकूल मौसम रहने के कारण चालू वर्ष के उत्पादन में कमी हो गई बतायी जाती है। राजस्थान मध्य प्रदेश, मौराल तथा त्रिव्य प्रदेश में कोहरा, टण्ड व ओस पड़ने तथा सर्दी का मौसम में अल्पवृष्टि वर्षा होने के कारण फसल को हानि पहुँची।

इस अनुमान में उन क्षेत्रों की भी सूचना सम्मिलित है, जिसमें अनुमान तैयार नहीं होते। आसाम, मध्य प्रदेश (वन क्षेत्र) तथा जम्मू व कश्मीर ऐसे ही क्षेत्र हैं। इन सब में १६५२-५४ में २६,००० एकड़ में खेती हुई और ६,००० टन उत्पन्न हुआ। ये अंक इस अनुमान में सम्मिलित हैं।

तोरीया और सरसों का अन्तिम अनुमान

१९५२-५४ में तोरीया और सरसों के अंतिम भारतीय अन्तिम अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में तोरीया और सरसों की खेती का क्षेत्रफल ५३,७३,००० एकड़ और उत्पादन ८,२६,००० टन आका गया है, जबकि १९५२-५३ में आंशिक समायोजित अनुमान में ये क्रम क्रमशः ५१,६६,००० एकड़ और ८,३७,००० टन थे। इस प्रकार पिछले वर्ष की अपेक्षा, इस वर्ष में अनुमान के क्षेत्रफल में १,७७,००० एकड़ अर्थात् ३.३ प्र. श. की वृद्धि तथा उत्पादन में ११,००० टन अर्थात् १.३ प्र. श. की कमी रही है।

वर्तमान अनुमान के तोरीया और सरसों के क्षेत्रफल में यह वृद्धि मुख्यतः राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पेरु तथा पंजाब प्रदेशों में कुआरों के समय सामान्यतः अनुकूल मौसम रहने से हुई। परन्तु बिहार व पश्चिमी बंगाल के क्षेत्रफल में कुआरों के समय प्रतिकूल मौसम रहने के कारण काफी कमी रह गई।

यद्यपि क्षेत्रफल में सब प्रकार से वृद्धि हो गई, तथापि उत्पादन में कुछ कमी रही। यह कमी मुख्यतः उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बंगाल और बिहार में फसल बढ़ने की अवधि में प्रतिकूल मौसम रहने के कारण हुई। उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में ओले व बाढ़ पड़ने से भी फसल को हानि पहुँची। पंजाब, पेरु, तथा राजस्थान के उत्पादन में कुछ वृद्धि हो जाने से यह भी कुछ हद तक दूर हो गई।

जू का अन्तिम अनुमान

१९५३-५४ में जू के अंतिम भारतीय अन्तिम अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में जू की खेती का क्षेत्रफल ८१,६०,००० एकड़ और उत्पादन २७,००,००० टन आका गया है, जबकि १९५२-५३ के अंशतः समायोजित अनुमान में ये संख्यायें क्रमशः ८०,१०,००० एकड़ और २८,५६,००० टन थीं। इस प्रकार चालू वर्ष के अनुमान में खेती के क्षेत्रफल में १,५०,००० एकड़ अर्थात् २.२ प्र. श. की वृद्धि और उत्पादन में १,२८,००० टन अर्थात् ४.५ प्र. श. की कमी हुई है।

क्षेत्रफल में वृद्धि मुख्यतः उत्तर प्रदेश, पंजाब, पश्चिमी बंगाल, पेश्वे और बम्बई में बुझारों के समय पर्याप्त पानी मिलने से हुई। परन्तु बिहार, राजस्थान, मध्य भाग तथा जम्मू व काश्मीर में बुझारों के समय प्रतिकूल मौसम रहने से क्षेत्रफल में कमी हो गई। जिससे क्षेत्रफल में अन्य राज्यों में हुई वृद्धि काफी हट तक बरकरार हो गई।

क्षेत्रफल में वृद्धि होने पर भी पैदावार में गत वर्ष की श्रेष्ठता कमी हुई। पैदावार की यह कमी मुख्यतः राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य भारत में उछल तो ऐसी की भूमि में कमी होने तथा कुछ फसल बटने की अग्रगण्य में प्रतिकूल जलवायु रहने के कारण हुई। उत्तर प्रदेश में ओले व तेज वर्षा होने से फसल को हानि पहुँची। राजस्थान व मध्य प्रदेश के कुछ भागों में भी ओले व टूट पटने तथा वर्षा की कमी रहने से फसल को कुछ हट तक हानि पहुँची। फिर भी, पंजाब, पेश्वे, पश्चिमी बंगाल, जम्मू व काश्मीर तथा बम्बई में फसल बटने के समय श्रद्धालु मौसम रहने से चालू वर्ष में उत्पादन में वृद्धि हुई है।

इस अनुमान में उन क्षेत्रों की भी सूचना सम्मिलित है, जिनके अनुमान तैयार नहीं होते। आन्ध्र, मद्रास, जम्मू व काश्मीर ऐसे ही क्षेत्र हैं। इन वर्ष में १९५३-५४ में कुल ६०,००० एकड़ में ऐसी हुई है और १६,००० वर्ग किलोमीटर हैं। ये अब इस अनुमान में सम्मिलित हैं।

रबी की दालों का अंतिम अनुमान

१९५३-५४ में रबी की दालों (चना और अरहर को छोड़कर) के अग्रिम भारतीय अंतिम अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में रबी की दालों की ऐसी का क्षेत्रफल १,११,३०,००० एकड़ और उत्पादन २०,७५,००० टन आया गया है, जबकि १९५२-५३ में ये संख्याएँ क्रमशः १,११,८५,००० एकड़ और २०,५२,००० टन थीं। इस प्रकार ऐसी के क्षेत्रफल में ५५,००० एकड़ अर्थात् ०.५ प्र.श. की कमी और उत्पादन में ३३,००० टन अर्थात् १.६ प्र.श. की वृद्धि हुई।

१९५३-५४ के क्षेत्रफल में यह कमी मुख्यतः उर्द के सम्बन्ध में मध्य प्रदेश व पश्चिमी बंगाल में बुझारों के समय पर्याप्त नमी न रहने के कारण हुई। बिहार प्रदेश के गव दालों के क्षेत्रफल में भी बुझारों के समय प्रतिकूल मौसम रहने से कमी रही। परन्तु विशेष बम्बई, उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बंगाल, हैदराबाद व मध्य प्रदेश में अन्य सब दालों में वृद्धि हो जाने से यह कमी काफी हट तक दूर हो गई।

रबी की दालों की ऐसी के क्षेत्रफल में कमी होने के वास्तव में उर्द के समय मौसम श्रद्धालु होने के कारण इन दालों के उत्पादन में कुछ वृद्धि हुई है। यह वृद्धि बिहार, बम्बई, और पश्चिमी बंगाल राज्यों में उर्द और मटर को छोड़कर प्रायः सभी दालों में हुई है। उर्द और मटर के उत्पादन में कमी मुख्यतः मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में हुई है और इसका कारण उत्तर प्रदेश में उर्द के समय मौसम की प्रतिकूलता तथा मध्य प्रदेश में ऐसी के क्षेत्रफल में कमी और मौसम की प्रतिकूलता है।

तम्बाकू का तृतीय अनुमान

तम्बाकू के अग्रिम भारतीय तृतीय अनुमान के अन्तर्गत, १९५३-५४

के चालू वर्ष में तम्बाकू की ऐसी का क्षेत्रफल ८,७०,००० एकड़ और उत्पादन २,५०,००० टन आना गया है, जबकि १९५२-५३ में ये संख्याएँ क्रमशः ८,५८,००० एकड़ और २,३१,००० टन थीं। इस प्रकार चालू वर्ष के अनुमान के अनुसार ऐसी के क्षेत्रफल और उत्पादन में क्रमशः १२,००० एकड़ अर्थात् १.४ प्र.श. तथा १९,००० टन अर्थात् ८.२ प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

क्षेत्रफल तथा उत्पादन, दोनों में यह वृद्धि मुख्यतः बम्बई प्रदेश में हुई है। यह वृद्धि बुझारों के समय तथा बार में फसल बटने के समय श्रद्धालु मौसम रहने के कारण हुई है। फिर भी, आन्ध्र में बुझारों के समय बहुत वर्षा होने से जो कमी हुई, उसमें यह वृद्धि कुछ हद तक घट गई है।

इस अनुमान में उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली प्रदेश को देर से होने वाली फसल का उल्लेख नहीं है। गत अनुभव से भिन्न हुआ है कि अन्तम अनुमान के आकड़े, तृतीय अनुमान के आकड़े में केवल थोड़े अग्रिम होते हैं।

काली मिर्च का अंतिम अनुमान

१९५३-५४ में काली मिर्च के अग्रिम भारतीय अंतिम अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में काली मिर्च की कुल का क्षेत्रफल २,०८,५०० एकड़ और उत्पादन ०,३०,००० टन आया गया है, जबकि १९५२-५३ में क्षेत्रफल २,०५,८०० एकड़ और उत्पादन २१,६०० टन था।

इस प्रकार ऐसी के क्षेत्रफल में २,७०० एकड़ अर्थात् १.८ प्र.श. और उत्पादन ३०० टन अर्थात् ३.२ प्र.श. की वृद्धि हुई है। ऐसी की भूमि व उत्पादन, दोनों में वृद्धि केवल मद्रास राज्य में अंतिम वर्ष में अग्रिम अर्थात् मौसम रहने से हुई।

अलसी-का अंतिम अनुमान

१९५३-५४ में अलसी के अग्रिम भारतीय अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में अलसी की कुल का क्षेत्रफल ३३,६६,००० एकड़ और उत्पादन ३,५५,००० टन आया गया है, जबकि १९५२-५३ में ये संख्याएँ क्रमशः ३३,६५,००० एकड़ और ३,५६,००० टन थीं। इस प्रकार ऐसी के क्षेत्रफल में २६,००० एकड़ अर्थात् एक प्र.श. में भी कम और उत्पादन में ५,००० टन अर्थात् एक प्र.श. में कुछ अग्रिम की कमी हुई।

चालू वर्ष में ऐसी के क्षेत्रफल में यह कमी मुख्यतः हैदराबाद राजस्थान और मध्य प्रदेश में हुई है। क्षेत्रफल में यह कमी तेज वर्षा होने के कारण फसल बटने से देर हो जाने से हुई और अन्य प्रदेशों में बुझारों के समय अपर्याप्त नमी रहने के कारण यह कमी हुई। फिर भी, मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश में वृद्धि होने से यह कमी काफी हट तक दूर हो गयी है।

चालू वर्ष में उत्पादन में थोड़ी नमी मुख्यतः उत्तर प्रदेश, हैदराबाद तथा राजस्थान में हुई और इसका कारण उछल तो ऐसी की भूमि में कमी तथा उछल फसल बटने की अग्रगण्य में अग्रिम की प्रतिकूलता है। इस सम्बन्ध में यह बात उल्लेखनीय है कि मध्य प्रदेश के क्षेत्रफल में अग्रिम कमी हो गई तथापि उसके उत्पादन में, फसल बटने की अग्रगण्य में अग्रिम अर्थात् मौसम रहने से, वृद्धि हुई है।

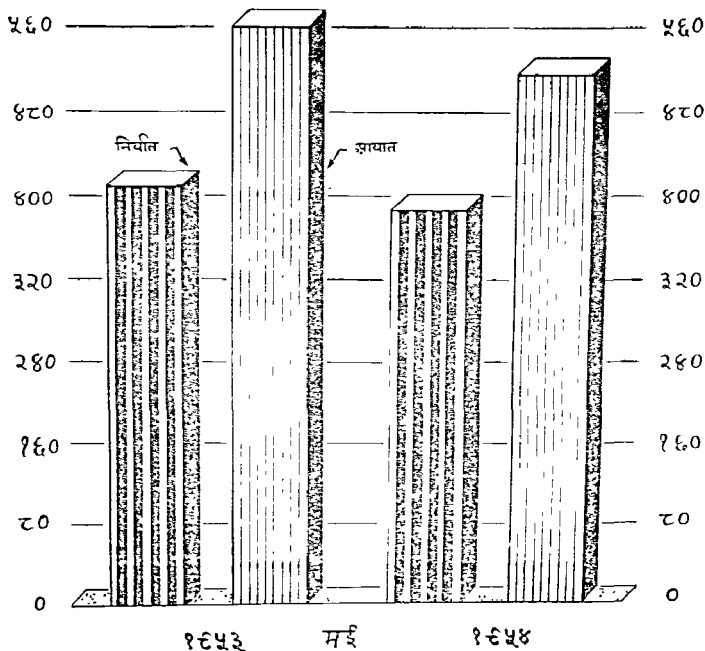
ग्राफ विभाग

१. भारत का विदेशी व्यापार
२. औद्योगिक उत्पादन—१
३. औद्योगिक उत्पादन—२
४. आयात की चुनी हुई वस्तुएं
५. निर्यात की चुनी हुई वस्तुएं

भारत का विदेशी व्यापार

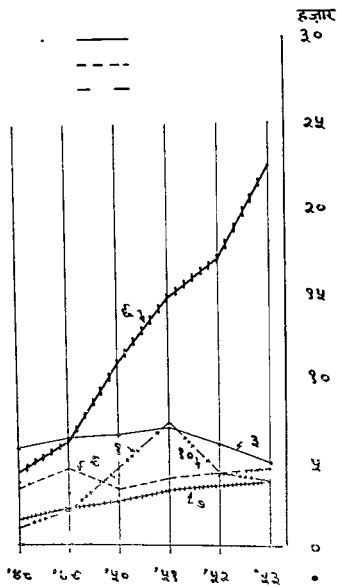
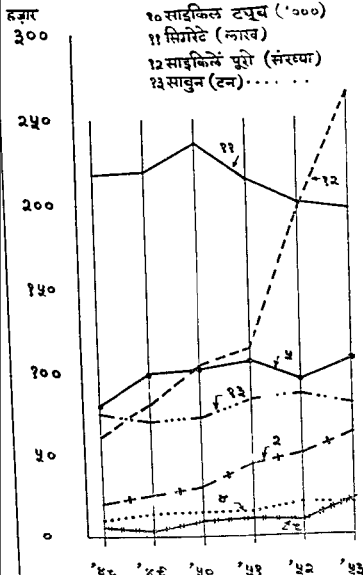
(समुद्र, वायु और स्थल द्वारा)

दस लाख रुपयों में



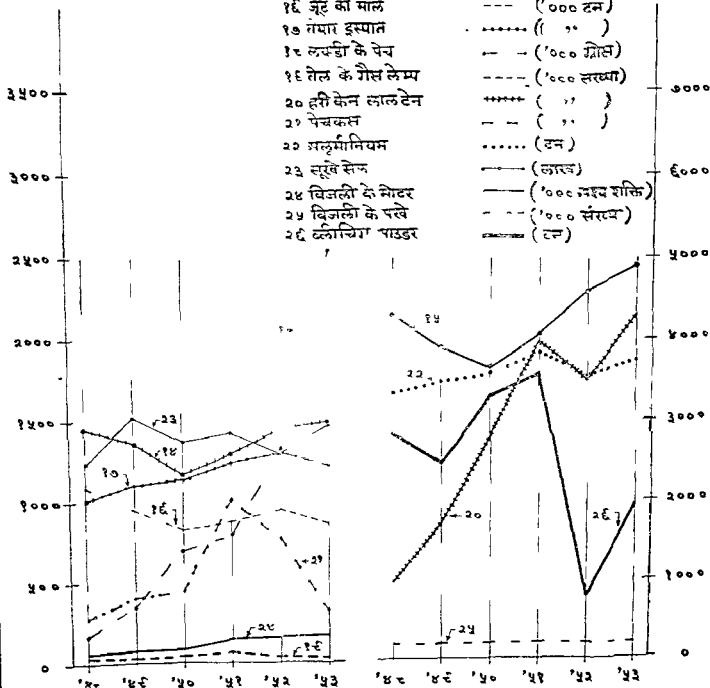
औद्योगिक उत्पादन (चुनी हुई वस्तुएं)

- १ डीजल इंजन (संख्या)
- २ मिलाई की मशीनें (संख्या)
- ३ तांबा (टन)
- ४ बिजली की बत्तियां ('०००)
- ५ गन्धक का तेजाब (टन)
- ६ कास्टिक सोडा (टन)
- ७ सीमेंट ('००० टन)
- ८ बांच की चादरें (००० वर्ग फीट)
- ९ साइकिल टायर ('०००)
- १० साइकिल ट्यूब ('०००)
- ११ सिगरेट (लाख)
- १२ साइकिलें पूरी (संख्या)
- १३ साबुन (टन).....

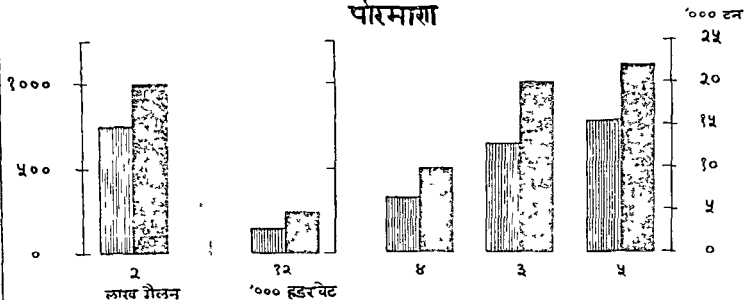


औद्योगिक उत्पादन (चुनी हुई वस्तुएं)

१४ सूत	----- (१० लाख बॉर्ड)
१५ सूनी कपड़ा	—●— (१० लाख गज)
१६ जूट का माल	--- ('००० टन)
१७ गंधार इस्पात (' ')
१८ लकड़ी के पेच	--- ('००० ग्रांस)
१९ तेल के गैस लेम्प	----- ('००० सख्या)
२० हरी कोन लाल टेल	+++++ (' ')
२१ पेचकत	--- (' ')
२२ अलुमिनियम (टन)
२३ सूखे सेज	— (लाख)
२४ बिजली के मोटर	— ('००० इन्च शक्ति)
२५ बिजली के फले	--- ('००० संख्या)
२६ क्लोस्चिंग पाउडर	— (टन)



आयात की चुनी हुई वस्तुसं परिमाणा



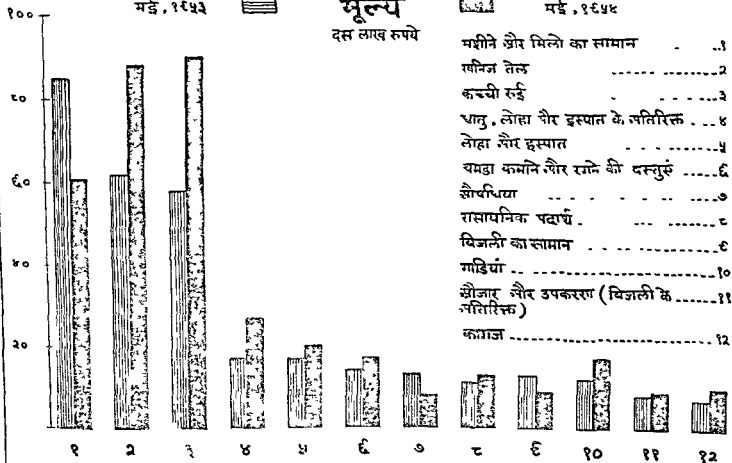
मई, १९५३



मूल्य
दस लाख रुपये

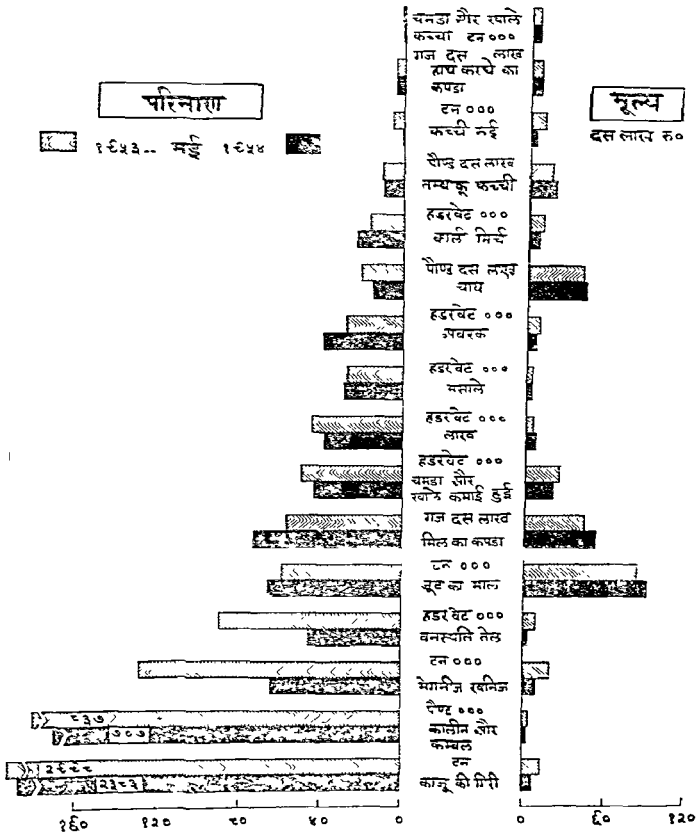


मई, १९५४



- मशीने और मिलो का सामान १
- खनिज तेल २
- कच्ची रुई ३
- धानु, लोहा और इस्पात के अतिरिक्त ४
- लोहा और इस्पात ५
- यमडा कमाने और रगने की वस्तुसं ६
- सैरपधिया ७
- रासायनिक पदार्थ ८
- विजली का सामान ९
- गडियां १०
- औजार और उपकरण (विजली के अतिरिक्त) ११
- कपाज १२

निर्णीत की चुनी हुई वस्तुएँ



१. औद्योगिक उत्पादन# (१) बुनाई उद्योग

वर्ष	१ सूत (लाख पौंड)	२ सूती कपड़ा (लाख गज)	३ [क] जूट का माल (००० टन)	४ [ख] ऊना माल (००० पौंड)	५ पट्टे (टन)
१९४६	१३,६६०	३६,००४	१,०००	२७,०००	
१९४७	१३,६६०	३७,६२०	१,०११	२४,०००	६१५
१९४८	१४,४७२	४३,१००	१,०००	२०,००४	६६०
१९४९	१३,४६६	३६,०४०	९४१	२१,०००	४०२
१९५०	१३,७४०	३६,६६०	९३१	१८,०००	४३०
१९५१	१३,०४४	४०,७६४	८७४	१७,७००	६७१
१९५२	१४,४६६	४१,६०४	९५१	१६,१०४	७०६
१९५३	१२,०६०	४०,६००	९२०	१७,०२०	७६५
१९५४ जनवरी	१,३२०	४,१६०	६७	१,२२०	६०
फरवरी	१,२४०	४,०१०	६३	१,३७४	५६०
मार्च	१,२४०	३,६६०	७१	१,३६६	५३०
अप्रैल	१,२६०	४,२६०	७५	१,२३४	६४०
मई	१,२६०	४,२७०	७१	१,४३७	७००
जून	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात
जुलाई					
अगस्त					
सितम्बर					
अक्टूबर					
नवम्बर					
दिसम्बर					

[क] अगस्त १९५६ म में आरंभ में इण्डियन जूट मिलिंग एसोसिएशन का सदस्यता वाले मिला तथा एक गैर सदस्य मिल के उत्पादन के सम्बन्ध में है। [ख] इसमें जम्मू और कश्मीर के आरंभ में सम्मिलित हैं।

(२) लोहा और इस्पात

वर्ष	६ कच्चा लोहा (००० टन)	७ सीपी डलाइ (००० टन)	८ गौर मिश्रित धातु (००० टन)	९ इस्पात के पिण्ड आर टलार्ड (००० टन)	१० अधूरा तैयार इस्पात (००० टन)	११ तैयार इस्पात (००० टन)	१२ इस्पात की मिनियों (टन)
१९४६	१,३४६	७२	१६	१,२६३	१,०३०	८६०	
१९४७	१,३२०	६७	१०	१,२४६	१,०२७	८६२	
१९४८	१,४०४	४१	७	१,२५६	१,०११	८५६	
१९४९	१,५१६	६३	१६	१,३५६	१,०५१	९३०	४७०
१९५०	१,५६२	६४	१०	१,४७७	१,१४०	१,००४	४२७
१९५१	१,७००	६२	२४	१,५००	१,२४८	१,०७६	४५६
१९५२	१,६०४	१२६	४०	१,६००	१,३००	१,१०२	२१४
१९५३	१,६५४	११५	७२	१,६०३	१,२३०	१,०१७	अज्ञात
१९५४ जनवरी	१,६२	७	२	१,५४	१,३१	१,०६	अज्ञात
फरवरी	१,५०	१२	०	१,३२	१,३१	९६	१२२
मार्च	१,५६	७	३	१,४७	१,२५	९५	अज्ञात
अप्रैल	१,३६	१०	०	१,२०	१,०६	९६	अज्ञात
मई	१,३६	१०	४	१,२३	१,०४	९४	अज्ञात
जून	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात
जुलाई							
अगस्त							
सितम्बर							
अक्टूबर							
नवम्बर							
दिसम्बर							

* नवीन रिपोर्टों के अनुसार इन अंकों में संशोधन हो सकता है।

१. औद्योगिक उत्पादन

[३] धातु उद्योग

वर्ष	१३ लकड़ों के पैके (००० मोठ)	१४ मशीनी पैके (००० मोठ)	१५ रेजर ब्लेड (लाउ)	१६ टर्गिनेन लालटेने (०००)	१७ गैस डे लैम्प (०००)	१८ तामचोनी का सामान (००० सख्या)	१९ बगार्ड दुर्द (टन)	२० कुप्लेट मेटिंग धातु (सख्या)
१९४६	...			४७०४	१५६			
१९४७	७४.४			६०६६	१६२	८,४२२०	६७२	१६८
१९४८	१६८०	३१२	.	६७६२	३२४	६,७३२२	१,४६४	३४८
१९४९	३४४४	८७६	७८६	१,७२८०	३२४	६,४६०४	३००	५४२
१९५०	७०३२	१५६६	१०६८	२,०६८८	३२४	५,४४५६	२,१४८	७४५
१९५१	७८६८	१२७२	१२६२	३,६७६८	६२४	८,१६५२	१,८६६	१,५६०
१९५२	१,३२६६	१४७६	१०८०	३,४२६२	३४४	७,१६८८	२,०२१	१,०२०
१९५३	२,५५४८	१६८०	२३१६	४,३१२८	३००	६,४४७७	१,६४४	६२४
१९५४ जनवरी	२६२१	१८३	५२	४०२७	११	१,१८६५	८८	१०२
फरवरी	३१०६	१६४	५७२	३५६४	१६	१,१७६६	८८	६५
मार्च	४४६२	२२०	६४६	४००५	२४	१,१७६७	१२१	८०
अप्रैल	४१२०	२०६	८२५	४२२५	३६	१,१६६७	१२१	१२०
मई	४२६६	११७	६२३	४११२	२७	१,१४८६	८६	६४
जून	४०३०	१६७	६६८	अज्ञात	५२	अज्ञात	६६	अज्ञात
जुलाई								
अगस्त								
सितम्बर								
अक्टूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

[४] मशीनें (धिजली की मशीनों के अतिरिक्त)

वर्ष	२१ टौजल इजिन (सख्या)	२२ शक्ति चालित पम्प (०००)	२३ मिलारू की मशीनें (सख्या)	२४ मशीनों के औजार (मूल्य ००० रुपये)	२५ ट्रिब्यूट ड्रिलस (०००)	२६ केलिफो करये (सख्या)	२७ रिग रिपिंग फ्रेम (पूर्य) (सख्या)	२८ पिसार्ड के चक्के (००० पैके)	२९ हुनार्ड की मशीनें घुमाने वाली सपटी (सख्या)
१९४६	४८८		६,१२० [ग]	६,१२४	६३६				
१९४७	६८४	६०	५,८६६	४,५८७	२३६२				
१९४८	१,०२०	६६	१०,०१६	५,४७३२	२७६०				
१९४९	२,०७२	१४४	२५,०३२	४,७३६२	४००८		७०६८		
१९५०	४,५६६	३००	३०,८८०	२,६००४	४४७२		५००४		
१९५१	७,२४८	४८०	४४,४८०	५,७३०४	१,०१७६	२,२८०	२७६	७०००	
१९५२	१,२४८	३२४	५०,४०४	४,५३७६	७७४२	१,३६८	२८८	८६४२	
१९५३	३,७२०	२५२	६२,४२४	४,५०७६	६३४८	१,८१२	२०४	८६२	
१९५४ जनवरी	६६४	२५	६,७२५	३०२३	३६५	२४	१४	१००३	
फरवरी	५४४	२४	७,११०	३२५७	३६८	२८	२०	१००३	
मार्च	७१६	२३	७,०६३	४४०१	४७४	१२	१२	६५४	
अप्रैल	६८०	२३	७,५६६	४३६७	४०१	१४२	१४	६१२	
मई	६६२	२३	६,८१५	४५८१	४६१	१४८	१४	७६५	
जून	अज्ञात	अज्ञात	६,४००	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	१४	अज्ञात	
जुलाई									
अगस्त									
सितम्बर									
अक्टूबर									
नवम्बर									
दिसम्बर									

[५] निर्माण मन्त्री गणना से प्राप्त आँकड़े।

१. औद्योगिक उत्पादन [५] लोहे से असम्बद्ध घातुएँ

वर्ष	३० अप्रैल-मिनियम (टन)	३१ सुरमा (टन)	३२ तोबा (टन)	३३ सोसा (टन)	३४ लोहे से असम्बद्ध घातुओं के नल (टन)	३५ सोसा (औंस) [घ]
१९४६	३,२२१ ४	१३२०	६,३१० ८	शून्य		१,३११,७०२
१९४७	३,२२४ ८	२२५२	५,९३१ ६	१८६ ६		१,७१,७००
१९४८	३,३६१ २	३३००	५,८६४ ४	६२५ २	३२४ ०	१,८०,८५४
१९४९	३,४८६ ६	६६६ ६	६,३६० ०	५९४ ०	३६० ०	१,६५,१४८
१९५०	३,५६६ ४	३७५ ६	६,६१४ ४	६२७ ६	३३१ २	१,६६,८४८
१९५१	३,८८८ ४	३७७ ६	७,००३ ४	६५६ २	३४८ ४	२,१६,२३६
१९५२	३,५६६ ४	१०१ २	६,७७१ २	३,१३१ ६	३७० ८	२,५२,६००
१९५३	३,७५८ ४	१३० ८	५,६२० ०	१,६६४ ४	३१७ ६	२,२३,०२०
१९५४ जनवरी	३०२ ३	६ ०	३१० ०	१८०	१६ १	१६,२८६
फरवरी	२६५ १	४४ ०	६२० ०	२१५	१४ ६	१६,८३०
मार्च	३०७ ५	३७ ६	६६५ ०	२००	१६ ६	२०,६०१
अप्रैल	३७७ २	५२ ०	६३० ०	१६७	५ ४	२०,८१५
मई	३१५ १	४० ०	६१४ ०	१२०	११ ०	२०,६८५
जून	५१ ६	५६ ०	५६ ०	८५	५ ४	अज्ञात
जुलाई						
अगस्त						
सितम्बर						
अक्टूबर						
नवम्बर						
दिसम्बर						

[घ] १९४८ से हैटावाट में हुए सोने का उत्पादन भी इन आँकड़ों में सम्मिलित है।

[६] विजली उद्योग

वर्ष	३६ उत्पन्न की गई विजली [क] (लाख किलोवाट प्रति घण्टा)	३७ विजली ले जाने की मलिया (००० कुट)	३८ दूखे खेल (लाख)	३९ सग्रह की बैटरी	४० विजली के मोटर (००० हार्स पावर)	४१ विजली के श्रान्त- फार्मर (००० के बी ए)	४२ विजली की वर्तिया (०००)
१९४६	३८,६२०		८७६ ६	२७ ६	४५ ६	३८ ४	८,२१२
१९४७	४०,७३०		८७६ ६	६६ ६	३८ ४	३२ ४	७,६२०
१९४८	४५,७५०	१,७०७ ६	१,२३८ ४	१२० ४	६० ०	८१ ६	६,९५२
१९४९	४६,०६०	२,६४८ ४	१,५२१ ६	१०६ ८	६८ ४	१,०६ २	१,६५,५४४
१९५०	५०,८८०	२,६६६ ४	१,६२१ २	१८७ ४	८१ ६	१,७३ ६	१,५,६०४
१९५१	५०,५१७	३,६६६ ६	१,५३४ ०	२२२ ४	१,४१ ६	१,६४ ४	१,५,६१६
१९५२	६१,२४८	३,६६४ ८	१,६०२ ०	१५८ ४	१,५७ २	२,३४ ८	२,०,८८०
१९५३	६६,२७६	३,७२६ ४	१,५८४ ४	१७६ ४	१,६२ ०	३,०८ ४	१,६,७७६
१९५४ जनवरी	५,००७	४४२ ६	१,२६ ४	१२ ७	१२ ७	२६ ६	१,७४६
फरवरी	५,४२७	५१५ ६	१,२१ १	८ ६	१,४ ३	२४ ७	१,५३७
मार्च	५,८४७	६०३ ४	१,१७ २	१२ ४	१,५ ०	३३ ६	१,६२७
अप्रैल	६,०५८	५१८ ८	१,५ ७	१७ ०	१,४ ३	२६,६	१,६२७
मई	अज्ञात	५४६ २	१,६-७	१७ २	१,४ ३	३२ ३	१,८५६
जून	अज्ञात	५५६ ६	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात
जुलाई							
अगस्त							
सितम्बर							
अक्टूबर							
नवम्बर							
दिसम्बर							

[क] जम्मू और काश्मीर के आँकड़े भी सम्मिलित हैं। अन्य दो स्थानों के साथ सार्वजनिक उपयोग के कार्यों के सब स्थान भी इसमें आ जाते हैं।

१. औद्योगिक उत्पादन (८) रासायनिक उद्योग

वर्ष	रंगलेप और बारनिशों (टन)	टियासलार्ड [छ.] (००० पेटिया) [ब.]	साबुन [भ.] (टन)	सरस (ह्रडरवेट)	घातुओं को जोड़ने की		ग्लिसरीन (टन)	बेकलाइट का साचे बनाने का चूरा (००० पीड)
					आकसीजन (लावल घन फुट)	एमिल्लीन		
१९४६	३०,५००	४११६					१,७८८	
१९४७	३०,६०४	४६५६					१,९३२	
१९४८	३५,७२४	५३२८	७४,६००	१२,२६४			२,१४८	
१९४९	३०,६२४	५२६८	७१,००४	१२,१४४			१,७४०	
१९५०	२७,६४८	५२३२	७२,६६६	१३,५००			२,००४	
१९५१	३३,४८०	५७७२	८३,४३६	१५,१२२	१,५४२०	२६८८	२,४२४	४५६२
१९५२	३२,१७२	६०८४	८६,३७३	१४,६४०	१,२२६०	३१४६	२,२२०	६५७२
१९५३	३०,८८८	५६०४	८०,०८८	१७,१००	१,०२१६	३४६८	२,५०८	८३६४
१९५४ जनवरी	३,१८२	४४६	५,१२३	१,६१२	१७००	३३०	५४	६४०
फरवरी	२,५४७	४१२	५,२४०	१,६२३	१६८८	३२०	२१८	२३६
मार्च	२,६००	४५७	६,२७५	१,८६४	१८६८	३४०	२०२	७३६
अप्रैल	२,३६५	३८७	५,६८०	१,६६८	१६४०	३००	१८२	७४४
मई	२,१६५	४३६	६,०६५	१,६३०	१६००	२८०	१४८	८२४
जून	अभाव	३४१	अभाव	१,७०७	१६३०	३४०	अभाव	६३४
जुलाई								
अगस्त								
सितम्बर								
अक्टूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

[छ.] इसमें जम्बू और कारमीर के आकड़े भी शामिल हैं।

[ब.] ६० तीलियों वाली डिब्बियों के ५० मोस।

[भ.] ये आकड़े तगदित कारखानों के उत्पादन के हैं।

(८) रासायनिक उद्योग

वर्ष	६४ लिचक का सत्व		६५ रेयन (टन)	६६ अलकोहल (००० गैलनों में खुला हुआ)			६७ अलसी का तेल, पोटा हुआ टाट (लिनीलियम) (००० ली० गज)	६८ प्लास्टिक के साचे (००० मोस)
	इकेकशन (००० सी ली)	खाने वाला (००० पीड)		इकनो में				
			जलनी वाला	शुद्ध स्पिरिट	मिश्रित स्पिरिट			
१९४६				२,३६७६	२,१४६८	१,०२३६		
१९४७				२,७३६०	१,७७४८	१,०८४८		
१९४८				३,७७३४	२,२८२२	२,४०२६		
१९४९	७,३१८८	१८२३		५,२३००	१,०६१०	१,०६५६		
१९५०	११,१५५६	३०१२		५,५७६६	३,४७१६	१,५७७२		
१९५१	१०,६८२४	३३१२	२,०८८	५,०६१२	५,०१००	१,६६६६		
१९५२	१०,३७२८	३३०८	३,५८८	७,७४२४	४,६३२०	२,१४८८	१,५६६	
१९५३	१०,१३८८	२०४४	४,३१६	७,६७७६	५,०२६०	२,२३८०	१,५४४४	
१९५४ जनवरी	१,५१६०	२५२	३८८	६३६८	४४४२	३२२३	२०७	
फरवरी	६१३४	२३१	३५४	६२६४	४७०५	२२७३	२५४	
मार्च	१,१८४०	२१६	३६६	६७६३	५०५१	२७२८	३६५	
अप्रैल	१,०५३७	२२१	३६५	८८८४	३७७६	२७६१	२६६	
मई	१,१२३१	१२५	४०४	७०००	३२०६	२४२६	२७२	
जून	अभाव	अभाव	३८४	६३६१	३७०७	२१०४	१८७	
जुलाई								
अगस्त								
सितम्बर								
अक्टूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

१. औद्योगिक उत्पादन (६) सीमेंट और चीनी मिट्टी का माल

वर्ष	६६	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७
	सीमेंट	सीमेंट की चादरें, एसचेमेटम	सफेद माल	स्पन्दना के लिये बनाया गया माल	पत्थर का मामान	चीनी की पाणिश वाले मल	कच्ची आच सहन करने वाली मिट्टी की टैं	पिसने वाला मामान	विजली-अवरोधक (इन्सुलेटर)
	(००० टन)	(००० टन)	(टन)	(टन)	(००० टन)	(००० टन)	(००० टन)	(००० टन)	एच.टी. (०००) एल.टी. (०००)
१९४६	१,५४२ ०	२५ २					१४६ ०	६१ २	
१९४७	१,४४७ १						१७५ ०	४० ८	७४ ४ १,५०२ ६
१९४८	१,५५२ ८	७६ ८	५,२७६ ५	१,४६५ १	१५ ६	..	१०६ ६	४५ ६	६ ० ० २,५०२ ६
१९४९	२,१०२ ४	८६ ४	२,७३२ २	१,७०० ०	२२ ८		२० ८ ८	२५ २	१३६ ० २,२३६ १
१९५०	२,६१२ ४	८६ ४	६,०६ ०	१,७० ८	२६ ४	६२.४	२३६ ४	३१ २	१७४ ० १,२७६ २
१९५१	३,१६५ ६	८२ ६	६,१६२ २	६४ ८	३० ०		२३७ ६	३७ २	२४४ ० १,४२२ ८
१९५२	३,५२७ ६	८७ ६	६,०२ ०	६२२ २	३३ ६	३४५ ६	२४२ ६	५५.२	३२५ २ ३,०७ ०
१९५३	३,७० ०	७५ ६	८,०१६ ६	७० ०	३३ ६	३७६ २	२२ ०	५७ ६	५४७ २ २,३०६ ४
१९५४	जनवरी ३३२ ८	७७	२५७	६६	२ ०	२२ ६	१८ ७	५ ६	६६ ८ ४४ ६
	फरवरी ३३१ ६	७५	८ ०	५ ०	३ ०	३७ ६	१७ ८	५ ३	४२ ४ २४७ ६
	मार्च ३ ८ ६	७ ०	८ ८ ८	१ ० २	३ ०	४५ ६	२ ० ७	५ ५	४ ८ १ ६५ ०
	अप्रैल ३ ५ ६	६ ३	६ १ ३	१ ० ६	३ ४	२६ ३	१ ० ३	७ ०	४ ८ १ २५ ०
	मई ३ ७ ३ ४	६ ०	८ ८ ८	१ १ ०	३ ५	३५ ७	१ ५ ४	५ १	५ १ २ २५ २ ८
	जून ३ ४ ७ ४	६ ३	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात
	जुलाई								
	अगस्त								
	सितम्बर								
	अक्टूबर								
	नवम्बर								
	दिसम्बर								

(१७) काँच और काँच का सामान

वर्ष	७८	७९	८०	८१
	काच की चादरें (००० वर्ग फुट)	प्रयोगशालाओं का सामान (टन)	विजली की बतियों के खोल (लाख बतियाँ)	काच का अन्य सामान (टन)
१९४६	८,७३६ ०			
१९४७	५,७१६ २			
१९४८	६,२५५ ६	१,६२ ०	११२ ६	६२,५१६
१९४९	३,५५१ २	१,६ ०	८ २	६४ ४ २ ८
१९५०	६,५७ ० ०	२,१६ ०	१०६ ६	७२,२१६
१९५१	१,० ८ २	१,६ ०	१४४ ०	६ ०,३२४
१९५२	६,०४३ २	१,५७ ६	१६६ ८	८५,३६ ८
१९५३	२,७ ६ ८	१,३ ६ २	१६६ २	६७,७७ ६
१९५४	जनवरी २,२५२ ४	१ ० ०	१ ७ १	७,२१६
	फरवरी २,१४ ८ ४	१ १ ६	१ ३ २	५,२१ ०
	मार्च २,४ ० ६ ७	१ १ ६	१ ४ ४	७,२ ७ ३
	अप्रैल १,५ ६ ७ २	१ १ ६	१ ३ ०	७,११६
	मई ४ ६ ० ८	६ ०	१ ६ १	७,० ८ ३
	जून अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात
	जुलाई			
	अगस्त			
	सितम्बर			
	अक्टूबर			
	नवम्बर			
	दिसम्बर			

१. औद्योगिक उत्पादन (१२) खाद्य और तन्माकू

वर्ष	६२ [ज] गहूँ का आटा (००० टन)	६३ [ड] चीना (००० टन)	६४ [उ] काफी (टन)	६५ [इ] चाय (लात पौड)	६६ नमक (००० मन)	६७ वनस्पति तेल से बनी हुई वस्तुए (टन)	६८ सिगरेट (लात)	
१९५६		६२२ =	२४,०५०	५,५१५ ०	४७,०६८	१,३५,०६६		
१९५७		६०१ २	२४,०५०	५,६१३ ६	५१,६००	६५,११२	१,००,७६६	
१९५८		२,०७५ ६	२६,१२०	५,६००	६३,५२८	१,२६,६६६	२,२०,२५५	
१९५९	४१७ ६	१,००० =	२२,३२०	५,८५० ०	६५,६२०	१,५५,५५५	२,१०,६०५	
१९५०	४७७ ०	६७६ =	२०,५२०	६,०६६ ०	७१,३१६	१,७१,६३६	२,६६,२६२	
१९५१	४८६ ०	१,११४ =	१८,०६६	७,३०३ २	७४,३७६	१,७२,३२०	२,५५,६००	
१९५२	५१२ ५	१,४६५ ०	२१,०६६	६,२२६ =	७४,०६०	१,६०,०२२	२,०१,१६२	
१९५३	५२३ ६	१,२६१ २	२२,५७२	६,००१ ६	८६,३१६	१,६१,३५२	१,६६,७६५	
१९५४	जनवरी फरवरी मार्च अप्रैल मई जून जुलाई अगस्त सितम्बर अक्टूबर नवम्बर दिसम्बर	३५ ५ ३६ १ ३६ १ ४० ७ ३६ =	३०३ ६ २५१ १ २५५ १ ४२ ५ २ ६	२,६०६ ५,८५१ ४,१६० ४,३०५ ३,७२६	६५ ० ५७ ५ १०० = १४७ ६ ५६२ ७	१,००६ ३,६८३ ६,६६२ १२,५५६ १७,०६५	१,७,०६३ १८,२१७ १६,००३ २२,७७० अप्रगत	१,७,१६७ १६,१११ १६,६२५ ६,८८५ =,२५५

[ज] ये आँकड़े केवल बड़ी आटा मिला के हैं। [ड] ये आँकड़े फनला साज (नवम्बर से अक्टूबर) तक के हैं और केवल गन्ने से बने वाली चीनी के विषय में हैं। [उ] ये आँकड़े शोबने और पोखने के परचाट काफी मण्डार मे दे दी जाने वाली काफी के विषय में हैं। [इ] ये मासिक आँकड़े पंजाब (बर्गंडा और मण्डी रियासत) के उत्पादन को छोड़ कर हैं।

(१३) चमड़ा उद्योग

वर्ष	६६ जूते, पश्चिमी ढग के (००० जोड़े)	१०० जूते, देसी ढग के (००० जोड़े)	१०१ कमाय चमड़े का काम (०००)	१०२ वनस्पति सामग्री से कमाया हुआ गाय भैंस का चमड़ा (०००)	१०३ चमड़े की सा कपडा (००० गज)
१९५६					...
१९५७					
१९५८	३,२०१ ६	२,०६७ ६	१,०७२	१,६५५ ५	
१९५९	२,२०० ०	२,१०० ५	५०० =	१,८३५ ८	
१९५०	२,०३६ =	१,६६६ =	५६५ ६	१,५१५ ५	
१९५१	३,६१० =	२,०७३ ६	८७२ ६	१,७०० ०	१,६१० =
१९५२	३,३६७ २	१,०६० ०	६५० ५	१,५७५ ५	६३५ ८
१९५३	३,३५० =	२,२०५ ५	७०० =	१,२६५ ५	६८६ ५
१९५४	२६६ ५	१६५ ६	५६६	१०० २	= ३
जनवरी	३१७ ५	१८० =	६६ १	१२० ५	६६ २
फरवरी	३२२ १	१३० =	७१ ६	१३० ५	६७ ७
मार्च	२६५ ६	१५५ ५	६६ ६	१२१ ५	= ७ ५
अप्रैल	२०० १	१६० ५	५६ ३	६२ =	६५ १
मई	२५० ७	१६० ७	५७ २	६२ ३	अप्रगत
जून					
जुलाई					
अगस्त					
सितम्बर					
अक्टूबर					
नवम्बर					
दिसम्बर					

१. औद्योगिक उपादन (११) अन्य उद्योग

वर्ष	१०४ खनिज कोयला (००० टन)	पाय की पेटिया	१०५ प्लाटबुट (००० बर्ग फुट)			१०६ कागज (टन)			
			व्यापारिक	छुपाई और लिफ्टर का	योग	लेपटने का	विशेष विस्म का फटा	गसे	योग
१९४६	२८,८८४	३५,४००	२३,४००	५८,८००	६४,८६६	१५,६८४	६,८२८	१८,५८८	१,०५,६६६
१९४७	३०,०००	२८,५६०	५,७३६	३४,२६६	५२,७७६	२६,८८८	५,३६६	१८,२५६	६३,०६६
१९४८	२६,८२०	४५,१०८	८,२४०	५३,७३६	५०,७७६	१७,६८८	१२,६६६	१७,२३६	६७,६०८
१९४९	३१,५५२	३८,४००	६,२४०	४७,६४०	५६,४८४	१२,८७६	१३,६०४	१८,६३६	१,०३,२००
१९५०	३१,६६२	४१,६७६	८,८४४	५०,२२०	७०,१५६	१५,६६६	५,१६६	१८,६४८	१,०८,६३२
१९५१	३५,३०८	६०,२००	१०,२००	७०,४००	७८,४८८	२५,४८८	३,१२०	२५,०४८	१,३१,६६६
१९५२	३६,२२८	७०,२२८	१२,३३२	६०,५४०	६१,४४८	२१,५४०	२,८२०	२१,७२०	१,३७,५०८
१९५३	३५,८४४	४६,५००	११,३७६	६०,८७६	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	१,३८,२६६
१९५४	जनवरी परवरी मार्च अप्रैल मई जून जुलाई अगस्त सितम्बर अक्तूबर नवम्बर दिसम्बर	२,६०३ ३,०५६ ३,०७१ ३,०३७ ३,६७७ अज्ञात	४,२६३ ५,७७२ ३,७४१ ३,६७४ ३,६२६ अज्ञात	८६२ ८८६ ६६२ ६३६ ८३५ अज्ञात	४,६२५ ५,६६१ ५,०३१ ४,६१३ ५,५६४ अज्ञात	अज्ञात अज्ञात अज्ञात अज्ञात अज्ञात अज्ञात	अज्ञात अज्ञात अज्ञात अज्ञात अज्ञात अज्ञात	अज्ञात अज्ञात अज्ञात अज्ञात अज्ञात अज्ञात	१०,३२८ ६,३८६ ६,५३६ अज्ञात अज्ञात अज्ञात

(११) अन्य उद्योग (शिपांक) परिवहन

वर्ष	१०७ मोटर गाडिया (सख्या)			१०८ साइकिले		
	कारें	ट्रक	योग	पूरी तैयार (मूल्य ००० रुपये)	हिस्से	
१९४६				४२,६८४ (ठ)	६६२६ (ठ)	
१९४७				३१,८६० (ठ)	१,७१२४ (ठ)	
१९४८				३३,८८६	१,११४८ (ण)	
१९४९	६,६७२	१५,१३२	२१,८०४	०,०२८	१,७३६६ (ण)	
१९५०	६,५८८	८,०१६	१४,६०४	१,०३,१५२	६,५३६२ (ण)	
१९५१	१२,३८४	६,८८८	१९,२७२	१,१४,२७६	६,४६०४	
१९५२	६,६४८	८,३४०	१५,०८८	१,६६,६५६	८,२७७६	
१९५३	५,६३२	८,६८८	१३,३२०	२,६४,१६८	१०,६६४०	
१९५४	जनवरी परवरी मार्च अप्रैल मई जून जुलाई अगस्त सितम्बर अक्तूबर नवम्बर दिसम्बर	२७७ अज्ञात ५०० अज्ञात अज्ञात अज्ञात	६६६ अज्ञात ७३६ अज्ञात अज्ञात अज्ञात	१,३७३ १,२१३ १,२६६ ८३६ २२,३०४ ३३,०७३ अज्ञात	१८,६०० २२,५६३ २७,८३६ ३६,३०४ ३३,०७३ अज्ञात	८५७० ७६६६ ८६१५ ६३७६ ६५४१ १,०४३६

२. भारत का विदेशी व्यापार

(क) व्यापार-सन्तुलन का लेखा

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(लाख रुपये में)

व्यापारी माल	१९५०-५१	१९५१-५०	१९५०-५१	१९५१-५०	१९५१-५०	१९५१-५०	१९५१-५०	१९५१-५०	१९५१-५०
(क) भारतीय व्यापारी माल का निर्यात									
समुद्र तथा वायु	५,११,०४	५,७२,०७	५,७०,६०	७,०१,७५*	५,५२,७७	५,१५,६६	७,००,००	६,००,००	६,००,००
स्थल द्वारा	३०,३६(म)	२७,००	१७,०१	२७,१५*	१०,०५	७,५६	७,००	७,००	१,०१
योग	५,४१,४०	५,९९,०७	५,८७,६१	७,२८,९०*	५,६२,८२	५,२३,२२	७,०७,००	६,०७,००	६,०१
(ख) भारतीय व्यापारी माल का निर्यात									
(बिना समुद्र तथा वायु द्वारा)									
१. खाद, पेष और लकड़	६२,२०	२,१५,००	२,२५,००	२,५०,००	२,५२,३०	२,५२,३०	२,५२,३०	२,५२,३०	२,५२,३०
२. कच्चा माल तथा उपज और सुल्यन अनिमित्त माल	६७,०७	१,०५,२६	१,०५,७७	१,०६,६०	१,०६,६०	१,०६,६०	१,०६,६०	१,०६,६०	१,०६,६०
३. पूर्णतः कषसा सुल्यन निर्मित माल	२,२६,०६	२,५६,७५	२,१५,७०	५,००,०६	२,५२,००	२,५२,००	२,५२,००	२,५२,००	२,५२,००
योग [जिनमें (५) जीविन परु और (५) टाक द्वारा भेजी गरी वस्तुएँ भी सम्मिलित हैं] ..	५,११,०४	५,७२,०७	५,७०,६०	७,०१,७५*	५,५२,७७	५,१५,६६	७,००,००	६,००,००	६,००,००
(ग) पुननिर्वात (कच्चा माल व्यापार छोड़कर)	७,२६	६,०७	५,५६	५,०५	५,०५	५,०५	५,०५	५,०५	५,०५
(घ) कुल निर्यात	५,४८,७२	५,०६,०२	६,०१,१७	७,२८,९५*	५,७७,६५	५,२७,६५	७,०७,००	६,०७,००	६,०१,१७
(ङ) आयात									
समुद्र तथा वायु द्वारा	५,५७,१७	५,६५,२५	५,६१,१७	७,७५,६५	६,२६,०७*	५,५१,०२*	६,२६,०७	६,२६,०७	६,२६,०७
स्थल द्वारा	५,०० (म)	३३,७१	५२,७६	०,५५	२५,२६	२२,६६	२,३७	२,३७	२,३७
योग	६,५२,१७	६,००,०५	६,१३,९३	८,२६,२०	६,५१,३३	५,७३,६८	६,२८,३७	६,२८,३७	६,२८,३७
मकानप व्यापार बाकवर		३,१५	६०	००	१६	१२	३	३	३
(च) शुद्ध आयात	६,५२,१७	६,०३,२०	६,१३,३३	८,२६,२०	६,५१,३३	५,७३,६८*	६,२८,३७	६,२८,३७	६,२८,३७
(छ) आयात									
(समुद्र तथा वायु द्वारा)									
१. खाद, पेष और लकड़	१,२७,२२	२,५६,७५	२,१०,६३	२,५२,०७	२,७५,६५	२,७५,६५	२,७५,६५	२,७५,६५	२,७५,६५
२. कच्चा माल तथा उपज तथा सुल्यन निर्मित वस्तुएँ	१,२७,५७	१,५५,२७	१,६०,०६	२,५६,००	१,७६,६६	१,७६,६६	१,७६,६६	१,७६,६६	१,७६,६६
३. पूर्णतः कषसा सुल्यन निर्मित वस्तुएँ	२,६७,६०	२,००,००	२,६६,०५	३,५८,५८	२,७३,७७	२,७३,७७	२,७३,७७	२,७३,७७	२,७३,७७
योग [जिनमें (५) जीविन परु और (५) टाक द्वारा भेजी गरी वस्तुएँ भी सम्मिलित हैं]	५,२१,३९	५,६५,२५	५,३६,७४	७,७५,६५	६,५३,९८	५,७३,६८	६,२८,३७	६,२८,३७	६,२८,३७
(ज) व्यापारी माल का व्यापार सन्तुलन	-१,०३,४५	-१,१०,९६	-२,४२,७६	-७,०१,२०*	-१,१५,६६	-१,१५,६६	-१,१५,६६	-१,१५,६६	-१,१५,६६

*इसमें टाक तथा बाकरी के अन्य आयात का मुद्दा भी सम्मिलित है।

(म) केवल एकदिशा के निर्यात।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की प्रमुख वस्तुएं

(समुद्र, वायु तथा स्थल मार्गों द्वारा)

(१) जूत, पेय और तम्बाकू

(मूल्य लाख रुपये में)

वर्ष	वस्तु	मूल्य		काज की गिरी		इलायची		शहतूत		चाय	तम्बाकू	
		(००० इंडरपैट)	(००० इंडरपैट)	(००० इंडरपैट)	(००० इंडरपैट)	(००० इंडरपैट)	(००० इंडरपैट)	(लाख पौंड)	(लाख पौंड)		(००० पौंड)	
१९५०-५१	परिमाण	२३५	३०६	३६६	१८	१५१	५५,२०	६,६०	५,६७९*			
	मूल्य	१,५७	५०	५,६३	७२	३,६७	६६,२५	६,५६	५,६८			
१९५१-५२	परिमाण	३२१	७३५	३७६	१६	३१३	५५,५०	६,२०	५,२६७*			
	मूल्य	१,६१	१,२६	५,६१	१,२५	१,५५	७२,६१	११,६५	५,१०			
१९५२-५३	परिमाण	३८७	१,१६	५०८	१२	३०८	५५,२०	१०,३०	११,८२८			
	मूल्य	२,५६	१,१५	८,५५	१,५८	२०,५०	८०,५२	१५,११	५,३५			
१९५३-५४	परिमाण	५३५	६२५	५२६	१५	२६८	५२,६०	११,२०	१२,३५६			
	मूल्य	३,२८	१,०७	६,०३	१,६५	२३,२२	६३,८६	१६,१५	६,३६			
१९५४-५५	परिमाण	५८८	६६५	५५८	२०	२५८	५२,७०	८,००	५,१५२			
	मूल्य	३,८७	१,१३	६,६८	१,६६	१६,०६	८०,८८	१२,०३	२,५५			
१९५५-५६	परिमाण	५३६	५६६	२७	१८	२५८	५७,१०	६,५०	२,६७८			
	मूल्य	५,१६	६८	१०,६३	१,३५	२२,७२	१,०२,१५	१०,२२	१,०५			
१९५६-५७ :	परिमाण	६	१२	३२	१	३३	६०	२०	२६			
	मूल्य	=	१	५७	६	१,२५	२,३६	२७	१			
१९५७-५८ :	परिमाण	२३	५०	५७	१	२५	२,००	६०	१५५			
	मूल्य	२३	६	१,०१	७	१,६८	२,६२	८६	५			

* केवल समुद्र तथा वायु द्वारा।

(ग) विचारारथीन।

† अफगानिस्तान और पेरान को स्थल मार्ग द्वारा भेजे गये मान के आंकड़ों को छोड़कर।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएं

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(२) कच्चा माल तथा उपज और मुख्यतः अनिर्मित माल

(मूल्य लाख रुपये में)

वर्ष	कोयला	अवरक	लाव	चमड़ा, कच्चा	खालें, कच्ची	पुराना लोहा व इस्पात पुनर्निर्माण के लिये	र्यानिज लोहा	खनिज लोहक	ऑक्से	हड्डियाँ कारखानों के लिये	
	(००० टन)	(००० टन)	(००० टन)	(००० टन)	(००० टन)	(००० टन)	(००० टन)	(००० टन)	(००० टन)	(००० टन)	
१९५०-५१	परिमाण्य मूल्य	१,३३२ ४,५८	३४० ५,६४	४२१ =,९६	४२ ४६	२०४ ४,६८	नागय नगय	३०६ १,८१	६१२ ५५	३१ ५७	
१९४९-५०	परिमाण्य मूल्य	२ ३२३ ७,६३	२६८ ६,३५	४५६ = ०६	१६ २१	२५८ ६ ५६	० २ ० ३१	४ १	७३६ ५,८५	=४५ ६०	३७ ६६
१९४८-४९	परिमाण्य मूल्य	६८४ ३,४४	४०७ १०,००	६६२ ११,८६	३८ ६६	२४८ =,७४	२ ४	=५ २२	=२१ =,०१	=२१ १,०३	४५ १,१६
१९५१-५२	परिमाण्य मूल्य	२,००१ ६,५५	४०८ १३,२१	७१४ १४ ८७	२४ ६२	२२० ७,६२	४३ ७०	२०० १,००	१,१२५ १५,६६	=६७ १,१३	४६ २,२८
१९५२-५३	परिमाण्य मूल्य	२,६६८ १०,०३	२८४ ६,०१	६८८ ७ ६१	१ २	२२६ ५,५४	४७६ १०,२३	८११ ३,७१	१,४४० २१,७६	२६६ ४८	७२ २,२७
१९५३-५४	परिमाण्य मूल्य	१,६१७ ६,८८	२५० ७,६५	६३८ ६,७६		२०७ ६,०६	२५० ४,६७	१,२०० ५,५३	१,५६८ २४,२५	६६७ ६२	६६ २,०४
१९५४-५५	परिमाण्य मूल्य	१६१ ५५	१४ ४०	२७ ३७		२३ ७२	७ १२	४६ ३८	७६ ६५	१६ १	६ १६
१९५३-५४	परिमाण्य मूल्य	१०७ ६४	३१ ७४	४३ ४४		१८ १२	५६ १,१६	८३ ३७	१४१ १,६३	२१ ०	७ २१

(क) विचाराधीन।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएँ

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(२) कच्चा माल तथा उपज और मुख्यतः अतिमित माल (गत पृष्ठ से आगे)

(मुख्य लाल रूपों में)

वर्ष	वस्तु	मृगफल की अण्डों का		भलमों का		मृगफल की	अण्डों का	भलमों का	रुई, कच्ची	रुई, रसी	पट्टा, कच्चा	ऊन, कच्चा
		मैल (००० मैलन)	तेल (००० मैलन)	तेल (००० मैलन)	तेल (००० टन)	बीज (००० टन)	बीज (००० टन)	बीज (००० टन)	बीज (००० टन)	(००० इंटरवेज)	(००० इंटरवेज)	(००० पीस)
१९५०-५१	परिमाण मूल्य	८,६५१*	३,००६	२,२०१	३०	२५	७६	१,०१७	६६५	८,६५०	२,६५०	२,६५०
१९५१-५०	परिमाण मूल्य	७,०५६*	१,११०	१,७७३	११३	५	७२	५०	१,५१३	३५२	२७,३६३	३,७१
१९५०-५१	परिमाण मूल्य	१६,६६१	५,०६८	१,३५६	३०	७६	६०	१५	१,३७७	२७१	२५,३७१	७,०७
१९५१-५२	परिमाण मूल्य	५,११६	५,१२२	६,०७७	२०	१	७	२३	६२३	५१७	१५,२६५	५,६०
१९५२-५३	परिमाण मूल्य	१६,१६०	८,६२७**	६,०१२*	१३	५	नगण्य	७१	१,२५६	३५२	३७,६६६	८,५१
१९५३-५४	परिमाण मूल्य	३६०	५,५५५**	६,३०**	५	३५	१,२६६	३५५	२,०६३	२,०६३	५,०७	५,०७
१९५४-५५	परिमाण मूल्य	५७३	५१	५५	..	२	८५	३१	५,३१०	६	१,१५	१,१५
१९५३-५४	परिमाण मूल्य	०६५	१,७०१	२००	३	६	६१	२०	१,०७३	७	३१	३१

* केवल समुद्र मार्ग द्वारा।

** अर्थात्।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएँ

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(३) पूर्णतः अथवा मुख्यतः निर्मित माल

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष	वस्तु का नाम	कच्चा	कच्चा	रुई	मूनी	मूनी	मूनी	विज्ञानी का	टाट	कच्ची	कच्ची	नारियल	
		बनाया	जाले	ओटी हुई	होमिदारी	(करवे जा)	(निल भा)	बाना	(मूल्यन यमी माल से बना हुआ)	(००० टन)	(००० टन)	(००० गज)	(००० पौंड)
		(००० हजार बेड)	१००० हजार बेड)	(००० पौंड)	(लाख गज)	(लाख गज)						का कपडा	कच्ची व काठीम व की अडा
१९५०-५१	परिमाण	१=३	१०४	७,४०=			३६,१०**	४५७	४३५	२४,४=०		२,३३४	२=६
	मूल्य	४,६६	७,२०	१,२६	६५		३६,५४**	५१	६१,४७	०,७२		५,१६	२,६१
१९५१-५०	परिमाण	३१५	१६२*	६७,=३५(क)			७० ६०	४३४	३०६	१२,२३०		१०,४६५	१,४२४
	मूल्य	८,४३	११,=३	१०,४०	७६		४६,६४	=१	६३,=२	५७,२५		१,४६	३,३१
१९५०-५१	परिमाण	३५१	१४=०(क)७५,०६१				६,००	१,२२,४०	३४४	२६६		६,६६०	१४,०६१
	मूल्य	१०,००	१३,३३	१७,२=	८६		१०,=	१,१०,१७	१,७१	५५,३६		५२,६१	६७
१९५१-५२	परिमाण	३३५	१२४(क) ६,१=०(क)				४,००	१,२२,५०	४७३	२=७		८,४१४	१,५६१
	मूल्य	१३,६१	११,४१	१,६७	१,=०		१,०	४०,६५	२,४६	१,२५,२६		१,२४,५=	१,०,१६
१९५२-५३	परिमाण	३१३	१५५* १=०,५३				५,४०	५६,४०(क)	३७१(क)	३०४		३,६७५	७,१२=
	मूल्य	६,२०	१०,=६	४,४१	६६		=,७४	५३,०=	२,५५	६१,३६		६३,०=	५२
१९५३-५४	परिमाण	३६४	१६=	०२,५=५			६,३०	७०,६०(क)	३५४	३=६		३,१७७(क)	=,६६७
	मूल्य	१०,=३	१३,६३	४,७६	१,०२		६,६५	५३,४४	३,२६	४०,२६		६६,५०	४६
१९५४-५५	परिमाण	१४*	७*	५६			२०	४,=०	३४	२४		१५५	=११
	मूल्य	४=*	६०*	१	६		३४	४,१=	२३	४,०=		४,०=	३
१९५३-५४	परिमाण	०७*	१०*	२,५=४			४०	४२०	२३	२६		१२१	७२५
	मूल्य	=०*	६६*	४२	६		६=	३,६७	३४	०,६२		४,६२	२

* केवल समुद्र तथा वायु द्वारा।

(क) मूल्य।

** हमने आयोगनिष्ठान और इरान को स्थल मार्ग द्वारा भेजा गया माल सम्मिलित नहीं है।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(क) निर्यात की मुख्य वस्तुयें

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(३) पूर्णतः श्रमवा मुक्त्यत निमित्त माल (गत वृष्ट से आगे)

(मूल्य लाख रुपये में)

वर्ष	राष्ट्रीय माल	तैयार वस्तु (होनियरी और नूट तथा नूतों के अतिरिक्त)	फिलस रीन*	इसबनोल वी भूस्ती**	कच्चा लोहा	धातु क बनन तथा कन्वर्टी	कमर उपकरण आदि	आच मिट्टी का सामान (सीने की मशीनों सहित)	मशीनों और कारखानों का सामान (सीने की मशीनों सहित)	कागज तथा लिखने की सामग्री	रबर से बनी वस्तुएँ	धातुएँ (लोहा, इत्यादि तथा उनसे बनी वस्तुएँ के अतिरिक्त)	
	(००० टन)	(००० अतिरिक्त)	(००० टन)	(००० टन)	(००० टन)								
१९५०-५१	परिमाण्य मूल्य	१० १,१३	७४		४५	६३	५४	६४	२३२	२६	४६	१,६७	६८
१९५१-५२	परिमाण्य मूल्य	१६ १,५८	५१		७१	६१	७४	३२	६६	३१	६६	५६	५६
१९५२-५३	परिमाण्य मूल्य	२० १,२६	११५		५४	८६	७-	६६	२६	४७	३३	१,६५	१,२४
१९५३-५४	परिमाण्य मूल्य	३२ ३,८२	८२		२०	४१	१२२	१,५७	४३	६५	१,१६	१,०८	१,५१
१९५४-५५	परिमाण्य मूल्य	१६ १,३३	३,६५	६१	११	४१	११०	१,५५	३५	१,२७	८७	१,५२	२,६७
१९५५-५६	परिमाण्य मूल्य	२४ १,५५	१,४६	४५	७०	३५	२१	११३	२६	६२	८६	१,७४	१,७७
१९५६-५७	परिमाण्य मूल्य	२ १३	७	३	३	४	७	८	२	६	८	६	१०
१९५७-५८	परिमाण्य मूल्य	१ ७	१४	६	२	५	६	१२	२	...	४	१३	२६

* अगस्त १९५२ से यह वस्तु व्यापार लेख में अलग दिखाई गई है।

** अगस्त १९५३ से यह वस्तु व्यापार लेख में अलग दिखाई गई है।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ग) आयात की मुख्य वस्तुएँ*

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(मूल्य लाख रुपये में)

वर्ष	मशीन के पट्टे	रामायनिक पदार्थ के रंग	ताकाल के रंग	फल व लकारिया	अनाज, दालें और आटा*	धातु के बर्तन	यन्त्र, उपकरण आदि मशीनों के पट्टे सहित)	हर प्रकार की मशीनें (मशीन तथा तन्त्रमन्थनी बनी वस्तुएँ)	लोहा, इस्पात तथा तन्त्रमन्थनी बनी वस्तुएँ	धातु (लोहा, इस्पात तथा अन्य) के वस्तुओं के अतिरिक्त)	
१९५०-५१	२,२२	२०,५७	१२,३४	८,२५*	१,०१,७०	५,६६	१८,८१	८१,५६	१२,३१	२२,३३	
१९५१-५२	१,०१	७,७६	७,६६	१०,५८	१,३३,८८	६,१४	२०,७४	१,०५,५१	१३,७०	१८,१८	
१९५२-५३	१,१६	६,२२	११,६८	१३,५७	८०,७६	४,५७	१७,७६	६३,००	१६,००	२७,८४	
१९५३-५४	२,०७	१६,६०	१४,२७	१३,६०	२,३०,३०	६,१४	२०,५३	१,०४,३३	२१,६७	१,६७	
१९५४-५५	१,६१	१२,६८	७,५१	१३,७५	१,५६,७३	४,०५	२२,२२	८७,८६	२३,७१	१६,३७	
१९५५-५६	१,०८	१२,६६	१५,५५	१३,७८	७२,४६	४,५७	२१,५६	८५,८४	२३,५७	१५,५१	
१९५६-५७	अज्ञेय	७	१,४०	१,२१	७२	४	४४	१,६७	६,५४	१,८१	१,५५
१९५७-५८	अज्ञेय	४	१,०१	५४	६७	१५,२६	३४	२,१८	८,१३	२,६२	६०

† इनमें अनाज, दाल तथा आटे के अन्य आयात की वस्तुएँ भी सम्मिलित हैं।

* इसमें अफगानिस्तान तथा इरान द्वारा स्थल मार्ग से हुए आयात के आंकड़े सम्मिलित नहीं हैं।

वर्ष	कागज	रूबर, कच्ची	ऊन, कच्ची	नराल, इरान का मूल	मोटर आदि मशीनों के नीचे के भाग	मोटर कारों (टैंक्स) गाड़ियों के भाग	कॉपियिंग और दस्तावेज	मृत्ती कपड़े	रूबर शीट और अन्य	ऊनी माल	तेल भण्डार की वस्तुएँ	जूट, कच्चा
१९५०-५१	१३,३७	६५,५८	१,१८	१२,८३	८,६२	७,६४	८,१२*	६,३०	४,५०	३,१०	७,०८	७१,३४
१९५१-५२	७,७४	६३,७६	३,३०	१०,४६	५,३८	३,१८	८,०४	१०,७०	५,७७	१,६४	७,३०	२१,१७
१९५२-५३	६,५०	१,०७,७७	५,६२	१४,७१	२,६६	३,२४	१०,५२	१,३१	३०	१३	६,०२	२७,५७
१९५३-५४	१,६६	१,३७,१०	२,६०	१७,२६	२,७७	४,७६	१५,६०	२,३७	१,८२	४५	१०,८८	६७,०७
१९५४-५५	१,१,२२	७२,६७	६६	७,८५	२,८८	२,६६	११,४६	१,२५	२,०८	६२	५,७१	१६,५८
१९५५-५६	१,१,२५	५२,७१	१,६४	१२,०४	२,१५	२,८२	१२,४५	१,०२	१,३१	८५	६,५२	१४,३२
१९५६-५७	अज्ञेय	८४	७,६२	३	६८	२३	६७	८	११	४	५६	८४
१९५७-५८	अज्ञेय	६३	७,३८	१२	१,५८	११	३४	१,१२	६	४	७४	३५

* इनमें अफगानिस्तान तथा इरान द्वारा स्थल मार्ग से हुए आयात के आंकड़े सम्मिलित नहीं हैं।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार-ग्रुप

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष	ब्रिटेन		फ्रांस		बेल्जियम		जर्मनी		नीदरलैंड	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	१,५२,६६	१,०२,२६	३,०१	७,३५	७,१०	५,८६	२,२८	२,६१	५,४५	७,३६
१९४९-५०	१,५३,६६	१,२८,१४	३,०१	५,४७	७,६७	६,२३	६,४२	६,५१	५,६६	७,३७
१९५०-५१	१,२१,४०	१,३६,८२	११,०७	६,०१	६,०४	६,८२	१२,०४	१०,६३	६,६८	१०,१६
१९५१-५२	१,५८,१३	१,८६,६६	१०,७७	११,३७	६,५०	८,३६	२८,३४	६,३८	१०,६२	७,६२
१९५२-५३	१,३८,८४	१,२३,०६	१३,५५	५,६६	६,६०	६,६८	२२,६४	१२,४८	१०,८०	१०,३६
१९५३-५४	१,४२,७२	१,४६,८६	६,६३	५,३२	७,६७	५,५७	३१,२४	११,५६	११,३०	६,८६
१९५४-५५										
अप्रैल	१३,०६	६,३७	६१	२६	४५	२२	२,६६	६३	१,१२	४६
१९५३-५४										
अप्रैल	१२,३६	८,४६	१,०३	५०	३२	४१	३,११	७५	७०	५५

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित हैं।

वर्ष	अस्ट्रेलिया		हंगरी		पोलिण्ड		नेकोस्तोवाकिया		योगोस्लाविया		तुर्की	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	८०	३४	१२	५५	८	३२	२,०८	२,१६	१०	१०	६	६२
१९४९-५०	५६	५३	६	२३	२६	६८	२,८१	१,४६	६१	४४	१४	२,३१
१९५०-५१	१,६४	४३	१०	३	३०	४०	२,७७	१,०८	१२	६	३	२,२६
१९५१-५२	२,४७	१,०१	३२		३४	२६	२,८१	१,२६	१४	२६	१३	३,५५
१९५२-५३	१,८६	४२	१६	४	२६	५	१,३५	१,२८	६	११	०,८३	४,६५
१९५३-५४	२,५१	५७	१०	२	३६	१५	१,१४	३,०६	७	१	०,३१	२,५८
१९५४-५५												
अप्रैल	२६	नगण्य	१	नगण्य	१		१०	७	१		०,१	५
१९५३-५४												
अप्रैल	१७	७	०,४६	१	१	१	१२	१२	१	०,३६	नगण्य	४

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित हैं।

भारत का विदेशी व्यापार

(मसुद्र तथा वातु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार—यूरोप (गन वॉरिका से आगे)

(मूल्य लाल रूपायों में)

वर्ष	स्विट्जरलैंड		इटली		स्वीडन		नारवे		फिनलैंड		रूस	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	२,६६	१,२२	१२,३१	६,५५	६,०६	२,११	४,३५	२६	१,२२	१६	३,७६	५,३६
१९४९-५०	७,५५	२,५४	१४,२३	५,६६	६,२०	२,३६	२,४४	१,०६	१,१७	२०	१६,६२	३,७४
१९५०-५१	७,६१	२,२३	१६,६०	१५,००	५,७२	२,६२	२,२३	१,३३	१,४६	२१	२३	१,३७
१९५१-५२	६,६४	२,०६	१७,६६	७,२६	७,४७	२,५४	३,५२	१,६०	३,१५	१,०६	१,३२	६,६२
१९५२-५३	६,६५	६,३	१२,०१	१०,६१	५,६६	१,२२	२,७२	२२	१,२०	२५	२४	२५
१९५३-५४	६,३२	२२	२३,०७	५,१२	६,१२	१,५३	२,६२	४१	६,७७	१२	६०	१,१५
१९५४-५५												
अर्धवर्ष	५१	५	१,६३	३६	४२	१२	२१	३	११	१	१	७४
१९५३-५४												
अर्धवर्ष	१,३४	४	२,०५	६२	४१	१५	१३	२	१०	१	१	

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित हैं।

एशिया और अफ्रीका

वर्ष	भारत		इराक		इरान		पाकिस्तान		पूर्वी अफ्रीका		मिस्र	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	१,७७	२,००	१,२७	१,३६	२०,५०	३,१४*	१,०७,३७	७६,६६	१४,०२	५,५४	३२,६०	६,७२
१९४९-५०	१,४६	७,११	३,३२	४,०२	३२,५०	४,२२	४४,०५	४३,३०	१२,४२	६,०३	४०,२४	७,६४
१९५०-५१	१,१६	६,७६	४,२६	२,२६	३७,१४	५,६२	४३,६५	३०,६०	२२,४३	६,०६	३२,२७	५,७७
१९५१-५२	२६	६,३०	३,६१	३,१६	२,६३	४,१७	२७,५०	४५,२६	२३,६६	१२,१०	४०,४६	६,४६
१९५२-५३	५६	६,३२	२,०५	२,११	२,५०	२,०७	२१,२२	३२,१४	२४,१३	११,३६	१५,१२	५,६६
१९५३-५४	३२	६,०३	२,५६	२,४४	२,०४	१,५३	१६,३०	२,०४	२०,१७	१०,७६	२७,६६	३,५३
१९५४-५५												
अर्धवर्ष	१	५०	१६	१२	५५	१६	१,०४	६७	२,२७	६५	३,६२	११
१९५३-५४												
अर्धवर्ष	३	१,४६	६	१३	५	२	६०	३२	३,२५	२०	१,१७	५२

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित हैं।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार—एशिया और अफ्रीका (गत तालिका से आगे)

(मूल्य लाख रुपये में)

वर्ष	मोगाम्बिक		लका		बर्मा		मलाया संघ, (सिंगापुर सहित)		भारतव्य		जापान	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	२,४७	८७	२,७३	१२,३१	२६,२४	१०,४६	९,६०	५,३४	८,५३	३,३७	६,३८	४,५९
१९४९-५०	३,००	६२	२,७३	१६,८२	१४,१७	१४,६३	१४,४८	१७,९८	१२,२४	४,१९	२१,३८	५,८७
१९५०-५१	४,४४	५२	४,५३	१६,६८	१८,००	२२,५४	१६,६६	३६,२०	८,१५	४,८५	१०,११	१०,२८
१९५१-५२	३,४२	६२	४,६०	१६,८१	२३,३५	१६,७९	२२,०९	१५,८१	११,६४	८,७६	२४,६५	१४,८१
१९५२-५३	५,६५	६४	४,२९	२०,०८	२६,४७	२२,३८	१४,८२	१८,८६	७,७२	४,३९	१५,८२	३१,६९
१९५३-५४	४,४८	७०	५,०८	१८,१२	१७,५५	२१,०९	२०,४५	१४,२१	४५	३,६२	१३,०६	२३,६०
१९५४-५५ :												
अप्रैल	२४	४	६५	५४	३२	२,४८	२,०२	६१	०,२७	२०	७४	१,१८
१९५३-५२ :												
अप्रैल	६२	६	२८	१,०६	१,६१	१,३९	१,११	१,१०	१	३०	१,२७	२,६५

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित हैं ।

अमेरिका और आस्ट्रेलिया

वर्ष	समुद्र राष्ट्र अमेरिका		कनाडा		अर्जेन्टिना		आस्ट्रेलिया	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	१,०९,१३	७०,६८	१०,६६	८,३९	१२,८८	१६,६८	३०,०३	२०,६५
१९४९-५०	६५,४१	८१,५३	२३,६३	११,०६	८,६९	७,७८	४७,७५	२६,३९
१९५०-५१	१,१७,८७	१,१५,३८	२१,०२	१३,७३	५	१०,६५	३३,४४	३०,४१
१९५१-५२	२,८८,७०	१,३२,३६	१८,८१	१६,२९	७९	१७,६३	१७,६१	४७,६३
१९५२-५३	१,८१,४१	१,१२,७४	२६,३१	१२,८४	४	६,८३	१२,७३	१६,६८
१९५३-५४	७९,२४	६०,४६	१४,१०	१३,०९	२	१६,५७	२५,६९	१७,४३
१९५४-५५ :								
अप्रैल	६,५०	६,१०	३४	१,२४	नगण्य	४१	४७	१,७६
१९५३-५४								
अप्रैल	१२,७१	८,७०	१,५०	१,२३		६१	२,८९	१,०५

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित हैं ।

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएँ	थान	इकाई	अगस्त १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			ह० आ० पा०	ह० आ० पा०	ह० आ० पा०	ह० आ० पा०	ह० आ० पा०
खाद्य पदार्थ							
१ चावल							
(१) साधारण (न)	कलकत्ता	मन	१६ १२०	१६ १२०	१६ १२०	१६ १२०	१६ १२०
(२) लाल	पटना	"	२४ ००	१६ ००	१७ ००	१७ ००	१७ ००
(३) अन्नगद्दा (उ)	चिन्नपचाडा	"	१४ ६३	१४ ६३	१४ ६३	१४ ६३	१४ ६३
२ गेहूँ							
(१) साधारण	चबलपुर	"	२१ ५०	१८ १३०	१८ ६०	१७ ६०	१५ १२०
(२) "	अमृतसर	"	१४ २५	१६ ००	१६ १२०	१६ १४०	१८ ११०
(३) "	हापुड	"	१६ १४०	१७ ४०	१६ ४०	१५ ५०	१६ ००
३ ज्वार							
	अमरावता	"	११ ४०	१० १००	१० ४०	६ १००	१० २०
४ नाचरा							
	दैनाराबाग शहर	२४० पींड	४६ ००	४४ १२०	४४ १४०	४८ ८०	४७ ००
५ चना							
		का पत्ता					
(१) लाली	पटना	मन	१७ ८०	१५ ००	१५ ००	१३ ००	१२ ८०
(२) "	हापुड	"	१६ ६०	१४ ८०	१३ ८०	११ १००	१३ ००
६ दाल							
	अहर	"	१४ ६०	१० ००	१० ४०	६ १४०	१० १२०
७ चाय							
(१) आन्तारक उपभोग के लिए	कलकत्ता	पींड	१ ६३	१ १३२	१ ६ ११	१ १४ ६	२ १०
(२) निनात —							
(क) निम्न मध्यम ब्रीक पीको	"	"	१ ११०	अप्राप्त	२ १ ६	अप्राप्त	अप्राप्त
(ख) मध्यम ब्रीक पीको	"	"	१ १२ ६	अप्राप्त	२ २ ६	अप्राप्त	अप्राप्त
८ कार्फी							
(१) प्लाण्टेशन पानेरी (गोला)	मंगलौर	हन्टकेज	५६ ००	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२३२ ८०
(२) वहा नपनी	"	"	१६० ००	१७३ ८०	१६६ ००	१६० ००	१५७ ८०
९ चीनी (क)							
(१) सी २८	बालपुर	मन	२६ ३३	३० ०४	४० ६७	३० ५३	३३ १४४
(२) सी ००	"	"	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
(३) ई २७	"	"	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
१० गुड़							
(१) खाने के लिये	अहमदनगर	"	०४ ००	१६ ८०	१८ ००	१६ ००	१६ ००
(२) " " "	मुम्बैनरनगर	"	४१ १४०	१५ १४०	१५ १०६	१६ ६०	२१ ११०

(न) निनात मूल्य (उ) उचित मूल्य

मन = ८०—२७ पींड ।

(क) बाजारों से चलते समय का मूल्य ।

बंगाल मन = ८२—२५ पींड ।

* इस तालिका में अगस्त माघ प्रायः मास के दूसरे महीने के लिये गये हैं ।

के भाव : १९५४*

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
₹०आ०पा०	₹०आ०पा०	₹०आ०पा०	₹०आ०पा०				
१६-१२-०	१६-१२-०	१६-१२-०	अप्राप्त				
१७-०-०	१४-०-०	१४-०-०	१५-०-०				
१४-६-३	१४-६-३	१४-६-३	१५-१०-८				
१४-६-०	१४-०-०	अप्राप्त	अप्राप्त				
१४-०-६	१०-०-०	१०-१४-०	१२-६-०				
११-८-०	११-१२-०	१२-४-०	१२-२-०				
१०-२-०	६-०-०	६-४-०	अप्राप्त				
२३-१२-०	२६-६-०	२७-०-०	२६-४-०				
१२-८-०	११-०-०	१०-८-०	११-०-०				
१२-४-०	१०-४-०	१०-०-०	६-८-०				
१०-५-०	८-२-०	७-१५-०	७-४-०				
१-१२-८	अप्राप्त	२-०-११	२-२-७				
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२-१२-०				
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२-१२-६				
२२२-८-०	२१६-०-०	२२१-०-०	२२१-०-०				
१५२-०-०	१६२-८-०	अप्राप्त	अप्राप्त				
३१-६-४	३०-८-७	३१-०-५	३१-१२-०				
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	३०-२-०				
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त				
अप्राप्त	१६-०-०	१७-८-०	१७-८-०				
२०-१०-०	१७-१०-०	१६-०-०	२१-८-०				

३. देश में वस्तुओं

वस्तु	बाजार	इकाई	अगस्त १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
११ नमक			रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०	रु०आ०पा०
(१) सामर (म)	गुलला	मन	१ ८०	२ ८०	२ ८०	२ ८०	२ ८०
(२) काला	बम्बई	,,	१ २०	१ २०	१ २०	१ २०	१ २०
१२ तम्बाकू							
नानी पूला मध्यम (साधारण ब्राँसिन दर्जे का)	कलकत्ता	बगाल मन	११० १३ ६	१२० १३ ६	१२० १३ ६	१२० १३ ६	अप्रैल
१३ फाली मिर्च							
(१) धलेया (बिना छटा हुई)	,	,,	२२० ००	२२० ००	१८० ००	१६० ००	१७० ००
(२) छटा हुई	कान्वाल	हथरवट	१०१ ११ ०	२२५ ००	२१० ००	२६७ ८०	२६० ००
१४ काजू							
भारतीय	मंगलौर	मन	२२ ६ ६	१२ १० ७	१२ १० ७	१३ १४ १०	१५ ३०

औद्योगिक कच्चा माल

१ रुई, कच्ची

(१) ताराला एम वी एफ	बम्बई	७८४ पीट का बैक	७ ७ ००	७ ६ ३ ००	८२० ००	७ ५ ४ ००	७ ५ २ ००
(२) २१६ एफ पा	,,	,,	६ ७ ००	अप्रैल	६ ८ ६ ००	६ १ ८ ००	६ १ ७ ००
अमेरिका एम वी							
(३) बगाल बरिया एम का	,	,	५ ८० ००	६ २ ५ ००	६ ४ ० ००	६ २ ० ००	५ ६ ५ ००

२ जूट कच्चा

(१) फट्ट म	कलकत्ता	४०० पीट की गा	१ ६० ००	१ ७० ००	१ ६ ५ ००	१ ६ ५ ००	१ ७ ५ ००
(२) लाटमिग	,	,	१ ४ ५ ००	१ ६ ० ००	१ ५ ० ००	१ ५ ० ००	१ ६ ० ००
(३) भागनाय टाट मिश्रित	,	मन	३ २ ००	३ ५ ००	३ २ ८ ००	३ २ ० ००	३ ३ ० ००

३ रेशम कच्चा

(१) १०० तगा खामरु	माच्य	सर	५ ००	५ ५ ००	५ ६ ००	६ ३ ००	६ ४ ००
(२) चरवा बान्धा किम का	मंगलौर	३६ तापे का पीट	५ ८ ००	५ ८ ००	२ ७ ८ ००	३ १ ० ००	२ ६ ८ ००

४ ऊन, कच्चा

(१) इन्डिया स्पेन बरिया	बम्बई	मन	२७७ ८ ०	अप्रैल	२७० १ ० ०	२ ६ ७ १ ० ०	२ ७ ७ १ १ ३
(२) तिन्वता	कालिपग	,	१ ५ ० ०	१ ३ ५ ० ०	१ ६ ७ ८ ०	१ ६ ५ ० ०	१ ६ ५ ० ०
	पहुँचन पर						

(न) निर्यात मूल्य।

के भाव : १९५४ (गत वृष से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
१०००००	१०००००	१०००००	१०००००				
२- ८-०	२- ८-०	२- ८-०	२- ८-०				
१- २-०	१- २-०	१- २-०	१- २-०				
अप्रैल	१०५-१३-६	१०५-१३-६	६६-१३-६				
१५५- ०-०	१५०- ०-०	१३०- ०-०	१३०- ०-०				
२४०- ०-०	१५५- ०-०	१८७-१५-०	२४६- ३-०				
१२-१०-६	१३-१४-६	१२-१०-७	१२-१५-७				
७५०- ०-०	७२५- ०-०	६६७- ०-०	७०७- ०-०				
६१०- ०-०	८८८- ०-०	८५७- ०-०	८६६- ०-०				
६०५- ०-०	५७५- ०-०	५५०- ०-०	५१५- ०-०				
१६५- ०-०	१५५- ०-०	१४०- ०-०	१४०- ०-०				
१५०- ०-०	१४०- ०-०	१२५- ०-०	१२५- ०-०				
३२- ८-०	अप्रैल	२७- ०-०	२७- ०-०				
६६- ०-०	६३- ०-०	६३- ०-०	६३- ०-०				
३०- ०-०	अप्रैल	२८- ०-०	२६- ०-०				
२७७-११-३	२७७-११-३	२७२- ६-०	२६७- ७-०				
१७२- ८-०	१७५- ०-०	१७५- ०-०	१६५- ०-०				

३. देश मे वस्तुओं

वस्तुएं	बाजार	इकाई	अगस्त १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			सं०आ०पा०	सं०आ०पा०	सं०आ०पा०	सं०आ०पा०	सं०आ०पा०
५ मूँगमली							
(१) बडादाना	बन्वड़	इडरवेर	४८ ८०	३५ १००	३४ ४०	३५ १२०	३५ ४०
(२) मशीन स ड़िला इडर	बड्डालार	मन	३६ ४०	२४ १०२	२४ १३०	२५ ६०	२५ २०
६ अलसी							
(१) बटादाना	बन्वड़	इडरवेर	३० १२०	२८ ८०	२६ ००	२५ ४०	२५ ८०
(२) ५% रिफ़ेक़शन	कलाक़त्ता	मन	२२ ५०	२१ ८०	२१ ४०	२० ४०	१६ ००
छाना दाता (तैयार)							
७ अरण्डी का बीज							
(१) सलेम किस्म का	मद्रास	"	२१ ००	१८ ००	१५ १५०	१५ ७०	१४ १५०
(२) छोगा साधारण औसत	बन्वड़	इडरवेर	३० १२०	२४ ८०	२४ ४०	२२ ४०	२३ २०
नूँ के का हैदराबादी							
८ तिल							
(१) सकेट बडादाना ८५%	"	"	५७ ००	४२ ००	४१ ००	४० ८०	४८ ००
(२) आम्रित (गाबर)	भासी	मन	४० ००	२८ ८०	२५ ८०	२४ ८०	२७ ००
९ तोरिया							
(१) आनाभत पटना खुदरा	कलाक़त्ता	बगाल मन	३१ ००	२६ ४०	३१ ००	२६ ८०	२६ ८०
(२) लाल	बन्वड़	मन	२६ ७०	२३ १४०	२५ ००	२३ ८०	२३ १४०
(३) सरसो काना	कानपुर	"	२६ १४०	२८ ८०	२४ ४०	२१ १००	२३ १२०
० निनौला							
(१)	बन्वड़	इडरवेर	१८ १४	१५ ७६	१६ ६५	१५ १४६	१४ १५७
(२)	अमरावती	८० पौंड का मन	११ १४२	१० ७३	६ १४४	६ २५	१० २२
११ नारियल का गोला							
साधारण औसत दूँ के का	कोचीन	६५५ ६ पौंड की बैली	३४७ ११०	३६५ ७०	३५४ ६०	३४० ००	३२३ १५०
१२ कोयला (न)							
(१) चुना इन्धा भरिया	कोलाद्री साईदिग में धुँचने पर	टन	१५ १२०	१५ १२०	१५ १२०	१५ १२०	१५ १२०
(२) देशरगत	,	,	१६ ४०	१६ ४०	१६ ४०	१६ ४०	१६ ४०
(३) म०प्र० प्रथम भेषी			१७ ८०	१७ ८०	१७ ८०	१७ ८०	१७ ८०
१३ कच्चा लोहक							
निगत मूल्य	विशाखापत्तनम	"	१३७ १३४	१४१ ४६	११६ १४४	१६१ ६४	१७६ ७४

(न) नियंत्रित मूल्य ।

के भाव : १९५४ (गत दृष्ट से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
द०आ०पा०	द०आ०पा०	द०आ०पा०	द०आ०पा०				
१६-४-०	३१-४-०	३१-४-०	२७-४-०				
२३-११-४	२०-१५-०	२२-८-०	१६-६-०				
२७-४-०	२४-८-०	२३-४-०	२३-८-०				
१६-१०-०	१७-०-०	१७-८-०	१६-४-०				
१६-७-०	१४-७-०	१४-७-०	१४-१५-०				
२३-१०-०	२१-४-०	२२-२-०	१६-१०-०				
अप्रति	४२-०-०	४५-०-०	३८-०-०				
२७-०-०	२५-०-०	२४-०-०	२६-०-०				
२७-०-०	२४-०-०	२६-०-०	२७-०-०				
अप्रति	२१-५-०	२२-१२-०	२४-४-०				
२३-१२-०	अप्रति	२२-१-५	२४-०-०				
१४-६-१	१५-३-२	१३-१२-१०	१२-८-५				
१०-४-११	अप्रति	अप्रति	अप्रति				
३२७-८-०	३००-०-०	३१०-३-०	३२०-१२-०				
१५-१२-०	१५-१२-०	१५-१२-०	१५-१२-०				
१६-४-०	१६-४-०	१६-४-०	१६-४-०				
१७-८-०	१७-८-०	१७-८-०	१७-८-०				
१६२-३-१०	१५४-११-५	१२१-४-८	१४३-०-७				

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएँ	बाजार	इकाई	अगस्त १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			₹०००	₹०००	₹०००	₹०००	₹०००
१४. चमड़ा, कच्चा							
(१) नमक लगा छेला गाय का	कलकत्ता	२० पींड	१७-००	१६-००	१५-००	१५-००	१५-००
(२) नमक लगा गीला मैस का	कलकत्ता	२० पींड	६-१०	१०-००	१०-००	१०-००	१०-००
(३) नमक लगा गीला गाय का	कानपुर	कोडी	२८०-००	२६०-००	२७५-००	२७५-००	२७५-००
(४) नमक लगा गीला मैस का	"	२० पींड	६-६७	६-११-२	१०-१०-८	११-६-१	१०-५-६

१५. खालें, कचची

बकरी की, श्रोतत किरम की	कलकत्ता	१०० थान	३२५-००	३५०-००	३५०-००	३५०-००	३५०-००
-------------------------	---------	---------	--------	--------	--------	--------	--------

१६. लाख

(१) चपडा शुद्ध टी० एन०	"	बगाल मन	६७-००	१०८-००	६५-८-०	८७-०-०	६१-०-०
(२) बटन शुद्ध	"	"	१०४-०-०	१२०-०-०	११४-०-०	१०६-८-०	११२-८-०

१७. रवड़

RMA IX RSS	कोटायम	१०० पींड	१३३-०-०	१३३-०-०	१३३-०-०	१३३-०-०	१३३-०-०
------------	--------	----------	---------	---------	---------	---------	---------

अर्द्ध निर्मित वस्तुएँ**१. चमड़ा**

(१) गाय का चमड़ा	मद्रास	पींड	३-३-०	३-०-३	३-१-०	२-१५-०	२-१४-३
(२) मैस का चमड़ा	"	"	२-०-६	२-१-६	२-१-६	२-०-६	२-०-३
(३) भेड की खालें	"	"	६-५-०	६-३-०	५-१५-०	५-११-०	५-८-०
(४) बकरी की खालें	"	"	४-१४-०	४-१४-०	४-१४-०	४-१४-०	४-१३-०

२. खनिज तेल**(क) मिट्टी का तेल (न)**

(१) बटिया योक	कलकत्ता	८ गैलन	१०-७-६	६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०
(२) बटिया योक	"	"	१०-१४-६	१०-७-०	१०-७-०	१०-७-०	१०-७-०

(ख) पेट्रोल (न)

(१) योक पम्प पर	"	गैलन	२-१२-०	२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६
(२) "	दिल्ली	"	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६
(३) "	मद्रास	"	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०

३. वनस्पति तेल**क नारियल का तेल**

(१) माधगण श्रीमन टर्जे का (तैयार)	कोचीन	६५४ पींड की बॅडी	५०८-१०-२	५६२-६-०	५२५-१२-५	४६५-०-७	४८०-१-३
(२) कोचीन का बटिया, सुदग	कलकत्ता	बगाल मन	७६ ०-०	८०-०-०	८४ ०-०	७४-०-०	७२-०-०
(३) खुवा	बम्बई	बम्बई टर	२३-७-०	२६-२-०	२५-४-०	२३ ०-०	२२-४-०

(न) नियन्त्रित मूल्य ।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
६०आ०पा०	६०आ०पा०	६०आ०पा०	६०आ०पा०				
१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०				
१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०				
२४५- ०-०	२३०- ०-०	२३०- ०-०	२४०- ०-०				
११- ०-७	११-११-७	११- ०-७	११- ०-७				
३५०- ७-०	३५०- ०-०	३००- ०-०	३००- ०-७				
११४- ०-०	१३६- ०-०	१४३- ०-०	१३७- ०-०				
१३३- ०-०	१४२- ०-०	१५०- ०-०	१५६- ०-०				
१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०				
२-१२-३	२-१२-३	२-१२-३	२-१२-३				
२- ०-०	२- ०-०	२- ०-०	२- ०-०				
५- ६-०	५- ६-०	५- ०-०	५- ३-०				
४-१३-०	४-१३-०	४-१२-०	४-१४-०				
६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०				
१०- ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०				
२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६				
२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६				
२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०				
४६६- ५-०	४४३-१४-७	४५३-१४-३	४७०- ०-७				
७२- ०-०	६६- ०-०	६६- ०-०	६४- ०-०				
२२-१०-०	२१- ०-०	२१- ४-०	२०-१२-०				

३. देश में वस्तुओं

वस्तु	बाजार	इकाई	अगस्त १९५३	जनवरी	फरवरी	माघ	अप्रैल
			₹०आ०पा०	₹०आ०पा०	₹०आ०पा०	₹०आ०पा०	₹०आ०पा०
ख मूंगफली का तेल							
(१) बुदरा	मद्रास	५०० पींड का बैडी	४७० ००	३१८ ००	३१० ००	३०८ ००	३१२ ००
(२) खुला	बम्बई	क्वाटर	२७ ००	१८ १००	१७ ४०	१७ २०	१८ २०
(३) खुफूर (धान बन्द)	कलकत्ता	बगाल मन	८७ ००	६० ००	५७ ००	५७ ००	५८ ८०
ग सरसों का तेल							
(१) बुदरा (मिल से निकलते समय)	"	"	७२ ००	७४ ८०	६६ ८०	६० ००	६३ ८०
(२)	पटना	मन	७० ००	७३ ००	६५ ००	५६ ००	६० ००
(३)	कलकत्ता	"	६६ ८०	६६ ६०	५८ ००	५४ ००	५८ ००
घ अरखडी का तेल							
(१) न० १ शिया पोला (जहाज पर)	कलकत्ता	मन	७६ ००	७२ ००	७१ ००	६३ ००	६६ ००
(२)	मद्रास	५०० पींड की बैडी	४६५ ००	२८५ ००	२३० ००	२१० ००	२२० ००
ङ तिल का तेल							
खुला	बम्बई	क्वाटर	२६ ११ ११	२० ००	१६ ८०	१८ १२०	२१ १५ १०
च अलसी का तेल							
(१) बन्धा खुदरा (मल से निकलते समय)	कलकत्ता	मन	५१ ८०	५१ ००	४८ ००	४७ ००	४४ ००
(२)	बम्बई	क्वाटर	१७ १२०	१६ ००	१५ ८०	१३ १२०	१४ १२०
छ. खली							
(१) मूंगफली	कलकत्ता	मन	६ १२ ६	७ ८०	७ ८०	७ ००	७ ८०
(२) नागियल	बम्बई	१॥ हडखेटे	२० १००	२५ ८०	२७ ००	२७ ००	२४ ००
(३) तिल	"	टन	३२५ ००	३२५ ००	३३५ ००	३२५ ००	३३० ००
झ सूत (भूरे रंग का) भारतीय							
(१) १० नम्बरी	कलकत्ता	५ पौण्ड	६ ८०	६ १००	६ १४०	६ ६०	६ १००
(२) २० "	"	"	८ ७६	८ ३०	८ ८०	८ ६०	८ १२०
(३) ४० "	"	"	१२ ०६	१२ ००	१२ ००	१२ ००	१४ ००
(४) सूत २० नम्बरी	बंगलौर	१ पींड	१७ १२०	१६ ११०	१७ ४०	१७ ८०	१७ १००
ञ नारियल की सुतली							
(१) अलसी अलाप	कोलिन	६ हडखेटे की बैडी	२४६ ११०	२७५ ००	२७५ ००	२७३ ५०	२७८ ५०
(२) अलसी शिया	"	"	२७४ ३०	३१५ ००	३१५ ००	३१५ ००	३१५ ००

(न) नियंत्रित मूल्य ।

के भाव : १५६४ (गत षष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
ब०आ०पा०	ब०आ०पा०	ब०आ०पा०	ब०आ०पा०				
३०६- ०-०	२६५- ०-०	२७२- ०-०	२३५- ०-०				
१८- ३-०	१५- ६-०	१५-१२-०	१४- ०-०				
५६- ०-०	४६- ०-०	५१- ०-०	४३- ८-०				
६७- ८-०	६०- ८-०	६१- ८-०	६४- ०-०				
६८- ०-०	६०- ०-०	५७- ०-०	६०- ०-०				
६०- ०-०	५४- ८-०	५५- ०-०	५८- ८-०				
६६- ०-०	५६- ०-०	५६- ०-०	५३- ०-०				
२२७- ०-०	१८७- ०-०	२००- ०-०	१८०- ०-०				
२१- ०-२	अप्राप्त	२०- ०-०	१६- ८-०				
४४- ८-०	३६- ०-०	३६- ८-०	३४- ८-०				
१५-१२-०	१२-१२-०	१२-१४-०	१२-१२-०				
८- ८-०	६- ०-०	८- ८-०	८- ०-०				
२४- ०-०	२१- ०-०	२०- ०-०	१६- ०-०				
३४०- ०-०	३२०- ०-०	३३०- ०-०	३२०- ०-०				
६-१०-०	६-१०-०	६-१०-०	६-१०-०				
६- ०-०	६- ०-०	६- ०-०	६- ०-०				
१२- ०-०	१२- ०-०	१२- ०-०	१२- ०-०				
१७-१२-०	१८- २-०	१७-१४-०	अप्राप्त				
२७०- ०-०	२७०- ०-०	२७०- ०-०	२६५- ०-०				
३०३- ५-०	२८८- ५-०	२८०- ०-०	२७४- ३-०				

३. देश में वस्तुओं

वस्तु	वाचार	इकाई	अगस्त १९५३	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	
७ लोहा और इस्पात								
क कच्चा लोहा (न)			६०,००,०००	६०,००,०००	६०,००,०००	६०,००,०००	६०,००,०००	
(१) पाउ डरा न० १	कमकशा	पहुँचने पर	१५३ ००	१६३ ००	१६३ ००	१६३ ००	१६३ ००	
(-) लोहा गठक	"	"	१२७ ००	१५७ ००	१५७ ००	१५७ ००	१५७ ००	
ख अर्द्ध शुद्ध (न)								
फिर गलान के लिये टुकड़े	कमकशा	"	२२६ ००	२२६ ००	२२६ ००	२२६ ००	२२६ ००	
८ चातु (लोहा के अतिरिक्त)								
(१) नस्ता स्टेनल								
(अ-ला वाजा) सुनान	"	हबरकट	५ ८०	५५ ००	५३ ८०	५३ ००	५७ ८०	
(-) पातल पाला वातु-सधान	"	"	१६५ ००	१५६ ५०	१५७ १२०	१६५ ००	१७७ ८०	
(अ नितर) ४" X ४"								
(३) पातल का चारों	बम्बई	"	१५७ ००	१५६ ००	१५५ ००	१५६ ००	१६० ००	
(नि-लेपर्स)								
(४) टांके का चारों	"	"	१६७ ८०	१६५ ८०	२०२ ००	१६६ ००	२०१ ००	
(इ-सिप्लन)								
९ लकड़ी								
सातों के गोथ लकड़े	बलरघाह	धन फुट	६ ००	११ ००	११ ००	११ ००	११ ००	
५ फुट और उससे अधिक	(दक्षिण चादा,							
परिधि वाले	मध्य प्रदेश)							
निर्मित वस्तुएं								
१ टेक्सटाइल								
क जूट का माल								
टाट								
(१) १०-१२ औंस ५०"	कलकत्ता	१०० गज	५८ २०	५७ १००	५८ २०	५६ ००	५५ १००	
(२) ८ औंस ५०"	"	"	३६ ५०	३७ १५०	३७ १२०	३७ ५०	३६ ००	
गोरियों								
(१) का विचल	"	१०० गोरियों	१०० ५०	१०५ ८०	१०३ २०	१०८ ००	१०६ ००	
(२) का नाप गोरियों	"	"	१०३ ५०	१०३ ००	१०५ ८०	११० ८०	११८ ८०	
ख सूती माल								
(१) काग कमांड का करण	बम्बई	एक यान	१६ ३८	१६ ३८	१७ ३६	१७ ३६	१७ ३६	
१-१ "५" - १०० गज X ७ फीट								
(२) काग कमांड का करण	"	पीट	० ००	१ १३ ५	१ १३ ५	१ १३ ५	१ १५ ७	
का करण - १८ गज								
(३) काग कमांड	"	एक यान	२५ १५०	२५ १५०	२५ १५०	२६ २०	२६ २०	
५३" X ३८ गज								
(४) काग कमांड मन्चन	"	एक बोरा	अग्रम	५ ११०	५ ११०	५ ११०	६ ६-०	
१०० गज X ७ ६ १६ फीट								

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
संख्या०पा०	संख्या०पा०	संख्या०पा०	संख्या०पा०				
१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०				
१४७- ०-०	१४७- ०-०	१४७- ०-०	१४७- ०-०				
२८६- ०-०	२८६- ०-०	२८६- ०-०	२८६- ०-०				
५७- ८-०	५६- ८-०	५८- ८-०	५३- ८-०				
१७२- ०-०	१६७- ०-०	१६८- ०-०	१६३- ८-०				
१६४- ०-०	१६५- ०-०	१६०- ०-०	१५६- ०-०				
२०१- ८-०	२०१- ८-०	१६६- ८-०	१६६- ८-०				
११- ०-०	११- ०-०	११- ०-०	१२- ०-०				
४५-१२-०	४६- ४-०	४७- ८-०	४७- ४-०				
३६- २-०	३७- ०-०	३७- ८-०	३६-१२-०				
११२-१४-०	११३- ६-०	१०६- ८-०	१०४-१२-०				
११५- ८-०	११४- ८-०	१११-१२-०	१०४- ८-०				
१७- ३-६	१७- ३-६	१७- ३-६	१७- ३-६				
१-१४-७	१-१४-७	१-१४-७	१-१४-३				
२६- २-०	२६- २-०	२६- २-०	२४-१५-०				
६- ८-०	६- ८-०	६- ८-०	६- ६-०				

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएं	बाजार	इकाई	अगस्त १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
(५) रंगान ऋष—कमीज का कपडा	मद्रास	गज	१ ० ६	० १५ ३	० १५ ६	० १५ ६	० १५ ६
(६) एम—५.०१ ब्लीच किया मलमल ४८" × २०" गज	"	२० गज	१६ ४०	१६ ४०	१६ ४०	१६ ४०	१६ ४०
ग रेयन और रेशम का माल							
(१) टैफेटा कोर्रो २६-५.०", ४-३/४	बम्बई	गज	० ८०	० ७०	० ८३	० ६०	० ६६
१ से ५ पौंड तक (रेयन)							
(२) फुडो (वीनी रेयम)	"	५.० गज का यान	२७५ ००	अग्रगत	३१० ००	३४० ००	४०० ००
२ लोहे और इस्पात से निर्मित वस्तुएं (न)							
लोहे और इस्पात की पनालीदार चादरें २४ गज	कलकता	इंडरवेन्	३४ ००	३४ ००	३४ ००	३४ ००	३५ ००
३ अन्य निर्मित वस्तुएं							
(क) सीमेंट (न) भारतीय (स्वस्तिका)	"	टन	८२ १४०	८२ ६०	८२ ६०	८७ ६०	८७ १५०
(ख) काँच (खिडकियों का)							
(१) बड़ा साइज	"	१०० बर्ग फुट	६० ००	६० ००	६० ००	६० ००	६० ००
(२) मध्यम साइज	"	"	५५ ००	५३ ००	५३ ००	५५ ००	५५ ००
(ग) कागज							
सफेद छुपाई, डिमाई १४ पौंड और ऊपर	"	पौंड	० १०७	० १०७	० १०७	० १०७	० १००
(घ) रासायनिक पदार्थ							
(१) फत्करो	"	इंडरवेन्	१५ ००	१३ ००	१३ ००	१३ ००	१३ ००
(२) गंधक का तेजाब	"	टन	२३५ ००	२३५ ००	२३५ ००	२३५ ००	२३५ ००
(ङ) रंग							
लाल सामे का सूचा अमली	"	इंडरवेन्	६० ८०	८६ ००	८६ ००	८६ ००	८६ ००

(न) नियान्त मूल्य।

के भाव : १९५४ (गत छत्र से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
ब०आ०पा० ०-१५-६	ब०आ०पा० १- ०-०	ब०आ०पा० १- ०-०	ब०आ०पा० १- ०-०				
१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०				
०-१०-०	०- ८-०	०- ८-०	०- ८-६				
अप्राप्त	३४०- ०-०	३४०- ०-०	अप्राप्त				
३५- ०-०	३५- ०-०	३५- ०-०	३५- ०-०				
८७-१५-०	८७-१५-०	८८- ०-०	८८- ५-०				
६०- ०-०	६५- ०-०	४५- ०-०*	४३- ०-०*				
५५- ०-०	६०- ०-०	४३- ०-०*	४०- ०-०*				
०-१०-०	०-१०-७	०-१०-७	०-१०-७				
१३- ०-०	१३- ४-०	१३- ४-०	१३- ४-०				
२३५- ०-१	२३५- ०-०	२३५- ०-०	२३५- ०-०				
८६- ०-०	८६- ०-०	८६- ०-०	८८- ०-०				

*२६-६-५४ को समाप्त होने वाले सप्ताह से भारतीय बाज के मूल्यों के स्थान पर आयात किये गये काच के मूल्य दिये गये हैं ।

व्यापारिक और औद्योगिक शब्दावली

प्रस्तुत शक में व्यापार और उद्योग क्षेत्रों के जिन विशिष्ट शब्दों का प्रयोग हुआ है उन्हें तथा उनके अंग्रेजी रूपों को पाठकों की सुविधा के लिये यहाँ दिया जाता है। ये केवल सुविधा की दृष्टि से दिये गये हैं। प्रामाणिकता की दृष्टि से इन्हें अन्तिम नहीं मान लेना चाहिये। —सम्पादक।

हिन्दी शब्द	अंग्रेजी रूप	हिन्दी शब्द	अंग्रेजी रूप
अन्नराइन का सत	Thymol	पायरेथ्रम	Pyrethrum
अदरक	Ginger	पूरक पेंशन योजना	Supplementary Pension Scheme
अधिवास	Domicile	पोषक	Nutritive
अन्दर	Gap	प्रदर्शन दल	Demonstration Parties
अन्य देशीय	Alien	प्रवेश	Access
अभिप्राय	Opinion	प्रापत्तिक	Preliminary
अक्षमना	Incompetency	फिट्टरी	Alum
इलायची	Cardamom	बन्	Orris Root
उपयोगिता	Utility	केल का काम	Cane-work
क्युब	Cubeb	बिक्री केन्द्र	Sale Centre
कलाकौशल केन्द्र	Art & Crafts Centre	भन्डार	Emporia
कस्तूरी	Musk	मच्छर नाशक	Anti-Mosquito
कातना, रेशम का	Reeling	मबीठ	Madder
केसर	Saffron	माजूकन	Gall nut
काफ़ा, रेशम का	Cacoon	मुद्रापरम	Currency group
कोरे रेकार्ड	Blank Record	दन्नाकरण	Mechansisation
क्रोम का छीलन	Chrome Shavings	लच्छी	Hanks
कृष्णदाकनी	Chrysanthemum	लक्ष्य	Target
रूद	Ruddle	लाल मिर्च	Chilies
गाम मिर्च	Pepper	लोग	Clove
गृह उद्योग	Cottage Industries	विटामिनयुक्त	Vitamised
चमड़े का गत्ता	Leather Board	शुल्क सीमान्त	Custom Frontier
चलते फिरते	Mobile	सनाय	Senna
छोटे उद्योग	Small scale Industries	निगरिक	Cinnabar
जाम्बूल	Nutmeg	निनमा के तैयार फिल्म	Exposed Films
जाकिरी	Mace	मोहागा	Borax
जोग	Cumin	साठ	Ginger Dry
जाकिरा	Subsistence	सोफ	Aniseed
तेजपात	Cassia	स्तर	Level
तेलयुत	Oiliferous	हरी जन्पति का सत	Fecula
दालचीनी	Cinnamon	हल्दी	Turmeric
नमकीन पानी	Brine	हींग	Asfoetida
पानियोश	Pyrethrum		

परिशिष्ट

१. विदेशों में भारत सरकार के व्यापार-प्रतिनिधि ।
२. भारत में विदेशी सरकारों के व्यापार-प्रतिनिधि ।

नाम और पता

कायदेशर

आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड

- (१८) सिडनी
श्री एन० वी० पेरेल, आई० एफ० एन०, भारत सरकार के द्वारा कमिश्नर, प्रुटेन्शाल विन्डिंग, ३६-४६, मार्टिन प्लेन, सिडनी (आस्ट्रेलिया)। तार का पता:—आस्ट्रेलिया (AUSTRALIA), सिडनी।
- (१९) वेलिंगटन
श्री एन० केशवम, न्यूजीलैंड में भारत के हार्ड कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), विन्डसर बिल्डिंग, ४६, विलियम स्ट्रीट, वेलिंगटन, (न्यूजीलैंड)। तार का पता:—ट्रैकोमिन्ड (TRACOMIND), वेलिंगटन।

एशिया

- (२०) टोकियो
डा० ए० एस० शुर्मा, जापान में भारतीय राजदूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), एम्पायर हाउस (नाटगइ बिल्डिंग), मारुनोची, टोकियो (जापान)। तार का पता:—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), टोकियो।
- (२१) कालम्बा
श्री के० आर० एफ० खिलनानी, आर० एफ० एम०, लका में भारत के हार्ड कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), पो० बा० न० ८६६, फोर्ट, कालम्बा। तार का पता:—ट्रेडिन्ड (TRADING), कालम्बा।
- (२२) रंगून
श्री एम० पी० माधुर, आर० एफ० एम०, भारत के राजदूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), रनटैरिया बिल्डिंग, फ्लायर स्ट्रीट, पो० बा० न० ७५१, रंगून (बर्मा)। तार का पता:—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), रंगून।
- (२३) कराची
श्री एम० थान, आर० एफ० एम०, पाकिस्तान में भारत के हार्ड कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), चारटर्ड बैंक चैम्बर्स, "बलीका महल," एन० जे० सेन्ना रोड, न्यू टाऊन, कपची-५ (पश्चिमी पाकिस्तान)। तार का पता:—इण्ट्राकॉम (INTRACOM), कराची।
- (२४) ढाका
श्री पी० दासगुप्ता, पाकिस्तान में भारत के हार्ड कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), गौरी कृष्ण लेन, पो० आ० रामना, ढाका (पूर्वी पाकिस्तान)। तार का पता:—"गुडविल" (GOODWILL), ढाका।
- (२५) सिंगापुर
श्री जे० कोइलहो, आर० एफ० एम०, मलाया में भारत सरकार के प्रतिनिधि के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), इन्डिया हाउस, पो० बा० न० ८३६, सिंगापुर (मलाया)। तार का पता:—इण्डिट्रेकॉम (INDITRACOM), सिंगापुर।
- (२६) मनीला
मन्त्री, व्यापारिक मिशन, भारतीय लीगेशन, ६१४-नेबरस्का, मनीला (फिलिपाइन)। तार का पता:—इण्डेलेगेशन (INDELEGATION), मनीला।
- (२७) जकार्ता
श्री ए० ई० मनीम, आर० एफ० एम० भारतीय राजदूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी, पो० बा० न० १०८ ४४, सेनुन मिराद, जकार्ता (इण्डोनेशिया)। तार का पता:—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), जकार्ता।
- (२८) बैंकाक
श्री सुब्रह्मनिह, आर० एफ० एम०, भारतीय राजदूतावास के सक्ण्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), बैंकाक (थाइलैण्ड)। तार का पता:—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), बैंकाक।

मूचना:—(१) निम्न में निम्नलिखित अधिकारी भारत के व्यापारिक हितों का ध्यान रखते हैं—

१. रागटोर मिश्र में नारमन पार्लियमन्ट अफसर के व्यापारिक सेक्रेटरी।
२. भारत के व्यापार एजेंट, बटुम (निम्बन)।

(२) जिन देशों में अलग व्यापारिक प्रतिनिधि नहा है, उनमें भारतीय राजदूत और कमिश्नर अफसर भारत के व्यापारिक हितों का ध्यान रखते हैं।

भारत में विदेशी सरकारों के व्यापार-प्रतिनिधि

देश	पद	पता
१. अफगानिस्तान	भारत में शाही अफगान राजदूतावास के आर्थिक एटैची।	२४, वेष्टएन रोड, नई दिल्ली।
२. अमेरिका	भारत में अमेरिकन दूतावास के आर्थिक मामलों के कौंसिलर।	बहामलपुर हाउस, सिक्न्दरा रोड, नई दिल्ली।
३. आस्ट्रिया	भारत में आस्ट्रिया के व्यापार प्रतिनिधि।	क्वीन्स मैनशन, वेस्टियन रोड, फोर्ट, बम्बई।
४. आस्ट्रेलिया	(१) भारत में आस्ट्रेलिया सरकार के व्यापार कमिश्नर। (२) भारत में आस्ट्रेलिया सरकार के व्यापार कमिश्नर।	मरकैटाइल बैंक बिल्डिंग, ५२/६६, महात्मा गांधी रोड, जनरल पो० ग्रा० बा० न० २१७, बम्बई। २, फेन्नरली प्लेस, बलकत्ता।
५. इटली	भारत में इटली के राजदूतावास के व्यापारिक सेक्रेटरी।	१७, चार्ज रोड, नई दिल्ली।
६. इण्डोनेशिया	भारत में इण्डोनेशियन दूतावास के व्यापारिक कौंसिलर।	२१, बर्जन् रोड, नई दिल्ली।
७. कनाडा	(१) भारत में कनाडा हार्ड कमीशन के व्यापारिक कौंसिलर। (२) भारत में कनाडा हार्ड कमीशन के व्यापारिक सेक्रेटरी।	४, औरगवेन रोड, नई दिल्ली। प्रेसम एग्जोरेस हाउस, मिट रोड, बम्बई।
८. चीन	भारत में चीनी गणतन्त्र के राजदूतावास के व्यापारिक मामलों के कौंसिलर।	जॉन्स हाउस, लिटन रोड, नई दिल्ली।
९. चेकोस्लोवाकिया	(१) भारत में चेकोस्लोवाक राजदूतावास के व्यापारिक एटैची। (२) भारत में चेकोस्लोवाक राजदूतावास के व्यापारिक कौंसिलर।	२५, औरगवेन रोड, नई दिल्ली। हिमालय हाउस, पालटन रोड, बम्बई।
१०. जर्मनी	भारत में जर्मनी के सघीय गणराज्य के राजदूतावास के फुर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक)।	८६, सुन्दर नगर, मधुपुर रोड, नई दिल्ली।
११. जापान	भारत में जापानी दूतावास के सेक्रेटरी सेक्रेटरी (व्यापारिक)।	४, सक्व्यूलर रोड, डिप्लोमेटिक एनक्लेव, नई दिल्ली।
१२. डेनमार्क	भारत में शाही डैनिश लीगेशन के व्यापारिक कौंसिलर।	पोलोन्बी मैनशन, न्यू बाफ परेड, बम्बई।
१३. तुर्की	भारत में तुर्की दूतावास के व्यापारिक एटैची।	मेडन होटल, दिल्ली।
१४. नारवे	(१) भारत में नारवे लीगेशन के व्यापारिक कौंसिलर। (२) भारत में नारवे के कंग्लेट जनरल के व्यापारिक एटैची।	५२, मेडन होटल, दिल्ली। इम्पीरियल चैम्बर्स, विलसन रोड, क्लैट इन्डे, बम्बई।
१५. नीदरलैंड	भारत में नीदरलैंड राजदूतावास के व्यापारिक एटैची।	२६८, पानार गेट स्ट्रीट, बम्बई।
१६. न्यूजीलैंड	भारत में न्यूजीलैंड सरकार के व्यापार कमिश्नर।	मरकैटाइल बैंक बिल्डिंग, दूसरी मंजिल, महात्मा गांधी रोड, बम्बई-१।

देश	पद	पता
१७. पाकिस्तान	भारत में पाकिस्तान हाई कमिश्नर के व्यापारिक सेक्रेटरी।	शेरशाह रोड मेस, नई दिल्ली।
१८. फिनलैंड	भारत में फिनिश लागिशन के सेक्रेटरी (व्यापारिक)।	१, हुमायूँ रोड, नई दिल्ली।
१९. फ्रांस	भारत में फ्रेंच दूतावास के आर्थिक मामलों के कमिश्नर।	२३, थियेटर कम्युनिवेशन बिल्डिंग, कनाट प्लेस, नई दिल्ली—१।
२०. जर्मनी	भारत में जर्मनी दूतावास के व्यापार कमिश्नर।	ब्लॉक 'ए', कर्जन राड, नई दिल्ली।
२१. ब्रिटेन	(१) भारत में ब्रिटेन के हाई कमिश्नर के आर्थिक सहायकार और } (२) भारत में ब्रिटेन के सानिटर द्वारा कमिश्नर। } (३) कलकत्ता में ब्रिटेन के मुख्य व्यापार कमिश्नर। (४) मद्रास में ब्रिटेन के व्यापार कमिश्नर।	६, ब्रल्यूवर्क रोड, नई दिल्ली। १, हैरिंगटन स्क्वैड, कलकत्ता—१६। पो० बा० नं० १५७५, आरमीनियन स्क्वैड, मद्रास।
२२. वेल्जियम	भारत में वेल्जियम राजदूतावास के व्यापारिक कौंसिलर।	थियेटर कम्युनिवेशन बिल्डिंग, कनाट प्लेस, नई दिल्ली—१।
२३. मिस्र	भारत में मिस्र दूतावास के व्यापारिक एट्चे।	कमप न० ३६, स्विस् होटल, दिल्ली।
२४. रूमानिया	भारत में रूमानिया के व्यापार प्रतिनिधि।	होटल एमप्लाइनस, कम्बई।
२५. रूस	भारत में रूस के व्यापार प्रतिनिधि।	४, कामक स्क्वैड, कलकत्ता।
२६. लंका	भारत में लंका हाई कमिश्नर के व्यापारिक सेक्रेटरी।	सीलोन हाउस, ब्रूस स्क्वैड, कम्बई।
२७. स्विट्जरलैंड	भारत में स्विट्जरलैंड के व्यापार कमिश्नर।	पो० बा० १०२, ग्रेशम एशोरम्स हाउस, कम्बई।

सूचना.—जिन देशों के ऊलम व्यापार प्रतिनिधि नहीं हैं, उनके व्यापारिक हितों को, भारत में विद्यति उनके राजनैतिक व बचनर विभाग, प्यन में रखते हैं।

भारतीय रुपये का मूल्य : विभिन्न देशों की मुद्राओं में

देश	भारतीय मुद्रा	विदेशी मुद्रा
१. पाकिस्तान	१०० रु०	= ६६ पाकिस्तानी रु० ६ आ०
२. लंका	१०० रु० ६ आ०	= १०० लंका के रु०
३. बरमा	१०० रु० ४ आ०	= १०० क्यात
४. अमेरिका	४०५ रु०	= १०० डालर
५. कनाडा	४८२ रु० ११ आ०	= १०० डालर
६. मलाया	१५६ रु०	= १०० डालर
७. हांगकांग	८३ रु० ४ आ०	= १०० डालर
८. ब्रिटेन	१ रु०	= १ शि० ५-३१/३२ पैस
९. न्यूजीलैण्ड	१ रु०	= १ शि० ५-३१/३२ पैस
१०. ऑस्ट्रेलिया	१ रु०	= १ शि० १०-३/८ पैस
११. दक्षिणी अफ्रीका	१ रु०	= १ शि० ५-१५/१६ पैस
१२. पूर्वी अफ्रीका	६७ रु० २ आ०	= १०० शि०
१३. मिस्र	१३ रु० १३ आ०	= १ पाँड
१४. फ्रांस	१०० रु०	= ७,३५० फ्रान्क
१५. बेलाजियम	१०० रु०	= १,०४५ फ्रान्क
१६. स्विटजरलैंड	१०० रु०	= ६१-३/८ फ्रान्क
१७. पश्चिमी जर्मनी	१०० रु०	= ८७-११, १६ मार्क
१८. नॉटरलैंड	१०० रु०	= ७६-११, ३२ मिल्लर
१९. भारत	१०० रु०	= १४६-१/४ डॉनर
२०. स्वीडन	१०० रु०	= १०८-५, ८ डॉनर
२१. डेनमार्क	१०० रु०	= १४५-१/१६ डेनमार्क कानर
२२. इटली	१ रु०	= १३० लीरा
२३. जापान	१ रु०	= ७८ येन
२४. फिलिपाइन्स	२३७ रु०	= १०० पीसो
२५. दक्षिण	१,३३८ रु०	= १०० डॉनर

(ये विनिमय दरें मई १९५४ में भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार हैं।)

“आर्थिक समीक्षा”

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आर्थिक राजनीतिक अनुसंधान विभाग का

पाठ्य पत्र

प्रधान सम्पादक : श्री आचार्य श्रीमन्नारायण अग्रवाल

सम्पादक : श्री हर्षदेव मालवीय

हिन्दी में अनूठा प्रयास

आर्थिक विषयों पर विचारपूर्ण लेख

आर्थिक सूचनाओं से अतिप्रोत

भारत के विकास में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिये अत्यावश्यक, पुस्तकालयों के लिये अनिवार्य रूप से आवश्यक।

वार्षिक चन्द्रा : ५ रुपये

एक प्रति का साढ़े तीन आने

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, ७, जन्तर मन्तर रोड,
नयी दिल्ली

उद्योग-व्यापार पत्रिका



सिद्धिं क्तं पत्तं -
मोहन न्यूज एजेंसी कोय

वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय, भारत सरकार,
नई दिल्ली

दिसम्बर १९५४

विज्ञान प्रगति

बरोलू और छोटे उद्योगों के लिये मासिक अनुसंधान-समाचार-सत्रा

उद्योगों पर केन्द्र—

- नवोपजा-सत्याभौषो ध्य परिषद
- वैज्ञानिक साहित्य का विमर्श
- आविष्कार सम्बन्धी सूचनाएँ
- फेरेट विधिओं के वर्णन
- शलुसधन-दन्तियों द्वारा प्ररतों के उत्तर

इस के सौदीनिक विकास में रुचि रखने वाले व्यक्तियों के लिसे आग्रहक । वरिणकल सम्बन्धों, कदवों और वाचनालयों के लिये परिशार्य

पब्लिकेशन डिबीजन

रो नि स ऑफ साइंटिफिक एरर इवेंटिस रि स र्व



ओल्ड मिच रोड, नई दिल्ली—२

वार्षिक मुल्य ५ रुपये

एक पाठो धा : आठ अना

★ राष्ट्रभारती ★

ॐ सम्पादक ॐ

: मोहनलाल भट्ट :

: हृषीकेश शर्मा :

(१) यह हिन्दी पत्रिकाओं में सबसे अधिक सन्नी. ओक सुन्दर साहित्यिक और सांस्कृतिक मासिक पत्रिका है ।

(२) अिसम ज्ञानपोषण और मनोरंजन श्रेष्ठ कविताओं कृतानिया, ओकावी, नाटक, रेखाचित्र, और शब्द चित्र रहते हैं । (३) वगला मरठी, गुजराती, पनाजा, राजस्थानी, उर्दू, तमिल, तेलगु, कन्नड, मलयालम आदि भारतीय भाषाओं के सुन्दर हिन्दी अनुवाद भी अिसम रहते हैं । (४) यह प्रतिमास १ ली वारीख को प्रकाशित होती है । (५) वार्षिक वला ६ रु०, छमाही ३।। रु०, नमूने की प्रति दस आना मात्र । आज ही माहक वन जाअिये । (६) माहक वना देने वालों का विशेष सुविधा वी जाअगी । (७) पत्र विक्री [ओर्जेसी] तथा विज्ञापन दर के लिये आन ही लिखिये ।

पता:—व्यवस्थापक, “राष्ट्रभारती”

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पो०—हिन्दीनगर (वर्धा, म० प्र०)

क्रेम्प एराड कम्पनी लिमिटेड

प्रसिद्ध औपधि-निर्माता और विक्रेता

[१८६८ में स्थापित]

भारत सरकार की पेनिसिलीन और बम्बई सरकार के शार्क
लीवर तेल उत्पादन के अधिकार प्राप्त विक्रेता ।

लिली, फुलफोर्ड और अन्य कम्पनियों के एजेण्ट

प्रधान कार्यालय

८८ सी, पुरानी परभा देवी रोड, बम्बई-२८

शाखाएँ

दिल्ली : कलकत्ता : मदरास

What is little about
the 'Jeep' ?



NOTHING but its size Packed Into Its body is power
that far exceeds that of much larger vehicles
and performance that has no equal Over many
years, in many countries, under varying
conditions, the 'Jeep' has proved itself to be
the world's biggest little vehicle

MAHINDRA & MAHINDRA LTD.
BOMBAY - CALCUTTA - DELHI - MADRAS

Authorised Distributors :

SPEED-A-WAY LTD., 35/5 Mowat Road, Madras

MADRAS MYSORE, COORG HYDERABAD TRAVANCORE-COCHIN

WALFORD TRANSPORT LTD., 71, Park Street, Calcutta

WEST BENGAL, BIHAR, ORISSA AND ASSAM

UNIVERSAL MOTORS, 46/8 Peddar Road Bombay

BOMBAY

NEW INDIA MOTORS LTD., 12 Connaught Circus,

DELHI EAST PUNJAB, MEERU JAMMU AND KASHMIR

MAHAIN AUTOMOBILES, Station Road Lucknow

UTTAR PRADESH AND UTTAR PRADESH

BIND AUTOMOBILES, Sir Mirza Ismail Road, Jalpur

RAJASTHAN

MOTORS INDIA LTD., Madanmohan Garden, Bow Agra Rd Indore

MADHYA BHARAT

PROVINCIAL AUTOMOBILE CO, Kingsway, Nagpur

MADHYA PRADESH

METEC MOTORS [KATHIAWAR] LTD., Gondal Road Rajkot

SAURASHTRA AND GUJARAT

उद्योग व्यापार पत्रिका

ग्राहकों से निवेदन

वार्षिक वन्दना ६ रु०, एक प्रति ८ आने ।

मनीआर्डर, मास क्रिये बैंक अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा रुपया नीचे लिखे
पते पर भेजकरें आप किसी भी ढक् से प्राहक बन सकते हैं ।

एजेण्टों को सूचना

वो सञ्जन पत्रिका को एजेन्सी लेता चाहे वे कमीशन आदि के लिये
शीघ्र पत्र-व्यवहार करें । एजेण्ट केवल सीमित संख्या में ही बनाने का
निरूपण हुआ है । अतः इस के लिये शीघ्रता करनी चाहिए ।

सम्पादक,

उद्योग व्यापार पत्रिका,

वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय,

भारत सरकार, नई दिल्ली ।

उद्योग-व्यापार पत्रिका

(उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, पंजाब, अजमेर और सौराष्ट्र के शिक्षा विभागों द्वारा
शिक्षा सस्थाओं और पुस्तकालयों के लिये स्वीकृत)

खण्ड ३]

नई दिल्ली, दिसम्बर १९५४

[अङ्क ६]

★ ★ ★ ३ टन प्रतिदिन उत्पादन करने वाला कारखाना स्थापित किया जाय

दुग्ध चूर्ण और उसका विकास

सावधानी से योजना बनाकर काम करने की आवश्यकता

युद्धकाल में विदेशों से माल आना बन्द हो जाने पर देश में ही दुग्धचूर्ण बनाने की ओर कुछ औद्योगिकों का ध्यान गया और उसका उत्पादन आरम्भ भी हो गया। युद्ध के बाद विदेशों से आने वाले दुग्ध चूर्ण स प्रतिस्पर्धी न कर सकने के कारण भारतीय कारखाना बन्द हो गया। अब समस्त दुग्धचूर्ण विदेशों से आता है। १९५३-५४ में ३.० करोड़ रु० का आयात हुआ। अब फिर प्रयत्न आरम्भ हुए हैं और निकट भविष्य में ही देश में दुग्ध चूर्ण बनाने लगने की आशा है।

इस समय प्रतिवर्ष भारत विदेशों से ११,२६० टन मजतन निकला दुग्धचूर्ण और १,२०० टन युद्ध दुग्ध चूर्ण आता है।

प्रस्तुत लेख वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय की विकास शाखा ने तैयार किया है जिसमें दुग्ध चूर्ण तैयार करने की प्रणालियाँ इत्यादि पर प्रकाश डाला गया है।

पहले प्रयत्न असफल क्यों हुए ?

दुग्धचूर्ण का उत्पादन भारत में पहली बार व्यापारिक आधार पर १९३८ में कलकत्ते के नेशनल न्यूट्रिमेंट लि० (National Nutrients Ltd, Calcutta) ने प्रेन प्रणाली से आरम्भ किया। द्वितीय महायुद्ध में जब विदेशों में दुग्ध चूर्ण का आना बन्द हो गया तो देश में बने दुग्ध चूर्ण की माँग होने लगी थी, परन्तु युद्ध बन्द होते ही विदेशों से फिर माल आने लगा और तब कलकत्ते का कारखाना विदेशी माल से क्रिम और मूख रिमी में भा प्रतिस्थापना नु कर सका। अतः १९५१ में यह कम्पनी बन्द गई। शक्ति फिर दो तीन दशक में दुग्ध चूर्ण के कारखाने निकट भविष्य में ही चलाने के निमित्त में सम्पूर्णतापूर्वक मोच रहे हैं तमाम इस समय इसका कोई बा-जाना नहा है। जो लोग पुनः कारखाने खोलने का निश्चार कर रहे हैं उनमें एक तो आन्ध्र की जेडा जिला सहकारी दूध उत्पादन यूनिट लि० है जो आन्ध्र में बम्बई सरकार

तथा उद्युकराष्ट्र तत्प के अन्तर्देशीय बाल अल्पव्ययिनी कोष (Unicef) की महायुक्त में अपना कारखाना स्थापित करना चाहती है। इसमें पुद्दहार द्वाय दूध सुपाने की मशीनें लगाने का निश्चार है। इस कारखाने में प्रति-दिन मजतन निकले दूध में ४ टन दुग्ध चूर्ण तैयार किया जायगा। अक्टूबर १९५५ में काम आरम्भ हो जाने की आशा है और प्रतिदिन २,५०,००० पीण्ट दूध काम में लान का प्रस्ताव है। इतका अधिकांश भाग पैक्टेराइज करके बम्बई सरकार की दूध योजना के अनुसार बम्बई भेजा जाया करेगा। शेष दूध का दुग्ध चूर्ण, घी, मजतन, घनीभूत दूध और क्रीम बनाना जानना-जो जेडा यूनिट में दूध उत्पादकों की ६२ सरकारी समितियाँ समितित हैं जिनमें कुल ११,३०७ व्यक्ति हैं। जेडा यूनिट डेरी उद्योग के विकास के लिये निरीक्षित चल करती है और इसके लिये उसे बम्बई सरकार प्रति वर्ष ३ लाख रु० का अनुदान देती है।

मीमाशुल्क बोर्ड की सिफारिशें

१९५८ में नेशनल म्यूटुमिन्ट लि० द्राग मरचण्ट के लिये रिपोर्ट में श्राउटनगर पर सीमाशुल्क बोर्ड ने विचार किया। बोर्ड ने श्रावनी रिपोर्ट में कहा कि देश में दुग्ध चूर्ण उद्योग का विकास मुख्यतः पश्चिम दूध उपलब्ध होने पर निर्भर है। इस समय देश में जनता की आवश्यकता पूर्ण करने के लिये पश्चिम दूध उपलब्ध नहीं है और सन्नी बड़े नगरों में इतनी मात्रा कर्मा है। निम्नान्न के परधान नगरों में बहुत से घरघारों आ जाने में दूध की माग और भी बढ़ गई है जिससे फलस्वरूप उनमें जाव पयाम बन गये हैं। इतने पर भी देश में उद्योग करने भी हो सकता है जहां दूध के अनेक उत्पादन हो जान पर भी कुछ परिमाण में शुद्ध अथवा मक्खन विज्ञान दूध उत्पाद हो जाता है। इस फालतू दूध का चूर्ण बना देने में स्वानोय लोगों की आय बढ़ेगी और देश के दूसरे भागों को अधिक दूध मिलने लगेगा। प्रत्येक यदि दुग्ध चूर्ण तैयार करने वाले कारखाने फालतू दूध वाले क्षेत्रों में खोल जाय तो उनमें राष्ट्र को लाभ होगा।

दुग्ध चूर्ण का आयात

भारत सरकार बच्चों और बीमारों को देने तथा होटलों में प्रयुक्त होने के लिये दुग्ध चूर्ण के आयात की अनुमति देना आरंभ है। विस्कुट, मिठाई, आइसक्रीम, केक, उबकरोटी आदि बनाने में मा दुग्ध चूर्ण का उपयोग होता है। फंड बोर्ड कायदा देश में श्रावनी १९५५ का दुग्ध चूर्ण बना कर उचित मूल्य पर देने तो उनका उत्पादन नहीं होगा। अब तक देश में उत्पादन न होने के कारण विदेशों से दुग्ध चूर्ण का आयात जिस प्रकार हुआ है उसके आधे मात्रा की तालिम में लिने गये हैं —

वर्ष	शुद्ध दुग्ध चूर्ण		मक्खन निकला दुग्ध चूर्ण	
	परिमाण (हण्टरविट)	मूल्य ₹० में	परिमाण (हण्टरविट)	मूल्य ₹० में
१९५०-५१	३,८११	६४,६९,६६६	१,००,०००	८५,६६,६६६
१९५१-५२	१,०००	८५,००,०००	१,००,००,०००	८५,००,००,०००
१९५२-५३	८,०००	१,००,००,०००	१,००,००,०००	८,००,००,०००
१९५३-५४	१,००,०००	८,००,००,०००	१,००,००,०००	८,००,००,०००

गत चार वर्षों के आयात का वार्षिक औसत २,२२,०१६ हण्टरविट अर्थात् ११,०१० टन मक्खन निकला दुग्ध चूर्ण और २२,१२० हण्टरविट अर्थात् १,१०५ टन शुद्ध दुग्ध चूर्ण रहा है। १९६२-६३ में लगभग ३ करोड़ ₹० का दुग्ध चूर्ण विदेशों में मंगाया गया। अतः दुग्ध चूर्ण उद्योग का दम में विकास करने में पद्याल विदेशों मुद्राओं की बचत हो सकती है।

देश में शुद्ध दुग्ध चूर्ण की अभाव मक्खन निकला दुग्ध चूर्ण अधिक परिमाण में मंगा है। इसका कारण यह है कि बम्बई सरकार अपनी उत्पादन योजनाओं में मक्खन में बहुत मा मक्खन निकला दुग्ध चूर्ण विदेशों में मंगाती है। मक्खन निकला दुग्ध चूर्ण शुद्ध की अभाव मक्खन भी होता है और विदेशों में मंगाने पर उस पर बोर्ड सीमाशुल्क भी नहीं लगता।

दूसरी ओर शुद्ध दुग्ध चूर्ण पर मूल्य का २५ प्रतिशत सीमाशुल्क लगा जाता है। मक्खन निकले दूध में केवल धी के अश्रु को छोड़ कर दूध के अन्य सभी पोषक तत्व उपस्थित रहते हैं। दुग्धिक बाव आनेग (१९५५) की राय में मक्खन निकले दूध दुग्ध चूर्ण की विशेषता से मंगाने में कुछ सीमा तक दूध की कमी पूरी हो सकती है अतः इस प्रकार के लाभप्रद और माध हो मस्ते दूध का स्थली बच्चों में वितरण करना सर्वथा उचित होगा।

अंग्रि विज्ञान व्यवस्था सहायक द्राग प्रकाशित भारत में दुग्ध की बिक्री मक्खन रिपोर्ट (१९५०) 'The Report on the Marketing of Milk in the Indian Union (1950)' के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष ४,८१५ लाख पाँच दूध उपलब्ध होता है। कुछ महानगरों में दूध का उत्पादन इस प्रकार होता है —

(लाल मनो में)

राज्य	तरल दूध का वार्षिक उत्पादन
उत्तर प्रदेश	१,११६
मद्रास	५७८
बिहार	४४२
पूर्वी पन्जाब	५६८
बम्बई (बम्बई सहित)	३१८
पश्चिमी बंगाल	१६५
गोवा	१८२
राजस्थान	१८४
पेन्डू	१३१
मध्य भारत	१४२
हैदराबाद	१६५

उपरोक्त रिपोर्ट में उद्भूत निम्न आंकड़ों में प्रकट होता है कि विभिन्न रूपों में दूध का किस प्रकार उपयोग किया जाता है :—

(लाल मनो में)

रूप	परिमाण	उत्पादन का प्रतिशत
तरल रूप में उपयोग	१,७४०,६६	३६.२
धी बनावट उपयोग	२,०८५,१६	४३.३
हठी के रूप में उपयोग	६२८,४४	६.१
मक्खन के रूप में उपयोग	२०१,८५	६.०
खोआ के रूप में उपयोग	१६६,५०	५.१
आइसक्रीम के रूप में उपयोग	१६,६६	०.४
अन्य के रूप में उपयोग	६,६६	०.६
	४,८१५,५०	१००

दुग्ध चूर्ण के लिये तरल दुग्ध

ऊपर कटिदा ३ में बताया जा चुका है कि देश में मक्खन निकले और शुद्ध दूध की मांग का वार्षिक शीर्षक कमशः ११,२६० टन और १,१०० टन होता है। इस हिसाब से दुग्ध चूर्ण बनाने के लिये प्रायः १,२३,००० टन अथवा ३६ लाख मनु तरल दूध की आवश्यकता होगी। इसके लिये नियमित रूप से डेढ़ी उद्योग चलाने और इस प्रकार दूध का अधिक उत्पादन करने की आवश्यकता है।

पी, मक्खन अथवा गोश्रा के समान अच्छी सिस्म का दुग्ध चूर्ण छोटे परिमाण पर तैयार नहीं किया जा सकता। यद्यपि वर्ष में किसी एक समय बहुत अधिक दूध उपलब्ध हो सकता है तथापि उसे अधिक परिमाण में निरन्तर वर्ष भर उपलब्ध रखने के लिये उस क्षेत्र में विप्राप्य व्यवस्था करना पड़ेगी जहां दुग्ध चूर्ण का कारखाना खोला जायगा। यह भी विचार करना पड़ेगा कि इसे तैयार करने में माय का, मैस का अथवा दोनों का मिला हुआ दूध काम में लाया जाय। देश की वर्तमान सहयोग दूध युनियन की माय और मैस दोनों का मिला हुआ दूध चलाना अधिक व्यावहारिक लगा है। भारतीय दूध में चिकनाई और अन्य पदार्थों का प्रतिशत इस प्रकार रहता है।—

	चिकनाई का न्यूनतम प्रतिशत	अन्य पदार्थों का न्यूनतम प्रतिशत
माय का दूध ...	१.५	८.५
मैस का दूध ...	६.०	६.०
मिला हुआ दूध ...	३.५	८.६-६.०

ऊपर के आंकड़ा में स्पष्ट है कि चिकनाई की दृष्टि से माय और मैस के दूध में बितना अन्तर पड़ता है। मैस के दूध से उद्योग चूर्ण तैयार करने के लिये उसके परीक्षण करके यह देखा होगा कि सुजाते समय वह किस प्रकार काम बदलता है। ये परीक्षण मामनीय डेरी गवर्नेरशाहला बगलौर, केंद्रीय राज्य गवर्नेरशाहला मैसूर और कर्नट विश्वविद्यालय के डेमोन्सट्रेशन वेनोअला विभाग में किये जा सकते हैं। मैस के दूध में मक्खन निकाला हुआ तरल दूध मिला कर उसको चिकनाई का प्रतिशत घटाया जा सकता है और तब उससे दुग्ध चूर्ण तैयार करने में कोई कठिनाई नहीं होती चाहिए।

कारखाना और उसकी पूंजी

राज्य उद्योग मण्डल (१९५०) ने बताया है कि यह करना बहुत कठिन है कि भारत में बितना बड़ा कारखाना स्थापित करना लाभप्रद होगा। शायद हुआ है कि अमेरिका की कम्पनिया कना भी दुग्धचूर्ण का कारखाना खोलने से पूर्व यह निश्चय कर लेती है कि उसे क्षेत्र में कम से कम १०-१५ टन दूध प्रतिदिन मिल सकेगा या नहीं। परन्तु भारत की अस्थायी अमेरिका में सर्वथा भिन्न है। अतः यह करना भी कठिन है कि इसी आधार पर चनाये जाने वाले कारखाने भारत में निश्चय ही सफल हो जायेंगे। उपर्युक्त कठिनाई

प्रचुर परिमाण में और साथ ही सस्ते दामों पर दूध उपलब्ध होने की होगी। अतः वर्तमान परिस्थितियों में सब कुछ देखते हुये ऐसा प्रतीत होता है कि ५ टन दूध प्रतिदिन रखाने वाला कारखाना भली प्रकार भारत में चल सकेगा।

प्रतिदिन ५ टन दूध रखाने वाले कारखाने में ५/८ टन शुद्ध दुग्ध चूर्ण नियत तैयार हो सकेगा। राज्ज उद्योग मण्डल ने सम्भरतः यह मान लिया है कि कारखाना की वर्ष भर निर्माण गति में तरल दूध मिलता रहेगा। परन्तु ऐसा तो अमेरिका और अष्ट्रेलिया में भी नहीं होता। परन्तु प्रस्तावित कारखानों की शक्ति इतनी प्रचुर होनी चायिये जिसमें वर्ष में जब अधिक दूध उत्पादन होने लगता है तो उसे कम करने गया मकें। इसके अर्थ में मध्यमे हुये भारत के लिये ऐसा कारखाना अत्यन्त उपयुक्त हो सकता है जिसमें प्रतिदिन ३ टन दूध गण्य सक। किंजा युनियन फुहार द्वारा दूध सुखाने का कारखाना लगा रहें है जिसमें प्रतिदिन ४ टन मक्खन निकले दूध का चूल् तैयार किया जा सकेगा। प्रतिदिन ३-५ टन दूध रखाने वाले ऐसे कारखाने की लागत प्रायः ४ लाख रु० होगी। इमारतों आदि पर २ लाख रु० और व्यय होगा।

दूध से जल का अश्रा सफलतापूर्वक सुखा कर उसका चूर्ण बनाने के लिये तरल दूध का स्पष्ट होना भी नितान्त आवश्यक है। सुखाते समय गरमी के कारण यद्यपि दूध के अनेक कीटाणु नष्ट हो जाते हैं तथापि इस प्रकार अस्वच्छता और अशुद्धता दूर नहीं होती। इस कारण शुद्धतम दूध का ही प्रयोग करना चाहिए और मशान में डालने से पहले उसका भली प्रकार सामाजिक ढा-से परीक्षण भी कर लेना चाहिए।

दुग्ध चूर्ण बनाने की दो प्रणालियाँ

दुग्ध चूर्ण बनाने की दो प्रणालियाँ आरम्भ चल रही हैं, एक तो जेलन प्रणाली और दूसरी फुहार प्रणाली।

ब्रेलन प्रणाली—इसमें दो टोन जेलन होने हैं जिनकी लम्बाई प्रायः ५ फीट और व्यास प्रायः ५। फीट होता है। ये एक दूसरे से ०.२ इंच दूर होने हैं। इन्हें ४० से ७० पीड के दबाव पर भाप द्वारा गरम करे रहते हैं। दोनों जेलनों के बीच दूध भरकर छोड़ा जाता है। गरमी पाकर इसकी पतली परत जेलनों पर बरफ जमकी जाती है जो एक झोर लगे हुये चातुओं में खुलती जाती है। दोनों जेलन खूब चिकने होते हैं अन्त्या चूर्ण अशुद्धा नहा बनता। यह भी ध्यान रखा जाता है कि जेलना पर जमने वाले चूर्ण का कोई भी भाग जेलनों पर जमा न रह जाय। यदि कहीं भी चूर्ण जमा रह जाता है तो यह काम दर काला घट जाता है ग्रॉफ फिट चूर्ण का रसाद और रंग दोनों ही खराब हो जाते हैं। खुरने हुये चूर्ण को ठंडा करके पीसा और छाना जाता है। नुप्राने से पहले तरल दूध को १८ प्रतिशत तक गाटा कर लिया जा सकता है। प्रतिमानित ढग के जेलना की एक जोड़ी से प्रति घंटे ६० गैलन वृ दूध सुखाया जा सकता है। यदि गाडे दूध को काम में लाया जाय तो एक घंटे में १२० से १६० गैलन दूध सुखाया जा सकता है।

महीने, दूसरे वर्ष में ५ महीने और फिर तीसरे, चौथे और पाचवें वर्षों में ६ ६ महीने चलेंगे।

उपरोक्त विवेचना में प्रकट होता है कि देश की दुग्ध चूर्ण सम्पत्ती वर्तमान माग ५ वर्षों के पर्याप्त पूर्णतः देशी उत्पादन से ही पूरी हो जायेगी। जब तक ऐसा नहीं होने लगेगा दुग्ध चूर्ण का आयात होता रहेगा।

निष्कर्ष और सिफारिशें

(१) जब वर्षों में हुए औसत आयात के आधार पर प्रति वर्ष मवाग निकले दुग्ध चूर्ण की देश में अनुमानत ११,२६० टन और शुद्ध दुग्ध चूर्ण की १,१०० टन खपत हो सकती है।

(२) भारत में दूध की बिनी सम्बन्धी रिपोर्ट (१९५०) के अनुमान देश में प्रतिवर्ष ४,८२५.५ लाख मन दूध उत्पन्न होता है। उत्तर प्रदेश, मद्रास, पूर्वी पञ्जाब, बिहार और कर्नाटक राज्य दूध उत्पादन में प्रमुख हैं।

(३) दुग्ध चूर्ण तैयार करने के उपयुक्त क्षेत्रों में अधिक दूध उत्पादन करने के लिये गन्भीर प्रयत्न करना आवश्यक है। दुग्ध चूर्ण तैयार करने के उद्देश्य से देश में डेरी उद्योग का विकास करने के लिये केन्द्रीय सरकार का साथ और कृषि मन्त्रालय तथा गन्धी की सरकारें सभी प्रकार की सहायता दें।

(४) सम्बन्धित निरन्तर दुग्ध चूर्ण बनाने में माघ और मेष का मिलावट का काम में लाया जा सकता है।

(५) मेष के शुद्ध दूध का दुग्ध चूर्ण बनाने के परीक्षण करने की आवश्यकता है।

(६) दुग्ध चूर्ण जैसे नये उद्योग का देश में सुनियोजित ढंग से विकास होना चाहिये। इसलिये नये कारखानों के स्थानों का निश्चय राज्य सरकारों और केन्द्रीय साथ तथा कृषि मन्त्रालय के परामर्श में भली प्रकार सोच विचार कर किया जाना चाहिए। इस उद्योग की मशीनों आदि का आयात करने के लाइसेन्स केवल उन्हीं लोगों को दिये जाने चाहिए जिनकी योजनाएँ वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय अन्तिम रूप से स्वीकार कर ले।

(७) दुग्ध चूर्ण कारखानों में सुशिक्षित विशेषज्ञ और वैज्ञानिक रहे जान चाहिए जिसमें दूध और दुग्ध चूर्ण की स्वच्छता, शुद्धता और तत्वों को सुरक्षित रखने पर विशेष ध्यान रखा जा सके।

(८) कुशर प्रणाली से सम्बन्धित निरले दूध का प्रगति ३ टन चूर्ण तैयार करने जाला कारखाना खोलना ही लाभप्रद रहेगा।

(९) कुशर प्रणाली से बनाया गया चूर्ण शुद्धता अच्छा है, अतः इसी प्रणाली के कारखाने खोलने की सिफारिश की जा सकती है। परन्तु खोलने प्रणाली के एक नौ कारखाने भी चलाये जा सकते हैं।

(१०) देश की माग पूरी करने के लिये ऋगले ५ वर्षों में दुग्ध चूर्ण तैयार करने वाले २० कारखाने स्थापित किये जा सकते हैं।

हिन्दी संसार की 'सम्पदा' के तीन सुन्दर उपहार

जो तो सम्पदा का प्रत्येक अंक ही स्थायी साहित्य की सामग्री है, क्योंकि उसमें देश की विविध आर्थिक समस्याओं—उद्योग, व्यापार, कृषि, व्याज, बीमा, बैंक और राज्यों की आर्थिक प्रगतियों आदि पर गम्भीर ज्ञानवर्धक सामग्री रहती है किन्तु तीन विशेषांक तो अमूल्य, अनुपम तथा हिन्दी परम्परािता में गर्व की वस्तु हैं—

योजना-अंक (भारत की पंचवर्षीय योजना पर प्रामाणिक व ज्ञानवर्धक सामग्री)

Hindi readers will benefit immensely from this publication.

The best guide for digesting and understanding the economic situation of the country.

—आर्गेनाइजर

—कामर्ष एण्ड इण्डस्ट्री

भूमि सुधार-अंक (भारत की भूमि सम्बन्धी समस्याओं पर अद्भुत अंक)

...All this makes this number almost a reference number and deserves a place in all libraries and on every social worker's and patriot's table.

लेखों का चयन और सम्पादन प्रशंसनीय है।

—महराष्ट्रा (पुना)

—आज

वस्त्र-उद्योग-अंक (भारत के प्रमुखतम उद्योग पर प्रामाणिक जानकारी)

इस अंक के पीछे काफी श्रम किया गया है। सम्पादक को बधाई

—धनरथामदास विड़ला

स्वागत योग्य प्रयत्न—उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए बधाई

—ला० भरतराम दिल्ली कलाय मिल्स

It will fill a want in Hindi commercial literature.

—R. G. Sanjya

तीनों का प्रथक प्रथक मूल्य १-१) और १)। ३) भेजकर तीनों अंक एक साथ मंगाइये। १९५२ व १९५३ की कुछ फाइलें भी मिल सकती हैं।

मूल्य ८) प्रत्येक वर्ष

मैनेजर—सम्पदा अशोक प्रकाशन मंदिर, रोशनारा रोड, दिल्ली।

★★★ कपड़ा नियोजन का लक्ष्य एक अरब गज भविष्य में भी रहना चाहिए....

हाथकरघा उद्योग को सुधारने के सुझाव

भारत सरकार की कपड़ा जांच समिति की सिफारिशें

कपड़ा उद्योग जांच समिति ने अपनी रिपोर्ट कुछ दिन पूर्व प्रकाशित की है। यह समिति मिल, हाथकरघा और शक्तिचालित करघा उद्योगों की विशद जांच करके उनमें सुधार करने के उपाय सुझाने के लिये भारत सरकार ने नियुक्त की थी।

समिति का मत है कि मिलों के कटाई विभागों का विस्तार न करके उनके अतिरिक्त मूल को हाथकरघों को दिया जाना चाहिए।

हाथकरघों का सुधारने का समिति ने उपाय सुझाये हैं। उसका कहना है कि इन उद्योगों का स्थान पर स्वचालित और शक्तिचालित करघे लगाये जाने चाहिये और इन्हें प्रतिवर्ष ५,००० करोड़ रुपए की दरसे न बढ़ाना चाहिए।

विदेशों को एक अरब गज कपड़ा प्रतिवर्ष भेजते रहने का लक्ष्य आगे भी हमें बनाये रखना चाहिए।



जांच समिति का संगठन

भारत सरकार द्वारा नियुक्त की गई कपड़ा उद्योग समिति की रिपोर्ट हाल में ही प्रकाशित हुई है। यह समिति नवम्बर १९५० में नियुक्त की गई थी और इसके अध्यक्ष मन्दा मन्दा श्री निरानन्द कानूनकर थे जो अब वाणिज्य और उद्योग उपमन्त्री हैं। उनके अतिरिक्त सर्वश्री एच० सी० दामप्य, बी० एन० तिवारी, ए० आर० भट्ट प्रो० एम० के० मुरजन, प्रो० आर० जालन्धर, प्रो० एम० के० चान्द, श्री एम० पा० चौधरी, श्री टी० स्वामीनाथन आदि प्रो० एम० सुब्रह्मण्यम समिति के सदस्य थे। समिति को सूची कपड़ा उद्योग के विभिन्न अंगों अर्थात् मिलों, शक्तिचालित करघों और हाथकरघा के निर्यात में भी जांच करने का कार्य सौंपा गया था जिससे यह ज्ञात हो सके कि देश की अर्थ व्यवस्था में इनका क्या स्थान है और आपस में उनमें क्या सम्बन्ध है।

उद्योग के निच विभाग के निर्यात में समिति का कहना है कि १ जनवरी १९५४ को देश में सूती कपड़ा उद्योग सम्पत्ती ४०० मिल थी। इनमें से ११४ केवल कटाई का काम करते थे और २८६ कटाई बुनाई दोनों करते थे। इन मिलों में कुल ११० १६ लक्ष थे जिनमें १६२ लाख स्टाचो रूप से बन्द पड़े रहते थे। इस प्रकार कुल ११४ ३ लाख लक्ष के चलते थे। इनमें से ६२ ०६ लाख कटाई बुनाई दोनों करने वाले मिलों में थे और १६ ०६ लाख केवल कटाई करने वाले मिलों में थे। इसी तारीख को सम्स्त मिलों

में २,०१ ७१६ करोड़ थे जिनमें से केवल १ ६७ ००० करोड़ चलते थे।

भारत के कपड़ा मिलों में अमेरिका और जापान के मिलों की भाँति स्ट्रॉट्टर मशीन लेकर कपड़ा बुनने और रगाने तक के सभी काम स्वयं करते हैं। परन्तु अमेरिका और जापान के मिलों में वहाँ अधिकांश स्वचालित करघे काम में लगे जाते हैं वहाँ भारत में मिलों के लक्ष्यकार के मिलों की भाँति साधारण करघे लगे हुए हैं।

महायुद्धों से सहायता

समिति का कहना है कि दोनों महायुद्धों के कारण भारत के कपड़ा उद्योग का विस्तार होने में महायुद्ध मिलों हैं। परन्तु अधिकांश भारतीय मिलों की मशीनें और उपकरण पुराने हैं जिनमें स्थान पर नयी मशीनें लगाने की आवश्यकता है। योजना कमीशन ने १९५५ ५६ में लिये प्रति व्यक्ति पाठ १५ गज कपड़े का लक्ष्य रखा है जिनमें पूरा करने के लिये मिलों की ६७,००० लाख गज और हाथकरघा की १७ ००० लाख गज कपड़ा देना चाहिए और ६०,००० लाख गज उत्पाद के लिये रहना चाहिए। मिलों ने १९५२ में हाथकरघा वह लक्ष्य पूरा कर लिया जो १९५५ ५६ में लिये निश्चयित किया गया था। इस समय ता उनका उत्पादन और भी बढ़ गया है। १९५५ का पहली छमाही में २६,५५०

सात गज उत्पादन हुआ और बुलाई १६५४ का अनुमान ४,४९० लाख गज है जो पिछले सभी उत्पादनो से अधिक है। इस प्रकार मिना ने पंचवर्षीय योजना में निर्धारित लक्ष्य से बड़ी अधिक उत्पादन कर दिखाया है। हाथकरवी और शक्तिचालित करघा का सम्मिलित उत्पादन भी १५,००० लाख गज हो जाने का अनुमान है।

युक्तियुक्त संगठन

समिति का यह भी कहना है कि पहले भारत विदेशों से बहुत सा बपड़ा मंगाया करता था, परन्तु इतिहास मरायुद्ध में और उनके बाद यह बपड़े का उत्पादन निर्यात करने लगा। मजिथ्य मे भी इसी प्रकार निर्यात होते रहने के लिये यह आवश्यक है कि बपड़ा उद्योग की स्थिति मजबूत हो जाय। इसके लिये समिति ने सिफारिश की है कि बपड़ा मिला के साधारण करघो को प्रति वर्ष प्राय ५,००० के दरिमाय से हटा कर उनके स्थान पर स्वचालित करघे लगाने जाय। इस प्रकार २० वर्ष में करघा मिलो के लगभग आठे करघे बदल कर स्वचालित करघे हो जावगे। उगा हो जाने पर भारतीय बपड़ा मिल अख्छी किम्म का बपड़ा सन्ने मूल्यों पर बकाने लगेगे और इस प्रकार वे स्वचालित करघा द्वारा सस्ता बपड़ा तैयार करने वाले अन्य देशो के मिना से प्रति वर्षा कर सनेगे। परन्तु स्वचालित करघे लगाने का कार्य मजदूरी से सम्बन्धीता बरके और भरकार द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार किया जाना चाहिए।

बपड़ा मिल उद्योग को नये रूप में समष्टित करने के लिये धन की जो आवश्यकता होगी उसके विषय में समिति का मत है कि इन उद्योगो को जिन साधनो से धन मिल रहा है उन्ही से नये रूप में समष्टित करने के लिये भी मिल जायगा।

उद्योग में लगे हुए व्यक्तियों को थपार्नू लगाने रखन की आवश्यकता को स्वीकार करते हुए समिति ने सिफारिश की है कि उद्योग के बुनाई कार्य का श्रम और विस्तार करने की अनुमति नहा देना चाहिए। मिलो द्वारा इस समय प्राय ५०,००० लाख गज काटे का प्रति वर्ष उत्पादन हो रहा है। यह उत्पादन इसी सीमा पर स्थिर रखना चाहिए। समिति का यह भी कहना है कि यदि इस उद्योग का विभिन्न स्थानों पर विस्तार दिया जाय तो वे सभी सामाजिक और सांस्कृतिक उद्योग दूर गिये जा सकते हैं जो एक स्थान पर केन्द्रित करने से उत्पन्न हो जाते हैं।

अप्रमदाबाद बपड़ा उद्योग गवेषणा सघ की प्रयोगशाला तथा अन्य स्थानों में हुए गवेषणा कार्य की प्रशंसा करते हुए समिति ने व्यवस्था सम्बन्धी गवेषणा करने की भी जोर दिया है। उसका कहना है कि व्यवस्था का सर्वोत्तम और श्रेष्ठतम होना आवश्यक है। धन की व्यवस्था, आवश्यक सामान और बच्चे माल की प्राप्ति, लागत और उसकी प्रचाली और गजदूरी तथा कर्मचारियों की व्यवस्था सभी पर यह लागू होता है। कपड़ा उद्योग को मशीनों और इजिनियरों कार्य के विषय में भी और अधिक गवेषणा होनी चाहिए।

करघों में वृद्धि का प्रश्न

तथासहित "घागे" के मिलो के विषय में समिति ने यह बात नहीं

मानी है कि तबुनो की सख्या को देखते हुए बरघों की सख्या कम होने के कारण ही इन मिलों में घाटा होता है। समिति का कहना है कि देश में "अनेक वर्षों से ऐसे अनेक मिल बंदो अख्छी तरह से चला रहे हैं जो फेरल बर्ताई का काम भी करते हैं। समिति ने कहा है कि यदि केवल तबुनो और बरघो का गनुनन ठीक न होने के कारण ही इन मिलों में घाटा होता है तो उन्हू या तो तबुनो की सख्या बढाने से सहायता देनी चाहिए अथवा उन्हे अन्य मिलों में मिना देना चाहिए। समिति ऐसे मिलों में भी करघा की सख्या बढाने के विरुद्ध है, क्योंकि बपड़े की माग बढने के साथ मजिथ्य में सूत की माग भी अत्यन्त बढेगी और सूत का उत्पादन और निर्यात करने में भी अख्छा लाभ होगा।

शक्ति चालित करघा उद्योग

समिति को माल हुआ है कि देश में शक्तिचालित करघा उद्योग को चले अर्थात् याद हो दिन हुए हैं। यह उद्योग बपड़ा मिल उद्योग से भिन्न है। शक्ति चालित करघा उद्योग एक प्रकार से हाथ करघा उद्योग का ही विकसित रूप है। शक्ति चालित करघो के बापड़ानो में माध्याह्निक १ से लेकर ५ तक करघे लगाये जाते हैं। शक्ति चालित करघों का काम हाथ करघे के काम से भिन्न है। हाथ करघे का बुनकर जहा एक थान तैयार करता है, वहा शक्तिचालित करघे का बुनकर उतने ही समय में प्राय चार थान तैयार करता है। इस प्रकार वह हाथ करघे की अपेक्षा चौगुना उत्पादन करता है।

शक्ति चालित करघा के नये कारखाने माध्याह्निक पेक्टोरो अधिनियम के अनुसंगत आ जाते हैं और किमी किमी पर तो कानून द्वारा निश्चित न्यूनतम मजदूरी भी लागू हो जाती है। समिति ने यह निष्कर्ष निकाला है कि वास्तव में उद्योग के केवल आ क्षेत्र हा होने चाहिए, अर्थात् एक तो सुधरे करघा तथा साधारण हाथ करघा उद्योग तथा छोटे परिमाण पर चलने वाला शक्ति चालित उद्योग और दूसरा मिल उद्योग का क्षेत्र।

हाथ करघा उद्योग के नियम में समिति का कहना है कि भारत में श्रम भी हाथ करघा द्वारा बना प्रकार की डिवायनों के सुन्दर और शार्करीक बपड़े तैयार होते हैं। उनका भी मलमल, बटौदा के पदोला, आगाम, मण्डिर, उडीगा और दक्षिण भारत के अनेक प्रकार के बरघ यदि जग प्रसिद्ध रहे हैं तो अपनी श्रेष्ठता के कारण ही। वे बरघों से शार्करी तैयार किने जाते हैं। बुनकरी ने हाथ-करघा उद्योग द्वारा अपनी कला का सुन्दर प्रदर्शन किया है।

अच्छे स्वचालित करघे

हाथकरघा उद्योग को सबसे बड़ी गिरोफता यही है कि बहुत ही थोड़ी पूंजी से यह काम चलाया जा सकता है। कोई भी बुनकर केवल ५० से लेकर १०० रु० तक लगा कर ही अपना काम चालू कर सकता है। परन्तु करघे आदि कम पूंजी वाले होने के कारण बुनकर को परिश्रम अधिस्त करना पड़ता है। अर्थात् करघे द्वारा वह केवल केवल २ से ५ गज तक ही बपड़ा प्रतिदिन बुन पाता है। फलार्ड बढाने वाले करघे से

आधार पर हाइ करना, शक्ति-चालित करना तथा मिल उद्योगों के लिये उत्पादन के क्षेत्र अलग-अलग निर्धारित कर देना सम्भव नहीं होगा।

प्रतिस्पर्धा कचई जाय

कचड़ा उद्योग के तीनों अंगों के मध्य केवल दूरी कारण तयपर्व होता है कि तीनों द्वारा बनाये जाने वाले वपटो में कोई अन्तर नहीं किया जा सकता और इन तीनों के उत्पादन की आपस में प्रतिस्पर्धा होती है। इस कारण समिति ने यह मत व्यक्त किया है कि हाथकरवा उद्योग की वर्तमान आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था में व्यापार नियंत्रित करने अधिक उन्नत बनाया जाय और इसके लिये बड़ा बर्न आम्बयक हो उसमें शक्ति का प्रयोग किया जाय।

हाथ-करवा उद्योग समस्त देश में विपणन हुआ है। अतः दूसरे उत्पादन का लागत का कोई नियंत्रण नहीं किया जा सकता। प्रायः सब से ४० प्रतिशत धोतियों का उत्पादन हमके लिये सुरक्षित कर दिया गया है तब में यह पहले की अपेक्षा अधिक मन्ने दामों पर धोतियां बनाकर बेचने लगते हैं।

समिति का अनुमान है कि १२ लाख सामान्य हाथ-करवा प्रतिदिन ६ गज कचड़ा बनाकर वर्ष में २०० दिन काम करके प्रायः १४,००० लाख गज कचड़ा तैयार कर रहे हैं। यह उत्पादन प्रति वर्ष बनकर बचता जा रहा है और एक दो वर्ष में यह १६,००० लाख गज हो जाने की आशा है। समिति के मत से इनका उत्पादन करने के लिये वर्ष में ३०० दिन काम करने वाले केवल ६ लाख कर्षी की आवश्यकता होगी। इस प्रकार ३ लाख कर्षे बन्द हो जायेंगे, जिससे प्रायः ३,७५ लाख युवकर अथवा पूरे दिन काम करने वाले प्रायः ४ लाख युवकर बेकार हो जायेंगे।

१६६० तक कितना उत्पादन होगा

समिति का अनुमान है कि निम्नतः के लिये १०,००० लाख गज लोहकर देश में उपयुक्त के लिये १६४४ में अद्युत्पादन ५६,००० लाख गज कचड़ा उपलब्ध रहेगा। १६६० तक देश की मजदूर करने के लिये १६,००० लाख गज अतिरिक्त कर्षे की आवश्यकता होगी। युवकों को मजदूर लागत रखने और पूजा को बन्द करने के उद्देश्य से समिति ने विचार किया है कि यह अतिरिक्त उत्पादन कचड़ा उत्पादन के विकेंद्रित अंग द्वारा किया जाना चाहिए जिसमें ऐसे अर्द्ध स्वचालित कर्षा का प्रयोग किया जाय जो प्रतिदिन (८ घण्टे के) २० से २४ गज तक कचड़ा तैयार करे। स्वचालित के अतिरिक्त शक्ति चालित कर्षा का भी प्रयोग किया जाय जो प्रति घण्टा ३० अथवा अधिक गज कचड़ा कर्षा की आवश्यकता होगी जो वय में ६०० दिन काम करके प्रतिदिन २५ गज के हिसाब से १६,००० लाख गज अतिरिक्त कचड़ा तैयार करेंगे। इसका यह अर्थ होगा कि हाथकरवा उद्योग के वर्ष में काम के दिनों की संख्या १०० से बराबर ३०० कर देने से २,१३ लाख अतिरिक्त उन्नत टंग में हाथ अथवा शक्ति-चालित कर्षे बन्द करने होंगे।

समिति को आशा है कि २,१३ लाख कर्षे बन्द होने में प्रायः २,५ लाख युवकों को काम मिल जायगा। इस प्रकार ६ वर्षों में केवल १,२५ लाख युवकर ही बेकार होंगे, अर्थात् प्रति वर्ष केवल २०,००० और दूतने से नीचे भारी सामाजिक अथवा आर्थिक उपद्रव नहीं होगा। फिर अग्रणी पंचवर्षी योजना के फलस्वरूप दुर्दि, उद्योग तथा अन्य साधना का विकास होने के कारण काम के दूतने साधन उपलब्ध होंगे कि उनसम्बन्ध में होने वाली गृहिक के अतिरिक्त दूधर से बेगार हुए व्यक्ति भी इनमें वय जायेंगे।

मोटे तौर पर समिति का अनुमान है कि ६ वर्षों में साधारण हाथकरवा के स्थान पर ६०,००० शक्ति-चालित कर्षे और १५ लाख उन्नत अर्द्ध स्वचालित कर्षे लगा देना चाहिए। ७वां वर्ष में प्रायः २ करोड़ ६० लाख होंगे। इस प्रकार हमारी योजना यह होगी चाहिए कि प्रति वर्ष २०,००० हाथकरवा का हटा कर उनके स्थान पर १०,००० शक्ति-चालित कर्षे और २०,००० हाथकरवा को हटाकर उनके स्थान पर २५,००० उन्नत अर्द्ध स्वचालित कर्षे लगाये जाने चाहिए।

सहकारी समितियों का प्रयोग

समिति का मत है कि इस प्रकार हाथ करके बदलने का कार्य सहकारी समितियों द्वारा होना चाहिए अन्यथा देश में कर्षे का उत्पादन पट जायगा। इसका इस कारण और भी विशेषतः ध्यान रखना है कि मिलों में दुर्गम विभाग का नियंत्रण नहीं किया जा रहा है। यदि सहकारी टंग से यह काम तेजी के साथ न हो सके तो चापकट स्टाक कम्पनी अदि के टंग पर कठे साधनों से इसे करना होगा। समिति ने यह बात पर ध्यान दिया है कि मीठुना कर्षाणा का छोटेकर अन्न सभी अन्नप्रयोगों में प्रयत्न यही होना चाहिए कि मन्ने का सामान्य युवकर ही रहे, फिर चाहे सहकारिता के टंग पर काम किया जाय अथवा चापकट स्टाक कम्पनी के टंग पर। कर्षों के बदलने का काम तेजी के साथ करने के लिये चापकट स्टाक कम्पनी जैसे साधनों का भी प्रयोग करना चाहिए। शक्ति-चालित कर्षों की कुछ संख्या निजी औद्योगिकों, जैसे उत्पाद युवकों के लिये सुरक्षित कर देनी चाहिए। सहकारी समिति द्वारा जो परिचालन होगा उसमें इन उद्देश्यों में सरकार द्वारा दिष्ट गये धन का प्रयोग होगा।

समिति का विचार है कि साधारण कर्षों को बदलने का काम इस प्रकार से चलने पर जो ३ लाख कर्षे शेष रह जायेंगे उन्में भी २-३ पंचवर्षीय अर्थव्ययों में बदल दिया जायगा। इस प्रकार १५-२० वर्षों के बाद केवल दूधे २०,००० हाथकरवाओं को छोड़कर जो विशेष प्रकार के पेशीद्वी डिजाइन वाले कर्षे तैयार करने के काम धाते हैं, शेष सभी हाथकरवे बन्द जायेंगे और उनके स्थान पर उन्नत टंग के अर्द्ध स्वचालित अथवा वर्षों में ही शक्ति से चलने वाले हाथकरवे लगा जायेंगे।

समिति ने इस अवधि में मिलों के केवल बटाई विभाग में वृद्धि होने की विचारित की है। दुर्गम विभाग का प्रतिवर्ष ५०,००० लाख गज की शक्ति में अधिक विस्तार नहीं होना चाहिए। आगामी ६ वर्षों में जो

प्रतिदिन ४ से ८ गज तक कपड़ा निकलता है। अर्द्ध स्वचालित मठनपुरा कच्चे में एक चुनकर प्रतिदिन २० गज तक कपड़ा बना लेता है। आशा है कि मद्रास में बनाये गये अर्द्ध स्वचालित करणों तथा अन्य सुधरी प्रणालियों द्वारा और अधिक कपड़ा बनाया जा सकेगा। विशाल परिमाण पर काम चलाया जाय तो इस प्रकार के उन्नत करणों को लगाने में प्राय २०० रु० व्यय होत है।

समिति का मत है कि समस्त देश में हाथकरवा चुन करों को महत्कारिता के आधार पर सगठित कर देना चाहिए। यह सगठन ऐसा होना चाहिए जिससे चुनरीयों को उचित मजदूरी मिलती रहे। चुनरीयों से यह प्रतिज्ञा लेनी चाहिए कि वे अपना कच्चा माल, रंग इत्यादि सहकारी समिति से खरीदें और अपना अविश्रुत में अधिक माल भी समिति द्वारा ही बेचें।

समिति द्वारा किये गए एक पदचक्रण क अनुसार प्रकट हुआ है कि १९५१ में की गई गणना के अनुसार ही आज भी हाथकरवाओं का उद्योग है। गणना के समस्त देश में कुल २१६ लाख कपड़े थे। एक से स्थानों को छोड़कर प्रायः मध्य हाथकरवा का चुनकर अपना कच्चा माल के अतिरिक्त अन्य बॉट काम नहीं करता। उसके पास फलतः अथवा जीपिका का अन्य कोई माधन भी नहीं होता। १० लाख हाथकरवा में से केवल १० लाख को व्यापारिक रूप पर चल रहा है। इनमें अपने वाले कच्चे के आधार पर यह हिसाब लगाया गया है। यह हिसाब लगाने में यह भी मान लिया गया है कि जो चुनकर वर्ग में २०० दिन खरा नही चलता वह इस उद्योग का पूरे समय वाला कामगार नहीं है। साथ ही यह भी माना गया है कि एक चुनकर प्रतिदिन औसत ६ गज कपड़ा तैयार करता है। प्रत्येक कच्चे में प्राय २५ व्यक्तियों का पूरे समय का काम मिलता है। अतः इस समय हाथकरवा उद्योग में ५५ लाख व्यक्तियों की जीपिका चलती है।

हाथकरवा वनीय शक्तिवाकित करवा

कुछ विशेष विधियों के कपड़े का उत्पादन हाथकरवा उद्योग के लिये सुविधा कर दिया गया है। इसमें हाथकरवा उद्योग का कोई महत्ता मिली है या नहीं इस सम्बन्ध में बहुत विचार हुआ है। समिति को अपने दौरे में जो मौखिक साक्षियाँ प्राप्त हुई हैं और उसमें दावा जारी कर दे प्रस्तावनी के जो उत्तर प्राप्त हैं उनमें प्रश्न होता है कि रोगालतय कारखानों में साइडों और कपड़ा का उत्पादन हाथकरवा के लिये सुलभ कर देने में इस उद्योग को निश्चित रूप से महत्ता मिलना है। एक तर्क यह भी दिया जाता है कि हाथकरवा उद्योग कुछ विशेष प्रकार के कपड़े तैयार करने के लिये अत्यन्त उपयुक्त है। इस सम्बन्ध में समिति का करना है कि अल्पविक्रम केवल ही बुनार के कपड़े छोड़कर अन्य विधा भी प्रसार के कपड़े तैयार करने के लिये हाथ करवा, मिल अथवा स्वचालित करण से अधिक उपयुक्त नहीं है। हाथकरवा केवल उम कपड़े को चुनने के लिये ही अधिक उपयुक्त है निम्न के सामर्थ्य रुक कर ताना चलाना पड़ता है।

वहा ताने की लम्बाई अधिक लम्बी नहीं रखनी होती वहा भी हाथकरवा सुविधाजनक रहता है। अतः रगान माटिया बनाने के लिये हाथकरवा अथवा छोटा शक्तिवाकित करवा अत्यन्त उपयुक्त है। कमजोर सूत की चुनरी के लिये मा हाथकरवा अथवा कच्चा का अथवा अच्छा रहता है।

भारतीय कपड़ों का निर्यात

भारतीय कपड़ों के निर्यात बाजारों का विशेषकर करने के लिए समिति का विचार है कि हम कपड़े के निर्यात का लक्ष्य १०,००० लाख गज ही रखना चाहिए। समिति ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि हाल के महीनों में जापान ने अपने कपड़ों का निर्यात बढ़ाने का विशेष प्रयत्न प्रारम्भ किया है। इसमें अतिरिक्त नीदरलैंड, पश्चिमी जर्मनी, इटली और स्पेन ने भी कपड़ों का निर्यात करना प्रारम्भ कर दिया है। इस सम्बन्ध में समिति का कहना है कि हमें अपने कपड़ों के बड़े अत्यन्त बाजारों में परन्तु इन दोनों देशों से माग कया हो सकती है इसके विपरीत में अमी तक कोई निश्चित जानकारी नहीं मिली है। परन्तु इस समय अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों की प्रगतियों के देखते हुए हम मान सकते हैं कि इन दोनों देशों से ही साथ ही कपड़ा उत्पादक देशों के अत्यन्त सम्बन्ध रहने की आशा है। यद्यपि हमें और बेकारलाभिताप्रतिपातों हंगरी जैसे देशों से भी कपड़ा का निर्यात होने लगने की सम्भावना है तथापि अभी चान तो पचास सय तक विदेशी कपड़ों से ही अपना काम चलायेगा। समिति का मत है कि यदि देश में ही कपड़ों की माग आशा में कया अधिक कर गद तो १०० लाख गज कपड़ा निर्यात कर सकता है। परन्तु १९५२ में कपड़ों के कुल ६,६६६ लाख कपड़ों में से केवल ६२८ लाख गज ही निर्यात की गयी थी। यदि निर्यात की मात्रा में ही कपड़ों का कपड़ा अत्यन्त प्रवृद्ध और अधिक सस्ता नहीं बनाया जायगा तो इसका निर्यात बढ़ाना सम्भव नहीं होगा। अतः निर्यात अत्यन्त में हमारे देश से निर्यात होने वाला अधिकतर कपड़ा मिले का हा हायोग करण का नहीं। यद्यपि कपड़ों के कपड़ों का निर्यात करने के लिये अत्यन्त भारतीय हाथकरवा यों अत्यन्त प्रयत्न कर रहा है।

समिति का मत है कि विदेशी विनिमय प्राप्त करने और मिलने में अधिक से अधिक लोगों को काम देने की नृष्टि में यह आवश्यक है कि हम प्रति वर्ष १००० लाख गज कपड़ों का निर्यात करने रहे। मोटे और धारीक मल के कपड़ों के बनने में जो खर्च पड़ता है उस देखते हुए यदि नारिय और बहुत धारीक मल के कपड़ों का निर्यात किया जाय तो हमें अधिक विदेशी मुद्रा का प्राप्ति होगी। फिर करार में अथवा न्याय, छुपा हुआ अथवा तैयार कपड़ा निर्यात की योजना में भी अधिक लाभ होगा।

समिति का मत है कि अतः हाथकरवा चुनकरा को बंद न करके देना का नाम नहीं मिलाने लगता और हाथकरवा, शक्तिवाकित करवा और उद्योग के कपड़ों का उत्पादन अथवा अत्यन्त उपयुक्त है। अतः हाथकरवा उद्योग के लिये विशेष प्रकार के कपड़ों का निर्यात सुनिश्चित करना होगा। समिति ने यह भी कहा है कि केवल शील्ड

आधार पर हाथ-करघा, शक्ति चालित करघा तथा मिल उद्योगों के लिये उत्पादन के क्षेत्र अलग-अलग निर्धारित कर देना सम्भव नही होगा।

प्रतिस्पर्धा बचाई जाय

कपडा उद्योग के तीनों श्रेणियों के मध्य केवल इसी कारण समर्थ होता है कि तीनों द्वारा बनाये जाने वाले कपडों में कोई अन्तर नहीं किया जा सकता और इन तीनों के उत्पादनों की आपस में प्रतिस्पर्धा होती है। इस कारण समिति ने यह मत व्यक्त किया है कि हाथकरघा उद्योग की सर्वोत्तम शक्ति को सामाजिक व्यवस्था में व्यापार विप्रेतता उसे अधिक उन्नत बनाया जाय और इसके लिये जहाँ कहीं आवश्यक हो उसमें शक्ति का प्रयोग किया जाय।

हाथ करघा उद्योग समस्त देश में विराम हुआ है। अतः हमने उत्पादनों का लापत का बीड़ा भिन्न-बन्ध नहीं किया जा सकता। परन्तु जब से ४० प्रतिशत शक्तिों का उत्पादन इसके लिये सुरक्षित कर दिया गया है तब से यह पहले की अपेक्षा अधिक समर्थ दाम पर प्राप्तियां बनाकर बेचने लगा है।

समिति का अनुमान है कि १२ लाख साधारण हाथ-करघे प्रतिदिन ६ गज कपडा बनाकर वर्ष में २०० दिन काम करके प्रायः १४,००० लाख गज कपडा तैयार कर रहे हैं। यह उत्पादन प्रति वर्ष बराबर बढ़ता जा रहा है और एक दो वर्ष में यह १६,००० लाख गज हो जाने की आशा है। समिति के मत से इतना उत्पादन करने के लिये वर्ष में ३०० दिन काम करने वाले केवल ६ लाख करघों की आवश्यकता होगी। इस प्रकार ३ लाख करघे बन्द हो जायेंगे, जितस प्रायः २७५ लाख लुकर अथवा पूरे दिन काम करने वाले प्रायः ४ लाख लुकर बन्द रह जायेंगे।

१६६० तक कितना उत्पादन होगा

समिति का अनुमान है कि निम्नानुसार के लिये १०,००० लाख गज छोटकर देश में उपयोग के लिये १६४४ तक अनुमानतः ५६,००० लाख गज कपडा उपलब्ध रहेगा। १६६० तक देश की मांग पूरा करने के लिये १६,००० लाख गज अतिरिक्त कपडे की आवश्यकता होगी। लुकरों को यथावत् लगायें रखने और पूँजी की रकत करने के उद्देश्य से समिति ने निम्नलिखित भी है कि यह अतिरिक्त उत्पादन कपडा उद्योग के विकेंद्रित अंग द्वारा किया जाना चाहिए जिसमें ऐसे अर्द्ध स्वचालित करघा का प्रयोग किया जाय जो प्रति घण्टी ३० अथवा अधिक गज कपडा तैयार करें। इसके लिये २-२३ लाख उन्नत हाथ अथवा शक्ति चालित करघों की आवश्यकता होगी जो वार में १०० दिन काम करके प्रतिदिन २५ गज के हिसाब से १६,००० लाख गज अतिरिक्त कपडा तैयार करेंगे। इसका यह अर्थ होगा कि साधारण उद्योग के वर्ष में काम के दिनों की संख्या २०० से बढ़कर ३०० कर देने से २,१२ लाख अतिरिक्त उन्नत टग से हाथ अथवा शक्ति-चालित करघे बचा देने होंगे।

समिति को आशा है कि २-२३ लाख लुकरों में प्रायः २-५ लाख लुकरों को बाम मिल जायगा। इस प्रकार ६ वर्षों में केवल १,२५ लाख लुकर ही बेकार होंगे, अर्थात् प्रति वर्ष केवल २०,००० और इतने से कोई भारी सामाजिक अथवा आर्थिक उपद्रव नहीं होगा। फिर अगली पंचवर्षीय योजना के फलस्वरूप दृष्टि, उद्योग तथा अन्य साधनों का निष्कास होने के कारण काम के इतने साधन उपलब्ध होंगे कि उन्नत उत्पादन में होने वाली वृद्धि के प्रतिरिक्त दूसरे से बेकार हुए व्यक्तियों में इनमें लग जायेंगे।

मोटे तौर पर समिति का अनुमान है कि ६ वर्षों में साधारण हाथकरघा के स्थान पर ६०,००० शक्तिचालित करघे और १५ लाख उन्नत अर्द्ध स्वचालित करघे लगा देने चाहिए। एका करने में प्रति वर्ष २ करोड़ ६० करोड़ रुपयों। इस प्रकार हमारी योजना यह होनी चाहिए कि प्रति वर्ष २०,००० हाथकरघा को बन्द कर उनके स्थान पर १०,००० शक्तिचालित करघे और ३६,००० हाथकरघों को बन्द कर उनके स्थान पर २५,००० उन्नत अर्द्ध स्वचालित करघे लगाये जानें चाहिए।

सहकारी समितियों का प्रयोग

समिति का मत है कि इस प्रकार हाथ करघे बदलने का कार्य सहकारी समितियों द्वारा किया जाय चाहिए अन्यथा देश में कपडे का उत्पादन घट जायगा। इसका इस कारण और भी विशेषतः ध्यान रखना है कि मिलों में बनाई विभाग का विचार नहीं किया जा रहा है। यदि सहकारी टग से यह काम तेजी के साथ न हो सके तो उद्योग-स्टाक कम्पनी आदि के हंग पर बड़े साधनों से इसे करना होगा। समिति ने इन बात पर बल दिया है कि मीठाना कारखानों में छोड़कर अन्य सभी उद्योगों में प्रथम यहाँ टांका चाहिए जिस करघे का स्वामी लुकर ही रहे, फिर चाहे सहकारिता के हंग पर लाम किया जाय अथवा कपडे स्ट्राक कम्पनी के हंग पर। करघों के बदलने का काम तेजी के साथ करने के लिये उद्योग-स्टाक कम्पनी जैसे साधनों का भी प्रयोग करना चाहिए। शक्तिचालित करघों की कुछ संख्या निम्नी औद्योगिकों, जैसे उस्ताद लुकरों के लिये सुरक्षित कर देनी चाहिए। सहकारी समझना द्वारा जो परिवर्तन होगा उसमें इन उद्देश्यों से सरकार द्वारा दिये गये धन का प्रयोग होगा।

समिति का निष्कार है कि साधारण करघों को बदलने का काम इस प्रकार से चलने पर जो ६ लाख करघे शेष रह जायेंगे उन्हें भी २-३ वर्षीय अवधियों में बदल दिया जायगा। इस प्रकार १२-२० वर्षों के बाद केवल ऐंमें १०,००० हाथकरघों का छोड़कर जो विशेष प्रकार के पेशोही डिजायन वाले ऊपडे तैयार करने के काम धरिये हैं, शेष सभी हाथकरघे बदल जायेंगे और उनके स्थान पर उन्नत टग के अर्द्ध स्वचालित अथवा बरो में ही शक्ति से चलने वाले हाथकरघे लग जायेंगे।

समिति ने इस अर्थों में मिलों के केवल कलाई विभाग में वृद्धि होने की सिफारिश की है। बुनाई विभाग का प्रतिवर्ष ५०,००० लाख गज की शक्ति से अधिक निस्तार नहीं होना चाहिए। आगामी ६ वर्षों में जो

१६,००० लाख गज अतिरिक्त बपड़े की आवश्यकता होगी उसके लिये ४। गज प्रति पौण्ड के हिसाब से प्रायः ३,६०० लाख पौण्ड अतिरिक्त सूत की आवश्यकता होगी। इस अतिरिक्त सूत के लिये १७.५ लाख अतिरिक्त तबूनों की आवश्यकता होगी। प्रदेन तबूने पर ४। औंस प्रति पफी सूत निरलेगा, जबकि कारखानों में प्रतिदिन २ पाकिया होंगी और वह महीने में २५ दिन काम करेगा। बरघा को बटलने और मिलों में अतिरिक्त क्वाट का प्रबन्ध करने में ६ वर्षों में ५० करोड ६० हजार होंगे।

हाथ करघों के लिये सूत की व्यवस्था

बरघा उद्योग को किस नूल पर दून दिया जाय इस सम्बन्ध में समिति का बन्ना है कि जब तक मिल निर्माता उद्योग क्षेत्र में अग्र रहेंगे तब तक उन्हें नैकल क्लॉट का नून भाव लेबर मूल देन को दिरार नता बिना जा सकता। बरघों को मूल प्रदान करने के लिये एक अखिल भारतीय सूत-उद्योग जन्म ले लेना उचित समझा हुआ है। समिति ने कहा है कि इस समय केन्द्रिय समन्वय अथवा अन्य संगठना द्वारा प्रिशाद पावनाय पर नून उत्पादन का जो उपस्था है उसे जानू रचना कीजिये। इसके साथ ही कुछ मन्त्रालय आक्षार दे सकते हैं। बरघा मिल का भाव नून चाहिए जैसा कि नून में ही सुदृष्टाव में नौला गत है और दूसरा मन्त्रालय के विरुद्धवनी में योला जने का प्रबन्ध है। समिति ने यह आशा प्रकृत की है कि सरकार नून उत्पादन वाले सहकार संगठना और प्रमुख सूत-उद्योग के मध्य मिली सम्बन्धों को समन्वय करने का यत्न करेगी।

मिलों द्वारा पर्याप्त परिमाण में रंगा हुआ सूत तैयार करने के प्रयत्न में समिति का बन्ना है कि उपयुक्त स्थानों पर सूत के रंगाद घर तालने का प्रस्ताव बहुत अच्छा है और उनको अनुमति दी जानी चाहिये। इन रंगाद घर का निरीक्षण रंगाद के निरीक्षण द्वारा हागा चाहिये। समिति ने कहा है कि हाथ बरघा उद्योग के उत्पादन और विक्री की व्यवस्था करने के लिये सरकारी संगठन समाज रहेंगे और इस सम्बन्ध में ये मन नही हो सकते।

समिति ने विफारिश की है कि पुणे-जोडा में काकोरि स्पिनगि एण्ड वीनिंग मिल द्वारा जो पराकप क्रिये जा रहे हैं उन्हीं के अनुसर हाथ बरघा उद्योग और क्लॉट मिलों का सहयोग होना चाहिये। पलाय में विचारों की व्यवस्था को जाने में रुई का उत्पादन काफी बढा है। अतः वहा क्लॉट मिलों और हाथ बरघों के मध्य राजना पूर्वक सम्बन्ध स्थापित किये जाने चाहिये।

समिति संगठित मिल के दुगाद अग्र का निर्धार करने के पक्ष में नही है। हाथ बरघा उद्योग के आगे नित और विक्री की समन्वय उपरूप में उपस्थित रहने के कारण मिला और हाथ बरघों को सम्बन्ध कर देन का प्रस्ताव समिति को बहुत उपनय आया है। यह विमो क्षेत्र के मिन रूप में पहा नैवार सूत का बरघा हाथ बरघा द्वारा तैयार कराई नैवार का लें तो इस क्षेत्र के हाथ बरघा को बढल कर उन्हें स्थान पर स्वाचालित अधिका शक्तिशालित कर लाने की अनुमति विरोध दे देनी चा हए। बटने में लगाये जाने वाले उन्नत करके प्रारम्भ से मिन अधिका उत संगठन के हागे को उत पर बरघा बदन करेगा परन्तु धीरे-धीरे उन्हें मिला और बुनकर के मध्य समन्वयित बगके बुनकर की मन्वयित बना देनी चाहिये।

उत्पादन सुरक्षित करने का प्रश्न

उत्पादन के क्षेत्र सुरक्षित करने के विषय में समिति का बहना है कि यह संभव है कि समस्त उद्योग हाथ बरघों के लिये भी सुरक्षित बना रहना चाहिये। परन्तु बरघों को बटलने की पहली अवधि अर्थात् १९६० तक रूमों और घेरे बुद्धि नहीं होनी चाहिये। पाच अर्थात् उसमें अधिक स्वाचालित बरघों वाले कारखाना में ही सुरक्षित बपड़े बनाने की अनुमति होनी चाहिये परन्तु उन्हें वह नून बना देना चाहिये कि १९६० के बाद उन्हें भी संगठित मिला के अन्तर्गत ही माना जायगा। बन्दर गाव में ही शक्तिशालित बरघा उद्योग केन्द्रित होने के कारण समिति की विफारिश है कि बन्दर सरकार को इस उद्योग में सम्बन्ध रहने वाले सभी मामलों की जाच करनी चाहिये और उनसे उत्पादन की अक्छा करने के लिये आवश्यक उपाय करने चाहिये। समिति का यह भी मत है कि हाथ बरघों पर मालमल बटन आदि के बनाने पर कोई प्रतिबन्ध नही होना चाहिये।

हाथ बरघा उद्योग सम्बन्ध विवेकगु के विषय में समिति का बहना है कि बलार टेक्स्टाइल इन्स्टीट्यूट (Bharat Textile Institute) ने हाथ बरघा में सुधार उत्पादों के आर तुगाद की प्रशा मिला में सा सुधार करने के उपाय बताये हैं। समिति का बहना है कि बनारस की इन्स्टीट्यूट और अन्य सम्न्वयों को बना तथा अन्य उपनस्था के सुधारने के लिये और ना प्रयत्न करने चाहिये। परन्तु इस बाप के लिए कोई नयी मन्वयिता संगठन नहीं बनाना चाहिये।

खादी के विषय में जांच

समिति ने खादी के विषय में विरोध जाच करने की विफारिश की है। समिति ने बरघा उद्योग के आकटे एक्विजि किये जाने पर भी जांच दिया है और आशा प्रकृत की है कि इसके लिये कोई स्थानी संगठन बना दिया जायगा। माधार्य बरघा को बढल कर उन्नत बरघे लगाने के लिये तो समिति ने आकटा का विरोध मकरत माना है। समिति ने यह भी विफारिश की है कि अब नये बरघे लगाने की अनुमति नहीं देनी चाहिये।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा बपड़े की किम्प अक्विजि करने की जो योजना चालू की गई है वैसी ही योजना हाथ बरघों के समस्त बपड़े पर लागू करने की भी समिति ने विफारिश की है।

समिति ने बरडा उद्योग के लिये एक मन्वयकार समिति स्थापित करने की आवश्यकता भी स्वीकार की है। इसके मुख्य धर्म इस प्रकार होंगे:—

- (१) हाथ बरघे बटलन की प्रगति का निरूपण करने रहना और क्लॉट मिला तथा सुधरे हुए शक्तिशालित बरघा उद्योग के मध्य सामन्वय स्थापित करना।
- (२) सरकार को समय-समय पर नून मलाह देते रहना कि क्लॉट के अतिरिक्त तबूण कटा आर किम्प प्रकार लगाना मन्वयित हागा, किम्पे उन्नतराद में वृद्धि होने और रदन मदन का प्रतिमाम जना हो जान के कारण बपड़े की जो माग बड़े बड़े पूरा जा सके।

कुछ विशेष आवश्यकताएँ—

★ ईमानदारी का व्यवहार हो।

★★ माल की किस्म अच्छी रहे।

★★★ निरिक्त समय पर माल भेजा जाय।

न्यूजीलैण्ड की उपेक्षा हम क्यों करें

भारत से अनेक प्रकार का माल भेजने का सुन्दर अवसर
[ले० श्री एन० केशवन्, प्रथम सचिव, व्यापारिक, भारतीय हाई कमिश्न, न्यूजीलैण्ड]

अब तक भारतीय निर्यातक अपना माल भेजने के सम्बन्ध में लिंगापुर, हांगकांग और जापान का जाते रहे हैं। वस्तुओं को गोलार्ध के एक कोने में स्थित न्यूजीलैण्ड की प्रायः उपेक्षा ही होती रही है। परन्तु अब यदि इधर भी ध्यान दिया जाय तो भारतीय वस्तुओं को खपाने का एक नया क्षेत्र प्राप्त हो सकता है।

न्यूजीलैण्ड में जनसंख्या बहुत कम है। वहाँ जिनके मजदूर हैं वे सभी फसलों के लिये आवश्यक हैं। मजदूरों को कर्मों के कारण बड़े उद्योग स्थापित नहीं किये जा रहे हैं। ऐसी दशा में न्यूजीलैण्ड विदेशों से ही उपभोग का सामान मंगता है। भारत इसमें बहुत बड़ा भाग ले सकता है।

न्यूजीलैण्ड में भारतीय माल को खपाने के लिये भारतीय निर्यातकों को कुछ विरूप बातों पर ध्यान देना चाहिए। प्रस्तुत लेख में इन पर भी प्रकाश डाला गया है।

व्यक्तिगत सम्पर्क बनाने की आवश्यकता

व्यापार बढ़ाने के लिये व्यक्तिगत सम्पर्क कितना महत्वपूर्ण सिद्ध होता है यह बताने की आवश्यकता नहीं है। विदेशों को माल भेजने वाले भारतीय उद्योगकार और व्यापारी यह बताने के लिये यूरोप, अमेरिका और जापान को प्रायः ही जाते रहते हैं कि वहाँ उनका माल किस प्रकार अधिक परिमाण में खप सकता है। इन देशों के श्रावत निवन्धनों के कारण उन्हें अनेक बातें बची निराशा भी हुई हैं। इस न्यूजीलैण्ड की यह दशा है कि यहाँ बहुत कम उद्योग हैं। अतः आयात करने वाले व्यापारी माल बेचने के लिये प्रायः ब्रिटेन और यूरोप के देशों को जाते रहते हैं, जिससे वहाँ से माल मगाने के लिये एजेन्सियों, आदि का प्रबंध किया जा सके। न्यूजीलैण्ड ब्रिटिश उपनिवेश होने के कारण यहाँ के बहुत से निवासियों के मूल परिवार अब भी ब्रिटेन में ही निवास करते हैं। पारिवारिक सम्बन्धों का यह आकर्षण या उन्हें ब्रिटेन की ओर खिंचता है। ब्रिटेन जाने के लिये ये व्यापारी मार्ग में अमेरिका भी जाते हैं, जिससे उन्हें नया के बाजारों का भी पता चल जाता है। परन्तु भारत होकर तो शायद ही कोई व्यापारी जाते होंगे। अतः भारतीय व्यापारियों को इस स्थिति में सुधार करने का पल भरना चाहिये।

भारत के निर्यातकों ने अब तक यह नहीं समझा है कि न्यूजीलैण्ड में भारतीय माल खपाने का कितना सुन्दर क्षेत्र है। हो सकता है कि न्यूजीलैण्ड संसार के एक कोने में होने के कारण यहाँ के बाजारों के विषय में भारतीय निर्यातकों को पता ही न हो।

यह भी हो सकता है कि यहाँ के बाजारों में ब्रिटेन का एकाधिकार मानकर ही यहाँ कोई व्यापारी अपना माल भेजने का विचार न करते हों। परन्तु बात ऐसी नहीं है। प्रस्तुत लेख में न्यूजीलैण्ड के बाजारों की अवस्था और यहाँ माल खपाने की विधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला जाता है।

कम जनसंख्या का प्रभाव

व्यापारिक आंकड़ों के अध्ययन से निश्चित होता है कि १९५३ में न्यूजीलैण्ड में जो माल विदेशों में आया उसका औसत प्रति व्यक्ति पीछे ८० वीं पाँच वार्षिक पड़ा है। २० लाख निवासियों के छोटे से देश में यह औसत बहुत अधिक है। और यह बात केवल १९५३ की ही नहीं है बल्कि

गत ५ वर्षों में भी यही दशा रही है और १९५४ में भी यही रहने की आशा है ।

संसार में ऐसे बहुत कम देश हैं जहां देशी उत्पादन में उदारतापूर्वक आयात करने की नीति को प्रभावित न किया हो। न्यूजीलैंड भी एक ऐसा देश है। जनसंख्या कम होने के कारण यहां विशाल परिमाण पर उद्योग चलाना लाभप्रद नहीं होता। यहां की सरकार तथा औद्योगिक जनता दोनों ही भली प्रकार समझते हैं कि आत्मनिर्भर होने का प्रयत्न यहां केवल अर्थशास्त्रिक ही नहीं होना चाहिए बल्कि यहां विभिन्न कारणों के लिए उपलब्ध श्रम शक्ति का सुव्यवहार भी विगड़ जायगा। न्यूजीलैंड में कृषि और उसके सम्बन्ध उद्योगों पर बल दिया जाता है। मुख्यतः मांस और दुग्ध उत्पादनों के निर्यात द्वारा ही यह देश विदेशों से घन कमाता है। रोजा में भशाना का अत्यधिक प्रयोग किया जाता है। फिर भी रत्नों के लिए मजदूर उपलब्ध करना एक समस्या बना रहता है। ऐसी दशा में यहां जो थोड़ा से कारखाने खोले गये हैं उनके कारण रत्नों के मजदूर भाग कर जासखाना में श्राने लगे हैं जिससे रोजा का कार्य और भी बटिन होने लगा है। जाति विशेष के लोगों को ही चुन चुन कर यहां ला बसाने की नीति के कारण यह स्थिति सुधरने नहीं पाती। इस प्रकार मजदूरों की यह कमी यहां कारखाने खोले जाने में भारी बाधा उत्पन्न कर रही है। इसके अतिरिक्त अन्य कारण भी ऐसी ही बाधाएं डाल रहे हैं।

ऊपर यह बताया जा चुका है कि न्यूजीलैंड अपने कार्यों के उत्पादनो के निर्यात पर ही बहुत कुछ निर्भर रहता है। इन उत्पादनों को जो देश उनसे लेते उन्हीं से वह अपने उपयोग की वस्तुएं मगानेगा। इन देशों के विभिन्न सभसे आगे है, जो न्यूजीलैंड का ८० प्रतिशत माल लेता है। परन्तु न्यूजीलैंड की सरकार केवल ब्रिटेन से ही वधा रहना नहीं चाहती। वह अमेरिका, कनाडा, देशों, भारत, पाकिस्तान, लडाख इत्यादि में भी अज्ञात माल खपाना चाहती है। इनके ध्यान में रखते हुए भारत को भी अपना माल न्यूजीलैंड में मगाने की आशा रखनी चाहिये।

उदात्तापूर्वक आयात नीति

न्यूजीलैंड की आयात नीति अत्यन्त उदारतापूर्वक है। भारत ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल का देश होने के कारण उसे यहां बाहर के अन्य देशों की अपेक्षा प्राथमिकता प्राप्त है और इस कारण उम माल भेजने की अपेक्षा कृत अधिक सुविधाएं मिलनी हैं। चूंकि भुगतान स्थलिक में होता है, इन कारणों भी भारत का यहां शरार करने में सुविधा रहेगी। यहां की बहुत सी प्रसिद्ध फर्मों के पास पर्याप्त स्थलिक पाठान होने के कारण वे संसार के निम्नो भी देश में माल खरीद सकते हैं। स्ट्रिज देश के विरुद्ध यहां कोई आपत्तनी नहीं है। उधर यहां वाला न वह भागना में प्रवृत्त की है कि यदि माल अस्वास्थ्य और मत्ता हो तो उसे ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल में बाहर के देशों से भी खरीदा जाय। वास्तव में वह एक खरीदार देश होने के कारण वह अपना लाभ देखकर किसी भी देश से माल खरीदने को स्वतन्त्र है। ऐसी वस्तुओं की संख्या बहुत कम है किन्तु आयात के लाइसेन्स नहीं

दिये जा सकते। इन्हें छोड़ कर अन्य सब वस्तुओं का आयात किया जा सकता है और खरीदार को पसंद आने पर उन्हें यहां भली प्रकार बेचा जा सकता है। परन्तु इस सम्बन्ध में यह भी ध्यान रखना चाहिये कि यहां वाले चुनो हुई वस्तुएं लेते हैं। उद्योगों की वस्तुओं का श्रव भी पर्याप्त आयात हो रहा है। अतः किसी भी प्रकार का माल यहां लाकर पटक देने से कोई लाभ नहीं होगा। जब यहां माल की कमी थी तब भी लोग अस्वास्थ्य माल ही खरीदते थे और यहां माल लेने की अपेक्षा बिना बिना रह जाना पसंद करते थे।

लोगों की क्रयशक्ति और रुचि दोनों ही अच्छी होने के कारण व्यापार अच्छा होता है। अतः ईमानदारी और व्यापारिक सिद्धान्तों का मान बहुत ऊंचा है। मुख्य चुकता होने में कोई देरी नहीं होती। आर्डर केवल इसी व्यापार पर दिये जाते हैं कि माल नमूने के विरुद्ध अनुकूल दिया जायगा। न्यूजीलैंड के बाजारों में प्रतिस्पर्धा बड़ी होने के कारण व्यापार में छद्मती सी वेदमानी अथवा लापरवाही होते ही आयातक दूसरे देशों से माल लेने लगते हैं। भारतीय निर्यातकों को इन बातों का विशेष ध्यान रखना होगा।

न्यूजीलैंड के साथ व्यापार होने में सबसे बड़ी अशुविधा जहाजों की है। भारत और न्यूजीलैंड के बीच जहाज बहुत कम चलते हैं अतः कमी कमी तो माल भेजने में ६ महीने का विलम्ब हो जाता है। इस कारण भारत के निर्यातकों को अपना माल इस प्रकार भेजने का प्रबन्ध करना होगा कि वह समय पर पहुंचता रहे। ऐसा न होने पर न्यूजीलैंड के व्यापारियों को बड़ी अशुविधा होती है और उनकी माल में बड़ा लगता है।

व्यापार की वर्तमान अवस्था

ऊपर कुछ ऐसी बातें बताई गई हैं जिनकी ओर से भारतीय व्यापारियों को सावधान रहने की आवश्यकता है। इसका यह आशय कदापि नहीं कि भारतीय व्यापारी इनका ध्यान नरहा रखते। यहां श्रव भी बहुत ही भारतीय वस्तुएं आ रही हैं और उन्हें भेजने में हमारे निर्यातकों ने सन्नाह और व्यापार के क के विद्वान्तों का निर्वाह किया है। जहां भी कोई कमी रही है तो वह केवल वैसी सावधानी न करने के कारण जैसी कि निर्मात हाने वाले माल के दिग्घ में करना चाहिये। वैकिंग अथवा निर्माण में की गई लापरवाही के कारण न्यूजीलैंड के निवासी यह सम्भने लगते हैं कि उन्हें उमण की कोशिश की जा रही है। कई बार ऐसा हुआ है कि भारत में बनी वस्तु या तो उच्चकोटि की परन्तु उनका वैकिंग खपान होने के कारण ही उनमें प्रति न्यूजीलैंड वाली की भावना बिगड़ गई। यह भी ध्यान रखना चाहिये कि न्यूजीलैंड में इस कार्य के लिये आदमी उपलब्ध नहीं है कि विदेशों में आये हुए माल को विक्री के लिए दुकान में रखने से पूर्व किंग ठीक कर लिया जाय। थोक व्यापारी प्राय ही माल को ज्यों का वस्तु कक्षा दुकान खुदरा व्यापारियों को दे देता है और वह भी नहीं देखता कि उमने भीतर माल कैसे है। वह साधारणतः वह

विश्वास कर लेता है कि माल अच्छी अवस्था में होगा। यदि माल सहाय निकलता है तो सुन्दर व्यापारी आकर थोक व्यापारी से उसकी शिकायत करता है और फिर बाद में उसको चरिपूर्ति कर देने से भी उसे धाम्ये के लिये बाहक बनाये रखना कठिन हो जाता है। अतः पहले से ही अच्छा माल भेजना अत्यन्त ही होगा।

माल खपने की सम्भावना

न्यूजीलैण्ड में बहुत प्रकार के माल खप सकते हैं। बपटा धातु का मामान, जूट की वस्तुएं, चाय, किरमिच, तिरपाल, दस्तकारी की वस्तुएं, रेशमी रुमाल, मसाले, तेल, मीना, आरिपल की चट्टाहवा, कालीन आदि इनमें उल्लेखनीय है। इन सभी को यहाँ अच्छी मांग हो सकती है। विना दूनी पर न्यूजीलैण्ड सरकार का नियन्त्रण है अतः से कुछ में तो भारतीय माल की बहुत अच्छी खप हो सकती है।

व्यापार के मुख्य केंद्र ये नगर हैं—आकलैण्ड, वेलिंगटन, वारस्टर्च और ड्यूनेडिन। इन सभी में चाय बालायात का सुन्दर प्रथम है। सिडनी से वायुमन द्वारा चलकर वेलिंगटन होते हुए आकलैण्ड तक जा सकते हैं और फिर अन्य नगरों को भी सुविधापूर्वक पहुँच सकते हैं। आकलैण्ड से सुदूर पूर्व और अमेरिका के लिये भी वायुमन जाते हैं। जो भारतीय व्यापारी सिंगापुर, हांगकांग और जापान जाया करते हैं वे यदि आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड भी आया करें तो इससे बड़ा लाभ हो सकता है।

न्यूजीलैण्ड आन के इच्छुक व्यापारियों के लिये नीचे लिखी जानकारी बड़ी उपयोगी सिद्ध हो सकती है—

१. प्रवेश पत्र—इनका ले लेना आवश्यक है। ये न्यूजीलैण्ड सरकार के बन्दर्त स्थित व्यापार अभिन्नर से प्राप्त हो सकते हैं।

२. विनियम—न्यूजीलैण्ड में पौषड चलता है जो मूल्य में स्टॉर्लिंग के बराबर होता है।

३. होटल—सभी होटलों का यहाँ सरकार द्वारा वर्गीकृत्य कर दिया गया है। सब से महंगे होटल में प्रतिदिन २ पीण्ड १० शिलिं से अधिक व्यय नहीं होगा। इसमें टटने के साथ भोजन का व्यय भी सम्मिलित है।

४. इनाम—होटलों में नौकरों को इनाम देने का साधारणतः प्रोत्साहित नही किया जाता।

५. पाण दिनों का सप्ताह—सप्ताह में केवल ५ दिन अर्थात् सोमवार से शुक्रवार तक व्यापार होता है। अतः यहाँ रविवार की रात को अथवा सोमवार को प्रातः पहुँचना चाहिए, फिर शनिवार को यहाँ से प्रस्थान किया जा सकता है।

६. व्यापार के सर्वाधिक दिन—जून से नवम्बर तक के ४८ दिन व्यापार के लिये सर्वोत्तम रहते हैं।

कुछ अन्य उपयोगी जानकारी

— यहाँ बड़ी भी सम्भव हो मान के नमूने सदा साथ रहने चाहिए। परीवार इन नमूनों को बाद में भेजे जाने वाले माल से तुलना करने के लिये माप ही ले लेते हैं।

डुलाई माडा महित मूल्य, माल देने की तारीख आदि का बताना आवश्यक है। वार्षिक देने के लिये जहाजी क्षमपिनियं में पूछना कर लेनी चाहिए।

न्यूजीलैण्ड के ये पात्र बैंक प्रमुप हैं—(१) टी बैंक आफ न्यूजीलैण्ड, (२) टी नेशनल बैंक आफ न्यूजीलैण्ड, (३) टी आस्ट्रेलिया एण्ड न्यूजीलैण्ड बैंक, (४) टी बैंक आफ न्यू साउथ वेल्स और (५) टी कमर्शियल बैंक आफ आस्ट्रेलिया। जो व्यापारी इन बैंकों का उल्लेख करेंगे उनकी छात्र के विषय में क का मत रहे जाने की आशा है।

हाथ करवा उद्योग को सुधारने के सुभाव [४४ ५२६ का शोशाम]

इस समिति में ऐसे व्यक्ति रणे जाने चाहिये किन्हें आर्थिक तथा प्रशासनिक मामलों का अन्वया ज्ञान हो। इसका अर्थव्यवहोर्ड योग्यता, ज्ञान, अनुभव और सच्चाई के लिये प्रसिद्ध नै। होना चाहिये।

समिति ने अखिल भारतीय हाथ करवा बोर्ड द्वारा किंये गय कार्य की प्रशंसा की है और सुभाव दिया है कि उसे और भी विस्तृत एव शक्तिशाली कर देना चाहिये बितते वह शक्तिचालित करये लगाने के लिये आवश्यक जानकारी, प्रोत्साहन आदि प्रदान कर सके। समिति ने यह निष्कर्ष भी की है कि प्रत्येक राज्य में एक समठन बनाया जाना चाहिए जिन पर हाथ करवा, उन्नत हाथ करवा और शक्तिचालित करवा उद्योग

का दाखिल रहे। इस का भार एक मन्त्री पर रहना चाहिए और ये सब केवल एक ही विभागीय अधिकारी के अधीन रहने चाहिए।

समिति ने बनारस के हाथ करवा उद्योग को विशेषतः जाय करने की सिफारिश की है। यदा की कारीगरी बड़ी प्राचीन और जगद्विगीद है। यदि इसे आधुनिक आचार पर समठित कर दिया जाय तो इससे अधिक लोग को काम मिलेगा और विदेशी निमित्तय भी अधिक परिमल्यु में शक्ति किया जा सकेगा। समिति ने अन्त में कहा है कि यदि सहकारी आचार पर समठित करके उद्योग को विराम दिया जाय तो उच्चतम प्रगतन्त्रीय आदर्श के अवसर जोयन बलताया जा सकेगा।

★ नये उद्योग चलाना और नयी वस्तुएं बनाना अःत्मनिर्भरता की कुंजी है ★

औद्योगिक इतिहास में युग परिवर्तन

राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम की स्थापना

गत अक्टूबर मास में कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम की रजिस्ट्री हुई है। भारत के औद्योगिक इतिहास में यह एक युग परिवर्तनकारी घटना रहेगी। देश में नये उद्योगों का तेजी से विकास करने और वतमान उद्योगों में नयी वस्तुओं का उत्पादन कराने की ओर यह निगम विशेष यत्नशील रहेगा।

निजी औद्योगिकों को मिला-जुटा कर निगम उनके द्वारा भी नये उद्योग चलवाने का यत्न करेगा। उत्पादन वस्तुओं के उद्योग चालू करने को निगम प्राथमिकता देगा।

जो नये उद्योग जम जायेंगे उन्हें वाद को निजी औद्योगिकों के हाथ बेच दिया जायगा और इस प्रकार प्राप्त धन की सहायता से नये उद्योग चालू किये जायेंगे। निगम के उद्देश्यों और कार्यों आदि पर प्रस्तुत लेख में संक्षेप में प्रकाश डाला गया है।

निगम की स्थापना का उद्देश्य

गत २० अक्टूबर १९५४ को राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम (National Industrial Development Corporation) की भारतीय कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत रजिस्ट्री हो गई। इसके बाद २२ अक्टूबर को निगम के डाइरेक्टर्स के बोर्ड की बैठक हुई। देश के औद्योगिक इतिहास में ये दोनों युग-प्रसन्न घटनाएँ रहेगी। इस प्रकार यह निगम बनकर भारत सरकार में पहली बार देश का औद्योगिक प्रगति को तीव्र करने के लिये एक और नए कदम उठाया है। इस निगम की स्थापना बड़े ही उपयुक्त समय पर हुई है। दूसरी पक्षों में योजना में इसका महत्वपूर्ण भाग रहेगा, क्योंकि इसमें औद्योगिकीकरण और अधिक बल दिये जाने की आशा है।

गत वर्ष जब यह अनुभव किया गया था कि कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में देश का औद्योगिक विकास पिछड़ गया है तो इस प्रकार का संगठन स्थापित करने का विचार उपनन्द हुआ था। यह आशा की गई थी कि उपभोग का माल तैयार करने वाले उद्योगों का बाहर से बोर्डों सहायता मिल जाने से ही निजी कारणों से देश की आवश्यकता पूर्ण कर सकेंगे। परन्तु महत्वपूर्ण और आध्यात्मिक उद्योगों के एक विशाल क्षेत्र का विकास करने के लिये सर्वथा मित्त प्रकाश की आवश्यकता नहीं प्राप्त कर सकते थे। हाँ, वे अपने अनुभव और ज्ञान द्वारा तथा अपनी संयत्त लभान्वय महायत्ना कर सकते थे। निगम की स्थापना की प्रेरणा देने वाला मूल निष्कार यही

था कि देश में उद्योगों की स्थापना करने के लिये निजी औद्योगिक क्षेत्र के नेताओं का सहयोग लिया जाय।

नये उद्योग और नये उत्पादन

राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम का स्थापना देश में नये उद्योग स्थापित करने और नये उत्पादन कराने की ओर हाँ देगा। इस सम्बन्ध में वह आवश्यक पहल करेगा और आवश्यक दिनांक तथा शर्तों का विचार करके तैयार करने की दृष्टि से नए कारखानों की योजना बनायेगा। वह लक्ष्मी की लुग्ना, रासायनिक पदार्थों का बड़े आकार के औद्योगिक कच्चे माल के उत्पादन का भी प्रबन्ध करेगा, जिनमें देश की अधिक आवश्यकता लुट्ट हो सके।

सरकार द्वारा स्थापित संगठन से अनेक लाभ होते हैं। चूंकि निगम के डाइरेक्टर्स में देश के प्रमुख औद्योगिक, इंजीनियर, वैज्ञानिक और सम्बद्ध मन्त्रिमण्डलों के प्रतिनिधि हैं, इस कारण यह समस्त क्षेत्रों के सम्बन्ध में प्रारम्भिक शैलिक सम्बन्ध करने, योजना बनाने और कारखानों की संरचना तैयार करने के लिये नईथा उपयुक्त है। अधिमात्र अन्वय-यंत्रों में किसी एक रूपरेखा का सम्बन्ध अन्य क्षेत्रों के कारखानों की रूपरेखा में भी होता है। तब निगम सरकार को ऐसे प्रयत्न की रूपरेखा प्रदान कर सकेगा जिसमें सभी क्षेत्रों में सम्बन्ध रखने वाले प्रयत्न का जाय। इस समय जो सधन उपलब्ध है उनकी सहायता से निगम नये उत्पादन कर

संवेग। सरकारी संगठन होने के कारण वह विभिन्न कारखानों के उत्पादनों का एकीकरण भी कर सकेगा।

मुख्य कार्य

वैचारिकी ज्ञाने वाली योजनाओं को अमल में लाना ही निगम का सब से महत्वपूर्ण कार्य होगा। उसका मुख्य उद्देश्य एकीकृत ढंग से श्रौर तेजी के साथ देश का औद्योगीकरण करना है। अतः निगम को अपनी योजनाएँ सर्वोत्तम उपलब्ध साधनों द्वारा अमल में लानी होंगी। यदि किसी कारखाने की योजना ऐसी है कि उसे रणनीति रूप से सरकार द्वारा ही चलाया जायगा तो उसे सम्बद्ध मंत्रालय, जैसे उत्पादन, रक्षा इत्यादि के द्वारा कार्यान्वित किया जायगा। जब वह निश्चय करना सम्भव न होगा कि कोई कारखाना सरकार द्वारा चलाया जाय अथवा जनता द्वारा तो स्वयं निगम उसे चालू कर सकेगा। इसे चलाने के लिये एक ऐसी कंपनी बनाई जा सकेगी जिसके सभी हिस्सों का स्वामी निगम होगा। उन मामलों में ऐसा करना ठीक भी होगा जिनमें बाद की सुविधाजनक अथवा आने पर हिस्सा जनता को हस्तांतरित कर देने का विचार हो। कारखानों को चालू करने का एक दूसरा उपाय यह हो सकता है कि निम्नित्त श्रुतियाँ में जनता का सहयोग प्राप्त कर लिया जाय। जब निजी औद्योगिकों से शैक्षिक अथवा वस्तु-व्यापारिक सहानुभूति लेने की आवश्यकता हो तो यह प्रणाली बड़ी उपयुक्त होगी। वह महापणा सम्बन्धित प्रश्न प्राप्त करने के लिये कारखानों का पूजा में, मा निजी औद्योगिकों का भाग होना आवश्यक होगा। ऐसा करने से सरकार को भी बच स्पष्ट लगाना पड़ेगा। इन कारखानों के लिये उदाहरण सम्बन्धित वस्तुओं पर देशी निम्नित्त के संगठन का रूप उन में निजी अधीनता के भाग के रूप निर्धार रहेगा।

कपड़ा और जूट उद्योगों को विशेष चर्या

निगम निजी औद्योगिकों को नये कारखाने चालू करने के लिये प्रोत्साहित कर सकता है। इसके लिये वह उन्हें (१) अर्थ दे सकता है, (२) विशेषकर सर्राफ़ करता है, (३) नये मशीनें किये जाने वाले सभी अथवा कुछ हिस्सों को पगिद सकता है और (४) उपयुक्त पारमंत्रिक के नियम में गारण्टी दे सकता है। इस पारमंत्रिक के रूप में वह निजी औद्योगिकों को मुफ्त हिस्से अथवा मजदूरी में किमी तिथि के बाद मुनाफे का कुछ अंश दे सकता है। वह ध्यान रहे कि कम बवाई गई किमी भी प्रणाली द्वारा स्थापित नये गये गठे कारखानों को चलाने के लिये प्रायः ही अन्य कारखानों द्वारा कुछ आवश्यक उत्पादन करना होगा। इसके लिये निगम इन कारखानों को उपयुक्त किमी भी उपाय में सहानुभूति दे सकता है। किसी समय किसी विशेष उत्पादन के विकास के लिये वर्तमान सरकारी अथवा गैर सरकारी कारखाना की उत्पादन शक्ति का विकास मान करना होगा। इन अर्थशास्त्रों में निगम या तो उन कारखानों को महायत्ना देगा या उन में पूँजी लगायेगा और सम्बद्ध कार्यों की कार्यशैली को मिलावे के लिये व्यापक सम्मेलित करायेगा। यदि निजी औद्योगिकों द्वारा किसी उद्योग की योजना बनाई जायगी परन्तु उसके बनाने का भाग न हो तो उसमें लगाने के लिये बचपा होगा और न उनमें ही औद्योगिक वित्त निगम (Indus-

trial Finance Corporation) अथवा प्रस्तावित पूँजी लगाने वाले निगम (Investment Corporation) से प्राप्त कर सकेंगे तो वह निगम उनको धूलू आदि देकर सहायता देगा अथवा इसके लिये सरकार ने उनकी सत्कारिता कर देगा। कपड़ा और जूट उद्योगों का नये तिर्रे के संगठन करने के लिये विशेष महायत्ना देने में निगम सरकार की एजेंसियों के रूप में कार्य करेगा। यदि सरकार किसी अन्य उद्योग को इसी प्रकार महायत्ना देने का निश्चय करेगी तो उसे भी इसी प्रकार निगम सहयोग देगा।

उत्पादक वस्तुओं के उद्योग

राष्ट्रीय औद्योगिक निगम निगम देश के औद्योगीकरण को किम प्रकार तेज कर सकेगा उनका मुख्य आभाष इसी बात से हो सकता है कि उनमें बहुत से नये उत्पादनों के उद्योग चालू करने पर वन दिशा है। हममें भी उसने विशेष वस्तुओं के उत्पादन को प्राथमिकता दी है। इस सम्बन्ध में जागरण हो रही है उनमें उत्पादन वस्तुओं के उद्योगों को अधिक महत्त्व दिया गया है। ये उद्योग इन प्रकार हैं:

१. निम्न उद्योगों और उद्देश्यों के लिये मशीनों और उपकरणों का निगम —
 - निर्माण कार्य, भूट, कपड़ा, चीनी, कागज, मीमेण्ड, पारमंत्रिक पदार्थ, छद्दा, पवित्र और कर्म आदि की मशीनें।
 २. ताइ मिश्रित धातुएँ लोहे मेंगनीज और लोह मशीनें।
 ३. मशीननिगम।
 ४. तांबा, जस्ता और अन्य असोह धातुएँ।
 ५. डीजल एजन्स—बहावों, रेलगाडिश्न और बिजली उत्पादन करने के।
 ६. भारी रासायनिक पदार्थ।
 ७. रासायनिक खाद।
 ८. बोक की मशी और तारखील के उत्पादन।
 ९. मीथेन कार्बोहाइड्रेट।
 १०. धारन की मशीनें।
 ११. कागज, ब्रह्मवरा कागज, रेशन आदि के बनाने में काम आने वाली मशीनों की सुधरी।
 १२. औषधियाँ, टिपिनिंग और हाइमोन।
 १३. एक्मरे और डाइक्री के उपकरण, और
 १४. कृता गाता, अनापक गाता आदि।
- औद्योगीकरण की उपयुक्त योजना कार्यान्वित करने के लिये निगम ने अन्तर्देशीय सञ्चयति की एक इञ्जीनरी कम को भारत में अथवा एक कार्यालय कोलने के लिये निर्माणात्त किया है। इस कल्प की सेवाएँ केवल निगम के लिये ही नहीं बल्कि निजी उद्योगों को भी उपलब्ध रहेगी। इस कल्प का भारत में कार्यालय खुल जाने में ऐसी ही औद्योगिक सहायक देने वाली विशेषी कल्प की स्थापना को प्रोत्साहन मिलेगा। निगम तीन बार श्रुतपरी रञ्जोनिया का एक केन्द्र भी बनायेगा जो उसे सभी मामलों में परामर्श दिया करेगा। ये निगम को उपयुक्त उद्योग चुनने में भी सहायता दिया करेगा।

अन्य संगठनों से तुलना

राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम के कार्य औद्योगिक वित्त निगम तथा औद्योगिक पूंजी निगम से सर्वथा भिन्न हैं। इस निगम तो केवल अग्रश्रम देने वाला संगठन है जो केवल पहले में चालू उद्योग का हा सहायता देता है और जो साधारण उम से ऋण की सुरक्षा का आग्रहान्वन द सकते हैं। वित्त निगम के लिये नये उद्योगों का सहायता देना बाधन है। नया प्रस्तावित पूंजी निगम साथ-साथ ऋणों के अतिरिक्त अन्य प्रकार की वित्त का प्रबंध करेगा। यह निगम भी व्यापारिक आधार पर चालू किया जायगा। अतः यह भी अपने साधना का एक छोटा अंश ही किमा एक उद्योग में लगा सकेगा। इसका अर्थ यह है कि वह उन नये उद्योगों का सहायता नहीं कर सकेगा जिन्हें आरम्भ में भाग पूंजी का आवश्यकता होगी। राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम का उद्देश्य इन दोनों निगमों से भिन्न है। इस निगम के उद्देश्य नये उद्योग चालू कराना अथवा नये उत्पादन कराना है। यह कार्य उपकरण प्रदान करने, विभिन्न कारखानों में एकीकरण उत्पादन कराने किया जायगा। इन कार्यों में धन लगाने की भा आवश्यकता होगी परन्तु केवल धन लगाना ही निगम का मुख्य कार्य नहीं होगा। इस सम्बन्ध में यह सदा ध्यान रखना चाहिये कि यह निगम उन साधनों का उपयोग करके औद्योगिककरण करेगा जो साधारणतः निजी औद्योगिकों का उपलब्ध नहीं होते। पूणतः सरकारी स्वामित्व और निम्नतरण वाली सहायता के कारण यह विभिन्न कारखानों के विकास और उत्पादन कार्यक्रमों का एकीकरण कर सकेगा। इसे बोर्ड भी निजी निगम नही कर सकता। डायरेक्टरी के रूप में देश के प्रमुख औद्योगिकों का सहयोग मिल जाना सरकारी का सान्नाय बनाने में न केवल उनके ज्ञान, अनुभव आदि का नाम प्राप्त हो जायगा बल्कि इन योजनाओं का पूर्णतः अथवा आंशिक रूप में उनका सहयोग द्वारा विधायित्व होना भी सम्भव हो सकेगा। दूसरे शब्दों में, सरकार आवश्यक

वस्तुओं के उत्पादन में निजी साधना को लगवा सकेगी। इस प्रकार की पहल करने सरकार अपने पाम से एक सीमित परिमाण में पूंजी लगाकर निराल परिमाण पर पूंजी लगवा सकेगी। हमारे अतिरिक्त राष्ट्रीय औद्योगिक विकास को योजनासुराज निजी उद्योगों को मिलाकर एक करने में निगम एक शक्तिशाली साधन प्रमाणित हो सकेगा।

यहां यह बात भी स्मरणीय है कि निगम के जितने भी औद्योगिक ऋणकर्ता होंगे वे सरकार द्वारा मनोगत बिये जायेंगे। उनके प्रत्यक्ष श्रित उम प्रकार के नहीं होंगे जैसे कि प्रायः हा इस शब्द का भाग निहित होते हैं।

उद्योगों को बेचकर नये उद्योग

नये प्लान जान ध्यान उद्योगों का बाढ़ में निजी आशागिर्तों का वचन देने के विपरीत में सरकार की बोह पक्की पूर्व निश्चित नीति नही है। यह तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार निर्धारित की जायगी। सरकार का मुख्य उद्देश्य निगम द्वारा लगाई गई पूंजी से आधुनिकता लाभ उठाना होगा। यह लाभ अधिकाधिक नवीन उद्योगों के रूप में होगा। जम करने वाले उद्योगों को बेच कर नये उद्योगों के लिये धन प्राप्त हो सकेगा। यदि इसके निम्ने अन्य रीतियों में साधन प्राप्त हो सके ता सरकार उन्हें भी अपनायेगी।

अभी राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम की रिकवर्टी १ करोड़ ६० की अधिकृत पूंजी और १० लाख ६० की अदा हुई पूंजी न की गई है। यह पूंजी अमेरिका न बहुत थोड़ी है आर सम्भव है इस निगम के पूरे धन का उचित आभास न मिले। परन्तु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि निगम उद्योगों का विकास करने के लिये केवल अपने इस्वी की पूंजी पर ही निर्भर नही होगा। जब योजनाएँ तैयार होगी और उन्हें अमल में लाने का प्रणाली निर्धारित हो जायगा तो निगम सरकार में आवश्यक धन प्राप्त करेगा।

भारत सरकार के वारिण्य और उद्योग मन्त्रालय का अंग्रेजी मासिक पत्र दी जर्नल आफ इण्डस्ट्री एण्ड ट्रेड

प्राहक बनने, विज्ञापन देने अथवा गजसगी लेने के लिये लिखिये —

प्रकाशन सम्पादक, वारिण्य और उद्योग मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

“आयोजन के प्रति गतिशील
दृष्टिकोण रखा जाय।”

देश के विकास कार्य को आगे बढ़ाने के यत्न

राष्ट्रीय विकास परिषद की बैठक द्वारा सिंहावलोकन

राष्ट्रीय विकास परिषद की जो बैठक अभी गत मास नई दिल्ली में हुई है उस में देश के विकास कार्य को आगे बढ़ाने के लिये कुछ नये निश्चय किये गये हैं। केन्द्र तथा राज्यों के मध्य इस सम्बन्ध में घनिष्ठतम सहयोग करने के लिये कुछ राज्यों के मुख्य मन्त्रियों और योजना कमीशन के सदस्यों को मिलाकर एक स्थायी समिति नियुक्त कर दी गई है, जिसकी वर्ष में ६ बार बैठकें हुआ करेगी। सम्पूर्ण विकास परिषद की वर्ष में दो बार बैठकें हुआ करेगी।

प्रधान मन्त्री श्री नेहरू ने कहा कि यदि डाक्टरों पढ़ने वालों को तब डियां दी जाय जब वे एक वर्ष तक गांवों में काम कर लें तो बहुत अच्छा होगा।

बैठक में योजना के अनुसार हुए कार्य पर विचार होते समय राज्यों के मुख्य मन्त्रियों ने अपने विचार प्रकट किये। उन्होंने ग्रामों में कार्य करने वाले कर्मचारियों की शिक्षा पर जोर दिया। इस सम्बन्ध में बताया गया कि ५-६ हजार ग्राम कर्मचारियों को शिक्षा दी जा चुकी है। इसके अतिरिक्त महिलाओं में विकास कार्य के लिये रुचि उत्पन्न करने के लिये गांवों में महिला समितियां बनाने की योजना है।

(१)

विकास परिषद के तीन उद्देश्य

राष्ट्रीय विकास परिषद हमारे प्रधान मन्त्री के शब्दों में ऐसा समूह है जिसके द्वारा राज्य सरकारों और केन्द्रीय सरकार के मध्य राष्ट्रीय विकास के समस्त कार्यों के विषय में घनिष्ठतम सहयोग रहता है। परिषद के तीन उद्देश्य हैं :—

- (१) पंचवर्षीय योजना के समर्पण में राष्ट्र के प्रयत्न और साधनों को सुदृढ़ और सलम बनाना।
- (२) समस्त आस्थापक देशों में सामान्य अर्थ नीतियों को प्रगति देना, और
- (३) देश के समस्त भागों के समुचित और त्वरित विकास को सुनिश्चित करना।

परिषद के अध्यक्ष प्रधान मन्त्री स्वयं हैं और 'क', 'ख' और 'ग' श्रेणियों के राज्यों के मुख्य मन्त्री और योजना कमीशन के सदस्य इसके सदस्य

हैं। गत ६ नवम्बर १९५४ को नई दिल्ली में परिषद की बैठक हुई, जिसमें अनेक महत्वपूर्ण निश्चय किये गये। यह बैठक इस दृष्टि से भी बड़ी महत्वपूर्ण थी कि अब प्रथम पंचवर्षीय योजना के समाप्त होने में १८ से भी कम महीनों का समय शेष रह गया है और बैठक में दूसरी पंचवर्षीय योजना की तैयारी के विषय में भी विचार हुआ।

प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने अपने भाषण में योजना के प्रति गतिशील दृष्टिकोण रखकर उसके प्रत्येक रूप पर ध्यान देते हुए अतिम लक्ष्य पर दृष्टि बढाये रखने की आवश्यकता पर जोर दिया। योजना कमीशन के उपाध्यक्ष श्री पी० टी० कृष्णामाचारी ने अपने भाषण में योजना की तीन वर्षों में हुई प्रगति पर प्रकाश डाला। अपने योजनाओं के लिये धन की आवश्यकता के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि समस्त देश में वचत करने के गहरे प्रयत्न होने चाहिए। दूसरी पंचवर्षीय

मन्त्री के इस प्रश्न का, कि यदि कोई राज्य अपनी योजना के लिये धन देने में असमर्थ ही हो तो क्या होगा, श्री देशमुख ने यह उत्तर दिया कि यदि किसी अन्य राज्य में हुई वस्तु से यह कमी पूरी न की जा सके तो उस राज्य को अपनी योजना कम कर देनी होगी।

श्री देशमुख ने यह भी बताया कि कर जान आयोग की रिपोर्ट शीघ्र ही आने वाला है। उससे ज्ञात होगा कि राज्यों और केंद्र ने आप के

साधन बढ़ाने के लिये पूरा प्रयत्न किया है या नहीं। उसकी रिपोर्ट में बताये जाने वाले साधनों से केंद्र आप को बढ़ाने का प्रयत्न करेगा।

परिषद् की बैठक के विषय में श्री देशमुख ने कहा कि राष्ट्रीय विकास परिषद् की बैठक वर्ष में दो बार तो हो सकता है परन्तु प्रतिमास नहीं। इस कठिनाई को दूर करने के लिये पांच मुख्य मंत्रियों और योजना कमीशन के सदस्यों की एक समिति तैयार चाहिए।

आयोजन के लिये स्थायी समिति

राष्ट्रीय विकास परिषद् ने एक स्थायी समिति नियुक्त कर दी है जिससे केंद्र और राज्यों के मध्य धननिष्ठताम परामर्श हो सके। समिति में कन्नड़, हैदराबाद, मद्रास, मैसूर, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, त्रिपुरा, उत्तरप्रदेश और पश्चिमी बंगाल के मुख्य मन्त्री तथा योजना कमीशन के सदस्य रहेंगे।

इस समिति की वर्ष में ६ बैठकें हुआ करेंगी। आकस्मिकता होने पर एक या अधिक राज्यों के मन्त्रियों को भी समिति की बैठक में निमन्त्रित कर लिया जाया करेगा।

राष्ट्रीय विकास परिषद् की बैठकें वर्ष में दो बार हुआ करेंगी।

(२)

सामुदायिक योजनाएं और विस्तार सेवाएं

राष्ट्रीय विकास परिषद् ने सामुदायिक योजनाओं और विस्तार सेवाओं की प्रगति पर भी विचार किया। शिक्षण के कार्यक्रम को तेज करने, स्वीकृतियों की प्रणाली को बेला और सक्षिप्त करने, और काम में तीव्रता लाने के उद्देश्य से स्थानीय अफसरों को अधिकार देने के विषय में निश्चय किए गये।

इस सम्बन्ध में विचार आरम्भ करते हुए योजना कमीशन के उपध्यक्ष श्री वी० टी० कृष्णमाचारी ने कहा कि राष्ट्रीय विस्तार सेवा और सामुदायिक योजनाओं का आन्दोलन अब प्राय ५० हजार गांवों में चल रहा है। हाल में ही हमने २४५ एगडों के लिये और स्वीकृति दी है जिनके अन्तर्गत ३० हजार गांव हैं। इस प्रकार यह कार्य अब कुल ८० हजार गांवों में फैल जायगा। उद्देश्य यह है कि योजना अथवा समाप्त होने तक यह कार्य १ लाख २० हजार गांवों में पहुँच जायगा, जिनमें भारत की एक चौथाई जनसंख्या निवास करती है। इस कार्य का उद्देश्य भारत के गांवों में रहने वाले ७ करोड़ परिवारों को एसी सहायता देना है जिससे वे अपने जीवन का निर्माण कर सकें। यह एक मांगवीध समस्या है जो हमारे देशवासियों के दृष्टिकोण को ही बन रहा है। हमने देखा है कि गांव वालों ने इस आन्दोलन का स्वागत किया है और इसमें आशा से नहीं अधिक सहायता दी है। स्थानीय रूप से कितना व्यय हुआ है उससे नहीं अधिक गांव वालों को प्राप्त हो गया है।

अब मैं सोचने में इसके प्रशासनाय सगठन ने विषय में भी कुछ कहना चाहता हूँ। यह आन्दोलन आरम्भ करने के समय गांवों में काम करने के लिये ऐसे सब व्यक्तियों को भर्ती कर लिया गया जो यह काम करने के योग्य थे। इन्हें तीन से लेकर ६ महीने तक की शिक्षा दी गई। हम राज्यों को परामर्श देना चाहते हैं कि वे इन्हें नियमित रूप से शिक्षा दें। मन्त्रियों के लिये हमने शिक्षण योजनाएं भी स्वीकृत कर दी हैं। इस शिक्षण के दो भाग हैं। एक तो कृषि, पशुपालन, सहकारिता आदि की आधारभूत शिक्षा जो कम से कम एक वर्ष के लिये दी जाती है, और दूसरे विस्तार सेवा की शिक्षा जो छ महीने क लिये दी जाती है। हमारा विश्वास है कि जब यही योजना के अन्तर्गत शिक्षा प्राप्त गांव में काम करने वाले प्रकट होंगे प्राप्त हो जायेंगे तो हमारा यह आन्दोलन बड़े सुन्दर ढंग से चलेगा। परन्तु योजना कमीशन और सरकारों द्वारा सगठना का अधिक महत्त्व देना है। बहुत से चेला ने ग्राम सभाएं बन गई हैं और उपयोगी काम कर रही हैं। गांवों में गैर सरकारी सगठनों का होना अपरिष्कृत है जो आन्दोलन का स्फूर्ति प्रदान करने और ग्राम अफसरों और ग्राम परिवारों के मध्य सम्पर्क रखेंगे।

स्वावलम्बन पर आधारित योजना

गांवों के स्तर से ऊपर आने के बाद अभी सभी विकास विभागों ने मिल जुलकर काम करना आरम्भ नहीं किया है। कितना कलकत्तों और

जिला विकास अफसरों के मध्य भी अभी एकीकरण नहीं हुआ है। परन्तु इनमें सुधार हो रहा है। स्थानीय विनास कार्य का राष्ट्रीय महत्व है। इसके द्वारा माननीयता नये वे सुनिश्चित मिलती हैं जो उन्हे अब तक न मिली थी। यह योजना स्वावलम्बन के आधार पर तैयार की गई है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि सामुदायिक योजना के सर्वोत्तम क्षेत्र में कृषि, पशुपालन आदि के कार्यों से २० प्रतिशत परिवारों को लाभ पहुँच रहा है। ग्रन्थ क्षेत्रों में यह लाभ ५ से १० प्रतिशत परिवारों तक को पहुँचता है। सहकारिता का आन्दोलन अभी नहीं फैला है। हम यह कार्य भारत के गांव गांव में फैला देना चाहते हैं। इसके लिये कर्मचारियों को शिक्षा दी जा रही है।

इस सम्बन्ध में कुछ वर्षों में परिपक्व हो जाता गया कि अब तक ५६ हजार ग्राम कार्यन्ताराओं को शिक्षा दी जा चुकी है। स्त्रियों को भी यह शिक्षा दी जा रही है और वे ग्रामों में स्त्रियों का संगठन बनाएंगी। प्रत्येक योजना क्षेत्र में समान शिक्षा संगठन बनाने के लिए एक महिला कार्यकर्ता भी होगी। इसका काम महिलाओं को समिति बनाना होगा। समस्त भारत के लिये कुल ५०,००० पुरुष और १००,००० स्त्री कार्यकर्ताओं की आवश्यकता होगी। वर्तमान योजनाओं में दश का एक चौथाई क्षेत्र

सम्मिलित कर लिया जायगा, जिसके लिये १५,००० कर्मचारियों की आवश्यकता होगी। इनमें ३,००० स्त्रियाँ होंगी।

सामुदायिक योजनाओं के प्रथमक में बताया कि प्रत्येक गांव में महिला समिति बनाई जा रही है जिसमें अधिकधिक स्त्रियों को गावा के उन्नति कार्य में लगाया जा सके। बैठक में यह प्रस्ताव भी किया गया कि प्रत्येक प्रेजेंट को तमो डिग्री अथवा डिप्लोमा दिया जाय जब वह, पुरुष हो या स्त्री, एक वर्ष तक मुक्त राष्ट्रीय सेवा कार्य करे। यह नियम बना देने का भी सुझाव दिया गया कि सरकारों नौकरियों के लिये आवेदनपत्र देने माना के लिये राबो और वैन्ड के पब्लिक सर्विस कमीशनो को यह अनिवार्य कर देना चाहिए कि उनके आवेदनपत्रों पर तब तक निष्कार नहीं होगा जब तक कि उनके साथ सामुदायिक योजना अधिकारियों का इस आशय का प्रमाणपत्र नही होगा कि वे एक वर्ष तक राष्ट्रीय सेवा कार्य कर चुके हैं।

श्री टी० टी० कृष्णामाचारी ने यह आशा प्रकट की कि निश्चय-विद्यमानता में निश्चलने जाना के निचे राष्ट्रीय विस्तार सेवा में काम करने की कोइ व्यर्थता की जायगी। उनमें उन्हे ग्रामीण समस्याओं का शान प्राप्त हो जाय। प्रधान मंत्री श्री नेहरू ने कहा कि डाक्टरों पद को निश्चलने जालों से बचना चाहिये कि वे डाक्टरों का डिग्री मिचने में पहले एक वर्ष तक गावा में काम करे।

(३)

बेकारी दूर करने में जोर

परिपक्व की बैठक में इन बात पर जोर दिया गया कि बेकारी का पूर्व-वक्षण करने के लिये एक व्यापक प्रणाली बनानी चाहिए और बेकारी की एक प्रतिमानित परिभाषा भी निश्चित कर लेनी चाहिए जिसमें इस समस्या को कारण टङ्क में हल किया जा सके।

देश में बेकारी की समस्या के निपट में योजना मन्त्री श्री गुलजारी लाल नन्दा ने कहा कि हमें इस बात में बड़ी अस्मिता होती है कि हमें किसी समर निरोग पर यह टोच-टोकी शात नहा जाता कि बेकारी अथवा अर्द्ध बेकारी का परिणाम क्या है। आकटा के अन्तर्गत में यह भी कहा जाता पाठ कि योजना के अन्तर्गत व्यय करने में कितन नये लागो को काम मिली है। हमें दूर बन के लिये राबो, योजना कमीशन और बलकन्ते का भारतीय सांख्यिकी शाला में अध्ययन किये जा रहे हैं और इसके फलस्वरूप आशा है हम शीघ्र ही इस सम्बन्ध में अकी द्वारा स्थिति का पता लगा सकगे। परन्तु प्रस्तुत लक्ष्यों और काम ठिलाउ केन्द्रों में प्राप्त जानकारी के अद्युक्त काम देने की स्थिति में कोइ सुधार नहीं हुआ है। आपने आगे कहा कि राबो में इस और सामूहिक रहने को कहा गया है।

भूमि सुधार

भूमि सुधार के विषय में हुई बैठक के सम्बन्ध में आगामन मन्त्री श्री गुलजारीलाल नन्दा ने कहा कि योजना में यह सिफारिश को गई है कि

भूमि जोतने वालों और सरकार के बीच जो लोग हैं उन्हे हटा देना चाहिए। इस दिशा में काफी प्रगति हो चुकी है। यह सिफारिश १२ राज्यों में पूर्णतः और ३ में अंशतः विचारित की जा चुकी है। तीन राज्यों में आवश्यक कानून पास हो चुके हैं और शेष में इन्हें लिये यत्न चल रहे हैं।

योजना में यह भी सिफारिश की गई है कि भूमि जोतने वालों के पट्टे सुरक्षित कर देने चाहिये। मात्र राज्यों में इसके लिये प्रवन्ध हो चुका है और ६ अन्तः राज्यों में इस दिशा में प्रथम आगमन हो गये हैं। ६ राज्यों में कृषु अधिका के कितानो को अपनी जात खरीद लेने के अधिकार भी दिये गये हैं।

योजना के अनुसार भावी पट्टा की न्यूनतम अर्थात् निश्चित कर देने चाहिये। ऐसा आठ राज्यों में किया गया है। १२ राज्यों में अभी लगान का नियमन अथवा कम करने के लिये कार्यवाही हानी शेष है। इन सुधारों द्वारा भूमि जोतने वाले के साथ व्यापक करने का यत्न किया गया है। योजना में जैसी का पुनः संगठन करने और चरचर्दी, सहकारी जैसी आदि प्रणालियाँ द्वारा ग्रामीण अर्थ व्यवस्था को सुदृढ करन के यत्न किये गये हैं। ५ राज्यों में चरचर्दी का काम मत्तापञ्चन टङ्क में हुआ है। सहकारी जैसी के तो केवल नही। नहा बहुत सोटे मरीदानु हुए हैं।

कानून के अमल में देरी

एक प्रश्न की शीघ्र विशेषता: ध्यान देना है। वह है कानून बनने के बाद उसे अमल में होने वाली देरी। राश्यों से ३१ मई १९५४ को एक पत्र लिखकर इस देरी के कारण पूछे गये हैं, परन्तु उनके उत्तरों से कोई सन्तोषजनक जानकारी नहीं मिली। हाल में ही राश्यों के मन्त्रियों को फिर एक पत्र भेजा गया है। इस प्रकार बीच वाले जमींदारों आदि को हटाने, पट्टी में सुधार करने, अधिकतम लगान निश्चित करने आदि के कार्य क्रमशः करके योजना अवधि में सम्पूर्ण हो जाने चाहिए।

सहकारी खेती के विषय में भी इसी प्रकार का कार्यक्रम बनाया जाना चाहिये, जो ७ वर्षों में अमल में लाया जाय। इस सम्बन्ध में कुछ राश्यों के उत्तर मिल चुके हैं। जोतों की गणना का काम भी चल रहा है। काम का आसान करने के लिये राज्य सरकारों को यह छूट दी गई है कि वे चाहे तो गणना का कार्य बड़ी अर्थात् १० एकर तक की जोता तक सीमित रख सकते हैं। इस प्रकार यह कार्य ६ महीने में समाप्त होने की आशा है। इसे समाप्त करने की अवधि अप्रैल १९५५ और अधिक से अधिक मई १९५५ के अन्त तक रखी गई है।

(४)

औद्योगिक नीति

औद्योगिक नीति के विषय में प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि हम निजी उद्योगों को प्रोत्साहित करना चाहते हैं परन्तु हमें भी बन्दर हम सरकारी उद्योगों को प्रोत्साहित करना चाहते हैं। आपने हमें गलत बताया कि निजी उद्योगों को अग्रिम लिये कार्य क्षेत्र चुनने में पहले अवसर मिलना चाहिए। श्री नेहरूने कहा कि १९४८ में औद्योगिक नीति विषयक जो वक्तव्य दिया गया था उसमें अर्थ कुछ शशोधन होना चाहिए।

श्री के० सी० नियोगी ने कहा कि विशाल उद्योगों में राज्य सरकारों

के साधनों और शक्तियों के लगने में काम नहीं होगा। केन्द्र इन्हें सीधा स्वयं अथवा राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम द्वारा चलायेगा। ये निजी उद्योगों के पूरक होंगे। आपने बताया कि इन निगमों ने अनेक उद्योगों के विषय में विचार करना आरम्भ कर दिया है। जब एक बार यह निश्चय हो जायगा कि कोई उद्योग सरकारी हस्त पर चलाया जाय तो बाद में हमारा निश्चय निम्ना ज्ञायमा कि उसे केन्द्रीय अथवा राश्यों की सरकारों चलाने या विकास निगम। यह निश्चय राष्ट्रीय साधनों का सर्वोत्तम उपयोग करने की दृष्टि से किया जायगा।

अपने सुझाव भेजिये

उद्योग व्यापार पत्रिका, उद्योग और व्यापार से सम्बन्ध रखने वाले पाठकों की सेवागत १६ महीनों से कर रही है। इस अल्प अवधि में ही पत्रिका ने अपना एक विशेष एवं महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। देश के औद्योगिक और व्यापारी क्षेत्रों में इसका दृष्ट से स्वागत किया गया है।

पत्रिका को अधिक से अधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया जाता है। परन्तु इस सम्बन्ध में हम अपने प्रिय पाठकों के सुझाव भी चाहते हैं। अतः निवेदन है कि पाठकगण अपने सुझाव हमें शीघ्र लिख भेजने की कृपा करें। सुझाव केवल इसी दृष्टि से होने चाहिए कि पत्रिका को उनके लिये किस प्रकार और अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है।

सम्पादक—उद्योग व्यापार पत्रिका

वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय,
भारत सरकार, नई दिल्ली

हमारे व्यापार प्रतिनिधियों द्वारा—

मई में ब्रिटेन ने भारत से कम माल मंगाया

नेपाल में वस्तुओं के मूल्य चढ़े

ब्रिटेन में भारत से आने वाला माल मई में घट कर ७५ लाख पौण्ड रह गया, जब कि गत मास यह ६१ लाख पौण्ड रहा था।

तुकी न सीमा शुल्क की नयी दरे लागू कर दी ह। जिन वस्तुओं के सीमा शुल्क के विषय में समझौते हो चुके ह उन पर ये लागू नहीं होगी।

नेपाल में आवश्यक वस्तुओं के भाव अगस्त में चढते रहे।

हागनाग का भारत के साथ होने वाला व्यापार अप्रैल में थोडा घट गया।

मारीयास का व्यापार सन्तुलन १६१३ में २३१ लाख रु० से उसके अनुकूल रहा, जबकि १६१२ में २०६ लाख रु० से रहा था।

ब्रिटेन : जनवरी-जून १९५४ में प्रतिकूल व्यापार-संतुलन

जून १९५४ में ब्रिटेन का निर्यात, गत मास का अपेक्षा ११२ लाख पौंड घटकर, २,१७० लाख पौंड रह गया। परन्तु इस मास में आयात १०६ लाख पौंड बन्कर २,६१० लाख पौंड हो गया।

जून १९५४ में पुनर्निर्गत वस्तु लान पोल का हुआ, जब कि मई १९५४ में यह ६० लाख पौंड का हुआ था। अतः ब्रिटेन के व्यापार की प्रत्यक्ष कमी, मई १९५४ में ४२५ लाख पौंड से बन्कर, जून १९५४ में ६४४ लाख पौंड हो गई।

१९५४ का प्रथम छमाही में ब्रिटेन का आरत निर्यात (पुनर्निर्गत को छोड़ कर) प्रतिमास २,२४१ लाख पाउंड रहा। यह १९५३ की इसी अवधि के निर्यात की अपेक्षा, ७ प्रतिशत अधिक है। जनवरी जून १९५४ की अवधि में औसत आयात प्रतिमास २,७६२ लाख पाउंड रहा। अतः इसमें गत वर्ष का प्रथम छमाही का अपेक्षा, १ प्र० श० की कमी रहा। १९५४ का प्रथम छमाही में प्रत्यक्ष व्यापार-सन्तुलन ५,०६४ लाख पाउंड से उसमें प्रतिशत रहा। यह १९५३ की इसी अवधि में ३,८०६ लाख पौंड प्रतिशत सन्तुलन से लगभग १,००० लाख पाउंड कम है।

भारत-ब्रिटेन का व्यापार

मई १९५४ में ब्रिटेन में भारत से कम आयात हुआ। इस महान मई ७४,८४,१७० पौंड का हुआ, जब कि अप्रैल १९५४ में ६०,८८,४०२ पौंड का हुआ था। मई १९५४ में ब्रिटेन में भारत को हुआ निर्यात व पुनर्निर्गत २४,७०,५७६ पौंड बन्कर, १,१४,०३,७७१ पाउंड हो गया। अतः मई १९५४ में भारत का ब्रिटेन से व्यापार सन्तुलन २६,११८,६०१

पाउंड से उनके प्रतिशत रहा, जबकि अप्रैल १९५४ क व्यापार में १,५१,२०७ पाउंड की कमी रही थी।

मई १९५४ में भारत व विभिन्न मुख्य वस्तुओं के आयात में, अप्रैल १६० की अपेक्षा वृद्धि हुई —

वस्तु	अप्रैल (पाउंड)	मई (पाउंड)
चमगा और उससे बना माल	१,०२,२०६	१,२३,६६४
सम्पादक और उससे बना माल	३,७६,०६६	१,७०,२१३
ऊन तथा अन्य पशुओं के बान	२,७५,७४५	२,६६,०२२
पेट्रोलियम और उससे बना वस्तुएँ	५८,३६७	६३,१३२

मई १९५४ में भारत से मंगाए गए विभिन्न वस्तुओं में, अप्रैल १९५४ की अपेक्षा, कमी रही —

वस्तु	अप्रैल (पाउंड)	मई (पाउंड)
१	५	३
विभिन्न युना हुआ माल	१५,४६२	६,६४,१५६
मूल और बरडा	६,१६,११४	४,००,११४
धातु पत्थिन व टुकड़े	५,६०,४५२	०,४४,५०२
लोहक पत्थिन	४,६८,२७७	१,४०,०८३
रुद	२,६१,२६१	१,३१,४११

१	२	३
तेल निकालने के लिये वेतन व गिरिया	१,५२,२४०	१४,८०२
चमड़ा व खालें	६५,३३६	५४,७००
फल व तरकारिया	८०,४८४	४८,५०५
रासायनिक पदार्थ	६१,३३२	४५,८००

मई १९५४ में ब्रिटेन द्वारा भारत को भेजी गई मुख्य वस्तुओं में अप्रैल १९५४ को अरबद्धा, इट्रि हुई। इस मास में मशीनों (बिजली की मशीनों को छोड़कर), औजारों व उपकरणों, रासायनिक पदार्थों, विविध बुने हुए माल, सड़को पर चलने वाली गाडियों व हवाई जहाजों, रेल के डिब्बों, धातुओं में निर्मित सामान लोहे व इस्पात का निर्यात, अप्रैल १९५४ की अपेक्षा, बढ़ गया।

तुर्की : सीमाशुल्क की नयी दरें

सीमा शुल्क की नई दरें ७ जून १९५४ से लागू हो गई हैं। इसके अन्तर्गत सीमाशुल्क परिमाण के बदले मूल्य के आधार पर लिया जायगा। परन्तु यहाँ दरें उन वस्तुओं पर लागू नहीं होंगी जिन्हें किहा सम्झौते के कारण पुरानी दरों से लाभ पहुँचता है अथवा जिन पर आधार व सीमा शुल्क नियमक लागू करना लागू होता है या जिनके नियम में तुर्की द्वारा अन्य देशों से १ जुलाई १९५४ तक के लिये व्यापार व मुग्तान करार किये गये हैं। इस विधि के वात नद दरें सभी देशों पर समान रूप में लागू कर दी जायगी।

विदेशी व्यापार

तुर्की के मई १९५४ तथा जनवरी से मई १९५४ का अर्थिक के आयात व निर्यात आकड़े नीचे दिये गये हैं। तुलना की दृष्टि में १९५३ की इन्हीं अवधियों के आकड़े भी दे दिये गये हैं —

निर्यात

(लाभ तलारस)

वस्तुएं	मई १९५४	मई १९५३	जनवरी-मई १९५४	जनवरी-मई १९५३
---------	---------	---------	---------------	---------------

(क) वस्तुओं के अनुसार

अनाज	१७२	३०१	१,२०८	१,५४०
तम्बाकू	१०५	१६६	६१८	८८८
रूई	१०८	१६८	६२८	१,०२६
फल	३७	७४	३६१	३५८
तेलहन	४	६	४४	८१
खनिज पदार्थ	८०	१३२	३०८	४६७
अन्य	६३	११८	४००	५१७
योग	५६६	१,०१५	३,८६७	४,८८०

(ख) देशानुसार

देश	मई १९५४	मई १९५३	जनवरी-मई १९५४	जनवरी-मई १९५३
पश्चिमी जर्मनी	३६	१६१	३७६	६८४
ब्रिटेन	३२	३८	१६६	२७०
अमेरिका	४६	२३०	३६८	८१२
इटली	७२	२२६	३४५	१,०७७
फ्रांस	८	१६	२५६	२५६
नेलैजियम	२	५	२०	३६
अन्य	४१३	३०६	२,४३६	१,९४२
योग	५६६	१,०१५	३,८६७	४,८८०

आयात

(लाभ तलारिस)

वस्तुएं	मई १९५४	मई १९५३	जन० मई १९५४	जन० मई १९५३
---------	---------	---------	-------------	-------------

(क) वस्तुओं के अनुसार

मशीनें	४२८	३२०	१,४०५	१,४२४
लाहा और इस्पात	१४८	१५१	६६०	६८८
परिनाहन आदि	६६	८०	५३१	५८२
रबजिन तेल	१०६	६०	३७६	२८६
मूनी माल व सूत	३०१	१३०	१,१०५	७७३
रासायनिक पदार्थ	५६	८०	७७०	३२७
अन्य	३८६	४८२	१,५८६	१,३६५
योग	१,४६४	१,९३३	५,६६३	५,५७८

(ख) देशानुसार

देश	मई १९५४	मई १९५३	जन० मई १९५४	जन० मई १९५३
पश्चिमी जर्मनी	२४८	२०६	१,०१६	१,१२७
ब्रिटेन	११३	१७५	५५८	६३४
अमेरिका	२५५	११६	८६६	५६५
इटली	१०६	५७	४२५	४४०
फ्रांस	६३	७८	४४८	२३८
नेलैजियम	२	६७	१८०	२७६
अन्य	६५८	४१४	२,५३४	१,६६५
योग	१,४६४	१,९३३	५,६६३	५,५७८

तुर्की का १ तलारिस = १२३ भारतीय रुपया।

पूर्वी पाकिस्तान : बकरी की कच्ची खालों का निर्यात

पाकिस्तान सरकार ने ३१ मार्च १९५५ को समाप्त होने वाली अवधि के लिये बकरी की कच्ची खालों के निम्न गतव्य बंटों घोषित किये हैं :—

गतव्य स्थान	पूर्वी पाकिस्तान	पश्चिमी पाकिस्तान	योग
	कोटा थानो में		
फ्रान्स	२५,०००	७५,०००	१,००,०००
जर्मनी	५,००,०००	४,५०,०००	९,५०,०००
भारत	१,००,०००	—	१,००,०००
इटली	४,५०,०००	१०,००,०००	१४,५०,०००
हालैण्ड	२५,०००	१,२५,०००	१,५०,०००
स्वीडन	—	२,५०,०००	२,५०,०००
ब्रिटेन	१४,२५,०००	२५,०००	१४,५०,०००
अन्य देश	१,००,०००	१,००,०००	२,००,०००
योग	२६,२५,०००	२०,२५,०००	४६,५०,०००

मई में कच्चे जूट का निर्यात

जनवरी से मई १९५४ की अवधि में पूरबी बंगाल का भारत ने निर्यात व आयात व्यापार क्रमशः ६६६ लाख भारतीय रुपये व १६२ लाख म्ग रुपय का हुआ। मई १९५४ में पूरबी बंगाल ने कच्चे जूट की कुल ५,०८,३७४ गांठों का निर्यात किया, जिनमें से १,३२,४१७ गांठों भारत को तथा ३,७५,९५७ गांठों अन्य देशों को भेजी गयीं। जुलाई १९५३ से

मई १९५४ तक की ११ महीनों की अवधि में कुल ५१,५१ करोड़ पाकिस्तानी रुपये मूल्य की ४७,६०,५८० गांठों का निर्यात हुआ, जिनमें से भारत ने ६,६० करोड़ पाकिस्तानी रुपये मूल्य की १२,४५,४२६ गांठें मंगायीं।

औद्योगिक उत्पादन

फरवरी १९५४ में, पूर्वी बंगाल के कारखानों में ११ ७९,०८२ घण्टे सूत बनाया गया, जबकि गतवर्ष के इसी महीने में ८९,६२,०७७ घण्टे सूत बनाया गया था। इसमें ३० से ४० नम्बरी सूत ५,१४,७२३ घण्टे, २० से ३० नम्बरी ३,१६,६१६ घण्टे, १० से २० नम्बरी २,१८,३५५ घण्टे और ८० से अधिक नम्बर का ४,१२७ घण्टे रहा। दोहरे सूत का उत्पादन केवल ७,८६१ घण्टे रहा।

इस महीने सूती कपड़े (घोनी, साड़ी, बमीज का कपड़ा लडा आदि) का उत्पादन ५१,२६,८५५ गज आका गया, जबकि जनवरी १९५३ में ४४,६७,७२० गज आका गया था। इनमें धोलिया २३,०६,८६२ गज, साडिया २०,६५,४०२ गज, बमीज का कपड़ा और लडा ४,१७,४८५ गज तथा मारकीन और अन्य विविध किस्म का कपड़ा ३,०७,०६६ गज रहा।

अन्य वस्तुएँ जिनके उत्पादन के मासिक आकड़े प्राप्त थे व इस प्रकार हैं—चाबी २,४६,१२३ मन, टियाखलाई १,४१,१२० डिविज आर सोमेट २,८४० टन।

नेपाल : अगस्त १९५४ में सूतियों की वृद्धि

नेपाली व भारतीय मुद्राओं की विनिमय दर में असमानता रहने के कारण अगस्त १९५४ में भी नेपाल की आर्थिक स्थिति विगड़ती गयी। आवश्यक वस्तुओं, विशेषतः धातु, चाय, चीनी व गेहूँ के मूल्य चढ़ते रहे। अगस्त के अन्त में विनिमय दर १८१ नेपाली रुपये बराबर १०० भारतीय रुपये थी।

भारत से व्यापार

अगस्त मास में भारत से आइए वस्तुओं में मोटर व साइकिलों के टायर व दूध, कपड़ा, चाय, चीनी और पेट्रोल मुख्य हैं। निर्यात में मिर्ची का तेल, फ्लाई बर्न के विजली के उपकरण, शल्य चिकित्सा का सामान, सिगरेटें, शराब आदि मगाए गये। उपयुक्त वस्तुओं का विवरण इस प्रकार है :—

भारतीय माल

कपड़ा	...	२३७ गांठें
चाय	...	१२२ पेटिया

चीनी	४८१ बोरिया
पेट्रोल	३,४०० गैलन
मार्निन टायर	५६४ सख्या
साइकिल टायर	३०० सख्या
मोटर टायर	४८ सख्या
मोटर टयूब	३६ सख्या

अन्य देशों का माल

मिर्ची का तेल	८,६४४ गैलन
फ्लाई बर्न के लिए विजली के उपकरण	२ गांठें
शल्य चिकित्सा का सामान	१ गड्डा
लोहे का सामान	४५ पेटिया
सिगरेटें	४ पेटिया
शराब	४५ पेटिया
साइकिल के ताले	१ पेटिया

हांगकांग : भारत से व्यापार घटा

अप्रैल १९५४ में हांगकांग का व्यापार कुल ४,६१५ लाख हांगकांग डालर का हुआ, जब कि मार्च १९५४ में ४,९१५ लाख हांगकांग डालर व अप्रैल १९५३ में ६,३२७ लाख हांगकांग डालर का हुआ था।

अप्रैल १९५४ में हांगकांग का आयात व निर्यात व्यापार क्रमशः २,७५७ लाख हांगकांग डालर व १,८५८ लाख हांगकांग डालर का हुआ।

आयात	निर्यात
हांग डालर	हांग डालर
कोयला १२,७१,३३६	हांगकांग में प्रची
चमड़ा ४,२१,६३६	बिजली की टाँपें ४,८६,५१४
कमीज का कपड़ा	विविध १२,१,१२,१५०
(कोरा) ११,८७,२६६	योग १६,६७,६६४
जूट की बीरिया ४,२१,३१२	
विविध १८,१०,३४०	
योग ५१,१२,२२६	

भास्त से व्यापार

अप्रैल मास में भारत के साथ हुए हांगकांग के कुल व्यापार का मुख्य घटक घटकर ६८ लाख हांगकांग डालर रह गया, जब कि मार्च १९५४ में यह ७४ लाख हांगकांग डालर रहा था। निर्यात व आयात की गई किंमति बहुतए तथा उनके मूल्य निम्न प्रकार हैं। —

व्यापार नियन्त्रण में उदारता

अब आवश्यक वस्तु प्रति प्रमाणपत्रों के बिना ही लाइसेंस द्वारा विद्युत अवरोध परीक्षण यंत्रों का आयात किया जा सकता है। इन पर अब विनिर्देश और क्षेत्रीय नियन्त्रण सम्बन्धी प्रतिबन्ध ही रहेंगे। लायसेंस के अन्तर्गत इस का पुनर्निर्धार किन्हीं भी देश को करने की अनुमति है।

फिजी : १९५३ में भारत से कम आयात

फिजी सरकार ने १९५३ का वार्षिक व्यापार विवरण प्रकाशित कर दिया है। इस उपनिवेश के व्यापार में २ वर्ष तक लगातार घाटा रहने के पश्चात्, आलोच्य वर्ष में व्यापार-सन्तुलन उसके अनुकूल रहा है। परन्तु भारत का फिजी को निर्यात, १९५२ में ८,०५,६६० पौंड से घटकर, १९५३ में ५,८६,६३६ पौंड रह गया। सभ से अधिक कमी 'जूट के माल' में हुई है, जिनका मूल्य १९५२ में ४,५६,०१५ पौंड से घट कर आलोच्य वर्ष में कवल १,४१,३२६ पौंड रह गया। सम्भवतः गतवर्ष का एकक बचे रहने के कारण ही यह कमी हुई है। इसके निर्यात 'प्याय, पेय व

तन्मासू' तथा 'चमड़ा व चमड़े से बने माल' के अन्तर्गत सम्मिलित वस्तुओं के निर्यात में कुछ वृद्धि हो गई है।

व्यापार की संभावनाएं

भारत में बने फिजी के सामान तथा इस्पात के फरनीचर जैसे कि फोल्डिंग कुर्चियां और सामान्य उपभोग की वस्तुओं की वहां काफी मांग दिखाई पड़ती है। उनके मुख्य व किस्म ब्रिटेन व आस्ट्रेलिया से मंगाई जाने वाली इन्हीं वस्तुओं से, स्वर्ण में टिक करने वाले होने चाहिए।

मारीशस : १९५३ में व्यापार सन्तुलन की अनुकूलता में वृद्धि

१९५३ में मारीशस के कुल व्यापार का मूल्य ५,२५३ लाख ४० रहा। इस में निर्यात २,७४२ लाख ४० और आयात २,५११ लाख ४० का हुआ। आलोच्य वर्ष में व्यापार-सन्तुलन २३१ लाख-४० से मारीशस के अनुकूल रहा, जबकि १९५२ में यह २०६ लाख ४० से अनुकूल रहा था।

आलोच्य वर्ष में ४,८२,८८७ टन चीनी का निर्यात किया गया। आयात निम्न प्रकार रहा :—

वस्तुएं	(००० ४०)
ताप पदार्थ	६५,८१६
पेय पदार्थ व तन्मासू	५,१३६

छाने के काम न आने वाला कच्चा माल	
(लकड़ी की छोड़कर)	४,५६२
चंगिज तेल, चिकनाई छाने वाले तेल और सम्बद्ध वस्तुएं	१३,५३८
पशुओं तथा वनस्पतियों से प्राप्त तेल और चर्बिया	६,०१०
तालायिक पदार्थ	२०,६२४
निर्मित माल	५२,२७०
मशीनों और परिवहन का सामान	३६,६६०
विविध निर्मित माल	१२,८५२
विविध वस्तुएं सिनवा अन्यत्र उल्लेख नहीं है	२६०

जानकारी विभाग

औद्योगिक विषय

जुलाई १९५४ में विजली का उत्पादन

दस वर्ष जुलाई में ६६३ लोकोपयोगी विजली केन्द्रों से ६३ करोड़ १३ लाख किलोवाट विजली पैदा की गयी, जिनमें से ५१ करोड़ ५८ लाख किलोवाट विजली उपभोक्ताओं को देयी गयी। दस उत्पादन में तीन नये डीजल विजली उत्पादक केन्द्रों का उत्पादन भी शामिल है, जो दस स्थानों पर बनाने में हैं — एक मिष्ट (मध्य भारत) में तथा एक-एक आरागाव, बम्बलुगुडी (बम्बई) में है। जून की तुलना में, विजली का उत्पादन ६० लाख किलोवाट अधिक हुआ।

जुलाई १९५३ में विजली का उत्पादन ५८ करोड़ ४ लाख किलोवाट था और ४० करोड़ १० लाख किलोवाट विजली देयी गयी थी।

दूध और दूध से बने पदार्थ

हाल में दुग्धशाला गवेषणा के निर्देशक डा० के० सी० सेन की अध्यक्षता में दुग्धशाला निगम समिति की बैठक हुई। समिति ने खंडा जिला दूध सहकारी समूहों को एक योजना को स्वीकार करने की सिफारिश की। इसके अलावा 'दुग्ध मय' के अधीन आलन्ड में एक कारखाना खोला जा रहा है जहाँ दूध में मक्खन, क्रीम, सूखा दूध आदि पदार्थ बनाने जायेंगे।

समिति ने एक अन्य योजना स्वीकार की है, जिसके अन्तर्गत पञ्जाब विश्वविद्यालय में दूध के रासायनिक तत्वों का विश्लेषण किया जायगा।

एक दूसरी योजना को स्वीकार करने की सिफारिश की गयी है, जिसके अन्तर्गत मद्रास, अरुमर मेरगाडा, मध्य भारत, भोपाल, आंध्र, बम्बई, मध्य प्रदेश, मैसूर, हैदराबाद और बम्बई के कुछ क्षेत्रों में तैयार होने वाले घी की किम्प की ज्वलन की जायगी। इसके अलावा, दूध घी से सम्बन्धित अन्य बड़े मुख्य योजनाओं का सिफारिश की गयी, जिन्हें बंगलौर स्थित, भारतीय दुग्धशाला गवेषणा संस्थान अपने हाथ में लेगा।

समिति को सम्बोधित करते हुए, डा० सेन ने बताया कि भारत सरकार अगले वर्षों में देश में दुग्धशाला धार्य के विकास को बढ़ावा देना चाहती है। अधिक अन्न उपजाओ आन्दोलन देश में काफी लक्ष्य रहा है, अतः अब दुग्ध पशुओं की उत्पन्न तथा दूध का उत्पादन बढ़ाने पर अधिक ध्यान देना चाहिये।

आशा है दूसरी पंच वर्षीय योजना के अन्तर्गत योजना अयोगी निर्दिष्ट

राज्यों में दुग्धशाला योजनाओं के विस्तार के लिए तथा भारतीय दुग्धशाला गवेषणा संस्थान के अन्तर्गत अन्वेषण कार्य और कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए पर्याप्त रकम की सिफारिश करेगा। पंच-वर्षीय योजना की अवधि में अधिक से अधिक तथा परिष्कृत रूप में दुग्ध उत्पादन तथा पशु धन के सुधार के लिए आर्थिक सहायता मिल सकती है।

सितम्बर में कोयले का उत्पादन बढ़ा

सितम्बर १९५४ में भारत की खानों से ३१,७१,४०४ टन कोयला निकाला गया। अगस्त १९५४ में २६,५७,६१६ टन कोयला निकाला गया था। सितम्बर में २८,८७,६१३ टन भेजा गया जबकि अगस्त में २६,२५,६६६ टन भेजा गया था। सितम्बर के आरम्भ में खानों के क्षेत्रों में ३३,७६,८६८ टन कोयले का स्टॉक था जो महीने के अंत में घटकर ३२,०६,८०० टन रह गया। इस महीने ८२६ खानों में काम चालू रहा जिनमें औद्योगिक ३,२७,७३० मजदूर काम करते रहे। खानों और लाइनों वाले मजदूरों का औसत जनसंख्या १.०७ टन खनिज के भीतर और खुले में काम करने वाले दूमरे मजदूरों का ०.५८ टन और शारीरिक मजदूरों का ०.२७ टन रहा। अनुपस्थिति १२.६८ प्र० श० रही।

खानों के और दूसरी जगहों के बीच बगाने वाले कारखानों ने कुल ३,६६,१६२ टन कोयला तैयार किया और २,०१,२६४ टन कोयला भेजा गया।

लोहे की खानों में उत्पादन-वृद्धि

खानों के मुख्य निरीक्षक द्वारा प्रकाशित आकड़ा के अनुसार भारत में लोहे की खानों का कुल अनुमानित उत्पादन अगस्त १९५४ में २,६६,२०१ टन में बढ़कर सितम्बर, १९५४ में २,७०,७०० टन हो गया। सितम्बर १९५४ के लिए ६७ खानों से जो विवरण प्राप्त हुए हैं, उनसे पता चलता है कि लोहा और इस्पात के कारखानों को ४६,८८५ टन और निर्यात-मण्डियों को ४७,२६४ टन कच्चा लोहा भेजा गया। महीने के अन्त में ८,३६,६७१ टन का स्टॉक शेष था।

२ अरब टन लिगनाइट (भूरे) कोयले का भंडार

मद्रास राज्य के अंतर्गत दक्षिण आकड़ा जिले में नरबेली स्थान पर बाँकियों मजदूर एक करोड़ वर्ष पुराने लिगनाइट बाँकियों के भंडार को खोजने का प्रयत्न कर रहे हैं। दो अरब टन लिगनाइट कोयले का यह

कार मिलने पर दक्षिण भारत ही अर्थ व्यवस्था का कायापलट हो जायगा।

मद्रास राज्य इस कार्य का खर्च दे रहा है और खदान का लगभग २५ कोसदी काम हो चुका है। अभी उदरस्थ ६०० फुट लम्बा, ६०० फुट चौड़ा और १२० फुट गहरा गड्ढा खोदकर १०० वर्ग फुट लिगनाइट कोयले की सतह खोल देना है।

इस प्रयोग से जो अयस्क, जानकारी तथा टेक्नीकल ज्ञान प्राप्त होगा, उसका उपयोग लिगनाइट की खानों की बड़े पैमाने पर खुदाई में किया जायगा।

केन्द्रीय सरकार तथा अमरीकी टेक्नीकल सहयोग मिशन से इस कार्य के लिये मशीनें मिली हैं। इसके अतिरिक्त ५ मार्च १९५३ से अब तक मद्रास सरकार इस खदान के काम पर ४२ लाख रुपये से भी अधिक रकम खर्च चुकी है। कोलम्बो योजना के अंतर्गत केन्द्रीय सरकार ने टेक्नीकल परामर्श देन के लिये एक ब्रिटिश कंपनी की सेवाएँ भी प्राप्त की हैं।

लिगनाइट क्या है ?

लिगनाइट वह कोयला है, जो अभी कोयले का रूप धारण नहीं कर सका। इसमें लगभग ३० से ३५ प्रतिशत तक नमी रहती है, किन्तु इसकी ठीक करके ईंधन के रूप में काम में लाया जा सकता है। यह लिगनाइट का ईंधन काम में अन्य प्रकार के ईंधन के समान है। इससे ईंधन प्लांटों, बिजली बनाने, और खाना पकाने आदि का काम लिया जा सकता है। इसके अलावा कृषि में पेट्रोल, रसायनों तथा रासायनिक खादों के उद्योगों में भी इसका इस्तेमाल किया जा सकता है।

दक्षिण भारत को लाम

१०० वर्गमील से भी अधिक इलाके में फैले हुए लिगनाइट के इस भंडार से मद्रास, आंध्र, तिरुवाकुर-कांचन, हैदराबाद तथा मैसूर राज्यों के लोगों के लिये अन्नति के नये द्वार खुल जायेंगे। कारखानों की चलायन के लिये दक्षिण भारत में कोयले का जो अभाव है, लिगनाइट से उसको बहुत कुछ पूर्ति हो सकेगी। हजारों मील दूर विहार तथा पश्चिमी बंगाल से कोयले लाने का खर्च भी बच जायगा। लिगनाइट कोयले से बिजली भी पैदा की जा सकेगी।

अन्य लाम

जिस स्थान पर लिगनाइट की खुदाई का काम हो रहा है, वहाँ अन्य पदार्थों का भी भंडार है। वहीं पर सफेद मिट्टी की मोटी तह पाई जाती है, जिससे चीनी मिट्टी के बर्तन के उद्योग के विकास में सहायता मिलेगी। लिगनाइट में 'मॉन्ड नोम' काफी मात्रा में पाया जाता है, जो सैनिक उद्योग के लिये अत्यन्त आवश्यक है। खुदाई से जो पानी बाहर निकलेगा, उसका उपयोग सिंचाई के लिये आसानी से किया जा सकेगा। इस प्रकार खदान से निकलने वाली सभी वस्तुओं का भव्योन्मुख उपयोग किया जा सकेगा।

प्रयोगशाला

खदान के पास अभी एक कामचलाऊ प्रयोगशाला है। यहाँ लिगनाइट तथा अन्य पदार्थों का विश्लेषण किया जाता है। इस नर्प के अन्त तक ब्रिटिश फर्न की रिपोर्ट आने पर कामकाज जोर जोर से शुरू कर दिया जायगा।

यहाँ वैज्ञानिक लोग लिगनाइट के विश्लेषण करने में व्यस्त हैं, मजदूर इस गड्ढे को प्रतिदिन गहरा करते जा रहे हैं। एक मजदूर ने ही १९३० के करीब एक कुएं की खुदाई के समय लिगनाइट के इस भंडार का पता लगाया था।

लकड़ी जोड़ने का कारखाना

कारभार सरकार ने लकड़ी जोड़ने का एक कारखाना स्थापित किया है जो भारत में अपनी तरह का पहला है। इस कारखाने में लकड़ी चीरी और तैयार की जाती है और उसे जोड़ कर टरवाले, लिटकों तथा लकड़ी के अन्य सामान बनाये जाते हैं। यह श्रीनगर से सात मील आगे जम्मू के मार्ग पर पत्थरसे स्थापित किया गया है, ताकि भारों भरीने सामान लाने-ले जाने की सुविधा रहे। पाव ही मेला नदी बहती है, जिसमें कारखाने तक लकड़ों बहा ले आने में सहायता मिलता है।

कारखाना फरवरी १९५२ में स्वीडन की एक कंपनी की सहायता से बनाया गया था। तब से इस कारखाने से २ लाख रुपये से भी अधिक की आय हो चुकी है, जो कुल लागत पूंजी का दसवा भाग है।

औसत उत्पादन

कारखाना साल में औसतन ३६ हजार टरवाले और लगभग इतनी ही लिटकियाँ तैयार करता है। प्रतिवर्ष लगभग १४ लाख वर्ग फुट इमारती लकड़ी खर्च होती है। कारखाने में चाय की पेटियों, गोलाबारूद रखने के सन्दूक, फर्श की लकड़ी और परतदार पत्तने बनाई जाती हैं।

अधिकतर देवदार की लकड़ी ही काम में लार्ई जाती है परन्तु कुछ चीनों के लिए चीड़ और सते का भी उपयोग किया जाता है। वन विभाग के कर्मचारी कश्मीर की घाटी के पश्चिमी हिस्से से पेड़ चुनते और काटते हैं, जिन्हें मेला नदी की धार में बहा कर लाया जाता है।

इन लकड़ी की बलियों को नदी में ही एक किनारे लगा दिया जाता है ताकि उनको ताजापनी बनी रहे। बाद में बिजली की चरखी से इन्हें निचार्ने के लिए आगे की मशीन उतर्ण पहुँचाया जाता है।

इमारती लकड़ी का टाल

चीरने के बाद इस तख्तों को आकार-प्रकार के अयुष्टाएँ छोट कर सूखने के लिए ऐसे ढंग से रख दिया जाता है कि इन्हें हवा लगती रहे। यहाँ ये तखते लगभग पांच महीने तक रहते हैं। बाद में इन्हे काम में लाने के लिए उपयुक्त आकार में चीपा जाता है।

अब लकड़ी को सिमार्ने के कारखाने में ले जाते हैं। यहाँ सुखाने के कम्परे होते हैं। इनमें गर्म हवा छोड़ी जाती है। हवा की गरमी बनाये

रखने के लिए कमरे के चारों ओर कम्पानली लगी रहती है। हवा का रुख बदलने के लिए हवा बाहर फेंकने के भी पखे लगे रहते हैं जिससे तख्तों के सूखने का काम एकमा बना रहे।

अन्तिम तैयारी

लकड़ी को सोलन, टीमक, सुकड़ी, सबने और गलने से चवाने के लिए उस पर विशेष प्रकार के रासायनिक द्रव्य लगाये जाते हैं तथा उमे अधुनिकतम बैशरिक तरीके से 'दशवा' जाता है। इस प्रकार यह लकड़ी अधिक समय तक चवती है।

अन्त में इन तख्तों को कारखाने में ले जाते हैं, जहाँ इन्हें रेंता जाता है और खेस यथा वारिंश लगा कर इन पर पालिश कर दी जाती है। तब जोड़ने वाले कमरे में ले जाकर इनमें लेट करते हैं, बिनाओं को तेज करते हैं और पालिश आदि करके तैयार कर देते हैं। कारखाने में लकड़ी का सुरादा बर्ही भी नजर नहीं आना क्योंकि हर कमरे में हवा की नालिया लगी हैं जो इस सुरादे को खींच कर भट्टी तक ले जाती हैं। कारखाने में सिखा इस्के और कोई ई चय इस्तेमाल नहीं होता। इसके बाद परिवहन विभाग इन्हें अख्की तरह ग्राहकों के पास हिजाजत से पहुँचाता है।

बम्बई में तेलशोधनशाला का उद्घाटन

बम्बई में स्टैनवैक तेलशोधनशाला का उद्घाटन करते हुए, केन्द्रीय उपायन मन्त्री श्री के. सी. रेड्डी ने कहा कि भारत के औद्योगिक विकास में इस तेलशोधनशाला से जो सहायता प्राप्त होगी, वह अकथनीय है। जिस तेल से इस शोधनशाला का निर्माण हुआ है, उस पर हर किसी को गर्व हो सकता है।

श्री रेड्डी ने बताया कि अनेक वाषाओं के होते हुए भी शोधनशाला का निर्माण कार्य समय से ६ महीने पहले पूरा हा गया है। इस शोधनशाला के बन जाने से लोग यह समझ सकेंगे कि विदेशी पूँजी भारत के राष्ट्रीय विकास में फितनी सहायक हो सकती है।

श्री रेड्डी ने कहा कि भारत में सबसे आधुनिक ढङ्ग की यह पहली शोधनशाला है और स्वतंत्रता के बाद भारत में यह विदेशी पूँजी का सब से बड़ा नियोजन है।

भारत के तेल-साधन

तेल प्रकृति की देन है और भारत इस अनुल्प्य वस्तु से वंचित है। हाल ही में भारत सरकार ने बंगाल में तेल की खोज करने के लिये स्टैंडर्ड वैकुअम आयन कम्पनी के साथ एक करार किया है। इस कर्तवी में नाम शुरू कर दिया है भारत में मिट्टी का तेल काफी परिमाण में खर्च होता है, पर यह ज्यादातर बाहर से ही मगया जाता है।

स्वतंत्रता के बाद सरकार का ध्यान इस स्थिति की ओर गया और उसने बाहर से मगये हुए बच्चे तेल को साफ करने के लिए यहीं कारखाने बनाने का निश्चय कर लिया। भारत सरकार आरम्भ से ही इस बात को समझती थी कि विदेशी पूँजी और शिल्पिक कर्मचारियों की सहायता के

बिना कारखाने नहीं चवाने जा सकेंगे, इसीनय १९४२ में उनने स्टैंडर्ड वैकुअम आइल कम्पनी, मना शैल और कालेटैक इन तीन बड़ी तेल-कम्पनियों से सहायता मांगी। ये कम्पनिया कथया लगाने के लिए राजी हो गयीं और उन्होंने भारत सरकार के साथ करार कर लिये।

आयात पर निर्भरता

यह प्रश्न अकमर पूछा जाता है कि शोधनशालाओं के न जाने पर भी बिना माफ किया हुआ तेल तो बाहर से मगाना ही पड़ेगा, फिर इन शोधनशालाओं से क्या लाभ? यह ठीक है कि इन शोधनशालाओं के बन जाने पर भी हमको अशुद्ध तेल बाहर से मगाना पड़ेगा :—फिर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि अशुद्ध तेल मगाने और शुद्ध तेल मगाने में बहुत अन्तर है। अशुद्ध तेल एक तो आसानी से मिल जाता है, दूसरे कई स्थानों से मगया जा सकता है। साफ किया हुआ तेल सटिन्ता से मिलता है। यह भी बात है कि जब हमारे देश में ही तेल निकलने लगेगा तो स्थिति और भी सुपर जायगी।

तेल शोधनशालाओं से एक और तो विदेशी विनिमय की वचत होगी, दूसरी ओर इनके लान पर कर मिलने से राष्ट्रीय आय में वृद्धि होगी।

इन शोधनशालाओं से एक लाभ यह भी है कि बहुत से भारतीय नवयुवकों को तेल शोधन का प्रशिक्षण मिल जायगा। इस कम्पनी ने हमारे नवयुवकों को काम स्थलाने का वादा किया है। इस लिए अविष्य में तेल-शोधन के लिए भारत का विदेशी शिल्पिकों पर निर्भर रहना नपड़ेगा। इस से तेल के अलागा अन्य बहुत स उप उद्योग भी विकसित हगें।

यह स्टैनवैक शोधनशाला भारत के औद्योगिक विकास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। मुझे यह आन कर बड़ी प्रसन्नता है कि विशेषज्ञों की राय में इस की स्थिति बहुत अच्छी है।

इसोनियाज़िड (Isoniazid) उद्योग के संरक्षण की जांच

भारत सरकार ने मन्चय किया है कि भारत में इसोनियाज़िड (Isoniazid) उद्योग के मन्चय का प्रश्न सीमा शुल्क आयोग को मान्य के लिये दिया जाय। इस काम तथा व्यक्तियों को इस उद्योग अथवा इसोनियाज़िड की खपत पर निर्भर रहने वाले किसी उद्योग में दिलचस्पी हो और जो यह चाहते हा कि सीमाशुल्क आयोग उनके विचारों पर ध्यान दे, वे सेक्रेटरी, टेरिफ कमिशन, कन्ट्रैक्टर रिजिडेंट, निकल रोड, वेल्सर्ट, बम्बई १ को लिखें।

खली से तेल निकालने के कारखाने

खली में शेष रह जाने वाले तेल के अश को घोल प्रणाली द्वारा निकान लेने के कारखाने लगाने अथवा इस समय चालू कारखानों में विस्तार कर देने या उद्योग (निकास और नियमन) अधिनियम के अन्तर्गत जिन कारखानों को लाइसेंस देने का जुके हैं उन के विषय में भारत सरकार ने नये आदेश पत्र लेने का निश्चय किया है। इच्छुक व्यक्तियों को अपने आवेदन पत्र वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय के पास भेज देने चाहिये।

राष्ट्रीय विकास निगम के डाइरेक्टर

गत २७ अक्टूबर १९५४ को नई दिल्ली में राष्ट्रीय विकास निगम की एक प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी के रूप में रजिस्ट्री हुई है। निगम के बोर्ड में १५ डाइरेक्टर हैं। वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री टी० टी० कृष्णामाचारी इस बोर्ड के अध्यक्ष रहेंगे।

अन्य डाइरेक्टर इस प्रकार हैं : श्री बे० आर० डी० ताता, श्री वनश्याम दास बिड़ला, श्री श्रीगम, श्री वस्तू माई लातामार्द, श्री शान्ति प्रसाद जैन, श्री धीरेन्द्र एन० मिश्रा, डा० बे० सी० घोष, प्रो० डी० आर० गाडगिल, श्री एस० भूतलिंगम आर्य० सी० एच०, श्री एम० के० वेलोदी आर्य० सी० एस०, श्री पी० सी० मन्नाचार्य, श्री एस० एस० रेखा आर्य० सी० एस०, श्री के० आर० पी० आयराज और डा० ए० नागराज राव।

गृह उद्योग

हाथ करघा उद्योग की उन्नति

१७ नवम्बर १९५४ की सूचना के अनुसार भारत सरकार ने हाथकरघा उद्योग के विस्तार के लिये राष्ठीय को और अनुदान तथा ऋण देने की स्वीकृति दी है।

अखिल भारतीय हाथकरघा मंडल को 'क' और 'ल' भाग के राष्ठीयों के सामूहिक योजना क्षेत्रों में हाथकरघे की चीजों का प्रदर्शन करने के लिये २५ हजार रु० दिये गये हैं। ६७८६ रु० मंडलों को इसलिये दिये गये हैं कि मद्रास स्टेट हैंडलूम वीवर्स कोगेरेटिव सोसायटी ने लका के हाथकरघा एम्प्लॉयमेंट के लिये जो मोटर गाड़ी खरीदी है उसका रजर्च पूरा हो सके।

मध्य भारत को १,४५,१०५ रु० का अनुदान दिया गया है जो और धाली के अलावा एक रगाई केन्द्र खोलने के काम आयिया।

पाच दूकानें और एक गवेषणा केन्द्र स्थापित करने के लिये सौराष्ट्र को ६५,२६६ रु० का अनुदान दिया गया है।

कन्नड़ को २०,७५० रु० का ऋण और १६,५०० रु० का अनुदान दिया गया है। यह ऋण बुनकरों सहकार समितियों को पुनी और अनुदान हाथकरघे के बपड़े पर लूट देने तथा बर्षों के सुधार के काम आयिया।

मिथ प्रदेश को करघो का सामान खरीदने के लिये १४,५०० रु० का अनुदान दिया गया है।

मणिपुर को ८,६६० रु० का ऋण, प० बगाल ५,५०० रु० का अनुदान और दिल्ली को ५,२१० रु० का अनुदान दिया गया है।

खादी और ग्राम उद्योगों की उन्नति

१२ नवम्बर १९५४ को प्राप्त सूचना के अनुसार देश में खादी और ग्राम उद्योगों के विकास के लिये भारत सरकार ने अखिल भारतीय खादी और ग्राम उद्योग बोर्ड को और अधिक अनुदान तथा ऋण स्वीकृत किया है।

खादी का उत्पादन बढ़ाने के लिये बोर्ड को ६ लाख रुपये का ऋण दिया गया है। इस रकम में से राजस्थान खादी संघ, चौमू को ३ लाख रुपये और ग्राम उद्योग समिति, बम्बई को २ लाख रुपये दिये जायेंगे। यह रकम खादी उत्पादन के लिये औजारों तथा कच्चा सामान खरीदने में काम आयियागी।

बोर्ड को ५ लाख रुपये का अनुदान दिया गया है। यह खादी उत्पादक केन्द्रों व सत्याग्रहों के बड़े हुए पत्रों और घाटे को पूरा करने तथा नये केन्द्र खोलने के काम में लाया जायगा।

ग्राम उद्योग से बनी वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने के लिये बोर्ड को ५ लाख रुपये दिये गये हैं। यह रकम बाद में सरकार की सहायता मिलेगी।

दैहात के घानों के तेल की बिक्री बढ़ाने के लिये ४ लाख रुपये का अनुदान स्वीकृत किया गया है। यह रकम २॥ रुपये प्रतिमिटर की दर से तेल की बिक्री पर लूट देने के लिये काम में लायी जायगा।

खादी विकास के लिये ऋण

भारत सरकार ने अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड को २४ लाख रु० का और ऋण देना स्वीकार किया है। यह धन खादी विकास के लिये निम्न सत्याग्रहों को दिया जायगा :—

राधो आश्रम, मेरठ १० लाख रु०, बिहार खादी समिति मुजफ्फरपुर ३ लाख रु०, पंजाब खादी और ग्रामोद्योग सघ आदमपुर दोआब ३ लाख रु०, हैदराबाद खादी समिति, हैदराबाद ३ लाख रु०, सौराष्ट्र रचनात्मक समिति राजकोट ३ लाख रु० और राजस्थान खादी सघ, चौमू २ लाख रु०।

ये सत्याग्रह इस ऋण को अन्य कार्यों के सिवा रुई, जूत और रेशम तथा सत खरीदने में लगायेंगी। खादी उत्पादन से सम्बन्धित अन्य कार्यों के लिये आवश्यक कच्चे माल और औजारों को भी इस धन से खरीदा जायगा।

व्यापार की उन्नति

चीन से तन्हाकू और रेशम का करार

१४ अक्टूबर १९५४ को भारत और चीन के मध्य को ध्यानार करार हुआ है उसके अनुसार भारत और चीन की सरकारों ने भारत से चीन को

अधिक परिमाण में तन्हाकू भेजने और चीन से भारत को अधिक परिमाण में कच्चा रेशम भेजना स्वीकार किया है। इस करार के अनुसार ६० लाख पौण्ड वर्तिनिया तन्हाकू भारत से चीन भेजा जायगी और ६० टन कच्चा रेशम चीन से भारत आयिया।

चीन मेची जाने वाली ६० लाख पौण्ड तन्पात्र में से ४० लाख पौण्ड १६५३ की फसल में से और ४३ लाख पौण्ड चालू वर्ष की फसल में से दी जायगी। यह तन्पात्र ५ विभिन्न किस्मों की होगी और इसका मूल्य ४ आ० २ पाई प्रति पौण्ड से लेकर ७ आ० प्रति पौण्ड मर्राव, निशाखान-तनम और कांकोनाडा में ब्रह्मव नक छोड़ने के लिये होगा। चीन से आने वाली बच्चे रेयाम चार प्रकार का होगा और उसके मूल्य २८ से २६ शिलिंग प्रति पौण्ड (सी० आ२० एफ० भारतीय बन्दरगाह) तक होंगे।

बजार के अनुसार तन्पात्र और बच्चे रेयाम के सौदा के लिये एक मास की अवधि रती गई है। तन्पात्र के लिये वे सौदे चीन की ओर से राष्ट्रीय चीनी आयात और निर्यात निगम (National China Import & Export Corporation) और बच्चे रेयाम के लिये चीनी गणराज्य रेयाम निगम करेगा। भारत में सौदे उन व्यक्तिवा के साथ किये जायगे जिन्हें भारत सरकार दूसके लिये स्वीकृति देगी। इन सौदों की शर्तें दोनों सरकारों में स्वीकार कर ली हैं और वे बजार की अनुसूची में दी गई हैं।

चीनी सरकार ने अपने राष्ट्रीय चीनी आयात और निर्यात निगम द्वारा

१६५२ की फसल में से भी तन्पात्र का आयात करना स्वीकार किया है। इसी सम्बन्ध में भारत सरकार ने र्वीकृति प्राप्त व्यक्तियों के द्वारा उच्च किस्म के बेंसनेदी बच्चे रेयाम को मगना स्वीकार किया है।

बिजली की बत्तियों के पीतल के होल्डर

बिजली की बत्तियों के पीतल के होल्डर बनाने के उद्योग को सहाय्य दिये रहने के विषय में सीमाशुल्क आयोग (Tariff Commission) ने जो रिपोर्ट दी है उसमें यह भी लिफारिखा की गई है कि इन होल्डरों के समस्त निर्माताओं को अपने उत्पादनों पर "भारत में बना" के शब्द अवश्य अंकित करने चाहिए। भारत सरकार ने यह लिफारिखा स्वीकार करके भारतीय व्यापारी माल बिन्ड अधिनियम १८८६ (१८८६ के चौथे) के अन्तर्गत इस आशय की एक विधिति जारी कर दी है कि भारत में बनाने जाने वाले बिजली की बत्तियों के पीतल के होल्डरों और उनके गते के डिब्बा पर "भारत में बना" अवश्य लिखना चाहिए। यह आदेश ५ फरवरी १९५५ में लागू होगा जिससे निर्मातागण इस वा यथोचित रीति में पालन कर सकें।

व्यापार नियन्त्रण

कार्क से निर्मित वस्तुएं सामान्य खुले लाइसेंस से मुक्त की गई

भारत सरकार ने ११ नवम्बर १९५४ में भारतीय असाधारण गजट में प्रकाशित आदेश द्वारा यह घोषित किया है कि कार्क से निर्मित जिन वस्तुओं का उल्लेख अग्रन्त नहीं है और जो आर्ड० टी० सी० अनुसूची की क्र० संख्या १५४/४ के अन्तर्गत आती हैं, उन्हें खुले सामान्य लायसेंस न० ३६ से मुक्त कर दिया गया है।

कुल मद्रदा क्षेत्र से इनका आयात करने के लायसेंस १०० प्र० श० कोटा के आधार पर दिये जायगे। इसके लिये सम्बद्ध बन्दरगाहों पर १९ दिसम्बर १९५४ को या उससे पहले आवेदन पत्र देने चाहिए।

रूई पर निर्यात शुल्क

भारत सरकार ने निश्चय किया है कि मद्रिया, बालागिन, धोनेटा से० पी० १, सी० पी० २, मध्य भारतीय देशों रूई की किम्मा का निर्यात शुल्क १२ नवम्बर १९५४ से घटाकर २०० से १५० प्रति गाट (४०० पौंड की) कर दिया है। बगाल देशों रूई का निर्यात शुल्क १२५ से बढ़ा कर १५० प्रति गाट (४०० पौंड) कर दिया है।

बंगाल देशी रूई के निर्यात के अतिरिक्त कोटे

भारत सरकार ने बगाल देशी रूई के निर्यात के सम्बन्ध में निश्चय किया है कि १९५४-५५ के रूई वर्ष में २५,००० गाट अतिरिक्त निर्यात करने की अनुमति दी जाय।

अरुण्टी के तेल के निर्यात के अनिश्चित कोटे

यह निश्चय किया गया है कि पुराने निर्यातकों को निर्यात के लिये अरुण्टी के तेल के अति कोटे दिये जाय। बन्दरगाहों पर लायसेंस अधि-कारी पुराने निर्यातकों द्वारा जुलाई से अक्टूबर १९५४ की अवधि में किये गये निर्यात के ५० प्र० श० के वजाप के कोटे दिये जायगे। कम से कम कोटा ५ टन का होगा।

इन कोटों के अनुसार जनवरी १९५५ तक माल भेजा जा सकेगा।

चाय का निर्यात कोटा बढ़ा

भारत सरकार ने चाय की इस वर्ष की फसल में से निर्यात के लिये ४९,१७६ लाख पौण्ड दे दिये हैं। यह परिमाण प्रतिमानित निर्यात का १२० प्रतिशत है। फसल की स्थिति पर विचार करने पर सरकार ने प्रतिमानित निर्यात कोटे का ६ प्रतिशत मान और भी देने का निश्चय किया है। इस प्रकार निर्यात कोटे का राग १२६ प्रतिशत हो जाता है जबकि अधिक से अधिक १३५ प्रतिशत नेपात की अनुमति दी जाती है।

इस प्रकार निर्यात के लिए दी गई चाय का कुल परिमाण ४९,४६२ ३ लाख पौण्ड हो जायगा।

नाइजर तथा कराडों का निर्यात

नाइजर तथा कराडों के क्षेत्रों के निर्यात सम्बन्धों नीति पर विचार करके भारत सरकार ने निश्चय किया है कि ब्राडों इण्डियों के आधार पर दिसम्बर १९५४ तक इनके निर्माण लायसेंस खुल कर दिये जाय। परन्तु निर्यात के परिमाण की भी सीमा निर्धारित कर दी गई है उतने के ही लायसेंस दिये जायगे।

ब्रिटेन की जहाजी हड़ताल के दिनों में समाप्त लाइसेंस

भारत सरकार ने घोषित किया है कि ब्रिटेन के जहाज घाट की हड़ताल के दिनों में जिन आयात लाइसेन्सों की अवधि (रिशायत के १५ दिन मिला कर) समाप्त हुई है, उनके द्वारा १५ दिसम्बर १९५४ तक माल भराया जा सकेगा।

श्रम और रिशायती दिन नहीं दिये जायेंगे और इस बराई हुई अवधि के दिनों में कोई साखयत आरम्भ नहीं करना चाहिए।

सू'गफली के तेल का निर्यात शुल्क घटा

भारत सरकार ने मत् ४ नवम्बर १९५४ से सू'गफली का निर्यात शुल्क १.२५ रु० प्रति टन से घटा कर १.०० रु० प्रति टन कर दिया है।

वैज्ञानिक गवेषणा

नाहोर और पोलंग के तेलों का शोध

पूना की राष्ट्रीय रासायनिक गवेषणाशाला में साइन्स बनाने के काम आने वाले, नाहोर और पोलंग तेलों को साफ करने की विधि निकाली गयी है। नाहोर एक बंगाली वृक्ष है जो आसाम, बर्मा दक्षिण भारत, श्री लङ्का, अरुमान और पूर्वी बंगाल की पहाड़ियों पर बहुतायत से पाया जाता है। इसके फल की गिरी से ६० से ७७ प्र० श० तब तेल निकलता है जो लाल भूर रंग का होता है।

पोलंग का वृक्ष भी पश्चिमी प्रायद्वीप, उड़ीसा, दक्षिण भारत, बर्मा तथा श्री लङ्का में पाया जाता है। इसके फल की गिरी से भी ७०-७५ प्र० श० तेल निकाला जाता है। नाहोर के तेल में यह दोष है कि इसके साइन्स से काढ़े का रंग उजब हो जाता है। पोलंग के तेल में भी कुछ ऐसे तत्व होते हैं, जिनके कारण इससे साइन्स नहीं बनता जा सकता। नयी विधि से इन दोनों तेलों को साफ करके जो साइन्स बनाया जाना है उससे बपडे पर कोई रंग नहीं उतरता।

दुपारी सम्बन्धी गवेषणा के लिये नई योजनायें

भारत का केन्द्रीय दुपारी समिति ने अपने छठे वार्षिक अर्धवैशेषान में जो नई योजनाएँ स्वीकार कीं उन में से कुछ ये हैं :—पश्चिमी बंगाल में एक गवेषणा-उपकेन्द्र की स्थापना के लिये योजना, गोहाटी विश्वविद्यालय में चलाई जाने वाली दुपारी-उपोत्पादन के आधक द्रव्ये उपयोग सम्बन्धी योजना का विस्तार, मैसूर में नारियल और दुपारी की उपज के अर्धके इच्छक करने के लिये सम्मिलित योजना और आंध्र राज्य में एक दुपारी पौध पर की स्थापना के लिए योजना।

इस अर्धवैशेषान में बम्बई, मद्रास, मैसूर, तिरुवाकुर कोच्चल, पश्चिम बंगाल और आसाम राज्यों के कृषि-विभागों; पदाधिकारियों और उत्पादकों, व्यापारियों तथा उपभोक्ताओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। समिति ने विभिन्न योजनाओं की प्रगति के बारे में आये प्रतिवेदनो, पर विचार किया।

सरतों और राई के तेलों में मिलावट की पहचान

पूना की राष्ट्रीय रासायनिक गवेषणाशाला ने जो अनुसंधान किये हैं उनके परिणामस्वरूप यह पता लगा है कि राई और सरतों के तेलों की शुद्धता की जांच इन तेलों में पाये जाने वाले एक प्रकार के तेजाब, पर्याप्तिक एसिड की मात्रा जान लेने से हो सकती है। इस तरीके से यह

भी पता चल सकता है कि तेल में दूसरे तेल की कितनी मिलावट है।

वनस्पति तेलों की शुद्धता की जांच का प्रचलित तरीका अधिक गतोपजनक नहीं है। सरतों और राई में ५०-५७ प्र० श० पर्याप्तिक एसिड होता है और भारत में पाये जाने वाले दूसरे तेलों में यह थिरुकुल रही होता। अतः तेल के तत्वों की जांच से मिलावट सहज ही पकटी जा सकती है।

भारत में इंजीनियरिंग गवेषणा

इंजीनियरिंग गवेषणा बोर्ड की देर रैज में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक गवेषणा परिषद ने हाल में इस बात का पता लगाया है कि इंजीनियरिंग की विभिन्न शाखाओं में हुई प्रगति को ध्यान में रखते हुए देश में गवेषणा के विभिन्न साधन उपलब्ध है और इंजीनियरिंग कालेजों, संस्थाओं तथा उद्योग में गवेषणाओं के लिए क्या क्या सुविधाएँ मिलती हैं? यह कार्य भारतीय राष्ट्रीय भौतिक प्रयोग शाला, नयी दिल्ली के एन्साइड मैकेनिकल एण्ड मैटैरियल्स विभाग के प्रधान श्री वी० वाटम्बे को सौंपा गया था। उनकी खोज का विवरण 'इंजीनियरिंग रिसर्च इन इंडिया' शीर्षक प्रतिवेदन में प्रकाशित किया गया है।

श्री वाटम्बे द्वारा किये गये पर्यवेक्षण से ज्ञात होता है कि जहा एक शोर 'सिविल इंजीनियरिंग' तथा 'इलेक्ट्रिकल्स' और सिचाई के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है, बहा दूसरी ओर गवेषणाओं को किनामक रूप न देने के कारण, 'मैकेनिकल इंजीनियरिंग' गवेषणा तथा विकास कार्य नगण्य रही हैं।

इंजीनियरिंग उद्योगों में तीव्र प्रगति न हो सकने के मुख्य कारण ये हैं :—आधारभूत सामग्री की कमी, उपयुक्त मशीनों, औजारों आदि का अभाव, डिजाइनों तथा निर्माण के विषय में तकनीकल ज्ञान की कमी।

इस समय मशीनों तथा औजारों के डिजाइन विदेशों से मगाये जाते हैं। यदि देश में ही उनका विकास करना है, तो यह आवश्यक है कि काफी मात्रा में गवेषणा तथा विकास-कार्य किया जाय। विभिन्न प्रकार के औजारों तथा यंत्रों के लिए अलग अलग समूह बनाना आवश्यक है। कारखाने के तकनीकल कामों के सम्बन्ध में नरपूर गवेषणा पर भी जोर दिया गया है। य. भी कहा गया है कि कपडा, चीनी, तन्माजू तथा अन्य उद्योगों के लिये आवश्यक मशीनों के डिजाइन बनाने के लिये जांच पडताल की जाय।

श्रम

अगस्त के महीने में औद्योगिक भगड़ो

अगस्त १९५४ में औद्योगिक भगड़ो के अस्थायी आकड़ो से पता चलता है कि इस महीने नये भगड़े कुल ५४ हुए। इन में से ५३ भगड़ो में ३४,८२६ श्रमिकों ने भाग लिया। पिछले महीने भगड़ो की संख्या इससे अधिक थी, पर विवादास्पद श्रमिकों की संख्या कम थी। इस महीने ऐसा कोई समय न था, जब कि कम से कम ७३ भगड़े न चल रहे हों। इनमें से ७१ में ४६,६३६ श्रमिकों ने भाग लिया और ७० भगड़ों में ३,१४,६४५ श्रमिक-दिन की हानि हुई। इन आकड़ो से प्रकट होता है कि पिछले महीने की अपेक्षा इन महीने भगड़ो की संख्या में तो कमी हुई, पर विवादास्पद श्रमिकों की संख्या और श्रमिक दिनों की हानि बड़ गयी। इस महीने ८ भगड़े ताला-बन्दी के बारे में हुए। इनमें ६,८१८ श्रमिक शामिल हुए और इनमें १,२५,७५४ श्रमिक-दिनों की हानि हुई।

इस महीने ५१ भगड़े समाप्त हुए। इनमें से ३६ तो ऐसे थे जो ५-५ दिन से अधिक न चले, और ३ ऐसे थे जो ३०-३० दिन से भी अधिक चले। ३५ भगड़े कर्मचारियों के सम्बन्ध में और १३ हड़तों के सम्बन्ध में थे। भगड़ों में श्रमिकों को पूरी या आंशिक सफलता मिली, और २२ भगड़ों में श्रमिकों के असफल रहे। १७ भगड़ों का परिणाम अनिश्चित रहा और एक का पता नहीं हुआ।

राज्यों में, पाँचमी बंगाल का राज्य ऐसा था, जहाँ सबसे अधिक भगड़े हुए, सबसे अधिक श्रमिकों ने भाग लिया, और सबसे अधिक श्रमिक दिनों की हानि हुई। आंध्र, बिहार, मद्रास, पंजाब, उत्तर प्रदेश और दिल्ली में श्रमिक दिनों की हानि कम हुई।

उद्योगों में, बंगाल और छपड़ा उद्योग घने थे, जिनमें सबसे अधिक

श्रमिक दिनों की हानि हुई। नगरपालिकाओं, रूरु छोटे-छोटे के कारखानों और खानों में इस महीने कोई भगड़ा नहीं हुआ।

सितम्बर में नियोजन की स्थिति

सितम्बर १९५४ में काम ढिलाक केन्द्रों में नये नाम दर्ज कराने वालों की संख्या में कमी हो गई। दशहरे के दिनों में हमेशा यह कमी हो जाया करती है। परन्तु इसके साथ सूचित किये गये रिक्त स्थानों की संख्या में कुछ वृद्धि हो जाने से सितम्बर १९५४ के अन्त तक इन केन्द्रों द्वारा काम पाने में इच्छुक रजिस्टर्ड व्यक्तिों की कुल संख्या घट गई। इस मास में १,२२,३१२ व्यक्तियों ने अपने नाम दर्ज कराये, जब कि गत मास में १,२७,७२४ व्यक्तियों ने नाम दर्ज कराये थे। अगस्त मास में १४,३५७ व्यक्तियों को काम पर लगाया जा सका, जब कि गत मास में यह संख्या १२,०६२ रही थी। इस मास के अन्त में, काम ढिलाक केन्द्रों द्वारा काम चाहने वाले रजिस्टर्ड व्यक्तियों की संख्या ५,६०,५८८ रही। यह गत मास से अन्त तक के आकड़ों से ८,८२२ कम है। परन्तु निश्चय से शक होता है कि देश में नियोजन की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ।

इस मास के अन्त तक श्रम मन्त्रालय की प्रशिक्षण योजनाओं के अन्तर्गत ८,४०० व्यक्तियों को प्रशिक्षण संस्थाओं और केन्द्रों में ट्रेनिंग पा रहे थे। इनमें ६०५ विज्ञान और २,३०२ विस्थापित थे। इसके अतिरिक्त कौनों विद्यालयों की केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्था में १०८ उम्मेदवार शिक्षक व उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बंगाल में विस्थापितों के लिये "उम्मेदवार शिक्षण योजना" के अन्तर्गत ८३६ उम्मेदवार शिक्षार्थी प्रशिक्षण पा रहे हैं।

आयोजन और विकास

दूसरी पंचवर्षीय योजना के लिये राज्यों के प्रस्ताव

सबसे लोच समान में एक प्रश्न के उत्तर में बताया गया कि अगली तक केवल चार राज्यों ने दूसरी पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत बड़े उद्योगों की स्थापना और वर्तमान उद्योगों के विकास की अपनी योजनाएँ प्रस्तुत की हैं। इनका निम्नलिखित प्रकार है :—

मद्रास :— विद्युत् अर्काट में लिग्नाइट निकासना और फिर उसका उपयोग करना, राज में लोहे और इस्पात के कारखानों की स्थापना, अलूमिनियम के कारखानों की स्थापना, दापनाशम में कागज, मेट्रू में डी० डी० टी० आर० तृतीकोटिन में लोहे के कारखानों की स्थापना।

मैसूर :— मैद आयात एंड स्टील वर्क्स का विस्तार, सरकारी साजुन

कारखाने का विस्तार, फलों के रक्षा और डिब्बा में बन्द करने के कारखानों की स्थापना, मैसूर इन्स्टीट्यूट फैंडरी का यंत्रिकरण, सरकारी रेशम कारखाने का विस्तार, गणायनिक लाट, अलूमिनियम, चीनी, कागज तथा अन्य उद्योगों के उद्योग प्रारम्भ करना।

हैदराबाद :— रासायनिक खाद, बरानों के कारखानों की स्थापना, हैदराबाद और सिकन्दराबाद को गैस पहुँचाने के लिये एक कारखाना तथा २ हजार किलोवाट का बिजली घर बनाना।

राजस्थान :— जूजर मादस कारपोरेशन गणायनिक खाद का कारखाना, रेतडी में ताबा कारपोरेशन, दमगुम्फेन कारपोरेशन, सीमेंट गंधक कारखाना तथा बीकानेर और जयपुर में शर्मी और अलवर तथा बीकानेर में चीनी के बरताने के कारखानों स्थापित करना।

खाद्य और खेती

तेलहन की पैदावार बढ़ाई जाय

भारत की केंद्रीय तेलहन समिति की वार्षिक बैठक के उद्घाटन अवसर पर केंद्रीय कृषि मंत्री डा० पञ्जाबराय देशमुख ने भाषण में बतलाया गया है कि देश में तेलहन की पैदावार इतनी बढ़ाई जाय कि अपनी आवश्यकता पूर्ति के बाद भी कुछ तेल बाहर भेजा जा सके और विदेशी मुद्रा प्राप्त की जा सके।

पिछले साल मने आशा प्रकट की थी कि पहली पंचवर्षीय योजना में तेलहन की पैदावार का जो लक्ष्य ५५ लाख टन रखा गया है, पैदावार उससे अधिक होगी। हर्ष की बात है कि १९५२-५४ में तेलहन की पैदावार बहुत ही अच्छी हुई।

सुरक्षे ढंग

मैं आप को याद दिला दू कि धान की खेती में हमने सहज बुद्धि से काम लिया और हमें वह फल मिला जो बड़ी बड़ी गवेषणाओं से भी न मिल सकता था। धान के बारे में हमने जागना तरीके से जो कुछ किया वह और फसलों के बारे में भी किया जा सकता है। चाहे जागन हो या रूप, उनकी जैसी पैदावार बचने के लिये कार्यक्रमों और गवेषणा के क्षेत्र में हमें अभी बहुत कुछ करना है।

नियति बढ़ाने की आवश्यकता

हमें अपने देश की आवश्यकता के लिये ही और अधिक तेल नहीं चाहिये बल्कि निर्यात के लिये भी। इन सालों में हमारी नीति तेल का निर्यात बढाने की रही है। कई तरह के तेलों का निर्यात शुल्क ममाप्त कर दिया गया है और कई का घटा दिया गया है।

बीच वाली द्वाका शोषण किये जाने के बारे में डा० देशमुख ने कहा कि हमका इलाज सहकारी समितियाँ हैं और इनसे उत्पादक और उपभोक्ता दोनों का लाभ होगा। इस काम के लिये एक आसल भारतीय सहकारी हाट-व्यवस्था मंडली बनाई जा रही है। मुझे विश्वास है कि यह सत्यता तेलहन की विका की व्यवस्था की ओर भी ध्यान देगी।

भारत में अन्न की अधिकतम उपज

जून में समान, कृषि वर्ष १९५२-५४ में देश में ६ करोड़ ६० लाख टन अन्न (५ करोड़ ६१ लाख टन मुख्य खाद्यान्न और १६ लाख टन दालें) पैदा हुआ जो १९५५-५६ में पंचवर्षीय योजना लक्ष्य से ४४ लाख टन अधिक है। इस आधारे में अन्न की खेती का क्षेत्रफल भी हमेशा से अधिक रहा और यह २६ करोड़ १० लाख एकड़ था।

१९५२-५४ में क्षेत्रफल में भी काफी वृद्धि हुई। पंचवर्षीय योजना के आधारे वर्ष १९४९-५० में मुख्य अन्न की खेती का कुल क्षेत्रफल १६ करोड़ ५५ लाख एकड़ था जबकि सभी खाद्यान्नों की खेती का कुल क्षेत्रफल २४ करोड़ ५३ लाख एकड़ था। योजना में १९५५-५६ के अन्त तक मुख्य अन्न की खेती के क्षेत्रफल में १५ लाख एकड़ और सभी खाद्यान्नों

की खेती के क्षेत्रफल में ७ लाख एकड़ वृद्धि की व्यवस्था की गई थी। १६ करोड़ ७० लाख एकड़ भूमि में मुख्य अन्न की खेती का, और २४ करोड़ ६० लाख एकड़ में सभी खाद्यान्नों की खेती का लक्ष्य १९५२-५३ में ही प्राप्त किया जा चुका है जब कि सभी खाद्यान्नों की खेती का कुल क्षेत्रफल २५ करोड़ २० लाख एकड़ था। १९५२-५४ में सभी खाद्यान्नों की खेती के क्षेत्रफल में ६० लाख एकड़ की और वृद्धि हुई। इस तरह अन्न की खेती का कुल क्षेत्रफल २६ करोड़ १० लाख एकड़ से भी अधिक हो गया।

लक्ष्य से अधिक अन्न

यद्यपि खाद्यान्न की खेती का क्षेत्रफल १९५५-५६ के लक्ष्य से १९५२-५३ में ही बड़ गया था, परन्तु उत्पादन उस वर्ष १९५५-५६ के लक्ष्य से लगभग ३५ लाख टन कम रहा था। १९४९-५० में खाद्यान्नों का उत्पादन ५ करोड़ ४० लाख टन था और योजना में १९५५-५६ तक ७६ लाख टन के लक्ष्य तक पहुँचने की व्यवस्था थी। १९५२-५३ में उत्पादन ५ करोड़ ८२ लाख टन रहा। यदि ७६ लाख टन के लक्ष्य की योजना के ५ वर्षों में पाटा जाये, तो १९५२-५३ में उत्पादन ५ करोड़ ७० लाख टन हो जाना चाहिये। १९५२-५३ के उत्पादन में १९५३-५४ का ७६ लाख टन और जोड़ कर कुल संख्या ६ करोड़ ६० लाख टन हुई। इस तरह १९५३-५४ का उत्पादन न सिर्फ योजना के तीसरे वर्ष के अनुमानित लक्ष्य से ही ७५ लाख टन अधिक है, बल्कि १९५५-५६ के लक्ष्य से भी ४४ लाख टन अधिक है।

उत्पादन वृद्धि का कारण सिर्फ क्षेत्रफल की वृद्धि ही नहीं है, क्योंकि क्षेत्रफल में केवल ६४ प्र०श० की वृद्धि हुई है जबकि उत्पादन २२.२ प्र०श० बढ़ा है। यह स्पष्ट है कि १९४९-५० की अपेक्षा १९५३-५४ में प्रति एकड़ औसत पैदावार में वृद्धि हुई है। इस वृद्धि के, मौसम की अनुकूलता आदि कई कारण हैं।

अन्न वार उत्पादन

उत्पादन का अन्न वार विवरण इस प्रकार है :—

(करोड़ टनों में)

खाद्यान्न	पंचवर्षीय योजना का आधार वर्ष १९४९-५०	उत्पादन वृद्धि १९५२-५३/१९५३-५४	वास्तविक उत्पादन १९५५-५६	आयोचित उत्पादन १९५५-५६
चावल	२.३२	२.२५	२.७१	२.७२
गेहूँ	.६३	.७४	.७८	.८३
अन्न खाद्यान्न ...	१.६५	१.६२	२.१२	१.७०
कुल मुख्य अन्न	४.६०	४.६१	५.६१	५.२५
चना३७	.४२	.४६	—
दूसरी दालें४३	.४८	.५३	—
कुल मुख्य अन्न	.८०	.६०	.६६	.६१
कुल खाद्यान्न	५.४०	५.६१	६.६०	६.१६

१९५२ ५४ में चावल का उत्पादन १९५२ ५३ की अपेक्षा ४६ लाख टन बढ गया। १९५२ ५४ का आनुमानिक लक्ष्य २ करोड़ ५६ लाख टन था जबकि उत्पादन २ करोड़ ७२ लाख टन रहा। यह १९५५-५६ के अन्त में २ करोड़ ७२ लाख टन के लक्ष्य के लगभग बराबर है। चावल के उत्पादन में इस वृद्धि का कारण कुछ तो यह है कि १९५२ ५४ में ४ लाख एकड़ में अधिक जमीन में जापानी तरीके से धान की पौती की गई और कुछ मौसम की अनुकूलता है। १९५३ ५४ में गेहूँ का उत्पादन ७८ लाख टन रहा जो इस वर्ष के आनुमानिक लक्ष्य में ३ लाख टन अधिक है। १९५३-५४ में ज्वार-बाजरा तथा दूसरे मोटे अनाजों का उत्पादन भी काफी अच्छा रहा। यह १९५२ ५४ के १ करोड़ ६८ लाख टन के आनुमानिक लक्ष्य से लगभग ४४ लाख टन, १९५५ ५६ के १ करोड़ ७० लाख टन के लक्ष्य से ४० लाख टन अधिक है। १९५३ ५४ में चने का उत्पादन ४५ लाख टन रहा।

विदेशी आयात में क्या

अधिक उत्पादन के कारण विदेशी आयात में भारी कमी हुई है। १९५१ में भारत में २ अरब १६ करोड़ ७० टन की कच्चे विदेशी से ४७ लाख टन अन्न मगाना गया, परन्तु १९५२ में २ अरब १० करोड़ ६० से २६ लाख टन अन्न का आयात किया गया। १९५२ में आयात में और भी कमी हुई और ८६ करोड़ ६० के मुहाने से केवल २० लाख टन अन्न

का आयात किया गया। १९५३ में कुल जितने अन्न का आयात किया गया, १९५४ में अन्न तक उसका कुल पच्चा हिस्सा आयात किया गया है।

भारत में योजना अग्रिम के अन्त में प्रति व्यक्ति अन्न की खपत, प्रति मीट प्रतिदिन १५.८१ औंस आनी गई है। पोषण सलाहकार समिति द्वारा निर्धारित सतुलित खुराक प्रति मीट प्रतिदिन १७ औंस है। अनुमान लगाया गया है कि ३१ मार्च १९५४ को भारत की जनसंख्या २७ करोड़ ४० लाख थी और जापान की उपलब्धि प्रति व्यक्ति १७ ६५ औंस पैठौती है जो मतुलित खुराक में १.५ औंस अधिक है।

हाथ से कुटे चावल

भारत सरकार ने एक चावल वृद्धि सम्बन्धी समिति नियुक्त कर दा है जो इस बात का जांच करेगी कि देश में हाथ से चावल वृद्धि को किस प्रकार प्रोत्साहित किया जाता है और हाथ में कुटे हुए चावल से देश की किन्हीं आवश्यकता पूरी हो सकती है। यह समिति अगले दो तीन महीनों में विभिन्न राज्यों का दौरा करेगी। इस विषय पर जो व्यक्ति अथवा संस्था अपने सुझाव देना चाहेंगे उनका समिति स्वागत करेगी। वे सुझाव नेशनल, राउम मिलिंग कमेटी, राज्य मन्त्रालय, जामनगर हाउस, नई दिल्ली को भेजे जा सकते हैं।

फसल का अनुमान

खरीफ की दालों का प्रथम अनुमान

खाद्य और कृषि मन्त्रालय के अर्थ और अन्न विभाग ने अक्टूबर को जो छोड़ कर १९५४ ५५ की खरीफ की दाला का जो प्रथम अखिल भारतीय अनुमान लगाया है उनके अनुसार चालू वर्ष में इस दाला का क्षेत्रफल १,०१,४६,००० एकड़ है, जबकि गत वर्ष का समायोजित क्षेत्र १,०५,०६,००० एकड़ था। इस प्रकार गत वर्ष की अपेक्षा क्षेत्र में ३६,००,००० एकड़ अथवा ३० प्रतिशत की कमी हो गई है।

यह कमी अधिकांश के राज्यपाल, बम्बई, कच्छ और मध्य भारत में उत्पन्न है समग्र मौसम खराब रहने के कारण है। दाला के हिस्से में यह कमी बम्बई में अन्ध दाला के, हैदराबाद में कुल्थी के, कच्छ में मोठ के, और राजस्थान तथा मध्य भारत में 'पूरी दाला' के क्षेत्र में हुई है। दूसरी ओर उत्तर प्रदेश, हैदराबाद, मध्य प्रदेश और पंजाब में दाला का क्षेत्र बढ जाने तो क्षेत्र की कमी कुछ मामला तक पूरी हो गई। दालों के अनुमान वृद्धि उत्तर प्रदेश और हैदराबाद में उत्तरे के, हैदराबाद में मूग के और बम्बई में कुल्थी के क्षेत्र में हुई है।

इस अनुमान में मैसूर की जालकारी पहला बार सामंजसित की गई है। यह १९५४ ५५ में ७,५५,००० एकड़ और १९५४ ५५ में ७,५५,००० एकड़ रहा है।

इस अनुमान में साधारणतः अग्रस्त १९५४ के अन्न का अग्रिम आ गई है। तब तक फसल की दशा सामान्यतः अच्छा बताई गई थी। केवल बम्बई राज्य के कुछ स्थानों में फसल की गलत समय पर था हान और कुछ सीमा तक कीड़े मकोड़ों के कारण हानि पहुंची है।

अहरर का पहला अनुमान

खाद्य एवं कृषि मन्त्रालय के अर्थ व अन्न विभाग ने १९५४ ५५ में अहरर के अखिल भारतीय पहले अनुमान के अन्तर्गत चालू वर्ष में अहरर की खेती का क्षेत्रफल ५५ लाख २६ हजार एकड़ आया है, जबकि पिछले वर्ष यह ५४ लाख ५६ हजार एकड़ था। इस प्रकार खेती के क्षेत्रफल में ६५ हजार एकड़ (१.२ प्र.श.) की वृद्धि हुई है।

इस अनुमान में अग्रस्त १९५४ के अन्न तक की अग्रिम शामिल है। उस समय तक की फसल की स्थिति सतोरजनक बताई जाती थी।

मूंगफली का दूसरा अनुमान

अर्थशास्त्र और अन्नकल्प निर्देशालय ने १९५४ ५५ के तिने मूंगफली का जो अखिल भारतीय द्वितीय अनुमान प्रकाशित किया है, उसके अनुसार चालू वर्ष में १,०८,२३,००० एकड़ भूमि में मूंगफली बारी गई, जबकि १९५३ ५४ में १,०५,४०,००० एकड़ में ही बारी गई थी। इसमें प्रकट होता है कि मूंगफली के क्षेत्रफल में ७८३,०० एकड़ या ७८ प्र.श. की वृद्धि हुई।

चालू वर्ष में मौराड, हैदराबाद, बम्बई, मद्रास और मद्रास में मूंगफली अधिक बारी गई और मध्य प्रदेश तथा मध्य भारत में कम।

इस अनुमान में जो जानकारी दी गई है वह अक्टूबर १९५४ के अन्न तक की है। तब तक फसल की दशा सामान्यतः अच्छी बताई जाती थी। केवल अन्ध बम्बई, मध्यप्रदेश और मद्रास में वर्षा की कमी और कीड़ा म फसल का नुकसान हुआ था।

इस अनुमान में पहला बार मैसूर के विनारी जिले और उत्तर प्रदेश को शामिल किया है।

विविध

सितम्बर १९५४ में थोक मूल्यों का उतार-चढ़ाव

भारत सरकार के आर्थिक सलाहकार की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि (अगस्त १९३६ में समाप्त वर्ष की आधार) अर्थात् १०० मानते हुए) थोक मूल्यों का सरकारी सूचक अंक ०.५ प्र. श. और बढ़ कर ३८.५ हो गया। पिछले महीने यह अंक ३८.२.३ और पिछले साल ४०.३८ अर्थात् ४८ प्र. श. अधिक था। सितम्बर में 'ताद्य वस्तुओं' का अंक ०.३ प्र. श. बढ़कर ३३.३.६, 'औद्योगिक कच्चे माल' का अंक १.२ प्र. श. बढ़कर ४२६.०, 'अर्ध तैयार माल' का अंक ०.४ प्र. श. बढ़कर ३५३.३ और 'तैयार माल' का अंक ०.५ प्र. श. बढ़ कर ३७७.७ हो गया। 'कुटकर वस्तुओं का अंक ०.२ प्र. श. गिरकर ६००.८ रह गया।

साथ वस्तु-बलवत्ता और प्रियवता में वारस तथा अमृतम में गेहूँ का मूल्य बढ़ने के बावजूद भी ज्वार, बाजरा, पन्ना में वारस और हासुल में गेहूँ का मूल्य घटने के कारण 'प्राधान्य' समूह का अंक १.० प्र. श. गिरकर ४०.२ रह गया। अरहर की दाल का मूल्य बढ़ने के कारण 'दान' समूह का अंक १.४ प्र. श. बढ़कर २६६ हो गया। चने का मूल्य नीचे गिरा। चाय का मूल्य घटने के कारण 'अन्य ताद्य वस्तुओं' का अंक २.२ प्र. श. बढ़कर ३१६ हो गया। चीनी का मूल्य बढ़ा और गुड़ का मूल्य गिरा।

औद्योगिक कच्चा माल—कच्चे जूट और जूना का मूल्य बढ़ने के कारण 'रेश' वाली वस्तुओं का अंक ३.६ प्र. श. बढ़कर ४८.८ हो गया। बपास और कच्चे रेशम का मूल्य नीचे गिरा। मूंगफली, तिल और बिनासी का मूल्य गिरने के कारण 'तिसार' का अंक १.८ प्र. श. नीचे गिरकर ४३.३ रह गया। अलसी, रेंडी, गहूँ और खोपरा का मूल्य ऊपर चला। कच्चे मैंगनीज के मूल्य (बाहर भेजे जाने वाले) में बर्मा होने के कारण 'प्राग्नि' वस्तुओं का अंक २.६ प्र. श. गिरकर ४०.५ रह गया। कच्चे चमड़े और लारस का मूल्य बढ़ने के कारण अन्य औद्योगिक कच्चा माल का अंक १.२ प्र. श. बढ़कर ४०.६ हो गया।

अर्ध तैयार माल—माष और भेंसे के चमड़े के मूल्य में बर्मा होने के कारण 'चमड़े' का अंक ०.३ प्र. श. नीचे गिरकर ३७.१ रह गया। बफरी और भेड़ के चमड़े का मूल्य ऊपर गया। 'खनिज तेल' का अंक २.२१ रह गया। तिल के तेल को छोड़ कर बाकी सभी प्रकार के तेलों का मूल्य बढ़ने के कारण 'बनस्पति तैल' का अंक ०.० प्र. श. बढ़कर ४४.६ हो गया। 'सूत' का अंक ०.४ प्र. श. घटकर ४५.५ रह गया। 'पातुओं' का अंक ०.८ प्र. श. घटकर २२६ हो गया। मूंगफली और तिल की खली के मूल्य बढ़ने के कारण 'तेल की खली' का अंक १.२ प्र. श. बढ़कर ४१६ हो गया। नारियल के रेशे का मूल्य घटने के कारण 'अन्य अर्ध तैयार माल' का अंक १.३ प्र. श. बढ़कर ३०.५ हो गया।

तैयार माल—जूट की वस्तुओं का मूल्य बढ़ने के कारण 'कपड़ा

उद्योग' का अंक १.० प्र. श. बढ़कर ४२.२ हो गया। सूती वस्तुओं का अंक ०.२ प्र. श. घटकर ४१.५ और नकली रेशम तथा रेशम की वस्तुओं का अंक १.५ प्र. श. घटकर ४५.६ रह गया। 'पातुआ' और 'अन्य तैयार माल' के अंक पिछले महीने से अर्धों में ही बराबर क्रमशः १.५ और २.८ रहे हैं।

कुटकर—तामाखू की पत्ती, ईंट और दाइल (पररैल) का मूल्य गिरने के कारण समूह का अंक ०.२ प्र. श. नीचे गिरकर ६०७.८ रह गया। फलकते में काली मिर्च, लात मिर्च, हल्दी और जीरा, मंगलौर में कानू, तथा पान के मूल्य बढ़े।

थोक मूल्यों के साप्ताहिक सूचक अंक

६ अगस्त १९५४ को समाप्त सप्ताह

भारत सरकार के आर्थिक सलाहकार के बार्थालय की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि (अगस्त १९३६ में समाप्त वर्ष का आधार) बराबर १०० मानते हुए) ६ अक्टूबर, १९५४ को समाप्त सप्ताह में थोक मूल्यों का सरकारी सूचक अंक ०.५ प्र. श. और गिरकर २८.२.४ हो गया। पिछले महीने के इसी सप्ताह की अपेक्षा यह अंक ०.५ प्र. श. और पिछले साल के इसी सप्ताह की अपेक्षा ३.३ प्र. श. फिर भी कम है।

१६ अक्टूबर १९५४ को समाप्त सप्ताह

अगस्त १९३६ को समाप्त वर्ष को आधार १०० मानकर थोक मूल्यों का सूचक अंक १६ अक्टूबर १९५४ को समाप्त सप्ताह में पिछले सप्ताह से ०.३ प्र. श. बढ़कर ३८.३.६ हो गया। पिछले सप्ताह यह अंक ३८.२.४ था। यह सूचक अंक एक महीने पहले के सूचक अंक के बराबर ही रहा पर पिछले साल के इसी सप्ताह से २.७ प्र. श. कम रहा।

२३ अक्टूबर १९५४ को समाप्त सप्ताह

अगस्त १९३६ में समाप्त वर्ष को आधार अर्थात् १०० मानते हुए, २३ अक्टूबर १९५४ को समाप्त सप्ताह में थोक मूल्यों का सरकारी सूचक अंक ०.४ प्र. श. और गिरकर ३८.२.४ रह गया। पिछले महीने के इसी सप्ताह की अपेक्षा यह अंक ०.६ प्र. श. और पिछले साल के इसी सप्ताह की अपेक्षा २.८ प्र. श. नीचा है।

३० अक्टूबर को समाप्त सप्ताह

३० अक्टूबर १९५४ को समाप्त सप्ताह में थोक मूल्यों का सरकारी सूचक अंक (अगस्त १९३६ को समाप्त वर्ष को आधार १०० मानकर) पिछले सप्ताह के सूचक अंक, ३८.२.३ से, ०.८ प्र. श. घटकर ३७.६.३ प्र. श. रह गया। पिछले महीने और पिछले साल के इसी सप्ताह के सूचक अंकों से भी यह ०.३ प्र. श. और ३.८ प्र. श. कम रहा। अक्टूबर मास का सूचक अंक ३८.१.६ रहा। सितम्बर मास का सूचक अंक ३८.५.४ रहा और अक्टूबर १९५३ का ३६.३.६ रहा था।

६ नवम्बर १९५४ को समाप्त सप्ताह

भारत सरकार के आर्थिक सलाहकार के कार्यालय से प्रकाशित एक विशिष्ट मे बताया गया है कि (अगस्त १९३६ मे समाप्त वर्ष आचार १०० मानते हुए) ६ नवम्बर १९५४ को समाप्त सप्ताह मे थोक मूल्यों का सरकारी सूचक अंक ०.४ प्र० श० ४८ नर ३००.६ हो गया। पिछले महीने और पिछले साल के इन्हीं सप्ताह की अपेक्षा यह अंक क्रमशः ०.४ प्र० श० और २.८ प्र० श० कम है।

थोक कीमतों के झांकड़े : जांच समिति की सिफारिशों

कृषि पदार्थों की कीमतों के बारे में जांच-पड़ताल करने के लिये जो समिति बनाई गयी थी उसकी मुख्य सिफारिशों इस प्रकार हैं।—थोक कीमतों की सूचना देने के लिए उपयुक्त संस्था की स्थापना, कीमतों के बारे में जानकारी के समग्रण पर समुचित देख-रेख की व्यवस्था, और इस समय विभिन्न अभिकरणों द्वारा सघटीत जानकारी का वैज्ञानिक।

यह समिति गत वर्ष नवम्बर मे भारत सरकार ने कृषि पदार्थों की कीमतों के बारे में सूचना देने वाली वर्तमान संस्था की जांच करने के लिये और उनके सुधार के उपाय सुझाने के लिये बनाई गई थी। समिति ने इस बात की जांच की है कि केन्द्र और राज्यों मे इस समय कीमतों के बारे में जानकारी प्राप्त करने की क्या व्यवस्था है, और जांच पड़ताल करने के बाट यह इस परिणाम पर पहुँची है कि यहाँ पर इस समय थोक कीमतों के बारे में बाकी जानकारी एकर की जा रही है, परन्तु उसके एकर करने, निरलेखन करने और काम मे लाने का टकर ठीक नहीं है। कुछ राज्यों में जानकारी एकर करने के कार्य की समुचित देख-रेख भी नहीं की जा रही। समिति का कहना है कि न तो केन्द्रों का सुचारु टिक डकर से किया जाता है, न 'थोक कीमत' का अर्थ ही समझा जाता है, और न जानकारी का एक टाक प्रकाशन ही होता है। इन त्रुटियों के कारण उपलब्ध जानकारी आधार पर कीमतों के उतार-चढ़ाव के बारे में टिक टिक परिणाम नहीं निकाले जा सकते।

कीमतों के बारे में सूचना देने के लिये संस्था

समिति की मुख्य सिफारिश थोक कीमतों की सूचना देने के लिये उपयुक्त अभिकरण स्थापित करने के बारे में है। जिन राज्यों मे कृषि-पदार्थ-नाबार कानून लागू हो गया है और उस कानून के अनुसार नियमित राजार स्थापित हो गये हैं, उन राज्यों मे वाजार-समितियों के कर्मचारी कीमतों के बारे में सूचना देने के सर्वोत्तम साधन हैं। जिन राज्यों मे ऐसा कानून नहीं बना बहा रहती ही न जाना चाहिये और लागू हो जाना चाहिये, ताकि बहा भी कीमतों की सूचना देने के लिये आवश्यक अभिकरण

स्थापित किया जा सके। समिति ने विभिन्न राज्यों में निर्धारित बाजारों की भिन्न-भिन्न प्रणालियों का भी अध्ययन किया है और हेतुवाद की प्रणाली को अपनाने की सिफारिश की है।

समिति ने कीमतों की जानकारी को इकट्ठा करने के काम की समुचित देखभाल की आवश्यकता पर विशेष जोर दिया है और यह बताया है कि किस राज्य में किस अभिकरण से यह काम लेना चाहिये। बहा, बाजार-अभिकरणों के द्वारा कीमतों के आंकड़े इकट्ठे किये जाते हैं। बहा हार-व्यवस्था विभाग के अफसरों से यह काम लेना चाहिये, अन्यथा पूरा समय देकर काम करने वाले इन्स्पेक्टर नियुक्त कर लेने चाहिये।

निरीक्षण की स्थायी व्यवस्था के सम्बन्ध में समिति ने यह सिफारिश की है कि प्रत्येक जिले से एक अक-समग्रण अफसर नियुक्त किया जाव जो सब प्रकार के आंकड़ों के समग्रण-कार्य भी देखभाल करे।

कीमतों की जानकारी का वैज्ञानिक

समिति की एक और मुख्य सिफारिश कीमतों की जानकारी के वैज्ञानिक के सम्बन्ध में है। समिति ने यह सुझाया है कि जिला-अधिकारियों, राज्य सरकार, केन्द्रिय खाण और इतिमन्त्रालय तथा वाणिज्य एवं उद्योग मन्त्रालय में आर्थिक सलाहकार को कीमतों के बारे में सूचना देने के लिये बाजार केन्द्रों की चार स्तिया तैयार की जायें। खाण और कृषि मन्त्रालय से कहा गया है कि वह अगल तथा अन्य कृषि पदार्थों की थोक कीमतों के सूचक अक प्रादेशिक आधार पर और मो अकि केन्द्रों के बारे में तैयार करने का उपक्रम करे तथा कीमतों के उतार-चढ़ाव के स्पष्ट ज्ञान के लिये बड़े बड़े राज्य भी थोक कीमतों के सूचक अक तैयार करने की बात सोचें।

प्रतिवेदन के प्रौद्योगिक पहलू

समिति ने कीमतों सम्बन्धी प्रतिवेदन के प्रौद्योगिक पहलू पर भी विचार किया है और पहली बार मभस्त मूल्य अक समग्रण-अभिकरणों द्वारा अपनाये जाने के लिये एकमा तरीका निश्चित किया है और व्यापारिक पदार्थों की किस्म और श्रेष्ठता के परिमाण की और विशेष रूप से ध्यान आकर्षित कराया है।

यद्यपि समिति की मुख्य सिफारिश थोक कीमतों के ही बारे में है, उसने लुन्दा कीमतों के बारे में भी सुझाव दिये हैं।

भारत सरकार ने सामान्यतः समिति की सिफारिशों को मान लिया है और उन्हें राज्य सरकारों तथा अन्य सरकारी विभागों के पास परिपालन के लिये भेज दिया है। आशा की जाती है कि इन सिफारिशों के परिपालन से कीमतों सम्बन्धी आंकड़े अधिक विश्वसनीय हो जायेंगे और उनका सफल टिक डकर से होने लगेगा।



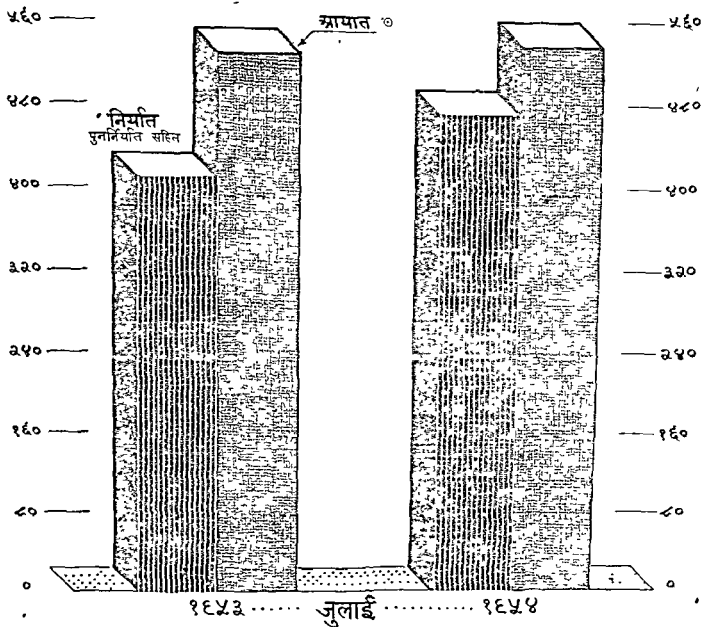
ग्राफ विभाग

१. भारत का विदेशी व्यापार ।
२. आयात की चुनी हुई वस्तुएं ।
३. निर्यात की चुनी हुई वस्तुएं ।
४. कच्चे और निर्मित माल के स्टॉक ।
५. कच्चे और निर्मित माल का उपभोग ।

भारत का विदेशी व्यापार

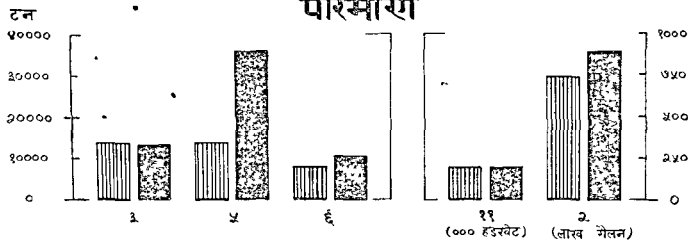
समुद्र, वायु और स्थल द्वारा

दस लाख रुपयों में



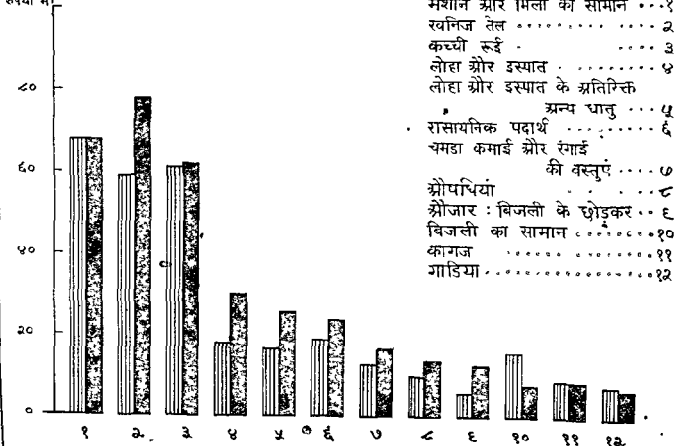
सकमण व्यापार छोड़कर परन्तु अनाज, स्टीर्स आदि के लिये किये गये उस आयात को मिला कर जिसका विस्तृत विवरण क्रमा उपलब्ध नहीं हुआ है।

आयात की चुनी हुई वस्तुएं परिमाण



मूल्य

दस लाख
रुपये में



- १९५३ १९५४
- मशीने और मिलो का सामान १
 - रयनिज तेल २
 - कच्ची रूई ३
 - लोहा और इस्पात ४
 - लोहा और इस्पात के अतिरिक्त
अन्य धातु ५
 - रासायनिक पदार्थ ६
 - चमड़ा कमाई और रंगाई
की वस्तुएं ७
 - औषधियां ८
 - औजार : बिजली के छोड़कर ९
 - बिजली का सामान १०
 - कागज ११
 - गाड़ियां १२

अ. पोष
म. प्र. प्र. प्र.

निर्यात की चुनी हुई वस्तुएं

1944 जुलाई 1943

परिमाण

मूल्य

दस लाख गज
करपे का कपड़ा

दस लाख रुपये में

मिल का कपड़ा

००० हडरवेट
तेल

पमड़ा और रवाले,
कच्ची

पमड़ा और रवाले,
कमायी हुई

लारव

अबरक

काली मिर्च

००० टन
रुई कच्ची

काजू की गिरी

जूट का माल

रबनिज मेंगनीज

दस लाख फीट
तम्बाकू कच्ची

चाय

००० फीट
ऊनी कालीन और
कम्बल

32 1943

116

32 1944

120 100 80 60 40 20 0

0 20 40 60 80 100 120

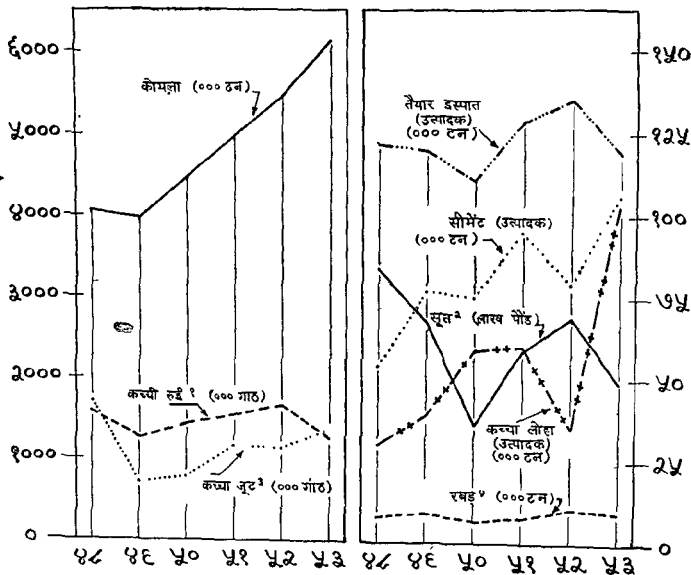
आ घोष
म श प्रभान

सेन्दल स्टैटिस्टिकल ऑर्गेनाइजेशन, ६ 220/१० ४५-2

कच्चे और निर्मित माल के स्टॉक

प्रति वर्ष के अन्त में

— ३ —

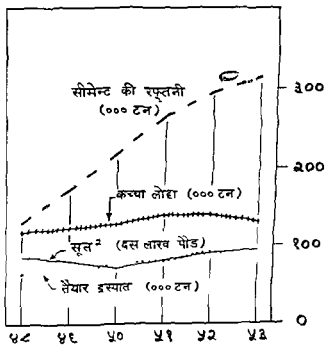
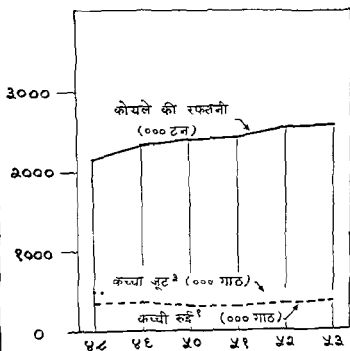
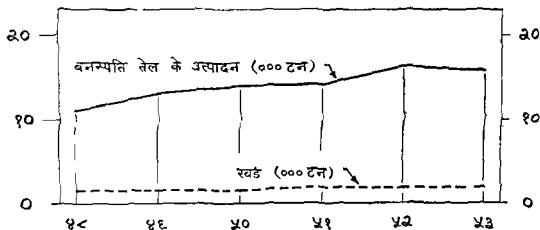


- (१) ये आंकड़े मिलों में मौजूद स्टॉक के हैं। वार्षिक आंकड़े ३१ अगस्त को, समाप्त वर्ष के सम्बन्ध में हैं। १ गांठ = ३६२ पौंड।
- (२) ये आंकड़े भारतीय जूट मिल्स एसोसियेशन के सदस्य मिलों के हैं। १ गांठ = ४०० पौंड।
- (३) ये आंकड़े लून मिलों की स्वयं के हैं जो कतार्ड और बुनाई दोनों करते हैं।
- (४) रबड़ के बगीचों, व्यापारियों और निर्माताओं के पास उपस्थित स्टॉक भी इसमें सम्मिलित हैं।

प्र. चौध
म. मं. प्रधान

कच्चे और निर्मित माल का उपभोग

मासिक औसत



- (१) ये आंकड़े मिलो मे हुई रफ्तानी के हैं और मासिक औसत ३१ अगस्त को समाप्त वर्ष के सम्बन्ध में हैं। १ गाठ = ३६२ शुद्ध पीड।
- (२) ये आंकड़े उन मिनो मे होन लाली रफ्तानी के हैं जो क्वार्टी और बुनाई शेनो करते हैं।
- (३) भारतीय इंडियन एसीटिक कं. लि. के सदस्य मिला की रफ्तानी के आंकड़े।

सांख्यिकी विभाग

१. औद्योगिक उत्पादन^१ (१) बुनाई उद्योग

वर्ष	१ सूत (लाख पौंड)	२ सूती बगडा (लाख गज)	३ [क] जूट का मांज (००० टन)	४ [ख] ऊना मांज (००० पौंड)	५ पट्टे (टन)
१९४६	१३,६६०	३६,०-४	१,०-०४	२७,०००	६९५६
१९४७	१२,६६०	३७,६२०	१,०५१२	२४,०००	६६००
१९४८	१४,४७२	४३,१-०	१,०-५	२०,००४	४०२०
१९४९	१३,५६६	३६,०४-	६४५६	२१,०००	५११०
१९५०	११,७४८	३६,६६८	८५५२	१८,०००	६७५६
१९५१	१३,०४४	४०,७६४	८७५८	१७,७००	७०६२
१९५२	१४,४६६	४५,६-४	६५१६	१६,५-४	७३५६
१९५३	१५,०६०	४८,६००	८६८८	१७,०२८	७३५६
१९५४ जनवरी	१,३१७	४,१७	६७३	१,२२०	६८०
फरवरी	१,२२१	३,६७६	६८३	१,३७४	५६०
मार्च	१,२५२	४,०४-	७५६	१,३१८	५३०
अप्रैल	१,२६०	४,२६०	७५०	१,२३४	६४०
मई	१,२६०	४,२७०	७३३	१,४३७	७००
जून	१,२८०	४,३२०	७४६	१,६०२	६००
जुलाई	१,३६०	४,४१०	८०७	१,७८२	७७०
अगस्त	१,३२०	४,१६०	७८२	१,७५६	अप्रगत
सितम्बर					
अक्टूबर					
नवम्बर					
दिसम्बर					

[क] अगस्त १९४६ ने ये आकड़े इण्डियन जूट मिल्स एसोसियेशन की सदस्यता वाले मिलों तथा एक गैर सदस्य मिल के उत्पादन के सम्बन्ध में हैं। [ख] इसमें बम्बू और कर्मीर के आकड़े भी सम्मिलित हैं।

(२) लोहा और इस्पात

वर्ष	कच्चा लाहा (००० टन)	शीपी बलार्ड (००० टन)	लोह मिश्रित धातु (००० टन)	इस्पात के पिण्ड और क्लार्ड (००० टन)	अपूर्ण तैयार इस्पात (००० टन)	तैयार इस्पात (००० टन)	इस्पात की मिलियाँ (टन)
१९४६	१,३५६४	७५६	१,२६	१,२६३६	१,०३०८	८६०४	
१९४७	१,३२००	६७२	१००	१,२५६४	१,०३७२	८६२८	
१९४८	१,४०५२	५१६	७२	१,२५६४	१,०११६	८५६८	
१९४९	१,५२७६	६३६	१६२	१,३५२४	१,०५२४	६३००	
१९५०	१,५६२४	६५४	१००	१,४३७६	१,१४२४	१,००४४	४७०४
१९५१	१,७०८८	६२४	३३०	१,५०००	१,२४८२	१,०७६४	४२७२
१९५२	१,६५४८	१,२६६	४०८	१,५७००	१,३०८०	१,१०२८	४५६०
१९५३	१,६५४८	१,१५२	७२	१,५७७२	१,२२००	१,०१७६	२१४८
१९५४ जनवरी	१,३३२	७३	०३	१,५५२	१,३११	१,०६७	शून्य
फरवरी	१,४४०	१२३	०३	१,३२६	१,१४२	६६१	१२१
मार्च	१,५६१	७७	०३	१,४७५	१,२५६	१,१४५	अप्रगत
अप्रैल	१,२८६	१००	०४	१,२८७	१,०६७	६६१	अप्रगत
मई	१,४३८	११८	०४	१,२७७	१,०६४	६८२	अप्रगत
जून	१,२८४	१३६	५८	१,३१०	१,१५६	६६६	अप्रगत
जुलाई	१,५६०	१२३	५८	१,४१४	१,२२५	१,०२६	अप्रगत
अगस्त	१,५१५	१२३	६३	१,३३३	१,२३५	६७०	अप्रगत
सितम्बर							
अक्टूबर							
नवम्बर							
दिसम्बर							

● नवीन रिपोर्टों के अनुसार इन अंकों में संशोधन हो सकता है।

१. औद्योगिक उत्पादन

[३] धातु उद्योग

वर्ष	१३ लकड़ी के पेच (००० प्रोस)	१४ मशीनी पेच (००० प्रोस)	१५ रेजर ब्लेड (लाख)	१६ हरिनिन लालटेन (०००)	१७ गैस के लैम्प (०००)	१८ तामचीनी का सामान (००० सख्या)	१९ बर्गार्ड हार्ड धातु (टन)	२० ड्रिलिंग (सख्या)
१९६४				४७०.४	१५.६			
१९६७	७४.४			६०६.२	१६.२	८,५३२.०	६७२	१६८
१९६८	१६८.०	११.२		६७६.२	१८.४	८,७६२.२	१,५६.४	१७८
१९६९	१३४.४	८७.६	७४.६	१,७२८.०	३२.४	६,५८०.४	१००	५४१
१९६०	७०१.२	१५६.६	१०६.८	२,८०६.८	३८.४	५,५४४.६	२,१५८	७४१
१९६१	७६६.८	११७.२	२३६.२	३,६७६.८	६२.४	८,१३०.०	१,८६६	१,५६०
१९६२	१,६२६.६	१५७.६	१००.०	३,५२३.२	६२.४	७,६६०.८	२,०१६	१,०१६
१९६३	२,५७१.६	१६०.०	२३१.६	४,३१२.८	३०.०	६,५८३.६	१,६५६	६२४
१९६४ जनवरी	२६२.१	१८.३	५.२	४०२.७	१.१	१,१८६.५	१८२	१०२
फरवरी	३१०.६	१६.४	५.७	४५६.४	१.६	१,१७६.६	२२४	६५
मार्च	४५६.३	२२.०	६.४	४०८.५	२.४	१,११६.२	२२४	८०
अप्रैल	४१२.०	२०.३	८.१	४२३.५	३.६	१,१६६.२	१७०	१२०
मई	४२२.६	२०.६	६.२	४१७.७	३.६	१,१६७.६	२३६	६५
जून	४१२.०	१८.४	६.६	४३१.१	५.२	१,१६८.३	२२५	२८
जुलाई	४२२.०	१७.८	१११.७	४६२.२	६.७	१,१६३.२	३३७	७४
अगस्त	४५७.०	अज्ञात	अज्ञात	४६०.६	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात
सितम्बर								
अक्टूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								

[४] मशीनें (बिजली की मशीनों के अतिरिक्त)

वर्ष	२१ डीजल इंजन (सख्या)	२२ इंजन चलित पम्प (०००)	२३ सिलाई की मशीनें (सख्या)	२४ मशीनों के औजार (मूल्य ००० रुपये)	२५ ट्रिबल ड्रिल (०००)	२६ केलिंको कच्चे (सख्या)	२७ रिंग स्पिनिंग मैकन (पूर्ण) (सख्या)	२८ पिसार्ड के चक्के (००० पीट)	२९ धुमने वाली चपटो (सख्या)
१९६६	४६८		६,१२० [ग]	६,१२४.८	६२.६				
१९६७	६८४	६.०	६,८६६	४,५८७.६	२३६.२				
१९६८	१,०२०	८.४	२०,०१६	४,५७१.२	२७६.०				
१९६९	२,०७६	१४.४	२५,०३२	४,७२६.२	४००.८				
१९६०	४,५६६	३०.०	३०,८८८	२,६३०.४	५७७.२				
१९६१	७,२४८	४०.०	४५,५६०	४,७३०.४	१,०१७.६	२,२८०	२७६	५००.४	
१९६२	४,२४८	३२.४	५०,०४०	४,५३७.६	७७५.२	१,१६८	२८८	८१६.२	
१९६३	३,७२०	२५.२	६२,४५४	४,५७७.६	३३४.८	१,८१२	२०४	८०७.६	
१९६४ जनवरी	६६५	२.५	६,७६५	३०२.१	३६.५	१४	१००.३	३३	
फरवरी	५५५	२.४	७,११७	३२५.७	३६.८	२५	१०८.१	२०	
मार्च	७१६	२.६	७,०३६	४४०.१	४७.४	४०	६२.४	३०	
अप्रैल	६८०	२.३	७,२५७	४३५.७	४०.१	१४२	१४	३०	
मई	६६२	२.३	६,८१६	४७०.१	४६.१	१६८	१५	३६	
जून	७७३	२.६	६,५७०	४३१.०	२७.३	१६६	१५	४०	
जुलाई	७०४	२.७	७,१०५	४५१.१	३६.६	१८७	२३	४०	
अगस्त	अज्ञात	अज्ञात	६,४१८	अज्ञात	४१.२	अज्ञात	अज्ञात	अज्ञात	
सितम्बर									
अक्टूबर									
नवम्बर									
दिसम्बर									

[ग] निर्माण सम्पन्धी गणना से प्राप्त आँकड़े।

१. औद्योगिक उत्पादन

[५] अलौह धातुएं

वर्ष	३० अलुमीनियम (टन)	३१ जुलमा (टन)	३२ तॉना (टन)	३३ सीसा (टन)	३४ लोहे से अस्मन्बद्ध धातुओं के नल (टन)	३५ सीसा (औंस) [घ]
१९४६	२,२३६ ४	१३२०	६,३२० ८	१८८ ६	१८८ ६	२,३२१,७७२
१९४७	२,२१४ ८	२३५२ २	५,६३१ ६	६२५ २	३२५ ०	२,७२,७००
१९४८	२,३६१ २	३३००	५,८६४ ४	५६४ ०	३५४ ०	२,८०,८५२
१९४९	३,४८६ ६	३७५६ ६	६,३६० ०	६५४ ०	३६४ ०	२,९४,२४८
१९५०	३,५८६ ४	३७५६ ६	६,५१४ ४	६५४ ०	३६४ ०	२,९६,८८८
१९५१	३,८४८ ४	३२७६ ६	७,०८१ ६	८५६ ०	३४४ ०	२,९६,२४६
१९५२	३,५६६ ४	३,७६६ ४	६,०७६ ४	१,१३१ ६	३७० ८	२,५५,६००
१९५३	३,७८८ ४	३,७८८ ४	५,६२० ०	१,१३१ ६	३५७ ६	२,५६,०२०
१९५४ जनवरी	३,०२३	६ २	३३० ०	३०५	२०५	३६,२८६
फरवरी	२२११ २	४४ ०	६२० ०	३२५	३६ ८	३६,८२६
मार्च	३,०८५ ४	३७ ६	६५५ ०	२००	३६ ८	२०,६०१
अप्रैल	३,७७८ २	५२ ०	६२० ०	२६७	० ६	२०,८२५
मई	३,६५१ २	४० ०	६१५ ०	३२०	२ ६	२०,६८५
जून	२,२४४ ६	५६ ०	५६० ०	८५	२ ५	२२,२०२
जुलाई	४६८ ६	५ ८	६२० ०	३५०	१ ७	३२,१३७
अगस्त	५,१५ ६	३५ ०	६०६ ०	३३६	३ २	३२,८८६
सितम्बर						
अक्टूबर						
नवम्बर						
दिसम्बर						

[घ] १९४८ से हैदराबाद में हुए सोने का उत्पादन भी इन अंकड़ों में सम्मिलित है।

[६] बिजली उद्योग

वर्ष	३६ उत्पन्न की गई बिजली [कि] (लाख किलोवाट प्रति घण्टा)	३७ बिजली ले जाने की मालिया (००० फुट)	३८ सूखे सेल (लाख)	३९ समग्र की बैटरी (०००)	४० बिजली के मीटर (००० हार्स पावर)	४१ बिजली के ट्रान्स फार्मर (००० के.पी ए)	४२ बिजली की क्षमिता (०००)
१९४६	३८,६२०	८७६ ६	२७ ६	५५ ६	६८ ४	८,११०	८,११०
१९४७	४०,७३०	८७६ ६	६६ ६	६६ ६	६८ ४	८,२४४	७,७२०
१९४८	४५,७५०	१,७०७ ६	१,२२८ ४	११० ४	६० ०	८,२४६	६,२५२
१९४९	५६,०६०	२,६४८ ६	१,५२१ ६	१०६ ८	६८ ४	१०६ २	६,५४४
१९५०	५०,८८०	२,६६६ ४	१,६२१ २	१०७ ७	८१ ६	१७६ ६	६,५००
१९५१	५८,५१७	३,६६६ ६	१,५३४ ०	२२२ ४	१४६ ६	१६४ ६	६,५५६
१९५२	६१,२४८	३,६६६ ६	१,५३० ०	२५४ २	१५४ २	२१४ ८	२०,८८०
१९५३	६६,२७६	३,७३६ ४	१,५८४ ४	३७६ ४	२६२ ०	३०८ ४	३६,७७६
१९५४ जनवरी	५,८०७	४४२ ६	२२४ ४	२२ ७	२२ ६	३० ०	३,७६४
फरवरी	५,४२७	५१५ ६	२२१ १	८ ६	२४ ६	२४ ७	३,५८४
मार्च	५,८५७	६०६ ६	२१७ २	२४ ४	२५ ०	३४ ०	३,६२८
अप्रैल	६,०४६	५१८ ८	२१५ ७	३७ ७	३१ ६	३५ ०	३,८२८
मई	६,३१६	५४६ ६	२१८ ७	३७ ६	३१ ६	३५ ४	३,८२८
जून	६,२५६	५५४ ८	२१६ ६	३६ ६	३१ २	३६ ४	३,६७८
जुलाई	६,२१६	५७६ ४	२१६ ८	३८ ०	३७ ६	३६ ४	२०,१७७
अगस्त	६,२५६	५६५ ६	अज्ञात	३७ ०	अज्ञात	अज्ञात	२,०४२
सितम्बर							
अक्टूबर							
नवम्बर							
दिसम्बर							

[घ] कम्प और फार्मर के आकड़े भी सम्मिलित हैं। अन्य दो स्तंभों के साथ सार्वजनिक उपयोग के कार्यों के सब स्थापनों इसमें आ जाते हैं।

१. औद्योगिक उत्पादन (न) रासायनिक उद्योग

वर्ष	रंग्लोप और वाणिज्य (टन)	टियासलाई [छ] (००० पेटिया) [ज]	साबुन [क] (टन)	सरेस (हडरवेर)	धातुओं को जोड़ने की शक्ति		गिलसरीन (टन)	नेनकार्ट वा साचे बनाने का चूरा (००० पीड)
					आक्सीजन (लाए वन फुट)	एसिटलीन		
१९५६	१८,५००	४१११६					१,७८८	
१९५७	१८,७०४	४३२४६		१२,२६४			१,३३२	
१९५८	१९,७२४	४३२८८	७५,६००	१२,१५४			१,७४०	
१९५९	२०,६२४	४२२११	७२,००४	१३,५००			२,००४	
१९५०	२७,४५८	४२२११	७२,००४	१४,११२	१,५१२०	२६८८	२,४२४	४५६६
१९५१	३३,४८०	४७७२२	८२,५३६	१५,६५०	१,६२६०	३११६	२,२२०	६२७२
१९५२	३३,१७२	६०८४४	८६,३७६	१७,१००	१,८८१६	३४६८	२,५०८	८२७६
१९५३	३३,०५२	५६०४४	८२,३००	१७,१००	१,८८१६	३४६८	२,५०८	८२७६
१९५४	जनवरी ३,१८१	४५६	५,१२२	१,६१२	१७०	३३०	५४०	६५०
	फरवरी २,५४७	४१२	५,२५०	१,६०३	१६८	३२०	२१८	२३६
	मार्च ३,११५	४५७	६,२७५	१,८६४	१६८	३४७	२०२	७७६
	अप्रैल २,६३६	३८७	५,६००	१,६६८	१६९	३५०	१८२	८२४
	मई २,६६७	४३६	७,०३६	१,३००	१६९	३५०	१५८	६३४
	जून २,६७५	३४१	८,३००	१,३०७	१६९	३५०	२२६	१०८४
	जुलाई २,५३७	४६३	७,५००	१,५१२	१६६	३६०	२२६	१०८४
	अगस्त ५५३	अप्राप्त	अप्राप्त	१,५३३	१५७	३५०	अप्राप्त	१६०७
	सितम्बर							
	अक्टूबर							
	नवम्बर							
	दिसम्बर							

[छ] इसमें जम्मू और कश्मीर के आकड़े भी शामिल हैं।
[क] ये आकड़े समाप्त कारखानों के उत्पादन के हैं।

[ज] ६० तीलियों वाली डिबियों के ५० ग्रेस।

(न) रासायनिक उद्योग

वर्ष	६४ लिबर का सब		६५ रेयन (टन)	६६ अलकोहल (००० गैलनों में जुला हुआ)			६७ अलसी का तेल, पोता हुआ टाए (लिग्नोलियम) (००० ली० गज)	६८ प्लास्टिक के साचे (००० ग्रेस)
	इन्वैशन (००० मी सी)	खाने वाला (००० पीड)		इन्वैजो में जलने वाला	शुद्ध स्पिरिट	मिश्रित स्पिरिट		
१९५६				२,३६७६	२,१५६८	१,०२२६		
१९५७				२,७२६०	१,७७७८	१,०८५८		
१९५८				३,७७६४	२,३८६२	१,४०१६		
१९५९				४,२३०४	१,६५६०	१,०६५६		
१९५०	७,३८८८	१८१२२		४,५६७६	१,५४१६	१,६५७२		
१९५१	११,१५४६	३०१२२		५,०६६२	५,०६६०	१,६६६०		
१९५२	१०,६०२४	३३६२२	२,०४०	७,०६६२	४,६६६०	२,१७१०	१,५६६	१,५५६०
१९५३	१०,३७२८	२१०८८	१,६८८	७,७७२४	५,६६६०	२,१७१०	१,५६६	१,५५६०
१९५४	१०,३३८८	२०४४४	४,३१६	८,१२०४	४,७७६४	२,५६६	१,५६६	१,५५६०
१९५४	जनवरी १,५६०	२५२	३८८	६३६	४५६	३२४	२०७	१,१७६
	फरवरी ६,३४४	३३१	३५२	६२६	४७६	२२७	२०५	१,०४६
	मार्च १,१५४	२१६	३६६	६७६	४०६	२७२	३६६	१,०४६
	अप्रैल १,०५३	२२१	३६६	८८८	३७६	२७२	३६६	१,१५८
	मई १,१२३	२२१	४०४	७००	३३०	२४०	२७१	१,१५३
	जून ६,२१४	१८५	६०४	६३७	४८७	२२४	१८७	अप्राप्त
	जुलाई १,३४६	५८३	४७३	५४६	३६३	२२४	२२४	अप्राप्त
	अगस्त ५५३	अप्राप्त	४१७	५५०	अप्राप्त	४०२	अप्राप्त	अप्राप्त
	सितम्बर							
	अक्टूबर							
	नवम्बर							
	दिसम्बर							

१. औद्योगिक उत्पादन (६) सीमेंट और चीनी मिट्टी का माल

वर्ष	६६	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७
	सीमेंट	सीमेंट की चादरें, एस्बेस्टस	सफेद माल	स्वच्छता के लिये बनाया गया माल	पत्थर का सामान	चीनी की पालिश वाले नल	कच्ची आच सहन करने वाली मिट्टी की ईंटे	चिसने वाला सामान	विजली-आवरोधक (इन्सुलेटर) एच.टी., एल.टी.
	(००० टन)	(००० टन)	(टन)	(टन)	(००० टन)	(००० दर्जन)	(००० टन)	(००० रीम)	(०००) (०००)
१९५६	१,५४२.०	२१२.२	—	—	—	—	११७.२	६१.२	—
१९५७	१,५४७.२	—	—	—	—	—	१७५.२	४०.०	७४.४
१९५८	१,५५२.८	७६.८	५,३७६	२,५६४	११६	—	१०६.६	४५.६	६०.०
१९५९	२,१०२.४	८६.४	३,७२२	३,६००	२२.८	—	२०.८	२५.२	३३.६
१९५०	२,६१२.४	८६.४	६,०६०	१,७८८	२६.४	६२.४	२३६.४	३१.२	३७.६
१९५१	३,६५६.६	८२.६	६,६६२	६,४८८	३०.०	३२.०	२३७.६	३७.२	४५.८
१९५२	३,५३७.६	८७.६	६,०६०	४,२२२	३२.६	३४.६	२४२.६	५५.२	६०.०
१९५३	३,७८०.०	७५.६	२,०,४४०	६,८८८	३२.६	३७.४	२२०.०	५६.२	७५.०
१९५४ जनवरी	३,६२.८	७७	६,८४	५,६६	२२.६	३८.६	२०७	५६.६	५४.८
फरवरी	३,५१.०	७५	६,०६	५,०६	२१.६	३७.६	२०७	५६.६	५४.८
मार्च	३,८६.०	७०	८,०६	६,०६	२१.६	३७.६	२०७	५६.६	५४.८
अप्रैल	३,५६.८	६९	६,२२	६,०६	२१.६	३७.६	२०७	५६.६	५४.८
मई	३,७३.४	६७	६,३६	६,३६	२१.६	३७.६	२०७	५६.६	५४.८
जून	३,५६.४	६६	६,६६	६,६६	२१.६	३७.६	२०७	५६.६	५४.८
जुलाई	३,६५.१	६५	६,५४	६,५४	२१.६	३७.६	२०७	५६.६	५४.८
अगस्त	३,४२.४	अभाव	अभाव	अभाव	अभाव	अभाव	अभाव	अभाव	अभाव
सितम्बर	—	—	—	—	—	—	—	—	—
अक्टूबर	—	—	—	—	—	—	—	—	—
नवम्बर	—	—	—	—	—	—	—	—	—
दिसम्बर	—	—	—	—	—	—	—	—	—

(१०) काँच और काँच का सामान-

वर्ष	७८	७९	८०	८१
	काच की चादरें (००० वर्ग फुट)	प्रयोगशालाओं का सामान (टन)	विजली की बतियों के लोल (लाख बतिया)	काच का अन्य सामान (टन)
१९५६	८,७३६.०	—	—	—
१९५७	५,७१६.२	—	—	—
१९५८	६,२५५.६	१,६२०	१११.६	६३,४२८
१९५९	३,५५१.२	१,६८०	६.२	७३,४२८
१९५०	६,५७०.०	२,१६०	१२६.६	७३,४२८
१९५१	११,०८६.२	१,६८०	१५५.०	६०,३२४
१९५२	६,०४६.२	१,४७६	१६६.८	८५,३६८
१९५३	२,२,७८६.८	१,७२०	१६६.२	७३,४२८
१९५४ जनवरी	२,२५३.४	१,७०	१७.६	७,३६८
फरवरी	२,१४.४	२,२६	२२.४	५,२६८
मार्च	२,४०६.८	२,१६	२४.४	७,३७२
अप्रैल	१,२६७.२	२,१६	२३.०	७,३४२
मई	४६०.८	२,१४	२१.६	७,३४२
जून	५,६६.१	२,१६	२५.६	७,३०२
जुलाई	७,६३.४	२,०७	२६.७	६,३२२
अगस्त	अभाव	अभाव	अभाव	अभाव
सितम्बर	—	—	—	—
अक्टूबर	—	—	—	—
नवम्बर	—	—	—	—
दिसम्बर	—	—	—	—

१. औद्योगिक उत्पादन (१२) खाद्य और तम्बाकू

वर्ष	६२ [अ]	६३ [ब]	६४ [ग]	६५ [घ]	६६	६७	६८
	गौंठ का आटा (००० टन)	पीनी (००० टन)	काफ़ा (टन)	चाय (दस लाख पौंड)	नामक (००० मन)	वनस्पति तेल से बनी हुई वस्तुएँ (टन)	निगारट (ताल)
१९४२	-	६२२ =	२५,०४=	५४२ ०	४७,८६=	१,३५,०६६	
१९४३	-	६०१ २	२६,८४=	५६२ ६	५१,६००	६५,२१२	१,८८,७३ ६
१९४४=	-	१,०७५ २	२६,१२=	५६६ =	६१,५८=	१,२६,६६६	२,१८,३४ ६
१९४६	४१७ ६	१,००० =	२२,३=०	५-५ ६	५५,६२=	१,५५,५५४	२,१८,६०४
१९४०	४७७ ६	६७६ =	२०,५३=२	६१३ २	४१,३१६	१,७१,६३६	२,१८,२६२
१९४१	४=० ०	१,११४ =	१=,०६६	= = =	७४,३७६	१,७२,३२०	२,१४,५=
१९४२	५१२ ४	१,४६४ ०	२१,०६६	६१४ ४	७६,८६०	१,६०,=१२	२,०१,१६२
१९४३	४=३ ६	१,०६१ २	२२,५७२	६०- ४	=६,३१६	१,६१,३५२	१,६=,३३२
१९४४	नवम्बरी	३५ ४	३०६ ६	२,६०=	६ ४	१,=६६	२५,=६२
	फरवरी	३६ २	२४१ १	५,=४१	५ =	३,६=३	१=,३१७
	मार्च	३६ १	२४४ १	६,१६०	१० १	६,६६२	१,६,७१५
	अप्रैल	४० ७	४२ ५	४,३=४	३४ =	१२,५६६	२२,=२०
	मई	३६ =	२ ६	५,७३६	५६ ०	१३,८५६	१५,५७०
	जून	३० ६	गुप्त	१,६२५	६६ ६	१६,०=४	१६,६४०
	जुलाई	३-३	गुप्त	१,०६६	=५ ६	६,३३२	१६,७४७
	अगस्त	३ ३	१,२२४	६१ =	१,७०१	१,४४४	१=,४४०
	सितम्बर						अप्रति
	अक्टूबर						
	नवम्बर						
	दिसम्बर						

[अ] ये आँकड़े केवल बड़ी आटा मिथा के हैं। [ब] ये आँकड़े फसली साल (नवम्बर से अक्तूबर) तक के हैं और केवल मन्ने से बन्ने वाली चीनी के विषय में हैं। [ग] ये आँकड़े शाधन और पीने के पश्चात् काफ़ा भण्डार में डी जाने वाला काफ़ो के विषय में हैं। [घ] ये मासिक आँकड़े पचास (काँगडा और मण्डा रिफास) के उत्पादन को छोड़ कर हैं।

(१३) चमड़ा उद्योग

वर्ष	६६	१००	१०१	१०२	१०३
	जूने, पश्चिमी टग के (००० बोटे)	जूने, दक्षिणी टग के (००० बोटे)	कमाने सपड़े का मोन	वनस्पति साधनों से कमाया हुआ गाय- मैस का चमड़ा	चमड़े के चमड़ा (००० गब)
१९४६					
१९४७					
१९४८	२,२०१ ६	२,०६७ ६	१,०=७ २	१,६१=४	
१९४९	२,८५० ०	२,१०= ४	५०० =	१,८२५ =	
१९५०	२,=३६ =	२,६६६ =	५६६ ६	१,५१५ ४	
१९५१	३,६४० ०	२,०७१ ६	=७६६ ६	१,७०० ०	१,६१=०
१९५२	३,६६७ २	१,=०६ ०	६५० ४	१,४०= ४	६४५ ०
१९५३	३,३४= ०	२,२०४ ४	७०० =	१,२६८ ४	६८५ २
१९५४	जानवरी	२६६ ४	२६५ ६	६६ ६	२२ २
	फरवरी	३१७ ५	२=० =	६६ १	६५ २
	मार्च	३२२ १	२३= ३	७१ ६	६७ =
	अप्रैल	२६४ ६	२४५ ५	६६ ६	=७ ४
	मई	२७० १	२६२ ४	५६ ३	६५ १
	जून	२५२ ३	२५० ७	५७ ७	६१ ५
	जुलाई	२६४ २	२०३ ०	५२ ६	१०६ २
	अगस्त	२६२=	२=६ ०	३३ ४	१०= १
	सितम्बर				
	अक्टूबर				
	नवम्बर				
	दिसम्बर				

१. औद्योगिक उपादन (१४) अन्य उद्योग

वर्ष	१०४ खनिज कोयला	चाय की पटिया	१०५ प्लास्टिड (००० वर्ग फुट)		१०६ कागज (टन)				
			व्यापारिक	छुपाई और लिफाई का	योग	लिपटने का	विशेष का मूल्य	किसम गते	योग
१९५६	२८,८८४	३५,५००	२३,५००	५८,८००	६५,८६६	१५,६८४	६,८२८	१८,५८८	१,०५,६६६
१९५७	३०,०००	२८,५६०	५,७३६	३५,२६६	५२,७७६	१६,७८८	५,८२६	१८,६१६	६३,०६६
१९५८	२६,८२०	४५,१०८	८,६२८	५३,७३६	५०,३७६	१७,३८८	३२,६३२	१७,२३२	६७,६०८
१९५९	३१,५४२	३८,५००	६,२४०	४७,६४०	५६,५४८	२२,८७६	१३,६०४	१८,६३६	१,०३,२००
१९५०	३१,६६२	४१,६७६	८,८४४	५०,२२०	७०,१५२	१५,६३६	५,१६६	१८,६४८	१,०८,६३२
१९५१	३५,३०८	४८,६४८	१०,३००	७०,२४८	७६,२६०	२५,५८८	३,२६०	२५,०४८	१,३१,६३६
१९५२	३६,२२८	७८,२२८	१२,३३२	९०,५६०	९६,५८८	२१,५४०	३,८२०	२६,७२०	१,३७,४०४
१९५३	३६,८४४	४६,७८८	११,३७६	६०,८७६	६५,६२८	२१,३४४	३,८२०	२६,५३२	१,३६,७०४
१९५४	जनवरी २,६०३	५,२३६	८६३	५,१२६	६,५८४	२,१७७	२०२	३,४६५	१०,३२८
	फरवरी ३,०५६	५,७८६	८८६	५,६७८	५,८४७	२,००६	८८८	३,२८८	६,५०८
	मार्च ३,०७१	६,२४४	१,२११	७,५५५	७,३६७	२,६६४	३००	३,६३३	११,७७४
	अप्रैल ३,०७७	५,७४४	१,२७५	६,६८८	८,२२०	२,२६०	५६२	३,२१२	१२,७६८
	मई २,६७७	५,१८७	१,०३४	६,२२१	६,६७३	१,१०३	३०२	३,६२०	१३,५०८
	जून १,८८२	५,३३०	६४६	५,६७६	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१३,७०६
	जुलाई २,६६६	५,६६२	७५५	५,५५६	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	१३,५३२
	अगस्त २,६५८	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
	सितम्बर								
	अक्टूबर								
	नवम्बर								
	दिसम्बर								

(१४) अन्य उद्योग (शेपार्श) परिवहन

वर्ष	१०७ मोटर गाड़िया (सख्या)			योग	१०८ सारकिलें	
	कारें	ट्रक	पूरी तैयार (मूल्य ००० रुपये)		हिस्से	
१९५६			४२,६८५ (घ)		६६३ घ (घ)	
१९५७			३१,८६० (घ)		६७१८ घ (घ)	
१९५८			५४,५४२		१,११५८ (घ)	
१९५९	६,६७२	१५,१३२	२१,८०४		१,७६६ घ (घ)	
१९५०	६,५८८	६,०१६	१४,६०४		१,७६६ घ (घ)	
१९५१	१२,३८४	६,८८८	२२,२७२		१,५४२ घ (घ)	
१९५२	६,६४८	८,३४०	१५,०८८		४६,५८८ घ	
१९५३	५,६३२	८,६८८	१३,३२०		८,२४७ घ	
१९५४	जनवरी २७७	६६६	१,२७३		१०,१६५०	
	फरवरी ५२३	७६०	१,२८३		८६७०	
	मार्च ५००	७६६	१,२६६		८५३०	
	अप्रैल ५७१	७६५	१,३३६		६२६७	
	मई ५०३	५६६	१,०६९		१,०७७ घ	
	जून ५४२	३१३	८५५		१,०२० घ	
	जुलाई ५७५	५२१	१,०९६		१,१५६	
	अगस्त	अप्राप्त	अप्राप्त		१,०३८ घ	
	सितम्बर				अप्राप्त	
	अक्टूबर					
	नवम्बर					
	दिसम्बर					

[घ] निर्माण सम्बन्धी गणना में प्राप्त आकड़े हैं। [घ] १९५८ में १९५० तक के वर्षों के आँकड़ों में पूरी तरह तैयार बने वाली फर्मा द्वारा तैयार की गयी हिस्से शामिल नहीं हैं।

२. भारत का विदेशी व्यापार (क) व्यापार-सन्तुलन का लेखा (समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(लाघि रूप में)

व्यापारी माध्यम	१९४८-४९	१९४९-५०	१९५०-५१	१९५१-५२	१९५२-५३	१९५३-५४	१९५४-५५	१९५५-५६	१९५६-५७	१९५७-५८
	(अंशतः अल्पतः/अधिकतः)									
(क) भारतीय व्यापारी माल का निर्यात										
समुद्र तथा वायु द्वारा	४,५१,०४	४,७०,०७	५,७८,६८	७,०१,७५	५,५२,७७	५,५५,५६	५,६६,३०	५,७७,०१	५,९८,३४	५,९८,३४
स्थल द्वारा	३०,२६(क)	२७,८८	१७,८२	२७,२५	१८,८४	७,५६	२,५७	२,५७	२,५७	२,५७
योग	४,८१,३०	५,०६,९५	५,९६,५०	७,२८,००	६,७१,६१	६,६३,९२	६,६८,८७	६,६९,५८	६,६९,५८	६,६९,५८
(ख) भारतीय व्यापारी माल का निर्यात (केवल समुद्र तथा वायु द्वारा)										
१ चाय, पेय और तम्बाकू	६०,३०	५,२५,८८	५,२५,८८	५,५८,५६	५,५८,५६	५,५८,५६	५,५८,५६	५,५८,५६	५,५८,५६	५,५८,५६
२ कच्चा माल तथा रजत और मुख्यतः अग्निमित्र माल	६०,८७	१,०५,६६	१,२५,७७	१,२५,७७	१,२५,७७	१,२५,७७	१,२५,७७	१,२५,७७	१,२५,७७	१,२५,७७
३ पूरक वस्तुएं मुख्यतः मिश्रित माल	२,३६,०६	५,८८,७५	५,८८,७५	५,८८,७५	५,८८,७५	५,८८,७५	५,८८,७५	५,८८,७५	५,८८,७५	५,८८,७५
योग [निम्ने (ख) 'अग्निमित्र पशु और (ख) हाक द्वारा नीचे गद वस्तुएं भी सम्मिलित हैं]	५,५७,२३	५,७८,३०	५,७८,३०	५,७८,३०	५,७८,३०	५,७८,३०	५,७८,३०	५,७८,३०	५,७८,३०	५,७८,३०
(ग) पुनर्निर्यात (मजदूर व्यापार छोड़कर)	७,८६	६,०७	५,५६	५,०५	५,०५	५,०५	५,०५	५,०५	५,०५	५,०५
(घ) कुल निर्यात	५,६५,४३	५,८४,३७	५,८४,३७	५,८४,३७	५,८४,३७	५,८४,३७	५,८४,३७	५,८४,३७	५,८४,३७	५,८४,३७
(ङ) आयात										
समुद्र तथा वायु द्वारा	५,५७,१७	५,६५,३५	५,८१,१७	५,७५,६५	५,७५,६५	५,७५,६५	५,७५,६५	५,७५,६५	५,७५,६५	५,७५,६५
स्थल द्वारा	५,००(क)	२३,७२	५,२३,७२	५,२३,७२	५,२३,७२	५,२३,७२	५,२३,७२	५,२३,७२	५,२३,७२	५,२३,७२
योग	५,६२,१७	५,८९,०७	५,८६,८९	५,९९,३७	५,९९,३७	५,९९,३७	५,९९,३७	५,९९,३७	५,९९,३७	५,९९,३७
सबसे अधिक व्यापार का	३,१५	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०
(च) शुद्ध आयात	६,१२,३७	६,२५,६१	६,२३,७२	६,५५,६६	६,५५,६६	६,५५,६६	६,५५,६६	६,५५,६६	६,५५,६६	६,५५,६६
(छ) आयात (समुद्र तथा वायु द्वारा)										
१ चाय, पेय और तम्बाकू	१,२७,३०	१,५६,८८	१,५६,८८	१,५६,८८	१,५६,८८	१,५६,८८	१,५६,८८	१,५६,८८	१,५६,८८	१,५६,८८
२ कच्चा माल और रजत तथा मुख्यतः मिश्रित वस्तुएं	१,०५,६६	१,०५,६६	१,०५,६६	१,०५,६६	१,०५,६६	१,०५,६६	१,०५,६६	१,०५,६६	१,०५,६६	१,०५,६६
३ पूरक वस्तुएं मुख्यतः मिश्रित वस्तुएं	५,८८,७५	५,८८,७५	५,८८,७५	५,८८,७५	५,८८,७५	५,८८,७५	५,८८,७५	५,८८,७५	५,८८,७५	५,८८,७५
योग [निम्ने (ख) 'अग्निमित्र पशु और (ख) हाक द्वारा नीचे गद वस्तुएं भी सम्मिलित हैं]	५,९९,७१	५,९९,७१	५,९९,७१	५,९९,७१	५,९९,७१	५,९९,७१	५,९९,७१	५,९९,७१	५,९९,७१	५,९९,७१
(ज) व्यापारी माल का आयात समन्तुलन	—५,६६,७४	—५,६६,७४	—५,६६,७४	—५,६६,७४	—५,६६,७४	—५,६६,७४	—५,६६,७४	—५,६६,७४	—५,६६,७४	—५,६६,७४

* अन्ततः, डा. ल. क. का ने आयात आयात का मुख्य भी सम्मिलित है।
(क) केवल परिष्कार के लिये।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की प्रमुख वस्तुएँ*

(समुद्र, वायु तथा स्थल मार्गों द्वारा)

(१) खाद्य, पेय और तम्बाकू

(मुख्य बाजार किये में)

वर्ष	महात्तियों	प्याव*	काग की गिरी	इलायची	गोल मिर्च	चाय	तम्बाकू,	तम्बाकू,	
							-निमित्त	निमित्त	
	(००० इंडरबैट)	(००० इंडरबैट)	(००० इंडरबैट)	(००० इंडरबैट)	(००० इंडरबैट)	(लाख पौंड)	(लाख पौंड)	(००० पौंड)	
१९४०-४१	परिमाण मूल्य	२३५ १,४७	३०६ १०	३३९ ४,६३	१८ ७३	१४१ ३,६७	४४,३०† ६,२४†	६,६० ६,४६	४,६७६* ४,६८
१९४१-४०	परिमाण मूल्य	३२१ १,६२	७३५ २,२६	३७६ ५,६१	१६ १,२५	३१३ १४,५०	४४,५० ७२,६१	६,२० ११,६४	४,२६७* ४,२०
१९४०-४१	परिमाण मूल्य	३८७ २,४६	१,१२६ १,१५	५०८ ८,५५	१२ १,४८	६०८ २०,४०	४४,२० ८०,४२	१०,३० १४,११	११,८२८ ४,३५
१९४१-४२	परिमाण मूल्य	४२५ ३,२८	६२५ ३,०७	४२६ ६,०३	१४ १,६४	२६८ २३,२२	४२,६० ६३,८६	११,२० १६,१४	१२,३५६ ६,२६
१९४२-४३	परिमाण मूल्य	४८८ ३,८७	६६४ ११३	५५८ १२,६८	२० १,६६	२४८ १३,०६	४३,७० ८०,८८	८,०० १३,०३	५,१४२ ३,५४
१९४४-४४	परिमाण मूल्य	५३६ ४,१६	४६६ ६८	२७ १०,६३	१८ १,३४	२४८ १२,७२	४७,१० १,०२,१४	६,५० १०,२२	२,६७८ १,०४
१९४४-४५ :	जुलाई मूल्य	परिमाण १६ १८	२८ ४	१ १,३५	१ ६	२७ ७६	४,२० ११,३६	१,०० १,६४	२,५२ ६
१९४३-४४ :	जुलाई मूल्य	परिमाण ३६ ३९	३५ १८	६ १,२८	२ १०	६ ५६	३,६० ८,२८	५० ८६	२,०४ ७

* केवल समुद्र तथा वायु द्वारा ।

† क्रमगानित्तान और दरान को स्थल भाग द्वारा भेजे गये मात्र के आलवों को छोड़कर

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएं

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(२) कच्चा माल तथा उपज और मुद्रयतः अतिमित माल

(मूल्य लाख रुपये में)

वर्ष	कोयला	अदरक	लाक	चमड़ा, कच्चा	खालें, कच्ची	पुराना लोहा व इस्पात पुनर्निर्माण के लिये	खनिज लोह	खनिज लोहक	मैंगले	इस्पात कारखानों के लिये	
											(००० टन) हजारवेट)
१९४८-४९	परिमाण मूल्य	२,३३२ ४,५८	३४० ५,६४	४९१ ८,६६	४२ ४६	२०४ ४,६८	नगण्य नगण्य	३०६ १,८१	६१२ ५५	३१ ५७	
१९४९-५०	परिमाण मूल्य	२,३२३ ७,६३	२६८ ६,८५	४५६ ८,०६	१६ २१	२१८ ६,५६	०.२ ०.३१	४ १	७३६ ५,८५	८५५ ६०	३७ ६१
१९५०-५१	परिमाण मूल्य	६६४ ३,४४	४०७ १०,००	६६२ ११,८६	३८ ६६	२०८ ८,७४	२ ४	८५ २२	८२१ ८,०१	८२१ १,०३	५५ १,१६
१९५१-५२	परिमाण मूल्य	२,८०१ ६,५५	४०८ १३,२३	७१४ १४,८७	२४ ६२	२२० ७,६२	४३ ७०	२८० १,००	१,१२५ १५,६६	८६७ १,१३	५६ २,२८
१९५२-५३	परिमाण मूल्य	२,६६८ १०,०३	२८४ ६,०२	६८८ ७,६१	१ २	२२६ ५,५४	४७६ १०,२३	८११ २,७१	१,४४० २१,७६	५६६ ४८	७१ २,३७
१९५३-५४	परिमाण मूल्य	१,६१७ ६,८८	२५० ७,६५	५१८ ६,७६	...	२०७ ६,०६	२५० ४,६७	१,२०० ५,५३	१,५१८ २४,२५	६६७ ६२	६६ २,०४
१९५४-५५	परिमाण मूल्य	१८० ५५	३० ५७	५६ १,०५	...	१८ ५५	३७ २०	५१ १६	८१ ८६	८ ६	८ २७
१९५३-५४ :	परिमाण मूल्य	१८४ ६३	१६ ७६	५३ ५०	...	१६ ६०	१४ २४	६४ २६	१४१ १,८५	५१ ४	५ १३

(अ) स्थल मार्ग के माध्यमे छोड़ कर।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएँ

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(२) कच्चा माल तथा उपज और मुख्यतः धनिर्मित माल (गत पृष्ठ से आगे)

(मूल्य लाख रुपये में)

वर्ष	मूँगफली का तेल (००० गैलन)	भारतीय का तेल (००० गैलन)	भारतीय का तेल (००० गैलन)	मूँगफली बीज (००० टन)	भारतीय का बीज (००० टन)	रूई, कच्ची (००० टन)	रुई, रदी (००० टन)	पड़चा, कच्चा (००० टन)	कच्चा (००० टन)		
										मूल्य	मूल्य
१९४८-४९	परिमाणु मूल्य	८,९११* ६,७०	३,००९ २,१८	२,२८१ १,४८	३८ ३,१३	२४ १,३९	७९ १,४०१	१,०१७ ४,१४	६६४ ३,९९	८,६५८ १,०९	
१९४९-५०	परिमाणु मूल्य	७,०४९* ५,४४	१,१३८ ६३	१,७७३ १,२८	२२६ १,०४	५ २८	७२ ४,६६	५८ ३,९११	३४२ ८,२२	२७,३६३ ३,७१	
१९५०-५१	परिमाणु मूल्य	१९,६६१ १६,७४	५,८६८ ४,३५	१,३५६ १,१०	३८ ३,५७	७९ ५,६२	६८ ४,६४	१५ ३,३७७	२७१ ३,२८	२५,३७१ ७,८७	
१९५१-५२	परिमाणु मूल्य	५,११९ ४,३२	५,५२२ ६,५७	६,०७७ ५,६६	२० २,३५	१ १९	७ ७०	२३ १,३,६८	६२३ ७,३५	४१७ २,४८	१८,२१५ ५,६०
१९५२-५३	परिमाणु मूल्य	१६,१६० १०,४७	८,६२७** ७,७२	६,१२२* ४,८२	१३ १,४०	४ ३८	नगण्य ०,५३	७१ १,६,३३	७१ ६,६४	१,२५६ १,४६	३७,६३६ ८,४१
१९५३-५४	परिमाणु मूल्य	३६० २५	४,५६५** ३,१६	६३८** ५६	५ ६३	३५ ६,४०	१,२५६ ६,८७	३५५ ६,८७	२०,६६१ १,२४	५,८७
१९५४-५५:	जुलाई	परिमाणु मूल्य	४ ०.३	६१५ ४७	२७ १	नगण्य ०.१	१ ३७	६५ ७५	१६ ७	२,१५८ ६८
१९५३-५४:	जुलाई	परिमाणु मूल्य	३ ०.२	२३४ १८	२३ १	नगण्य ०.२	१ ३१	१०३ ८०	३६ २२	१,६१६ ४६

* केवल समुद्र मार्ग द्वारा।

** भ्रूषे।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(ख) निर्यात की मुख्य वस्तुएँ

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(३) पृथक् अथवा मुख्यतः निर्मित माल

(मूल्य लाख रुपयों में)

वर्ष	कमाया हुआ कमाई हुई		रुई	शुद्धी	शुद्धी वपडा	मृत्ती कपडा	विसाली का	बोरिया	टाट	नकली रेशम	ऊनी	नारियल
	नमडा	खालें										
	(००० इन्डर वेट)	००० इन्डरवेट)	(००० पौंड)	(नास गज)	(लास गज)	(मुख्यतः शुद्धी माल से बना हुआ)	(००० टन)	(००० टन)	(००० गन)	(०१० पौंड)	(००० इन्डरवेट)	(००० इन्डरवेट)
१९५०-५६	परिमाण मूल्य	१८६ ५,६६	१०५ ७,२०	७,४०८ २,२६	६२	३६,१०** ३६,५५**	५१७	६२,५७	५३५	२५,५८०	८,३३५	८६६
१९५६-५०	परिमाण मूल्य	३१५ ८,५३	१३२* ११,८३	६७,८३५(अ) २,५०	७६	७०,६० ५६,६५	५३५	५३,८२	३३६	१२,२३०	१०,५६५	१,५२५
१९५०-५१	परिमाण मूल्य	३५१ १२,०२	१५८(अ)७५,०६१ १३,३२	६,०० १७,२८	८६	१,२३,५० १०,८८	३५५	१,१२,१७	२६२	६६,६०	१५,०६१	१,५६०
१९५१-५२	परिमाण मूल्य	३३६ १३,६१	१२५(अ) १३,५१	७,१८३(अ) १,६७	१,२०	५,००(अ) ६,२०	३८३	३,५६	२८७	८,५१५	११,५६१	१,२३६
१९५२-५३	परिमाण मूल्य	३१३ ६,२२	१५५* १०,८६	१८,०५३ ५,५१	६६	५,५० ५३,२८	३७१(अ) ३०५	३,३६	३०५	३,६७७	७,३२८	१,२८२
१९५३-५४	परिमाण मूल्य	३६५ १०,८३	१६८* १३,६३	२२,५८५ ५,७६	१,२३	६,३० ६,६५	३५५	५३,५५	३८६	३,१७७(अ) ५६	८,६६७	१,५२२
१९५४-५५	परिमाण मूल्य	३३५* ७०*	२०* ८५*	...	७	५० ५,६१	५०	५,६७	३१	२,५६	८२५	१,१३
१९५६-५७	परिमाण मूल्य	३०* ८७*	६* ७६*	१,३१६ ३१	१०	५० ३,६१	२८	३,१६	३६	२,६२	७,५१	६*

* केवल समुद्र तथा वायु द्वारा।

(अ) अर्थात्।

** इसमें अफगानिस्तान और ईरान को स्थल मार्ग द्वारा भेजा गया माल सम्मिलित नहीं है।

२. भारत का विदेशी व्यापार

(क) निर्यात की मुख्य वस्तुयें

(समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(३) पुर्यात अथवा मुख्यत निमित्त माल (गत पृष्ठ से आगे)

(मूल्य लाख रुपये में)

वर्ष	निर्यात माल	परिमाण मोम	तेयार वस्तु (होजियरी और जूट तथा जूतों के अतिरिक्त)	प्लिस रीन*	इन्कगोल की भूसी**	कच्चा लोहा	धातु के वस्तु तथा कटलरी	यंत्र उपकरण आदि	काच तथा मिट्टी का सामान	मशीनों और कारखानों का सामान (संगे भी मशीनों सहित)	कृषि गोद, गन्ना तथा लकड़ी की सामग्री	रबर से बनी वस्तुयें	धातु इस्पात तथा उनसे बनी वस्तुयें ^१ के अतिरिक्त	
														(००० टन)
१९४८-४९	परिमाण मूल्य	१० १,१३	७४			४५	३३	५४	६४	२,३२	२६	४६	१,६७	६८
१९४९-५०	परिमाण मूल्य	१६ १,५८	५२			७१	६६	६२	७४	३२	३६	३१	६६	५६
१९५०-५१	परिमाण मूल्य	२० २,२६	१,१५			४४	८६	७०	६६	२६	४७	३३	१,६५	१००
१९५१-५२	परिमाण मूल्य	३२ २,८२	८२			२०	४१	१,२२	१,४७	४३	६५	१,२६	१,०८	१,४१
१९५२-५३	परिमाण मूल्य	१६ १,३३	६१			१२	४१	१,१०	१,५५	३५	१,२७	८७	१,५२	२,६७
१९५३-५४	परिमाण मूल्य	२४ १,५५	४५			३०	१५	२२	१,३३	१,६२	२६	६२	८५	१,७४
१९५४-५५	परिमाण मूल्य	२ १७	२			२	२	६	१६	३	१	६	८	११
१९५५-५६	परिमाण मूल्य	३ १६	२			४	७	११	८	३	४	५	११	२०

* अप्रैल १९५२ से यह वस्तु व्यापार लेखों में अलग दिखाई गई है।

** अप्रैल १९५३ में यह वस्तु व्यापार लेखों में अलग दिखाई गई है।

२. भारत का विदेशी व्यापार (ग) आयात की मुख्य वस्तुएँ[†] (समुद्र, वायु तथा स्थल द्वारा)

(मूल्य लाख रुपये में)

वर्ष	मशीन के पट्टे	रासायनिक पदार्थ	तारकोल के रंग	फल व तरकारिया	अनाज, दालें और आटे	धातु के बर्तन	बन्द, उपकरण आदि के घट्टों सहित	हर प्रकार की मशीन तथा लक्ष्मणजी के घट्टों सहित	लोहा, इस्पात तथा लक्ष्मणजी के घट्टों सहित	धातु (लोहा, इस्पात तथा उनसे बनी वस्तुओं के अनिरीक)
१९४८-४९	२,१२	२०,५७	१२,३४	=,२५*	१,०१,७०	५,६६	१८,८१	=१,५१	१२,३१	२२,३३
१९४८-५०	१,०१	७,७६	७,६६	१०,५८	१,३३,८८	६,१४	२०,७५	१,०५,५१	१३,७०	१८,८८
१९५०-५१	१,१६	६,२२	११,६८	१३,५७	=०,७६	४,५७	१७,७८	६३,००	१६,००	२७,८५
१९५१-५२	०,०७	१६,६०	१४,२७	१२,६०	२,३०,३०	६,१४	२०,४३	१,०४,३१	२१,६७	१,६७
१९५२-५३	१,६१	१२,६८	७,६१	१३,७४	१,६६,७३	४,०५	२२,२२	८७,८६	२३,७१	१६,६७
१९५३-५४	१,०८	२२,६६	१५,४५	१३,७०	७२,४६	४,७७	२१,६६	८५,८४	२३,५७	१४,५१
१९५४-५५										
जुलाई	६	१,३८	१,४४	=५	६,४०	४०	१,४८	६,६४	१,६६	२,४२
१९५३-५४										
जुलाई	१३	१,०४	१,००	६२	६,६३	३२	२,३७	६,६६	१,७०	१,६३

† इन्होंने अनाज, दाल तथा आटे के अन्य आयात की वस्तुएँ भी सम्मिलित हैं।

* इसमें अफगानिस्तान तथा ईरान द्वारा स्थल मार्गों से हुए आयात व आकड़े सम्मिलित नहीं हैं।

वर्ष	कागज	रूई, कच्ची	उत, कच्ची	नवले रेशम का घृत	मोहर आदि गाड़ियाँ न नीचे के ढांचे	मोटर आदि कारों (बसी और सवित)	शीशिया और बनावटा	मूली बपड़े	रूई ओटी टुई और घृत	उनी माल	तेल की वस्तुएँ	जुट, कच्चा
१९४८-४९	१३,३७	६४,४८	३,१८	१२,८३	=,६२	७,६४	,१२*	८,३०	४,५०	३,१०	७,०८	७१,२३
१९४९-५०	७,७४	६३,७६	३,०२	१०,४६	५,३८	३,१	=,०४	१०,७०	५,७७	१,६४	७,३०	२१,१७
१९५०-५१	६,५०	१,००,७७	५,६२	१४,७१	२,६६	३,२४	१०,५२	१,३३	३०	१३	६,०२	२७,५७
१९५१-५२	१३,१६	१,३७,१८	२,६०	१७,२६	२,८७	४,७	१५,६०	२,३७	१,८२	४३	१०,८४	६७,०७
१९५२-५३	११,२२	७२,६७	६६	७,८५	२,८८	१,१६	१,२५	२,०६	६२	५,७१	१६,४८	
१९५३-५४	११,२५	५२,७१	१,६४	१०,०४	०,१३	२,०	१२,४४	१,०२	१,३१	८५	६,४२	१४,३२
१९५४-५५												
जुलाई	६४	६००	२	१,०३	२०	४८	१,२७	३	१३	२	५३	८७
१९५३-५४												
जुलाई	६६	६,०७	०५	६५	३३	६३	५	७	४	८०	२,१२	

* इसमें अफगानिस्तान तथा ईरान द्वारा स्थल मार्गों से हुए आयात व आकड़े सम्मिलित नहीं हैं।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार-यूरोप

(मूल्य लाख रुपया में)

वर्ष	दिनेन		फ्रांस		नेलजियम		जर्मनी		नीदरलैंड	
	आयात	निर्वात	आयात	निर्वात	आयात	निर्वात	आयात	निर्वात	आयात	निर्वात
१९५८-५९	१,५२,९९	१,०२,२९	१,०१	७,३५	७,१०	५,८९	१,२८	२,६१	५,५५	७,२६
१९५९-५०	१,५३,९९	१,१८,१५	३,८१	५,५२	७,६२	६,२३	६,५२	६,५१	५,९६	७,३७
१९५०-५१	१,३१,५०	१,३९,८२	११,०७	९,०१	९,०५	९,८१	११,०५	१०,९३	६,६८	१०,१६
१९५१-५२	१,५८,१३	१,८९,६६	१०,७२	११,३७	९,५२	८,३९	२,३५	९,३८	१०,९२	७,९२
१९५२-५३	१,३८,८५	१,२३,२९	१३,५५	५,६९	६,६०	६,६८	२,३५	१२,५८	१०,८०	१०,३९
१९५३-५४	१,५२,७१	१,५९,९९	९,९३	५,३२	७,६७	५,५७	३,१५	११,५६	११,३०	६,८६
१९५४-५५										
जुलाई	११,३६	१५,३१	१,००	३५	१,२८	५१	२,५६	८९	१,०९	५९
१९५३-५४										
जुलाई	१३,१८	११,५१	६९	३६	६१	५६	२,०६	७२	६३	५२

निर्वात में पुनर्निर्वात भी सम्मिलित हैं।

वर्ष	आस्ट्रिया		हंगरी		पोलैण्ड		चेकोस्लोवाकिया		योगोस्लाविया		तुर्की	
	आयात	निर्वात	आयात	निर्वात	आयात	निर्वात	आयात	निर्वात	आयात	निर्वात	आयात	निर्वात
१९५८-५९	८०	३५	१२	२५	८	३२	२,०८	२,३९	१०	१०	६	९२
१९५९-५०	५९	५३	६	२३	२९	६८	२,८१	१,५९	६१	५५	१५	२,३१
१९५०-५१	१,६५	५३	१०	३	३०	५०	२,७७	१,०८	१२	९	३	२,२९
१९५१-५२	२,५७	१०१	३२	३५	२६	२,८१	१,३९	१५	२६	१३	३,५५	
१९५२-५३	१,८९	५२	१६	५	२६	४	१,१५	१,१८	९	११	०,८२	५,९५
१९५३-५४	२,५१	५७	१०	२	१६	१५	१,१५	३,०६	७	१	०,३१	२,५८
१९५४-५५												
जुलाई	२२	५	१	नगण्य	१	०,३	९	५	२	१	नगण्य	५
१९५३-५४												
जुलाई	१५	२	०,२	१	नगण्य	९	१८	०,२	०,३	नगण्य	२०	

निर्वात में पुनर्निर्वात भी सम्मिलित हैं।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार—यूरोप (गत ताबका न आग)

(मूल्य लाख रुपये में)

वर्ष	स्विट्जरलैंड		इटली		स्वीडन		नार्वे		फिनलैंड		रूस	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	८,६६	१,२२	१८,३१	६,४४	६,०९	२,११	४,३४	८६	१,३८	१९	३,७६	४,३६
१९४९-५०	७,४४	२,४४	१४,८३	४,६६	६,२०	२,३९	२,४४	१,०८	१,१७	२०	१६,३८	३,७४
१९५०-५१	७,६१	२,२३	१६,९०	१४,००	५,२८	२,६८	२,२३	१,३३	१,४९	२१	२३	१,३०
१९५१-५२	९,६४	२,०९	१७,९६	७,८८	७,४७	२,४४	३,४८	१,६०	२,१४	१,०६	१,३८	६,९२
१९५२-५३	६,६४	६१	१२,०१	१०,९१	५,६६	१,८२	२,७८	—	१,६०	२४	२४	८४
१९५३-५४	९,१२	—	२३,०७	४,१२	६,१८	३,४३	३,६२	४१	१,७७	१२	६०	१,१४
१९५४-५५												
कुल	७७	—	१,८१	३७	४४	१६	१८	३	१७	२	२	—
१९५३-५४												
कुल	५४	४	१७३	२६	३७	१०	३४	१	२०	१	२	

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

एशिया और अफ्रीका

वर्ष	भारत		ईरान		ईरान		पाकिस्तान		पूर्वी अफ्रीका		मिस्र	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९४८-४९	१,७७	२,००	२,२७	३,३९	२०,४०	३,१४*	१,०७,३७	७६,६९	१४,०३	१,४४	३१,९०	६,७२
१९४९-५०	३,४६	७,११	३,३८	४,०२	३२,४०	४,८२	४४,०४	४७,३०	१८,४२	१,०३	४०,२४	७,६४
१९५०-५१	१,१६	९,७६	४,२९	२,८६	३७,१४	४,६८	४३,६४	३०,६०	२२,४३	१,०९	३२,२७	४,८७
१९५१-५२	८६	६,३०	३,६१	३,१९	२८,६३	४,१७	८७,४०	४४,२९	२३,६६	१२,१०	४०,४९	६,४१
१९५२-५३	५९	६,३३	२,०४	२,११	२,४०	२,०७	२३,८८	३१,१४	३४,३६	१४,३९	१४,३२	४,६९
१९५३-५४	३२	९,०३	२,५६	२,४४	२,०४	१,४३	१९,३०	८,०४	२०,१७	१०,७९	२७,६९	१,६१
१९५४-५५												
कुल	१	४८	१	२७	१०	३४	१,३४	७९	१,२४	१,३०	७६	६४
१९५३-५४												
कुल	२	६१	४	२६	११	८	२,१९	४१	२,७८	६६	२,३०	२०

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित है।

भारत का विदेशी व्यापार

(समुद्र तथा वायु द्वारा)

(घ) देशों के अनुसार—एशिया और अफ्रीका (गत तालिका से आगे)

(मूल्य लाख रुपया में)

वर्ष	मोजाम्बिक		तंका		बर्मी		मलाया संघ, (सिंगापुर सहित)		थाईलैण्ड		जापान	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९५०-५१	२,५७	८७	२,७३	१२,३१	२६,२५	१०,५६	६,६०	५,३४	८,३३	२,३७	६,३८	४,१६
१९५१-५२	३,००	६२	२,७३	१६,८२	१४,१७	१४,६३	१४,४८	१७,६८	१२,२४	४,१६	२१,३८	५,८७
१९५२-५३	४,५४	५२	४,५३	१८,६८	१८,८०	२२,४५	१६,६६	३६,२०	८,१५	४,८५	१०,११	१०,२८
१९५३-५४	३,५२	६२	५,६०	१६,८१	२३,३५	१६,७६	२२,०६	१५,८१	११,६४	८,७६	२४,६५	१४,८१
१९५४-५५	५,६५	६४	४,२६	२०,०८	२६,४७	२२,३८	१४,८२	१८,८६	७,७२	४,६६	१५,८०	१२,६६
१९५५-५६ :												
जुलाई	७६	६	३५	१,२८	६,११	१,२२	२,१५	८४	१	१०	६६	६४
१९५६-५७ :												
जुलाई	४३	४	५८	१,५५	१,३२	१,८४	१,८४	८८	१	१३	८६	१,२७

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित हैं।

अमेरिका और आस्ट्रेलिया

वर्ष	संयुक्त राष्ट्र अमेरिका		कनाडा		अर्जेन्टाइना		आस्ट्रेलिया	
	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात	आयात	निर्यात
१९५०-५१	१,०६,१३	७०,६८	१०,६६	८,३६	१२,८८	१६,६८	६०,०३	२०,६४
१९५१-५२	६५,४१	८१,५३	२३,६३	११,०६	८,६६	७,७८	४७,७५	२६,३६
१९५२-५३	१,७७,८७	१,१५,३८	२१,०२	१३,७६	५	१०,६५	३३,४५	६०,४१
१९५३-५४	२,८८,७०	१,२२,३६	१८,८१	१६,२६	७६	१७,६३	१७,६१	४७,६३
१९५४-५५	१,८१,४१	१,१२,७५	२६,३१	१२,८४	४	६,८३	१२,७३	१६,६८
१९५५-५६ :								
जुलाई	८,२६	६,६५	५१	१,२०	१	२,२३	१,०७	२,१५
१९५६-५७ :								
जुलाई	५,६०	७,४६	३,१५	१,०७	...	२,७७	५,३४	१,०७

निर्यात में पुनर्निर्यात भी सम्मिलित हैं।

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएँ	राज्य	इकाई	नवम्बर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			र० अ० पा०	र० अ० पा०	र० अ० पा०	र० अ० पा०	र० अ० पा०
खाद्य पदार्थ							
१. चावल							
(१) माधारण (न)	कनकदा	मन	१६-१२-०	१६-१२-०	१६-१२-०	१६-१२-०	१६-१२-०
(२) लाल	पटना	"	१६-०-०	१६-०-०	१७-०-०	१७-०-०	१७-०-०
(३) अन्नगड्डा (उ)	विजयवाडा	"	१४-६-३	१४-६-३	१४-६-३	१४-६-३	१४-६-३
२. गेहूँ							
(१) माधारण	जबलपुर	"	१८-१३-०	१८-१३-०	१८-६-०	१७-६-०	१५-१२-०
(२) "	अमृतसर	"	१४-१०-०	१६-०-०	१६-१२-०	१६-१४-०	१८-११-०
(३) "	हावुड	"	१५-१०-०	१७-४-०	१३-४-०	१५-५-०	१६-०-०
३. ज्वार							
	अमरगढती	"	६-१२-०	१०-१०-०	१०-२-०	६-१०-०	१०-२-०
४. बाजरा							
	हैदराबाद शहर	२४० पौंड	३२-११-०	३४-१३-०	३२-१२-०	२८-८-०	२७-०-०
५. चना							
		का पल्ला					
(१) देशी	पटना	मन	१७-०-०	१५-०-०	१५-०-०	१३-०-०	१२-८-०
(२) "	हावुड	"	१४-८-०	१४-८-०	१३-८-०	११-१०-०	१३-०-०
६. दाल							
	अरहर	"	१२-०-०	१२-०-०	१०-४-०	६-१२-०	१०-१२-०
७. चाय							
(१) आंतरिक उपभोग के लिए	कनकदा	पौंड	१-६-६	१-०३-२	१-६-११	१-१२-६	२-१-०
(२) निर्यात :—							
(क) निम्न मध्यम श्रेणी पीके	"	"	१-१२-६	अप्राप्त	२-१-६	अप्राप्त	अप्राप्त
(ख) मध्यम श्रेणी पीके	"	"	१-१३-३	अप्राप्त	२-२-६	अप्राप्त	अप्राप्त
८. कार्पास							
(१) फ्लोरिडन पीके (गोला) मंगलौर कोयम्बतूर* इंडोचेत			२३६-०-०	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२३२-८-०
(२) देशी चपटी	"	"	अप्राप्त	१७३-८-०	१६६-०-०	१६०-०-०	१४७-८-०
९. चीनी (क)							
(१) डी. २८	कांगपुर	मन	२६-३-१०	३०-०-४	३०-६-७	३०-५-३	३२-१४-४
(२) डी. २७	"	"	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
(३) ई. २७	"	"	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
१०. मुड़							
(१) खाने के लिये	अहमदनगर	"	२५-०-०	१६-८-०	१८-०-०	१६-०-०	१६-०-०
(२) " " "	मुजफ्फरनगर	"	१५-१४-०	१५-१४-०	१५-१०-६	१६-६-०	२१-११-०

(न) नियंत्रित मूल्य (उ) उचित मूल्य

मन = ८२—२/७ पौंड ।

(क) कारखाने से चलते समय का मूल्य ।

मंगलौर मन = ८२—२/१५ पौंड ।

* प्रतिवर्ष जनवरी से जून तक मंगलौर बाजार के मूल्य और जुलाई से सितम्बर तक कोयम्बतूर बाजार के मूल्य दिये जाते हैं ।

† इस तालिका में समस्त भाव प्रत्येक मास के दूखरे सप्ताह के दिये गये हैं ।

के भाव : १६५४*

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सेप्टेम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
क०आ०पा०	क०आ०पा०	क०आ०पा०	क०आ०पा०	क०आ०पा०	क०आ०पा०	क०आ०पा०	
१६-१२-०	१६-१२-०	१६-१२-०	१७- ८-०	१७-१२-०	१६-१५-०	१६-१२-०	
१७- ०-०	१४- ०-०	१४- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१३- ०-०	१३-० -०	
१४- ६-३	१४- ६-३	१४- ६-३	१५-१०-८	१६- ५-४	१६- ०-०	१५-१०-८	
१४- ६-०	१४- ०-०	अप्राप्त	१३- ८-०	१३- ४-०	१४- ०-०	१५- ०-०	
१४- ०-६	१०- ०-०	१०-१४-०	१२- ६-०	१३-१३-०	१४- ७-३	१४- ८-०	
१३- ८-०	११-१२-०	१२- ४-०	१२- २-०	१२- ०-०	१२- ८-०	१२- ४-०	
१०- २-०	६- ०-०	६- ४-०	६- ८-०	८- ८-०	८- ४-०	अप्राप्त	
२३-१२-०	२६- ६-०	२७- ०-०	२६- ४-०	२६- ०-०	२४- ०-०	३०- ०-०	
१२- ८-०	११- ०-०	१०- ८-०	११- ०-०	१०- ८-०	१०- ८-०	१०- ८-०	
१२- ४-०	१०- ४-०	१०- ०-०	६- ८-०	१०- ०-०	६-१२-०	८- ८-०	
१०- ५-०	८- २-०	७-१५-०	७- ४-०	८- २-०	७- ८-०	७- ०-०	
१-१२-८	अप्राप्त	२-०-११	२- २-७	२- ८-७	अप्राप्त	२- २-७	
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२-१२-०	३- १-०	अप्राप्त	३- ३-०	
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	२-१२-६	३- १-६	अप्राप्त	३- ३-६	
२२२- ८-०	२१६- ०-०	२२१- ०-०	२२१- ०-०	२२१- ०-०	२२०- ०-०	२२८- ०-०	
१५२- ०-०	१६२- ८-०	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	बिक्री नहीं	बिक्री नहीं	
३१- ६-४	३०- ८-७	३१- ०-५	३१-१२-०	३२- २-०	३१-१५-४	३१-१०-६	
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	३०- २-०	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	
अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	
अप्राप्त	१६- ०-०	१७- ८-०	१७- ८-०	१७- ८-०	१८- ०-०	१३- ०-०	
२०-१०-०	१७-१०-०	१६- ०-०	२१- ८-०	२०- ४-०	२१-१२-०	१२- ८-०	

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएँ	राज्य	रकार्ड	नवम्बर १९५२	दिसम्बर	फरवरी	मार्च	अप्रैल
११ नमक			६०आ०पा०	६०आ०पा०	६०आ०पा०	६०आ०पा०	६०आ०पा०
(१) साम्बर (२)	दिल्ली	मन	२ ८०	२ ८०	२ ८०	२ ८०	२ ८०
(२) काला	बम्बई	"	१ २०	१ २०	१ २०	१ २०	१ २०
१२ तन्हाऊ							
बाग पूरा मध्यम	कनका	बागल मन	१२० १२ ६	१२० १२ ६	१२० १२ ६	१२० १२ ६	अप्रैल
(साधारण औलन दलै का)							
१३ काली मिर्च							
(१) एलेया	"	"	२३० ००	२२० ००	१८० ००	१६० ००	१७० ००
(२) छटा डुर	बोयान	हजक	३१६ ११ ०	३२५ ००	३१० ००	२६७ ८०	२६० ००
१४ काजू							
भातवय	मंगलौर	मन	१२ १० ७	१२ १० ७	१२ १० ७	१३ १४ १०	१५ ३०

औद्योगिक कच्चा माल

१ रुई, कच्ची

(१) बागला एम की एफ.	बम्बई	उज्ज पोन् की कैडा	६७० ००	७६३ ००	८२० ००	७५४ ००	७५२ ००
(२) २१६ एफ पा	"	"	अप्रैल	अप्रैल	६८६ ००	६८८ ००	६९७ ००
अमारका एम की							
(३) बागला वणया एम डा	"	"	५५५ ००	६२५ ००	६४० ००	६२० ००	५६५ ००

२ जूट कच्चा

(१) फुट्स	कनका	४०० पौंड की गाट	१६५ ००	१७० ००	१६५ ००	१६५ ००	१७५ ००
(२) ला मिनि	"	"	१५० ००	१६० ००	१५० ००	१५० ००	१६० ००
(३) भागवाम	मन		२१ ००	३५ ००	३२ ८०	३२ ००	२९ ००

३ रेहाम कच्चा

(१) २४०० तना खामक	माला	मेर	५० ००	५५ ००	५६ ००	६३ ००	६४ ००
(२) चन्ना या या किरम का	बगलार	३६ तौले वा पो	२२ ८०	२८ ००	२७ ८०	३१ ००	३६ ८०

४ ऊन, कच्चा

(१) गान्धा मरुत पन्थि	बम्बई	मन	२८० ७०	अप्रैल	२७० १००	२६७ १००	२७७ ११०
(२) पन्थि	बालम्पाम	"	१० ००	१३५ ००	१६७ ८०	१६५ ००	१६५ ००
	पन्थि						

(न) निर्यात मूल्य ।

के भाव : १९५४ (गत वृत्त से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
व०आ०पा०	व०आ०पा०	व०आ०पा०	व०आ०पा०	व०आ०पा०	व०आ०पा०	व०आ०पा०	व०आ०पा०
२- ८-०	२- ८-०	२- ८-०	२- ८-०	२- ८-०	२- ८-०	२- ८-०	२- ८-०
१- २-०	१- २-०	१- २-०	१- २-०	१- २-०	१- २-०	अप्राप्त	अप्राप्त
अप्राप्त	१०५-१३-६	१०५-१३-६	६६-१३-६	६४-१३-६	अप्राप्त	१००-१३-६	अप्राप्त
१५५- ०-०	१५०- ०-०	१३०- ०-०	१३०- ०-०	१६०- ०-०	१६५- ०-०	१७०- ०-०	१७०- ०-०
२४०- ०-०	१५५- ०-०	१८०-१५-०	२४६- ३-०	२२५- ०-०	१६०- ०-०	१६५- ०-०	१६५- ०-०
१२-१०-६	१३-१४-६	१२-१०-७	१२-१५-७	१४- ६-४	१२-१०-७	१२-१५-८	१२-१५-८
७४०- ०-०	७२५- ०-०	६६७- ०-०	७०७- ०-०	७१४- ०-०	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
६१०- ०-०	८८८- ०-०	८५७- ०-०	८६३- ०-०	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
६०५- ०-०	५७५- ०-०	५५०- ०-०	५१५- ०-०	५४०- ०-०	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त
१६५- ०-०	१५५- ०-०	१४०- ०-०	१४०- ०-०	१५०- ०-०	अप्राप्त	१८०- ०-०	१८०- ०-०
१५०- ०-०	१४०- ०-०	१२५- ०-०	१२५- ०-०	१३५- ०-०	अप्राप्त	१६५- ०-०	१६५- ०-०
३२- ८-०	अप्राप्त	२७- ०-०	२७- ०-०	३२- ०-०	३२- ८-०	३५- ८-०	३५- ८-०
६६- ०-०	६३- ०-०	६३- ०-०	६३- ०-०	६३- ०-०	६५- ०-०	५६- ०-०	५६- ०-०
३०- ०-०	अप्राप्त	२८- ०-०	२६- ०-०	२७- ८-०	अप्राप्त	२८- ०-०	२८- ०-०
२७७-११-३	२७७-११-३	२७२- ६-०	२६७- ७-०	२७२- ६-०	२६७- ७-०	२६७- ७-०	२६७- ७-०
१७२- ८-०	१७५- ०-०	१७५- ०-०	१६५- ०-०	१६५- ०-०	१८०- ०-०	१८०- ०-०	१८०- ०-०

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएं	मात्र	इकाई	जनवर १९५३	अप्रैल	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			द०क्रा०पा०	द०क्रा०पा०	द०क्रा०पा०	द०क्रा०पा०	द०क्रा०पा०
५ नूतनगन्ना							
(१) गन्ना	बन्दर	द०क्रा०	६ ८०	५ १००	५ ५०	५ १००	५ ५०
(२) मगान सट्टा लाइ	बहुताकार	मन	१ ६०	० ५१०२	१ १०	५ ६०	५ ५०
६ खनसा							
(१) खनसा	बन्दर	द०क्रा०	६ ००	५ ८०	६ ००	५ ५०	५ ८०
(२) ५०% अन्वयन	बहुता	मन	१ ६१५०	० ८०	१ ५०	० ५०	१ ६ ००
छाता (दिना)							
७ अरुण्डा का मात्र							
(१) अरुण्डा का मात्र	मात्र	,	१० ५५०	१८ ००	१५ ५०	१५ ००	१५ ५०
(२) छाता अरुण्डा का मात्र	बन्दर	द०क्रा०	७ ००	० ८०	५ ५०	२५ ५०	५ ०
८ तिल							
(१) अरुण्डा का मात्र	,	"	५ ००	५५ ००	५१ ००	४० ८०	५२ ००
(२) अरुण्डा का मात्र	बहुता	मन	५ ५०	५८ ८०	५ ८०	५५ ८०	५० ००
९ कारिया							
(१) अरुण्डा का मात्र	अरुण्डा	द०क्रा० मन	८ ८०	६ ५०	५ १० ००	० ६ ८०	५ ६ ८०
(२) अरुण्डा का मात्र	बन्दर	मन	१ १५०	० १५०	५ ५० ००	२५ ८०	५ १५०
(३) अरुण्डा का मात्र	अरुण्डा	"	५ ५ १०	५ ८ ८०	५ ५ ५०	५ १ १० ००	५ ५ १५ ०
१० अरुण्डा का मात्र							
(१) अरुण्डा का मात्र	बन्दर	द०क्रा०	१ ६ ६	१ ५ ७ ६	१ ६ ६ ५	१ ५ १ ५ ६	१ ५ १ ५ ७
(२) अरुण्डा का मात्र	अरुण्डा	द०क्रा० मन	८ ० ०	१ ० ७ ३	६ १ ५ ५	६ २ ५	१ ० ५ २
११ अरुण्डा का मात्र							
अरुण्डा का मात्र	बन्दर	द०क्रा० मन	५ १ ०	० ६ ५ ७ ०	३ ५ ५ ६ ०	३ ५ ० ० ०	५ ५ १ ५ ०
१२ अरुण्डा का मात्र							
(१) अरुण्डा का मात्र	अरुण्डा का मात्र	मन	१ ५ १ ० ०	१ ५ १ ० ०	१ ५ १ ० ०	१ ५ १ ० ०	१ ५ १ ० ०
(२) अरुण्डा का मात्र	"	"	१ ६ ५ ०	१ ६ ५ ०	१ ६ ५ ०	१ ६ ५ ०	१ ६ ५ ०
(३) अरुण्डा का मात्र	"	"	१ ७ ८ ०	१ ७ ८ ०	१ ७ ८ ०	१ ७ ८ ०	१ ७ ८ ०
१३ अरुण्डा का मात्र							
अरुण्डा का मात्र	अरुण्डा का मात्र	"	१ ५ १ १ ० ३	१ ५ १ ५ ६	१ ५ १ १ ५ ५	१ ५ १ ६ ५	१ ५ १ ७ ५

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
ख०आ०पा०	ख०आ०पा०	ख०आ०पा०	ख०आ०पा०	ख०आ०पा०	ख०आ०पा०	ख०आ०पा०	ख०आ०पा०
३६-४-०	३१-४-०	३१-४-०	२७-४-०	२६-१२-०	२६-०-०	२४-४-०	
२३-११-४	२०-१५-०	२२-८-०	१६-६-०	१८-२-०	१७-१-०	१५-१३-०	
२७-४-०	२४-८-०	२३-४-०	२३-८-०	२३-४-०	२३-८-०	२३-०-०	
१६-१०-०	१७-०-०	१७-८-०	१६-४-०	१७-६-०	१७-२-०	१६-२-०	
१६-७-०	१४-७-०	१४-७-०	१४-१५-०	१४-१५-०	१७-१५-०	१४-०-०	
२३-१०-०	२१-४-०	२२-२-०	१६-१०-०	१६-१४-०	१६-४-०	१८-१०-०	
अप्रति	४२-०-०	४५-०-०	३८-०-०	३३-१२-०	२८-०-०	२५-१२-०	
२७-०-०	२५-०-०	२४-०-०	२६-०-०	२१-०-०	१६-०-०	१५-८-०	
२७-०-०	२४-०-०	२६-०-०	२७-०-०	२६-०-०	२७-०-०	२८-०-०	
अप्रति	२१-५-०	२२-१२-०	२४-४-०	२२-६-०	२३-८-०	२५-०-०	
२३-१२-०	अप्रति	२२-१-५	२४-०-०	२४-१०-०	२४-१०-०	२२-१२-०	
१५-६-१	१५-३-२	१३-१३-१०	१३-८-५	१२-४-०	१२-५-४	१२-६-६	
१०-४-११	अप्रति	अप्रति	अप्रति	अप्रति	अप्रति	७-८-०	
३२७-८-०	३००-०-०	३१०-३-०	३२०-१२-०	३२३-८-०	३३१-६-०	३२५-१४-०	
१५-१२-०	१५-१२-०	१५-१२-०	१५-१२-०	१५-१२-०	१५-१२-०	१५-१२-०	
१६-४-०	१६-४-०	१६-४-०	१६-४-०	१६-४-०	१६-४-०	१६-४-०	
१७-८-०	१७-८-०	१७-८-०	१७-८-०	१७-८-०	१७-८-०	१७-८-०	
१६२-३-१०	१५४-११-५	१२१-४-८	१४३-०-७	१३४-०-६	१४३-१-१०	अप्रति	

३. देश मे वस्तुया

वस्तुए	बाजार	इकाई	नवम्बर १९५३					
			दशांश	नवम्बर १९५३	नवम्बर	फरवरा	मार्च	अप्रैल
			द०आ०पा०	द०आ०पा०	द०आ०पा०	द०आ०पा०	द०आ०पा०	
१४ चमडा, कच्चा								
(१) नमक लगा सूखा गाय का	कलकता	२० पींड	अप्रैल	१६ ००	१५ ००	१५ ००	१५ ००	
(२) नमक लगा गाला मैस का	कलकता	२० पींड	अप्रैल	१० ००	१० ००	१० ००	१० ००	
(३) नमक लगा गाला गाय का	बानपुर	काडा	२६० ००	२६० ००	२०५ ००	२०५ ००	२०५ ००	
(४) नमक लगा गाला मैस का	,,	२० पींड	६ ११ २	६ ११ २	१० १०-८	११ ६ १	१० ५ ६	

१५ खालें, कच्ची

बकरा का, औसत वजन का	कलकता	१०० यान	अप्रैल	३५० ००	५५० ००	३५० ००	३५० ००
---------------------	-------	---------	--------	--------	--------	--------	--------

१६ लाख

(१) चमडा शुद्ध टा० एन०	,,	भगाल मन	१०६ ८०	१०८ ००	६५ ८०	८७ ००	६१ ००
(२) बदन शुद्ध	,,	,,	११८ ००	१२० ००	११४ ००	१०६ ८०	११२ ८०

१७ रवड

BMA IX RSS	बोदायन	१०० पींड	१३२ ००	१३३ ००	१३३ ००	१२३ ००	१३३ ००
------------	--------	----------	--------	--------	--------	--------	--------

अर्थ निर्मित वस्तुए**१. चमडा**

(१) गाय का चमडा	मद्रास	पींड	३ १ ६	३ ० ३	३ १ ०	२ १५ ०	२ १४ ३
(२) मैस का चमडा	,,	,,	२ ० ६	२ १ ६	२ १ ६	२ ० ६	२ ० ३
(३) भेड की खालें	,,	,,	६ ८०	६ ८०	५ १५ ०	५ ११ ०	५ ८०
(४) बकरी का खालें	,,	,,	४ १७ ६	४ १४ ०	४ १४ ०	४ १४ ०	४ १३ ०

२ खनिज तेल

(क) मिट्टी का तेल (न)								
(१) बाण्डा याक	कलकता	८ गैलन	१० ७ ६	६ १५ ०	६ १५ ०	६ १५ ०	६ १५ ०	
(२) बाण्डा याक	,,	,,	१० १४ ६	१० ७ ०	१० ७ ०	१० ७ ०	१० ७ ०	
(ख) पेट्रोल (न)								
(१) याक पम्प पर	,,	गैलन	२ १२ ०	२ ११ ६	२ ११ ६	२ ११ ६	२ ११ ६	
(२) ,,	गिल्ली	,,	२ १४ ६	२ १४ ६	२ १४ ६	२ १४ ६	२ १४ ६	
(३) ,,	मद्रास	,,	२ १२ ०	२ १२ ०	२ १२ ०	२ १२ ०	२ १२ ०	

३ घनस्पति तेल

क नारियल का तेल								
(१) साधारण औसत टर्बे का (तेलार)	बाचान	६५४ पींड का बेंडी	५८३ १३ १	५६२ ६ ०	५२५ १२ ५	४६५ ० ७	५८० १ ३	
(२) बेचान का	कलकता	बागाल मन	७४ ००	८० ००	८४ ००	७४ ००	७२ ००	
बाण्डा, खुन्दा								
(३) खुला	बम्बई	बार्सेल	२२ ८०	२६ २ ०	२५ ४ ०	२ ० ०	२२ ४ ०	

(न) नानावत मूल्य ।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	अक्तूबर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
संख्यांका०	संख्यांका०	संख्यांका०	संख्यांका०	संख्यांका०	संख्यांका०	संख्यांका०	संख्यांका०
१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०	१५- ०-०
१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०	१०- ०-०	१५- ०-०
२४५- ०-०	२३०- ०-०	२३०- ०-०	२४०- ०-०	२७०- ०-०	२७०- ०-०	२७०- ०-०	२७०- ०-०
११- ०-७	११-११-७	११- ०-७	११- ०-७	११- ०-७	११- ०-७	११- ०-७	११- ०-७
३५०- ७-०	३५०- ०-०	३००- ०-०	३००- ०-७	३००- ०-०	३००- ०-०	३००- ०-०	३००- ०-०
११५- ०-०	११५- ०-०	११३- ०-०	११७- ०-०	११६- ०-०	११६- ५-०	११५- ५-०	११५- ५-०
१२३- ०-०	१४२- ०-०	१५०- ०-०	१५६- ०-०	१६०- ०-०	१४७- ०-०	१६४- ५-०	१६४- ५-०
१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०	१३३- ०-०
२-१२-३	२-१२-३	२-१२-३	२-१२-३	२-११-६	२- ७-६	२-१०-६	२-१०-६
२- ०-०	२- ०-०	२- ०-६	२- ०-६	२- १-०	१-१५-६	२- १-०	२- १-०
५- ५-०	५- ५-०	५- ०-०	५- ३-०	५- ३-०	५- ३-०	५- ३-०	५-१४-६
४-१३-०	४-१३-०	४-१२-०	४-१४-०	४-१४-०	५- ०-०	५- ०-०	५- ०-०
६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०	६-१५-०
१०- ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०	१०- ७-०
२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६	२-११-६
२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६	२-१४-६
२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०	२-१२-०
४५६- ५-०	४४३-१४-७	४५३-१४-३	४७०- १-७	४७०- १-७	४५३-१३-१	४७५-१३-३	४७५-१३-३
७२- ०-०	६६- ०-०	६६- ०-०	६४- ०-०	६४- ०-०	अज्ञात	६४- ०-०	६४- ०-०
२१-१०-०	२१- ०-०	२१- ४-०	२०-१२-०	२१- ५-०	२१- ५-०	२१- ४-०	२१- ४-०

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएं	वातावर	इकाई	नवम्बर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
			₹०श्रा०पा०	₹०श्रा०पा०	₹०श्रा०पा०	₹०श्रा०पा०	₹०श्रा०पा०
ख. भूगर्भीयों का तेल							
(१) लुग्रा	मद्रास	५०० गैल की बैट्टी	२६५ ००	३१८ ००	३१० ००	३०८ ००	३१९ ०० *
(२) खुला	बम्बई	क्याटर	१६ ८०	१८ १००	१७ ४०	१७ २०	१८ २०
(३) गुण्डर (दान बन्द)	कलकत्ता	बगाल मन	६० ००	६० ००	५७ ००	५७ ००	५८ ८०
ग मरसो का तेल							
(१) लुग्रा (मिल व निकलत समय)	"	"	६४ ४०	७४ ८०	६६ ८०	६० ००	६२ ८०
(२)	पन्ना	मन	६३ ८०	७३ ००	६५ ००	५६ ००	६० ००
(३)	कानपुर	"	६० ००	६६ ६०	५८ ००	५४ ००	५८ ००
घ अरएडी का तेल							
(१) न० १ बडिया पाला (बहाण पर)	कलकत्ता	मन	७५ ००	७२ ००	७१ ००	६३ ००	६६ ००
(२)	मद्रास	५०० गैल की बैट्टी	१६५ ००	२८५ ००	२३० ००	२१० ००	२२० ००
ङ तिल का तेल							
खुला	बम्बई	क्याटर	अप्रति	२० ००	१६ ८०	१८ २२०	२४ १५ १०
च अलसी का तेल							
(१) कच्चा खुदा (मिल से निकलते समय)	कलकत्ता	मन	४६ ८०	५१ ००	४८ ००	४७ ००	४४ ००
(२)	बम्बई	क्याटर	१४ १२०	१६ ००	१५ ८०	१३ १२०	१४ १२०
६. खली							
(१) भूगर्भा	कलकत्ता	मन	११ ००	७ ८०	७ ८०	७ ००	७ ८०
(२) नारियल	बम्बई	११ डब्ल्यूके	२३ ४०	२५ ८०	२७ ००	२७ ००	२४ ००
(३) तिल	"	टन	३०० ००	३२५ ००	३३५ ००	३२५ ००	३३० ००
७. सूत (भूरे रंग का) भारतीय							
(१) १० नम्बरी	कलकत्ता	५ पौंड	६ १२०	६ १००	६ ४५०	६ ६०	६ १००
(२) २० "	"	"	८ ५६	८ ३०	८ ८०	८ ६०	८ १२०
(३) ४० "	"	"	१८ ००	१८ ००	१२ ००	१२ ००	१२ ००
(४) सूत २० नम्बरी	बग नौर	१ पौंड	१७ २०	१६ ११०	१७ ४०	१७ ८०	१७ १००
८. नारियल की सुतली							
(१) अल्लमा अलाग	को ली	६ डब्ल्यूके की बैट्टी	२६५ ००	२७५ ००	२७५ ००	२७३ ५०	२७८ ५०
(२) अल्लमा बगिया	"	"	३१० ००	३१५ ००	३१५ ००	३१५ ००	३१५ ००

(न) नियंत्रित मूल्य ।

* सम्भावित मूल्य ।

के भाव : १५६४ (गत प्रष्ट से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
संश्रा०पा०	संश्रा०पा०	संश्रा०पा०	संश्रा०पा०	संश्रा०पा०	संश्रा०पा०	संश्रा०पा०	संश्रा०पा०
३०६-०-०	२६५-०-०	२७२-०-०	२३५-०-०	२२७-०-०	२२०-०-०	२२५-०-०	
१८-३-०	१५-६-०	१५-१२-०	१४-०-०	१४-०-०	१३-१०-०	२१-१०-०	
५६-०-०	४६-०-०	५१-०-०	४३-८-०	४३-८-०	अप्राप्त	४०-०-०	
६७-८-०	६०-८-०	६१-८-०	६४-०-०	६७-०-०	६७-८-०	६४-८-०	
६८-०-०	६०-०-०	५७-०-०	६०-०-०	६५-०-०	६१-०-०	६३-०-०	
६०-०-०	५४-८-०	५५-०-०	५८-८-०	६४-०-०	६७-८-०	५६-०-०	
६६-०-०	५६-०-०	५६-०-०	५३-०-०	५३-०-०	५५-०-०	५२-०-०	
२२७-०-०	१८७-०-०	२००-०-०	१८०-०-०	१७८-०-०	१८५-०-०	१७६-०-०	
२१-०-२	अप्राप्त	२०-०-०	१६-८-०	१५-७-११	१४-०-०	१३-०-०	
४४-८-०	३६-०-०	३६-८-०	३४-८-०	३७-०-०	३६-१२-०	३४-८-०	
१५-१२-०	१२-१२-०	१२-१४-०	१२-१२-०	१३-०-०	१३-२-०	१२-८-०	
८-८-०	६-०-०	८-८-०	८-०-०	८-८-०	८-४-०	८-०-०	
२४-०-०	२१-०-०	२०-०-०	१६-०-०	२०-०-०	१८-८-०	१८-८-०	
३४०-०-०	३२०-०-०	३२०-०-०	३२०-०-०	३२५-०-०	३२५-०-०	३२५-०-०	
६-१०-०	६-१०-०	६-१०-०	६-१०-०	६-१०-०	६-८-०	६-८-०	
६-०-०	६-०-०	६-०-०	६-०-०	६-०-०	६-०-०	६-०-०	
१२-०-०	१२-०-०	१२-०-०	१२-०-०	१२-०-०	१३-०-०	१३-०-०	
१७-१२-०	१८-२-०	१७-१४-०	१७-१४-०	१७-१४-०	१७-१२-०	अप्राप्त	
२७०-०-०	२७०-०-०	२७०-०-०	२६५-०-०	२८०-०-०	२८२-८-०	२८५-०-०	
३०३-५-०	२८८-५-०	२८०-०-०	२७४-३-०	३००-०-०	३१०-०-०	३०५-०-०	

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएं	भाषा	इकाई	नवम्बर १९५३	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
क लोहा आर इस्पात			६०,००,०००	६०,००,०००	६०,००,०००	६०,००,०००	६०,००,०००
क फरुचा लाहा (न)							
(१) फाउ डरी १० १	कचकता पट्टबन पर	टन	१४३ ००	१६३ ००	१६३ ००	१६३ ००	१६३ ००
(२) लाहा वेसिक	"	"	१२७ ००	१४७ ००	१४७ ००	१४७ ००	१४७ ००
ख अर्द्ध शुद्ध (न)							
फिर गलान के लिये टुकड़े	कलकता	"	२८६ ००	२८६ ००	२८६ ००	२८६ ००	२८६ ००
घ धातु (लोहे के अतिरिक्त)							
(१) जस्ता स्पेक्टर (बनजला वाला) मुलायम	"	हडरवट	५४ ००	५४ ००	५३ ८०	५३ ००	५७ ८०
(२) पातल पाली धातु-सधान (त्र सिकर) ४" X ४"	"	"	१५२ ८०	१४६ ४०	१४७ १२०	१६५ ००	१७७ ८०
(३) पातल का चादरें (गिलेयडस)	बम्बई	"	१४७ ००	१४६ ००	१५५ ००	१५६ ००	१६० ००
(४) ताम्बे का चादरें (इसिडपन)	"	"	१८६ ००	१६५ ८०	२०२ ००	१६६ ००	२०१ ००
ङ लकड़ी							
सागौन के गोल लट्टे ५ फीट और उससे अधिक परिधि वाले	बल्लार्याह (दक्षिण चादा, मध्य प्रदेश)	घन कुट	११ ००	११ ००	११ ००	११ ००	११ ००
निर्मित वस्तुएं							
। टेक्सटाइल							
ब जूट का माल							
टाट							
(१) १० १/२ श्रॉस ४०"	कलकता	१०० गज	५१ ६०	४७ १००	४८ ८०	४६ ००	४५ १००
(२) ८ श्रॉस ४०"	"	"	३६ ४०	३७ १४०	३७ १२०	३७ ४०	३६ ००
जोरियों							
(१) बी दिव्ल	"	१०० जोरियों	१०२ ८०	१०५ ८०	१०३ २०	१०८ ००	१०६ ००
(२) सी भारा कारियों	"	"	१०० १२०	१०३ ००	१०४ ८०	११२ ८०	११८ ८०
ख सूती माल							
(१) कोर कमान का कपडा १२१ ३५" X ३८ गज X ७ सैड	बम्बई	एक थान	१६ ३८	१६ ३८	१७ ३६	१७ ३६	१७ ३६
(२) काय स्टैडर्ड कमीज का कपडा ३८ गज	"	पाट	२ ००	१ १२ ४	१ १२ ४	१ १२ ४	१ १४ ७
(३) छूट ४५८८ ४३" X ३८ गज	"	एक थान	२४ १५०	२४ १५०	२४ १५०	२६ २०	२६ २०
(४) कारी धारियों मध्यम ४३" X १०/२ गज X २ ६/१६ पाट	"	एक जोडा	५ ११०	५ ११०	५ ११०	५ ११०	६ ६०

(न) नियमित मूल्य।

के भाव : १९५४ (गत प्रष्ट सँ आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
संख्यां०पा०	संख्यां०पा०	संख्यां०पा०	संख्यां०पा०	संख्यां०पा०	संख्यां०पा०	संख्यां०पा०	संख्यां०पा०
१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०	१६३- ०-०
१४७- ०-०	१४७- ०-०	१४७- ०-०	१४७- ०-०	१४७- ०-०	१४७- ३-०	१४७- ०-०	१४७- ०-०
२८६- ०-०	२८६- ०-०	२८६- ३-०	२८६- ०-०	२८६- ०-०	२८६- ०-०	२८६- ०-०	२८६- ०-०
५७- ८-०	५६- ८-०	५८- ८-०	५६- ८-०	६०- ०-०	६२- ०-०	५८- ०-०	
१७२- ०-०	१६७- ०-०	१६८- ०-०	१६३- ८-०	१६०- ८-०	१६३- ८-०	१६४- ८-०	
१६४- ०-०	१६५- ०-०	१६०- ०-०	१५६- ०-०	१५४- ०-०	१६३- ०-०	१६०- ०-०	
२०१- ८-०	२०१- ८-०	१९६- ८-०	१९६- ८-०	२००- ०-०	२१६- ०-०	२०६- ०-०	
११- ०-०	११- ०-०	११- ०-०	११- ०-०	११- ०-०	११- ०-०	११- ०-०	
४५-१२-०	४६- ४-०	४७- ८-०	४७- ४-०	४६- ०-०	४६- ८-०	४८- ०-०	
३६- २-०	३७- ०-०	३७- ८-०	३६-१२-०	३८- ८-०	३८- ०-०	३८- २-०	
११२-१४-०	११३- ६-०	१०६- ८-०	१०४-१२-०	११०- ८-०	११३- २-०	१२०-१०-०	
११५- ८-०	११४- ८-०	१११-१२-०	१०४- ८-०	११५- ०-०	११८- ८-०	१२२- ८-०	
१७- ३-६	१७- ३-६	१७- ३-६	१७- ३-६	१७- ३-६	१७- ३-६	१७- ३-६	
१-१४-७	१-१४-७	१-१४-७	१-१४-३	१-१४-३	१-१४-३	१-१४-३	
२६- २-०	२६- २-०	२६- २-०	२४-१५-०	२४-१५-०	२४-१५-०	२४-१५-०	
६- ८-०	६- ८-०	६- ८-०	६- ६-०	६- ६-०	६- ६-०	६- ६-०	

३. देश में वस्तुओं

वस्तुएँ	वाचार	इकाई	नवम्बर १९५३	नववरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
(५) रगोन केप—कमीत्र का कपडा एफ० एम०—१०५	मद्रास	गज	६०३००पा० १-०६	६०३००पा० ०-१५-३	६०३००पा० ०-१५-६	६०३००पा० ०-१५-६	६०३००पा० ०-१५-६
(६) एम—५०१ ल्लीच किन्ना मलमल ४८" × २०" गज	"	२० गज	१६-४-०	१६-४-०	१६-४-०	१६-४-०	१६-४-०
ग. रेयन और रेयन का माल							
(१) डेफेडा कोर २६-५०", ४-३/४ १ से ५ पौंड तक (रेयन)	बम्बई	गज	०-७-०	०-७-०	०-८-३	०-६-०	०-६-६
(२) फूजी (चानी रेयन)	"	५० गज का थान	२७५-०-०	अप्राप्त	३१०-०-०	३४०-०-०	४००-०-०
२. लोहे और इस्पात से निर्मित वस्तुएं (न)							
लोहे और इस्पात की पनालीदार चादरें २४ गज	कलकत्ता	हडरवेट	३४-०-०	३४-०-०	३४-०-०	३४-०-०	३५-०-०
३. अन्य निर्मित वस्तुएं							
(क) सीमेंट (न) भारतीय (स्वस्तिका)	"	टन	८२-६-०	८२-६-०	८२-६-०	८७-६-०	८७-१५-०
(ख) काँच (खिड़कियों का)							
(१) बडा सार्ड ३०" × २४" तक	"	१०० वर्ग फुट	६०-०-०	६०-०-०	६०-०-०	६०-०-०	६०-०-०
(२) मध्यम सार्ड ३०"	"	"	५५-०-०	५३-०-०	५३-०-०	५५-०-०	५५-०-०
(ग) कागज							
सफेद छुपाई, डिमार्ड १४ पौंड और ऊपर	"	पौंड	०-१०-७	०-१०-७	०-१०-७	०-१०-७	०-१०-०
(घ) रासायनिक पदार्थ							
(१) फट्टरो	"	हडरवेट	१२-८-०	१३-०-०	१३-०-०	१३-०-०	१३-०-०
(२) गजक का तैला	"	टन	२३५-०-०	२३५-०-०	२३५-०-०	२३५-०-०	२३५-०-०
(ङ) रंग							
लाल सोरे का गुला असली	"	हडरवेट	६०-८-०	८६-०-०	८६-०-०	८६-०-०	८६-०-०

(न) नियमित मूल्य।

के भाव : १९५४ (गत पृष्ठ से आगे)

मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
६०आ०पा० ०-१५-६	६०आ०पा० १- ०-०	६०आ०पा० १- ०-०	६०आ०पा० १- ०-०	६०आ०पा० १- ०-०	६०आ०पा० १- ०-०	६०आ०पा० १- ०-०	६०आ०पा० १- ०-०
१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०	१६- ४-०
०-१०-०	०- ८-०	०- ८-०	०- ८-६	०- ८-६	०- ७-६	०- ७-६	
अग्रगत	३४०- ०-०	३४०- ०-०	३१५- ०-०	३१५- ०-०	३३०- ०-०	३४२- ८-०	
३५- ०-०	३५- ०-०	३५- ०-०	३५- ०-०	३५- ०-०	३५- ०-०	३५- ०-०	
८०-१५-०	८०-१५-०	८०- ०-०	८०- ५-०	८०- ५-०	८०- ५-०	८०- ०-०	
६०- ०-०	६५- ०-०	४५- ०-०*	४३- ०-०	४३- ०-०	४३- ०-०	४३- ०-०	
५५- ०-०	६०- ०-०	४३- ०-०*	४० ०-०	४०- ०-०	४०- ०-०	४० ०-०	
०-१०-०	०१-०-७	०-१०-७	० १०-७	०-१०-७	० १०-७	०-१०-७	
१३- ०-०	१३- ४-०	१३- ४-०	१३- ४-०	१३- ४-०	१३- ४-०	१३- ४ ०	
२३५- ०-१	२३५- ०-०	२३५- ०-०	२३५- ०-०	२२०- ०-०	२२०- ० ०	२२०- ०-०	
८६- ०-०	८६- ०-०	८६- ० ०	८६- ०-०	८६- ०-०	८६- ०-०	८६- ०-०	

*१६ ६-५४ के समस्त होने वाले सप्ताह से भारतीय काच के मूल्यों के स्थान पर आयात किये गये काच के मूल्य दिये गये हैं।

व्यापारिक और औद्योगिक शब्दावली

प्रस्तुत शब्दों में व्यापार और उद्योग क्षेत्रों के जिन विशिष्ट शब्दों का प्रयोग हुआ है उन्हें तथा उनके अंग्रेजी रूपों को पाठकों की सुविधा के लिये यहाँ दिया जाता है। ये केवल सुविधा की दृष्टि से दिये गये हैं। प्रामाणिकता की दृष्टि से इन्हें अन्तिम नहीं मान लेना चाहिये। —सम्पादक।

हिन्दी शब्द	अंग्रेजी रूप	हिन्दी शब्द	अंग्रेजी रूप
अभिरक्षता	Custody	फुहार प्रणाली	Spray Process
अम्लता	Acidity	बदल	Substitute
अर्द्ध स्वचालित	Semi-automatic	बाना	Weft
अलानप्रद	Unprofitable	विनौला	Cottonseed
अवधि	Period	बुना मल	Weaving Mill
अचित मजूरी	Reasonable Wage	रोलन प्रणाली	Roller Process
उपल पुषल	Upheaval	मकलन निकलना दूध	Skimmed Milk
उपभाग	Consumption	मलमल	Mush
उपाजन	Earning	मान्यता	Credit
कटिना	Para	मौखिक साक्षी	Oral Evidence
कटौती	Deduction	लागत	Cost
कटाद मिल	Spinning Mill	विस्तार	Expansion
कपडे	Fabrics	बुद्ध	Rise
कारागार	Workmanship	व्यापक	Comprehensive
क्रियाशील	Dynamic	शक्ति	Cone
क्षयत	Consumption	शक्तिचालित बरपा	Powerloom
खली	Oil Cake	शुद्ध दूध	Whole Milk
घटना	Event	श्रेणी	Category
घरलू	Domestic	श्रेष्ठता	Efficiency
चमड़े के थान	Hide pieces	संगठित मिल उद्योग	Organised Mill Industry
•छुपा हुआ	Printed	सम्पर्क	Contact
तकुवा	Spindle	सम्बन्ध	Affiliated
तगल	Fluid	सहकारी समिति	Re at on
ताना	Warp	सुधरे हुए	Co operative Society
तीव्र गति	Rapid Rate	सुराक्षनाकरण	Improved
दुग्धचूर्ण	Milk Powder	स्त्री बरदा उद्योग	Reservation
देय ऋण	Debt due	सञ्च	Cotton Textile Industry
निर्देशन	Employment	स्वचालित	Creation
पूंजी	Capital	स्थिर रखना	Automatic
पाली	Shift	हाथ बरपा	To keep pegged
पीपा	Drum	जल, निर्वा	Hand loom
प्रसविदा	Covenant	जल, सरकारी	Private Sector
प्रस्तावित	Proposed		Public Sector

परिशिष्ट

१. विदेशों में भारत सरकार के व्यापार-प्रतिनिधि ।
२. भारत में विदेशी सरकारों के व्यापार-प्रतिनिधि ।

परिशिष्ट—१

विदेशों में भारत सरकार के व्यापार प्रतिनिधि

नाम और पता	कार्य क्षेत्र
यूरोप	
<p>(१) लन्दन () श्री एल० आर० एस० सिट्ट, आई० सी० एस०, मन्त्री (व्यापारिक), (२) डा० टो० जा० मेनन और (३) श्री जे० ए० शाह, जिनेन में भारत के हाइ कमिश्नर के फुर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक)। 'इंडिया हाउस', ब्राडविच, लन्दन, इन्फ्यू० सी० २। तार का पता.—हिकोमिण्ड (HICOMIND), लन्दन।</p>	<p>ब्रिटेन और आयर</p>
<p>(२) पेरिस श्री एस० जे० रामचन्द्रन, आई० एफ० एस, भारतीय वृत्तावास के फुर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), १५, रियु अलानेट डे होनिक, पेरिस १६ एमे (फ्रांस)। तार का पता.—इण्डाट्राकम (INDATRACOM), पेरिस।</p>	<p>फ्रांस और नारव</p>
<p>(३) जनेवा श्री एस० सेन, आई० सी० एस०, भारत के कंसल जनरल, १-३ रियु, चन्टेपोलेट, मैशन प्लाजा (दूसरे मंगल), जनेवा (स्विट्जरलैण्ड)। तार का पता —कनजेण्डिया (CONGENDIA) जनेवा।</p>	<p>स्विट्जरलैण्ड</p>
<p>(४) रोम श्री एस० एस० बाजपेई, भारतीय राजदूतावास के व्यापारिक परामर्शदाता, व्या प्रोमोक्को डेन्का ३६ रोम (इटली)। तार का पता.—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), रोम।</p>	<p>इटली, युनान और यूगोस्लाविया</p>
<p>(५) बोन श्री पी० पी० आदरकर, जर्मनी में भारतीय राजदूतावास के मन्त्री (व्यापारिक), २६३, कोन्नेन्जर स्ट्रासे, बोन (जर्मनी)। तार का पता.—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), बोन।</p>	<p>जर्मनी</p>
<p>(६) वायना डा० जे० वी० रामस्वामी, आस्ट्रिया में भारत के वाइस कंसल और एट्चेन्सी, भारतवा लीगेशन, १७, गेयर्गसे, वायना, १८ (आस्ट्रिया)। तार का पता.—इण्डलीगेशन (INDLEGATION), वायना।</p>	<p>आस्ट्रिया</p>
<p>(७) ब्रसेल्स नेत्रियम में भारतीय राजदूतावास के मन्त्रिण्टी (व्यापारिक), ६२, ए० २, नेत्रियम कंसल, ब्रसेल्स (बेल्जियम)। तार का पता —इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), ब्रसेल्स।</p>	<p>बेल्जियम</p>
<p>(८) स्टारबोम श्री पी० टी० वी० मेनन, भारतीय लीगेशन के व्यापारिक एम्बेसी, स्टारबोम ४७१, स्टारबोम (स्वीडन)। तार का पता —इण्डलीगेशन (INDLEGATION), स्टारबोम।</p>	<p>स्वीडन, फिनलैण्ड प्रोटेगमार्श</p>

नाम और पता	कार्यक्षेत्र
------------	--------------

अमेरिका

(९) न्यूयार्क

श्री ए० एस० लाल, आई० सी० एस०, भारत के कंसल जनरल, २ ईस्ट ६४ स्ट्रीट, न्यूयार्क, २१, एन० वार्ड० । तार का पता:—कनजेंगिया (CONGLNDIA), न्यूयार्क ।

पूर्वी संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और क्यूबा

(१०) सेन फ्रांसिस्को

श्री एम० ए० डूसैन, आई० सी० एस०, भारत के कंसल जनरल, ४१७, मान्टगोमरी स्ट्रीट, सेन फ्रांसिस्को, कैलीफोर्निया ।

पश्चिमी संयुक्त राष्ट्र अमेरिका

(११) वाशिंगटन

श्री एस० कृष्णामूर्ति, आई० एफ० एस०, भारतीय दूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), २१०७, मैसेचुसेट्स एवेन्यू, एन० डब्ल्यू० वाशिंगटन—८ डी० गी० (संयुक्त राष्ट्र अमेरिका) । तार का पता:—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), वाशिंगटन ।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और मैक्सिको

(१२) ओटावा

श्री आर० अगजेल खान, कनाडा में भारतीय हार्डि कमिशन के सेक्रेटरी (व्यापारिक), २०० मेकलोरन स्ट्रीट, ओटावा, ओन्टोरियो (कनाडा) । तार का पता:—हिकोमिण्ड (HICOMIND), ओटावा ।

कनाडा

अफ्रीका और मध्यपूर्व

(१३) मोम्बासा

श्री ए० बी० यदानी, मोम्बासा में भारत सरकार के व्यापार कमिश्नर, जुबली इन्स्टाचारेन्स बिल्डिंग, पो० बा० न० ६१४, मोम्बासा (केनिया) । तार का पता:—इण्डोक्रम (INDOCOM), मोम्बासा ।

पूर्वी अफ्रीका (केनिया, उगाण्डा और टांगानिका), जम्बीया, उत्तरी रोडेशिया, दक्षिणी रोडेशिया और न्यालालैंड

(१४) सिकन्दरिया

श्री खुनाथ सिन्हा, आई० एफ० एस०, मिस्र में भारत के कंसल जनरल तथा सुडान, सीरिया साइप्रस और बार्डेन में भारत सरकार के व्यापार कमिश्नर, अल-बसीर बिल्डिंग, न० ५, रुय अरिब बे इसाक, अवेन्यू डि ला रेनी नाब्लो, सिकन्दरिया (मिस्र) । तार का पता:—“इण्डियाक्रम (INDIACOM), सिकन्दरिया ।

मिस्र, सुडान, सीरिया, लेबनान, साइप्रस और ट्रांसजार्डन

(१५) तेहरान

श्री एम० के० रे, भारतीय राजदूतावास के सेक्रेटरी (व्यापारिक), अवेन्यू शाह रजा, तेहरान (ईरान) । तार का पता:—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), तेहरान ।

ईरान

(१६) बगदाद

डा० जगदीश चन्द्र, भारतीय राजदूतावास के मेक्रेड सेक्रेटरी (व्यापारिक), ८/८, सफी-अल-दीन-इल हिली स्ट्रीट, कबीरिया, बगदाद (ईराक) । तार का पता:—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), बगदाद ।

ईराक

(१७) अदन

श्री ए० एस० धवन, अदन में भारत सरकार के कमिश्नर, अदन । तार का पता:—कोमिण्ड (COMIND), अदन ।

अदन, ब्रिटिश सोमालीलैंड और इथियोपिया सोमालीलैंड

नाम और पता

कार्यक्षेत्र

आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड

(१८) सिडनी

श्री एस० वी० पटेल, आई० एफ० एस०, भारत सरकार के व्यापार कमिश्नर, प्रुवेन्सल बिल्डिंग, ३६-४६, मार्गिन प्लेस, सिडनी (आस्ट्रेलिया)। तार का पता:—आस्ट्रेलिया (AUSTRALIA), सिडनी।

आस्ट्रेलिया

(१९) वेलिंगटन

श्री एन० केशवन्, न्यूजीलैंड में भारत के हार्ड कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), विन्डसर बिल्डिंग, ४६, विलिस स्ट्रीट, वेलिंगटन, (न्यूजीलैंड)। तार का पता:—ट्रेकोमिन्ड (TRACOMIND), वेलिंगटन।

न्यूजीलैंड

एशिया

(२०) टाकिया

डा० ए० एस० शर्मा, जापान में भारतीय राजदूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), एम्पायर हाउस (नांग्रइ बिल्डिंग), मारुनोची, टोकियो (जापान)। तार का पता:—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), टोकियो।

जापान

(२१) कालम्ब्या

श्री के० आर० एफ० पिल्लानानी, आई० एफ० एस०, लका में भारत के हार्ड कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), पो० बा० न० ८६६, फोर्ट, कोलम्बो। तार का पता:—ट्रेडिन्ड (TRADING), कोलम्बो।

लंका

(२२) रंगून

श्री एम० पी० मायुर, आई० एफ० एस०, भारत के राजदूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), रनवेरिया बिल्डिंग, फायर स्ट्रीट, पो० बा० न० ७५१, रंगून (बर्मा)। तार का पता:—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), रंगून।

बर्मा

(२३) कराची

श्री एम० थान, आई० एफ० एस०, पाकिस्तान में भारत के हार्ड कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), चारटर्ड बैंक चैम्बरस, "बलीका महल," एन० वे० स्टैन्डा रोड, न्यू टाऊन, कराची-५ (पश्चिमी पाकिस्तान)। तार का पता:—इंट्राकॉम (INTRACOM), कराची।

पाकिस्तान

(२४) ढाका

श्री पी० दासगुप्त, पाकिस्तान में भारत के हार्ड कमिश्नर के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), गोपी कृष्ण लेन, पो० आ० रामना, ढाका (पूर्वी पाकिस्तान)। तार का पता:—"गुडविल" (GOODWILL), ढाका।

पूर्वी पाकिस्तान

(२५) सिंगापुर

श्री के० कोइलडो, आई० एफ० एस०, मलाया में भारत सरकार के प्रतिनिधि के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक), इण्डिया हाउस, पो० बा० न० ८३६, सिंगापुर (मलाया)। तार का पता:—इण्डिट्रेडिन्ड (INDITRACOM), सिंगापुर।

मलाया

(२६) मनीला

मन्त्री, व्यापारिक विभाग, भारतीय लीगेशन, ६१४-ने-रास्का, मनीला (फिलिपाइन)। तार का पता:—इण्डेम्बेसी (INDELEGATION), मनीला।

फिलिपाइन

(२७) जकार्ता

श्री के० डी० मर्तान, आई० एफ० एस० भारतीय राजदूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी, पो० बा० न० १७८-४४, केनुन सिटाह, जकार्ता (इण्डोनेशिया)। तार का पता:—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), जकार्ता।

इण्डोनेशिया

(२८) बैंकाक

श्री गुडचनसिंह, आई० एफ० एस० भारतीय राजदूतावास के सेक्रेटरी (व्यापारिक), बैंकाक (थाइलैंड)। तार का पता:—इण्डेम्बेसी (INDEMBASSY), बैंकाक।

थाइलैंड

सूचना:—(१) तिब्बत में निम्नलिखित अधिकारी भारत के व्यापारिक हितों का ध्यान रखते हैं:—

१. मगटोक, सिक्किम में भारतीय पालिटिकल अफसर के व्यापारिक सेक्रेटरी।

२. भारत के व्यापार एजेण्ट, गाटु ग (तिब्बत)।

(२) जिन देशों में अलग व्यापारिक प्रतिनिधि नहीं हैं, उनमें भारतीय राजदूत और कन्सल अफसर भारत के व्यापारिक हितों का ध्यान रखते हैं।

भारत में विदेशी सरकारों के व्यापार-प्रतिनिधि

देश	पद	पता
१. अफगानिस्तान	भारत में शाही अफगान राजदूतावास के आधिक एट्चेनी।	२४, रेडरडन रोड, नई दिल्ली।
२. अमेरिका	भारत में अमेरिकन दूतावास के आधिक मामलो के कौन्सिलर।	यहाजलपुर हाउस, मित्रन्दरा रोड, नई दिल्ली।
३. आस्ट्रिया	भारत में आस्ट्रिया के व्यापार प्रतिनिधि।	करोन्स मैन्शन, वेस्टियन रोड, फोर्ट, बम्बई।
४. आस्ट्रेलिया	(१) भारत में आस्ट्रेलिया सरकार के व्यापार कमिश्नर। (२) भारत में आस्ट्रेलिया सरकार के व्यापार कमिश्नर।	मरकेटाइल बैंक बिल्डिंग, ५२/६६, महात्मा गांधी रोड, जनरल पो० ब्रा० बा० न० २१५, बम्बई। २, फेअरली प्लेस, फ्लफता।
५. इटली	भारत में इटली के राजदूतावास के व्यापारिक सेक्रेटरी।	१७, यार्क रोड, नई दिल्ली।
६. इण्डोनेशिया	भारत में इण्डोनेशियन दूतावास के व्यापारिक कौन्सिलर।	२१, कचन रोड, नई दिल्ली।
७. कनाडा	(१) भारत में कनाडा हाई कमीशन के व्यापारिक कौन्सिलर।	४, औरगनेज रोड, नई दिल्ली।
८. चीन	(२) भारत में कनाडा हाई कमीशन के व्यापारिक सेक्रेटरी। भारत में चीनी गणतन्त्र के राजदूतावास के व्यापारिक मामलो के कौन्सिलर।	श्रेयाम एशियन्स हाउस, मिट रोड, बम्बई। जी० हाउस, लिटन रोड, नई दिल्ली।
९. चेकोस्लोवाकिया	(१) भारत में चेकोस्लोवाक राजदूतावास के व्यापारिक एट्चेनी। (२) भारत में चेकोस्लोवाक राजदूतावास के व्यापारिक कौन्सिलर।	२५, औरगनेज रोड, नई दिल्ली। हिमालय हाउस, पालघन रोड, बम्बई।
१०. जर्मनी	भारत में जर्मनी के सहाय गणराज्य के राजदूतावास के फर्स्ट सेक्रेटरी (व्यापारिक)।	८६, मुन्दर नगर, मधुप रोड, नई दिल्ली।
११. जापान	भारत में जापानो दूतावास के सेक्रेटरी (व्यापारिक)।	४, सरक्युलर रोड, डिप्लोमेटिक एन्क्लेव, नई दिल्ली।
१२. डेनमार्क	भारत में शाही डैनिश मिनिशन के व्यापारिक कौन्सिलर।	पोलोन्की मैन्शन, न्यू बाफ परेड, बम्बई।
१३. तुर्की	भारत में तुर्की दूतावास के व्यापारिक एट्चेनी।	मेन्स होटल, दिल्ली।
१४. नारवे	भारत में नारवे के व्यापार कमिश्नर।	इम्पेरिकल चेम्बर, विलसन रोड, पो० ब्रा० बा० न० २६४, बम्बई १।
१५. नीदरलैंड	भारत में नीदरलैंड राजदूतावास के व्यापारिक एट्चेनी।	८६८, बाजार गेट स्ट्रीट, बम्बई।
१६. न्यूजीलैंड	भारत में न्यूजीलैंड सरकार के व्यापार कमिश्नर।	मरकेटाइल बैंक बिल्डिंग, दूसरी मजिल, महात्मा गांधी रोड, बम्बई-१।

हिन्दी और मराठी भाषा
में प्रकाशित होता है।

उद्यम

सर्वोपयोगी हिन्दी उद्यम
प्रतिमाह १५ तारीख को पढ़िये

धर्मपैठ, नागपुर

उद्यम में निम्न विषयों पर लेख प्रकाशित होते हैं

★ लाभदायक उद्योगधन्धों की व्यवहारोपयोगी जानकारी, अनाज की खेती, साग-सब्जों की वागवानी और रोगों का निवारण। पशुपालन, दुग्धव्यवसाय और प्रामाण्योग सम्बन्धी लेख। आरोग्य, धरेलू औपधियों सम्बन्धी जानकारी।

उद्यम के स्थायी स्तम्भ

★ महिलाओं तथा विद्यार्थियों के लिये उपयुक्त विभिन्न रूपिकर ज्ञाप्यार्थ बनाने की विधियाँ। धरेलू मितव्ययता। जिज्ञासु जगत्। कृषि, औद्योगिक क्षेत्रों में काम करने वाले व्यक्तियों की मुलाकात और परिचय। नित्योपयोगी वस्तुएं घर ही तैयार कीजिये।

आज ही उद्यम का वार्षिक चन्द्रा रु० ७ भेजकर, उद्यम मासिक मंगवाइये।

“आर्थिक समीक्षा”

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आर्थिक राजनीतिक अनुसंधान विभाग का

पाक्षिक पत्र

प्रधान सम्पादक : श्री आचार्य श्रीमन्नारायण अग्रवाल

सम्पादक : श्री हर्षदेव मालवीय

हिन्दी में अनूठा प्रयास

आर्थिक विषयों पर विचारपूर्ण लेख

आर्थिक सूचनाओं से अतृप्त

भारत के विकास में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिये अत्यावश्यक, पुस्तकालयों के लिये अनिवार्य रूप से आवश्यक।

वार्षिक चन्द्रा : ५ रुपया

एक प्रति का सप्ते तीन आने

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, ७, जन्तर मन्तर रोड,
नयी दिल्ली